Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाना कब बदलेगा ?

जमाना बदल गया-1

गुरुदत्त

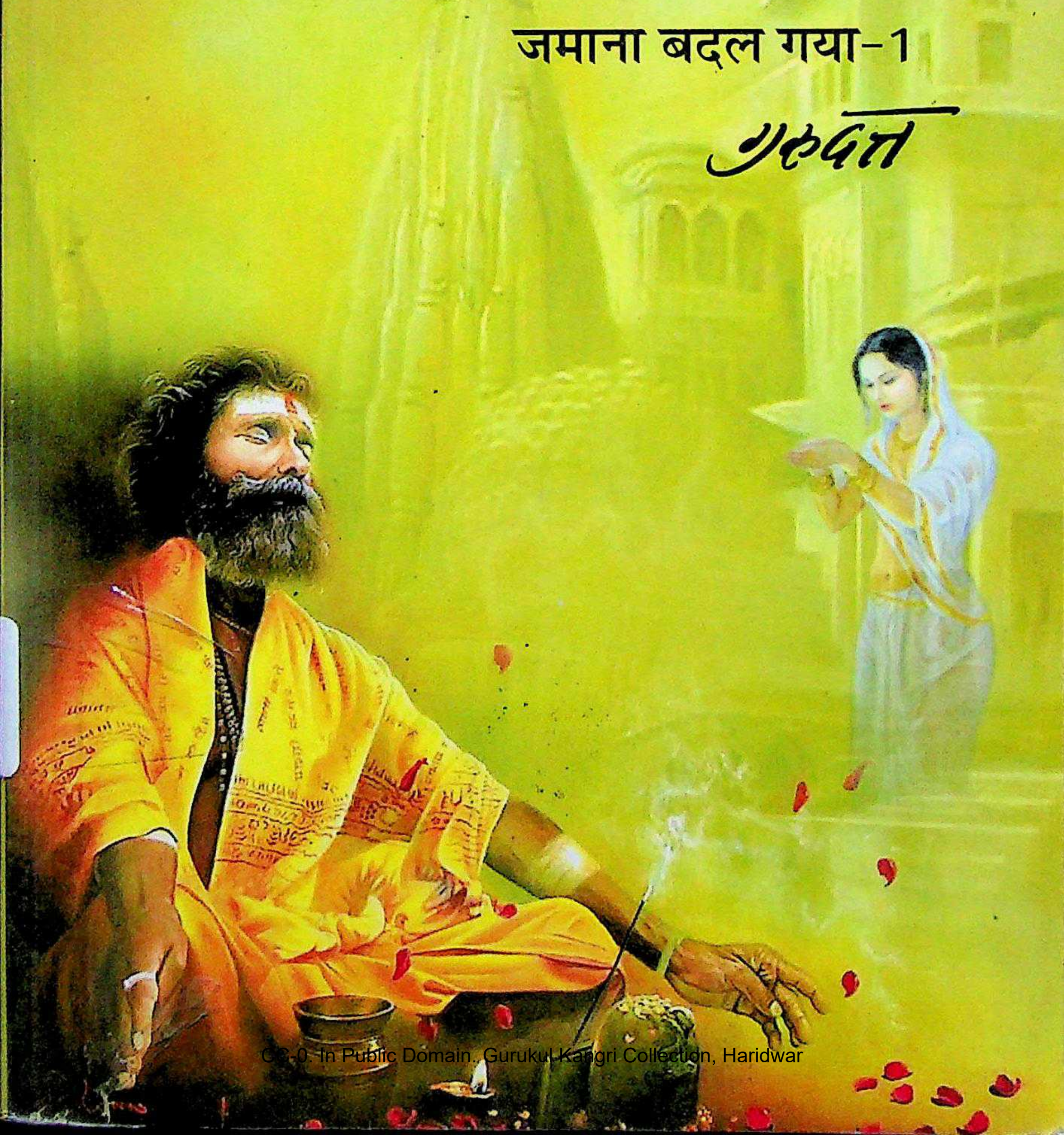

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167909

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाना कब बदलेगा

जमाना बदल गया भाग-1

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाना कब बदलेगा

जमाना बदल गया भाग-1

गुरुदत्त

Central Library
167909
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

081
167909

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली–110005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
0 89.9143
GUR-J

जमाना कब बदलेगा

जमाना बदल गया भाग-1

© ईशान दत्त

मूल्य	:	रु. 550/–
संस्करण	:	प्रस्तुत रूप में प्रथम बार/2020
प्रकाशक	:	हिन्दी साहित्य सदन, 2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देशबंधु गुप्ता रोड, करोल बाग (पुलिस स्टेशन के समीप) नई दिल्ली–110005
ई–मेल	:	indiabooks@rediffmail.com hindisahityasadan@gmail.com
वैबसाइट	:	www.hindisahityasadan.com
दूरभाष	:	9213527666, 07065618655, 011–23553624
ऑफिशियल व्हाट्सऐप	:	9213527666
पृष्ठ संयोजन	:	विकास सैनी (09971840182)
मुद्रक	:	गोयल एन्टरप्राइसिस, नोएडा

Jamana Kab Badlega? (Jamana Badal Gya Part-1)

By Guru Dutt

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय-सूची

क्रम	विषय	पृष्ठ
	भूमिका	7
	भाग एक	
1.	प्रथम परिच्छेद	13
2.	द्वितीय परिच्छेद	158
	भाग दो	
3.	प्रथम परिच्छेद	241
4.	द्वितीय परिच्छेद	316
5.	तृतीय परिच्छेद	407

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

एक कवि ने लिखा है:

तू भी बदल फलक कि जमाना बदल गया।

वह कह रहा है कि हे भगवान्! तू भी बदल। अर्थात् हमारे भाग्य को बदल, क्योंकि सब–कुछ बदल गया है।

भगवान हमारे भाग्य को बदलेगा अथवा नहीं, पता नहीं, परन्तु जमाना तो बदल ही रहा है। क्यों? इसलिए कि हम बदल रहे हैं।

हमारे बदलने में भी एक कारण है। इसी कारण की विवेचना में यह पुस्तक लिखी गयी है।

ऐसा माना जाता है कि भारत प्राचीन काल में एक उन्नत देश था। यहाँ के रहने वाले, कम से कम चरित्र में, संसार के अन्य पुरुषों से बहुत श्रेष्ठ थे। उस काल के मनुष्यों से भी और आजकल के मनुष्यों से भी। साथ ही इस कथन में संदेह किया जाता है कि भौतिक दृष्टि से भारत एक पिछड़ा हुआ देश था तथा आज का संसार और भारत प्राचीन काल के भारत से बहुत आगे निकल चुका है।

इस विषय में हमारा यह मत है कि भौतिक उन्नति आवश्यकता की देन है। एक मनुष्य जब किसी आवश्यकता को अनुभव करता है तो फिर उस वस्तु की प्राप्ति के लिए यत्न करता है। मानव असीम शक्ति का स्वामी होते हुए भी उन वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है। भौतिक वैभव और शारीरिक सुख–सुविधाओं की जब आवश्यकता हुई तो उसके लिए यत्न किया गया और जहाँ–जहाँ जिस–जिसने भी यत्न किया, वह सफलता पा गया। प्राचीन भारत के रहने वाले बहुत कम सुख–सुविधाओं की इच्छा करते थे। उन्होंने इसके लिए यत्न नहीं किया और उन सुख–सुविधाओं के साधन उनको प्राप्त नहीं हुए।

हमारा प्राचीन तत्त्व दर्शन (फिलासफी) इस कथन का प्रमाण है। प्राचीन काल के विद्वान क्या चाहते थे, वह उस जीवन की मीमांसा से प्रकट होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है जो उस समय के ग्रन्थों में वर्णित है। कुछ विद्वानों का मत है कि आवश्यकताएँ जीवन–मीमांसा का निर्माण करती हैं। परन्तु यह बात सत्य नहीं। आवश्यकताओं की उपज इच्छा से है। इच्छाएँ मन में पैदा होती हैं। यह ठीक है कि इन्द्रियों से अनुभव किया अभाव ही मन में इच्छाओं को उत्पन्न करता है। परन्तु प्राचीन आर्य विद्वानों ने तो इन्द्रिय दमन के सिद्धान्त का आविष्कार कर और उनके लाभों को अनुभव कर इन्द्रियों द्वारा अनुभूत अभाव की अवहेलना करके दिखा दी थी। शरीर कोमल गद्दों पर लेटने की इच्छा करता है, परन्तु एक आर्य–मीमांसक यह विचार करता है कि कोमल गद्दों पर सोने से वह प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में नहीं उठ सकेगा और उस समय के योग–ध्यान तथा चिन्तन से वंचित रह जाएगा। उसकी विचार–शक्ति शारीरिक सुख–प्राप्ति की इच्छा पर विजय पा जाती है और वह गद्दों के सुख की इच्छा को छोड़ 'तख्तपोश' पर सोने लगता है। सांसारिक सुखों को त्याग कर वह वन में चला जाता है।

कहने का अभिप्राय यह है कि भौतिक उन्नति की आवश्यकता उत्पन्न नहीं की गई और उसके लिए यत्न नहीं किया गया। भारत उस दिशा में पिछड़ा हुआ है। यह पिछड़ना ठीक था अथवा गलत, एक भिन्न प्रश्न है। हम तो यह मानते हैं कि भारत का भौतिक विकास में पिछड़ जाना इसकी अयोग्यता के कारण नहीं था, प्रत्युत इसकी इच्छा के अनुरूप था।

एक मत यह है कि भौतिक उन्नति की अनिच्छा और इस दिशा में उन्नति का अभाव भारत में सदा नहीं रहा। इसमें भी सच्चाई प्रतीत होती है। यदि आर्य लोग संसार की अन्य जातियों की अपेक्षा प्राचीन काल में भी पिछड़े हुए होते तो उनमें अनेकानेक चक्रवर्ती सम्राट, जो भू–मण्डल को विजय करते रहे थे, न हो सकते। इसके साथ ही हम इतने लम्बे काल तक संसार की अन्य जातियों से संघर्ष में जीवित न रह सकते।

'कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी'

हमारा इसमें यह मत है और इसके प्राचीन इतिहास में प्रचुर मात्रा में प्रमाण भी मिलते हैं कि भारत जहाँ तत्त्व–दर्शन की दृष्टि से संसार के अन्य देशों की अपेक्षा बहुत उन्नत था, वहाँ भौतिक उन्नति की दृष्टि से भी अन्य देशों की अपेक्षा बढ़ा हुआ था। यह कहना तो कठिन है कि वर्तमान युगीन भौतिक उन्नति से आगे था या नहीं? इतना तो निश्चय ही है कि असुरों और दानवों को सदा पराजित करने वाले भौतिक विकास में उनसे अधिक उन्नत ही रहे होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदाचित् आज जितनी उन्नति इस देश में न हुई हो। इसमें भी देश की अयोग्यता कारण नहीं थी, प्रत्युत आवश्यकता का न होना ही कारण था। आर्य जीवन–मीमांसा में तपस्या के जीवन की बहुत महिमा रही है और भौतिक सुख–सुविधाएँ तपस्या में बाधक मानी जाती रही हैं। अतः इनकी प्राप्ति उसी सीमा तक वांछनीय मानी गई थी, जितने से व्यक्ति अथवा समाज का जीवन चल सके। जब–जब भी समाज पर विपत्ति आई, तब–तब ही भौतिक उन्नति की ओर ध्यान गया और उसमें उतनी उन्नति कर ली गई, जितनी उस विपत्ति को टालने के लिए आवश्यक थी। जब जितनी उन्नति से विपत्ति टल गई, उतनी उन्नति कर आध्यात्मिक उन्नति में संलग्न हो गए। यह रही है जीवन–मीमांसा भारत के प्राचीन आर्यों की। उस समय आर्यों के विपक्षी इतने प्रबल और सुखसुविधा सम्पन्न नहीं थे, जितने कि आज के यूरोपियन तथा अमेरिकन हो गए हैं। आज उनसे अपने को सुरक्षित और अप्रभावित रखने के लिए उनसे भी अधिक उन्नत होने की आवश्यकता है। उस काल में विपक्षी इतने प्रबल नहीं थे, अतः उस समय इतनी उन्नति की आवश्यकता थी ही नहीं।

दुर्घटना यह हुई कि भारत के इतिहास में एक ऐसा समय आया जब आत्मा, मन और शरीर के विकास में संतुलन टूट गया। तब भारत संसार की अन्य जातियों की अपेक्षा भौतिक उन्नति में पिछड़ गया। भारत देश पर विपत्ति भी आई। परन्तु हमने इस विपत्ति को टालने के लिए भी भौतिक उन्नति करने की ओर ध्यान नहीं दिया। परिणाम यह हुआ कि सात सौ वर्ष हमने मुसलमानों की दासता में व्यतीत किए और लगभग दो सौ वर्ष तक हम अंग्रेजों के दमन–चक्र में पिसते रहे।

यह दुर्घटना कैसे हुई? यह एक दुःखद कथा है। महाभारत काल के अनन्तर ढाई हजार वर्ष तक भारत चैन की बंशी बजाता रहा। उस काल में दुर्भाग्य से दो जीवन–मीमांसाएँ ऐसी उत्पन्न होकर पनपीं, जिन्होंने देश के विद्वानों का मानसिक संतुलन जर्जर करके रख दिया। वे मीमांसाएँ थीं बौद्ध और जैन जीवन–मीमांसाएँ। महात्मा बुद्ध तथा महावीर स्वामी की अपनी शिक्षा क्या थी और क्या नहीं थी, इसमें मतभेद उत्पन्न हो सकता है, परन्तु जैनधर्म और बौद्धधर्म जिस रूप में प्रचलित हुए, वे मानसिक संतुलन को तोड़ने वाले सिद्ध हुए।

इन मतों से जो विशेष बात हुई, वह यह कि आर्य शास्त्रों की धुरी अर्थात् वेद की अवहेलना की गई। वेद से सम्बन्ध विच्छेद हुआ तो उन सब शास्त्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
से भी सम्बन्ध टूटा जो वेदों को आधार मानकर लिखे गए थे। मनु इत्यादि की स्मृतियाँ भी अस्वीकार हो गईं। अन्य अनेक शास्त्र विद्याओं का पढ़ना–लिखना बंद हो गया।

यहाँ इतना समझ लेना चाहिए कि शास्त्र के अर्थ ज्ञान–विज्ञान की पुस्तकें हैं। उस समय का रसायनशास्त्र, चिकित्साशास्त्र, ज्योतिष और कला–कौशल सम्बन्धी शास्त्र वेद ज्ञान से सम्बन्धित थे। जब बौद्ध और जैनियों ने इन वेदों की अवहेलना की तो ये शास्त्र भी जीवन–चर्या से बाहर हो गए।

बौद्ध तथा जैनमत द्वारा एक यह बात भी प्रसिद्ध की गई कि महात्मा बुद्ध अथवा महावीर स्वामी से पहले अन्धकार था; ये महापुरुष ही प्रकाश देने वाले हुए हैं; और पीछे आने वाली सब विचारों की परख के लिए वे कसौटी हो गए। इससे वह पूर्ण ज्ञान भण्डार, जो वेदों के काल से संचित हो रहा था, अस्वीकृत हो गया और नया ज्ञान उस गति से निर्माण नहीं हो सका, जिस गति से इसकी आवश्यकता थी।

बौद्ध मतानुयायियों ने तो पढ़ने–पढ़ाने में भी अरुचि उत्पन्न करने का यत्न किया। ब्राह्मणों अर्थात् वेदों के ज्ञाता विद्वानों की निंदा की गई। यह निंदा उनकी ओर से की गई, जिन्होंने वेद के दर्शन भी नहीं किए थे।

सबसे बड़ी बात यह हुई कि तपस्या की महिमा की भी निंदा की गई। जहाँ बुद्ध को तपस्या कराने वाले तपस्या का गलत अर्थ जानते थे और उन्होंने तपस्या से शरीर के विनाश का मार्ग बताया था, वहाँ बुद्ध ने सब प्रकार की तपस्या को ही निंदनीय बता दिया।

देश में भिक्षुओं की संख्या असीम हो गई। महाराजा अशोक को इन भिक्षुओं के निवास के लिए चौरासी हजार विहार निर्माण करने की आवश्यकता पड़ गई। जैन पंथ इतना विनाशकारी नहीं था, जितना बौद्धपंथ। उसमें मुख्य कारण यह था कि बौद्धों में ज्ञान से ऊपर कर्म की श्रेष्ठता को माना गया था।

बौद्धकालीन वेद–निन्दकों की प्रतिक्रिया नवीन वेदांती श्री गौड़पादाचार्य ने उपस्थित की। ये श्री शंकराचार्य के दादा गुरु थे। अपने दादा गुरु के मत का बृहत् प्रचार शंकराचार्य ने किया। श्री स्वामी शंकराचार्य ने एक बात और की। अपने दादा गुरु के मत को भगवद्गीता, उपनिषद् एवं ब्रह्मसूत्रों में से निकालने का उन्होंने यत्न किया।

नवीन वेदान्त के चार मुख्य सिद्धान्त हैं– प्रथम यह कि 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्मैव नाऽपराः'। द्वितीय–'नैषा तर्केण मतिरापनेया'। तृतीय,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
'ज्ञानकर्मणोर्विरोधं पर्वतवदकम्पयं यथोक्तं' और चतुर्थ यह कि 'न जीविते मरणे वा गृधिं कुर्वीतारण्यमियादिति च पद्मं, ततो न पुनरियात् इति संन्यासशासनात्।'

ये चारों सिद्धान्त अवैदिक हैं। ये भारत में ज्ञानहीनता, कर्मों के लिए अनुत्तरदायित्व, बुद्धि के स्थान पर निष्ठा की स्थापना और मनुष्य को प्रत्येक आयु में ही संन्यास की प्रेरणा देने वाले सिद्ध हुए। दुर्भाग्य से ये चारों सिद्धान्त तत्कालीन भारतीय समाज में इतने प्रचारित हुए कि विद्वान तो संसार को छोड़ वनों को चल पड़े, गृहस्थी प्रत्येक प्रकार के खोटे कर्मों में लीन हो उसका उत्तरदायित्व स्वीकार करने से इंकार कर बैठे। कुछ जो कर्मों से ऊब गए थे, बुद्धि का प्रयोग छोड़ पत्थर की मूर्तियों में ही भगवान की निष्ठा बना बैठे। और छोटे-छोटे बच्चे छोटी-छोटी अवस्था में ही साधु बनने लगे तथा युवावस्था प्राप्त होने पर अनाचार करने लगे।

मन, आत्मा तथा शरीर का संतुलन टूट गया और देश पराधीन हो गया। पराधीन होने पर भी जगत् मिथ्या, जगत् मिथ्या की कूक लगाते हुए विचारक समाज को दासता में भी आनन्द का आभास कराने का यत्न करते रहे।

भारतीय मानव में शारीरिक, मानसिक और आत्मिक पतन आरम्भ हुआ और एक सहस्र वर्ष के लगभग दासता की शृंखलाओं में बँधे रहने पर भी, वह अपने को देवता मानता रहा। इस मिथ्या वातावरण में मानव सो गया।

सोयी हुई आत्मा जागी और समाज ने करवट ली। परन्तु अभी भी भारतीय मानव बाहरी जगत् को देख चकाचौंध हो रहा है और संतुलित अवस्था को प्राप्त नहीं कर सका है।

भौतिक उन्नति, जो सोते समय भारत के पड़ोसी देशों ने की है, को देख हम पागल हो उनके पीछे भाग पड़े हैं और शरीर, मन तथा आत्मा का संतुलन नहीं पा सके हैं। यही कारण है कि जहाँ हम ऐटामिक शक्ति को प्राप्त कर रहे हैं, वहाँ आज ऐटामिक शक्ति वाले देशों की हीन मानसिक अवस्था तथा सोयी हुई आत्मा को भी ग्रहण कर रहे हैं।

सन् 1857 से कथा आरम्भ करके 1957 तक क्या हुआ है, इन घटनाओं की पृष्ठभूमि में, पशुता तथा मानवता में संघर्ष का चित्रण करने का यत्न किया गया है। इस भारतीय समाज में मानवता की हत्या और पशुता की उन्नति में किन-किन वस्तुओं ने सहायता की है, उसका दिग्दर्शन कराने का यत्न किया गया है। क्या हम 1857 से आगे निकल गए हैं? और यदि निकल गए हैं तो किस दशा में? यह एक समस्या है। इस कथा में इसी पर प्रकाश डालने का यत्न किया गया है। घटनाओं का चित्रण इतिहास, किंवदन्तियों और स्वयं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखी बातों के आधार पर किया है।

इस लम्बे काल की कथा का यह प्रथम अंश है। इसमें 1857 से 1907 तक के राजनीतिक, धार्मिक तथा सामाजिक परिवर्तनों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है। विवरण को अधिक–से–अधिक व्यापक करने का यत्न किया गया है। इस पर भी यह इतिहास की पुस्तक न होने से पूर्ण नहीं है, भाव अवश्य पूर्ण हैं। मानव का ह्रास द्रुतगति से हुआ है। आर्थिक तथा राजनीतिक उन्नति भी मानव के ह्रास को रोक नहीं सकी। यही इस काल में हुआ और हो रहा है।

यह उपन्यास है। इसको तथ्य से संयुक्त रख अधिक–से–अधिक रोचक बनाने का यत्न किया गया है।

देश के कुछ महात्माओं का उल्लेख इसमें आया है। परन्तु यह उनकी जीवन कथा नहीं है। बदलते जमाने का दर्शन कराने के लिए उनका यत्रतत्र उल्लेख मात्र ही है। किसी महापुरुष अथवा किसी मत–मतांतर के मान–अपमान करने का उद्देश्य भी नहीं है। सब घटनाओं पर तटस्थ रह कर विवेचना करने का यत्न किया गया है।

शेष तो पाठकों के अपने विचार करने की बात है।

–गुरुदत्त

दिसम्बर, 1961

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग एक

प्रथम परिच्छेद

: 1 :

ब्रह्मनाल के शिवालय में जल चढ़ाकर रामरक्खामल्ल घर को आ रहा था। साठ वर्ष का वृद्ध होते हुए भी, उसकी कमर सीधी थी; छाती चौड़ी, बाँहें लम्बी और ऊँचाई पाँच फुट नौ इंच थी। देवता पर चढ़ाने से बची लस्सी का लोटा उसके हाथ में था। करंडी की चादर नंगे बदन पर लपेटे और रेशमी धोती पहने, पाँव में लकड़ी की खड़ाऊँ धारण किये हुए था।

वह खट–खट सड़क पर चला आ रहा था। अभी दिन निकला नहीं था। पूर्व के आकाश पर अरुणिमा, भगवान सूर्य के आगमन की अभी सूचना ही लायी थी। वह 'सूहा' बाजार में से चलता हुआ अपनी गली, कूचा हिंगना की ओर जा रहा था। दुकानें अभी खुली नहीं थीं। सड़क पर बहुत कम लोग आ–जा रहे थे। अधिकांश आने–जाने वाले प्रातः भ्रमण अथवा स्नान के लिये रावी नदी की ओर लम्बे–लम्बे पग उठाते हुए चले जा रहे थे।

रामरक्खामल्ल अपनी गली में प्रवेश करने लगा तो एक प्रौढ़ावस्था का आदमी कुशासन, अँगोछा, लोटा और रूमाली बगल में दबाये गली से निकला और सामने रामरक्खामल्ल को देख उससे बोला, "भापा! राम राम!"

"नमस्ते भैया! रामरक्खामल्ल ने उत्तर में कहा।"

वह दूसरा आदमी जानता था कि लाला रामरक्खामल्ल शिवालय में जल चढ़ाकर आया है, परन्तु आर्य समाजियों की भाँति नमस्ते कहकर अभिवादन कर रहा है। इससे वह मुस्कराया और चल दिया। वह रावी नदी के किनारे स्नान–पूजा के लिए जा रहा था। रामरक्खामल्ल अभी दस कदम ही गया था कि एक अन्य व्यक्ति अपने मकान के दरवाजे को ताला लगाता हुआ मिला। उसकी बगल में भी आसन और हाथ में अंगोछा इत्यादि थे। अब रामरक्खामल्ल ने उससे पूछ लिया, "शिवराम! बहू घर पर नहीं है क्या?।"

"है तो, भापा! पर वह सो रही है और नीचे दरवाजा बन्द करने नहीं आयी। इसी कारण बाहर से ताला लगाकर जा रहा हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारा साथी तो चला गया?"

"राधेलाल?"

"नहीं, सोहन। अभी–अभी गली के फाटक के पास मिला था।"

"उसने आवाज तो लगाई थी। बहू को जगा न सकने के कारण ताला ढूँढ़ना पड़ा और वह, शायद यह समझ कि मैं नहीं आ रहा, चला गया है। बस अभी भागकर पकड़ लूँगा।"

"और राधेलाल?"

"वह सोहनलाल के साथ नहीं था?"

"नहीं।"

"तो पहले निकल गया होगा।"

शिवलाल ने 'राम–राम' की और गली के बाहर की ओर चल पड़ा। रामरक्खामल्ल अपने घर की ओर चला आया। 'खट–खट' खड़ाऊँ का शब्द गली की भूमि पर हो रहा था। गली में पक्का फर्श नहीं था। चलने वालों के पाँवों से दब–दबकर मिट्टी फर्श की भाँति ठोस हो गयी थी। वर्षा के दिन में अवश्य कीचड़ हो जाता था और थोड़ी भी असावधानी से चलने वाला फिसलकर गिर सकता था।

गली के चौक में कुआँ था। कुएँ की जगत पर एक ओर स्त्रियों के स्नान के लिए पर्देदार जगह बनी हुई थी और दूसरी ओर खुला स्थान था, जिस पर पुरुष नहाते थे। कुएँ से जल निकालने के लिये दो चरखियाँ लगी थीं। एक पर्दे के भीतर, स्त्रियों के लिये और एक बाहर की ओर पुरुषों के लिये।

रामरक्खामल्ल का मकान चौक के कुएँ के ठीक ऊपर ही था। रामरक्खामल्ल कुएँ के पास से मकान में जाने लगा तो कुएँ की जगत पर बैठे एक स्नान करते युवक ने उसको आवाज दे दी– "बड़े भापा! राम–राम!"

"अरे महानारायण! अभी नहा ही रहे हो?"

"जी! आज नींद नहीं खुली।"

"पाँच बज रहे हैं। बेटा! कुछ पूजा–पाठ, जप–ध्यान कर लिया करो।'

"वह मैं दुकान खोलने के बाद कर लेता हूँ।"

रामरक्खामल्ल मुस्कराया और घर के भीतर घुस गया। एक स्त्री सिर से पाँव तक चादर लपेटे घर की सीढ़ियों पर बुहारी दे रही थी। रामरक्खामल्ल ने कहा, "बेटा लाज! तनिक जल्दी उठा करो।"

लाजवंती रामरक्खामल्ल के भाई विष्णुनारायण की विधवा लड़की थी। उसकी आयु इक्कीस वर्ष के लगभग थी। वह खड़ी हो गई और बोली, "बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भापा! आप चलिए, मैं दो मिनट में आई।''

इस प्रकार रामरक्खामल्ल मकान की ऊपर की छत पर जा पहुँचा। घर में एक पूजा–गृह बना था। उसमें एक ओर चौकी पर पीतल के बने ठाकुर रखे थे। उनके आगे फूल चढ़े थे और पीतल की प्याली में घिसा चन्दन रखा था। रामरक्खामल्ल का भाई विष्णुनारायण पूजा–गृह में हवन–कुंड रखे, उसमें समिधा सजा रहा था। हवन–कुंड के एक ओर एक थाली में सामग्री तथा कर्पूर रखा था। समीप एक कटोरे में घी था। एक लोटा जल और एक पात्र आहुति–शेष लेने के लिए भी वहाँ पर पड़ा था।

रामरक्खामल्ल ने अपना लस्सी का लोटा ठाकुरों के सामने चौकी पर रख दिया और स्वयं कुंड के एक ओर आसन पर बैठ गया। उसके बैठते ही दो स्त्रियाँ आईं। एक विष्णुनारायण के बायें हाथ की ओर वाले आसन पर और दूसरी रामरक्खामल्ल के बायें हाथ की ओर आसन पर बैठ गई। वे इन दोनों भाइयों की पत्नियाँ थीं।

रामरक्खामल्ल का भाई विष्णुनारायण अधेड़ आयु का व्यक्ति था। चालीस वर्ष की आयु होगी। अभी कुछ ही बाल सफेद हुए थे। रामरक्खामल्ल उससे बीस वर्ष बड़ा था और उसके भी सिर और मूँछों के कई बाल सफेद हो चुके थे। इस पर भी रामरक्खामल्ल के मुख पर ओज था, उसके शरीर में गठन और बल था। विष्णुनारायण रामरक्खामल्ल से छोटे कद का तथा ढीला–ढाला व्यक्ति था। विष्णुनारायण की पत्नी, सुमित्रा लगभग अपने पति की आयु की ही थी। इस पर भी वह अपने पति से अधिक बूढ़ी प्रतीत होती थी। रामरक्खामल्ल की पत्नी लेखवती अपनी देवरानी से कम आयु की थी और देखने में भी अभी युवा ही प्रतीत होती थी। उसकी आयु बत्तीस वर्ष के लगभग थी।

रामरक्खामल्ल और विष्णुनारायण की पत्नियाँ आयीं तो एक अन्य स्त्री आकर यज्ञकुंड के समीप बैठ गई। यह दोनों भाइयों की बहिन सतवंती थी। विधवा होने से अब भाइयों के घर पर ही रहती थी।

इसके आते ही महर्षि स्वामी दयानन्द द्वारा रचित संस्कार–विधि में लिखा हुआ स्वस्ति–वाचन पढ़ा जाने लगा। विष्णुनारायण ने पुस्तक हाथ में ली हुई थी। अन्य सबको मन्त्र कण्ठस्थ थे। हवन अभी आरम्भ नहीं हुआ था और स्वस्ति–वाचन हो रहा था कि लाजवंती भी स्नान कर रेशमी धोती और कुरता पहने वहाँ आ गई।

हवन करना इनका नित्य का कार्य था। प्रायः घर के यही प्राणी हवन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सम्मिलित होते थे। केवल संक्रान्ति के दिन, जब हलुवा बनता था, तो घर के अन्य प्राणी भी आ जाया करते थे। आज संक्रान्ति नहीं थी। इस कारण अन्य कोई नहीं आया। घर में सात प्राणी और थे– विष्णुनारायण के दो लड़के और उनकी बहुएँ, बड़े लड़के श्यामनारायण का एक वर्ष का लड़का, रामरक्खामल्ल का लड़का जवाहरलाल तथा विष्णुनारायण का सबसे छोटा लड़का सदानारायण। ये प्राणी तो बस हलुवा खाने के लिए संक्रान्ति के दिन ही पूजा–गृह में आया करते थे।

हवन समाप्त हुआ, पूर्णाहुति डाली गई, शान्ति–पाठ पढ़ा गया और–

'ओं पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते,
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।'

मन्त्र से हवन समाप्त हुआ। इस पर दोनों भाइयों की बहिन सतवंती अपने आसन से उठकर ठाकुरों की चौकी के सामने आ बैठी और बड़े भाई द्वारा लाई हुई लस्सी से एक परात में ठाकुरों को स्नान कराने लगी। अन्य सब उठकर पूजा–गृह से बाहर निकल गए और अपने–अपने काम पर जाने की तैयारी करने लगे।

सुमित्रा और लाज रसोईघर में चली गईं। लेखवती भी अपने लड़के के लिए, जो मैट्रिकुलेशन परीक्षा की तैयारी कर रहा था, दूध गरम करने रसोईघर में जा पहुँची।

रामरक्खामल्ल घर के नीचे की मंजिल पर, जहाँ उसके रहने का कमरा था, उतर गया। वह सीढ़ियों पर उतर रहा था कि श्याम ऊपर से धड़–धड़ उतरता हुआ आ गया। यह विष्णुनारायण का बड़ा लड़का था। हाथ में लोटा लिए, कान पर यज्ञोपवीत चढ़ाए और कंधे पर अँगोछा डाले आया तो रामरक्खामल्ल ने उसके लिए मार्ग छोड़ दिया। सीढ़ियाँ उतरते–उतरते ही उसने कह दिया, "बड़े भापा! नमस्ते!"

"श्याम! अब नींद खुली है क्या?"

इतनी देर में श्याम छः–सात सीढ़ियाँ नीचे आ चुका था। तनिक ठहरकर बोला, "भापा! मधु रात–भर रोता रहा है और नींद नहीं आई। वह रात दो बजे ही सोया और तब जाकर हम सो सके।"

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, "मधु या मधु की माँ रोती रही है?"

लज्जित–सा श्याम सीढ़ियाँ उतर, मकान से निकल, कुएँ की जगत पर जा पहुँचा। इस समय साढ़े छः बज चुके थे। दिन निकल आया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्खामल्ल अपने कमरे में जाने से पूर्व बगल के कमरे में चला गया। वहाँ दो लड़के बैठे थे। वे दोनों लड़के पढ़ रहे थे। जवाहरलाल दसवीं श्रेणी में पढ़ता था और सदा पाँचवीं श्रेणी में। इनको पढ़ते देख, बिना इनको बुलाए रामरक्खामल्ल वहाँ से निकल अपने कमरे में चला गया। जवाहरलाल और सदानारायण को प्रातः चार बजे उठा दिया जाता था और दोनों शौचादि से निवृत्त हो साढ़े चार बजे के लगभग पढ़ने बैठ जाते थे। रामरक्खामल्ल इनको कहाँ करता था कि प्रातःकाल का पढ़ा हुआ सदा याद रहता है। दोनों लड़के लालाजी की सम्मति का बहुत आदर करते थे। वे प्रातः के समय ही पढ़ाई करते थे। वे इसका परिणाम भी अनुभव कर रहे थे। दोनों अपनी–अपनी परीक्षाओं में अच्छे अंक पाया करते थे। सदानारायण तो अपनी श्रेणी में 'मॉनिटर' था।

रामरक्खामल्ल अपने कमरे में जा एक आसन पर बैठ गया और तुलसी–रामायण खोल स्वर–सहित उसका पाठ करने लगा। उसकी पत्नी लेखवती बच्चों को दूध देकर वहाँ आ गई और पति के समीप बैठकर रामायण सुनने लगी।

रामरक्खामल्ल पढ़ रहा था :

सहज सकल रघुबर बचन कुमति कुटिल करि जान।
चलइ जोंक जल बक्रगति जद्यपि सलिलु सयान।।
रहसी रानि राम रुख पाई। बोली कपट स्नेह जनाई।।
सपथ तुम्हार भरत के आना। हेतु न दूसर मैं कछु जाना।।
तुम्ह अपराध जोगु नहीं ताता। जननी जनक बँधु सुखदाता।।
राम सत्य सबु जो कछु कहहू। तुम्ह पितु मातु बचन रत अहहू।।
पितहि बुझाइ कहहु बलि सोई। चौथे प जेहि अजसु न होई।।

इस प्रकार रामरक्खामल्ल एक घंटा से ऊपर तक रामायण का पाठ करता रहा, लेखवती वहाँ बैठी सुनती रही। जब पाठ समाप्त हुआ तो दोनों उठे और अपने–अपने कपड़े बदलने लगे। रेशमी कपड़े उतार दिए। साधारणतः सूती कपड़े पहन रामरक्खामल्ल ने छड़ी ली और घर से निकल गया। लेखवती ने दोनों बच्चों के स्कूल जाने वाले कपड़े तैयार किए और उनके कमरे में ले गई।

तब तक दोनों लड़के अपनी पढ़ाई का कार्य समाप्त कर परस्पर बातचीत करने लग पड़े थे। जब लेखवती कपड़े लेकर उनके कमरे में आई तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सदानारायण ने कह दिया, "तायी! जवाहर भापा कहता है कि वह कॉलेज में नहीं पढ़ेगा।"

"तो क्या करेगा?"

"कहता है नौकरी करेगा।"

लेखवती कुछ क्षण तक विचारमग्न अपने पुत्र का मुख देखती रह गई। पीछे बोली, "यह देख लेंगे। अभी परीक्षा पास करो। पीछे जैसे बड़े कहेंगे, वैसे ही होगा।"

"माँ! मैं पास तो अवश्य ही हो जाऊँगा, परन्तु मेरी इच्छा आगे पढ़ने की नहीं होती।"

"अच्छा–अच्छा बाबा! जब पास होकर आओगे, तब इस विषय पर विचार करेंगे। अभी तो यह जल मथने के समान है।"

इस पर सदानारायण बोल उठा, "जवाहर भापे! याद रखो। बड़ों का कहना मानना पुण्य का कार्य होता है। पढ़ना तो अक्ल सीखने के समान है। यदि नहीं पढ़ोगे तो बेअक्ल रह जाओगे।"

जवाहरलाल ने कह दिया, "इस पर भी मैं तुमसे ज्यादा अक्ल वाला ही रहूँगा। तुम कितने भी बड़े हो जाओ, मुझसे तो छोटे ही रहोगे।"

"वाह भापा! मैं आयु की बात तो कह नहीं रहा। मैं तो अक्ल की बात कह रहा हूँ। अक्ल बड़ी या भैंस?"

"देखो सदा! तुम छोटे से टटैने, बड़ों को उपदेश देने लगते हो।"

लेखवती दोनों लड़कों को झगड़ते देख मुस्कराती हुई कमरे से बाहर निकल गई। वह जानती थी कि यह झगड़ा प्रकृति की भिन्नता के कारण है। जवाहरलाल अपने पिता लाला रामरक्खामल्ल की भाँति हृष्ट–पुष्ट शरीर वाला था। उसकी बुद्धि भी पिता की तरह प्रखर थी और परिश्रम न करने की इच्छा भी उसमें अपने पिता से ही उत्तराधिकार में आई थी। सदानारायण अपने पिता जैसा था। उसका पिता समझदार और बद्धिशील तो था ही, साथ ही वह दूरदर्शिता में भी बढ़–चढ़कर था। विष्णुनारायण सदैव दूर की सोचा करता था– व्यापार में, परिवार की भलाई–बुराई में और अपने जीवन को चलाने में।

लेखवती ऊपर गई तो श्याम स्नान कर ऊपर आ चुका था और कपड़े पहन रहा था। उसकी पत्नी कला उसके समीप खड़ी कह रही थी, "बड़े भापाजी क्या कह रहे थे?"

लेखवती कमरे के आगे से गुजर रही थी। वह 'बड़े भापा' का शब्द सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
द्वार के बाहर खड़ी हो गई। कमरे का द्वार भिड़का हुआ था और लेखवती बिना भीतर के प्राणियों के देखे उनकी बात सुन रही थी।

श्याम ने कह दिया, "कुछ नहीं। वही जो तुम रात–भर कहती रही हो?"

"क्या कहती रही हूँ?"

"अपना रोना। तुम कहती थीं भापा मुफ्त की रोटियाँ तोड़ रहा है। मैंने मना किया तो तुमने क्रोध में मधु को पीटना आरम्भ कर दिया। मैंने तुमको चुप कराने के लिए तुमसे प्यार करना चाहा तो, तो तुमने मुझे भी एक चपत लगा दी और जब मैं चुपचाप अपने पलंग पर जा लेटा तो तुम रात–भर रोती रहीं।

"भापाजी पूछने लगे कि इतनी देर से सोकर उठा हूँ क्या? मैंने कह दिया, 'मधु रात–भर रोता रहा है, इस पर उन्होंने कह दिया, 'मधु या मधु की माँ?'

"मैं इनकार नहीं कर सका।"

"तो आपने मेरी चुगली खाई है?"

"चुगली क्या होती है? सत्य बात कहनी भी चुगली होती है क्या?"

"आपका घर विचित्र है! बाप–बेटा, ताया–भतीजा सब एक ही मिट्टी के घड़े हुए हैं। कोई सीधी बात कहो तो समझ में ही नहीं आती।"

लेखवती इससे अधिक नहीं सुन सकी। वह वहाँ से चली गई। कमरे में बातें चलती रहीं। श्याम कह रहा था, "देखो रानी! तुमने सीधी बात कहीं तो मैंने भी सीधा ही उत्तर दिया था। तुमने बच्चे को पीटा, मैंने तुम्हारा मुख चूम लिया। तुम ही बताओ, क्या वह सीधी बात का सही उत्तर नहीं था?"

"और फिर सीधे उत्तर का सीधा प्रत्युत्तर भी तो मिल गया था न।"

"वाह! मुख चूमने का उत्तर चपत कैसे हो गया?"

"बहुत जोर से लगी थी क्या?"

"तो चपत लगाने वाली को पता नहीं चला?"

"इसीलिए तो रात–भर रोती रही हूँ।"

"तुम रोती तो इसलिए रही हो कि तुम्हारे कहने पर मैं ताया और तायीजी से लड़ता नहीं।"

"मैं लड़ने के लिए कहाँ कहती हूँ? मैं तो इस घर से पृथक् होने के लिए कह रही हूँ।"

"बात एक ही है। मेरे पृथक् होने का अर्थ तो यही होगा कि मैं इस घर में तब रह सकता हूँ, जब तायाजी तथा उनका परिवार यहाँ से चला जाए?"

कला चुप कर गई। उसके चुप रहने का अर्थ स्पष्ट था कि उसके पति ने जो समझा है, ठीक ही समझा है। श्याम ने उसके चुप रहने का अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझकर कहा, "देखो रानी! तायाजी मेरे घर में नहीं रहते। वे पिताजी के घर में रहते हैं। मेरा अधिकार नहीं कि मैं उनसे कुछ कहूँ।"

"जब आपका इस घर में कुछ अधिकार नहीं है तो फिर यहाँ रहना भी बेकार है।"

"बेकार कैसे हो गया? मैं चालीस रुपए वेतन लाता हूँ। उसमें से केवल पाँच रुपए सदानारायण की स्कूल की फीस, किताबें और जेब–खर्चा के लिए देता हूँ। शेष पैंतीस रुपए बच जाते हैं। उनमें से पाँच रुपए मेरा जेब–खर्चा है और शेष तीस रुपया महीना बैंक में जमा करा देता हूँ। रोटी–कपड़ा हमको घर से मिल जाता है। मकान का भाड़ा देना नहीं पड़ता। वास्तव में और कुछ भी खर्चा 'नहीं?"

कला फिर चुप कर गई। अभिप्राय यह कि वह पुनः निरुत्तर हो रही थी। उसको चुप देख श्याम ने कहा, "अब पेट भर गया है न। जाओ रानी, रसोईघर में से भोजन ले आओ। मेरे दफ्तर जाने का समय हो रहा है।"

"आप रसोईघर में बैठकर क्यों नहीं खा आते?"

"तुम्हारे संग बैठकर एक थाली में खाऊँगा।"

"आज विशेष बात क्या हुई है?"

"आज रानी ने चपत जो मारी है। यह सहभोज उसकी मधुर–स्मृति में होगा।"

"मैं तो आपके साथ तब भोजन करूँगी, जब आप मेरी बात मानेंगे।"

"वह बात तो मानी नहीं जा सकती।"

"तो मैं नहीं लाऊँगी।"

"अच्छी बात, न खिलाओ। तुम्हारी इच्छा है।"

: 2 :

रामरक्खामल्ल अपनी गली से निकल सूहा बाजार में जा पहुँचा। वहाँ से वह जूता–बाजार में से होता हुआ सुर्जनसिंह के चौक में जा खड़ा हुआ। चौक में ही सुर्जनसिंह हलवाई की दुकान थी। रामरक्खामल्ल दुकान के एक पटरे पर जा बैठा। सुर्जनसिंह ने लाला रामरक्खामल्ल को आया देख, एक पाव दही की लस्सी बना दी। ढाई पाव का गिलास लस्सी का बनाकर लाला के सामने रख दिया। छः पूरियाँ और मेथी व अमचूर की चटनी। बैंगन की भाजी एक बड़े–से दोने में सामने रख दी। यह सब लाला रामरक्खामल्ल का नित्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R089.91 43
GUR-J
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का खाना था। पूरी खा, लस्सी पी और दो आने सुर्जनसिंह को दे रामरक्खामल्ल ने राम–राम कही और हीरामंडी की ओर चल पड़ा। वहाँ से वह रोशनाई दरवाजे की ओर मुड़ गया। रोशनाई दरवाजे से निकल वह गुरु अर्जुनदेव की बावली वाले गुरुद्वारे में जा पहुँचा। गुरुद्वारे के बाहर के फूल वाले के पास जूता रख, उससे एक पैसे के फूल एक पत्ते में ले, वह गुरुद्वारे में प्रविष्ट हो गया।

यहाँ गुरु अर्जुनदेव की समाधि थी। रामरक्खामल्ल समाधि पर फूल चढ़ा, गुरुद्वारे के भीतर के कमरे में जा पहुँचा। वहाँ ग्रन्थी बैठा पाठ कर रहा था। रामरक्खामल्ल दरबार साहब के सामने जा बैठा। दो मिनट पाठ सुन, दरबार साहब को माथा टेक, वह उठकर बाहर चला आया। गुरुद्वारे से निकल वह जूता पहनकर मस्ती दरवाजे की ओर चल पड़ा। दरवाजे से इधर ही किले की दीवार के साथ सुथरों की धर्मशाला थी। रामरक्खामल्ल, उस धर्मशाला में जा पहुँचा। एक चाँदी की छड़ी रेशमी गद्दी तथा तकियों पर रखी थी। छड़ी पर फूल चढ़े थे। यह छड़ी सुथरों की बादशाही का सत्ता–चिह्न थी। रामरक्खामल्ल ने छड़ी के सामने जा माथा टेका और फिर उठ एक ओर दस–पन्द्रह सिरमुँड़े सुथरे साधुओं की मंडली में जा बैठा। वे बैठे चरस का दम लगा रहे थे। एक सुथरे ने दम लगाया और चिलम दूसरे के हाथ में देकर नारा लगा दिया–

'सुथरे शाही दा बोलबाला
फिरंगी शैतान दा मुँह काला
रानी झांसी दा रोब दोबाला
राज हिन्दुआना केसरिया बाना
फते का डंका सदा बजाना।'

Central Library
167909
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

अब दूसरे ने दो–तीन कुश लगाए। चिलम पर से लपटें निकलने लगी थीं। वह भी चिलम को अगले के हाथ में पकड़ाकर लय से बोलने लगा–

पंजाब दा शेर आएगा फेर
बज्जेगा डंका, देगा खदेड़
खालसा गज्जे, मुल्ला भज्जे,
सुधरे दी शाही हमेशा सज्जे।'

इस प्रकार की बेतुकी बातों को तुकों में बाँधने का यत्न हो रहा था। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्खामल्ल की बारी आई तो उसने चिलम में एक सूटा लगाया और चिलम आगे चला दी।

"लाला, कुछ बोल न?" एक सुथरे साधु ने कह दिया।

रामरक्खामल्ल ने कहा, "शाहजी! महारानी झाँसी मारी गई और महाराजा रणजीतसिंह स्वर्ग सिधार गए। खालसा अंग्रेजों का मित्र बन अब उनकी फौज में भरती हो गया। मुल्ला मस्जिदों में घुस गए और मुसलमान अंग्रेज के बैरे और खानसामे हो गए।"

उसी सुथरे ने कहा, "लाला! एक सूटा और लगाओ। तुम्हारे ज्ञानचक्षु खुल जाएँगे और देखोगे, ये लाल कुर्ती वाले गोरे सिपाही समुन्दर पार भागे जा रहे हैं, और भगवान कृष्ण अपना सुदर्शन चक्र द्वारिका पर घुमा रहे हैं।"

"सो तो देखता हूँ, शाहजी महाराज! ये गोरे वे नहीं रहे, जो गदर के बाद आए थे। तब वे हिन्दू का आदर करते थे। मुसलमान को जूते की ठोकर मार कर सम्बोधन करते थे। अब तो साले अपने बैरे और खानसामों की बात सुनकर हिन्दू देवी–देवताओं को गाली देने लगे हैं।"

"सच लाला? तब तो इनका नाश निश्चय है।"

"देखो शाहजी! इनका नाश तो तब होगा, जब दैवी कृपा इस देश पर होगी। भला आज के हिन्दू पर देव कृपा क्यों करेंगे? जानते हो, पंजाब का बुरा हाल क्यों हुआ था?"

"क्यों हुआ था?"

"महाराजा रणजीतसिंह शेर तो था परन्तु बुद्धिमान नहीं था। उसने अपनी बहादुरी से अपने चारों ओर बहादुरों की टोली इकट्ठी कर ली थी। परन्तु वह बुद्धिमानों को आकर्षित नहीं कर सका था। हरिसिंह नलुए की कहानी सुनी है?"

"सुनी है। उसकी बहादुरी के कारनामे सुनकर आज भी पठानियों के हमल गिर जाते हैं। आज भी पठान औरतें अपने बच्चों को रोते हुए चुप कराने के लिए 'नलुआ आया! नलुआ आया!' कहकर डराया करती हैं।"

रामरक्खामल्ल हँसकर बोला, "शाहजी! आपने तो बस सिंह की गरज सुनी है। मैं उसकी एक अन्य बात बताता हूँ।"

रामरक्खामल्ल ने कहना शुरू किया, "नलुए ने पठानों के करीमखाँ को करारी हार दी थी। दो हजार पठानों को मौत के घाट उतार वह आगे बढ़ रहा था और पठान अपने गाँव छोड़–छाड़, अपने बीवी–बच्चों को ले सुलेमान पर्वत की घाटियों में छिपकर अपनी जानें बचा रहे थे। नलुआ में एक गुण था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह औरतों पर सदा दया करता था। एक गाँव से सभी लोग भाग गए थे। हरिसिंह की सेना रात्रि के अन्तिम प्रहर में गाँव के बाहर पहुँची थी और उसने डेरे डाल दिए थे। रात में ही गाँव खाली हो गया और पठान अपने बाल–बच्चों के साथ दूर पहाड़ियों में जा छिपे। इस भाग–दौड़ में एक युवा लड़की सोई हुई रह गई। प्रातःकाल वह उठी तो सिक्ख सैनिकों के हाथ पड़ गई। वे उसको अपने सरदार के पास ले आए। सबका विचार था कि इस सुन्दर लड़की को या तो सरदार अपनी पत्नी बना लेगा, या महाराज के पास 'तोहफा' बनाकर ले जायेगा। लड़की अति सुन्दर थी और एक ही थी। सैनिक, उसको पाने वाले, बीस थे और अपने को उसकी जूती से भी निकृष्ट समझते थे। किसी का साहस भी नहीं हुआ कि उस लड़की की ओर नजर भरकर देख ले।

"नलुआ अभी जपजी साहब का पाठ कर अपने खेमे से निकला ही था कि वे सिक्ख सिपाही लड़की को साथ लेकर वहाँ सामने आ खड़े हुए।

" 'यह कौन है?" सरदार ने पूछ लिया।

" 'यह इस गाँव में मिली है।'

"एक पठान दुभाषिए के द्वारा उस लड़की से पूछा गया, 'क्या कर रही थी, इस गाँव में?'

"लड़की ने उत्तर दिया, 'मैं प्रातः सोकर उठी तो अपने घरवालों को वहाँ नहीं पाया। मुझे नहीं मालूम कि वे कब और कहाँ भाग गए हैं। मैं उनको ही ढूँढ़ती हुई बाहर निकली थी कि इन लोगों ने मुझको पकड़ लिया और यहाँ ले आए।'

" 'तुम कहाँ जाना चाहती हो?'

'अपने माता–पिता के पास।'

'वे कहाँ है?'

" 'मैं नहीं जानती।'

" 'अच्छी बात है। तुम यहाँ इस खेमे में रहो। तुम्हारे माता–पिता को ढूँढ़कर तुमको उनके पास भेज दिया जायेगा।'

"लड़की के मुख पर परेशानी दिखाई दी तो नलुआ ने अपने सैनिकों को कह दिया, 'देखो गुरु के प्यारो! यह मेरी लड़की है। इसकी ओर किसी ने कुदृष्टि की तो उसकी आँखें निकाल दी जाएँगी।'

"एक सैनिक ने डरते–डरते कहा, 'सरदार बहादुर! हम इस लड़की को महाराज को 'तोहफा' के रूप में देने के लिए लाए हैं।'

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हरिसिंह ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर पूछ लिया, 'तुम इस लड़की के क्या हो जो इसको तोहफे में दोगे?'

" 'हमने यह समर में लूटी है।'

" 'महाराज लूट का माल नहीं लेंगे। यदि इसके माता–पिता दरबार में जाकर इसकी भेट दें तो बात दूसरी है। इसको इसके माता–पिता के पास पहुँचा दिया जाएगा।'

"उसी दिन एक सैनिकों के जत्थे के हाथ में सफेद पताका देकर उस लड़की को पहाड़ियों में भेज दिया गया। उस गाँववालों को ढूँढ़ा गया और लड़की उनके हवाले कर दी गई। लड़की का बाप सरदार का शुक्रिया अदा करने के लिए आया। उसकी खातिर की गई और फिर उसको पुनः अपने गाँववालों के पास लौट जाने दिया गया।

"नलुआ का इरादा पेशावर और फिर वहाँ से काबुल तक जाकर सिक्खों के राज्य का झंडा गाड़ देने का था। परन्तु इस बहादुर वीर के साथ कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति नहीं था, जिसके कारण ही परिणाम भयानक हुआ।

"एक दिन हरिसिंह अपने दो साथियों के साथ एक नाले में स्नान करने जा रहा था। नाला सेना–शिविर से आधे फर्लांग के अन्तर पर था। ये तीनों गुरु के प्यारे वहाँ अभी पहुँचे ही थे कि एक पठान एक बहुत सुन्दर कुत्ते के बच्चे को बगल में उठाए हुए वहाँ पहुँचा और नाला पार करने लगा। हरिसिंह ने उस पठान को ललकारा। वह लौटा और सामने आ खड़ा हुआ। हरिसिंह ने कहा, 'इस कुतूरे को मुझे दे दे?'

"पठान ने पूछा, 'क्यों?'

" 'यह बहुत खूबसूरत है।'

" 'यह कोई वजह नहीं कि इसे तुमको दे दूँ।'

" 'तो दाम ले लो। बताओ क्या दाम चाहते हो?'

" 'यह अनमोल वस्तु है। दाम पर नहीं मिल सकती।'

" 'एक सौ दिनार (स्वर्ण मुद्रा)।'

"पठान ने सिर हिलाते हुए कहा, 'नहीं, यह किसी भी मूल्य पर नहीं मिल सकता।'

" 'तो हम बलपूर्वक ले लेंगे।'

"(पठान ने अपनी तलवार निकाल ली और कह दिया, 'एक से एक लड़ लो। मार डालो तो यह कुतूरा ले जा सकते हो।'

"फिर क्या था! हरिसिंह और उस अज्ञात पठान में द्वन्द्व–युद्ध होने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वार और जवाबी वार चलने लगे। पठान एक हाथ में कुतूरा पकड़े हुए था और दूसरे में तलवार पकड़े लड़ रहा था। पठान भी तलवार का धनी था। दोनों बहुत कुशलता से लड़ रहे थे। एकाएक हरिसिंह की तलवार बिजली की तरह चमकी और पठान की गर्दन को चाक कर आर–पार हो गई। उस समय पठान का तलवार वाला हाथ उठा हुआ था। नलुए की तलवार पठान की गर्दन काट निकल गई, परन्तु सिर अभी भी गर्दन पर टिका था और उस पठान का तलवार वाला हाथ अपनी पूरी ताकत से हरिसिंह के कंधे पर जा पड़ा। हरिसिंह अब असावधान था। वह अपने वार को पठान का काम तमाम करते देख, कुतूरे को लेने के लिए आगे बढ़ गया था। पठान की तलवार उसके कंधे को चीरती हुई, फेफड़े को काटती हुई आधी छाती काट अटक गई और पठान का सिर हँसता हुआ भूमि पर लुढ़क गया। हरिसिंह वहीं ढेर हो गया। वह, जो एक अति सुन्दर युवा लड़की से भी विचलित नहीं हुआ था, एक कुतिया के लिए प्राण दे बैठा।

"महाराजा रणजीतसिंह और उनके साथी शूरवीर थे, परन्तु बुद्धिमान नहीं थे।

''महाराजा के साथ भी यही हुआ। जब महाराजा रणजीतसिंह बीमार पड़े तो ज्यों–ज्यों दवा की, मरज बढ़ता गया। यह कानों–कान कहाँ जा रहा था कि महाराज को विष दे दिया गया है।

''महाराज की मृत्यु प्रत्यक्ष रूप में ज्वर से ही हुई। उनके मरने का अभी समय नहीं आया था। वे अभी उनसठ वर्ष के थे, जब उनका देहावसान हुआ।''

रामरक्खामल्ल जब भी इस धर्मशाला में आता था, वह आपबीती घटनाओं को सुनाया करता था। उसे आया देख चिलम गरम हो जाया करती थी और चरस की लपटें उठने लगती थीं। रामरक्खामल्ल को भी बारी–बारी से सूटा लगाने को मिल जाया करती थी और वह भूल जाया करता था कि उसे घर भी जाना है।

आज एक साधु संतोषशाह, जो कश्मीर गया हुआ था, आया था, और रामरक्खामल्ल की बातें बहुत ध्यान से सुन रहा था। उसने रामरक्खामल्ल से पूछ लिया, ''लाला! कितनी आयु है तुम्हारी?''

''इस समय साठ वर्ष का हूँ।''

''तुम कितने बड़े थे जब शेरे–पंजाब का देहान्त हुआ था?''

''मैं उसी वर्ष पैदा हुआ था। परन्तु मैं जो कहानी तुमको बता रहा हूँ, वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझको मेरे एक मित्र सोहनसिंह ने, जो अंग्रेजी सेना में मेरा मित्र बन गया था, सुनाई थी।''

''तो तुम अंग्रेजी सेना में भी रह चुके हो?''

"हाँ।''

: 3 :

इस पर तो साब सुथरे साधु इकट्ठे हो रामरक्खामल्ल को अपनी सेना की बातें बताने के लिए, उसका आग्रह करने लगे। परन्तु चिलम में चरस समाप्त हो गई थी और अब चिलम रामरक्खामल्ल के हाथ में थी। उसने कश लगाया तो खाली धुआँ उसके मुख में आ गया। रामरक्खामल्ल ने चिलम उल्टी कर, उसमें का कोयला निकालकर देखा। चरस का उसमें नामोनिशान नहीं था। उसने चिलम एक ओर उल्टी करके रख दी और कहा, ''बाबा! कहानी लम्बी है, कल सुनाऊँगा। एक गोली चरस भला कितने पी सकते थे? कल चरस मैं अपने पास से लाऊँगा और फिर अखाड़ा जमेगा।''

रामरक्खामल्ल उठकर घर को चल पड़ा। दिन के दस बजे थे। बाजार खुल गया था। रामरक्खामल्ल काम करता था, बजाजी की दलाली। वह बजाज हट्टा में पहुँच गया और दो–ढाई घंटे के चक्कर में दो–तीन सौ का माल इधर–उधर कर साढ़े बारह बजे घर जा पहुँचा।

विष्णुनारायण घर पर खाना खाने आया हुआ था। रामरक्खामल्ल ने हाथ धोये और रसोईघर में जा बैठा। विष्णुनारायण ने अपने बड़े भाई को देखा तो कह दिया, ''आओ भापा! हो आये बाजार से?''

''हाँ! आज तो ढाई रुपये ही मिले हैं।

'तो और क्या चाहिए? कुछ पूँजी भी तो नहीं लगाई। न हींग लगी न फिटकरी और रंग चोखा। दुकान की बात देख लो। बीस हजार रुपया लगा है और बहुत कठिनाई से, बाप–बेटा दोनों मेहनत करते हैं तो दस–ग्यारह की बचत होती है।''

"भैया, ठीक है। 'भरम–भाव' तो बना है न। श्याम की बहू आज अपने पति से पूछ रही थी कि यह बूढ़ा रोटियाँ ही तोड़ता है या कुछ कमाता भी है?

''बहुत मूर्ख है। कब कह रही थी?''

"कल रात के ग्यारह–बारह बजे। मैं लघु–शंका के लिए उठा था कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके कमरे में हल्ला सुन दरवाजे से कान लगा सुनने लगा। बहुत मजेदार बातें हुई थीं। सब खेल समाप्त हुआ तब चट से एक ने दूसरे के मुख पर चपत मारी थी।''

''किसने किसके मुख पर चपत मारी थी?''

"भैया! यह तो नहीं जान सका। दरवाजा बन्द था। इस पर भी चपत की आवाज बहुत जोर से आई थी।''

विष्णुनारायण की पत्नी सुमित्रा, जो खाना खिलाने बैठी हुई थी, अपने जेठ के लिए थाल में खाना परोसते हुए बोली, ''जरूर श्याम ने पीटा होगा। आ ले मैं उसको डाँटूँगी। भले घर की लड़की है, भीतर–ही–भीतर पी गई है। कोई और होती तो भागी हुई अपने मायके चली जाती और नगर–भर में हो–हल्ला करती फिरती।''

''श्याम बहुत ही मूर्ख है।''

सुमित्रा ने थाल जेठ के आगे सरका दिया तो रामरक्खामल्ल खाने लगा। रामरक्खामल्ल की पत्नी रामरक्खामल्ल से तीस वर्ष छोटी थी। जब रामरक्खामल्ल बयालीस वर्ष का था तो उसने विवाह किया था और उसे बारह वर्ष की पत्नी मिली थी। अब वह बत्तीस वर्ष की आयु की थी। उसके घर एक ही लड़का हुआ था– जवाहरलाल, और वह अब पन्द्रह वर्ष का था। जवाहर इस वर्ष मैट्रिक की परीक्षा देने वाला था।

रामरक्खामल्ल अपने यौवनारम्भ काल में घर से भाग गया था। उस समय विष्णुनारायण का जन्म भी नहीं हुआ था। पिता को पता चला कि लड़का अंग्रेजी सेना में भरती हो गया है तो विवश हो गया। उसको विदित था कि सेना में भरती हुए को नौकरी छोड़ने को कहना अपराध है।

उसके सेना में भरती हो जाने के छः मास बाद गदर फूट पड़ा। लाहौर में भी इसकी गूँज पहुँची। यह समाचार नगर में आया कि पूर्वियों ने विद्रोह कर दिया था और गोरे सिपाहियों ने उनको गोलियों से भून डाला है। उसके बाद रामरक्खामल्ल की भी कोई खबर नहीं आई। यह समझ संतोष कर लिया गया कि वह भी पूर्वी सैनिकों में मर गया है।

इस घटना को चौदह वर्ष व्यतीत हो चुके थे कि लाला धन्नामल्ल आढ़ती की दुकान के सामने एक बैरागी साधु आ खड़ा हो, दुकान पर बैठे हुओं को देखने लगा। धन्नामल्ल रामरक्खामल्ल के पिता का नाम था। दुकान पर धन्नामल्ल और उसके साथ एक चौदह वर्ष का लड़का बैठा था। लड़के के हाथ में विवाह का गाना बँधा था। रामरक्खामल्ल, जिसका साधुपन का नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गरीबदास था, पिता को पहचान गया था और विष्णुनारायण को देखकर उसके अपने छोटे भाई होने का अनुमान लगा रहा था। उसको स्मरण था कि वह जब सेना में भरती हुआ था, तो उसकी माँ गर्भवती थी।

पिता ने पुत्र को नहीं पहचाना। पुत्र लंगोट बाँधे, शरीर पर भस्म रमाये, सिर पर जटा–जूट धारण किए, दाढ़ी और मूँछें रखे हुए खड़ा था। कान फाड़े हुए थे और उनमें कुण्डल पड़े थे। धन्नामल्ल ने बैरागी बाबा को खड़े देख समझा कि भिक्षा चाहता है। उसने गल्ले में हाथ डाला। एक ताम्बे का पैसा निकाल बाबा की ओर हाथ बढ़ाकर उसने कहा, "लो बाबा!"

"नहीं!" गरीबदास ने कमण्डलु आगे नहीं बढ़ाया। वह दुकान के थड़े पर बैठकर बोला, "पिताजी! पहचाना नहीं?"

धन्नामल्ल बहुत ध्यान से सामने बैठे मुस्कराते हुए साधु को देखने लगा। उसने पहचाना तो उसका मुख खिल उठा। गरीबदास ने पिता के पाँव को हाथ लगा चरण–वन्दना कर कहा, "मैं रामरक्खा हूँ।"

धन्नामल्ल ने पाँव पीछे खिसकाते हुए कहा, "देखो! तुम पाँव मत छुओ। अब तुम संन्यासी हो गए हो और हम गृहस्थियों के पूज्य हो। तुमको जीवित देख बहुत प्रसन्नता हुई। कहाँ रहे हो इतने दिन?"

गरीबदास अब पालथी मार निश्चिन्त हो बैठ गया और बताने लगा, "यह तो आपको विदित ही है कि मैं घर से भाग, सेना में भरती हो गया था। मुझको फौजी शिक्षा दी जाने लगी थी। हमारा पचास रंगरूटों का एक दस्ता था और उनको सिखाने वाला एक सोहनसिंह जमादार था। वह मुझसे बहुत स्नेह रखने लगा था। मैं प्रायः उसकी बैरक में जाया–आया करता था और उससे बहुत ही हेल–मेल रखता था।

"एक दिन मेरे विषय में आज्ञा आई कि मैं पूर्वियों की रेजिमेंट में शामिल किया गया हूँ। इस आज्ञा को सोहनसिंह ने मुझे नहीं दिया। सेना के बड़े अधिकारी मेजर जॉनसन के पास जाकर उसने कह दिया कि न तो पूर्विये मुझको पसन्द करेंगे और न ही मैं उनके खान–पान और चौके–चूल्हे में समा सकूँगा। इस कारण मुझे सिक्ख रेजिमेंट में रखा जाए। मेजर समझता था कि मेरे केश न होने से मुझको सिक्ख पसन्द नहीं करेंगे। इस कारण मुझे डोगरा रेजिमेंट में भेजने का प्रबन्ध होने लगा। न तो सोहनसिंह इससे संतुष्ट था और न ही मैं। उस समय लाहौर में कोई डोगरा रेजिमेंट नहीं थी। होशियारपुर में एक रेजिमेंट थी और मुझे वहाँ पर जाने का हुक्म होने वाला था।

"इस समय तक पूर्वियों की रेजिमेंट का सूबेदार हरिहर पांडे मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मेल–जोल बढ़ाने लगा था। उसको यह पता चल गया था कि मैं उनकी रेजिमेंट में जाने वाला हूँ। एक दिन वह मुझको परेड मैदान में एकान्त स्थान पर ले जाकर कहने लगा, 'राम! तुम हिन्दू हो न?'

'' ''हाँ पांडेजी! आपको सन्देह क्यों हुआ?' मैंने कहा।

'' 'हिन्दू धर्म के लिए जान देने को तैयार हो न?'

'' 'क्यों नहीं?'

'' 'तो खाओ गो–माता की कसम कि तुम धर्म के लिए जान तक देने को तैयार हो।'

'' 'मैंने कसम खा ली–मैं हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए जान तक दे दूँगा और यदि इसमें संकोच करूँगा तो मुझको गो–मांस खाने का पाप लगे।

''इस पर पांडे ने कहा, 'अंग्रेज गो–मांस और सूअर का मांस खाते हैं। अब उन्होंने हमारा धर्म भ्रष्ट करने के लिए, ऐसे कारतूस बनाकर भेजे हैं जिन पर गाय और सूअर की चर्बी लगा कागज लपेटा होता है। हमने अपना सन्देह बताया तो वे कारतूस अभी इस्तेमाल के लिए नहीं बाँटे गए। इससे हम सब का सन्देह पक्का हो गया है।'

'' 'अब हमने यह निश्चय कर लिया है कि हम इन विधर्मियों की गुलामी से छुटकर अपना राज्य स्थापित करेंगे।'

'' 'यह तो ठीक है पांडेजी!' मैंने कहा– 'मैं आपके साथ हूँ, परन्तु इनको निकालकर क्या सिक्खों का राज्य होगा?'

''सिक्ख हमारे साथ शामिल नहीं हो रहे।'

'' 'फिर?'

'' 'दिल्ली के बादशाह शहंशाह बहादुरशाह जफर का राज्य होगा।'

'' 'पिताजी! आपने मुझको बताया था कि महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु के बाद सिक्ख सेना और सरदारों ने कितना ऊधम मचाया था। इससे सिक्खों का राज्य नहीं होगा, यह सुन मुझको सन्तोष हुआ था, परन्तु शहंशाह बहादुरशाह के राज्य की बात सुन मेरा उत्साह ठंडा पड़ गया। मैं विचार करने लगा कि हिन्दुओं को कैसे मुसलमानों को राज्य स्वीकार हो सकता है! अपने राज्यकाल में इन मुसलमानों ने इतना अत्याचार किया था कि उनका राज्य सिक्खों से अधिक सुखकर हो सकेगा क्या?'

'मैंने पांडे से कहा, 'बात कुछ जँची नहीं। दिल्ली का बादशाह सूअर तो बचा लेगा, परन्तु गाय नहीं बचेगी।'

'' 'तो क्या किया जाय? मुसलमान हमारे साथ शामिल होने के लिए तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही तैयार हुए हैं, जब हम दिल्ली के बादशाह को हिन्दुस्तान का बादशाह मानने के लिए तैयार हो जाएँ।'

" 'तो गौ की कसम खाकर गौ के खाने वालों का राज्य स्थापित करने जा रहे हैं, आप?'

"पांडे ने एक नियन्त्रित सिपाही की भाँति कह दिया, 'यह बात हमारे नेताओं के विचार करने की है। उन्होंने इस बात पर विचार किया होगा।'

" 'मुझको क्या करने को कहते हैं?' मैंने भी एक नियन्त्रित सिपाही की भाँति आज्ञा माँग ली।

" 'यही कि जब विद्रोह का बिगुल बजे तो तुम हममें शामिल हो जाना। हमारी पूरी रेजिमेंट तैयार है। तुम्हें हमारे कंधों से कंधा लगाकर हिन्दुस्तानी राज्य के लिए लड़ना होगा।'

"बात तय हो गई। मैंने इसका जिक्र किसी से नहीं किया। इस घटना के कई दिन बाद की बात है। मैं सोहनसिंह के साथ लाहौरी दरवाजे के बाहर बंदर–बंदरिया का नाच देख रहा था कि सोहनसिंह ने मेरी बाँह–में–बाँह डालकर मुझको दूर ले जाते हुए कहा, 'राम! ये नाच बहुत देखे हैं। आओ तुमको असली नाच की बात बताऊँ।'

"मैं उसके साथ अनारकली बाजार की ओर चल पड़ा। यह बाजार अभी उजाड़ था। कहीं–कहीं कुछ बैठकें बन गई थीं और उनमें वेश्याएँ आकर रहने लगी थीं। साथ ही बैठकों के नीचे श्रृंगार की दुकानें खुलने लगी थीं।

"मदारी के गोल से निकलते ही सोहनसिंह ने मुझसे पूछ लिया, 'तुमसे हरिहर पांडे ने कुछ कहा है?'

"मैं पांडे को, किसी से भी बात न कहने का वचन दे चुका था। साथ ही मैं जानता था कि विद्रोह की बात मुख से निकालने का अर्थ क्या है। सोहनसिंह मेरे साथ गहरी मित्रता का भाव रखता था, इस पर भी मैं यह बात तो अपने किसी सगे से भी न करने का प्रण ले चुका था। इस बात का अधिकारियों को पता लग जाने का अर्थ था गोली से मारकर उड़ा दिया जाना। मैंने कह दिया, 'नहीं तो।'

" 'देखो राम!' सोहनसिंह ने कहा, 'मेरी बात सुन लो। उस दाल–भात खाने वाले की बात में कभी शामिल न होना। वह मूर्ख कह रहा है कि फिरंगी को निकाल कर दिल्ली के बूढ़े बादशाह जफर का राज्य स्थापित करेंगे।'

"मैंने पूछ लिया, 'तो तुम उसको मूर्ख कहते हो?'

" 'मूर्खता यह है कि गौ की सौगन्ध देकर गौ हत्यारों को राजा बनाने के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
लिए कह रहा है। ये गोरे फिरंगी भी तो गो–मांस खाते हैं परन्तु अपने घर में बैठकर। और मुसलमान तो शरा–ए–आम में गौ की कुरबानी करते हैं। कुरबानी के लिए गाय का जुलूस निकालते हैं। मुसलमानी राज्य में एक बात और भी होती थी कि हम अपने धर्म–ग्रन्थ भी पढ़ नहीं सकते थे। अब तो इस फिरंगी सरकार ने रेजिमेंट में एक ग्रन्थी नियुक्त कर दिया है, जो दिन–रात गुरुवाणी पढ़ता रहता है।'

" 'जानते हो किले के बाहर गुरुद्वारा कैसे बना था? वहाँ गुरु महाराज अर्जुनदेवजी की इन मुसलमानों ने हत्या की थी। देखो राम! इन पूर्वियों ने अंग्रेजों की ओर से लड़कर पहले उनको राज्य स्थापित कराया था, अब दिल्ली के बादशाह की ओर से लड़कर उसका राज्य लाएँगे।'

" 'सुना है मरहट्टे सरदारों ने भी इस विद्रोह में शामिल होना स्वीकार कर लिया है। मरहट्टे अपने में बहुत चतुर बनते हैं। कभी इधर कभी उधर हो जाते हैं। अंग्रेजों से सुलह कर दिल्ली के बादशाह को मरवाया और फिर मुसलमानों तथा अंग्रेजों से मिलकर अपने भाइयों से लड़ पड़े। ये समझते हैं कि इन जैसा चतुर इस संसार में कोई नहीं है।'

"हम सिक्खों ने यह निर्णय किया है कि हम इन मूर्खों के साथ मिलकर नहीं लड़ेंगे। हम उनका राज्य स्थापित करने के लिए अपना खून नहीं बहायेंगे, जिन्होंने दशम गुरु के बच्चों को जीवित दीवार में चिन दिया था।

" 'मैंने कह दिया, 'पांडे ने मेरे साथ कोई ऐसी बात नहीं की।'

" 'तब ठीक है। देखो राम! मुसलमानों से तो अंग्रेज अच्छा है। सिक्खों से भी यह अच्छा है। स्वर्गीय महाराज तो ठीक थे। उनके राज्य में हमने बहुत ही सुख पाया था। महाराज ने कभी भी अपने परास्त विरोधी के साथ निर्दयता का व्यवहार नहीं किया। अपनी प्रजा में हिन्दू–मुसलमानों में भेद–भाव नहीं किया। पर उनके देहान्त होते ही सिक्ख सरदारों और सैनिकों ने जो अत्याचार परस्पर एक–दूसरे के साथ और फिर प्रजा के साथ किए थे, वे ऐसे थे कि उनका राज्य रह ही नहीं सकता था।'

"मुझे सोहनसिंह का कथन सर्वथा सत्य प्रतीत हुआ। हमको राज्य–कार्य में और राजनीति में अंग्रेजों से बहुत कुछ सीखना था। मुझको तब भी विदित था कि अंग्रेज का देश नौ हजार मील दूर है। उनके गवर्नर की जगह यदि कोई हमारा हिन्दुस्तानी गवर्नर होता और उसके मालिक इतनी दूर बैठे होते, जितनी दूर अंग्रेजों का राजा रहता है, तो निस्संदेह वह अपना स्वतन्त्र राज्य बना लेता। निजाम हैदराबाद ने यही किया था। मरहट्टे ऐसा ही कर रहे थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और सिक्ख भी महाराजा रणजीतसिंह की मृत्यु के उपरांत यही करने लगे थे। मुझे चुप देख सोहनसिंह ने बात का विषय बदल दिया।

"मैं रात बैरक में पहुँचा तो मेरे मस्तिष्क में पूर्वियों और सिक्खों में युद्ध की सम्भावना अधिक प्रतीत होने लगी थी। अंग्रेजों को स्वयं पूर्वियों के खून से हाथ रँगने की आवश्यकता नहीं रही थी। सिक्ख ही विद्रोही पूर्वियों का सफाया करने वाले प्रतीत हुए थे। मैं अपने वचन की बात स्मरण कर काँप उठा था। पर मैं वचन–भंग करना महापाप मानता था और एक सिपाही की भाँति मन में यह सोचकर सो गया कि 'जाको राखे साइयां, मार सके न कोय।'

"अगले दिन हम परेड से लौट रहे थे। सोहनसिंह मेरे साथ था। हम पूर्वियों की परेड देखने के लिए खड़े हो गए। एक गोरा अफसर परेड करा रहा था। कुछ दूरी पर एक गोरा रेजिमेंट परेड कर रही थी।

"पूर्वी जवान गोरे सिपाहियों से अधिक नियन्त्रित और चुस्त दिखाई देते थे। हम उनको देखने मैदान के किनारे खड़े हो गए। हमें देखते हुए अभी दस मिनट भी नहीं हुए थे कि एक घुड़सवार बहुत तेजी से घोड़ा दौड़ाता हुआ वहाँ आया और हमारे पास घोड़ा खड़ा कर, घोड़े से उतर कर हमसे पूछने लगा, 'दस नम्बर रेजिमेंट की बैरक किधर है?'

"मैंने देखा कि वह सवार मुसलमान था और साफ–सुथरे कपड़े पहने हुए था। ऐसा मालूम होता था कि अभी–अभी वह गुसल कर तेल–इतर लगा अपनी महबूबा के पास जा रहा है। मैंने पूछ लिया, 'किससे काम है?'

" 'हरिहर पांडे से।'

"मैंने कह दिया, 'वह परेड करने वालों में तीसरी पंक्ति में चौथा सूबेदार है, जो बाहर हो चल रहा है।'

"इस पर वह अपने कपड़ों को झाड़ता हुआ हमारे साथ ही खड़ा हो परेड के समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगा। उसको आये अभी पाँच मिनट भी नहीं हुए थे कि एक गोरा सिपाही घोड़े को सरपट दौड़ाता हुआ वहाँ आया और छलाँग लगा घोड़े से उतर पड़ा। उसने घोड़े की लगाम घोड़े की पीठ पर फेंकी और सीधा कवायद कराने वाले गोरे अफसर की ओर चल पड़ा। वह गोरा सवार मिट्टी से लथपथ हो रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि वह दूर कहीं से भागा चला आ रहा है। गोरे सवार ने अफसर के सामने खड़े हो, फौजी सलाम की और जेब से एक चिट्ठी निकाल अफसर के हाथ में दे दी। अफसर ने चिट्ठी खोली, पढ़ी और कुछ क्षण तक विचार कर उसने पूर्वी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेजिमेंट को बुलाने के लिए बिगुल से आज्ञा दे दी।

"पूर्वियों की रेजिमेंट आज्ञा का पालन करती हुई अफसर के सामने आ खड़ी हो गई। उसको हथियार भूमि पर रखने की आज्ञा हो गई। जब हथियार रख दिए गए तो उनको पचास पग पीछे हट जाने के लिए कह दिया गया। अब गोरा रेजिमेंट को बुला लिया गया और उसको पूर्वियों के हथियारों के पास खड़ा कर दिया गया। तदनन्तर गोरा रेजिमेंट का मुख पूर्वियों की ओर कर आज्ञा दे दी गई, 'शूट दि ब्लैकी डॉग्ज' (इन काले कुत्तों को शूट करो)।

"गोरे सिपाहियों ने बन्दूकें सीधी कीं और गोली चला दी। पूर्वियों को पता चला तो वे भागे और गोरे सिपाहियों ने उनका पीछा किया। प्रायः सब पूर्वी चुन–चुनकर मार डाले गए।

"जब यह सब हो रहा था तो सोहनसिह मुझको, बाँह–में–बाँह डालकर, घसीटता हुआ वहाँ से नगर की ओर ले गया। हम जब गुरु अर्जुनदेव की समाधि के बाहर पहुँचे तो सोहनसिंह ने मेरे कान में कहा, 'मैं सेना छोड़ भाग रहा हूँ।'

" 'क्यों?' मेरा प्रश्न था।

" 'हम भी तो ब्लैक हैं। हुक्म सुना है कि नहीं? भाग चलो तुम भी, नहीं तो आज खैर नहीं।'

" 'कहाँ जा रहे हो?'

" 'मैं यहाँ से अमृतसर और वहाँ से सरहिंद और फिर पटियाला जाऊँगा। सेना छोड़कर इन फिरंगियों के राज में नहीं रह सकते।'

" 'मैं कहाँ जाऊ?'

" 'घर मत जाना। पकड़ लिए जाओगे।'

" 'तो मैं हरिद्वार चलता हूँ।'

"पिताजी! हम दोनों अमृतसर तक इकट्ठे गए। पीछे हम पृथक–पृथक हो गए। मैंने अपनी फौजी पोशाक उतार फेंकी और साधारण वस्त्रों में हरिद्वार जा पहुँचा। तदन्तर मैं एक उदासी महंत का चेला बन गया। इस अवधि में पूर्ण हिन्दुस्तान घूमा हूँ। आज लाहौर पहुँचा तो आपके दर्शन करने को जी कर आया और दुकान के सामने आ खड़ा हुआ हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 4 :

धन्नामल्ल अपने पुत्र को जीवित देखकर अति प्रसन्न था। प्रसन्नता में ही उसने कहा– "देखो राम! यह तुम्हारा भाई विष्णुनारायण है।" उसने समीप बैठे चौदह वर्ष के कुमार की ओर संकेत कर दिया। रामरक्खा का भी ऐसा ही अनुमान था। उसने स्नेहमयी दृष्टि से अपने भाई की ओर देखा और कहा, "देखो विष्णु! मुझे याद रखना। मैं जब कभी लाहौर आया तो तुमसे अवश्य मिलने आया करूँगा।"

"भापा!" विष्णुनारायण ने मुस्कराते हुए कहा, "जाने की आवश्यकता है क्या? अब यहीं रह जाओ न?'

"यहाँ कहाँ? घर में तो मैं रह नहीं सकता। मैं साधु हूँ। साथ ही अभी मेरी घूमने की हवस नहीं मिटी। मैं वैद्यनाथ–धाम, कामाख्या, पुरी, भुवनेश्वर इत्यादि स्थानों को देखता हुआ रामेश्वर, चिदम्बरम्, मथुरा और प्रयाग तथा पुष्करराज होता हुआ आया हूँ। अब अमरनाथ जा रहा हूँ। इच्छा कैलास जाने की भी है।"

इतने स्थानों के नाम सुन विष्णु आश्चर्य में मुख देखता रहा। वह तो अमृतसर भी देखने नहीं जा सका था। दूर जाने की तो उसको स्वप्न में भी आशा नहीं थी। इस पर पिता ने कह दिया, "माता से मिलने चलोगे?"

"हाँ, लेकिन बैठूँगा घर से बाहर ही।"

पिता ने विष्णु से कह दिया, "जाओ, अपनी माँ को खबर दे दो कि भापा आया है।"

विष्णु लम्बे–लम्बे पग उठाता हुआ अपनी गली की ओर चला गया। विष्णु जब घर कहकर दुकान पर वापस आया तो पिता अपने साधु–पुत्र को लेकर घर आ पहुँचा।

माँ ने अपने पुत्र के जीवित लौट आने का समाचार सुना तो मुहल्ले–टोले वालों को बुला–बुलाकर इसकी धूम मचाने लगी। जब तक पिता पुत्र को लेकर गली में पहुँचा, गली की स्त्रियों और बच्चों की धन्नामल्ल के मकान के बाहर भीड़–सी लग गई थी।

गरीबदास आया तो पुत्र को विभूति रमाये देख माँ रोने लगी। सतवंती भी रो रही थी। मुहल्ले की सब स्त्रियां, जिन्होंने रामरक्खामल्ल को साधु होने से पहले देखा था, उसको पहचाना तो उसके मुख पर तेज देख चित्रवत देखती रह गईं। वे, जो उसे पहले नहीं जानती थीं और जिन्होंने उसको पहले कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं देखा था, गम्भीरतापूर्वक विचार कर रही थीं कि वह घर से भाग क्यों गया था।

रामरक्खामल्ल मकान के थड़े पर चौकड़ी मारकर बैठ गया। एक पड़ोसिन उसको देख बोली, ''राम! तुम्हारा मित्र सोहन तो अब दो बच्चों का बाप हो गया है?''

''सच मौसी! सब प्रभु की माया है।''

''मेरा कहाँ मानो। भीतर जा स्नान करो और कपड़े पहन भले–मानुष की भाँति माँ–बाप की सेवा करो।''

''पर मौसी! यह बँधन,'' उसने कानों में पड़े कुण्डलों को हाथ लगाते हुए कहा, ''अब नहीं टूट सकता। परम गुरु गोरखनाथ के चरणों में रहने का सौभाग्य कैसे छोड़ दूँ?''

वह औरत चुप कर गई। इस समय रामरक्खामल्ल की माँ एक थाल में खाना ले आई और अश्रुपूर्ण आँखों से पुत्र की ओर देखते हुए, थाल उसके सामने रख हाथ जोड़ने लगी। रामरक्खामल्ल माँ का हाथ जोड़ना, सह न सका। उसने माँ के चरणों पर हाथ लगाते हुए कहा, ''भगवती! हाथ जोड़कर मेरे पापों का बोझा मत बढ़ाओ। मैं पहले ही बड़ा पापी हूँ।''

उसने मकान के सामने के कुएँ पर जाकर हाथ धोए और कहा, ''माँ! दो रोटी दे दो।''

माँ ने दो रोटी उठाकर उसके हाथ पर रख दीं और वह बांये हाथ पर रोटी रख, दायें हाथ से तोड़–तोड़, साग के साथ, जो माँ ने रोटी के ऊपर ही रख दिया था, खाने लगा। रोटी खा अपने कमण्डल में से जल लेकर हाथ की अंजली से पी, वह उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़कर बोला, ''माँ! अब जा रहा हूँ। अमरनाथ की यात्रा पर। वहाँ से लौटते हुए मिलने आऊँगा।"

इसके उपरान्त रामरक्खामल्ल लाहौर में कई बार आया। जब–जब भी आता, वह अपने भाई–बहिन और माता–पिता से मिल जाता था। एक बार वह आया तो माता–पिता दोनों का देहान्त हो चुका था। विष्णु ने बताया कि माताजी को दस्त आने लगे थे। वह मरीं तो उसके दूसरे दिन पिताजी बीमार हो गए और चल बसे।

इस समय तक सतवंती का विवाह हो गया था और वह विधवा हो चुकी थी। साथ ही विष्णुनारायण के घर एक लड़के का जन्म हो चुका था।

जब विष्णुनारायण ने घर की अवस्था बताई तो गरीबदास गम्भीर मुख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बना बैठा रह गया। विष्णुनारायण ने पूछा, "भापा! तुम्हारा चित्त घर आने को नहीं करता क्या?"

रामरक्खामल्ल आँखें मूद विचार करने लगा और उसने विष्णु की बात का उत्तर नहीं दिया। विष्णुनारायण यह समझ नहीं पा रहा था कि सामने बैठे साधु के मन में क्या–क्या विचार उठ रहे हैं। एकाएक विष्णुनारायण से गरीबदास ने पूछा, "विष्णु, बहुत कष्ट में हो क्या?"

"भापा! कष्ट तो कुछ नहीं। भगवान गुजारे के लिए काफी दे देता है। कारोबार में उन्नति हो रही है, परन्तु सूना–सूना–सा प्रतीत होता है। और चित्त सदा उदास रहता है।"

"देखो विष्णु! मैं तुम को अपने साधु होने की कथा सुनाता हूँ। मैं सेना से भागा तो घर नहीं आया। मेरे मित्र और संरक्षक सोहनसिंह ने बताया था कि सेना के अधिकारियों को घर के पते विदित हैं। वहाँ हमें ढूँढ़ा जायेगा। यदि पकड़े गए और गोली से न भी उड़ाया गया तो भी दो–तीन वर्ष का दण्ड अवश्य मिलेगा। अतः हम दोनों अमृतसर की तरफ भाग गए। डेढ़ दिन पैदल चलकर हम जब वहाँ पहुँचे तो हमने एक–दूसरे का साथ छोड़ दिया। मैं हरिद्वार के मार्ग पर चल पड़ा, सोहनसिह दरबार साहब में ही रह गया।

"मैं अकेला जा रहा था। चलते–चलते फगवाड़ा से कुछ दूर एक जंगल के उजड़े मन्दिर में ठहर गया। मैं अपने साथ भुने चने और गुड़ रखता था। यदि किसी स्थान पर माँगने से खाने को मिल जाता तो खा लेता, अन्यथा चने और गुड़ खाकर ही दिन निकाल लेता था।

"सायंकाल होने वाला था। मैं मन्दिर के बाहर कुएँ पर बैठा चने और गुड़ खा रहा था। एक लोटा जल कुएँ से निकाल पीने को रखा था कि एक सिक्ख सुकुमार लड़का वहाँ आ पहुँचा। मैंने उसको देखा। उसके रूप–रंग से मैं अत्यन्त प्रभावित हुआ। उस लड़के ने मुझे चने चबाते देखा तो लालसा–भरी दृष्टि से मेरी ओर निहारने लगा। मैं समझ गया कि वह भूखा है। मैंने पूछ लिया, 'चने खाओगे?'

" 'भूख तो लगी है?'

" 'तो आओ बैठो।'

"उसने जूते उतारे, कुएँ की जगत पर, मेरे सामने बैठ, लोटे में से जल लेकर हाथ–पाँव धोये और कुल्ला कर एक लोटा जल पुनः कुएँ से निकालकर रख लिया। और फिर बोला, 'भापा! अब दे दो।'

"मैंने उसको एक मुट्ठी–भर चने दिए और एक डली गुड़ की निकाल कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दे दी। जब वह खाने लगा तो मैंने पूछ लिया— 'किधर जा रहे हो?'

''उसने बताया, 'हरिद्वार को।'

'' 'हरिद्वार? अकेले ही?'

'' 'हाँ।' आँखें नीची कर खाते हुए उसने कहा।

'' 'कैसे जा सकोगे?'

'' 'धीरे–धीरे पहुँच ही जाऊँगा। मैं आठ–दस मील से अधिक नहीं चलता।

'' 'मैं चलने की बात नहीं पूछ रहा। मैं तो अकेले होने की बात पूछ रहा हूँ।'

'' 'मुझको एक ने बताया है कि होशियारपुर निकल जाने पर बहुत से यात्री उधर को जाते मिल जायेंगे।'

'' 'जा तो मैं भी हरिद्वार ही रहा हूँ। परन्तु मुझको डाकू मिल जायें तो मैं तीन–चार का मुकाबिला कर सकता हूँ। पर वे तुमको तो चपत मार कर ही तुम्हारा सब–कुछ लूट लेंगे।'

''इस पर उस लड़के ने कह दिया, 'सुना नहीं भापा! निर्बल के बल राम।'

''मैं विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। उसके गालों पर सुर्खी आती थी और जाती थी। मुझे उस पर दया आ गई। मैंने कह दिया, 'अच्छा, मेरे साथ ही रहो। हम इकट्ठे ही चलेंगे।'

'' 'सच? देखो, यही भगवान की कृपा कही जाती है।'

''उस समय आसमान पर बादल छा रहे थे। इससे हम मन्दिर में चले गए। वहाँ भूमि साफ कर मैंने अपनी चादर बिछा दी और उसको सो जाने को कहा। वह संकोच करता था, परन्तु मैंने कहाँ कि जल्दी सो जाएँगे तो प्रातःकाल ठण्डे–ठण्डे उठकर तीन–चार कोस निकल जाएँगे, शेष सायंकाल चल लेंगे। इस पर वह मेरी ओर पीठ कर सो गया। शीघ्र ही वह खुर्राटे भरने लगा। अब चादर के एक किनारे पर मैं सो गया। आधी रात के समय बहुत वेग की आंधी आई और साथ ही मूसलाधार वर्षा होने लगी। साथ लेटे लड़के की नींद खुल गई। बिजली चमक और गरज रही थी। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि वह मुझको टोह रहा है। मैंने पूछा, 'क्या है?'

'' 'कुछ नहीं। बिजली...।' वह आगे कुछ कह नहीं सका।

''इस समय मन्दिर के आँगन में एक पेड़ पर बिजली गिरी। ऐसा प्रतीत हुआ कि हम भी झुलसे जा रहे हैं। कानों को बहरा कर देने वाली गरज थी। आँगन में आग–सी लग गई प्रतीत हुई। प्रकाश चकाचौंध कर देने वाला था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं समझा कि अंत आ गया है। कदाचित् उस लड़के ने भी यही समझा होगा। वह लपककर मुझसे चिपट गया। सामने के पेड़ को क्या हुआ हम देख नहीं सके। प्रकाश और शब्द कब बन्द हुए, मुझे ज्ञान नहीं। हम दोनों एक–दूसरे की छाती से चिपटे हुए कितनी ही देर तक लेटे रहे। मुझको ज्ञान कुछ पहले हुआ। मैंने जब आँखें खोलीं तो चारों ओर अंधेरा ही था। अब पुनः बिजली चमकी। मैंने देखा कि एक विशाल वृक्ष का केवल रुण्ड सामने रह गया था। पत्ते–शाखाएँ आदि सब विलुप्त थीं। अपने इतने समीप इतनी भयानक अग्नि का प्रकोप देख मेरा हृदय काँप उठा और मैंने उस लड़के को और जोर से अपने सीने से लगा लिया। इस पर मुझको यह ज्ञान हुआ कि मेरे साथ चिपटा हुआ कोई लड़का नहीं प्रत्युत् लड़की है। उसकी छाती के कोमल उभार मुझे अनुभव होने लगे थे। जब मुझको इस बात का भास हुआ तो मेरी पकड़ ढीली पड़ गई। इस समय उसको भी ज्ञान हो गया कि वह मेरे साथ चिपटी हुई है। वह मुझसे ऐसे दूर हटी जैसे कोई काँटा चुभने पर पीछे हटता है। मैंने उससे पूछ लिया, 'तुम कौन हो?'

" 'वह डरी हुई–सी बोली, 'भापा! मेरा भेद खुल गया है। अब मुझ पर दया करना। मुझको छोटी बहिन ही समझना।'

"अब अंधेरे में बैठे–बैठे मैं अपने मन के भावों का विश्लेषण करने लगा था। बीच–बीच में विद्युत के प्रकाश में मैं उसका विवर्ण मुख देख लेता था। आखिर मैंने कहा, 'पर तुम हो कौन? इस प्रकार कहाँ भागी जा रही हो?'

" 'जा तो हरिद्वार ही रही हूँ। मैं राधा हूँ। कांगड़ा से कुछ दूर के एक गाँव सुहार के एक ब्राह्मण की पत्नी हूँ। मेरे पिता ने पाँच सौ रुपये लेकर मेरा विवाह एक साठ वर्ष के वृद्ध ब्राह्मण महाराज से कर दिया। घर में खाने–पीने को भी था और गाँव में प्रतिष्ठा भी थी, परन्तु मैं, जब विवाह हुआ था तो अभी एक बालिका मात्र थी। अब मैं पन्द्रह वर्ष की हो चुकी हूँ।

" 'जब से विवाह हुआ था मेरे पति मुझको अपने साथ ही सुलाते थे और बहुत ही प्यार से रखते थे, परन्तु हमारा पुरुष–स्त्री का–सा सम्बन्ध कभी भी नहीं बना। पहले तो मुझको ज्ञान ही नहीं था कि वह सम्बन्ध क्या होता है? पीछे पड़ोस की युवा स्त्रियों से बात–चीत करने पर जब ज्ञान हुआ तो मुझमें भी असन्तोष बढ़ने लगा। एक दिन मैंने रात को पति के साथ लेटे हुए पूछ लिया, जब आपमें पुरुषत्व नहीं है तो आपने मुझसे विवाह क्यों किया? इस पर वह काँप उठा और फिर मेरे पाँव पकड़ मुझसे क्षमा माँगने लगा। उसने मुझको कहा, कि मैं किसी भी युवा पुरुष से सम्बन्ध बना सकती हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
" 'मुझको यह बात पसन्द नहीं आई और अपने दुर्भाग्य को कोसती हुई मैं रोती रही। मेरे पति ने बताया कि वह मेरे सौन्दर्य पर मुग्ध हो गया था और उसको विश्वास था कि मेरा सौन्दर्य उसमें यौवन ले आयेगा।

"इसके पश्चात् वह मुझे कई दिन तक किसी अन्य पुरुष से सम्बन्ध बनाने के लिए कहता रहा। परन्तु मैंने कह दिया, यह सब इस जीवन में नहीं हो सकता। परिणाम यह हुआ कि एक दिन जब मैं सोकर उठी तो मैंने अपने शय्या के साथी को लापता पाया। एक बार उसने कहा था कि यदि मैं उसका आग्रह नहीं मानूँगी तो वह गंगाजी में जाकर प्रवाह ले लेगा।

" 'अब मैं उसको हरिद्वार में ढूँढ़ने के लिए जा रही हूँ। यह रूप तो अपने को छिपाने के लिए बनाया था, जिससे मार्ग में कोई मेरे रूप–यौवन पर डाका डालने का विचार न करे।'

"मैंने उसकी कथा सुनी तो कह दिया, "तुम मेरे साथ चल सकती हो, पर अपने स्वाभाविक रूप में। इस प्रकार तो जब भी कोई पहचानेगा यह समझेगा कि मैं किसी की पत्नी को भगाकर लिए जा रहा हूँ।'

"उसने फिर कह दिया, 'भापा! इस छोटी बहिन पर दया रखना।'

"मैं उसके इस कहने के अर्थ को समझता था। मुस्कराकर चुप कर रहा। मैं उस लड़की को वास्तव में ही अति सुन्दर समझता था और उस पर बलात्कार न करने का मन में निश्चय कर बैठा। इस पर भी मैं यह अनुमान लगा रहा था कि वह एक दिन मुझे अपने पति के रूप में स्वीकार कर लेगी।

"हम एक महीने में हरिद्वार पहुँचे। वह मेरी विधवा बहन के रूप में मेरे साथ रहने लगी। हमने इधर–उधर साधुओं के अखाड़ों में उसके पति को ढूँढ़ने का यत्न किया, परन्तु वह न मिला। हमारे वहाँ रहते हुए अर्धकुम्भी आई और मैंने वहाँ पर एक दुकान कर ली। राधा के पास पाँच–सौ रुपये थे, जो वह घर से लेकर आई थी और वह रुपया अभी तक बिना छुए पड़ा था। वह रुपया उसने मुझको दुकान करने के लिए दे दिया। मैंने खिलौनों की दुकान कर ली। अर्ध–कुम्भी पर अच्छा लाभ हुआ। तब मैंने अपने जीवन का कार्यक्रम बना लिया।

"हमें हरिद्वार में आए दो वर्ष हो चुके थे। अब तक राधा ने अपने पति की ओर से सन्तोष कर लिया था। उसको विश्वास हो गया था कि वह गंगा प्रवाह ले चुका है। उसका पति के जाने का शोक भी अब मिट चुका था। वह अब प्रसन्न रहती थी और मेरे लिए लग्न से खाना आदि बनाती थी। मेरी सब सुविधाओं का ध्यान रखती थी। इस सबसे मेरी समझ में कुछ ऐसा आया कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह मुझको अपने पति के रूप में स्वीकार कर लेगी। एक रात मैंने उसको अपने मन की बात बताई। वह विस्मय में मेरा मुख देखती रह गई। उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। मैंने 'खामोशी नीम रजा' की बात समझ ली। मैंने उसे पकड़ लिया और उससे पत्नी का सा व्यवहार किया। वह चुपचाप मेरे व्यवहार को सहन करती रही। वह रात मैंने अपने विचार से अति सुख की बिताई। प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त हो मैंने उसको कहा, 'राधा! मैं तुम्हारे लिए आज रेशमी वस्त्र, भूषण और श्रृंगार का सामान लेने जा रहा हूँ। यह हमारे विवाहित जीवन का प्रथम दिवस है।'

"मैं दुकान पर चला गया और मध्याह्न के भोजन के समय पाँच रेशमी साड़ियाँ, जम्परों के लिए कपड़ा और अन्य सामान जिनमें भूषणादि भी थे, लेकर घर पहुँचा। घर का द्वार खुला था और वह घर में नहीं थी। मेरा माथा ठनका। मैं उसको ढूँढ़ने घाट पर गया तो घाट पर एक स्त्री का शव पड़ा मिला। पंडों ने उसको गंगा में बहते हुए निकाला था। वह राधा का शव था। वह शव वहाँ पर रखा था, जिससे उसके सम्बन्धी उसको पहचानकर ले जाएँ।

"मैंने अनुभव किया कि मैंने इस स्त्री की हत्या कर दी है। उसके मौन को उसकी रजामन्दी मान, मैं यह कुकर्म कर बैठा था। वास्तव में वह मेरी कृतज्ञता में चुप थी।

"मुझे उसके शव के पहचानने में लज्जा आने लगी। इस पर भी मुझको भय था कि हमारे घर के पड़ोसी उसको पहचान लेंगे और तब मैं उनको इस आत्म–हत्या का क्या उत्तर दूँगा? मैं वहाँ से बद्रीनारायण की ओर भाग गया। मैं घर लौटकर नहीं आया।

"मार्ग में ही मैं साधु हो गया। हजरों के एक उदासी साधु बालकराम को मैंने गुरु बना लिया। इस समय उनके साथ एक और शिष्य था। वह था सरदार रामसिंह। सरदार रामसिंह महाराजा रणजीतसिंह के काल में महाराजा की सेना में एक सूबेदार था। उसको महल की रक्षा का काम मिला हुआ था।

"महाराज के देहान्त के उपरान्त उसने सिक्ख सरदारों और सैनिकों की उच्छृंखलता देखी तो नौकरी छोड़ घर चला गया। वहाँ उसको बाबा बालक राम जी मिल गए तो वह उनका शिष्य बन गया।

"मैंने भी बाबा जी को अपना गुरु मान लिया और उनसे दीक्षा ले ली।'

"यह है मेरी कहानी साधु बनने की। परन्तु विष्णु! साधु बनकर जो मैंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अपने अठारह वर्ष के जीवन में देखा है, वह सब उस उच्छृंखलता से कम नहीं जो महाराजा रणजीतसिंह के उत्तराधिकारियों में मेरे गुरुभाई रामसिंह ने देखी थी। मेरा मन अब उचाट हो रहा है और मैं विचार करता हूँ कि पुनः गृहस्थ में आ जाऊँ। गुरुजी महाराज कहते थे कि एक बार साधु बन गया तो फिर गृहस्थ में लौटने को मार्ग नहीं रहता परन्तु मैं मन में विचार करता हूँ कि नरक–कुण्ड में गिर पड़ने से क्या उससे बाहर निकलने का अधिकार नहीं रह जाता?''

विष्णुनारायण अपने बड़े भाई के इस कथन का आशय समझ रहा था। इससे प्रसन्न होकर उसने कह दिया, ''भापा! तुम आओ। मैं समझूँगा कि पिताजी लौट आये हैं। विश्वास जानो कि तुम उनकी भाँति ही घर में पूजे जाओगे।''

''मैं एक बात यह भी विचार करता हूँ कि मैं सत्रह–अठारह वर्ष तक बेकार घूमता रहा हूँ और अब कोई काम–धंधा कर सकूँगा अथवा नहीं! मुझे तो 'औलख!' कहकर भिक्षा माँगने का अभ्यास पड़ चुका है। मुझसे कदाचित् कमाई नहीं हो सकेगी।''

"भापा!'' विष्णुनारायण ने आँखों में आँसू भरते हुए कहा, ''आप घर पर आ जाएँ। दुकान पर बैठ हुक्का पीते रहा करें। मैं अपनी सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि आप मालिक होंगे और मैं दुकान पर नौकर। भापा! अब मत जाओ।''

''एक बात और है। परन्तु वह अभी नहीं बता सकता। अभी तो मैं जाऊँगा और फिर एक दिन लौट आऊँगा। तुम मेरी प्रतीक्षा करना।''

रामरक्खामल्ल लौटा, परन्तु उक्त घटना के दो वर्ष उपरान्त। इस बार उसने गृहस्थियों के वस्त्र पहने हुए थे। धोती–कुरता और सिर पर पगड़ी, जिसमें फटे कान छिपे हुए थे।

''विष्णु! मैं आ गया हूँ।''

: 5 :

अपने भाई विष्णुनारायण के सामने बैठे भोजन करते हुए रामरक्खामल्ल अपने अतीत के जीवन पर विचार कर रहा था। उक्त विवरण उसकी आँखों में ऐसे घूमने लगा था मानो अभी–अभी घटित हुआ हो।

उसको अपने मित्र सोहनसिंह की बात स्मरण हो आई। जब वह उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
कहने पर सेना से भाग अमृतसर की ओर चला जा रहा था तो सोहनसिंह उसको आप–बीती बता रहा था।

सोहनसिंह ने बताया था, "राम! तुम अभी सर्वथा अल्हड़ आयु के हो और इस विशाल संसार में असहाय जा रहे हो। इससे तुमको अपने जीवन की कुछ बातें बता देना चाहता हूँ। तुम इनको सर्वथा हितकर अनुभव करोगे। देखो! स्त्री एक बहुत बड़ी प्रलोभन है और इससे बचने का एक ही तरीका है कि विवाह कर लो। विवाह में तुम एक से बँध जाते हो। तब उस एक के परे सब दूसरी औरत वर्जित हो जाती हैं। अविवाहित सम्बन्ध जीवन में स्थिरता नहीं लाता।"

सोहनसिंह की इसी सम्मति के अनुसार ही उसने राधा से विवाह करने का प्रयत्न किया था। इसमें भूल यह थी कि वह समझ नहीं सका था कि राधा की निष्ठा अभी भी अपने बूढ़े पति में थी।

सोहनसिंह ने महाराजा रणजीतसिंह के दरबार के बारे में भी बहुत सी बातें बताई थीं। उसने एक घटना यह भी सुनाई दी–

"महाराज के मुख्यमन्त्री राजा ध्यानसिंह का लड़का हीरासिंह महाराजा को बहुत प्रिय था। जब भी दरबार में महाराजा बैठे होते थे तो सब सरदार तथा राजा ध्यानसिंह भी खड़े रहते थे। यह दरबार का रिवाज था। परन्तु उस समय कहीं हीरासिंह दरबार में आ जाता तो महाराज उसको अपने समीप एक चौकी पर बैठने की आज्ञा दे देते थे। यह रियायत दरबारियों को सदा खटकती रहती थी। कुछ लोग तो यह कहने लगे थे कि हीरासिंह महाराज का लौंडा है। मैं समझता हूँ कि इस कथन में केवल ईर्ष्या ही कारण थी।

"इसके साथ एक अन्य किंवदन्ती चल पड़ी थी। महाराज ने बड़ी अवस्था में एक छोटी आयु की लड़की से विवाह कर लिया था। वह थी रानी जिन्दां। हीरासिंह के अतिरिक्त अन्य कोई जिन्दां के अन्तःपुर में नहीं जा सकता था। यह कहाँ जाने लगा कि हीरासिंह का महारानी से अनुचित सम्बन्ध है।

"इस पृष्ठभूमि में एक दिन महाराजा बीमार हुए और कई दिन तक तीव्र ज्वर में ग्रस्त रहकर परलोक सिधार गए। इस बीमारी में और फिर मृत्यु में महारानी जिन्दां और राजा ध्यानसिंह का हाथ समझा जाता था।

"यद्यपि इन किंवदन्तियों का न तो कोई साक्षी था, न ही किसी के पास इसकी सत्यता का प्रमाण था, तथापि इनसे दरबार की प्रतिष्ठा में आघात पहुँच रहा था। रानी जिन्दां का लड़का अभी बहुत ही छोटी अवस्था का था। अतः बड़ी रानी का लड़का खड़गसिंह, जो साधु स्वभाव का था, महाराज के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मरणोपरान्त गद्दी पर बैठा। परन्तु सिक्ख सरदार जो दरबार में आते–जाते थे, सर्वथा जंगली थे। उन्हें तो महाराजा रणजीतसिंह–जैसा कोई लोहे का दिल वाला व्यक्ति ही काबू में रख सकता था। महाराजा खड़गसिंह के वश की यह बात नहीं थी कि वह इन सरदारों पर नियन्त्रण रख सके। वे कभी–कभी दरबार में महाराजा खड़गसिंह के सामने ही एक–दूसरे से झगड़ने लगते थे और परस्पर कटु वचन भी कह देते थे।

"खड़गसिंह का एक मित्र चेतसिंह था। दोनों में बहुत प्रेम था। एक दिन दरबार में अंग्रेजों के विषय में कोई बात चली तो चेतसिंह ने कह दिया, 'इस सोये शेर से छेड़खानी करने की आवश्यकता नहीं।'

"इस पर महाराजा खड़गसिंह के लड़के नौनिहालसिंह ने चेतसिंह को भीरु कह दिया। चेतसिंह ने इस पर कहा, 'बरखुरदार! कभी तलवार चलाकर देखी भी है?'

"इस पर नौनिहालसिंह को क्रोध चढ़ आया और उसने वहीं दरबार में ही, अपनी तलवार निकालकर शांतचित्त बैठे चेतसिंह के पेट में घुसेड़ दी और कहा, 'देखो! तलवार दिखाई दी है या नहीं।'

"नौनिहाल के इस कृत्य से महाराजा खड़गसिंह को इतना दुःख हुआ कि वे बीमार हो दो–तीन दिन में परलोक सिधार गए।

"इस पर अब सबका विचार था कि महाराजा रणजीतसिंह के छोटे लड़के, अर्थात् रानी जिन्दां के लड़के दिलीपसिंह को गद्दी मिलेगी। राजा ध्यानसिंह इसके पक्ष में था। नौनिहाल सिंह स्वयं महाराजा बनने की लालसा रखता था और उसने स्पष्ट शब्दों में राजा ध्यानसिंह को कह दिया कि यदि उसने एक शब्द भी दिलीपसिंह के हक में कहाँ तो वह जीवित नहीं बच सकता। राजा ध्यानसिंह चुप कर रहा।

"जब महाराजा खड़गसिंह का रावी के किनारे पर अन्तिम संस्कार कर नौनिहाल सिंह अपने मित्र ऊधमसिंह के साथ किले को लौट रहा था तो हजूरीबाग की दीवार उन दोनों पर गिर पड़ी और दोनों उसके नीचे दब कर मर गए। यह कहाँ जाता है कि किसी ने दीवार पहले ही ढीली कर रखी थी और जब वे दोनों उसके नीचे से गुजरने लगे तो धक्का देकर गिरा दी गई।

"इसके उपरान्त खड़गसिंह की रानी चाँदकौर ने राज्य–भार सँभाला। इससे तो रानी जिन्दां को और भी दुःख हुआ। राजा ध्यानसिह अभी तो प्रधानमंत्री बना रहा।

"शेरसिंह, जो बटाला में हाकिम था, महारानी से शोक प्रकट करने लाहौर

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
आया। वह अभी मार्ग में ही था कि महारानी चाँदकौर को संदेह हो गया कि वह राज्य पर अधिकार करने के लिए आ रहा है। उसने अपने संरक्षकों को आज्ञा दे दी कि शेरसिंह को मारकर उसका सिर ले आएँ। राजा ध्यानसिंह ने, जो खड़गसिंह और उसके परिवार को कभी भी राज्य का वास्तविक अधिकारी नहीं मानता था, शेरसिंह को सचेत कर दिया। शेरसिंह उस समय तो भाग गया, परन्तु पीछे जब राजा ध्यानसिंह जम्मू गया हुआ था, वह अपनी प्रबल सेना लेकर लाहौर पर चढ़ आया और किले पर अधिकार जमा बैठा। उसके राज्य सम्भाल लेने पर राजा ध्यानसिंह लौट आया और अपने प्रधानमन्त्री पद पर कार्य करने लगा।

"शरसिंह ने चाँदकौर को अपने महल में ही बन्दी बना लिया। राज्य चलने लगा। इस प्रकार एक वर्ष व्यतीत हो चुका था कि शेरसिंह ने अपने राज्य को सुदृढ़ समझ रानी चाँदकौर को उसकी नौकरानियों से ही मरवा डाला। जब वे रानी के बाल साफ कर रही थीं, उन्होंने ईंटें मार–मारकर रानी का सिर ही फोड़ डाला और वह उसी समय मर गई।

इस पर नगर में और दरबार में भारी हल्ला हुआ। शेरसिंह ने अपने ऊपर लगे हत्या के आरोप बचने के लिए तथा यह प्रकट करने के लिए कि नौकरानियाँ अपराधिनी हैं, उनके नाक और कान कटवा दिए। इस पर नौकरानियाँ बक पड़ीं। उन्होंने शेरसिंह पर दोष लगाना आरम्भ कर दिया।

"इस पर, वे लोग, जो खड़गसिंह को ही महाराजा रणजीतसिंह का उत्तराधिकारी मानते थे, जलकर आग–बबूला हो गए। उनमें से सादॉवाला का एक सरदार अजीतसिंह था। वह कहीं कपूरथला और पटियाला से घूमता हुआ लौटा कि उसको शेरसिंह की करतूत का पता चला। कहाँ जाता है कि वह किसी अंग्रेज अधिकारी से एक नये फैशन की बन्दूक लाया था। उस बन्दूक को लेकर वह महाराजा शेरसिंह से मिलने चल पड़ा।

"संक्रान्ति का दिन था और महाराज कोट खोजे शाह के समीप रावी के किनारे एक बारहदरी पर हवन–यज्ञ करने पहुँचे हुए थे। हवन हो रहा था। हवन पर शेरसिंह का लड़का प्रतापसिंह बैठा हुआ था और शेरसिंह बारहदरी के चबूतरे पर बैठा विश्राम कर रहा था।

"अजीतसिंह और उसका चाचा लैहनासिंह घोड़ों पर सवार आये और उस चबूतरे के समीप खड़े हो गए, जिस पर शेरसिंह बैठा था। अजीतसिंह और लहना सिंह घोड़े पर सवार और शेरसिंह चबूतरे पर बैठा, आमने–सामने थे। अजीतसिंह ने वही बन्दूक निकाली और शेरसिंह की तरफ कर कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'चाचा! यह देखो, अंग्रेजों ने एक नई प्रकार की बन्दूक बनाई है।'

'शेरसिंह को उन पर सन्देह करने का कोई भी कारण नहीं था। इस कारण उसने बन्दूक लेने के लिए हाथ बढ़ा दिया। अजीतसिंह ने बन्दूक की नाली महाराजा शेरसिंह की ओर पकड़ाने के लिए बढ़ा दी। जब शेरसिंह नाली से बन्दूक पकड़ने लगा तो अजीतसिंह ने बन्दूक का घोड़ा दबा दिया। गोली शेरसिंह के दिल को चीरती हुई दूसरी ओर निकल गई। उसी समय लैहनासिंह दौड़कर चबूतरे पर चढ़ गया और प्रतापसिंह की ओर लपका।

''ब्राह्मण, जो हवन कर रहा था, लड़के की जान भय में देख, लड़के पर लेट गया और लैहनासिंह से प्रार्थना करने लगा कि उसकी जान बख्श दी जाये। परन्तु लैहनासिंह ने बारह वर्ष के प्रतापसिंह को ब्राह्मण के नीचे से खींचकर एक तरफ कर, तलवार से उसका सिर धड़ से अलग कर दिया।

''वहाँ से अजीतसिंह और लैहनासिंह लाहौर के किले में पहुँचे और राजा ध्यानसिंह को बुलाकर पूछने लगे कि रानी चाँदकौर कैसे और कहाँ मारी गई थी। राजा ध्यानसिंह अभी बता ही रहा था कि अजीतसिंह के एक साथी ने गोली मारकर उसकी हत्या कर दी। राजा साहब के रक्त से दिलीपसिंह के माथे पर तिलक देकर उसको महाराज घोषित कर दिया गया।

"राजा ध्यानसिंह के लड़के हीरासिंह को अपने पिता की मृत्यु पर क्रोध चढ़ आया और वह अपने साथ कुछ सैनिक लेकर अजीतसिंह और लैहनासिंह को मारने के लिए चल पड़ा। सैनिक उनके पास भी थे। बहुत घमासान युद्ध हुआ। दोनों सरदारों के शवों के टुकड़े–टुकड़े कर चीलों और गिद्धों को खाने के लिए बिखेर दिए गये।

''उस समय दिलीपसिंह की आयु चार वर्ष की थी। वह पंजाब का महाराजा बना दिया गया। हीरासिंह प्रधानमंत्री बन गया। लाहौर में एक जल्ला पंडित था। उसका हीरासिंह पर भारी प्रभाव था और वह सिक्ख सरदारों में बहुत बदनाम भी था। सिक्ख सरदारों ने इस समय अपनी पंचायत बना रखी थी और वह पंचायत ही वास्तव में लाहौर पर राज्य करती थी।

"सरदारों ने जम्मू के राजा सुचेतसिंह को प्रधानमन्त्री बनाकर बुला लिया, परन्तु हीरासिंह ने अपनी सेना से उनका विरोध कर, उसको परास्त कर वापस भेज दिया।

''इस पर सरदारों ने हीरासिंह को इतना तंग किया कि वह एक हाथी पर सोना लादकर भाग जाने के यत्न में मारा गया। अब सरदारों ने दिलीपसिंह के मामा जवाहरसिंह को प्रधानमन्त्री बनाने के लिए बुला लिया। वह आया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परन्तु सरदारों का भाव उसके भी विपरीत हो गया। सरदार किले से सरकारी कोष और नगर के धनी–मानी व्यक्तियों को लूट रहे थे। जवाहरसिंह ने उनको मना किया तो वे उसके भी विपरीत हो गये।

''सेना परेड में एकत्रित हुई तो जवाहरसिंह बालक महाराजा दिलीपसिंह को अपने साथ हाथी के हौदे पर बैठाकर सेना को शान्त करने के लिए वहाँ पहुँच गया। साथ ही महारानी जिन्दां भी थीं। उनको पर्दे में बैठाया गया था। जवाहरसिंह का अनुमान था कि सरदार अपनी निष्ठा महाराजा और महारानी में प्रकट करेंगे; परन्तु हाथी के वहाँ पहुँचते ही सेना ने हाथी को घेर लिया और नेजों से जवाहरसिंह को बींधकर हौदे से नीचे घसीट लिया और वहीं उसकी बहिन और भाँजे के देखते–देखते उसको मार डाला।''

सोहनसिंह ने आगे कहा था, "मैं भी उस समय सेना में था। मैं सेना के, राज्य–प्रबन्ध में, हस्तक्षेप को पसन्द नहीं करता था; परन्तु यह निर्दयता का व्यवहार और जवाहरसिंह जैसे बुद्धिमान व्यक्ति की हत्या देख मेरा मन उचाट हो गया। मैं फिर सेना–शिविर में नहीं लौटा और घर चला गया।

''दस वर्ष पश्चात् सन् 1855 में पंजाब में अकाल पड़ा और खेतों में फसल पर्याप्त न होने के कारण मैं फिर सेना में भरती हो गया। इस बार मैं अंग्रेजी सेना में भरती हुआ।

"अब तुम देखते हो कि हम यहाँ से भी भाग रहे हैं। मैं तुम्हें एक दूसरी बात भी बताता हूँ कि जब तक जनता धर्म–परायण नहीं होगी, तब तक राज्य में सुख और शान्ति स्थापित नहीं हो सकती।

"महाराजा रणजीतसिंह एक बहुत ही अच्छे शासक थे, परन्तु वे न तो देश के बुद्धिमान् और ईमानदार लोगों को आकर्षित कर सके और न ही देश में बुद्धिमत्ता का स्तर ऊँचा कर सके।

''सिपाही तो सिपाही होते हैं। बुद्धिमत्ता के साथ उनका बहुत ही कम सम्बन्ध होता है। यही कारण है कि सेना के मन में बुद्धिमान अधिकारियों के लिए मान–प्रतिष्ठा उत्पन्न करने की आवश्यकता रहती है। महाराजा रणजीतसिंह सेना के अधिकारी, बुद्धिमान और दूरदर्शी व्यक्ति नहीं बना सके। मैंने तुमको एक दिन हरिसिंह नलुआ की मृत्यु की कथा सुनाई थी। सेना के अन्य सरदार तो उससे भी बढ़कर थे।

''परिणाम यह हुआ कि सिख साम्राज्य, जो महाराजा रणजीतसिंह ने महान यत्न से निर्माण किया था, आठ–नौ वर्ष में ही समाप्त हो गया। यह किसी दूसरे के हाथ से नहीं, प्रत्युत उन्हीं सरदारों के हाथ से जिनको महाराजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रणजीतसिंह ने स्वयं प्रधानता दे रखी थी।

"महाराजा रणजीत सिंह के राज्य के पूर्व यहाँ सिक्खों की मसलें थीं। अर्थात् छोटे–छोटे रजवाड़े थे और वे मुसलमानों के साथ, जो उनके मुख्य शत्रु थे, लड़ने के साथ–साथ परस्पर भी लड़ते–झगड़ते थे। महाराजा रणजीतसिंह ने इनको पराजित कर अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया था। परन्तु इनके सरदारों को इन्हीं के इलाकों में हाकिम, सूबेदार इत्यादि बनाये रखा। ये सब और इनके संरक्षक, महाराजा के देहान्त के पश्चात् परस्पर लड़ मरे।

"यह केवल इसलिए कि जन–साधारण में विचार–शक्ति शून्य थी और वे मित्र–शत्रु, अपना–पराया, नेख–बद में भेदभाव करने के अयोग्य हो गये थे। ऐसी अवस्था में लोग, शक्ति प्राप्त कर अंधे, स्वार्थी और अभिमानी हो जाते हैं। यही बात सिक्ख दरबार के सरदारों की, महाराजा के देहान्त के बाद हुई।"

रामरक्खामल्ल को अपने गुरुभाई रामदास की बात स्मरण हो आई। वह बद्रीनारायण की ओर, राधा के साथ किए अपने पाप–कर्म के भय से भयभीत हो भागा जा रहा था, तो जोशीमठ के समीप उसकी बाबा बालकरामजी से भेंट हुई थी। उदासी बाबा अपने शिष्य रामसिंह के साथ तीर्थयात्रा पर जा रहे थे। बालकराम ने रामरक्खामल्ल को जीवन से निराश और उदासचित्त चलते देखा तो पूछ लिया, "बेटा! बहुत दुःखी प्रतीत होते हो?"

"हाँ बाबा!" रामरक्खामल्ल ने उत्तर दिया।

"संसार दुःखों से भरपूर है। इसमें रहते हुए तुम पाप से बच नहीं सकते और दुःख छूट नहीं सकते।"

"परन्तु बाबा, संसार से बाहर कैसे हो सकता हूँ? जी तो चाहता है। इस खड्ड में कूदकर आत्महत्या कर लूँ, परन्तु मैं जानता हूँ कि मैं अपने कर्मों के फल से मुक्त नहीं हो सकता। वे अदृष्ट मेरे साथ मेरे अगले जन्म में भी जाएँगे। इससे आत्महत्या निरर्थक मान अपने पूर्वजन्म के कर्मों की दुःखद् स्मृति में ही छटपटाता फिरता हूँ।"

कई दिन के साथ रहने पर बाबा बालकराम की प्रेरणा पर रामरक्खामल्ल गरीबदास बन गया और कानों को फाड़कर उसने कुण्डल पहन लिए। इस यात्रा में रामदास ने उसको अपनी सिक्ख सेना को छोड़ने की कथा सुनाई। रामदास ने यह बताया, "मैं सिक्खों का सर्वनाश समीप देख वहाँ से चला आया था। चरित्रहीनता उनमें व्यापक थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद कई बार गरीबदास अपने गुरुभाई रामसिंह से मिला था। रामसिंह ने अब सिक्खों के चरित्र–निर्माण करने के लिए एक नवीन पंथ का निर्माण किया था। रामदास ने यह विख्यात कर दिया था कि वह गुरुओं का संदेश लेकर आया है। अतः वह बारहवाँ गुरु है। बाबा बालक राम ग्यारहवाँ गुरु घोषित किये गए। इन दिनों वह गुरु रामसिंह के नाम से विख्यात होने लगा। वे अपने अनुयायियों को सत्य बोलने, सरल तथा सादा जीवन व्यतीत करने, घर पर कता–बुना कपड़ा पहनने और उस समय की सरकार से सर्वथा निर्लेप रहने का उपदेश देते थे। यह नामधारियों का पंथ विख्यात होने लगा था। गरीबदास इन लोगों को सरल जीवन और इनकी धर्म–परायणता को देख बहुत ही प्रभावित हुआ था।

गुरु रामसिंह कहाँ करते थे, "महाराजा रणजीतसिंह एक महान् व्यक्ति थे, परन्तु उनका पूर्ण प्रयास रेत पर महल निर्माण करने के समान था। सिक्ख और पंजाब की साधारण जनता महामूर्ख, चरित्रहीन और स्वार्थमयी थी। यही कारण था कि सिक्ख राज्य खड़ा नहीं रह सका।"

गरीबदास सन् 1857 के अंग्रेजों को निकालने के प्रयास पर भी गुरु रामसिंह से विचार–विनिमय कर चुका था। गुरु महाराज का यह दृढ़ मत था कि राज्य जनता की ही धरोहर होता है। यदि जनता धर्म–परायण और दृढ़–निष्ठ होती तो 1857 में ही हिन्दुस्तानियों का राज्य स्थापित हो जाता। 1857 का प्रयास सफल नहीं हो सका। इसका यह कारण था कि हिन्दुस्तान की जनता अभी स्वराज्य–प्राप्ति की अधिकारिणी नहीं थी।

"तो यह किस प्रकार स्वराज्य–प्राप्ति की अधिकारिणी हो सकेगी?" गरीबदास का प्रश्न था।

"इसका एक ही उपाय है। जनता को श्रेष्ठ, धर्मनिष्ठ, देश और राष्ट्र से प्रेम करने वाली बना दो। इसके लिए देश में हिन्दू को जगाओ। यह खालसा पंथ इसी निमित्त पैदा हुआ था।"

: 6 :

आज रामरक्खामल्ल को भोजन करते हुए अपने विचारों में लीन देख, विष्णु ने पूछ लिया, "भापा! क्या विचार कर रहे हो?"

"मैं यह विचार कर रहा हूँ कि हमारे समाज में इन्द्रिय–लोलुपता इतनी व्यापक हो गई है कि उसके अधीन हम सत्य और धर्म को भी भूल रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह श्याम और कला का व्यवहार उस व्यापक पतन का एक अंश मात्र है। श्याम दसवीं श्रेणी तक पढ़ा है और वास्तव में वह इस सब समय में मानवता को भूलना ही सीखता रहा है।

'वह रात–भर अपनी पत्नी की मिन्नत–समाजत करता रहता है। उसकी पत्नी उस पर अपने रूप के आकर्षण के कारण राज्य करती है। वह प्रातःकाल उठ नहीं सकता। भगवान को वह मानता नहीं। सन्ध्यातर्पण वह करता नहीं। कभी किसी साधु–सन्त, महात्मा को अपनी कमाई में से एक पैसा देता नहीं। उसका पूर्ण जीवन नौकरी करना, भोजन करना और स्त्री से संसर्ग बनाये रखने के अतिरिक्त कुछ भी तो नहीं?''

''भापा! तुम इतने पढ़े–लिखे ज्ञानी हो। मुहल्ले–भर के लोगों को ज्ञान–ध्यान की बातें बताते रहते हो। कुछ मेरे इस पशु लड़के के कान में भी दो शब्द डाल दिया करो।"

''विष्णु! वह तो मेरे पास बैठता नहीं। उसकी बीवी अपने कमरे में बैठी शृंगार किया करती है और वह उसे देख–देख गद्‌गद प्रसन्न रहता है।''

भोजन समाप्त हुआ तो दोनों भाई भोजनोपरान्त आराम करने अपने–अपने कमरे में चले गए। उनके जाने के बाद स्त्रियों के भोजन का समय हो गया। रामरक्खामल्ल की पत्नी लेख, श्याम की बहू कला, महानारायण की बहू मोहिनी तथा विष्णुनारायण की बहिन सतवंती और लड़की लाजवंती सब रसोईघर में आ गईं। सतवंती ने सबके लिए थालियाँ लगा दीं और वे सब खाने लगीं।

श्याम का विवाह हुए तीन तर्ष हो चुके थे। इन तीन वर्षों में आज यह पहला दिन था जब कला ने यह विष–बीज रूपी ताना अपने ससुर के बड़े भाई को मारा था। जब सब भोजन करने लगीं तो सुमित्रा ने बात आरम्भ कर दी, ''मेरे जेठजी साधु हो गए थे। वे इक्कीस वर्ष के लगभग साधु रहे। पीछे वे घर लौट आये। घर आने पर वे अपने पिता की सम्पत्ति के उतने ही अधिकारी हैं, जितने श्याम के पिता हैं। जब भी कभी सम्पत्ति का बँटवारा होगा, वे आधी सम्पत्ति के मालिक होंगे।''

कला समझ नहीं रही थी कि उसकी सास उसको सुना रही है। इस कारण वह चुपचाप खाना खाती रही। कला को चुप देख सुमित्रा ने आगे कह दिया, ''और आधी सम्पत्ति में श्याम, महा और सदा तीन पत्तीदार होंगे। इस कारण पूर्ण सम्पत्ति के छठे भाग के ही ये प्रत्येक भागीदार हैं।''

इस पर कला के कान खड़े हो गए। वह खाती–खाती रुक गई और अपनी सास का मुख देखने लगी। सुमित्रा ने आगे कह दिया, ''परन्तु इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बँटवारे से पूर्व बहिन सतवंती और बेटी लाज के लिए कुछ प्रबन्ध करना होगा। मेरी एक और लड़की है तारा। उसकी ससुराल है दिल्ली में। उसके बच्चों के विवाह पर देने का भी प्रबन्ध करना होगा।''

इस पर कला से नहीं रहा गया। उसने पूछ लिया, 'माँजी! तो हमारे लिए क्या रह जायेगा?''

''जितना कुछ तुम्हारा श्याम, इस सम्पत्ति में डाल रहा है, उससे तो कुछ अधिक ही रह जायेगा।''

''और बड़े भापाजी,'' रामरक्खामल्ल को घर में इसी नाम से स्मरण किया जाता था, ''परिवार की सम्पत्ति में क्या जमा कराते हैं?''

''मेरे तो वे बड़े हैं। मैंने उनसे कभी पूछा नहीं। तुम अथवा श्याम उनसे पूछ सकते हो।''

''मैंने उनसे कहा था कि वे पूछें, परन्तु वे कहते हैं कि उन्हें उनसे डर लगता है।''

''डर? भला क्यों? क्या कभी जेठ जी ने उन को पीटा है?''

"यह तो मैं जानती नहीं। वे कहते हैं कि उनकी आँखों से आँखें मिलाई नहीं जा सकतीं।''

इस पर सुमित्रा ने मुस्कराते हुए कह दिया, "तो कहना आँखें मूँदकर बातें कर ले।''

''जब बड़े भापा कुछ डाँटकर कहते हैं तो इनकी जुबान बंद हो जाती है।''

इस पर लाजवंती ने कह दिया, "भाभी! तुम स्वयं क्यों नहीं उनसे पूछ लेतीं? तुम तो उनसे डरती नहीं?''

"मुझे उनसे लज्जा लगती है।''

"लज्जा किस बात की, वे तो तुम्हारे बाबा की आयु के हैं।''

इस पर कला ने रामरक्खामल्ल की पत्नी लेखवती से पूछ लिया, ''क्यों ताई! वे इतने बूढ़े हैं क्या?''

लेखवती के गालों पर लाली छा गई। घर की सब स्त्रियाँ उसकी ओर देख रही थीं। कला ने तो रामरक्खामल्ल की पत्नी पर व्यंग्य कसा था और लेखवती इसको समझ रही थी। जब उसने देखा कि घर की सब स्त्रियाँ उससे कुछ सुनना चाहती हैं तो वह कहने लगी, "कला! तुम्हारा लज्जा करना ठीक ही है। तुम्हारी सास अभी उनको अपना छोटा भाई अथवा लड़का ही मानती हैं, इसी कारण उनसे यह पर्दा नहीं करतीं और मैं अपने देवर से पर्दा करती हूँ। मुझको तो वे जेठ ही दिखाई देते हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह उत्तर ऐसा था कि कला से इसका प्रत्युत्तर नहीं बन पड़ा। वह चुपचाप आँखें नीची किये भोजन करती रही। कुछ देर चुप रहकर उसने अपनी सास से कह दिया, ''माँजी! अभी हमारी आयु छोटी है। हमारा खर्चा कम है। हम कुछ बचाकर भविष्य के लिए जमा कर सकते हैं। इस कारण आप हमको पृथक कर दीजिए।''

''ठीक है। अपने घर वाले से कहो कि अपने पिता से बात कर ले। इस पर भी, मेरा तो यह कहना है कि कम–से–कम अपने पिता से गणित सीख आओ और पीछे यह बात करना।''

''तो क्या मैं गणित नहीं जानती? माँजी! मैं चौथी श्रेणी तक पढ़ी हूँ।''

''परन्तु तुम बात तो ऐसे करती हो, जैसे दस से ऊपर गिनने का ढंग तुम्हें नहीं आता।''

''और आप कौन–सी जमायत तक पढ़ी हैं?''

''मैं तो स्कूल भी नहीं गई। मेरे जमाने में लड़कियों के स्कूल नहीं होते थे। इस पर भी मेरी माँ ने मुझे लाखों तक गिनने का ढंग सिखाया था। कभी जब तुम्हारे ससुर रुपये घर रख जाते हैं तो हिसाब मैं ही रखती हूँ।''

''परन्तु मैंने तो सुना है कि आप बीस के ऊपर गिन ही नहीं सकतीं?''

''गिन तो सकती हूँ, परन्तु उस गिनती का नाम नहीं आता। देखो, मैं तुमको बताती हूँ। इस समय मेरी संदूकची में दस–बीस बीसियाँ रुपये रखे हैं।''

कला हँस पड़ी। अन्य स्त्रियाँ मुस्कराती रहीं। कला ने हँसी का कारण समझाते हुए कहा, ''माँजी! यह बीसियां–बीस क्या होता है?''

''लाज! जरा समझाना भाभी को। यह भी एक तरीका है जो तुम्हारी माँ ने तुमको नहीं समझाया।''

लाज ने कहा, ''भाभी! बीस रुपये की एक ढेरी लगा दी जाए, तो यह बीस रुपये हुए। ऐसी बीस ढेरियाँ हों तो बीस–बीसियाँ हो गईं। इनकी संदूकची में दस बीस–बीसियाँ रुपये हैं। तुम्हारी गिनती में इसको चार हजार रुपये कहते हैं।''

''अब समझी।'' कला ने हँसते हुए कहा।

हँसी की चिन्ता न करते हुए सुमित्रा ने कहा, ''परन्तु कला बेटी! मैं तो एक दूसरी गिनती की बात कह रही हूँ। वह गिनती है कि जब मेरे श्वसुर मुझको एक कुरता अपने पास से सिलवा देते थे तो मैं जान जाती थी कि मेरी आय में पाँच रुपये की वृद्धि हुई है। उन दिनों एक रेशमी कुरते पर पाँच रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खर्च होते थे। एक बार मेरी नथ टूट गई। मैंने श्याम के पिता से कहा, 'बनवा दो।' तो वे कहने लगे कि दस रुपये नई बनवाने में लगेंगे और उनकी जेब में अभी दस रुपये नहीं हैं। कहीं यह बात मेरे श्वसुर ने सुन ली। अगले दिन उन्होंने नई नथ मुझको लाकर दे दी। पुरानी नथ वे ले गए। मैंने समझा कि भगवान ने मेरे पति की जेब में दस रुपये डाल दिए हैं।

"यह सब हानि–लाभ की बात तुम गिनना नहीं जानतीं। इसको अपने पिता से सीखकर ही अपने पति से पृथक होने की बात करना।

कला चुप रही।

भोजन समाप्त हुआ तो सब उठकर अपने–अपने काम–धंधों पर चली गईं। कला का धंधा था 'तोता मैना का किस्सा' पढ़ना।

उस रात फिर श्याम और कला में झगड़ा हुआ। कला ने कहा, "आपने मेरी चुगली खाई है।"

"किसके सामने?"

"अपनी माँ के सामने।"

"नहीं तो।"

"जरूर खाई है। अब मेरे सामने झूठ बोल रहे हैं।"

"नहीं मेरी प्यारी रानी! मैंने किसी से कुछ नहीं कहा। भला मैं अपनी लज्जा की बात कैसे कह सकता था!"

"क्या लज्जा की बात थी?"

"अपनी पत्नी से पीटा जो गया था।"

"नहीं; आपने सम्पत्ति के बंटवारे के विषय में कहाँ होगा। माँजी ने आज सबके सामने बँटवारे का हिसाब सुना दिया है।"

"क्या सुना दिया है?"

"यही कि आपके पिता और तायाजी आधी–आधी सम्पत्ति के हकदार हैं। उस आधी में, जो आपके पिता को मिलेगी, लाज और तारा के बच्चों के लिए देकर शेष के तीन भाग होंगे।"

"माँ एक बात भूल गई हैं?"

"क्या?"

"उनके अपने लिए भी कुछ पृथक करने के पश्चात् तीन भाग होंगे।"

"आपकी माँ ने अपने लिए चुराकर बहुत कुछ रखा होगा।"

"मुझे ऐसी आशा नहीं है।"

"क्यों? सब कुछ तो उनके पास ही रहता है। इस समय भी उनकी

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन्दूकची में चार हजार रुपया है।''

"कैसे जानती हो यह?''

"उन्होंने स्वयं बताया है।''

''तो यह चोरी कैसे हो गई? चोरी तो वह होती है, जो किसी को बताई न जाए। देखो कला! एक बार एक दसवीं पास लड़का दलाली करने बाजार में आ गया। सब उसकी सहायता करना चाहते थे। कुछ ही दिनों में वह बाजार का तीन हजार के लगभग रुपया वसूल कर भाग गया है। इस पर बड़े भापाजी कहने लगे, 'यह तो होना ही था।'

'' 'क्यों?' मैंने पूछ लिया।

'' 'वह स्कूल में जो पढ़ा है।'

"यह सुन सब हँसने लगे। मैं तुम्हारी बात सुन भापाजी के कहने के अर्थ को अब समझ गया हूँ।''

''क्या समझ गए हैं?''

"यही कि स्कूल पढ़ने से चोरी का ढंग आ जाता है। पिताजी मेरे जन्म से भी पहले से माताजी के पास रुपया जमा करते रहे हैं और उन्होंने कभी भी एक पाई तक का हेर-फेर नहीं देखा। अब तुम चार जमायतें पढ़ी लड़की हमारे घर में आई हो। इस कारण चोरी की बातें करने लगी हो।''

''मैं समझती हूँ कि कल रात की चपत आपको भूल गई है, जो मुझे चोर कहने लगे हैं।"

यह सुन श्याम भागकर अपने बिस्तर में चला गया और मुख पर रजाई ओढ़कर लेट गया। इस पर भी प्रातः दोनों एक ही बिस्तर में से निकले।

: 7 :

रविवार का दिन था। श्याम को दफ्तर नहीं जाना था। वह एक अंग्रेजी फर्म ई. प्लोमर में क्लर्क का कार्य करता था। जब नौकर हुआ था तो बीस रुपये वेतन मिलने लगा था। श्याम समझदार और परिश्रमी युवक था। इससे केवल छः वर्ष की नौकरी में ही चालीस रुपये वेतन हो गया था। अब श्यामनारायण इसी फर्म की बाहर की शाखाओं का हिसाब-किताब देखने के लिए भेजा जाने लगा था। इस कारण जाने का भत्ता और किराया भी मिलता था। इण्टर क्लास का किराया और दो रुपये नित्य भत्ते के। इस प्रकार तीन महीने में कम-से-कम एक बार प्रत्येक शाखा में जाना होता था। कम्पनी की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पाँच शाखाएँ थीं। महीने में एक शाखा पर जाने की बारी आ जाती थी।

वह जाता था थर्ड क्लास में और भाड़ा लेता था इण्टर क्लास का। वह चार–पाँच आना रोज से अधिक व्यय नहीं करता था, और भत्ता पाता था दो रुपये नित्य के हिसाब से। वह प्रायः शाखा के एकाउण्टेण्ट के घर में ही ठहरा करता था और वह चार–पाँच आने भी, जो पूरी आदि के खाने में व्यय होते थे, बच जाया करते थे। फर्म की शाखाएँ कराची, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता और लखनऊ में थीं। अतः अब उसको ऊपर की यह आय होने लगी थी और लगभग तीस रुपये तक उसको, एक सफर खर्च में बच जाया करते थे।

आज रामरक्खामल्ल आर्य समाज के साप्ताहिक कार्यक्रम में गया हुआ था। वहाँ से लौटकर भोजन करने के लिए आया तो श्यामनारायण अपने पिता विष्णुनारायण के पास भोजन करने के लिए बैठा हुआ था। रामरक्खामल्ल भी जब एक आसन पर जा बैठा तो श्याम की माँ ने उसके सामने भी थाल रख दिया। श्याम ने उलाहना देने के विचार से कह दिया, "माँ, तुम बहू को कुछ मत बताया करो।"

"क्या बताया है उसे?"

"यही कि तुम्हारे पास चार हजार रुपया रखा है।"

"वह तो उस दिन की बात है, जब वह तुमसे झगड़ा करती रही थी। वह रुपया अब तो तुम्हारे पिताजी ले गए हैं।"

"उसको बताने की क्या जरूरत थी?"

"वह इसलिए कि वह मुझे अनपढ़ समझती थी। मैंने उसको यह बताया था कि मैं गिनती जानती हूँ और उससे अच्छी प्रकार गिन सकती हूँ।"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "और तुम मुझे अपना पुत्र समझती हो? ठीक है न?"

इस पर विष्णुनारायण और सुमित्रा भी हँस पड़े। हँसते हुए सुमित्रा ने कला द्वारा लेखवती पर किए व्यंग्य की बात और उस पर लेखवती का उत्तर सुना दिया। विष्णुनारायण और भी हँसा। उसने हँसते हुए कहा, "भापा! मैं तुम्हें अपने पिता–समान पूज्य मानता हूँ। यह उसने अपनी पत्नी की ओर संकेत कर कहा, "तुम्हारी बहू को विवाह कर लाई है, इस कारण अपने को उसकी सास मानती है।"

"जी नहीं। मैंने इसमें कुछ नहीं कहा। यह तो लेखवती का उत्तर था। वह मुझे अपनी सास और आपको श्वसुर समझती है। इसी कारण वह आपके सामने घूँघट कर लेती है। मैं तो इनको अपने पिता–माता, जो भी ये मानें,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझती हूँ। इसी कारण मुझको इनसे कभी घूँघट निकालने की आवश्यकता अनुभव नहीं हुई।"

इस पर रामरक्खामल्ल ने बताया, "जब मैं हरिद्वार और अन्य तीर्थस्थानों पर साधुओं की करतूतों को देख–देख भगवे वस्त्र से उचाट हो गया, तो मैंने दो वर्ष इस बात का निर्णय करने में लगा दिए कि मैं घर वापस जाऊँ अथवा कैलाश में जाकर बर्फ में गलकर प्राणान्त कर लूँ। इन दो वर्षों में जहाँ अन्य बातें थीं, जिन पर विचार करता रहा था, वहाँ एक बात यह भी थी कि तुम और तुम्हारी पत्नी क्या समझोगे? मैं अपने को एक निखट्टू मानता था और खाता दुगुना था। साथ ही मुझे चरस का दम लगाने का चस्का लग गया था। मैं जब यहाँ आया था तो यही विचार करता था कि यदि तुम और भाभी पसन्द नहीं करोगे तो वापस चला जाऊँगा। परन्तु विष्णु! तुमने और भाभी ने अपने प्रेम से मुझको यहाँ जकड़ लिया। फिर तुम चतुर भी बहुत हो। तुमने मुझको यहीं बाँध रखने के लिए लेखवती से मेरा विवाह भी कर दिया। भाभी लेख को ऐसे लाई, मानो अपनी पतोहू को ला रही हो। लेख के बाद जवाहर आ गया और मैं समझता हूँ कि पाँव में चौगुनी बेड़ियाँ पड़ गई हैं। मेरे लिए अब यहाँ से जाना कठिन हो गया है।

"अब तनिक लेख बूढ़ी हो ले और जवाहर काम–धंधा करने लगे तो फिर एक बार भारत भ्रमण के लिए निकल जाऊँगा।"

"परन्तु भापा! लेख बूढ़ी होगी तो क्या आप जवान रहेंगे?" सुमित्रा ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

इस पर दोनों भाई खिलखिलाकर हँसने लगे। रामरक्खामल्ल ने आँखें मूँद, कुछ विचारकर कहा, "इस समय मैं साठ के लगभग हूँ। यदि कोई विशेष घटना न घटी तो सवा सौ वर्ष तक जीऊँगा ही। तब तक लेख रहेगी, मुझे इसकी आशा नहीं।"

सब गम्भीर हो गए। एक बार पहले भी ऐसी बात हो चुकी थी। विष्णु की सबसे छोटी लड़की दुर्गा, जो सदानारायण से बड़ी थी, दस वर्ष की हुई तो उसकी सगाइयाँ आने लगी थीं। रामरक्खामल्ल ने कहा था, "भैया! उसकी सगाई अथवा विवाह तेरह वर्ष से पहले न करना।" इस पर सुमित्रा ने कहा था, "ये तो आर्य समाजी हो गए हैं। पन्द्रह वर्ष से पहले विवाह पसन्द नहीं करते।"

"ठीक है भाभी!' रामरक्खामल्ल का कहना था–"आर्य समाज ठीक ही कहता है। किन्तु मैं तो सगाई के विषय में भी कहता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्यों?" विष्णुनारायण का प्रश्न था।

" 'बस कह दिया! क्यों, मत पूछा करो।"

दुर्गा बारह वर्ष और दस मास की हुई तो दो–तीन दिन बीमार हो चल दी। एक दिन विष्णुनारायण, जिसको दुर्गा की सगाई के समय की बात स्मरण थी, पूछने लगा, "भापा! क्या देखा था तुमने लड़की में?"

"भैया! यह मैं बता नहीं सकता। मेरे गुरु स्वामी बालकरामजी ने मुझको एक योग की प्रक्रिया बताई थी, जिससे मैं कुछ दूर भविष्य की बात देख सकता हूँ। उसी के आधार पर मुझको दुर्गा का भविष्य बारह वर्ष की आयु के पश्चात् कुछ गँदला प्रतीत हुआ था। इसी कारण मैंने कह दिया था।"

विष्णुनारायण को तब की बात स्मरण थी। जब सब चुप कर गए तो उसने पूछ लिया, "भापा! आज फिर भविष्य की ओर देखने का यत्न कर रहे हो?"

"हाँ! श्याम की बहू की बातों को सुन मेरे मन में यह जानने की इच्छा हुई कि अपने भविष्य के विषय में सोचूँ। मुझको तो अपना एक सौ पच्चीस वर्ष का जीवन स्पष्ट दिखाई देता है। सन् 1965 तक जीवित रहने की आशा करता हूँ। लेख मुझको पचपन वर्ष की आयु के पश्चात् कहीं दिखाई नहीं देती।"

"और मैं, बड़े भापा?" श्याम ने बात की हँसी उड़ाने के लिए पूछ लिया।

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "तुम दूर की बात मत पूछो। तुमको तो एक–दो वर्ष की बात बताता हूँ। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि निकट भविष्य में घर से एक गाय, जिसके गले में एक रस्सा पड़ा होगा और रस्सा तुम्हारी बहू कला के हाथ में होगा, निकलकर ग्वाल मण्डी की ओर जायेगी।"

अब तो तीनों हँस पड़े। भोजन समाप्त हो गया। तीनों उठ, हाथ धो, कुल्ला कर रसोईघर से बाहर निकल गए। श्याम के माथे पर त्यौरी चढ़ गई थी। रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "इस विषय में कुछ और सुनना चाहते हो तो मेरे कमरे में आ जाओ। तुम पढ़े–लिखे लोग तो तब ही विश्वास करोगे, जब बात हो जाएगी। इसलिए इसे कहानी समझ ही सुन लेना। इससे भी लाभ ही होगा।"

श्याम न तो सुनने की इच्छा प्रकट कर सका और न ही सुनने से इनकार कर सका। विष्णु ने पूछा, "भापा! मैं भी आऊँ?"

"हाँ! आ जाओ तुम भी मेरे कथन के साक्षी रहोगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीनों कमरे में चले आए। यह कमरा मकान की भूमि पर था। कमरा साफ–सुथरा और हवादार था। स्त्रीवर्ग तो पुरुषों के भोजन समाप्त करने की प्रतीक्षा करता रहता था। इस समय तक साढ़े बारह बज जाते थे और सबको भूख लग आती थी। अतः जब वे नीचे आ रहे थे तो लेखवती ऊपर को जाती हुई दिखाई दी। तीनों रामरक्खामल्ल के कमरे में जा पहुँचे।

वहाँ बैठकर रामरक्खामल्ल ने बताया, "देखो श्याम! मैं स्वामी बालकरामजी के चरित्र और भक्तिभाव से प्रभावित हो उनका शिष्य बन गया था। पाँच वर्ष तक मैं उनकी सेवा में रहा और इस काल में उन्होंने मुझको योग की बहुत–सी क्रियाएँ सिखाईं। उनमें से एक भविष्य में देखने की क्रिया थी। देखो, इसको मैं समझाता हूँ।

"हमारी आँख भी अपने से दूर तक देख सकती है। यह दूरी स्थान सम्बन्धी है। हममें एक अन्तरदृष्टि भी है। वह दृष्टि स्थानान्तर के विचार से और कालान्तर के विचार से भी दूर की बात देख सकती है। इस कालान्तर के विचार से दूर की बात देखने के लिए अन्तरदृष्टि को विकास देने की एक प्रक्रिया है। उस प्रक्रिया को सीखना पड़ता है। वह मैंने सीखी है। उसी के विचार से मैंने अपने जीवन को देखा था। जब मैं गुरु जी से छुट्‌टी लेकर देशदर्शन के लिए निकला तो मैं प्रायः साधुओं की स्वार्थपरता, विषय–लोलुपता, अभिमान और दर्प की मात्रा और उद्‌दण्डता देख, उनमें और गृहस्थियों में अन्तर नहीं समझ सका। मैं हरिद्वार में बैरागियों के एक मठ में जा ठहरा। मुझ डील–डौल वाले और ब्रह्मचर्य के ओज से पूर्ण साधु को देख, छोटी आयु वाले तथा महन्त के व्यवहार से असन्तुष्ट साधु मेरी ओर आकर्षित हो गए। इस पर महन्त और उसके साथी मुझको एक अवांछित व्यक्ति मानने लगे। मैं आश्रम में पहुँच महन्तजी के चरणों में प्रणाम करने गया तो उन्होंने पूछ लिया, 'क्यों बेटा! कहाँ से आए हो?'

"मैंने बताया, 'इस समय काशीजी से आ रहा हूँ।'

" 'वहाँ क्या था?'

" 'कुछ नहीं महाराज! मैं अपने गुरु की आज्ञा से तीर्थयात्रा के लिए ही निकला हुआ हूँ। काशीजी से चलकर प्रयागराज, वहाँ से नैमिषारण्य और अब हरिद्वार पहुँचा हूँ।'

" 'कितने दिन तक यहाँ रहोगे?'

" 'अभी आज ही यहाँ आया हूँ। कुछ दिन यहाँ रह ऋषिकेश और वहाँ से उत्तर–काशी तथा गंगोत्तरी जाने का विचार रखता हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'कितना व्यर्थ का जीवन व्यतीत कर रहे हो! क्या परमात्मा यहाँ की तुलना में वहाँ समीप पड़ता है?'

" 'ऐसा तो नहीं है। इस पर भी तीर्थों की महिमा तो है ही। नए–नए प्रकार के लोग और उनके नए–नए चलन देखने से ज्ञान–लाभ होता है। ज्ञान से परमात्मा तक पहुँचने में सहायता मिलती है।'

" 'भला हमको भी तो बताओ, तुमको अभी तक क्या लाभ हुआ है?'

"मैंने बता दिया, 'महाराज! त्रिचिनापल्ली में श्री रंग का मन्दिर है। उसमें एक सौ दस देव–दासियाँ देवता की पूजा और सेवा के लिए रहती हैं। लोग देवता की पूजा से अधिक उन देव–दासियों की पूजा के लिए वहाँ पहुँचते रहते हैं। वे नित्य वहाँ कीर्तन और पूजा करती हैं और सहस्रों लोग उनका कीर्तन सुनने के लिए वहाँ जाते हैं। जब कोई देव–दासी किसी भक्त की सेवा के लिए तैयार हो जाती है तो मन्दिर का चढ़ावा दुगुना–तिगुना हो जाता है।'

" 'और उसको तुम मन्दिर कहते हो? यह तो कटरा हो गया।'

" 'महाराज! सब उसको मन्दिर कहते हैं। मैं क्या कहता हूँ, यह तो मैंने नहीं कहा।'

" 'हम भी वहाँ की यात्रा के लिए जाएँगे।'

" 'मैं चिदम्बरम् के शिव मन्दिर में भी गया। वहाँ आकाश–लिंग स्थापित है। वहाँ भी देव–दासियाँ मन्दिर की सेवा करती हैं। मैं दर्शन करने गया तो एक देव–दासी ने टूटी–फूटी भाषा में पूछ लिया, बाबा! कहाँ ठहरे हो?'

" 'अभी कहीं नहीं।' मैंने कहा।

" 'तो इसी मन्दिर में ठहर जाओ।'

" 'यहाँ ठहरने को स्थान है?'

" 'हाँ; तुम्हारे लिए।' इसके साथ ही वह टेढ़ी दृष्टि से मेरी ओर देख कर मुस्करा दी।

" 'मैं उसका अर्थ नहीं समझा और विस्मय में उसका मुख देखता रह गया। जब मैं मन्दिर से निकलने लगा तो एक अन्य देव–दासी ने कह दिया, 'बाबा! इधर आ जाओ।'

" 'मैंने पूछ लिया, क्यों?'

" 'निवास–स्थान के लिए।'

" 'देवी! मैं साधु हूँ। मेरे पास देवता को चढ़ाने के लिए कुछ भी नहीं।'

" 'तुम्हारे पास जो कुछ है, वह लाखों से भी नहीं मिल सकता।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'क्या है?'

" 'कादम्बरी से पूछ लेना?'

" 'वह कौन है?'

" 'मन्दिर की मुख्य दासी है।'

" 'मैं उसको नहीं जानता।'

" 'वह आपसे मिली है। उसने आपको मन्दिर में ठहरने के लिए कहा तो था।'

" 'मैं तो कहीं एकान्त में रहना चाहूँगा, जिससे अपने योग–ध्यान में लीन रह सकूँ।'

" 'इस मन्दिर से अधिक एकान्त आपको अन्य कहीं नहीं मिलेगा।'

"मैं मान गया। मन्दिर के पिछवाड़े में मुझे एक गुफा–जैसे स्थान में ले जाया गया। वहाँ एक पत्थर की चौकी सोने के लिए बनी थी। ताम्रपात्र स्नान आदि के लिए रखे थे। एक पंखा हाथ से हवा करने के लिए भी पड़ा था।

"वह स्थान स्वच्छ, हवादार और सादा था। वहाँ एकान्त भी दिखाई देता था।

" 'भोजन–व्यवस्था?' मैंने वहाँ लाने वाली से पूछ लिया।

" 'आपको यहाँ सब कुछ मिल जाएगा।'

"मैं वहाँ टिक गया। मैंने अपना कमण्डलु एक ओर, ताम्र–पात्र के समीप, रख दिया और पत्थर की चौकी पर बिछी चटाई पर बैठ गया। मैंने उस देव–दासी का धन्यवाद किया तो वह चली गई। मुझको दूध–दही, मलाई–खीर, पूरी और शाक, बढ़िया घी से बना हुआ खाने को मिला। एक व्यक्ति ये पदार्थ खिलाने के लिए आया। वह उत्तरी भारत का रहने वाला प्रतीत होता था। मैं जब भोजन कर रहा था तो वह मुझसे बातें करने लगा। उसने पूछ लिया, 'कहाँ से आ रहे हो बाबा?'

" 'पुरी, कोणार्क, भवनेश्वर, बालाजी, मायावरम्, श्रीरंगम् देख आया हूँ। रामेश्वरम् और कन्याकुमारी जाने का विचार कर रहा हूँ।'

" 'यहाँ से कब जा रहे हो?'

" 'तुमने खाना तो इतना बढ़िया खिलाया है कि कुछ दिन यहाँ ही आराम करने को जी चाहता है।'

" 'वह मुस्कराया और बोला, 'आज रात से पहले ही चले आओ।'

" 'क्यों?'

" 'कोई विशेष बात नहीं। केवल यहाँ रात्रि समय एकान्त नहीं मिलेगा।'

" 'क्या होता हैं यहाँ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'देव–दासियों का नृत्य और संगीत।'

" 'इसी गुफा में होगा क्या?'

" 'इसमें भी और अन्य गुफाओं में भी। यहाँ ऐसी सैकड़ों हैं।'

" 'ये गुफाएँ?'

" 'गुफाएँ नहीं, देव–दासियाँ।'

"मैं मौन हो रहा। भोजन कराकर वह चला गया। पीछे पता चला कि वह पाचक था। मन्दिर में उत्तरी भारत के आने वाले यात्रियों के लिए वह भोजन बनाता था। उसके चले जाने के बाद मैंने विश्राम किया और फिर आसन लगा चिन्तन करने लगा। उस पाचक के कथन से मुझको संदेह हो गया कि ये देव–दासियाँ मेरी हँसी करने वाली हैं। भला मुझ जैसे फक्कड़ से क्या लेंगी? मेरे पास एक पैसा भी तो नहीं था।

"रात दूर कहीं संगीत इत्यादि का शब्द सुनाई देता रहा। इस पर भी मेरी गुफा में शान्ति रही। मैं यह समझा कि पाचक ने व्यर्थ में मुझको डराया था, निश्चिन्त हो सो गया। आधी रात जा चुकी होगी, जबकि एक स्त्री मुझसे आलिंगन करती अनुभव हुई। मैंने उसको अपने से दूर हटा दिया। साथ ही मैं उठकर बैठ गया। गुफा में अन्धेरा था। मैं उस स्त्री को देख नहीं रहा था, जो मेरी भुजाओं में छटपटा रही थी। मैंने पूछा, 'कौन हो तुम?'

" 'कादम्बरी।' एक कामातुर स्त्री की भर्राई हुई आवाज आई।

" 'मैं किसी कादम्बरी को नहीं जानता।'

" 'मैं वही हूँ, जो मध्याह्न के समय मन्दिर में तुमसे मिली थी और मैंने ही तुमको यहाँ रह जाने का निमन्त्रण दिया था। मैंने ही अपनी एक सेविका को भेज तुमको यहाँ ठहराया था।'

" 'ठीक, होगा। परन्तु बिना प्रकाश में देखे मुझको तुम पर विश्वास नहीं आता।'

" 'परन्तु प्रकाश तो यहाँ हो नहीं सकता।'

" 'अच्छी बात है। अब तुम यहाँ से चली जाओ। मैं तुम्हारी इच्छा पूर्ण नहीं कर सकता।'

" 'क्यों? मैं यहाँ की सर्वश्रेष्ठ दासी हूँ।'

" 'बिना देखे कैसे तुम पर विश्वास करूँ?'

" 'इतना पर्याप्त नहीं कि मैंने तुमको यहाँ पर ठहराया है।'

" 'अच्छा सुनो! प्रातः आकर कोई चिह्न बता जाना और कल रात मेरे पास आ जाना।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'मैं इस समय व्याकुल हो रही हूँ।'

" 'तो प्रकाश कर दो, अन्यथा यहाँ से चली जाओ।'

" 'यह तो मेरा भारी अपमान हो जायेगा।'

" 'मैं समझता हूँ कि मैं कादम्बरी का अति मान कर रहा हूँ, जो उसके अतिरिक्त अन्य किसी को भी स्वीकार नहीं कर रहा। यदि तुम वास्तव में ही कादम्बरी हो तो तुम यहाँ प्रकाश करा सकती हो, अन्यथा कल के लिए समय नियुक्त करो। तब तक मैं विचार कर कोई संकेत नियत कर सकूँगा।

" 'अच्छा मुझको छोड़ो। तुम्हारी पकड़ से मेरी जान निकली जा रही है।'

"मैंने उसकी बाँह को छोड़ दिया और स्वयं चौकी से नीचे उतरकर खड़ा हो गया। वह मुझको टटोल रही प्रतीत होती थी। मैं गुफा के एक कोने में खड़ा, उसके इधर–उधर टटोलने की सरसराहट सुन रहा था। जब वह मुझको नहीं पा सकी तो पूछने लगी, 'कहाँ हो महाराज?'

" 'मैं गुफा में ही हूँ। तुम अब जा सकती हो।'

" 'नहीं; मेरा एक प्रस्ताव है।'

" 'क्या?'

" 'यहाँ मेरे समीप आकर बैठो।'

" 'देवी! नहीं! आज तो यह नहीं होगा। तुम जो कहना चाहती है, कहो'

'यहाँ के राजा साहब, जो इस मन्दिर के मुख्य संरक्षक हैं, मेरे मोह–जाल में ग्रस्त हैं। मैं उनसे बहुत कुछ करवा सकती हूँ। यहाँ के मन्दिर का पुजारी, रामस्वामी बूढ़ा हो गया है और चोर भी है। यदि तुम चाहो तो मैं तुमको यहाँ का पुजारी नियुक्त करवा सकती हूँ। राजा–रईसों की भाँति रहोगे।'

" 'और वे राजा साहब मेरा–तुम्हारा सम्बन्ध स्वीकार कर लेंगे क्या?'

" 'उनके लिए मैं कोई अन्य ढूँढ़ दूँगी।'

"मैं हँसकर बोला, 'ठीक है, तुम बातचीत करो। शेष बात कल करूँगा। अब तुम जाओ।'

"बहुत कठिनाई से मैंने उसको विदा किया और बहुत सवेरे मन्दिर का द्वार खुलते ही मैं वहाँ से भाग गया।

"मेरे इस कथन को सुनकर वह वैरागी महन्त गम्भीर विचार में पड़ गया। कितनी ही देर तक वह मेरे मुख को देखता रहा। आखिर वह बोला, 'एक रात के लिए यहाँ रह सकते हो। कल कहीं अन्यत्र ठिकाना बना लेना।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तो यह समझा था कि मेरे संयम की कथा सुन महन्तजी महाराज प्रसन्न होंगे और मुझको अपने पास रहने का आग्रह करने लगेंगे। परन्तु हुआ इसके विपरीत।

: 8 :

"इसका कारण मुझको उसी दिन पता चल गया। उस मठ में तीन वैरागिनियाँ भी रहती थीं। एक तो अभी बिल्कुल अल्हड़ आयु की थी। मुझको एक अन्य वैरागी ने बताया कि वह युवती महन्तजी की प्रिया है। और उनको इस बात का भय है कि मैं कहीं उसको भगाकर न ले जाऊँ।

"महन्त मेरे मुख पर ओज और मेरे शरीर के गठन को देखकर भयभीत था। उस वैरागी ने यह भी बताया कि एक अन्य साधु ने कृष्णा वैरागिन को यहाँ से फुसलाने का यत्न किया था और अगली ही रात उसकी हत्या कर, उसका शव गंगा नदी में बहा दिया गया था।

"यद्यपि मुझको इस कथा पर पूर्ण विश्वास नहीं हुआ था, परन्तु कृष्णा के सौन्दर्य और उसकी छोटी आयु को देख महन्तजी के उसके साथ सम्बन्ध पर संदेह के लिए कोई स्थान नहीं रहा था।

"अगले दिन मैं बहुत सवेरे ही गंगा–स्नान के लिए जा रहा था कि एक लड़की की आवाज ने मुझको चौंका दिया। 'बाबा!' किसी ने पीछे पुकारा।

"मैंने लौटकर देखा तो प्रभात के धुँधले प्रकाश में भी मैंने उस वैरागिन को पहचान लिया, जो महन्तजी की प्रिया कही गई थी। मैंने पूछ लिया, 'क्या बात है?'

" 'तुम वही साधु हो, जो कल वैरागियों के मठ में आये हो?'

" 'हाँ।'

" 'और तुम आज जा रहे हो?'

" 'हाँ।'

" 'कहाँ जा रहे हो?'

" 'गंगोत्तरी की यात्रा पर जा रहा हूँ।',

" 'मुझको भी साथ ले चलो।'

" 'मैं साधु हूँ बीबी!'

" 'मैं भी साधुनी हूँ। मेरा नाम कृष्णा वैरागिन है।'

" 'मैं वैरागी नहीं, मैं उदासी बाबा हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'मुझको इस नरक–कुण्ड से निकालो।'

" 'किस नरक–कुण्ड से?'

" 'इस वैरागियों के मठ से।'

" 'देखो देवी! एक साधु का स्त्री से सम्पर्क अच्छा नहीं।'

" 'तो यह विभूति धो डालो। गृहस्थ ग्रहण कर लो। मैं जीवन–भर तुम्हारी सेवा करूँगी।'

" 'यह तो तुम एक बहुत ही गम्भीर बात कह रही हो। देखो देवी! मुझको कुछ विचार करने दो। मैंने घर और जायदाद छोड़कर यह साधु का बाना पहना है। अब इसको छोड़ दूँ, यह बहुत ही कठिन प्रतीत होता है। इस पर भी विचार कर सकता हूँ।'

" 'कब तक विचार कर लोगे?'

" 'कह नहीं सकता। आज से ही विचार आरम्भ करूँगा।'

" 'अच्छी बात है।' फिर उसने दीर्घ निःश्वास छोड़कर कहा, 'मैं तुम्हारे उत्तर की प्रतीक्षा करूँगी।'

"मैंने सत्य ही विचार करना आरम्भ कर दिया था। उसी दिन गंगास्नान के उपरान्त मैंने पूजा–पाठ के बाद अपने भविष्य को देखना चाहा। मुझको कुछ ऐसा समझ आया कि मेरा साधु जीवन अभी समाप्त नहीं हुआ। साथ ही बहुत दूर मैं गृहस्थी बना हुआ दिखाई दिया। मेरे साथ एक स्त्री थी, परन्तु वह कृष्णा वैरागिन नहीं थी। वह कोई अन्य थी। मैं उसकी रूप–रेखा हृदयंगम करता रहा। वह कृष्णा से अधिक सुन्दर, अधिक श्रेष्ठ तथा पवित्र और स्नेहमयी दिखाई दी थी। उस धुँधले प्रभात के प्रकाश में मैं कृष्णा वैरागिन की आँखों को नहीं देख सका था। इस पर भी उसकी भर्राई हुई आवाज से वह कामातुर प्रतीत हुई थी। वह स्त्री जो मेरे गृहस्थ जीवन में मेरे साथ दिखाई दी थी, सर्वथा शांत और सौम्य थी।

"मैंने पुनः उस वैरागी मठ में जाना उचित नहीं समझा। स्नानादि कर मैं पैदल ही ऋषिकेश की ओर चल पड़ा।

"यह सन् 1865 की बात है। वहाँ से मैं गंगोत्तरी, जमनोत्तरी, केदारनाथ, बद्रीनारायण और फिर जोशीमठ से कैलास की ओर यात्रा करता हुआ, तिब्बत होकर तीन वर्ष बाद असम पहुँचा। वहाँ दुर्जयलिंग नाम की पहाड़ी पर पाँच वर्ष तक तपस्या की और संस्कृत का अध्ययन किया। सन् 1874 में पुनः हरिद्वार में जा पहुँचा। इम बार मैं अवधूतों के आश्रम में जा पहुँचा था। यह स्थान वैरागियों के आश्रम से अच्छा प्रतीत होता था। यहाँ किसी स्त्री का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
प्रवेश नहीं हो सकता था। सब वहाँ के रहने वाले साधुओं को सूर्यास्त से पूर्व ही आ जाना पड़ता था। जब मुझको इस आश्रम में स्थान मिला तो मैं निश्चिन्त होकर अपने स्वाध्याय, ध्यान और तपस्या में लग गया।

"परन्तु मुझको यह देखकर विस्मय हुआ कि यहाँ भी जो युवा साधु हैं वे नगर में भिक्षा लेने जाते हैं और वहाँ कई प्रकार की स्त्रियों से सम्बन्ध बनाते–बिगाड़ते रहते हैं। उनकी कथाएँ सुन–सुनकर मेरा मन उचाट हो गया। इस पर एक दिन वैरागी मठ में जाकर कृष्णा वैरागिन का हाल–चाल जानने की लालसा जाग पड़ी। मैं वहाँ जा पहुँचा और महन्तजी से मिला। उस समय महन्तजी के पास एक लड़की आठ–नौ वर्ष की आयु की और एक अन्य स्त्री बैठी थी। उस लड़की का मस्तक और आँखें कृष्णा वैरागिन–सी प्रतीत होती थीं। उसका मुख कृष्णा से भी अधिक सुन्दर लग रहा था। मेरे मन में आकस्मात् यह विचार आया कि यह उसी वैरागिन की लड़की हो सकती है।

"मेरे वहाँ पहुँचने पर वह स्त्री और वह लड़की वहाँ से उठकर कहीं चली गई। मैं महन्तजी को प्रणाम कर बोला, 'महाराज! एक बार पहले भी मैं आपके दर्शनों का सौभाग्य प्राप्त कर चुका हूँ। आज से लगभग नौ वर्ष पूर्व गंगोत्तरी की ओर जाता हुआ आपके मठ में एक दिन रहा था।'

"महन्त जी मुस्कराये और कहने लगे, 'हम तुमको जानते हैं, तुम गरीबदास हो न?'

" 'हाँ महाराज!'

" 'तुमने हमारा बहुत अनिष्ट किया था तब।'

" 'अनिष्ट कैसा महाराज! मुझे इसका ज्ञान नहीं। कुछ अनजाने में हो गया हो तो बात दूसरी है।'

" 'वह अनिष्ट अनजाने में नहीं हो सकता। तुम एक रात यहाँ रहे। और हमारी एक वैरागिन को, जिसका नाम कृष्णा था, गर्भवती कर गये थे।'

" 'नहीं महाराज! आपके सामने किसी ने यह असत्य भाषण किया है।'

" 'वह वैरागिन तुम्हारा ही नाम लेते–लेते प्राण छोड़ गई। अपने पीछे एक लड़की छोड़ गई है। वह तुम्हारी ही लड़की हो सकती है। इस लड़की को जो एक औरत के साथ अभी गई है देखा है? यह उसी वैरागिन की लड़की है।'

" 'मेरी ही हो सकती है। 'मैंने विस्मय में महन्तजी का मुख देखते हुए पूछ लिया, 'क्या यह आपको उस वैरागिन ने कहा था?'

"इस पर महन्तजी गम्भीर विचार में पड़ गये। कुछ विचार कर बोले,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं, उसने नहीं कहा। इसके विपरीत जब–जब भी हमने उससे यह पूछा कि गर्भ तुम्हारा है तो उसने इनकार किया, परन्तु उसका तुमको बार–बार स्मरण करना यही प्रकट करता था कि तुम उससे मिले हो।'

" 'महाराज!' मैंने बलपूर्वक कहा, 'मैंने उस औरत का मुख तक नहीं देखा। मेरा उससे कभी एक क्षण का भी सम्पर्क नहीं हुआ। यह धारणा आपकी मिथ्या है।'

" 'परन्तु गिनती से तो वह लड़की तुम्हारे यहाँ आने के ठीक 282 दिन बाद उत्पन्न हुई थी। वैरागिन का पेट जब बढ़ने लगा तो उसको इस औरत के घर में रख दिया गया, जो अभी यहाँ बैठी थी।'

"मैंने बताया, 'यह 282 दिन की गिनती में दो–चार दिन इधर–उधर हो सकते हैं। आपको पता करना चाहिए था कि वह उन दिनों किस साधु की संगत में रही थी।'

"इस पर महन्त मुस्कराया और बोला, 'कुछ भी हो, वह मरने के समय भी यह कहती सुनी गई– 'गरीबदास! तुम आने को कह गये थे। गरीबदास! अब तो आ जाओ।'

"मैंने पुनः अपनी निर्दोषिता प्रकट की और वहाँ से चला आया। जब मैं एकांत में बैठकर चिन्तन करने लगा तो मुझको अपना गृहस्थ जीवन समीप ही दिखाई दिया। मुझको इस जीवन में अपनी पत्नी के रूप में वह लड़की दिखाई दी जो महन्तजी के पास एक प्रौढ़ स्त्री के साथ बैठी थी। मुझको इस बात पर विस्मय हुआ और साथ ही यह बात असम्भव भी प्रतीत हुई। इस पर भी मैं जब भी अन्तर्धान हो अन्तरदृष्टि से अपने भविष्य को देखने लगता था, मुझको गृहस्थी का जीवन और वह लड़की अपने साथ दिखाई देती थी।

"मैं इस सबको अपनी तपस्या में विघ्न–कार्य समझ इसका ध्यान छोड़ देने का यत्न करने लगा। मैं मन में हरिद्वार को छोड़ पुनः कहीं दूर चले जाने का विचार करने लगा था। वास्तव में मैं घूमता–घूमता थक गया था। नित्य यह निश्चय कर सोता कि अगले दिन वहाँ से चल दूँगा, परन्तु अगले दिन, उससे अगले दिन जाने का विचार बना लेता।

"मुझको वैरागी महन्त से मिले लगभग दस दिन हो चुके थे। एक दिन मैं कनखल में गंगा के किनारे समाधि लगाये बैठा था। प्रातःकाल चार बजे बैठा तो आठ के करीब बज गये। मैंने आँखें खोलीं तो वही प्रौढ़ स्त्री, जो महन्त के मठ में देखी थी, कृष्णा वैरागिन की लड़की के साथ बैठी दिखाई दी। मैंने कमण्डलु में से गंगाजल लेकर आचमन किया और प्राणायाम से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत्पन्न हुई खुश्की को दूर कर मैं उससे पूछने लगा, 'भगवती! किस कारण बैठी हो यहाँ?'

" 'उसने कहा, 'मैं नित्य एक महात्मा को भोजन कराकर ही स्वयं भोजन करती हूँ। आज गंगा–स्नान कर घर को लौट रही थी कि आपके दर्शन हो गये। मैं आपका ध्यान टूटने की आशा में यहाँ बैठ गई। दो घण्टे से बैठी हूँ। अब कृपा करके इस दासी की सेवा ग्रहण कर मुझको कृतकृत्य करिये।'

" 'देवी! मैं तो बहुत देरी से भोजन करता हूँ।'

" 'ठीक है महाराज! जिस समय भी आपकी इच्छा होगी, उसी समय ताजा बना हुआ मिल जायेगा।'

" 'तो तब तक क्या तुम भूखी रहोगी?'

" 'मैं साधारण रूप में मध्याह्न बारह बजे भोजन करती हूँ। परन्तु आज और भी देरी से कर लूँगी। मैं दिन में एक ही बार खाती हूँ। इससे कुछ कष्ट नहीं होगा।'

" 'कहाँ बैठकर भोजन करना होगा?'

" 'जहाँ महाराज को सुविधा रहे।'

" 'हमारे आश्रम में तो किसी स्त्री को आने की स्वीकृति नहीं।'

" 'तो महाराज! इस दासी के निवास–गृह पर ही पधारिये। वहाँ पर स्थान सर्वथा स्वच्छ और शान्तिप्रद होगा। मेरे पतिदेव भी वहाँ होंगे। वे आपकी सेवा कर अपने को धन्य मानेंगे।'

" 'तो गृह पर कैसे पहुँचूँगा?'

" 'जब आप कहें, मेरे पतिदेव आपको लेने, आश्रम में आ जायेंगे।'

" 'ठीक है। मेरा नाम गरीबदास है। मैं कोठरी संख्या आठ में रहता हूँ।'

"मैंने देखा कि मेरा नाम सुनते ही वह स्त्री चौंकी और फिर बहुत ध्यान से मेरे मुख को देखकर पूछने लगी, 'महाराज! कभी आप वैरागियों के मठ में भी ठहरे हैं?'

" 'हाँ, एक बार कुछ घण्टों के लिए वहाँ ठहरा था। इस बात को नौ वर्ष से ऊपर हो चुके हैं।'

"वह मुस्कराई और चुप कर उठ बैठी। उसने हाथ जोड़कर नमस्कार किया तो उसके साथ आई लड़की ने भूमि पर माथा टेक दिया। मेरे मुख से अनायास ही उसके लिए आशीर्वाद निकला, 'सौभाग्यवती हो देवी!'

"वे चल दीं और मैं विचार करने लगा कि यह भगवान की ओर से कोई संयोग है अथवा इस स्त्री ने मुझसे जान–बूझकर, किसी प्रयोजन के लिए,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सम्पर्क उत्पन्न किया है। मेरा नाम सुन, उसके चौंक उठने से मेरे मन में यह विचार आया कि उसको महन्तजी ने मेरे विषय में अभी कुछ नहीं कहा। इस पर भी यह शुद्ध तिरिया–चरित्र हो सकता था। ऐसा विचार कर मैं मन में उस स्त्री का इसमें प्रयोजन जानने की इच्छा करने लगा।

"उस दिन पुनः आश्रम की अपनी कोठरी में बैठे हुए चिन्तन करने पर, मुझको वह लड़की अपने गृहस्थ जीवन में संगिनी प्रतीत हुई। मुझको राधा की पूर्ण कहानी स्मरण हो आई। मैंने एक बार तुम्हें भी उसकी कथा सुनाई थी। वह मेरे जीवन की एक महान भूल थी। अतः मैं अब उसको दोहराना नहीं चाहता था। मैंने मन में निश्चय कर लिया और अपने मन से अपने गृहस्थ जीवन के दृश्य को, जो अब किंचित् से भी प्रयत्न से दिखाई देने लगता था, निकालने का यत्न करने लगा।

"वृहदारण्यक उपनिषद् का अध्ययन करते हुए मैंने पढ़ा था–

'आत्मैवेदमग्र आसीदेक एम सोऽकामयत जाया में स्यादथ प्रजायेयाथ वित्तं में स्यादथ कर्म कुर्वीयेत्येतावान्वै कामो नेच्छ–।'

"पढ़ते–पढ़ते मैं रुक गया और चिन्तन करने लगा। यह क्या लिख दिया है, उपनिषद्कार ने? एक बार दक्षिण के एक नगर में एक पादरी से मेरी भेट हुई थी। वह मुझको बता रहा था– 'सबसे पहले परमात्मा था। उसने इच्छा की और सृष्टि की उत्पत्ति हो गयी। उसने भूमि, आकाश, चन्द्र, सूर्य, जल, थल, नदी–नाले, चराचर जगत् बनाया। इस सबको बनाकर भी उसको सन्तोष नहीं हुआ तो उसने इस संसार में पुरुष को बनाया। इससे भी उसने अपने कार्य को पूर्ण नहीं समझा। उसने पुरुष में से ही स्त्री का निर्माण किया–

"आज सृष्टि का क्रम इस उपनिषद् में से पढ़ रहा था। पहले आत्मा ही एक था। आत्मा कौन? स्वाभाविक रूप में यह परमात्मा समझ में आया। परमात्मा ने इच्छा की। मैं उस पादरी की बात पर हँस पड़ा था। भला परमात्मा ने क्यों इच्छा की? इच्छा तो वह करता है, जिसको किसी वस्तु का अभाव होता है। क्या परमात्मा को किसी बात का अभाव था? मेरा मन नहीं माना। एकाएक मेरे मन में विचार आया कि आत्मा से परमात्मा का अर्थ लेने में कोई प्रायोजन नहीं। आत्मा का अर्थ प्राणी भी हो सकता है।

"दुर्जयलिंग पर रहते हुए, जब मैं संस्कृत का अध्ययन कर रहा था और अपने गुरु से शास्त्र पढ़ रहा था तो गुरुजी महाराज ने आत्मा का अर्थ शरीर किया था। तब भी और अब भी मुझको आत्मा शब्द का प्रयोग शरीर के लिए उचित प्रतीत नहीं हुआ। एकाएक मुझको स्मरण हो आया कि आयुर्वेद ग्रन्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मनुष्य को शरीर, मन तथा आत्मा का संयोग माना है। अब बात स्पष्ट हो गई।

"आत्मा, मन और शरीर का संयोग हुआ तो मनुष्य का निर्माण हुआ। यह जीवित मनुष्य जब पूर्ण हुआ तो स्त्री की कामना करने लगा। स्त्री के लिए उपनिषद् में जाया शब्द का प्रयोग किया गया है। इसका अर्थ है जो उत्पन्न करे। अर्थात् सृष्टि करने में साथी। पुरुष के लिए स्त्री और स्त्री के लिए पुरुष इस कार्य में साथी हैं।

"इस प्रकार ये कामना करने लगे एक–दूसरे की और सन्तान उत्पन्न करने की। यह इच्छा स्वाभाविक है। यह ज्ञान की उपज है और बिना इसके, पुरुष अपने को अपूर्ण मानता है। इससे मैं मन में अपने लिए स्त्री की कामना करने लगा और साथ ही अपने भविष्य के जीवन की कल्पना करने लगा।

उपनिषद् ने कहा है कि प्राणी जब तक स्त्री और सन्तान प्राप्त नहीं कर लेता, तब तक 'यावदप्येतेषामेकैकं न प्राप्नोत्यकृत्स्न एव तावन्मन्येत, स्वयं को अपूर्ण मानता है।

"मैं विचार करता था कि यदि ऐसा ही है तो फिर साधु बनने की प्रथा क्यों है? इस पर युवा साधुओं के कर्तव्यों का अर्थ मेरी समझ में आने लगा। युवा पुरुषों को बिना गृहस्थ भोगे साधु बनना अस्वाभाविक है। उनमें का वह प्राणी, जो आत्मा, मन और शरीर का संयोग है, अपनी स्वाभाविक इच्छा की प्राप्ति के लिए छटपटाता रहता है।

"इतना विचार कर मैं अपने विषय में चिन्तन करने लगा। कैसे राधा के विषय में मेरे मन में कामना उत्पन्न हुई थी। वह कामना वास्तव में स्वाभाविक ही थी। वह कुमारी थी और मैं भी कुमार था।

"तो यह क्या हुआ? क्यों हुआ? वह उस कर्म से ग्लानि अनुभव कर क्यों गंगा–प्रवाह ले बैठी थी? इन्हीं विचारों में लीन बैठा था कि एक प्रौढ़ावस्था के पुरुष के साथ वही लड़की, जिसको महन्त ने कृष्णा वैरागिन की सन्तान कहा था, मेरी कोठरी के बाहर आकर खड़ी हो गई। लड़की ने उँगली से संकेत किया तो उस पुरुष ने मेरी ओर देख कर कह दिया, 'महाराज! चलिये, बारह बज गये हैं।'

: 9 :

"कनखल में ही एक उच्च वृत्ति के पुरुष के घर में मेरा भोजन था। उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो चाँदी के थाल, कटोरे–गिलास इत्यादि में भोजन परसा था, परन्तु मैं अपने स्वभाववश हाथों में दो रोटी और उस पर साग रख खाने लगा। मैंने कह दिया, 'यह बर्तनों में खाने का मुझको अभ्यास नहीं है। न ही मैं ऐसा अभ्यासी बनाना चाहता हूँ।'

"मेरे सामने वह पुरुष, उसकी पत्नी और वह लड़की आदरयुक्त मुद्रा में बैठे थे। मेरे कहने पर वह पुरुष मुस्कराते हुए बोला, 'क्या आप जैसे त्यागी भी स्वभाव से डरते हैं?'

" 'भक्त! जब तक यह शरीर है, तब तक किसी भी विकृत बात के स्वभाव बन जाने का डर तो लगा ही रहता है। इस कारण, स्वभाव ऐसा बनाना अच्छा है, जिससे कभी, किसी भी अवस्था और स्थिति में, अभाव न रहे। अभाव ही अनुभूति के दुःख का कारण बन जाती है।'

" 'परन्तु महाराज! आप एक ऐसी कठिन बात का स्वभाव बना रहे हैं, जिसमें मनुष्य महान अभावयुक्त हो जाता है। मेरा अभिप्राय है कि यौवन–काल में संन्यास का स्वभाव तो जीवन की एक परमावश्यक वस्तु का अभाव उत्पन्न कर देता है। क्या आप यह भी अनुभव नहीं करते? करते हैं तो निःसन्देह आपको दुःख की अनुभूति होती होगी।'

"मैं इस कथन में किसी गम्भीर प्रयोजन का अनुमान लगाकर चुप रह गया। मुझको पहले भी सन्देह है कि ये लोग मेरे विषय में कुछ जानते हैं? मुझको चुपचाप भोजन करते देख, अब उस पुरुष ने कह दिया, 'इस दुखद् स्वभाव से मनुष्य दुःख का ही विस्तार करता है। यहाँ के साधुओं के कुकृत्यों को मैं भली प्रकार से जानता हूँ।'

"जानता तो मैं भी था; परन्तु उस पुरुष का, यह जानते हुए भी, एक साधु को अपने घर में बुलाकर भोजन कराने पर मुझको विस्मय हुआ। अतः मैंने पूछ लिया, 'इस पर भी आप साधुओं को भोजन खिलाते हैं?'

यह तो मेरी धर्म–पत्नी खिला रही है। इसका कहना है कि इस प्रकार भोजन कराने से इसके मन को शान्ति मिलती है। यह किसी साधु के पेट भरने की बात नहीं, यह तो इसकी आत्म–तृप्ति की बात है।

" 'परन्तु इसका कहना था कि आप दूसरों से भिन्न हैं। इसने आपको समाधि अवस्था में देखा है। उस समय आपके शरीर पर चींटियाँ चढ़ रही थीं। परन्तु इस पर भी आपका ध्यान विचलित नहीं हुआ। दो घण्टा यह आपको देखती रही और विस्मय करती रही कि आप जीवित हैं, अथवा मृत। आपकी श्वास चल रही थी। जब आपकी समाधि टूटी तो आपको चींटियों के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर पर रेंगने का ज्ञान हो गया और अपने अँगोछा लेकर बदन को झाड़ना आरम्भ कर दिया। अर्थात् आपके शरीर में अनुभव करने की शक्ति तो थी। मुझको इसने एक और बात भी बताई है। आपके विषय में एक अन्य स्त्री ने कुछ कहा था। वह आपको स्मरण करती हुई ही मरी थी। आपने जब इसको अपना नाम बताया तो इसको उस व्यक्ति का स्मरण हो आया। इसने आपसे पूछकर अपना समाधान कर लिया तो मुझको बताया। मैं आपके दर्शन की लालसा लिए बैठा था। मैंने सत्य ही आपको वैसा ही पाया है, जैसा कि उस स्त्री ने कहा था।'

" 'तो यह देवी मुझको आज से पहले नहीं जानती थीं?'

"उत्तर उस स्त्री ने दिया, 'नहीं। मैं तो आज गंगा–स्नान कर किसी एक महात्मा को ढूँढ़ रही थी, जिसको भोजन कराऊँ। यह मेरा नियम है कि मैं किसी को, जो प्रातःकाल स्नान करने पर पहले मिले, भोजन का निमंत्रण दे देती हूँ, चाहे वह पहले का जाना–बुझा हो अथवा अनजान हो। यदि वह महात्मा किसी कारण से स्वीकार न करे, तो फिर किसी अन्य को ढूँढ़ती हूँ।

" 'आज जब मैं स्नान करने गई तो मेरे वहाँ पहुँचने से पहले आप वहाँ पर बैठे थे। मैं कुछ दूर हटकर स्नान करने चली गई। यह मेरी लड़की भी मेरे साथ ही थी। इसको स्नान करते और पूजा–पाठ करते एक घंटा से ऊपर लग गया, परन्तु इस बीच में आप उसी भाँति निश्चल बैठे थे, जैसे आप हमारे वहाँ आने से पहले थे। मेरी इच्छा हुई कि आज आपको निमंत्रण दूँ। अतः हम दोनों आपकी समाधि टूटने की ही प्रतीक्षा करने लगीं। दो घंटा तक हम बैठी रहीं। हम बैठी–बैठी थक गई थीं, पर आपको तो अपने शरीर पर चींटियों के रेंगन का भी अनुभव नहीं हो रहा था।

" 'पीछे जब आपने अपना नाम बताया तो मुझे एक गरीबदास का स्मरण हो आया। मैंने अपना संशय निवारण कर लिया और जब यह जाना कि आप वही गरीबदास हैं, तो आपके दर्शन कर गद्गद हो गई।'

" 'घर आकर मैंने इनको बताया तो ये प्रसन्नतापूर्वक आपको लेने चले गए।'

" 'आप गरीबदास के विषय में क्या जानती थीं?'

" 'एक दिन एक देवी ने आपको मध्याह्नोत्तर देखा था और आपके दर्शनों से ऐसी प्रभावित हो गई थी कि मानो साक्षात् भगवान के दर्शन किये हों। वह बताती थी कि उसका चित्त करता था कि आपके चरणों में लोट–पोट होती रहे। रात–भर वह आपका चिन्तन करती रही थी। महन्तजी, जिनके पास वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी, उसकी सेवा की इच्छा करने लगे तो उसने इनकार कर दिया। बहुत झगड़ा हुआ और उससे बलपूर्वक सेवा ली गई। वह उस सब काल में आपके सम्मोहन में थी। अगले दिन प्रातःकाल वह गंगा–स्नान के लिए जा रही थी तो उसे आप मिल गए। आपने तब उसको वचन दिया था कि आप उसको अपनी शरण में लेने के विषय में विचार करेंगे और शीघ्र ही उस विचार का परिणाम बतायेंगे। गंगा–स्नान के बाद वह, आपको पूजा–पाठ में लीन देख, किनारे से चली आई थी। वह आपको मठ में मिलना चाहती थी, परन्तु आप नहीं आए। पीछे वह रुग्ण हो गई। उसके सन्तान हुई, तदनन्तर वह ज्वर–ग्रस्त हो मर गई। मरते समय उसने कहा था कि आप आयेंगे। अतः आपको आया देख मेरी प्रसन्नता इसलिए भी बढ़ी है।'

"मैं भोजन कर चुका था। इस पर भी उस लड़की ने हाथ जोड़कर कहा, "महाराज! आपने तो कुछ खाया ही नहीं। केवल दो रोटी और साग तो कुछ भी नहीं होता। इससे अधिक तो मैं ही खा जाती हूँ।'

" 'इस कारण कि तुम साक्षात् देवी हो और मैं एक साधु–संन्यासी। मुझको कम ही खाना चाहिए।' मैंने कहा।

" 'महाराज!' वह कहने लगी, 'मेरे कहने से कुछ तो और ले लीजिए।'

" मेरी हँसी निकल गई। मैंने कहा, 'अच्छा तुम्हारा आग्रह है तो जो कहो एक पदार्थ और ले सकता हूँ?'

" 'तो खीर लीजिए।'

"मैंने हाथ फैला दिए। उसने खीर का कटोरा उठाया और मेरे हाथ पर रख दिया। मैंने खीर खाई और हाथ धो उनसे विदा माँगने लगा। वह पुरुष मेरे साथ चलने को तैयार हो गया और कहने लगा, 'चलिए! मैं छोड़ आता हूँ।'

"मार्ग में चलते हुए मैंने उससे नाम पूछा। वह आनन्दस्वरूप था। उसकी पत्नी का नाम सुदासी था और लड़की का नाम लेखवती।"

इस पर श्यामनारायण ने पूछ लिया, "ताई लेखवती?"

"हाँ, मैंने यह लम्बी कथा इस कारण सुनाई है कि तुम्हारी समझ में आ जाए कि जब मैंने अपनी अन्तरदृष्टि से तुम्हारे भविष्य को देखा है तो ठीक ही देखा है।"

" अच्छा तो बड़े भापा! यह विवाह कैसे हुआ और तुम दोनों की आयु में इतना अन्तर होने पर भी ताई के संरक्षकों ने स्वीकार क्यों किया?"

विष्णु को तो दुकान पर जाना था। वह, उठकर चला गया, परन्तु श्याम

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
की दफ्तर से छुट्टी थी। उसको यह कहानी रोचक प्रतीत हुई। वह बोला, "भापा! आज सुना ही दीजिए। आपको लहर आ गई है। फिर कभी आपका मन करे अथवा नहीं, कौन जानता है।"

"सुन लो। अगर कुछ लाभ उठा सको तो उठा लेना।

"उसी समय मेरे साथ आते हुए आनन्दस्वरूप ने कहा, 'आपने मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया?'

" 'क्या प्रश्न था आपका?'

" 'यही कि अस्वाभाविक जीवन का पालन क्यों करते हैं?'

"मैं कुछ काल तक अपने पूर्ण साधुपन के जीवन पर विचार करता रहा और तदनन्तर अपने मन की अवस्था को, जैसा मैं समझ पाया था, बताने लगा। मैंने कहा, 'भक्त! जब साधु बना था तो अपने किसी कुकर्म से भागा हुआ जा रहा था और उस भयंकर कर्म के फल से बचने का प्रयत्न कर रहा था। उसी समय गुरुजी मिले। उन्होंने मुझको बताया कि यह संसार दुःखों का सागर है और इसको छोड़ने से ही दुःखों से बचा जा सकता है। मैंने संसार छोड़ दिया और उनसे दीक्षा ले ली। इस प्रकार दुखों से तो छुटकारा मिल गया। भोजन, वस्त्र आदि की चिन्ता नहीं करनी पड़ती थी। आप–जैसे सज्जन खाने–पहनने को दे ही देते हैं और साथ ही मैंने अपनी आवश्यकताओं को इतना सरल कर रखा है कि बहुत ही कम प्रयत्न से वे सब पूरी हो जाती हैं। भक्तजन भी मेरी आवश्यकता को पूरा करने में कोई कठिनाई अनुभव नहीं करते। चौबीस घंटे में केवल दो रोटी, यह तो कोई निर्धन से भी निर्धन व्यक्ति दे देता है। वर्ष में एक बार यह चोगा और दो लंगोट मुझको चाहिये। वे भी मिल जाते हैं। जीवन–भर के लिए एक कमण्डलु। पाँव से नंगा रहने का अभ्यास भी बना लिया है।

" 'इस प्रकार आवश्यकताओं को न्यूनातिन्यून करने से इन अभावों से बच गया हूँ। अतः इनके कारण प्राप्त होने वाले दुःख नहीं होते। परन्तु जिस अभाव की ओर आपका संकेत है, उसको मैं अनुभव करता हूँ। अभी तक तो उस अभाव से होने वाले दुःख को मैंने अपने मन के संयम से दृढ़ रख अपने को पराभूत होने नहीं दिया। इस पर भी यह सब प्रयास व्यर्थ प्रतीत होने लगा है। मनुष्य की पूर्णता तो स्त्री और सन्तान प्राप्त करने पर ही होती है। यह संन्यास का मार्ग, आयु के तृतीय अथवा चतुर्थ भाग में स्वीकार योग्य है।

"मैं कभी–कभी इस द्विविधा में पड़ जाता हूँ कि अपूर्णता मुझको कहीं मेरे अपने परम–साध्य लक्ष्य से विचलित तो नहीं कर देगी? अथवा उस पूर्णतः

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
को प्राप्त करते–करते मैं कहीं और दुःखों में ग्रस्त तो नहीं हो जाऊँगा।

" 'अन्य साधु तो, वासना से इस अपूर्णता को मिटाने का यत्न करते हैं, परन्तु मैंने वासना पर प्रभुत्व प्राप्त कर लिया है। मैं अनेक बार इस परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुका हूँ। परन्तु अब वासना की अपूर्णता नहीं, जो मुझे खटक रही है। यह है गृहस्थ जीवन का अभाव जिससे कि मनुष्य समाज के ऋण से उऋण होता है।

" मैं अपने इस कर्त्तव्य पालन न कर सकने से उत्पन्न अभाव को लोक–सेवा से पूर्ण करना चाहता हूँ। परन्तु उस लोक–सेवा में उत्तरदायित्व के अभाव से चित्त को शान्ति नहीं प्राप्त होती। इस प्रकार मैं अपने को कभी द्विविधा में फँसा हुआ पाता हूँ। कृष्णा वैरागिन के यह कहने पर कि मैं शरीर की भस्म को गंगाजी में धो डालूँ और उसकी गृहस्थ पालन में सेनाएँ स्वीकार करूँ, मैं इसी प्रकार से विचार करने लगा था। परन्तु उसके आग्रह में वासना का रंग देख मैं डर गया था। मैं यही समझा था कि वासना एक क्षणिक अवस्था है। अधिक–से–अधिक यह यौवनकाल तक ही रहती है। तदनन्तर क्या होगा। यदि उस समय तक गृहस्थ का कर्त्तव्य पूर्ण न हो सका तो क्या होगा? वास्तव में इसी भय से प्रभावित हो मैं भाग गया था।

" परन्तु अब अनुभव से इसके विपरीत विचार करता हूँ। यह वासना प्रेरणा है गृहस्थ के उत्तरदायित्व को लेने के लिए। यह ठीक है कि अनेक हैं जो इस प्रेरणा को ही लक्ष्य मान बैठे हैं, परन्तु है यह प्रेरणा मात्र ही। इस जीवन–यात्रा में चलने के लिए यह प्रश्रय मात्र है।

" मेरे वर्ग के कुछ लोग, मेरा अभिप्राय है कि साधु लोग, कहते हैं कि गृहस्थ जीवन उस परम–लक्ष्य अर्थात् मोक्ष–प्राप्ति में बाधक है। मैंने इस विषय पर बहुत मनन किया है। मुझको उनके इस कथन में सार प्रतीत नहीं हुआ। बाधा गृहस्थ जीवन की नहीं है, प्रत्युत गृहस्थ को वासना–पूर्ति मात्र का साधन मान लेने में है। जो साधु भगवा पहनने पर भी वासना प्राप्ति के लिए भटकते रहते हैं, मोक्ष–मार्ग से तो वे भी विचलित हो रहे हैं। मेरा विचार है कि उन गृहस्थों से अधिक ही, जो गृहस्थ को समाज–ऋण चुकाने के निमित्त मानते हैं।'

"हम इस समय अवधूताश्रम में पहुँच गए थे और आनन्दस्वरूप मेरे साथ ही मेरी कोठरी में चला आया। उसका स्पष्ट प्रश्न था, 'तो आप गृहस्थ जीवन स्वीकार करेंगे?'

" 'मैं अपने जीवन–साथी की प्रतीक्षा में हूँ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर वह मुस्कराया और पूछने लगा, 'आपकी आयु कितनी है?'

"मैंने बताया, 'पैंतीस वर्ष।'

" 'तो और कितने वर्ष तक प्रतीक्षा करेंगे?'

" 'यह कैसे बता सकता हूँ? जब तक वह, जो मेरे साथ इस आश्रम का भार–वहन करने के लिए नियत है, नहीं आती और नहीं मान जाती, मैं क्या कर सकता हूँ?'

" 'परन्तु महाराज! तब तक तो आपकी आयु इस भार का वहन करने के योग्य नहीं भी रह सकती।'

" 'यदि उसने देरी कर दी तो मुझको, इस भार से मुक्त होने के लिए अगले जन्म की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।'

" 'वह आपकी साथिन कहाँ से आ रही है?'

" 'इस विषय में मैं कुछ नहीं कहता। कहूँगा भी नहीं। यह सब ईश्वर के अधीन है।'

: 10 :

"इस पर आनन्दस्वरूप ने संक्षेप में कृष्णा वैरागिन की कथा बता दी। उसने बताया, 'वह कभी–कभी भिक्षा पाने के लिए मेरी पत्नी के पास आया करती थी। मेरी पत्नी को वह मठ की अवस्था की कथाएँ सुनाया करती थी। उसने यह भी बताया था कि वह मठ के महन्त के निमित्त है। इस कारण वह अन्य मठ के निवासियों से बची हुई है। अन्यथा अन्य दो वैरागिनें तो मठ में सबकी साझी पत्नियाँ मानी जाती हैं। वह सुदासी के कहने पर विवाह कर स्थिर जीवन व्यतीत करने के लिए तैयार थी। एक साधु के साथ भाग जाने का प्रबन्ध भी किया था, परन्तु भेद खुल गया और उस साधु को मरवाकर गंगा में बहा दिया गया। तदनन्तर आपको सब प्रकार से योग्य मान, उसने आपका आश्रय लेने का यत्न किया था, परन्तु आप नहीं आये। उसके कुछ ही दिनों बाद वह गर्भवती हो गई। उसको कुछ ऐसा अनुभव हुआ कि महन्त उसकी हत्या करा, उसे भी गंगा में बहा देने का षड्यन्त्र कर रहा है। तब वह मेरी पत्नी का आश्रय पा गई। उसने अपनी इस लड़की को हमारे घर में ही जन्म दिया। प्रसव के उपरान्त वह ज्वर–ग्रस्त हुई और स्वर्गवास कर गई। मरने के समय वह यह कहती रही थी कि आप आयेंगे और हम उस लड़की को आपको दे दें। हम इसको ज्वर के कारण बुद्धि–विभ्रम ही मानते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपकी आयु और उस लड़की की आयु का अन्तर देख मेरा इस ओर विचार करने से भी चित्त डरता है।'

"मैं चुप रहा। इस पर भी वह लड़की मुझे अन्तर्दृष्टि से पत्नी ही दिखाई देती थी। मैं मौन रहा। आनन्दस्वरूप मुझसे मिलता रहा। इस पर भी इस विषय पर फिर उससे चार वर्ष तक बातचीत नहीं हुई। मैं हरिद्वार कई बार गया और आनन्दस्वरूप से मिला। उनके गृह पर भोजन के लिए भी गया और लेखवती का परसा हुआ भोजन भी करता रहा, परन्तु पुनः न तो आनन्दस्वरूप ने मुझसे पूछा कि मैंने विवाह का विचार किया है अथवा नहीं, न ही उसने कभी लेखवती के विवाह का उल्लेख किया।

"यह सन् 1878 की बात है। मैंने तब तक साधु का बाना उतार देने का निश्चय कर लिया था। इस पर भी लेखवती से विवाह का कोई भी विचार नहीं था। कम–से–कम मैं अपने मुख से इस सम्बन्ध के विषय में कुछ कह नहीं सकता था। आयु में बहुत बड़ा अन्तर था। यद्यपि मेरे अपने ज्ञान से इस अन्तर से किसी प्रकार का दुष्परिणाम उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं थी, इस पर भी मैं यह प्रस्ताव स्वयं करता तो महास्वार्थी और मूर्ख माना जाता। परन्तु मैं यह जानता था कि लेखवती मेरे इस जीवन में मेरी संगति के लिए आ रही है।

"सन् 1878 में जब मैं अवधूताश्रम में गया तो महन्त से पता चला कि आनन्दस्वरूप मेरे विषय में पूछता रहा है। मुझको यह अनुभव हो रहा था कि मेरे इस जीवन का नवीन पट खुलने वाला है। मैं उससे मिलने नहीं गया। परन्तु मेरे वहाँ पहुँचने के दिन ही वह मुझसे मिलने के लिए चला आया। मुझको अपनी ही कोठरी में बैठा देख नमस्कार कर भीतर आ गया।

"उसने बैठकर कहा, 'महाराज! इस बार तो आप बहुत घूमे?'

" 'नहीं तो। मुझको यहाँ से गए केवल छः मास ही तो हुए हैं। मैं इस काल में अपने गुरुजी के पास रहा हूँ। वे बीमार थे और उनका स्वर्गवास हुआ तो फिर उचाट मन शान्ति प्राप्त करने के निए यहाँ चला आया। वहाँ मेरे गुरुभाई रामदास जो अब स्वयं गुरु रामसिंह के नाम से विख्यात हो रहे हैं, मेरे पास रहे हैं। वे भी गुरुजी की अन्तकाल में सेवा करने आए हुए थे। उनका कहना है कि देश में गृहस्थियों में विकृति आने से ही देश का नैतिक पतन हो रहा है। इनको सन्मार्ग पर लाने से ही देश का कल्याण सम्भव है। वे अब गृहस्थियों के सुधार में संलग्न हैं। उनके अनुयायी अपने को नामधारी और अपने नेता को सिक्खों का गुरु मानने लगे हैं। स्वामी बालकराम ग्यारहवें और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु रामसिंह बारहवें गुरु विख्यात हो गए हैं। लाखों सिक्ख इनके अनुयायी हो रहे हैं।

" उनसे मेरी बातचीत हुई है। मैंने उनसे कहा था कि वे अपने कार्य को केवल, सिक्खों में ही क्यों सीमित कर रहे हैं? उनका कहना है कि सिक्ख हिंदुओं की संरक्षक श्रेणी है। इस कारण उनमें सुधार होने से हिन्दू जाति में स्वयमेव जागृति उत्पन्न हो जाएगी।

" मुझको भय है कि दादू, कबीर इत्यादि की भाँति और गुरु गोविन्द सिंह के सिक्खों की भाँति यह नामधारी भी एक पंथ बनकर निष्प्रभाव हो जाएगा। गुरु रामसिंह जी ने भारी तपस्या की है और उनकी तपस्या के बल से पंथ विस्तार तो पा जायेगा, परन्तु यह हिन्दू समाज में जागृति उत्पन्न नहीं कर सकेगा।

" इन दिनों मेरी एक अन्य महापुरुष से भेंट हुई है। उनका नाम स्वामी दयानन्द है। वे मुझको अमृतसर में मिले। वहाँ कुछ ब्राह्मणों से उनका शास्त्रार्थ हुआ तो मैं उनकी विद्वत्ता और विशाल ज्ञान पर मुग्ध हो गया। मैंने उनसे नामधारियों का उल्लेख किया तो वे कहने लगे कि मैंने उनके विषय में सुना है। मैं उनके सद्चरित्र और उनके शुभ उद्देश्य से परिचित हूँ, परन्तु मुझको यह विश्वास है कि हिन्दू समाज के अनेक पंथों में से ये नामधारी भी एक पंथ बनकर रह जाएगा।

" उनका यह भी कहना है कि– इस समय देश में आवश्यकता है पूर्ण हिन्दू समाज को जागृत करने की। उसके लिए वेद ही एक बिन्दु हो सकता है, जिसके आश्रय इस भूले–भटके समाज का कुछ उद्धार हो सकेगा। हिन्दुओं में वेदों से भी उच्च मान्यता उपनिषद्–पुराणादि ग्रन्थों को देने से जाति में भेदभाव बढ़ा है। कारण यह है कि ये सब ग्रन्थ अधिकांश आवश्यक विषयों में स्पष्ट नहीं हैं। साथ ही गुरुओं की परम्परा भी इस भेद को बढ़ाने वाली है। गुरु मनुष्य होने से परस्पर भिन्नता रखते हैं और उनकी इस भिन्नता से ही उनके सम्प्रदायों में भी भिन्नता आती है। पूर्ण हिन्दू जाति का, वेद ही एकमात्र प्रामाणिक पुस्तक होनी चाहिए। सबको इसके चारों ओर एकत्रित हो, इसी को गुरु मानना चाहिए। गुरु की भाँति यह ही परम कल्याणमय, मोक्षदायी है।'

"मैं स्वामीजी को ठीक मान, उनका शिष्य हो गया हूँ। यद्यपि मैं उनकी सब बातों को अभी मान नहीं सका, इस पर भी उनकी मुख्य बात कि वेद सत्य विद्याओं की पुस्तक है और यह स्वतः प्रमाण है, को मान गया हूँ। मैं यह भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान, गया हूँ कि उपनिषदादि ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं।

"आनन्दस्वरूप मुस्कराते हुए कहने लगा, 'मैं दो मास से आपकी खोज में था।'

" 'क्यों, क्या बात थी?'

" 'घर में एक विकट समस्या उत्पन्न हो गई है हमारे?'

" 'क्या कुशल तो है। सुदासी तो ठीक है?'

" 'वह तो ठीक है महाराज! यह लेखवती अपनी माँ की भाँति एक रट लगा रही है।'

" 'क्या?'

" 'वह विवाह की इच्छा करने लगी है।'

" 'कितनी आयु है उसकी?'

" 'बारह पूर्ण कर चुकी है।'

" 'यद्यपि यह विवाह की आयु नहीं है, इस पर भी उसकी सगाई तो की ही जा सकती है।'

" 'परन्तु महाराज! वह तो आपसे विवाह की इच्छुक है?'

" 'मुझसे? यह भला हो सकेगा क्या? मैं तो साधु हूँ।'

" 'वह एक दिन अपनी माँ से कह रही थी कि वह जानती है कि आप उससे विवाह करेंगे। आप उसके आने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।'

"आनन्दस्वरूप ने आगे कहा, 'मैं समझा था कि कदाचित् उसने आपका कथन कि आप अपनी जीवन–संगिनी की प्रतीक्षा कर रहे हैं, सुन लिया है। परन्तु उसके पूछने पर पता चला कि वह अनुभव करती है कि आपने अभी तक विवाह नहीं किया, केवल इस कारण कि वह अभी आपकी सेवा के लिए तैयार नहीं है।'

"यह सब सुनकर मैं गम्भीर हो गया। इस पर आनन्दस्वरूप कहने लगा, 'उसने एक कथा सुनाई है। वह आपके विषय में है और वह कहती है कि यह उसके पिछले जन्म की कथा है।'

"इतना कह वह मेरे मुख पर देखने लगा। परन्तु वहाँ हर्षशोक आदि किसी का भी लक्षण न पा बोला, 'बताने में डर लगता है।'

" 'किससे?'

" 'आपसे, मैं आपको नाराज नहीं करना चाहता। परन्तु उसने यह कथा अपनी माँ को इतनी स्पष्ट सुनाई है कि मैं उस पर विश्वास किए बिना रह नहीं सका।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'डरने की कोई बात नहीं आनन्दस्वरूप? कहो, भगवान जाने वह क्या बात है और वह किस जन्म की बात कह रही है।'

" 'उसने यह बताया है कि एक बार जंगल में एक कुएँ पर बैठे आप चने और गुड़ खा रहे थे। तब वह घर में अपने पति की खोज में सिक्ख लड़के के वेश में, वहाँ पहुँच गई। आप भी उधर जा रहे थे, जिधर वह जा रही थी। आप उसके बदले वेश में भी उसे पहचान गए। इस पर भी आपने उसकी मान–प्रतिष्ठा का हनन नहीं किया। हरिद्वार में दो वर्ष तक वह आपकी बहिन बनकर रही और पति की खोज करती रही, परन्तु वह अपने पति को पा नहीं सकी। इस पर एक रात आप उसको यह कहने लगे कि उसका पति अवश्य मर चुका है, वह विधवा है और अब उससे विवाह कर सकती है। वह आप पर मोहित थी, परन्तु धर्म की बाधा बीच में खड़ी थी। वह दूसरा विवाह नहीं कर सकती थी। इन दो परस्पर–विरोधी भावनाओं में निश्चय नहीं कर सकी। आपने यह समझा कि वह आपके प्रस्ताव को स्वीकार कर रही है। वह स्वयं भी नहीं समझ सकी थी कि वह क्या चाहती है? आपके सुन्दर, ओजमय और सुदृढ़ शरीर और दो वर्ष से संयत एवं शीलमय मन को देख तथा आपके सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार से वह आप पर मोहित थी। इसी कारण आपको इनकार नहीं कर सकी। इस पर भी उसके मन में विचार था कि वह ब्राह्मण की बेटी, हिन्दू धर्म से पतित होकर, नरक में जायगी। वह एक विचार से आत्मसमर्पण के लिए लालायित थी और एक विचार से धर्म उसके और आपके बीच में खड़ा था।

" 'आपने उसको मौन देख पकड़ लिया और उसको अपनी पत्नी बना लिया। रात–भर आप उससे भोग–विलास करते रहे। इससे उसका पूर्ण शरीर और मन भी प्रफुल्लित हो उठा था। वह आपकी भुक्त बनी रही। आपका विरोध नहीं कर सकी। आप अगले दिन प्रसन्न मन उसके लिए भूषण, वस्त्र और शृंगार आदि का सामान खरीदने गए। तब उसको अपने रात के व्यवहार पर पश्चाताप लगने लगा। उसने समझा कि उसने घोर पाप किया है। उसके मन में आया कि वह शरीर के सामने पराभूत हो पतित हो गई है। वह उठी और प्रायश्चित करने चल पड़ी। वह अपने शरीर को गंगा में प्रवाह कर मछलियों का पेट भरने के लिए अर्पण कर देना ही प्रायश्चित समझती थी। अतः कपड़ों सहित ही वह गंगा में उतर गई और दूर धारा में जा उसमें विलीन हो गई। परन्तु किसी ने उसको प्रवाह लेते देख लिया और किनारे पर खड़े लोगों में हल्ला करने लगा। कुछ पंडों ने, जो गंगा में तैरा करते थे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छलाँग लगा दीं। आधे घण्टे की खोज के अनन्तर हरिद्वार से दो मील नीचे, उसका शव किनारे पर लाया जा सका।

" 'शव हरिद्वार में लाकर किनारे पर रख दिया गया। उसकी आत्मा उस शव पर मंडराती रही। उसका प्रायश्चित पूर्ण नहीं हो सका था। एक दानी सज्जन ने लकड़ी का दाम दिया और उसका दाह–संस्कार कर दिया गया। मछलियों को भोज न मिल सका।

" 'आप उसको खोजते हुए घाट पर आए और उसके शव के रूप में देख अपने कर्म पर पश्चाताप करते हुए उत्तराखण्ड की ओर चल पड़े। उसकी आत्मा आपके पीछे–पीछे जाना चाहती थी, परन्तु कोई अदृश्य शक्ति उसको पकड़कर एक ओर ले गई और आप विलुप्त हो गए।

" 'उसका कहना है कि वह प्रेत–योनि में डालकर एक पीपल के पेड़ पर बैठा दी गई। उसने एक पाप किया था। आपसे संसर्ग में उसके गर्भ–बीज बन गया था। उसने आत्महत्या कर उस गर्भ–बीज का भी नाश किया था। इस कारण लगभग छः वर्ष तक वह प्रेत–योनि में पड़ी रही और अपने कुकर्म का स्मरण कर छटपटाती रही। उसको यह बात तो तब ही समझ में आ गई थी कि उसका विवाह अपने नपुंसक पति से अधर्म का सम्बन्ध था। आप ही उसके वास्तविक पति थे। हिन्दू समाज के कृत्रिम नियमों ने ही उसकी मति पर आवरण डाला हुआ था। उन नियमों के कारण ही वह अपने को पतित और पापी मान बैठी थी। वास्तव में वह आपकी जीवनसंगिनी बनने के लिए ही थी।

'जिस वृक्ष पर वह थी, वह वैरागियों के मठ में था और एक दिन उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका प्रेत का शरीर उसके ऊपर से ऐसे उतर रहा है, जैसे किसी पके फल का छिलका झड़ जाता है। वह मुक्त हुई तो आप उसको दिखाई दिए। वह पुनः आपके साथ जाने की लालसा करने लगी, परन्तु उसी समय वह एक युवती के गर्भ में डाल दी गई। वहाँ वह रही और फिर उसका जन्म हुआ।

" 'लेखवती ने अपनी माँ से कहा कि माँ! तुम मेरी माँ नहीं हो। मैं तुम्हारे पेट में नहीं रही। इस पर भी तुमने पालन–पोषण किया है। इसलिए मैं तुम्हारी कृतज्ञ हूँ। मैं तुम्हारी कृतज्ञ इस कारण भी हूँ कि मैं अपनी खोज में तुम्हारे द्वारा ही सफल हो रही हूँ। मैं अपना पूर्व का इतिहास भूल गई थी कि एक दिन वे गंगा–किनारे समाधिस्थ दिखाई दिए। तुम उनको भोजन का निमन्त्रण देने बैठीं तो मैं भी साथ बैठ गई। मैं वहाँ बैठी तो ऐसा अनुभव करने लगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि वे कोई जाने–बूझे हैं। चिन्तन करने पर मुझको अपना पूर्व–इतिहास स्मरण होने लगा। कड़ी–कड़ी कर पूर्ण श्रृखला, जबसे उनके दर्शन हुए थे, उस समय तक, जब मैं उनके सामने बैठी चिन्तन कर रही थी, स्मरण हो आया। जब तक उनकी समाधि टूटी, इससे पूर्व ही मैं अपने और उनके सम्बन्ध को समझ गई थी। मैंने उठते समय भूमि पर उनको माथा टेक नमस्कार किया और और मन में निश्चय कर बैठी कि मैं उनकी सेवा में जीवन व्यतीत करूँगी।

" 'इस पर भी वह बालिका होने से कुछ कह नहीं सकी। उसने अपनी इच्छा दो मास हुए व्यक्त की, जब हम उसकी सगाई की चर्चा करने लगे थे। वह पिछले वर्ष से रजस्वला हो रही है और उसकी माँ को उसके विवाह की चिन्ता लग रही है।'

"आनन्दस्वरूप ने आगे कहा, 'उसकी माँ ने उससे कहा है कि उसकी और आपकी आयु में भारी अन्तर है और वही बात फिर हो सकती है जो पिछले जन्म में उसके साथ हुई थी, परन्तु उसने कह दिया है कि वह जानती है कि वैसा नहीं होगा। वह कैसे यह जानती है, हमें विदित नहीं, न ही उसने बताया है। वह सदा यह कहती रहती है कि वह जानती है और हम नहीं जानते कि उसका आपसे सम्बन्ध जन्म–जन्मान्तर का है।'

"मैं मुस्कराता हुआ आनन्दस्वरूप के मुख पर देख रहा था। वह अपनी बात कहकर पूछने लगा, 'महाराज! क्या इस कथा में कुछ भी तथ्य है?'

"मैंने कह दिया, 'इस कथा का, जितना सम्बन्ध मुझसे है, वह सर्वथा सत्य है। इससे यह परिणाम निकलता है कि शेष भी सत्य होगा। मुझको आश्चर्य तो इस बात का है कि मैंने उस रात की बात किसी को नहीं कही। यदि वह यह सब जानती है तो निस्सन्देह वह राधा ही है।

" 'अब मैं भी कुछ वैसा ही समझता हूँ। महर्षि स्वामी दयानन्द भी विधवा विवाह, नियोग इत्यादि को स्वाभाविक और उचित मानते हैं। यद्यपि मैं स्वामीजी से मिलने पर उनकी इन बातों के साथ सहमत नहीं हुआ था, परन्तु अब मैं समझता हूँ कि स्वामीजी ठीक ही कहते हैं।'

" 'तो आप विवाह करेंगे?'

" 'हाँ।'

" 'साधु का बाना उतार देंगे?'

" 'निस्सन्देह।'

" 'कब?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'जब आप और लेखवती पसन्द करेंगे।'

" 'वह तो आज ही पसन्द करेगी।'

" 'इस प्रकार नहीं। मैं यह साधुओं का बाना छोड़ अपने घर जाता हूँ और वहाँ से अपने भाई और भावज को आपके पास भेजूँगा। वे विवाह का प्रबन्ध करेंगे।'

"अगले दिन लेखवती, उसकी माँ और पिता गंगा स्नान करने वहाँ ही आये, जहाँ बैठ मैं पूजा–पाठ किया करता था। मैंने अपनी समाधि तोड़ी तो उन सबको अपने सामने बैठा पाया। आनन्दस्वरूप ने मुझको वस्त्र दिखाये, जो वह अपने साथ लाया था। मैंने वहीं पर, अपना साधु का बाना उतार दिया। कानों से कुण्डल निकाल और जटाओं को काट, उन सबको गंगा में प्रवाहित कर दिया। नवीन वस्त्र धारण कर जब मैं उनके सम्मुख पहुँचा तो तरल नेत्रों से लेखवती मेरे चरणों को स्पर्श करती हुई बोली, 'मैं जानती नहीं कि आपको नीचे को खींच रही हूँ अथवा ऊपर को। इस कारण मैं भूल के लिए क्षमा चाहती हूँ।'

" 'देवी! मैं इस दिन की चार वर्ष से प्रतीक्षा कर रहा था। अब शीघ्र ही मेरा संदेश तुमको मिलेगा।'

"तदनन्तर श्याम! मैं लाहौर आ गया और तुम्हारे पिता से मिला। उसने मुझको अपने घर में रख लिया। फिर समय पाकर मैंने उसको और तुम्हारी माँ को कनखल भेजा और विवाह का निश्चय तथा विवाह कर तुम्हारी ताई को इस घर में ले आया।"

: 11 :

श्यामनारायण अपने ताया की इस आत्मकथा को सुन चकित रह गया। वह यह कथा सुनने पर केवल एक बात समझ पाया कि उसका ताया कहानी बनाने में बहुत चतुर है। उसने 'अलफ लैला' की पूर्ण किताब पढ़ी थी और उसकी कहानियों से, उसको ताया की कहानी अधिक रोचक लगी थी।

इस कथा की रोचकता के अतिरिक्त, उस पर वह विश्वास नहीं कर सका था। इसमें तो केवल अन्तर्दृष्टि की बात नहीं रही थी, प्रत्युत आत्मा, प्रेत–योनि और जन्म–जन्मान्तर का वृत्तान्त भी आ गया था। उसके मास्टर ने उसे बताया था कि यह जन्म–जन्मान्तर की बात ब्राह्मणों ने हिन्दुओं को डरा–धमकाकर उनसे टके वसूल करने के लिए बना रखी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण उसने कह दिया, "मैं तो ताई लेखवती को एक साधारण अनपढ़ और मूर्ख स्त्री मानता था। आपने उनको परम ज्ञान की ज्ञाता और इतनी पवित्र और सकल गुण सम्पन्न बना दिया है, मानो वह लक्ष्मी का अवतार हैं। बड़े भापा! मुझको आपकी यह कहानी सुनने में आनन्द तो बहुत आया है, परन्तु इस पर विश्वास नहीं हुआ।"

"विश्वास तो तब आयेगा, जब तुम्हारे गले में रस्सा डालकर तुम्हारी पत्नी तुमको ग्वालमण्डी में एक नए, परन्तु इससे बहुत घटिया मकान में ले जाकर बाँध देगी।"

इस समय लेखवती नीचे उतर आई। वह अभी भी अपने पति और श्यामनारायण को बातें करते देख पूछने लगी, "आज आप आराम नहीं करेंगे?"

"मैं श्यामनारायण को कुछ समझाने लगा था।"

"व्यर्थ है।" लेखवती ने कह दिया।

"क्यों ताई?" श्यामनारायण ने पूछ लिया, "कैसे समझ रही हो कि मुझसे बातें करना व्यर्थ है।"

"श्याम बेटा!" लेखवती ने समीप बैठते हुए कहा, "तुम कितनी जमायतें पढ़े हो?"

"दसवीं पास की है ताई!"

"यदि तुम सातवीं, आठवीं और नवीं श्रेणी पास न किए होते तो दसवीं क्या पास कर सकते थे?"

"यह कैसे हो सकता था! दस वर्ष में दसवीं श्रेणी पास की है। वर्ष–वर्ष में एक–एक श्रेणी कर ही दसवीं श्रेणी में गया था और फिर पास की थी।"

"परन्तु अपने भापा की बात समझने के लिए तो अभी तुमने पहली श्रेणी भी पास नहीं की। भला उनकी एम.ए. श्रेणी वाली बात कैसे समझ सकोगे?"

"तो भापा क्या एम.ए. पास हैं?"

"हाँ, अपने विषय के। देखो श्याम! तुम्हारी पत्नी तुम्हारे वियोग में अपने कमरे में जल–भुन रही है। जाओ उस बेचारी को सान्त्वना दो।"

श्यामनारायण अपनी पत्नी की बात सुन उठकर मकान की ऊपर की छत पर चला गया। जब वह गया तो लेखवती ने कह दिया, "यह आप अंधी मुर्गी के आगे खसखस का चुग्गा डाल रहे हैं। यह बेचारी चुग नहीं सकती।"

"देखो लेखवती! इस घर में बहुएँ आई हैं और उनको अपने घर के इस वातावरण से सुस्वर करने के लिए कुछ शिक्षा देने की आवश्यकता है। मैं वही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ कर रहा हूँ। यह धर्मविहीनों के स्कूल में पढ़ता हुआ नास्तिक हो गया है। यदि मैं इसके मन में परमात्मा का भय उत्पन्न कर सकूँ तो निश्चय ही उसका लाभ इसकी पत्नी को भी होगा। कला इस घर में आई तो एक वर्ष लाड़–प्यार में निकल गया। एक वर्ष लज्जा में और एक वर्ष पुत्र को जन्म दे स्वस्थ होने में । अब वह ये तीनों सोपान पार कर चुकी है और अपने असली रूप में प्रकट होने लगी है।

"होगा तो वही जो कर्मफल में होना लिखा है। इस पर भी बुरी बात का विरोध होना ही चाहिए। कम–से–कम उसके बुरे प्रभाव में उग्रता तो कम हो जायेगी।"

"आप तो भविष्य की बात जान सकते हैं, क्या होने वाला है यहाँ?"

"एक बात तो मैंने श्याम को बता दी है। मैं कुछ दिनों में इसके जीवन का भविष्य एक ज्योतिषी की भाँति लिखकर इसको दे दूँगा। अभी एक वर्ष का वृत्तान्त ही दूँगा।"

"आपने मेरी बात तो नहीं बताई?"

"आज सब कुछ बता दिया है। भैया को भी, इक्कीस वर्ष के अनन्तर अपने पूर्व–जीवन के विषय में सब बताया है।"

"तो मेरे गंगा में प्रवाह लेने की बात भी बताई होगी?"

"हाँ।"

"यह तो आपने ठीक नहीं किया।"

"लेख! तुम्हारे व्यवहार में कुछ भी ऐसा नहीं, जिसके लिए किसी भी औरत को लज्जित होना पड़े। यदि कुछ लज्जानक बात थी तो वह मेरे लिए थी। मैं तो सदा अपनी त्रुटियाँ बताता रहता हूँ, जिससे मुझको वैसी भूल करने का अवसर ही न रहे।"

"मैं तो आपके अधीन हूँ । जिस विध राखौ, तिस विध रहिहौं।"

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, "मेरी इच्छा हो रही है कि तुम्हारे घर एक बच्चा और हो जाए तो ठीक है?"

"क्या लाभ होगा इससे?"

"जवाहर को दयानन्द ऐंग्लो–वैदिक स्कूल में भरती कराया था। इस विचार से कि वह आर्य बनेगा, परन्तु वह तो म्लेच्छ होता जाता है।"

"क्या किया है उसने?"

"साधना है न, सोमनाथ की लड़की? उससे सांठ–गांठ कर रहा है।"

"मैंने उसे उससे मिलने के लिए मना किया था और वह मान गया था।"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कल रात एक बजे के बाद वह लघुशंका करने मकान की छत पर गया था और साधना भी वहाँ आ गई थी। चौथाई घण्टा वे दोनों ऊपर रहे हैं।"

"तो आपको उसे मना करना चाहिए था।"

"मैं नहीं जानता था कि वह किस प्रयोजन से ऊपर गया है। जब वह पन्द्रह मिनट तक नीचे नहीं आया तो मैं दबे पाँव ऊपर चढ़ गया। मेरे वहाँ पहुँचने पर वह भाग खड़ी हुई। मैंने उसे कूदकर अपने मकान पर जाते देखा था। जवाहर अपने कमरे में चला आया। आज प्रातःकाल से वह मेरे सामने आया ही नहीं।"

"एक और बच्चा पैदा करने के स्थान तो यही ठीक है कि जवाहर को सन्मार्ग पर लाने का प्रयत्न किया जाये।"

"एक और भी कारण है।"

"क्या?"

"तुम्हारी बहू, श्याम की पत्नी यह समझने लगी है कि मैं बूढ़ा हो गया हूँ और इससे तुम विधवा समान रह रही हो।"

"यह कला जैसी मूर्ख स्त्री ही समझ सकती है। मैं न तो आपको वृद्ध समझती हूँ न ही अपने को विधवा मानती हूँ।"

"परन्तु तुमको एक पुत्र और पालने में कष्ट क्यों अनुभव हो रहा है?"

"जवाहर के समय में तो मुझको कष्ट नहीं हुआ था। इस बार क्या होगा मैं नहीं जानती।"

"परन्तु मैं एक बालक घर में और चाहता हूँ।"

"मुझे भय है कि इतने काल तक बच्चा नहीं हुआ और क्या जाने मुझमें बच्चा उत्पन्न करने की शक्ति ही न रही हो?"

"नहीं! कोई ऐसी बात नहीं। मुझको विश्वास है कि तुम एक अत्यन्त मेधावी बालक की माता बनोगी?"

लेखवती लज्जा से आँखें झुकाये बैठी रही। एकाएक उसको जवाहरलाल की एक बात स्मरण हो आई। उसने कहा, "जवाहर कहता था कि वह कॉलेज में नहीं पढ़ेगा।"

"उसको पढ़ाता ही कौन है?"

"तो वह क्या करेगा?"

"मैं आज सायंकाल उससे बात करूँगा। यदि उसे साधना से विवाह करना है तो उसका विवाह कर, किसी काम–धन्धे में लगा दूँगा।"

"और यदि यह विवाह नहीं हुआ तो?"

"तो उसको दो–चार योग की क्रियाएँ सिखाने का यत्न करूँगा, जिससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह संयम से रह सके और अपने वीर्य की रक्षा कर सके।''

''तो आप पहले उससे बात कर लीजिए। दूसरे बच्चे की बात पर तभी विचार करेंगे।''

''नहीं लेख! इसका उसके साथ कोई सम्बन्ध नहीं है।''

उसी सायंकाल, जब जवाहरलाल 'फुटबॉल' खेलकर घर लौटा तो रामरक्खामल्ल मुहल्ले के कुछ अपनी आयु के लोगों से बातें कर रहा था। जवाहर पिता को उन लोगों से बातें करते देख, सुख की साँस ले अपने कमरे में जाने लगा तो उसको अपने पिता का स्वर सुनाई दिया, ''जवाहर! इधर आओ।''

विवश उसको लौट आना पड़ा। रामरक्खामल्ल ने उसे अपने पास बैठा लिया और अपना कथन जारी रखा, ''सन्तराम! महर्षि दयानन्द भी विचित्र व्यक्ति थे। उनके तेज और विद्वत्ता के सम्मुख कोई ठहर नहीं सकता था। उनमें एक और गुण था। सत्य भाषण में उनको कभी भय नहीं लगा। जब वे पहली बार लाहौर में आये तो डिब्बी बाजार वाली बावली साहब में ठहरे थे। वहाँ पर उन्होंने व्याख्यान देते हुए कहा– 'जो कुछ इस संसार में सत्य है, वह वेदों में पहले ही लिखा है। जो सत्य नहीं है वह यदि किसी भी पुस्तक में लिखा हो तो उसको मानना ठीक नहीं।'

''इस पर एक सिक्ख ग्रन्थी ने पूछ लिया, 'स्वामीजी महाराज! प्रथम गुरु श्री नानकदेव जी ने लिखा है–

'एक ओंकार सत नाम करता पुरख निरभौ निरवैर अकाल मूरत अजूनि सई भंग। गुरु परसाद जप, आद सच जुगाद सच, है भी सच नानक हौसी भी सच।'

'' 'इसके विषय में आपका क्या कहना है?'

''स्वामीजी ने तुरन्त कह दिया, 'इसमें भाव बहुत सुन्दर है। केवल इसकी भाषा बिगड़ी हुई है।'

'' 'भाषा से क्या होता है? भावों में ही गुण होता है।'

'' 'आपकी बात मैं समझता हूँ। आप संस्कृत पढ़े नहीं और भाषा के इस सौन्दर्य को जानते नहीं। साथ ही देश भर में, कन्याकुमारी से लेकर श्रीबद्रीनारायण तक जो भाषा बोली जाती है, उसके गुणों का आपको ज्ञान नहीं। इसलिए भाषा की बात आप समझ नहीं सकते।

'' 'गुरुनानक जी बहुत अच्छे आदमी थे, परन्तु जिस समय वे पैदा हुए थे, पंजाब में संस्कृत भाषा पढ़नी कठिन थी। वे पढ़ नहीं सके। इस कारण बेचारे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रामीण भाषा ही बोलते थे और उसी में अपने प्रवचन देते थे।'

"इस पर वह ग्रंथी महोदय लाल–पीले होकर बोले, 'तुम झूठे हो। कैसे कहते हो कि वे पढ़े नहीं थे। वे तो ब्रह्मज्ञानी थे। देखिए, 'सुखबानी' में लिखा है–

'वेद पढ़त बरमा मरे चारों वेद कहानी।

संत की महिमा वेद न जाने नानक ब्रह्मज्ञानी। आप परमेश्वर।

" 'भला जो स्वयं ब्रह्मज्ञानी और आप परमेश्वर है, कैसे कहते हो वह संस्कृत नहीं जानता था?'

" 'जानता होता तो कर्ता को करता न कहता और पुरुष को पुरुख न बोलता।'

" 'तुम महाझूठे हो। शब्द करता ही है कर्ता नहीं।'

"स्वामीजी चुप रहे। परन्तु उसी दिन व्याख्यान के बाद उसी ग्रंथी ने कह दिया, 'सन्त! तुम आज यहाँ से चले जाओ। नहीं तो ठीक नहीं होगा। तुम गुरु महाराज की निन्दा करते हो।'

"स्वामीजी ने दीवान रत्नचन्द डाढ़ीवाले के बाग में जा डेरा लगाया। वहाँ वे प्रचार करने लगे। इन दिनों मैं साधु ही था और स्वामीजी के बावली वाले उस व्याख्यान में उपस्थित था। जब स्वामीजी ने संस्कृत भाषा के लालित्य का वर्णन किया तो मैं उन पर मुग्ध हो गया। मैं उनको अगले ही दिन रत्नचन्द डाढ़ीवाले बाग में मिलने गया।

"स्वामीजी प्रातः का भोजन कर वेद पर भाष्य लिखा रहे थे। लिखने वाले पंडित बैठे थे। स्वामीजी भी बैठे थे। स्वामीजी तो धाराप्रवाह संस्कृत बोलते थे, परन्तु लिखने वाले धीरे–धीरे लिखते थे। मैं चुपचाप उनके इस कार्य को देखता रहा। एक बजे के लगभग उन्हें अपने कार्य से अवकाश मिला तो मैंने प्रणाम किया। वे पूछने लगे, 'किस पंथ के साधु हो?'

"मैंने बताया, 'मेरे गुरु उदासी थे, परन्तु महाराज! मैं कई दिन से आपके व्याख्यान सुन रहा हूँ, और साथ ही मैं अपने इस पहरावे से वास्तव में उदास हो गया हूँ।'

" 'कब से साधु बने हो?'

" 'अठारह वर्ष हो गए हैं।'

" 'क्या करते रहे हो इतने दिन?'

" 'संस्कृत भाषा पढ़ी है और उपनिषद् का अध्ययन करता रहा हूँ।'

" 'क्या समझे हो उपनिषदों से?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
" 'ये भिन्न–भिन्न ऋषियों के लिखे हुए हैं। इनमें परस्पर मत–भेद है।'

"स्वामीजी मेरा मुख देखने लगे। एक कनफटे योगी को उपनिषद् का ज्ञाता और फिर उनसे परस्पर भेद की बात कहते सुन वे मुस्कराकर पूछने लगे, 'कहाँ पर भेद पाया है? कोई उदाहरण दो।'

"मैं डर गया। मैं स्वामी जी के अपार शास्त्रज्ञान के विषय में जानता था। मैंने तो दो–तीन उपनिषद् ही पढ़े थे। इससे उनमें दोष की बात कह तो बैठा, परन्तु स्वामीजी के पूछने पर एक क्षण के लिए घबराया। फिर यह विचार कर कि भूल हुई तो स्वीकार कर लूँगा, मैं कहने लगा, 'महाराज! श्वेताश्वतरोपनिषद् में ही देख लीजिए। एक स्थान पर लिखा है–

संयुक्तमेतत्क्षरमक्षरं च व्यक्ताव्यक्तं भरते विश्वमीशः।
अनीशश्चात्मा बध्यते भोक्तृभावाज्ज्ञात्वा देवं मुच्यते सर्वपाशैः।।

और फिर लिख दिया–

ज्ञा ज्ञौ द्वावजावीशानीशावजा ह्येका भोक्तृभोग्यार्थयुक्ता।
अनन्तश्चात्मा विश्वरूपो ह्यकर्ता त्रयं यदा विदन्ते ब्रह्ममेतत्।।

" 'प्रथम मंत्र में कहा गया है–क्षर–अक्षर संसार अर्थात् व्यक्त–अव्यक्त प्रकृति ईश्वर में ठहरी हुई है और न नाश होने वाला आत्मा प्रकृति का भोग करता हुआ बँधा हुआ है। जब वह देव (परमात्मा) को जान लेता है तो सब बँधनों से मुक्त हो जाता है।

" 'और दूसरे स्थान पर लिखा है, ईश्वर और जीव, सर्वज्ञ और अज्ञ तथा सर्वसमर्थ और असमर्थ हैं। ये दोनों ही अजन्मा हैं। अजन्मा प्रकृति भोग करने वाले आत्मा से भुक्त होती है। विश्वरूप परमात्मा ही अनन्त और अकर्त्ता है। जो तीनों को, ये ब्रह्म हैं, ऐसा जानता है (वह आनन्द को प्राप्त होता है)।

'महाराज, इसमें उपनिषद्कार लिखता है कि जीव और ब्रह्म दोनों अजन्मा हैं। एक प्रकृति का भोग करता है, दूसरा नहीं। साथ ही प्रकृति को भी अजा कहा है।

" 'इसी प्रकार एक अन्य उपनिषद्कार ने लिखा है–

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या। जीवो ब्रह्मैव नापरा।'

"स्वामीजी हँस पड़े। हँसकर बोले, 'यह तो उपनिषद् का वाक्य नहीं है।'

" 'और यह', मैंने पूछ लिया–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'मत्तः परतरं नान्यत्किंचिदस्ति धनंजय।
मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव।।'

"स्वामीजी ने दृढ़ मुद्रा बनाकर कहा, 'यह भी उपनिषद् वाक्य नहीं है। क्या नाम है तुम्हारा?'

" 'महाराज! गरीबदास।'

" 'देखो, यह नाम ठीक नहीं है। न तो तुम गरीब हो और न ही दास। यह नाम गलत है। तुम अपना नाम बदल दो। परन्तु नाम बदलने से कुछ नहीं होगा। पहले अपने भाव ज्ञानमय कर लो।

'देखो, भिन्न–भिन्न उपनिषद् संसार की भिन्न–भिन्न वस्तुओं का रहस्य बताने के लिए लिखे गए हैं। ये केवल ब्रह्मज्ञान की ही पुस्तकें नहीं हैं। इनमें प्रकृति, व्यक्त तथा अव्यक्त, शरीर, चेतन और उस चेतना का कारण मन जहाँ आत्मा और ब्रह्म, सबके रहस्य का वर्णन है। यह ठीक है कि जहाँ पर ब्रह्म का रहस्योद्घाटन है वहाँ आत्मा का नहीं और जहाँ आत्मा का है वहाँ ब्रह्म अथवा प्रकृति का नहीं। इससे प्रायः मनुष्य भ्रम में फँस जाते हैं। साथ ही उपनिषद् के टीकाकारों ने अनेक स्थानों पर अनर्थ कर मिथ्या वादों को भी जन्म दिया है। 'ब्रह्म सत्यं...' इत्यादि तो किसी प्रच्छन्न नास्तिक का लिखा श्लोक है। और 'मत्तःपरतरं...' भगवद्गीता का है। यह पुस्तक प्रमाणित नहीं। क्योंकि इसमें पहले तो परस्पर विरोधाभास दिखाई देता है। इसमें यह भी आया है–

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्धयनादि उभावपि।
विकारांश्च गुणांश्चैव विद्धि प्रकृतिसंभवान्।।

" 'वहाँ प्रकृति और पुरुष को अनादि माना है। इसलिए मैं तो कहता हूँ कि जब भी, जिस पुस्तक में भी संशय उत्पन्न हो जाए, उसको वेद की कसौटी पर कसकर उसकी परीक्षा करनी चाहिए।

"वेद में लिखा है–

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्यनश्नन्नन्योऽभिचाकशीति।।

" 'अतः उपनिषद्, गीता अथवा किसी भी ग्रन्थ में वेद भगवान के भाव के विपरीत जब लिखा मिलेगा, वह मान्य नहीं होगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं स्वामीजी के द्वारा स्वयं को निरुत्तर किए जाने पर चकित हो उनका मुख देखता रह गया।"

इस प्रकार रामरक्खामल्ल महर्षि दयानन्द के विषय में अपने विचार अपने मित्रों के सामने व्यक्त कर रहा था।

दीपक जले तो सब उठकर अपने–अपने घर को चल पड़े। जवाहरलाल भी उठने लगा तो रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "बैठो।"

जवाहरलाल पुनः बैठ गया।

: 12 :

जब बैठक मित्रों से रिक्त हो गई और पिता–पुत्र अकेले रह गए तो पिता ने पूछ लिया, "जवाहर! साधना से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है?"

जवाहर का मुख लज्जा से लाल हो गया। वह भूमि की ओर देखता हुआ बैठा रहा। पिता ने पुत्र को लज्जित होते देख पूछ लिया, "मैं यह जानना चाहता हूँ कि तुम्हारे उसके साथ यौन–सम्बन्ध हैं अथवा नहीं?"

इस पर जवाहर ने आँखें नीचे किए हुए कहा, "पिताजी! यह मेरी बाल्य–काल की सखी है। हम इकट्ठे खेलते रहे हैं। उसने ही पहले मुझको इस पथ पर घसीटा है, मुझको इन बातों का ज्ञान नहीं था। उसने ही मुझसे पूछना आरम्भ कर दिया था कि मैं उसको कैसा समझता हूँ? मेरे विचार में वह सुन्दर है अथवा नहीं? मेरा विवाह के दिए चित्त करता है अथवा नहीं? इसके बाद वह मुझसे पूछने लगी कि क्या मैं जानता हूँ कि पति–पत्नी परस्पर क्या करते हैं और तदनन्तर उसने मुझको यह भी सिखाया कि क्या और कैसे करते हैं? एक बार माताजी ने मुझको साधना से मिलने से मना किया था। मैं मान गया था परन्तु मिलन बन्द नहीं कर सका। हम प्रायः सायंकाल मकान की छत पर मिला करते हैं। कभी मैं उसके मकान की छत पर चढ़ जाया करता हूँ और कभी वह आ जाया करती है। जब से हमारा सम्बन्ध बना है, हम सायंकाल के स्थान पर रात के बारह बजे मिला करते हैं। इसको अभी कुछ ही दिन हुए हैं। रात आपने देख लिया था।"

"तो तुम उससे विवाह करोगे?"

"हाँ! यदि हो सके तो?"

"जानते हो वह तुमसे आयु में बड़ी है।"

"नहीं! वह एक वर्ष छोटी है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"अच्छी बात है। आज उसको कह देना कि जब तक तुम्हारा विवाह उससे नहीं हो जाए तुम उससे मिल नहीं सकोगे। एक बात वह नहीं जानती। वह यह कि इस प्रकार लड़की के गर्भ ठहर जाता है जो छिपाये भी नहीं छिप सकेगा। यदि ऐसा हो गया और यह उसके सम्बन्धियों को पता चल गया तो उसके माता–पिता का भारी अपमान हो जाएगा।"

उस रात साधना समय पर जवाहर से मिलने नहीं आई। वह डर गई थी। प्रातःकाल जवाहर ने बताया कि पिछली रात वह उससे मिलने नहीं आई। इस पर रामरक्खामल्ल ने स्वयं इस विषय में बात चलाने का निश्चय कर लिया।

लेखवती ने कहा, "यदि दोनों सुधर जाएँ तो व्यर्थ में लड़के के गले में यह लड़की क्यों बाँधी जाए?"

"उनके सुधरने की गारण्टी भी तो साधना के माता–पिता के सहयोग के बिना सम्भव नहीं हो सकती। मैं साधना के पिता से मिलने जा रहा हूँ। देखो लेख! जब मैंने यह समझा कि संन्यास–आश्रम में रहते हुए संयम टूट जायगा तो मैंने विवाह कर लेने का निश्चय कर लिया था। संन्यासी बन सकना बहुत अच्छी बात थी, परन्तु इस संयम को छोड़कर साधु बना रहना मुझको स्वीकार नहीं था। अतः मैंने संन्यास को छोड़ने का निश्चय तो तुम्हारे मेरे साथ विवाह करने के लिए तैयार होने से पूर्व ही कर लिया था। यद्यपि मैं जानता था कि तुम मेरी पत्नी बनोगी, परन्तु मैं अपनी अन्तर्दृष्टि से देखी बात को न तो प्रमाणित कर सकता था और न ही किसी अन्य पर थोप सकता था।"

"यदि मैं अपने पूर्व जन्म की घटना स्मरण न कर सकती और अपने माता–पिता से आग्रहपूर्वक न कह सकती तो फिर आप क्या करते?"

"सुनो! एक दिन जब मैं स्वामी दयानन्दजी से मिला, उनको वैरागियों तथा उदासियों में से प्रायः युवा साधुओं के चरित्र बताने लगा तो उनको मेरे कथन पर विश्वास नहीं हुआ। मैंने उनको अपने जीवन की एक घटना बताई। मैंने बताया कि 'मैं अमरनाथ यात्रा पर तीसरी बार जा रहा था। अभी मैं पंचतरनी पर पहुँचा था कि वर्षा होने लगी। रात को मेरी कम्बली में एक अन्य प्राणी आ घुसा। वह सर्दी से ठिठुर रहा था। उसके पास गरम कपड़े कम थे। मैंने उसको अपने साथ चिपटाकर गरम करने का यत्न किया तो पता चला कि वह कोई स्त्री है। मैंने पूछा, 'तुम कौन हो?'

"वह बोली, 'एक युवा साध्वी। आपके पीछे श्रीनगर से ही लगी हुई हूँ।'

" 'मेरे पीछे क्यों लगी हो?' मेरा प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'इस अवसर को प्राप्त करने के लिए जो इस समय भगवान् की कृपा से मिल गया है।'

"मैं उसका अर्थ नहीं समझ सका। इस कारण मैंने पूछ लिया, 'कैसा अवसर मिल गया है?'

"इसका उत्तर उसने मुझसे पुनः आलिंगन करके दिया। मैं उसके इस वासनामय व्यवहार से पराभूत होने ही वाला था कि मुझको ग्लानि अनुभव हुई। मैं उस स्त्री को अपने कम्बल में लेटे छोड़ स्वयं उठकर खेमे से बाहर चला गया और वर्षा में खड़ा हो अपने को ठण्डा करने लगा। वह स्त्री उठकर मेरे खेमे के द्वार पर आ खड़ी हो, मुझे देखने लगी कि मैं क्या कर रहा हूँ। जब उसे विश्वास हो गया कि मैं अपने चित्त की अग्नि को शान्त कर रहा हूँ तो वह पुनः मेरे कम्बल में जाकर लेट गई। मैं रात–भर गीले कपड़ों में, बिना किसी कम्बल इत्यादि बैठा रहा। जब सर्दी अधिक कष्ट देने लगती तो मैं प्राणायाम करने लगता था।

" 'प्रातः मैंने अपना वह कम्बल वहीं रहने दिया, जिसमें वह स्त्री लेटी थी और अकेला गुफा की ओर चल पड़ा।'

" 'जब मैंने अपना यह अनुभव बताया तो स्वामीजी चिन्तित प्रतीत होने लगे। उन्होंने कुछ विचारकर कहा, 'या तो इन साधु–संन्यासियों से मेल–जोल बन्द कर दो अन्यथा विवाह कर लो।'

"मैंने कहा, 'महाराज! मैंने विवाह करने का निश्चय कर लिया हुआ है। केवल डर यह लग रहा है कि एक बार संन्यास लेकर छोड़ना कहीं पाप न हो जाए।'

"इस पर स्वामीजी बोले, 'संन्यास छोड़ना इतना पाप नहीं जितना कि संन्यास आश्रम में दुराचार करना।'

"मेरे मन की बात का समर्थन होने पर और वह भी उनसे, जिनको मैं शास्त्र का ज्ञाता मानता था, मैंने गृहस्थ में लौटने का निश्चय कर लिया। पूर्व इसके कि मैं कहीं अन्यत्र विवाह का विचार करता, तुम्हारे माता–पिता से विचार करना मैंने आवश्यक समझा और हरिद्वार चला आया।"

"विष्णु को समझाकर हरिद्वार भेजना कुछ अधिक कठिन नहीं था। जब मैंने उसे तुम्हारे माता–पिता के पास जाने के लिए कहा, तो उसने समझा था कि तुम कोई विधवा हो और मेरा तुमसे सम्बन्ध बन चुका है। परन्तु विष्णु और भाभी ने जब तुमको देखा तो विस्मय में देखते रह गए। वे मेरा प्रस्ताव तुम्हारे पिता को कहते हुए सकुचाते थे। उनके संकोच को देख आनन्दस्वरूप जी ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
उनको बताया कि यह विवाह वे अपनी इच्छा से कर रहे हैं। वे जानते हैं और उनकी लड़की भी जानती है कि अवस्था का अन्तर देखने में ही है, वस्तुतः नहीं है।"

"अतः मैं जवाहरलाल के विषय में भी कुछ ऐसा ही समझता हूँ कि परीक्षा पास करनी अथवा आगे पढ़ाई करनी अत्यावश्यक है, परन्तु मन में स्त्री–पुरुष के सम्बन्ध का दिन–रात चिन्तन करते रहना अति भयंकर बात है। विवाह से इस सम्बन्ध को धर्मानुकूल कर लेने पर वह पढ़ सकेगा अथवा कुछ अन्य कार्य कर लेगा।"

इस पर लेखवती चुप कर रही। रामरक्खामल्ल अवकाश पा साधना के पिता सोमनाथ की दुकान पर जा पहुँचा। सोमनाथ अकबरी मण्डी में दाल–गुड़ का काम करता था।

रामरक्खामल्ल को आते देख सोमनाथ ने 'पैरी–पौना' कहा और अपने पास गद्दी पर बैठाकर पूछने लगा, "लालाजी! इधर कैसे आना हुआ है?"

"तुम्हारी तरफ ही आया हूँ।"

"हुक्म करिये! मैं आपकी क्या खिदमत कर सकता हूँ?"

"मैं यह जानना चाहता हूँ कि साधना का अभी कहीं सम्बन्ध किया है अथवा नहीं?"

"कहीं कोई अच्छा लड़का मिल नहीं रहा। यत्न तो कर रहा हूँ।"

"क्या आयु हो गई है उसकी?"

"इस समय पन्द्रह से ऊपर की है।"

"मैं समझता हूँ कि उसका विवाह कर ही देना चाहिए। युवा लड़की अपने माता–पिता के घर में शोभा नहीं पाती। देखो! मैं एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ।"

"फरमाइये।"

"जवाहर को तो जानते हो?"

"आपका जवाहर! भला कैसे कह सकता हूँ कि नहीं जानता? परन्तु लालाजी, क्षमा करें। हमने, मेरा अभिप्राय है कि मैंने और साधना की माँ ने, विचार कर लिया था। एक तो आपकी जाति हमसे छोटी है। आप सूद हैं और हम खन्ने खत्री हैं। दूसरे, लड़का इतना सीधा–सादा है कि लड़की को पसन्द नहीं आयेगा। इस कारण पीछे जीवन–भर की खच–खच रहेगी।"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "सुना नहीं सोमनाथ! 'जात–पांत पूछे नहीं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई।' मतलब यह कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेक और चरित्रवान् होना चाहिये, जाति–पांति से कुछ नहीं होता। मैं तो आर्य समाजी हूँ और इस बात की चिन्ता नहीं करता कि कौन जाति ऊँची है, कौन नीची।

"दूसरी बात कि जवाहर सीधा–सादा है तो साधना बेटी उसको सिखा–पढ़ा लेगी। वह तो सीधी–सादी नहीं होगी।"

"अच्छा! मैं उसकी माँ से पूछूँगा और फिर आपसे बात कर सकूँगा।"

इस पर रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "जवाहर की परीक्षा में तीन मास रह गये हैं और मैं विवाह तो तुरन्त ही कर देना चाहूँगा। परीक्षा पास करने के बाद उसको दस हजार की पूँजी से दूकान करवा दूँगा।"

यह अंतिम बात सोमनाथ को सबसे अधिक आकर्षित करती प्रतीत हुई। इस पर उसने कह दिया, "मैं आपसे एक–दो दिन में मिलूँगा और इस विषय पर बात करूँगा।"

जब मध्याह्न भोजन के समय, रामरक्खामल्ल ने विष्णुनारायण को जवाहर के विवाह की बात कही तो उसने कह दिया, "यह नौका पार लगेगी नहीं, भापा!"

"देखें! मुझको इसमें सफलता प्रतीत हो रही है। जवाहर की पढ़ाई ठप्प हो जायेगी और उसका एक साधारण दुकानदार का–सा जीवन मुझको दिखाई दे रहा है।"

इस पर विष्णुनारायण चुप कर गया। परन्तु सुमित्रा ने कह दिया, "भापा!" सुमित्रा भी रामरक्खामल्ल को ऐसे ही सम्बोधित किया करती थी, जैसे वह उसका पिता ही हो, "जब भाग्य में कोई दुर्घटना लिखी हो तो क्या हमें उसको सुधारने का यत्न नहीं करना चाहिये?"

"अवश्य करना चाहिये। मुझको विश्वास है कि यदि सत्य हृदय से भाग्य बदलने का यत्न किया जाये तो कुछ–न–कुछ सीमा तक वह अवश्य ही बदला जा सकता है। मैं यही कर रहा हूँ। यदि यह विवाह नहीं हुआ तो जवाहर का भविष्य अति काला है।"

"परन्तु भापा! मैं इस सम्बन्ध की असफलता इस दृष्टि से समझ रही हूँ कि साधना की माँ यमुना महा–अभिमानिनी है। उसको अपने खत्री होने का बहुत ही अभिमान है।"

"परन्तु तुमने सुना नहीं कि अभिमानी का सिर नीचा होता है।"

विष्णुनारायण और उसकी पत्नी ने समझा नहीं कि उसका सिर कैसे नीचे होगा। जब वे यह समझ नहीं सके तो उन्होंने सोमनाथ के उत्तर आने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक चुप रहना ही उचित समझा।

सोमनाथ एक सप्ताह तक नहीं आया। जवाहर अपने पिता को उनके घर में हो रहे झगड़े का वृत्तान्त, जो साधना रात के समय उसको बता जाया करती थी, सुना रहा था। उसने रामरक्खामल्ल के सोमनाथ से प्रस्ताव के एक सप्ताह बाद बताया, "साधना की माँ ने स्पष्ट रूप से कह दिया है कि साधना का विवाह यदि सूदों के घर हुआ तो वह विष खाकर मर जायेगी। इस पर साधना ने कह दिया है कि मैं उससे मिला नहीं करूँगा। साधना ने घर से भाग जाने का प्रस्ताव रखा है। आपने ऐसे प्रस्ताव को स्वीकार न करने के लिए पहले ही कह दिया था। मैंने अब उसे यह भी बता दिया है कि मैं चोरी–चोरी कोई बात भी नहीं करना चाहता।

"बात समाप्त हो गई है। मैं कल से उसको मिलने नहीं जाऊँगा।"

"तुम अब अपनी पढ़ाई में चित्त लगाओ। यह विवाह कुछ दिन पीछे होगा।"

"अब कैसे होगा?"

रामरक्खामल्ल ने यह कहावत सुना दी, "भाग्य का लिखा कोई मिटा नहीं सकता और वह भाग्य में तुम्हारी पत्नी है।"

जवाहर को इससे न तो कुछ आशा बँधी और न ही निराशा हुई। साधना ने कह दिया था कि वह अपनी माता की मृत्यु देखना नहीं चाहती, इस कारण वह इस प्रकार चोरी–चोरी उससे मिलने के लिए भी नहीं आया करेगी। वास्तविक बात तो यह थी कि साधना को जब जवाहरलाल ने गर्भ ठहरने की बात बताई तो वह डर गई थी। उसको अपनी माँ के पाँच बच्चे होने का ज्ञान था। उसको स्मरण हो आया कि प्रत्येक बार उसकी माँ का पेट बढ़ जाया करता था। साथ ही उसने देखा था कि प्रसव के समय उसको बहुत ही कष्ट होता था। साधना अपनी माँ की सबसे बड़ी सन्तान थी। उसके चार अन्य भाई–बहिन थे। सबसे छोटी बहिन थी, जो इस समय दो वर्ष की थी और उसके जन्म के समय अपनी माँ की अवस्था से वह भली–भाँति परिचित थी। अतः वह डर गई थी।

उसके घर पर तो पति–पत्नी में भारी झगड़ा हुआ था। सोमनाथ एक व्यापारी आदमी था और वह यह जान कि जवाहरलाल को दस हजार की पूँजी से कारोबार कराया जाएगा, जाति से बाहर विवाह करने को तैयार हो गया था। परन्तु उसकी पत्नी जाति से बाहर विवाह करने को अधर्म मानती थी और इस अधर्माचरण के लिए तैयार नहीं हुई। जब उसको पति ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार–बार कहा तो उसने स्पष्ट कह दिया, "यह अधर्म की बात मुझसे नहीं हो सकेगी। यदि यह विवाह किया गया तो मैं विष खाकर मर जाऊँगी।"

इस धमकी ने बात का निर्णय कर दिया। साधना माता–पिता का झगड़ा छिपकर सुना करती थी। वह माँ की यह बात सुनकर काँप उठी। परन्तु भाग्य की बात को कौन टाल सकता था?

साधना ने जवाहरलाल से मेल–जोल तो बन्द कर दिया था, परन्तु गर्भ का बीजारोपण हो चुका था। उसके लक्षण मेल–मुलाकात के टूटने के एक मास के भीतर ही प्रतीत होने लगे। साधना को अपनी पिछली रजस्वला होने की तिथि स्मरण नहीं थी। इस कारण जब दूसरा महीना समाप्त होने पर आया तो उसको चिन्ता लगने लगी। उसने दिमाग पर जोर डालकर स्मरण करना आरम्भ किया कि वह कब रजस्वला हुई थी। उसे ध्यान आया कि कृष्णा ताई के घर वह सत्यानारायण की कथा सुनने के लिए गई थी, तो वहाँ ही वह रजस्वला हो गई थी। वह यह निश्चय करने के लिए कि ताई के घर पर सत्यनारायण की कथा कब कराई गई थी, माँ से पूछने का विचार करने लगी।

वह चर्खा कातती हुई विचार कर रही कि उसकी माँ उसके सामने बैठ, अपनी लड़की के लिए कुरता सीने लगी। साधना ने पूछ लिया, "माँ! ताई कृष्णा के घर कथा कब हुई थी?"

"क्यों? किसलिए पूछ रही हो?"

साधना, उत्तर देने के स्थान पर पूछने लगी, "कथा कब कराई जाती है?"

"पूर्णमासी के दिन।"

"पूर्णमासी?" चर्खा कातते–कातते साधना का हाथ रुक गया और वह विस्मय में माँ का मुख देखने लगी। उसको स्मरण हो आया था कि रजस्वला होने के अनन्तर एक पूर्णमासी की रात वह जवाहरलाल से मकान की छत पर मिली थी और उससे मिलन को भी कई सप्ताह व्यतीत हो चुके थे।

माँ ने लड़की को परेशान देख पूछ लिया, "क्यों, क्या बात है?"

"आज क्या तिथि है माँ?"

सूत का तार टूट गया था और वह तार जोड़ने का यत्न करती हुई पूछ रही थी। माँ ने विचार कर कहा, "कल पूर्णिमा बीत गई है।"

साधना तार जोड़ने में सफल नहीं हो सकी। उसने चर्खा उठा दिया। माँ ने पूछा, "क्या बात है, तुम्हारा हाथ क्यों काँप रहा है?"

"माँ! कुछ नहीं मैं नहाने वाली नहीं हुई। दूसरा मास भी निकल गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हरी मिर्च खा लो, ठीक हो जाएगा। साथ ही एक स्थान पर बैठी न रहा करो। जरा घर का काम–काज भी किया करो।"

अगले दिन चक्की साफ कर साधना गेहूँ पीसने लगी। पन्द्रह दिन और बीते तो एक नई बात हो गई। वह मध्याह्न का भोजन कर रसोईघर से निकली तो उसको मितली अनुभव हुई। वह भागकर परनाले पर जा बैठी और कै करने लगी। वह जानती थी कि उसकी माँ बच्चा होने के पहले खाना पचा नहीं सकती थी। कै कर वह खाट पर जाकर लेट गई। माँ उसके पिता की संदूकची से पाचक चूर्ण ले आई और उसको चाटने के लिए देने लगी। माँ ने समझा था कि साधना का पेट खराब है और चूर्ण लेकर वह ठीक हो जाएगी। परन्तु साधना जानती थी कि वह भी उसी रोग की रोगिणी हो गई है जिसकी, उसकी माँ प्रायः हुआ करती थी। जब उसे दो दिन तक भी खाना नहीं पचा तो माता–पिता को चिन्ता होने लगी। साथ ही साधना भी अपनी वास्तविक अवस्था से अपनी माँ को अवगत करने का ढंग सोचने लगी।

उसे खाट पर लेटे तीन दिन हो गए थे। माँ चिन्ता में उसकी खाट के पास बैठी थी। कसेरा बाजार के काहनचन्द अत्तार की दुकान से पाचक आदि दवाएँ ला–लाकर दी जा रही थीं। इस पर भी लाभ नहीं हो रहा था। दोपहर के समय जब बच्चे सो रहे थे और सोमनाथ दुकान पर गया हुआ था, उपयुक्त समय समझकर साधना ने कहा, "माँ! ये दवाइयाँ व्यर्थ हैं। मुझको यह बीमारी है ही नहीं, जिसके लिए ये सब दवाइयाँ हैं।"

"कैसे कहती हो यह? तुम भला कब से हकीम बनी हो?"

"माँ! बात यह है कि मुझको दिन चढ़ गए हैं।"

"यह मैं जानती हूँ। माहवारी खोलने की ही दवाई दी जा रही है।"

"नहीं माँ! तुम समझी नहीं। मैं कह रही हूँ कि मेरे पेट में बच्चा है।"

माँ के हाथ में दूध का गिलास पकड़ा था। वह हाथ से गिरकर बिखर गया। साधना तीन–चार दिन से कुछ भी हजम न कर सकने के कारण सर्वथा दुर्बल और ये दवाइयाँ खाते–खाते हताश हो गई थी। उसने सब कुछ माँ को बता देने का निश्चय कर लिया था।

कई मिनट तक माँ लड़की का मुख देखती रही। लड़की आँखें मूंदे पीतमुख लेटी रही। माँ को अपनी लड़की पर इतना विश्वास था कि वह अभी भी यही समझ रही थी कि लड़की नासमझी में ऐसी अनर्गल बात कह गई है।

माँ ने पूछ लिया, "जानती भी हो कि बच्चा कैसे बनता है? यह हवा में से नहीं आ जाता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ! सब जानती हूँ।" इतना कह साधना ने अपनी नाभि के नीचे उभर रहे पेट को दिखाते हुए कहा, "यह जवाहरलाल की करनी है।"

"जवाहरलाल? कौन जवाहरलाल? कैसे किया है उसने? कहाँ मिली थीं तुम उससे?" माँ ने आवेश में पूछ लिया।

साधना ने खाना न पचने के कारण हुई दुर्बलता से क्षीण स्वर में माँ को अपनी पूर्ण कथा सुना दी। इस कथा में उसने पूर्ण दोष जवाहरलाल पर लगाया। माँ कहानी को सुनकर, कुछ देर तक तो चुपचाप रोती रही, परन्तु एकाएक वह अपनी छाती पीट–पीटकर अपनी हत्या करने का यत्न करने लगी। बच्चे इस शोर से जाग पड़े। सबसे बड़ा लड़का तो पिता के साथ दुकान पर जाता था। वह साधना से केवल तीन वर्ष छोटा था। पांधे के पास दो वर्ष पढ़कर बही–खाता लिखने का ढंग सीख चुका था और अब अपनी दुकान पर पिता की सहायता करता था। उससे छोटी लड़की थी। उसने माँ को पागलों की भाँति छाती पीटते देखा तो घर से निकल दुकान को भागी और शेष बच्चे चीखें मार–मारकर रोने लगे।

कला ने सबसे पहले यह चीख–पुकार सुनी और वह छत से कूदकर इनके घर में उतर आई। लेखवती नीचे की मंजिल पर थी। उसने बच्चों को चीख मार–मारकर रोते सुना तो वह नीचे से ऊपर चढ़ आई। यमुना की दूसरी लड़की पिता को बुलाने के लिए दुकान की ओर भागी तो घर का दरवाजा नीचे से खुला छोड़ गई थी।

लेखवती से कला पहले पहुँची और वह वहाँ का दृश्य देख, भौचक्की हो खड़ी थी कि ताई लेखवती नीचे से आ गई।

साधना खाट पर अचेत पड़ी थी। यमुना धड़ाधड़ छाती पीट रही थी। और बच्चे माँ की छाती से चिपटे हुए उसको छाती पीटने से रोक रहे थे और साथ–साथ चीखें भी मार रहे थे। कला ने समझा कि साधना मर गई है, इसी कारण उसकी माँ रो रही है। उसने पूछा भी, "मौसी! क्या बात है? साधना को क्या हुआ?"

इस समय लेखवती वहाँ आ पहुँची थी। उसने कला को कहा और स्वयं भी उसके साथ मिलकर बलपूर्वक यमुना के हाथ पकड़ लिए और उसको छाती पीटने से रोकने लगी। दोनों ने उसकी बाँहों को पकड़कर उसको समझाना शुरू कर दिया, "यह क्या कर रही हो यमुना बहिन? देखो, बच्चे कितने सहम गए हैं। बहिन! होश करो। इस प्रकार क्यों बेसुध हो रही हो?"

जब यमुना शांत हुई तो कला ने साधना को जाकर देखा। उसके चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे साँस को देखकर वह बोली, ''यह तो जीवित है?''

इस पर लेखवती ने यमुना को कह दिया, ''देखो, रो–धोकर कितना अनर्थ कर रही थीं। लड़की तो अभी जीवित है।''

यमुना अब बिलकुल शान्त हो गई थी। वह लेखवती के प्रश्नों का उत्तर भी नहीं दे रही थी। वह जानती भी नहीं थी कि उसको अपने छाती पीटने और रोने का कारण क्या बताए। अतः उसने चुप रहना ही उचित समझा।

इस समय लेखवती भी यमुना को छोड़ साधना के पास आ गई। उसने साधना का साँस देखा और नाड़ी देखी तथा अनुमान लगाया कि वह अचेत पड़ी है। इससे उसने यही समझा कि लड़की के अचेत हो जाने को उसकी माँ ने उसको मरा समझ लिया है। उसने कला से कह दिया, ''जाओ! जरा पानी लाओ। यह तो अचेत हो गई है।''

एक बच्चा गिलास में पानी ले आया और लेखवती ने पानी का छींटा साधना के मुख पर देना आरम्भ कर दिया। साधना सचेत हुई तो लेखवती ने कहा, ''बेटी! सावधान हो जाओ। क्या हुआ है तुमको? तुम इतनी दुर्बल क्यों हो रही हो?''

साधना उनको बितर–बितर देख, उनके वहाँ होने का कारण समझने का यत्न करने लगी। उसे स्मरण हो आया कि उसने अपनी अवस्था का वर्णन अपनी माँ से किया था, जिससे उसकी माँ छाती पीटने लगी थी। इस पीटने को देख सब बच्चे रोने लगे थे और वह स्वयं अचेत हो गई थी।

साधना ने भी इस सब का कारण न बताने का निश्चय किया और आँखें मूँदे चुप पड़ी रही। इसके बाद लेखवती ने यमुना को जल पीने के लिए कहा। उसने भी अब तक अपनी मूर्खता को समझ लिया था और वह गिलास पकड़ जल पीने लगी।

इस समय तक मुहल्ले की अन्य कई स्त्रियाँ भी मकान पर चढ़ आई थीं और सब परस्पर अपना–अपना अनुमान लगा रही थीं।

इतने में लक्ष्मी अपने पिता को दुकान पर से लेकर घर आ गई।

: 13 :

सोमनाथ को आ गया देख, सब स्त्रियाँ घटना का अपना–अपना अनुमान बता, वहाँ से चली गईं। सोमनाथ इस जमघट को देख परेशान हो अपनी पत्नी के पास बैठकर सब का मुख देखने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब सब चली गईं तो सोमनाथ ने अपनी पत्नी से पूछ लिया, "क्या हुआ है यमुना! यह लक्ष्मी भागी–भागी वहाँ हाँफती हुई पहुँची और बोली, 'चलो दीदी मर रही है।' मैं दुकान बन्द करने के लिए विश्वनाथ को कह भागा हुआ चला आया हूँ।"

यमुना ने अब सतर्क हो सब बच्चों को दूसरे कमरे में भेज दिया और फिर साधना की अवस्था और उसका जवाहर से सम्बन्ध का वर्णन कर दिया। सोमनाथ ने अपनी पत्नी से कहा, "तो इसलिए तुम मरने जा रही थीं।"

"संसार में अनर्थ आ गया है। छोटे–छोटे बच्चों में किस प्रकार के गंदे विचार उत्पन्न हो रहे हैं।"

"यह सब जवाहरलाल की बदमाशी है। पहले तो लड़की का भोग किया और फिर अपने बाप के हाथ विवाह का संदेश भेज दिया। परन्तु इस बात का इलाज यह नहीं, जो तुम करने जा रही थीं?"

सोमनाथ ने आगे कह दिया, "तुमने अपनी मूर्खता को तो विचारा नहीं और लगी थीं मुहल्ले–भर में हल्ला करने।"

"मुझे तो यही समझ में आया था कि मर जाऊँगी तो बदनामी सहन नहीं करनी पड़ेगी।"

"और जो पीछे जीते रहेंगे, समझ लेंगे, क्यों? यह तुम्हारे सब बच्चों को मैं घर पर खिलाता–पिलाता अथवा दुकान का धंधा करता?"

"मुझको उस समय और कुछ समझ ही नहीं आया?"

"मैं हकीम बदरुद्दीन से मिलकर इसके लिए दवाई लाऊँगा। वह मेरा दोस्त है और अवश्य सहायता करेगा।"

"तो जाइए, ले आइए।"

"तुम उठो और लड़की को समझाओ कि उसको इससे छुट्टी मिल जाएगी। चिन्ता की बात नहीं है।"

सोमनाथ ने पत्नी और लड़की को समझाया, "यदि यह बात मुझको पहले ही पता होती तो अब तक तुम स्वस्थ हो गई होतीं। हकीम साहब बहुत ही तजर्बेकार आदमी हैं। अब भी तुम ठीक हो जाओगी।"

सोमनाथ हकीम साहब की तरफ चल पड़ा। अपने लड़के मदनलाल को उसने दुकान पर भेज दिया और कहला भेजा कि सब ठीक है, बन्द करने की कोई आवश्यकता नहीं।

सोमनाथ घर से उतर गली के बाहर को जा रहा था। रामरक्खामल्ल के घर के बाहर कुएँ के पास औरतों का जमघट हो रहा था। वे यमुना के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर हुई घटना की विवेचना कर रही थीं। कोई भी यमुना को इतना मूर्ख नहीं मानती थी कि वह जीवित लड़की को मरा हुआ समझ ले। लेखवती ने बताया, "मुझको तो कुछ ऐसा लग रहा है कि माँ–बेटी में किसी बात पर झगड़ा हुआ है और माँ अपनी अवहेलना होने पर छाती पीटने लगी थी। साधना माँ को ऐसा करते देख अचेत हो गई होगी।"

"पर ताई! किस बात पर झगड़ा हुआ हो सकता? साधना तो बेचारी बीमार थी।" कला ने पूछ लिया।

लेखवती उसकी बीमारी और माँ–बेटी में झगड़े का अनुमान लगा रही थी। उसे विदित था कि यमुना ने जात–पांत के नाम पर, जवाहर से साधना की सगाई अस्वीकार कर दी थी। इससे उसने अनुमान लगाया था कि लड़की ने जवाहर के साथ विवाह करने का हठ किया होगा। सम्भव है उसने खाना–पीना छोड़ दिया हो और माँ ने उसे खाने–पीने को तैयार करने के लिए अपनी छाती पीटनी आरम्भ कर दी हो।

इस अनुमान करने पर भी लेखवती ने कुछ बताना उचित नहीं समझा। उसने केवल यह कह दिया, "कुछ भी हो, अब घरवाला आ गया है और हमें चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है।"

इस समय सोमनाथ घर से निकल गलीद्वार की ओर जाता दिखाई दिया। एक प्रौढ़ावस्था की स्त्री ने सोमनाथ से पूछा लिया, "सोम भापा! क्या हाल है अब?"

"ठीक है बहिन! यमुना डर गई थी कि लड़की मर रही है।"

"लड़की को है क्या? बहुत बीमार प्रतीत होती है?"

"हाँ; हकीम साहब का इलाज चल रहा है।"

सोमनाथ गली से बाहर गया तो स्त्रियाँ अपने–अपने घरों को लौट गईं और अपने मन में उठ रहे संशयों को पूर्ण मुहल्ले में, घर–घर जाकर फैलाने लगीं।

लेखवती और कला भी अपने घर पहुँचीं। कला घर की बैठक में पहुँचकर बोली, "माँ–बेटी दोनों बहुत हठी प्रतीत होती हैं। पहले तो दोनों ही हो–हल्ला कर रही थीं; जब हम पहुँचीं तो दोनों ही चुप कर गईं, मानो मुख में जबान ही नहीं रही।

"ताई! जब मैं छत पर से नीचे उतर रही थी तो माँ लड़की को कह रही थी, 'अब मैं जीवित नहीं रह सकती। तुम्हारी करतूत से मैं किसी को मुख दिखाने योग्य नहीं रही।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"लड़की ने उत्तर दिया था, 'माँ! तुम क्यों मरती हो? मैं ही मर रही हूँ। एक पर–।' उसने इतना कहा था कि मैं नीचे जा पहुँची। मुझको देखते ही लड़की ने आँखें मूँद लीं। मेरा अनुमान है कि वह अचेत भी नहीं थी। वह अचेत होने का बहाना मात्र कर रही थी।"

लेखवती के मन में सन्देह हुआ तो उसने कह दिया, "अच्छा कला! जाओ तुम बच्चों को देखो। हमें इस झगड़े में मगजपच्ची करने की आवश्यकता नहीं है।"

इतना कह कुछ आगे कहने अथवा सुनने से बचने के लिए वह अपने कमरे में चली गई। वह अपने पति को भोजन के बाद आराम करता छोड़ गई थी। जब वह वहाँ वापस पहुँची तो रामरक्खामल्ल जाग रहा था। उसने पूछ लिया, "क्या था?"

लेखवती ने साधना और उसकी माँ की बात बता दी। रामरक्खामल्ल ने आँखें मूद लीं और कुछ विचार कर कहा, "साधना बहुत बीमार थी क्या?"

"वह खाट पर लेटी हुई थी। उसके मुख पर पीलापन छा रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने कई दिन से कुछ खाया–पिया नहीं।"

"मैं समझता हूँ कि वह गर्भवती हो गई है। माँ को इसका ज्ञान हुआ है तो वह छाती पीट–पीट रोने लगी है।"

लेखवती को अपने विचारों का समर्थन मिला तो उसने कह दिया, "आज से डेढ़ मास पहले यमुना मान जाती तो उसको आज यह मुसीबत न देखनी पड़ती।"

"यह तो है ही। परन्तु वह तुम्हारे लड़के की सन्तान है। सोम मूर्खता कर उसको नष्ट करने का यत्न करेगा। भ्रूण–हत्या तो एक महान् पाप है। मैं उसमें भागीदार नहीं होना चाहता।"

"हम कैसे भागीदार होंगे? हमने तो उसको विवाह का प्रस्ताव किया ही था?"

"उस समय उसको इसका ज्ञान नहीं था। अब इस ज्ञान के होते हुए यदि मैं प्रस्ताव करूँगा तो अपने को पाप से मुक्त मानूँगा।"

"अब तो वह मान जाएगा।"

"यदि मान जाएगा तो विवाह हो जाएगा। परन्तु मुझे कुछ ऐसा लग रहा है कि वह अब भी नहीं मानेगा।"

"नहीं मानेगा? भला क्यों?"

"यह क्यों की बात बतानी कठिन है, परन्तु जो कुछ देखता हूँ वह बता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हूँ। ऐसा प्रतीत होता है कि सोमनाथ गर्भपात का प्रबन्ध करने गया है। इसमें वह सफल भी हो सकता है और नहीं भी हो सकता। देखें, क्या होता है। पर लेख! यह जान लो कि अंत में यह जवाहर की पत्नी ही बनेगी।''

लेखवती अपने पति के कथन में सत्यता का अनुभव कर काँप उठी। वह इस लड़की को अपने बेटे जवाहर की पत्नी के रूप में कल्पना कर पीत–मुख अपने पति की ओर देखने लगी। रामरक्खामल्ल ने उसको सांत्वना देने के लिए कह दिया, ''यह भाग्य है। हम इसको बदल नहीं सकते। हम एक बात कर सकते हैं। वह यह कि इसके दुष्प्रभावों को हलका कर सकते हैं और उसके लिए मैं यत्न करूँगा।''

''क्या यत्न करेंगे?''

''मैं चाहूँगा कि यह गर्भपात न हो। मैं साधना के सन्तान होने तक उसके कहीं गुप्त रहने का प्रबन्ध कर दूँगा। सन्तान होने के बाद उसका विवाह जवाहर से कर दिया जाएगा। सन्तान को हम स्वीकार कर लेंगे।''

''बहुत बदनामी होगी!''

''कौन करेगा बदनामी?''

''मुहल्ले भर के लोग।''

''और परमात्मा हमारे काम को कैसा समझेगा?''

''उसकी बात को कौन सुनेगा?''

''तो क्या मुहल्लेवालों की आवाज परमात्मा की आवाज से अधिक प्रभावशाली है?''

लेखवती अभी उत्तर विचार कर रही थी कि रामरक्खामल्ल ने कह दिया, ''मेरा अगाध विश्वास भगवान पर है और मैं उसको वेदान्तियों की भाँति भ्रांति में फँस जाने वाला नहीं मानता। मैं योगदर्शन के कथनानुसार योग, ध्यान और तपस्या से बुद्धि के इतने मार्जित होने में विश्वास करता हूँ कि वह भगवान की बात को सुन और समझ सकती है। मैं समझता हूँ कि मेरी बुद्धि परमात्मा की इच्छा को जानकर ही यह सब करने को कह रही है।''

रामरक्खामल्ल ने आगे कहा, ''इस बात का निश्चय हो जाने के उपरान्त कि मैं कोई कार्य परमात्मा की इच्छानुसार ही कर रहा हूँ, मैं लोक–लाज अथवा लोक–निन्दा से नहीं डरता।

''यह बात मेरे सामने उस समय भी आई थी, जब संन्यासी होते हुए मैंने गृहस्थ में लौटने का निर्णय किया था। एक दिन मैं अपने गुरु स्वामी बालकराम जी के सेवा में उपस्थित था। वे बीमार हो मृत्यु की ओर जा रहे थे।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उन्होंने कहा, 'गरीबदास! तुम यहाँ किसलिए पड़े हो? जाओ अपना काम समेटो।'

"मैंने तब कहा था, 'महाराज! मैं अपने काम को देख रहा हूँ। भगवान की अपार कृपा से आपका इस संसार का कार्य सिमट रहा है। मुझे स्पष्ट ही दिखाई दे रहा है कि आपका यह शरीर, आपके मन और आत्मा को बन्धनों से मुक्त कर जा रहा है।'

"गुरुजी मेरे इस कथन पर विस्मय में मेरा मुख देखने लगे। फिर वे पूछने लगे, 'भला बताओ, यह आत्मा किस ओर जा रही है?'

"मैंने अपनी आँखेंमूँदकर चिन्तन किया और कहा, 'महाराज! मेरी दृष्टि जहाँ तक जाती है, वह यही बता सकती है कि उसके लिए इस लोक में स्थान अब नहीं है। वह एक मार्ग पर आरूढ़ है और वह मार्ग जाता–जाता मेरी दृष्टि से ओझल हो रहा है। आप उस मार्ग पर कहाँ तक जायेंगे, यह मैं नहीं जान सका।'

"गुरुजी ने मेरी पीठ पर हाथ फेरते हुए कह दिया, 'गरीब! तुम उतना ही जान गए हो, जितना मैं जानता हूँ। पर क्या तुमने कभी अपने मार्ग का भी दर्शन किया है?'

" 'करने का यत्न किया है महाराज! कुछ–कुछ देखा है और उससे मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि मेरे कर्म–फल इस संसार में समाप्त नहीं हुए। वे सब कर्म–फल भोगे बिना, समाप्त भी नहीं हो सकते। मेरा मार्ग गृहस्थ आश्रम की ओर है। प्रश्न यह है कि इन कर्म–फलों को भोगने के लिए मुझको नये जन्म की प्रतीक्षा करनी चाहिए अथवा इसी जन्म में अपने पग पीछे की ओर ले जाने चाहिए?'

" 'आत्मशुद्धि से उन कर्म–फलों को निःशेष करने का यत्न क्यों नहीं करते?'

" 'महाराज! कर्म–फल निःशेष नहीं होते। हाँ, निष्काम कर्म करने से उनके दुष्प्रभावों से बचा जा सकता है। मैं कुछ इस दिशा में विचार कर रहा हूँ। इस समय भगवद् कृपा से मैं अपनी बुद्धि को इतना परिष्कृत पाता हूँ कि इसको यदि ऋतम्भरा की पदवी पर पहुँचा हुआ समझ लूँ तो अनुचित नहीं होगा। ऐसी ही अवस्था अगले जन्म में होगी अथवा नहीं, यह कहना कठिन है। बुद्धि तो अगले जन्म में साथ जाएगी नहीं। केवल मात्र मन पर अंकित संस्कार ही जायेंगे। संस्कार ऋतम्भरा का स्थान नहीं ले सकते। उस ऋतम्भरा के आश्रय, मैं गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर, अपने कर्म–फलों को भोगकर निर्लेप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
बाहर निकल सकने की आशा करता हूँ। अगले जन्म में पुनः योगध्यान से बुद्धि का मार्जन हो सकेगा, यह नहीं कह सकता।'

"गुरुजी मेरी युक्ति को सुन विस्मय में मेरा मुख देखने लगे। फिर कुछ विचारकर बोले, 'संन्यास से गृहस्थ में लौटने से जो लोक–निन्दा की गठरी सिर पर लाद लोगे, वह पुनः तुम्हारे दुःख और दुःख से उत्पन्न काम, क्रोध, लोभ, मोह का कारण हो सकती है। इससे पुनः आवागमन के बँधन में बँध सकते हो।'

" 'यह एक भय है। परन्तु यह ऋतम्भरा, जिसका प्रादुर्भाव मैं स्वयं में पाता हूँ, मेरा पथ–प्रदर्शन करेगी।'

"गुरुजी चुप रहे। उसी दिन उनका देहावसान हो गया। इस कारण इस विषय पर उनसे अधिक वार्तालाप नहीं हो सका, परन्तु स्वामी दयानन्दजी से इस विषय पर बात हुई, तो मेरा निर्णय हो गया। मैंने जब उनको अपने मन की बात बताई तो वे बोले, 'हम संन्यास आश्रम को मोक्ष के अधिक समीप नहीं समझते हैं। गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास तीनों आश्रमों में अपने–अपने आश्रम के कर्त्तव्य निष्काम भाव से पालन करता हुआ मनुष्य मोक्ष–मार्ग का पथिक हो सकता है।

"संन्यास–आश्रम तो लोक–कल्याण का आश्रम है। यदि कोई लोक–कल्याण जैसे विशाल कार्य को नहीं कर सकता तो वह गृहस्थ आश्रम के सीमित क्षेत्र में ही कल्याण–कार्य करके भी मोक्ष–प्राप्ति का भागीदार बन सकता है।

"मोक्ष कल्याण–कार्य के विस्तार से नहीं, प्रत्युत उसके निर्लेप भाव से ही प्राप्त होता है।

"मेरा प्रश्न था, 'कुछ लोग अच्छे–बुरे दोनों प्रकार के कर्मों का त्याग ही मोक्ष प्राप्ति में साधन मानते हैं। इसमें आपका क्या कहना है?'

"वे हँसते हुए बोले, 'यह नवीन वेदान्तियों का मत है। अच्छे कर्म वे होते हैं, जो वास्तविक लोक–कल्याण में सहायक हों। ये कर्म सदा मनुष्य के मन और साथ ही आत्मा को पवित्र और श्रेष्ठ करने में सहायता देते हैं।

"इस कारण दो बातें विचारणीय हैं। एक यह कि वास्तविक लोक–कल्याण क्या है! दूसरे, क्या वे कर्म मोह उत्पन्न नहीं कर देंगे? मेरा इसमें मत है कि दोनों में ऋतम्भरा जो योग, ध्यान और तपस्या से प्राप्त होती है निर्णयात्मक दृष्टि प्रदान करती है। वह दृष्टि रखते हुए गृहस्थ उतना ही मोक्ष–प्राप्ति में बाधक होगा, जितना कि एक संन्यासी।'

"मैंने एक अन्तिम प्रश्न पूछ लिया, 'संन्यास से गृहस्थ में लौटने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

लोक–निन्दा का मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा?'

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लोक–निन्दा संसार में कोई वस्तु नहीं। लोकप्रियता न तो मनुष्य को अपने अनन्त मार्ग पर अग्रसर होने में सहायक होती है, न ही लोक–निन्दा बाधक। यह अपने में मोह है जो किसी को बाँधता है अथवा मुक्त करता है।'

"इस बात ने मेरे मन में निर्णय करा दिया। मैं उसी दिन कनखल के लिए चल पड़ा और आगे तुम जानती ही हो कि क्या हुआ। मेरे पूर्व–जीवन के ज्ञाता और अब तक मेरे कानों के फटे होने का कारण जानने वाले मेरी निन्दा किया करते हैं। पर उसका मेरे साथ क्या सम्बन्ध है? जबकि मैं इस संसार में, इस नगर में, इस मुहल्ले में एक निर्लिप्त व्यक्ति की भाँति विचरण करता हूँ। यह निन्दा अथवा प्रशंसा मेरा कुछ बिगाड़ अथवा बना नहीं सकती।"

बीस–इक्कीस वर्ष के विवाहित जीवन के अनुभव से लेखवती अपने पति पर अगाध श्रद्धा रखने लगी थी। उसने अभी तक उसकी दृष्टि में दोष नहीं देखा था।

: 14 :

उसी सायंकाल बदरुद्दीन, हकीम हाजिक, साधना को देखने आया। उसने यह तशखीस की कि हमल नहीं है। माहवारी में रुकावट है और यह ठीक हो जाएगी। उसने इस काम के लिए पहले उल्टी रोकने का यत्न आरम्भ कर दिया।

जब सोमनाथ ने पूछा, "हकीम साहब! लड़की की तोंदी क्यों उभर रही है?"

हकीम साहब का कहना था, "माहवारी रुक जाने से रक्त की गाँठ बन गई हैं।"

उसी रात रामरक्खामल्ल सोमनाथ से मिलने चला आया। सोमनाथ हकीम साहब के निदान से संतोष और शान्ति अनुभव कर रहा था। उसकी पत्नी यमुना ने यह कहा भी था, "मुझको हकीम के कहने पर विश्वास नहीं आता। मैंने उसके पेट को नाभि के नीचे टटोलकर देखा है। मुझे यह गाँठ नहीं बच्चा प्रतीत होता है।"

"तो तुम हकीम से भी ज्यादा अक्लमन्द और हिकमत जानने वाली हो गई हो!" सोमनाथ का प्रश्न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस बात ने यमुना का मुख बन्द कर दिया। उसने पूछ लिया, ''तो यह दवाई किस बात की दे गया है?''

''हकीम साहब कहते हैं कि पहने कै बन्द करेंगे। इससे खाना हजम होने लगेगा। खाना हजम होने से शरीर में खून बनने लगेगा और उससे ताकत आएगी। तब माहवारी खोलने की औषध देकर इसको रवाँ कर दिया जाएगा।''

बात युक्ति–युक्त थी, परन्तु पूर्ण युक्ति व्यर्थ होने का आधार रोग–निदान था। यदि निदान ठीक नहीं तो सब युक्ति व्यर्थ होने वाली थी। यमुना, जो पाँच बच्चों को जन्म दे चुकी थी और पाँच बार गर्भ धारण कर चुकी थी, हकीम साहब के निदान को मिथ्या मान उसकी युक्ति को अर्थहीन मानती थी। इस पर भी वह कह नहीं सकी कि वह हकीम साहब से अधिक हिकमत जानती है।

जब मकान के नीचे से रामरक्खामल्ल ने आवाज दी तो सोमनाथ नीचे उतर आया। सोमनाथ ने मकान की बैठक खोल उसमें सरसों के तेल का दीपक जला दिया और रामरक्खामल्ल को बैठाकर पूछने लगा, ''क्या बात है भापा!''

''मैं घर पर ही था जब तुम्हारे घर में हल्ला हुआ। बच्चों के रोने के शब्द से मेरी भी नींद खुल गई थी। लेखवती तुम्हारे घर आई थी और जो उसने देखा और समझा है, वह उसने मुझको बताया है। उस बात के ज्ञान से मैं यह पूछने के लिए आया हूँ कि अब क्या कर रहे हो? यदि अपनी इस मुश्किल में कोई मेरी सहायता चाहिए तो मैं हाजिर हूँ।''

सोमनाथ को हकीम की बात पर सोलह आने विश्वास था। इस कारण उसने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा, ''क्या समझा है भाभी लेखवती ने?''

''वह समझी है कि साधना के पेट में बच्चा है। इस बात का ज्ञान जब तुम्हारी पत्नी को हुआ तो वह आत्महत्या करने लगी थी। यह होनी सुगम न देख वह निःसहाय बैठी रह गई है।''

''भाभी का यह अनुमान गलत है। मैंने अभी हकीम बदरुद्दीन को दिखाया है। उनकी राय है कि यह हमल नहीं है। साधना भी कहती है कि उसका किसी भी पुरुष से सम्पर्क नहीं रहा। मैं समझता हूँ कि भाभी लेखवती इसमें भूल कर रही है। वह बेचारी एक बूढ़े पति की पत्नी होने से इन विषयों में लगभग अनभिज्ञ ही है।''

''और तुम्हारी पत्नी, यमुना भाभी को हकीम साहब के कथन पर विश्वास आ गया है? वह तो लेख की भाँति अनुभवहीन नहीं है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमनाथ इस प्रश्न का उत्तर देने में झिझक अनुभव करने लगा। वह कुछ क्षण तक रामरक्खामल्ल का मुख देखता रहा, फिर मुख की दृढ़ मुद्रा बनाकर बोला, "वह कोई हकीम नहीं। वह 'नब्ज' देखना नहीं जानती। इससे उसको हकीम साहब की बात पर अविश्वास करने में कोई कारण नहीं है।"

रामरक्खामल्ल मुस्कराता हुआ सोमनाथ की झिझक और उसकी आवाज में झुँझलाहट को जान गया था। इस पर भी उसने कह दिया, "मुझको यह जानकर अति प्रसन्नता हुई है कि लेखवती का अनुमान मिथ्या है। तुम्हारा यह कहना ठीक ही है कि उसका अनुभव बहुत कम है। जब यमुना भाभी भी कहती है कि यह गर्भ की बात नहीं तो मैं अब निश्चिन्त हो जा रहा हूँ।

"सोम भैया। पड़ोसी होने के नाते ऐसी बातों से चिन्ता होनी स्वाभाविक ही है। इस पर भी मैं तुमको यह आश्वासन देने आया हूँ कि यदि कभी किसी समय इस विषय में कुछ कठिनाई आई, तो तुम मुझ पर भरोसा कर सकते हो। मैं तुम्हारी बहुत सीमा तक सहायता भी कर सकता हूँ।"

"भापा! क्या सहायता कर सकते हो तुम और किस अवस्था में कर सकते हो?"

इस प्रश्न पर रामरक्खामल्ल गम्भीर हो गया। उसने कुछ देर विचार किया और फिर कह दिया, "सोम भैया! यह सम्भव है कि हकीम की तशखीस गलत हो और लड़की के सत्य ही गर्भ ठहर गया हो। उस अवस्था में जवाहर के साधना के साथ विवाह का प्रस्ताव अभी भी मैं दोहराता हूँ। मैं भ्रूण–हत्या को महापाप मानता हूँ।"

"उसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ेगी। साधना इस बात से इनकार करती है। हकीम इस बात को मानता नहीं। साथ ही साधना की माँ आपके घर अपनी लड़की देगी नहीं। इस कारण भापा! तुम्हारी चिन्ता और यह मेरी कठिनाई से लाभ उठाने को मैं घृणा की दृष्टि से देखता हूँ। यदि तुमने लड़की की निन्दा की तो, यह याद रखो, हत्या हो जायेगी मुहल्ले में।"

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। हँसकर बोला, "सोमनाथ! मैं साधना को अपनी लड़की के समान ही मानता हूँ। इससे कुछ निन्दा का तो प्रश्न ही नहीं उठता। मैं तो यहाँ तुम्हारी कठिनाई में कुछ सहायता देने के विचार से आया था। यदि तुम समझते हो कि तुम्हें किसी प्रकार की कठिनाई नहीं है तो मुझको यह जानकर दुख नहीं, प्रसन्नता ही हुई है।"

रामरक्खामल्ल वहाँ से चला आया। वह जब अपने घर पहुँचा तो विष्णुनारायण दुकान से आया हुआ था। उसने भाई को देख कह दिया,

Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
''भापा! कहाँ गए थे? भोजन के लिए तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है।''

रामरक्खामल्ल अपने भाई को प्रतीक्षा करते देख हँस पड़ा। हँसकर कहने लगा, ''एक मूर्ख को उसकी कठिनाई के विषय में सहायता देने के लिए गया था।''

रामरक्खामल्ल ने अपने भाई और भाई के तीनों लड़कों तथा जवाहरलाल के साथ बैठकर भोजन किया। उनके घर की यह प्रथा थी कि रात का खाना सब पुरुष–वर्ग इकट्ठा खाते थे। बच्चों के सामने सोमनाथ के घर की बात न करने का विचार कर, रामरक्खामल्ल ने केवल इतना कहा कि वह एक मूर्ख की सहायता करने के लिए गया था।

विष्णुनारायण को भी यमुना और उसकी लड़की साधना की बात सुन कुछ संदेह हुआ था। इस कारण वह भी इस चर्चा को सबके सामने चलाने की इच्छा नहीं रखता था।

भोजनोपरांत जवाहर और सदा तो सोने चले गए। उनको प्रातः चार बजे उठकर अपनी पढ़ाई करनी होती थी। महानारायण और श्यामनारायण अपने–अपने कमरे में चले गए। दोनों प्रौढ़ावस्था के पुरुष नीचे बैठक में आ गए। यहाँ आकर विष्णुनारायण ने अपनी पत्नी को हुक्का भरकर लाने को कह दिया। जब हुक्का आया तो रामरक्खामल्ल ने उसके एक–दो कश लगाकर, हुक्के की नाल अपने छोटे भाई की ओर करके कहा, ''मुझे संदेह हो गया था कि सोमनाथ की लड़की साधना के पेट में बच्चा है और यही उनके घर में कलह–क्लेश का कारण भी है। इसमें मैं इस बात का भय कर कि सोमनाथ भ्रूण–हत्या करने का यत्न करेगा, उसको इस बात से मना करने के लिए गया था। साथ ही इस अवस्था में भी उसकी लड़की का अपने जवाहर से विवाह कर लेने का आश्वासन देने गया था।

''एक तो उसने कहा है कि बदरुद्दीन हकीम ने तशखीस की है यह माहवारी की साधारण रुकावट है। दूसरे, वह इस अवस्था में भी लड़की का विवाह हम सूदों के घर में करना नहीं चाहता। तीसरे, उनकी किसी प्रकार की निन्दा करने पर वह मेरी हत्या कर देने की धमकी देने लगा है।''

विष्णु इस बात को सुन उद्विग्न हो पूछने लगा, ''भापा! ऐसा तुमने कहा ही क्यों? उसकी लड़की मरती है या नरक में जाती है, इससे हमें क्या? जवाहर भला उस बदकार लड़की से विवाह क्यों करेगा?''

''वह इस कारण कि मैं जानता हूँ कि यह गर्भ जवाहर से ही है।''

''परन्तु यह गर्भ है भी?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हकीम, साधना की माँ और बाप कहते हैं कि नहीं है। साधना तो अपने को पाक–साफ बताती है, ऐसा सोमनाथ ने कहा है। परन्तु विष्णु! मैं जानता हूँ कि ये सब झूठ बोल रहे है क्योंकि मैं जानता हूँ कि जवाहरलाल का इस लड़की से क्या सम्बन्ध रहा है।"

"भापा! सोमनाथ कोई अच्छा आदमी नहीं। साथ ही उस जाति के अभिमानी पुरुष से अपने बच्चे का सम्बन्ध बनाकर उसको जीवन–भर की मुसीबत में डाल देना कहाँ की बुद्धिमत्ता है?"

"विष्णु! तुम अपने दृष्टिकोण से बात ठीक कहते हो, परन्तु इस सांसारिक दृष्टिकोण से भी पृथक एक दृष्टिकोण है। वह दृष्टिकोण है न्याय, धर्म और मानवता का। मैं उसको भूल नहीं सकता। इसी कारण मैं गया था। मैंने उसके सामने प्रस्ताव रखा था और मैं समझता हूँ कि इस अवस्था में इससे अच्छा प्रस्ताव उसके हित में और हो नहीं सकता। हमारे अपने लोक–परलोक के हित के विचार से भी यह उचित ही था।

"वह मूर्ख नहीं जानता और मैं जानता हूँ कि अन्त में यह विवाह होकर रहेगा। रही मेरे मारे जाने की धमकी? मैं मरने से डरता नहीं। इस पर भी मेरी मृत्यु कहीं निकट में दिखाई नहीं देती। सोमनाथ मुझसे पहले मरेगा।"

विष्णुनारायण दो बातों को जानता था। एक तो यह कि उसके भाई की अन्तर्दृष्टि है और वह उन सबसे कुछ अधिक और कुछ दूर भविष्य की बात को समझ और देख सकता है। साथ ही वह जानता था कि सत्य न्याय, धर्म और उचित–अनुचित के विषय में उसके भाई के विचार विलक्षण हैं। एक बात उसने देखी थी कि जिस दिन से उसने श्यामनारायण को कहा था कि शीघ्र ही इस घर से, एक गाय के गले में रस्सा डालकर, कला ग्वाल–मण्डी के एक गन्दे मकान में चली जायेगी, उसी दिन से श्याम और कला में कुछ सुलह अधिक और लड़ाई कम हो गई थी। साथ ही कला अपनी सास के काम में अधिक हाथ बँटाने लगी थी।

सतवंती भोजन के पश्चात् बर्तन साफ किया करती थी और रसोई साफ कर चूल्हा धो दिया करती थी। कला प्रातः और सायं भोजन तैयार किया करती थी। अब कुछ ही दिनों में कला भी चौका–बासन के कार्य में सतवंती का हाथ बँटाने लगी थी। सतवंती ने कई बार कहा भी था– "कला! बर्तन मसलने से हाथ खुरदरे और मैले हो जाते हैं। यह कार्य तुम्हारा नहीं। तुम मत किया करो।"

कला का उत्तर होता था, "बूआ! कुछ दिन तुम आराम करो। जीवन–भर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो तुमने यह काम किया है। अब मुझको यह सब कर लेने दो।"

परन्तु सतवंती ने काम करना नहीं छोड़ा और अब दोनों मिलकर काम करने लगी थी। इस परिवर्तन को घर में सबने देखा था और सब कला के इस परिवर्तन पर चकित थे। इस रहस्य को कला और श्याम के अतिरिक्त कोई नहीं जानता था।

वास्तव में श्याम ने जब अपनी उपमा गाय से की जाती सुनी तो भारी लज्जा अनुभव करने लगा था। वह इस पर विचार करने लगा था कि यह क्यों कहा है? वह क्यों और किसलिए अपनी पत्नी के अधीन है? विचारोपरांत वह इस परिणाम पर पहुँचा था कि उसका विषय–वासना में रत रहना ही, उसका पत्नी का दास बनने में कारण है। उसने अपनी इस धारणा की परीक्षा करनी चाही।

यह उसी रात की बात थी, जिस दिन रामरक्खामल्ल ने अपनी जीवन–कथा और लेखवती से अपने विवाह की बात बताई थी। वह यह तो मानता था कि उसके तायाजी की कथा में बहुत कुछ कल्पना का अंश है। इस पर भी वह कथा में भाव की सच्चाई को समझा था। वह देख पा रहा था कि लेखवती पूर्ण–यौवना है और उसका ताया एक साठ वर्ष का वृद्ध व्यक्ति है। यदि रामरक्खामल्ल के मुख पर ओज और लाली थी तो भी बाल श्वेत होने लगे थे और आँखों के नीचे की ओर झुर्रियाँ दिखाई देने लगी थीं। इस पर भी लेखवती में किसी प्रकार का असंतोष दृष्टिगोचर नहीं हुआ था। उसके ताया ने कहा था कि वह सवा सौ वर्ष की आयु का भोग करेगा और लेखवती इतने काल तक जीवित रहेगी अथवा नहीं, वह नहीं जानता। इस कथन ने उसके मन पर भारी प्रभाव डाला था।

उसी रात कला जब अपने बच्चे को सुलाकर उसके बिस्तर पर आने लगी तो श्याम ने पीठ मोड़ ली। आधी रात व्यतीत हो जाने पर कला ने उसको जगाया और कहा, "आज क्या बात है, जो गहरी छानकर सो रहे हो?"

"मुझे तंग न करो कला! मैं तुमसे ऊब गया हूँ।"

"क्यों?"

"तुम काटती हो। मुख पर चपत भी लगा देती हो और फिर प्रातः उठकर अहसान जताती हो। मानो मुझ पर कोई भारी कृपा कर रही हो।"

"तो क्या मैं कृपा नहीं करती!"

"आज से तुम यह कृपा अपने पास ही रखो।"

"क्या हुआ है जी! आपको आज?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं आज विचार कर रहा हूँ कि मुझको कोई ऐसी पत्नी चाहिए जो मेरा कहा माने, घर के काम में माँ और बूआजी की सहायता करे और फिर मुझसे न तो लड़े और न ही मुक्का–मुक्की करे। जब कभी मैं उसको प्यार करूँ तो वह उतनी ही अहसानमन्द हो, जितना मैं उसका होऊँ। मैं अब यही चाहता हूँ कि कोई ऐसी पत्नी ले आऊँ, जो मेरे कपड़ों की मरम्मत कर दिया करे और धोबी से धुलवाकर उनकी देखभाल भी कर सके।"

"तो आपका मतलब यह है कि आप एक और बीवी घर में लाना चाहते हैं, जो आपकी नौकरी भी करे और आपकी वासना की तृप्ति भी करे?"

"सब ही करती हैं। पुरुष घर के बाहर काम करते हैं और स्त्रियाँ घर में काम करती हैं। यदि स्त्री पति की नौकरी करती है तो पुरुष भी तो पत्नी की नौकरी करता है।"

"अच्छी बात है, ले आइयेगा। पर अब तो मान जाइये।"

"रानी! अब तुम अपने बच्चे के पास जाकर सो रहो और मुझको सोने दो।"

उस दिन कला क्रोधवश उठकर चली गई। परन्तु जब दिन के बाद दिन, रात के बाद रात, यही कुछ होने लगा और कला के सब प्रकार के प्रलोभन भी श्याम को विचलित नहीं कर सके तो कला के होश ठिकाने लगने लगे।

लगभग एक सप्ताह के बाद दोनों में मेल हुआ, परन्तु फिर उसके बाद श्याम ने उसको ऐसा छोड़ दिया, जैसे नीबू निचोड़कर फेंक दिया जाता है। इस पर तो वह आश्चर्यवत् मुख देखती रह गई। वह समझ नहीं सकी कि इसका क्या अर्थ ले। उसने उसको पुनः मोह जाल में फँसाने का यत्न किया, परन्तु वह असफल रही। अगले दिन वह घर के काम–काज में रुचि लेने लगी। इस प्रकार लगभग एक मास से ऊपर हो चुका था।

इसी समय साधना और यमुना के घर की घटना घट गई। कला भी कुछ ऐसा ही समझी थी, जैसा कि इस घटना से लेखवती समझी थी। उसने अपनी देवरानी, महानारायण की पत्नी से बात की। मोहिनी, महानारायण की पत्नी इस समय चौदह वर्ष की लड़की मात्र थी। उसका विवाह हुए एक वर्ष हो चुका था, परन्तु वह सरल–चित्त, सबसे पृथक और चुपचाप रहती थी। एक अति निर्धन माता–पिता की लड़की होने के कारण और पाँचवीं तक पढ़ने पर भी वह कला से अधिक विनयशील थी। अभी तक उससे घर का काम–काज नहीं लिया जाता था। इस पर भी वह दिन भर घर की सफाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि में लगी ही रहती थी। घर के फर्श, चौका, सन्दूक, स्टूल और दरवाजे आदि पर से मट्टी झाड़कर सफेद धुले पर्दे आदि लगाती रहती थी। उसके आने के बाद से गद्दे और रजाइयों के गिलाफ तथा पर्दे इत्यादि सप्ताह में एक बार धुले हुए चढ़ा दिए जाने लगे थे। कुछ कपड़े तो वह स्वयं ही धोती थी और कुछ धोबी से धुला लिया करती थी। इस प्रकार जब से इस घर में आई थी, घर उज्ज्वल और साफ–सुथरा दिखाई देने लगा था।

एक दिन मोहिनी की सास ने उससे कहा भी, "मोहिनी! अभी उस दिन ही तो रजाई पर धुला हुआ गिलाफ चढ़ाया था।"

"पर यह गन्दा लगने लगा था, माँजी! अब इसके साथ सोने में ज्यादा आनन्द आएगा।"

सास अपनी रजाई के दूध–समान सफेद गिलाफ को देख और मोहिनी के कथन को सुन मुस्कराई और बोली, "देखने में तो भला ही लग रहा है।"

"और माँजी! शास्त्र में लिखा भी तो है सफाई रखना धर्म है, जिसमें भगवान स्वयं वास करते हैं। थोड़े पैसे तो खर्च होते हैं परन्तु दो–तीन रुपये महीना खर्च कर भगवान मिल जाएँ तो सौदा सस्ता नहीं क्या?"

इस भगवान की बात ने सास का मुख बन्द कर दिया। उसने मोहिनी की पीठ पर प्यार देकर कहा, "अच्छा बेटी? खूब सफाई करो। तुम्हारे किए से यदि हमको भी भगवान मिल जाएँ तो जीवन भर तुम्हारे चरण धो–धो पियूँगी।"

कला मोहिनी से बोलती नहीं थी। इसमें कारण था। कला एक गौर–वर्णीय और सुन्दर रूप–रेखा की स्त्री थी। मोहिनी गन्दमी रंग की और साधारण रूप रखती थी। कला को सदा यह अभिमान बना रहता था कि वह पुरुषों पर शासन करने के लिए ही पैदा हुई है। इसके विपरीत मोहिनी की माँ ने मोहिनी को सिखाया था कि सेवा करने से, विशेष रूप में अपने बड़ों की, भगवान प्रसन्न होते हैं। भगवान जब प्रसन्न हो जाते हैं तो वह दीर्घ–जीवन, सुख और सम्पदा देते हैं। सबसे बड़ी बात जो भगवान अपने भक्तों को देते हैं, वह है भला पति और अच्छे सास–श्वसुर। ये सब कुछ मोहिनी को विष्णुनारायण के घर आकर प्राप्त हो गए थे–अपने माता–पिता के घर से अच्छा भोजन, अच्छे वस्त्र, खुला मकान और सुमित्रा तथा विष्णुनारायण जैसे सास–श्वसुर, जो उसकी प्रत्येक बात का ध्यान रखते थे। महानारायण–जैसा उसका पति था जो उसका मान करता था। साथ ही जब कभी उसके माता–पिता, भाई–बहिन उससे मिलने के लिए आते तो उनका यहाँ यथोचित आदर–सत्कार हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
करता था। वह अत्यन्त प्रसन्न थी और अपने काम तथा अपने स्वाध्याय में मग्न थी।

उस समय लाहौर में पढ़ने के लिए, विशेष रूप में हिन्दी–पढ़ों के लिए कोई विशेष पुस्तक ढूँढ़ लानी कठिन थी। एक–दो बार उसने अपनी जेठानी कला से किस्से–कहानियाँ माँगकर पढ़े तो उसको वे भले नहीं लगे। उसने एक दिन अपने पति से कहा, ''वेंकटेश्वर प्रेस की तुलसी रामायण, अर्थ सहित ला दीजिए।''

महानारायण मच्छी–हट्टा में एक दुकान पर, जहाँ इस प्रकार की किताबें बिकती थीं, लेने गया तो मूल्य पाँच रुपये बारह आने सुन लौट आया। दुकान पर वह कुछ परेशानी अनुभव करता हुआ पहुँचा तो पिता ने उससे पूछ लिया, ''क्यों, उदास हो रहे हो?''

''पिताजी! मोहिनी ने एक पुस्तक लाने के लिए कहा था। मैं लेने के लिए गया था और मूल्य पाँच रुपये बारह आने सुन लौट आया हूँ।''

विष्णुनारायण को भी पुस्तक कुछ महँगी प्रतीत हुई। वह जानता था कि श्याम अपनी पत्नी के लिए किस्से–कहानियाँ आने–दो आने वाली लाया करता है। एक बार सवा रुपये की एक पुस्तक लाया था। वह तोता–मैना का किस्सा था। इसको विष्णुनारायण ने फिजूल खर्चा समझा था। आज भी वह इसको एक फिजूल खर्चा समझ रहा था। मोहिनी की पुस्तक की माँग सुनकर उसने कहा, ''उसको कह देना कि बाजार में नहीं मिली।''

''तो पिताजी! झूठ बोल दूँ? वह तो कभी झूठ बोलती नहीं।''

रामरक्खामल्ल अपनी लय में लीन दुकान पर बैठा था। उसके कान में ये शब्द ऐसे पड़े, जैसे कोई बहुत दूर घोषणा कर रहा हो, 'वह तो कभी झूठ बोलती नहीं।' यह सुन उसके कान खड़े हो गए और जब उसको ज्ञान हुआ कि यह बात महानारायण ने कही है तो उसने पूछ लिया, ''कौन झूठ नहीं बोलती?''

''मोहिनी, बड़े भापा! मैं जानता हूँ कि वह मेरे सामने सब–कुछ सच–सच कह देती है।''

''और तुम उसके सामने कभी झूठ बोलते हो?''

''पहले तो अपने और अपने परिवार के विषय में डींग हाँका करता था, परन्तु उसका व्यवहार देख मुझे अपनी बातों पर लज्जा आने लगी है। अब मैं कभी झूठ नहीं बोलता, परन्तु आज पिताजी कह रहे हैं कि कह दूँ कि नहीं मिल रही।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या नहीं मिल रही?"

महानारायण तो हिन्दी नहीं जानता था। वह केवल लुंडी और बही–खाता ही जानता था। इस कारण उसने वह कागज का पर्चा, जो मोहिनी ने लिखकर उसको दिया था, ताया के हाथ में देकर कहा, "उसने, यह पोथी लाने को कहा था। मैं लेने गया था, परन्तु दाम सुन लौट आया हूँ।"

रामरक्खामल्ल ने पुस्तक का नाम पढ़ा तो मन–ही–मन विस्मय करने लगा। विष्णुनारायण और उसका यह लड़का नहीं जानता था कि वह क्या माँग रही है और उसका मूल्य पौने छः रुपये से कितना अधिक है। रामरक्खामल्ल पुस्तक का नाम पढ़कर मुस्कराया और पूछने लगा, "कितना दाम बताया है श्यामलाल ने?" यह श्यामलाल दुकानदार का नाम था और रामरक्खामल्ल उससे परिचित था।

महानारायण ने बताया, "पाँच रुपये बारह आने।"

"बहुत अधिक बताए हैं।" रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा और उस पर्चे को अपनी जेब में रखकर बोला, "मैं तीसरे पहर उधर जाऊँगा तो पता करूँगा।"

उसी रात जब महानारायण रात को, भोजन पर अपने कमरे में गया तो सरसों के तेल के दीपक के प्रकाश में बैठी मोहिनी एक पुस्तक पढ़ रही थी। वह पढ़ने में इतनी लीन थी कि उसको पति के आने का पता नहीं चला। वह पढ़ रही थी–

जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिवर बदन,
करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन।
मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन,
जासु कृपा सोंदयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन।
करउ सो मम उर धाम सदा छीर सागर सयन,
कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।
जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन,
बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिन्धु नररूप हरि।
महामोह तम पुंज जासु वचन रवि कर निकर,

बहुत ही मीठे स्वर से मोहिनी पढ़ रही थी। महानारायण मुग्ध हो सुनता रहा। इतना पढ़कर मोहिनी उसके नीचे लिखे अर्थ पढ़ने लगी। उसने पढ़ा–

"जिनके स्मरण करने से सब कार्य सिद्ध होते हैं, ऐसे जो गणेशजी हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनका हाथी के समान मुख है, वे गुणों के पुंज, बुद्धि में अपार, मुझ पर कृपा करें। जिनकी कृपा से गूँगे बोलने लगते हैं, लँगड़े भी कठिन पर्वतों पर चढ़ जाते हैं–''

इस समय महानारायण ने खाँसकर अपनी पत्नी का ध्यान आकर्षित कर लिया। उसने पुस्तक बन्द कर मुस्कराते हुए कहा, ''तो आप कर आए भोजन?''

''हाँ, यह कौन–सी पोथी पढ़ रही हो?''

''जो आप लाए हैं?''

''मैं?'' परन्तु दूसरे ही क्षण महानारायण समझ गया कि यह बड़े भापा लाए होंगे। जब मोहिनी पुस्तक को अलमारी में रख, भोजन करने के लिए रसोईघर में चली गई तो महानारायण अपने तायाजी से दाम पूछने के लिए चला गया। तायाजी और उसके पिता बैठक में बैठे हुक्का पी रहे थे। वहाँ पहुँच महानारायण ने पूछ लिया, ''बड़े भापा! कितने की आई है वह पोथी?''

''बहुत सस्ती मिल गई है।''

''कितने की?''

''कौड़ियों के दाम? केवल पाँच रुपये बारह आने की।''

''मुझसे भी तो इतना ही माँग रहा था?''

''बहुत ज्यादा माँग रहा था तुमसे। उसको पता नहीं था कि तुम्हारे पास इस मतलब के लिए इतने दाम नहीं हैं।''

''यह बात नहीं, बड़े भापा! जेब में तो उस समय सौ रुपये से भी ऊपर थे।''

''श्यामलाल बता रहा था कि तुमने कहा था कि इतने तुम नहीं दे सकते। मैं समझता हूँ तुमने ठीक ही कहा था। तुम्हारे लिए वह कागजों का ढेर मात्र ही तो था। अच्छा बताओ, बहू को पसन्द आई है?''

''बहुत मजे से स्वर सहित पढ़ रही थी।''

''उसको कहना कोई और पुस्तक कभी चाहिए तो मुझको बताया करे। मैं बहुत सस्ते मूल्य पर ला दिया करूँगा।''

''भापा! सस्ती कहाँ लाए हो? वही पाँच रुपये बारह आने की ही तो लाए हो। इतने में डेढ़ मन अनाज आ जाता है जो एक आदमी के दो मास तक खाने पर भी कुछ बच जाएगा।''

''यह अनाज तुम्हारी पत्नी जीवन–भर खायेगी, तब भी नहीं चुकेगा। जाओ, तुम भी अपनी पत्नी से आधा घण्टा नित्य सोने से पूर्व सुना करो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा! इसका दाम ले लो।" इतना कह महानारायण अपनी जेब में से रुपये निकालने लगा।

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, "तुम इसका दाम नहीं दे सकोगे। इसका दाम बहुत अधिक है। इसका दाम तब लूँगा, जब तुम इसको सुनते–सुनते बूढ़े हो जाओगे।"

रामरक्खामल्ल ने रुपये नहीं लिए। उसके कथन का अर्थ तो महानारायण को रात उसकी पत्नी ने ही समझाया। जब महानारायण ने एक घण्टा–भर मोहिनी को पढ़ते सुना तो बोला, "अच्छी पुस्तक है!"

"तभी तो बड़े भापाजी ने कहा है कि यह अमूल्य है और वह इसे बहुत ही सस्ते में लाए हैं।"

: 15 :

जब कला भी घर का काम–काज देखने लगी तो उसकी मोहिनी से अधिक भेंट होने लगी। इन भेंटों से कला को पता चला कि उसकी देवरानी उससे विलक्षण है। जिस दिन वह साधना को लेटे और उसके पास यमुना को छाती पीटते देखकर आई थी और उसको कुछ ऐसा ही समझ आया था, जैसा लेखवती को, तो उसके मन में बात समाई नहीं रह सकी। उसने पहला अवसर मिलने पर ही मोहिनी के सामने बात उगल दी। उसने कह दिया, "मोहिनी बहिन! आज यमुना के घर पर बहुत हल्ला हुआ था।"

"हाँ! माताजी बता रही थीं।"

"मैं तो वहाँ गई थी। बात यह है कि उनकी कुँवारी लड़की साधना के गर्भ ठहर गया प्रतीत होता है।"

मोहिनी ने इसका कुछ उत्तर नहीं दिया तो कला ने समझा कि वह इसका अर्थ नहीं समझ सकी। तब उसने व्याख्या करने के लिए कह दिया, "किसी लड़के के पास वह जाती रही है।"

"हाँ, काफी बड़ी आयु की प्रतीत होती है।"

"सुना है, पन्द्रह वर्ष से ऊपर है।"

"उसकी माँ को उसका विवाह कर देना चाहिए था।"

"यों तो पैसे वाले प्रतीत होते हैं परन्तु कंजूस हैं कुछ।"

"मैंने सुना था बड़े भापा जवाहर की सगाई का प्रस्ताव लेकर गए थे, पर उसकी माँ ने अस्वीकार कर दिया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वे खत्री–खन्ने हैं। उनको अपनी ऊँची जाति का अभिमान है। अब सब अभिमान चूर हो जाएगा।"

"परमात्मा उनके मान की रक्षा करे!"

"तो परमात्मा अन्याय कर दे, क्या यही मतलब है तुम्हारा?"

मोहिनी मुस्कराई और चुप कर गई। कला को उससे बात करने का कोई स्वाद नहीं आया था। उद्विग्न हो वह पूछने लगी, "तुमको दुःख नहीं हुआ उसकी बात सुनकर?"

"पर बहिन! तुम दुःख प्रकट कर रही थीं क्या?" मोहिनी ने हँसते हुए कह दिया।

"तुम हँस रही हो?"

"सब प्रभु की माया है। कला बहिन! भगवान किसका किस प्रकार भला करना चाहता है, हम छोटी बुद्धि वाले लोग समझ नहीं सकते। हम को तो धैर्य से उस पर विश्वास रख, प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

"मैं तो समझती हूँ कि हमको उसकी जी भरकर निन्दा करनी चाहिए।"

"क्यों? हमारा उसने क्या बिगाड़ा है।"

"उसने सब औरतों को बदनाम कर दिया है।"

"कैसे?"

"यह प्रकट कर कि स्त्रियाँ वासना के पीछे भागती फिरती हैं।"

"मैं समझती हूँ कि ऐसा कुछ नहीं है। मुहल्ले में सैकड़ों स्त्रियाँ और लड़कियाँ हैं। हमारे घर में ही दो बाल–विधवा हैं। वे तो वासना के पीछे भाग नहीं रहीं। सैकड़ों के अच्छी होने से हमारी नेकनामी नहीं होगी और एक के खराब होने से बदनामी हो जाएगी क्या?"

"एक मछली ही तालाब को गन्दा कर देती है।"

"उस तालाब को बहिन! जिसका जल एक स्थान पर खड़ा हो। बहते जल को तो कोई गन्दा नहीं कर सकता और स्त्री–जाति, मेरा मतलब है मानव–समाज तो एक वेग से बहती नदी है। यह इस प्रकार एक–आध मछली के गन्दा करने से गन्दी नहीं होगी।"

कला उत्तर नहीं दे सकी। वह मोहिनी को अपनी बात का समर्थन शुरू करते देख, उठकर अपने कमरे में चली गई।

रात जब घर की स्त्रियाँ भोजन करने के लिए बैठीं तो कला ने बात चला दी। लेखवती अपने पति की इच्छा जानती थी। इस कारण उसने कला को डाँटकर कहा, 'क्यों एक कुँवारी लड़की की निन्दा कर रही हो?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ताई, उसका पेट कुछ उभरा हुआ था।"

"अच्छा! चुप रहो! देखो किसी से कुछ ऐसी बातें कह न देना।"

"क्यों?"

"इसलिए कि यह बात तुम विश्वास से नहीं कह सकतीं। मैं तो यह कहती हूँ कि विश्वास हो तो भी यह कहना कि उसका दोष है, कैसे कह सकती हो? क्या जाने साधना सर्वथा निर्दोष हो। दोष किसी अन्य का हो जिसको हम लोग जानते नहीं। ऐसी अवस्था में कुछ नहीं कहना चाहिए। किसी की निन्दा, विशेष रूप में जब हम दोषी को जानते नहीं, करना बड़ा पाप होता है।"

कला को पाप–पुण्य का कुछ अधिक ज्ञान नहीं था। इस पर भी घर में ही दो को अपने विपरीत बात करते सुन वह चुप कर गई।

अगले दिन से हकीम साहब की दवाई का प्रभाव होने लगा और लड़की को खाया–पिया हजम होने लगा। पन्द्रह–बीस दिन में साधना खिड़की में खड़ी दिखाई देने लगी और फिर कुछ दिन में वह हकीम साहब के दवाखाने में कभी माँ के साथ और कभी बड़े भाई विश्वनाथ के साथ जाने लगी।

इस पर भी यमुना को संतोष नहीं था। पहले ही दिन जब रामरक्खामल्ल साधना की अवस्था का सत्य वर्णन कर जवाहर से उसके विवाह की बात दोहराने आया था तो यमुना उस समय किवाड़ के पीछे खड़ी दोनों बड़ों की बात सुन रही थी। उसको पूर्ण मुसीबत से छूट जाने का यह एक उपाय प्रतीत हुआ था। जब रामरक्खामल्ल चला गया तो उसने अपने पति से कहा, "आपने उसको दुत्कार क्यों दिया है?"

"तो क्या उसकी बात को मान जाता कि लड़की गर्भवती है?"

"मैं समझती हूँ कि जवाहर ने अवश्य ही अपने पिता को साधना से सम्पर्क की बात कही होगी। तभी तो साधना की बीमारी से यह अनुमान लगा, वह कहने के लिए आया था। आपने कहा है कि साधना इस बात से इनकार कर रही है। इसका अर्थ हुआ कि साधना ने झूठ बोला है अथवा आप झूठ बोल रहे हैं।"

"झूठ न बोलता तो क्या करता?"

"कहना यह चाहिए था कि लड़की तो कुछ नहीं बताती। वह तो केवल रो रही है। हकीम साहब कहते हैं कि गर्भ नहीं है, परन्तु यह कथन गलत भी हो सकता है। यदि यह गलत हुआ तो फिर उसके प्रस्ताव पर विचार हो सकेगा।"

"तो तुम अब अपनी लड़की को एक सूद के घर में दे दोगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या करेंगे? रुपये को कुंडी लग गया है। इस खोटे रुपये को चलाना भी तो है।"

"मुझको हकीम साहब की तशखीस पर सोलहों आने विश्वास है।"

यमुना लड़की के बढ़ रहे पेट को देख रही थी और उसे चिन्ता और साथ ही पति की अनर्गल बात पर क्रोध आ रहा था। इसी क्रोध में एक दिन उसने साधना को डाँट दिया, "कितने दिन हो गए हैं रजस्वला हुए तुमको?"

"तीन महीने से अधिक हो चुके हैं।"

"देखूँ तो पेट में कुछ कमी आई है अथवा नहीं?"

"कमी क्या आएगी, माँ! यह तो बड़ा हो रहा है।"

"तो हकीम की दवाई से कुछ लाभ नहीं हो रहा है?"

"हकीम साहब तो ताकत की दवाई दे रहे हैं और मुझमें ताकत आ रही है।"

"मेरा विचार है कि आज मैं जाऊँ और उनसे पूछ लूँ कि क्या बात है जो लाभ नहीं हो रहा है।"

"कैसा लाभ चाहती हो माँ?"

"यही कि तुम रजस्वला हो जाओ।"

"माँ! पेट में बच्चा है तो रजस्वला क्यों होऊँगी?"

"तुमको विश्वास है क्या?"

"हाँ माँ! अब तो पेट में धक–धक भी होती है। मैं समझती हूँ कि उसमें जान पड़ गई है।"

"तो तुम अफीम घोलकर पी जाओ। इसके अतिरिक्त अन्य कोई उपाय भी तो नहीं रहा। देखो साधना, तुम्हारे पिता अफीम खाते हैं, और उनकी डिबिया में कितनी ही पड़ी रहती है। उसको निगल जाओ। तुमको और साथ ही हमको भी छुट्टी मिल जाएगी। इस अवस्था में तुमसे कौन विवाह करेगा?"

साधना एक दूसरी ही बात पर विचार कर रही थी। उसको हकीम साहब ने एक बात कही थी और वह उसी पर विचार कर रही थी। उस दिन वह माँ के साथ हकीम साहब के मतब पर गई तो यमुना ने हकीम साहब से कह दिया, "मैं ऐसा समझती हूँ कि आपकी तशखीस गलत है। यदि आप हमल गिराने की दवाई नहीं देना चाहते तो संखिया की गोली तो दे सकते हैं?"

हकीम साहब ने मुस्कराते हुए कहा था, "बहिन! घबराओ नहीं। सब्र से ही सब कुछ मिलता है। मुझको लड़की का फिर से मुआइना कर लेने दो। तब ही कुछ ठीक बता सकता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह लड़की को रोगी देखने के कमरे में ले गया। वहाँ एक बेंच पर उसको लेटा कर हकीम साहब ने नाभि पर हाथ रखकर कहा, "देखो बीवी! हमल गिराना एक गुनाह है। यह मुझसे हो नहीं सकेगा। तुम्हारी माँ तुमको मार डालने की दवाई माँग रही है। यह तो उससे भी बड़ा गुनाह है। मैं यह भी नहीं करूँगा।"

"तो मेरे लिए क्या कहते हैं आप?"

"मैं तो तुमसे फिर वही तजवीज करता हूँ।"

"लड़का दिखा दीजिए तो बात करूँगी?"

"दिखाया तो था?"

"वह तो आपका अपना लड़का है।"

"नहीं। मेरा भानजा है।"

"वह मुझको स्वीकार है।"

"तो तुम रात के ग्यारह बजे और बारह बजे के भीतर गली के फाटक पर आ जाना! बाकी सब इन्तजाम मैं कर दूँगा।"

बाहर आकर हकीम साहब ने कह दिया, "अब तो हमल का यकीन ही मान लेना चाहिए और मैं यह काम गुनाह समझता हूँ।"

"तो दूसरी बात कर दो?"

"इस समय मेरे पास नहीं है। कल अकेली आ जाना, मैं मँगवा रखूँगा।"

माँ और बेटी पीत मुख घर लौट आईं। साधना ने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि वह मुसलमान हो जाएगी। वह मन में विचार करने लगी कि कितने अच्छे लोग हैं ये, जो इस हालत में भी उससे विवाह कर उसको अपने घर पर रखने को तैयार हैं। उसने निश्चय कर लिया कि वह अब घर से भाग जाएगी।

माँ ने सुन रखा था कि यदि तेल में घोलकर अफीम दी जाय तो शीघ्र ही असर करती है। उसने अपने घर वाले की अफीम की डिबिया ढूँढ़ी। उसमें से एक तोला भर निकाली और थोड़े से सरसों के तेल में घोल दी। लड़की को खाना देकर उसने कह दिया, "देखो साधना! तुम्हारे कुकर्मों का फल तुम्हें भोगना ही चाहिए। हमारी तथा अपने बहिन–भाइयों की जिन्दगी खराब करने का तुमको अधिकार नहीं है। उन पर दया करो और देखे बिना यह दवाई पीकर सो जाना।"

"माँ, रात को सोने के समय पियूँगी। इस समय तो कोई देख लेगा।"

माँ ने वह कटोरी कोठरी में रख दी। सायंकाल तक साधना अनिश्चितमन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। वह नहीं समझ पा रही थी कि धर्म से पतित होकर मुसलमान बन जाये अथवा जीवन का अन्त कर दे। माँ ने उसको बताया था कि एक बार दवाई उसके अन्दर गई तो कष्ट नहीं होगा। वह सो जाएगी और फिर अगले लोक में उसका जन्म हो जाएगा। इससे पिछले कुकर्मों का प्रायश्चित हो जाएगा और अगला जन्म बहुत ही अच्छा होगा। वह देवी बन जाएगी। इसके विपरीत जीवन के स्वाभाविक मोह, जीने की लालसा और जीवन के स्वाद थे। सन्देह केवल इस बात का था कि वे लोग उसको सुखी रख सकेंगे क्या? कहीं वे उससे घृणा तो नहीं करने लगेंगे?

रात को सोने तक भी वह अनिश्चित मन थी। सोने से पूर्व माँ आई और उससे पूछने लगी, "दवाई पी ली है अथवा नहीं?"

साधना ने एक बार तो याचना के भाव में माँ की आँखों में देखा और फिर उन आँखों में निष्ठुरता देख बोली, "माँ, अब तुम जाकर सो रहो। प्रातः तुमको मैं नहीं मिलूँगी।"

माँ गई तो उसने भीतर से कुण्डा लगा लिया। माँ ने समझा, यह भी इसने ठीक ही किया है। इससे उसकी स्वेच्छा से आत्महत्या की बात कही जा सकेगी।

वह अपने कमरे में गई और सोने का बहाना कर लेट रही। सोमनाथ भी अपनी पत्नी को बेचैन देखकर चिन्तित था। उसको अब तक समझ आ गया था कि हकीम साहब का रोग–निदान गलत है। साधना सत्य ही गर्भवती है। वह अपनी पत्नी से मिलकर रामरक्खामल्ल की कही योजना पर विचार करना चाहता था।

सोमनाथ विचार कर रहा था कि रामरक्खामल्ल उससे मिलने आया नहीं। उससे अन्तिम भेंट हुए आज डेढ़ महीने से ऊपर हो चुका था। इस काल में उससे आमना–सामना भी नहीं हुआ। वह अब यह सोच रहा था कि उससे मिलने जाएगा तो किस मुँह से बात करेगा? वह विचार कर रहा था कि रामरक्खामल्ल मिले तो उससे कह दे कि साधना मान गई है, परन्तु फिर विचार करता कि नहीं, ऐसा कह देगा कि हकीमजी अपनी गलती मान गए हैं। परन्तु सबसे कठिन बात यह थी कि वह अपनी गर्भवती लड़की को उसके लड़के से विवाह के लिए कैसे कहे? उसके सामने जाकर रोये अथवा पश्चाताप करे।

इन्हीं बातों में आधी रात व्यतीत हो गई। वह अभी रजाई लपेटे अपनी खाट पर बैठा हुआ था। उसको अभी तक अपनी डब्बी से अफीम के गायब होने का पता नहीं था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमुना भी आँखें मूँदे रजाई में मुँह–सिर लपेटे पड़ी थी। वह मन में साधना की अवस्था का अनुमान लगा रही थी। उसका अनुमान था कि इस समय वह लड़की ठण्डी हो चुकी होगी। घर में निस्तब्धता से वह इस बात का ही विश्वास कर रही थी। उसने अब यह विचार करना आरम्भ किया था कि प्रातः जब साधना की कोठरी का द्वार नहीं खुलेगा तो वह खटखटायेगी। वह फिर अपने पति को बताएगी। दोनों पुनः द्वार खटखटायेंगे। जब द्वार नहीं खुलेगा तो आस–पड़ोस के लोगों में हल्ला किया जाएगा। जब काफी लोग इकट्ठे हो जायेंगे तो फिर द्वार तोड़कर भीतर जाया जाएगा। वहाँ मृत शरीर देखकर सब घबरायेंगे और हल्ला होगा। मुहल्ले को शान्त करने का यत्न करेंगे। संस्कार हो जाएगा तो सब कुछ शांत हो जाएगा। यह सब वह खाट पर लेटी सोच रही थी।

एकाएक उसने मुख से रजाई उतारी। उसके भीतर कुछ गर्मी लगने लगी थी। फरवरी का महीना समाप्त हो रहा था। उसने जब रजाई मुख से हटाई तो अपने पति को खाट पर बैठे देख पूछने लगी, "आप सोये नहीं?"

"कैसे सो सकता हूँ? इस हकीम के बच्चे ने भारी धोखा दिया है। मैं तो अब सोच रहा हूँ कि रामरक्खामल्ल से मिलकर उसकी योजना पर कार्य करूँ।"

यमुना मन में विचार करने लगी। अब यह भला कैसे होगा? साधना के शव से कौन विवाह करेगा? इस पर भी अपनी करतूत को छिपाने के लिए उसने कह दिया, "साधना से पूछ लो। वह जवाहरलाल से अब विवाह करेगी क्या? कदाचित् अब तो रामरक्खामल्ल भी विवाह के लिए राजी न हो सके।

"फिर भी उससे पूछ लेने में क्या हानि है? बदनामी तो हो ही गई है, अब शायद लड़की सुखी हो जाए।"

"पर लड़की से भी तो पूछ लें न?"

"वह मान जाएगी। मुझको विश्वास है। हमें तो रामरक्खामल्ल की बात उसी समय ही मान जानी चाहिए थी, जबकि अभी पता भी नहीं था कि लड़की फँस गई है।

"वह तो जो हुआ सो हुआ। अब प्रातःकाल लड़की से पूछकर रामरक्खामल्ल से बात कर लेना। जैसा वह कहे वैसा मान जाना।"

भीतर–ही–भीतर मन में यमुना यह विचार कर रही थी कि किस प्रकार चुपचाप, बिना किसी के मन में संदेह पैदा किए, वे लड़की का संस्कार कर सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पति–पत्नी दोनों शान्त होकर लेट गए। वास्तव में दोनों सोने का बहाना करने लगे थे। ज्यों–त्यों कर दिन हुआ। सबसे छोटी लड़की जाग पड़ी और दूध माँगने लगी। यमुना उठी। रात–भर सो न सकने के कारण उसकी आँखें खूब लाल हो रही थीं। उसने बच्ची को उठा लिया और परनाले पर जाकर पेशाब करवाया और फिर रात का पड़ा हुआ दूध गरम करने लगी।

सोमनाथ उठा तो साधना से पूछने के लिए उसे जगाने चला गया। यमुना अभी आग ही सुलगा रही थी कि सोमनाथ उसके पास आया और बोला, ''साधना अपनी कोठरी में नहीं है।''

''नहीं है। टट्टी–पेशाब के लिए गई होगी।''

''नहीं। मैं छत पर भी देख आया हूँ। टट्टी तो मदन गया हुआ है।''

''वह अपने कमरे में नहीं है?''

''नहीं, द्वार खुला था। बिस्तर अभी भी लगा हुआ है।''

यमुना ने आग सुलगा ली थी। उस पर उसने दूध की पतीली रखी और स्वयं साधना की कोठरी में चली गई। वहाँ जा पहली वस्तु जो उसने देखी, वह वहाँ पड़ी कटोरी थी, जिसमें उसने अफीम घोलकर रखी थी। कटोरी अभी भी वहाँ पड़ी थी। उसने तुरन्त कटोरी उठाई और परनाले पर धोने के लिए चली गई। सोमनाथ उसको यह सब करते देख रहा था। उसने पूछ लिया, ''यह क्या है?''

''कुछ नहीं।''

परन्तु जब कटोरी धोई जा रही थी तो सोमनाथ को अफीम की गंध आ गई। एक क्षण के विचार से ही वह समझ गया कि अफीम तेल में मिली हुई है। अपनी पत्नी को साधना के कमरे में जाकर पहला काम कटोरी को उठाकर धोने का करते देख वह समझ गया कि यह अफीम उसकी पत्नी के ज्ञान में थी। अर्थात् साधना यह अपनी माँ की राय से ले रही थी।

उसने ली नहीं। वह मरने से डरकर घर छोड़कर ही भाग गई है। तो उसके घर से भागने में उसकी पत्नी का भी हाथ है। उसने सोचा कि कदाचित् यमुना ने उसको अफीम खाने के लिए विवश किया हो और वह मरने के स्थान पर भाग जाने में कल्याण मानने लगी हो।

इस समय तक यमुना ने कटोरी धो डाली थी। सोमनाथ ने उससे पूछ लिया, ''यह तुमने क्या किया था? कहाँ से ली थी यह अफीम?''

''आपकी डब्बिया में से निकाली थी।''

''तुमने उसको मरने के लिए कहा था?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमुना परेशानी अनुभव करने लगी। वह विचारकर बोली, "भाग गई है तो ठीक नहीं हुआ क्या?"

"पुलिस में रिपोर्ट लिखवानी पड़ेगी।"

"क्यों?"

"नहीं लिखवाऊँगा तो मुहल्ले में से कोई लिखवा देगा और तब यह समझ लिया जाएगा कि मैंने उसकी हत्या करके उसके शव को रावी में बहा दिया है।"

"तो लिखवा दीजिए। पर यह बात नहीं लिखवाइयेगा। इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।"

: 16 :

सोमनाथ कोतवाली गया और रिपोर्ट लिखा आया। पुलिस वाले प्रायः सब मुसलमान थे। वे सोमनाथ से जिरह करने लगे, "उसकी किस–किससे मित्रता थी?"

"मेरे इल्म में किसी से भी नहीं।"

"घर में कौन–कौन से पुरुष रहते हैं?"

"सब बच्चे ही हैं।"

"पड़ोस में?"

"एक विष्णुनारायण और रामरक्खामल्ल हैं। उसके दो लड़के तो विवाहित है। शेष दो और भी हैं। एक दसवीं में पढ़ता है और एक पाँचवीं में।"

"उनके नाम लिखा दो।"

सोमनाथ ने नाम लिखवा दिए। फिर उससे पूछा गया, "मकान की दूसरी ओर कौन रहता है?"

"कोई नहीं। तबेला है। उसमें गाय–भैंसें बाँधी जाती हैं।"

"अगली तरफ?"

"गली है।"

"पिछली तरफ?"

"उधर भी गली है।"

इस रिपोर्ट के बाद उसी दिन मध्याह्न के समय पुलिस मुहल्ले में जाँच के लिए आ बैठी। रामरक्खामल्ल बाजार से आया तो सोमनाथ के मकान के बाहर दो खाटें लगा, पुलिस के लोग बैठे आस–पड़ोस की औरतों के बयान लिखने लगे थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवाहरलाल दसवीं श्रेणी की यूनिवर्सिटी की परीक्षा दे रहा था। प्रत्येक दिन दो परचे होते थे। एक परचा देकर आया तो पुलिस वालों ने उसको रोक लिया। रामरक्खामल्ल ने उसे वहाँ बैठे देख पूछ लिया, ''जवाहर! यहाँ क्या कर रहे हो?''

''थानेदार ने रोका हुआ है।''

''हुजूर! इसे छोड़ दीजिए। इसे खाना खाकर दूसरा पर्चा देने जाना है।''

''मुझको इसके बयान लेने हैं।''

''तो पहले ले लीजिए! नहीं तो हर्जा हो जाएगा इसका।''

''मैं तुम्हारा नौकर हूँ क्या?'' हैड कांस्टेबल ने डाँटकर कहा।

इस पर रामरक्खामल्ल ने बहुत ही नम्रता से हाथ जोड़कर कहा, ''हुजूर! इस लड़के को इम्तिहान देने के लिए जाना है। इसको दस मिनट में खाली कर दीजिए, आपकी बहुत मेहरबानी होगी।''

''मेहरबानी के बच्चे! तुम कौन हो?''

''मैं इस लड़के का बाप हूँ।''

''तुम कोई शोहदे मालूम देते हो। कान फटे हैं, साधु रहे हो?''

''जी हुजूर!'' अब रामरक्खामल्ल के माथे पर त्योरी चढ़ रही थी, ''मगर अब साधु नहीं हूँ, आपसे कह रहा हूँ कि यह लड़का दस मिनट से अधिक नहीं बैठेगा।''

हैड कांस्टेबल ने सामने खड़े पुलिस के सिपाही को कहा, ''हथकड़ी लगा दो इस साधु के बच्चे को।''

''तो चलो कोतवाली। मैं चलने को तैयार हूँ। यहाँ तुम मुझको रोक नहीं सकते।''

''मैं तुमको चौबीस घण्टे तक हवालात में रख सकता हूँ।''

''मगर यह तो हवालात नहीं है। तुम्हारे पास मेरे लिए वारंट भी नहीं है। साथ ही तुम्हें वारंट जारी करने का अधिकार नहीं है।''

जब सिपाही आगे आया तो रामरक्खामल्ल ने उसको कह दिया, ''वहीं रहो मुझे हाथ लगाया तो फौजदारी हो जाएगी।''

कांस्टेबल इस आदमी को निधड़क उसे डाँटते देख विचार करने लगा कि अब क्या करे? यह ठीक था कि वह उसको तुरन्त कोतवाली ले जा सकता था। थाने पर ले जाकर उसको हवालात में बंद कर सकता था। वह भी चौबीस घण्टे से अधिक नहीं। वह भाग नहीं रहा था। इस कारण हथकड़ी भी लगा नहीं सकता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा बैठो।" हैड कांस्टेबल ने कह दिया।

रामरक्खामल्ल ने बैठते ही जवाहर से कह दिया, "तुम जाओ। भोजन करो और इम्तिहान देने चले जाओ। मैं तुम्हारा जामिन यहाँ बैठा हूँ।"

"नहीं, यह नहीं जा सकता।" पुलिस अधिकारी ने कहा।

"तुम इसको रोक भी नहीं सकते। मैं दस हजार रुपए के हर्जाने का दावा कर दूँगा और यह सब वर्दी आदि भी नीलाम हो जाएगी।"

इस पर तो पुलिस अधिकारी ने रामरक्खामल्ल के मुख पर चपत मारने को हाथ उठाया, परन्तु रामरक्खामल्ल ने उसकी कलाई पकड़ ली और इतने जोर से दबाई कि वह पीड़ा अनुभव करने लगा।

इस समय तक औरतों ने हल्ला कर दिया। बाजार से दो–तीन गली के रहने वाले पुरुष वहाँ आ पहुँचे। पुलिस के गली में आते ही उनकी घरवालियों ने बुला भेजा था। रामरक्खामल्ल ने झटका देकर पुलिस अफसर को उसी खाट पर धकेल दिया जिस पर वह पहले बैठा हुआ था।

सोहनलाल और राधेलाल भी आने वालों में थे। सोहनलाल ने पूछ लिया, "भापा! क्या बात है?"

"यह जवाहरलाल को यहाँ बैठाए हुए था। मैंने कहा कि उसको इम्तिहान देने के लिए जाना है, उसे जाने दो। उसके बयान लेने हों तो पहले ले लो। पर यह मानता ही नहीं। मैंने मिन्नत की तो यह मारने को लपका।"

हेड कांस्टेबल ने एक सिपाही को कहा, "जाओ, कोतवाली से दो दर्जन लट्ठबन्द सिपाही ले आओ। यह बदमाशों का मोहल्ला मालूम होता है। इनको सीधा करना होगा।"

सोहनलाल को यह बात पसन्द नहीं आई। उसने वहाँ पर खड़ी सब औरतों को कह दिया, "तुम सब अपने–अपने घर चली जाओ। यहाँ पर खड़ी क्या कर रही हो? और देखो, भीतर से अपने–अपने द्वार बन्द कर लो।"

औरतें कुछ झिझक रही थीं। इस पर रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "चली जाओ न यहाँ से।"

सबसे पहले लेखवती उठी और अपने घर की ओर चल पड़ी। उस समय, जब रामरक्खामल्ल आया था, उसी के बयान हो रहे थे। लेखवती के उठकर जाते ही शेष औरतें भी उठकर जाने लगीं। इस बीच जवाहरलाल पहले ही चला गया था। इस पर रामरक्खामल्ल ने कहा, "सोहनलाल! मैं समझता हूँ कि हम सब बदमाश स्वयं ही कोतवाली चले चलें?"

सोहनलाल और राधेलाल भी रामरक्खामल्ल के आशय को समझ गए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए सोहनलाल ने हैड–कांस्टेबल से कह दिया, "खाँ साहब! पुलिस बुलवाने की कोई आवश्यकता नहीं। हम खुद ही चलते हैं। तुम अब वहीं आ जाओ।"

वे सब गली के बाहर को चले तो हैड–कांस्टेबल ने कह दिया "सोमनाथ! तुम तो यहाँ ठहरो। हम तुम्हारे कहने पर ही तो जाँच करने के लिए आए हैं।"

"हम भी भापा रामरक्खामल्ल के साथ ही जायेंगे।" सोमनाथ ने भी कह दिया।

विष्णुनारायण जब खाना खाने के लिए घर आया तो हैड–कांस्टेबल अपने साथ आए दो सिपाहियों के साथ खड़ा हुआ अभी विचार कर रहा था कि कोतवाली चलकर इनको पिटवा दे तो ठीक रहेगा। विष्णुनारायण अपने घर में जाने ही लगा था कि पुलिसमैन ने आवाज दे दी, "लाला!" और वह रुक गया।

विष्णुनारायण ने कह दिया, "क्या मैं भी कोतवाली चलूँ?"

विष्णु गली के बाहर से ही रामरक्खामल्ल और दूसरे से मिल पूर्ण बात को जान चुका था। वह घर खाना खाने के लिए आया था और उसके बाद डिप्टी कमिश्नर की अदालत में एक शिकायत लिखकर देने कचहरी जाने का विचार कर रहा था।

इस पर हैड–कांस्टेबल समीप आ गया और बोला, "तुम सब बदमाशों को ठीक करने के लिए यहाँ पुलिस बैठानी पड़ेगी।"

"उसके लिए मैं खुद ही डिप्टी कमिश्नर के इजलास में अर्जी करने जा रहा हूँ।"

"क्या?"

"हुजूरेआली! वर्दी पहनने से कोई अफसर नहीं बन जाता। कानून आपको अफसर बना रहा है और कानून मोहल्लेवालों को बिना प्रमाण बदमाश कहने की इजाजत नहीं देता। समझ गए हो न?"

इतना कह विष्णुनारायण घर में चला गया। हैड–कांस्टेबल ने मैदान खाली देखा, तो वह भी विवश हो कोतवाली को चल पड़ा। वह मन–ही–मन पेचो–ताव खा रहा था कि यह किस प्रकार का अम्ल है और वह इसका किस प्रकार से विरोध करे।

वह गली से बाहर आया तो गली के बाहर से एक और आदमी गली में आता दिखाई दिया। उसने पुलिस हैड–कांस्टेबल को देखते ही कह दिया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"हुजूर! मैं एक और बदमाश आ गया हूँ। मैं भी कोतवाली चल रहा हूँ। मुहल्ले–भर के बदमाश वहाँ इकट्ठे हो रहे हैं।"

"ठीक है, आ जाओ। सबको सीधा कर दूँगा।"

"अभी कपड़े बदलकर आता हूँ।"

पुलिस अधिकारी की समझ में बात अभी भी नहीं आई। जब वह कोतवाली पहुँचा तो लगभग सौ से ऊपर आदमी वहाँ पहले ही मौजूद थे और रामरक्खामल्ल दो अन्य आदमियों के साथ थानेदार के कमरे में खड़ा थानेदार को बतला रहा था, "एक हैड–कांस्टेबल कूचा हिंगना में किसी मुआमले में तशखीस करने गया हुआ है। उसने यहाँ से दो दर्जन पुलिस वालों को बुलाया था, जिससे मुहल्लेवालों को, जिन्हें वह बदमाश समझता है, पकड़कर यहाँ ला सके। मुहल्लेवालों ने यह मुनासिब समझा है कि खुद ही यहाँ हाजिर हो जायें।"

"तो उसको आ जाने दो। इतनी देर बाहर बैठो।" थानेदार ने कह दिया।

"वह तो ठीक है हुजूर! मगर हम हाजिर होकर रिपोर्ट लिखाना चाहते थे और मुन्शी की लिखने से इनकारी है।"

अब थानेदार की समझ में आया कि बात इतनी सरल नहीं, जितनी वह समझ बैठा था, उसने अब सतर्क हो पूछ लिया, "क्या लिखाना चाहते हो?"

"यही कि एक हैड–कांस्टेबल आज ग्यारह बजे के करीब कूचा हिंगना में पहुँचा और वहाँ घरों से औरतों को बुला–बुलाकर उनको कहने लगा कि मुहल्ले के बदमाशों को सीधा करने आया हूँ।"

"पुलिस के खिलाफ रिपोर्ट नहीं लिखी जा सकती।"

"हुजूर! वह पुलिस की वर्दी में जरूर था, मगर काम पुलिस का नहीं कर रहा था। जो कुछ बद–जबानी वह वहाँ पर कर रहा था, वह किसी पुलिस के इख्तियार से बाहर की बात थी। मैं तो यह कह रहा हूँ कि यदि आप भी इस रिपोर्ट को लिखाने की इजाजत नहीं देते तो हमें डिप्टी–कमिश्नर बहादुर के सामने हाजिर होना पड़ेगा।"

थानेदार ने कह दिया, "बाबा! जरा ठहरो। अभी तुम्हारी उस अफसर से सुलह करवा देता हूँ।"

इस समय हैड–कांस्टेबल वहाँ आ पहुँचा। थानेदार के कमरे के बाहर एक सौ के लगभग आदमी खड़े थे और उनकी संख्या बढ़ रही थी। थानेदार उठकर कमरे से बाहर आ गया और वहाँ के लोगों को इस प्रकार इकट्ठे होते देख हैड–कांस्टेबल से बोला, "करीमबख्श! यह क्या मुआमला है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हुजूर!" हैड–कांस्टेबल ने सावधान खड़े होकर कहा, "यह कनफटा बदमाश है और इसने इन लोगों को इकट्ठा कर मुझको बहुत तंग किया है।"

"क्या तंग किया है?" थानेदार ने पूछा।

"तशखीस में रुकावट डाली है।"

इस पर थानेदार ने रामरक्खामल्ल की ओर प्रश्न–भरी दृष्टि में देखा तो रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "यह तो अदालत फैसला करेगी कि बदमाश मैं हूँ या कि यह है। मैं तो अब केवल रिपोर्ट लिखवाने के लिए आया हूँ। ये सब लोग भी यहाँ रिपोर्ट लिखवाना चाहते हैं।" यह कहकर उसने अपने साथ आए हुए लोगों की ओर संकेत किया, "और मैं बदमाश अपने आपको पुलिस की हिरासत में देने के लिए ही आया हूँ, जिससे इन खाँ साहब को तशखीस करने में रुकावट न पड़े।"

थानेदार ने रामरक्खामल्ल की निर्भीक आँखों में देखा और फिर करीमबक्श को कहा, "तुम कमरे में चलो। तुमसे वहाँ बात करूँगा।"

इसके बाद उसने रामरक्खामल्ल के समीप खड़े संतराम को सम्बोधित कर पूछा, "तुम भी क्या रिपोर्ट लिखाने आए हो?"

"मेरी पत्नी श्यामदेई कुएँ पर जल भर रही थी कि यह अफसर उसको बुलाकर डाँटने लगा। उसने अपनी लड़की को दुकान पर भेज मुझे बुलवाया तो मैं वहाँ जा पहुँचा। मैं अभी वहाँ खड़ा ही हुआ था कि यह बोला, 'यह मुहल्ला ही सब बदमाशों का है। सबको सीधा करना होगा।' फिर इसने एक सिपाही से कहा, 'जाओ। दो दर्जन लट्ठबंद पुलिस वालों को बुला लाओ।' इस पर हमने स्वयं ही पहुँचकर अर्जी करने का फैसला किया है।"

थानेदार ने तीसरे से पूछ लिया, "तुम क्या चाहते हो?"

"यह लाला संतराम मेरा बहनोई है। मैं चाहता हूँ कि यह अपनी रिपोर्ट लिखा दे तो मैं अदालत में दावा दायर कर दूँ। सबसे पहले तो इस अफसर की बदलवाने की दर्खास्त दूँगा, जिससे यह और बदतमीजी न कर सके। मेरी बहिन की इसने बेइज्जती की है, इसलिए मैं इस पर मानहानि का दावा भी करना चाहूँगा।"

"और तुम?" थानेदार ने एक अन्य से पूछ लिया।

"मैं तो गवाह हूँ, जिसने यह सब घटना अपनी आँखों से देखी है और वकील साहब के साथ कचहरी में गवाही देने के लिए जा रहा हूँ।"

थानेदार ने कहा, "अगर मैं सबको यह इत्मीनान दिला दूँ कि सोमनाथ की लड़की के अगवा (अपहरण) के मुआमले में तशखीस पर किसी अन्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अफसर को मुकर्रर कर दूँगा तो क्या आप इस झगड़े को छोड़ सकते हैं?"

उत्तर सोहनलाल के साले वकील फकीरचन्द ने दिया, "चाहिए तो यही था कि रिपोर्ट लिख ली जाती और इस अफसर को अदालत में सफाई देने का मौका दिया जाता, मगर आपके कहने को हम इनकार नहीं कर सकते।"

"तो जाओ। हमको दूसरा काम करने दो। यह तशखीस अब कल होगी।"

रामरक्खामल्ल आदि सब लौट आए और सबने यही समाझा कि जमात करामात की जीत हुई है।

वकील फकीरचन्द कुछ चिन्तित था। वह पुलिस वालों के इतनी सुगमता से मान जाने पर विश्वास नहीं करता था। घर लौटते हुए उसने रामरक्खामल्ल से कहा, "इस पर भी डिप्टी–कमिश्नर बहादुर की इजलास में एक दरख्वास्त दे ही देनी चाहिए।"

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, "फकीरचन्द! यह हो जाएगा। विष्णुनारायण इस समय अदालत में अर्जी लिखवा रहा होगा।"

"तो मैं वहाँ जाता हूँ।"

: 17 :

डिप्टी कमिश्नर की अदालत में अर्जी दी गई और महकमे की ओर से तहकीकात का हुक्म हो गया। वकील फकीरचन्द ने उस अर्जी में इतना और लिखा दिया, "मेरा भाई और मुहल्ले के लोग इस घटना की रिपोर्ट लिखाने कोतवाली गए हुए थे, मगर मुन्शी ने रिपोर्ट लिखने से इनकार कर दिया है।"

फकीरचन्द ने विष्णुनारायण को यह भी समझा दिया कि जब कोई थानेदार से रोबकार लेकर आए कि कोतवाली में पहुँचकर बयान दो तो लिखकर अथवा मौखिक रूप में कुछ न देना। यह कह देना कि मुआमला अब अदालत में चला गया है, हम पुलिस में कोई बात नहीं करना चाहते। अब जो कुछ भी होगा, अदालत के मार्फत ही होगा। "देखो विष्णु!" फकीरचन्द का कहना था–"थानेदार तुमसे कुछ लिखाना चाहेगा और तुम लिखकर नहीं देना। साथ ही डिप्टी कमिश्नर के हुक्म से महकमे की जाँच होनी है और तुम महकमे के आदमी नहीं हो।"

विष्णुनारायण जब घर पहुँचा तो रामरक्खामल्ल यह सुन कि अर्जी हो गई है, संतोष अनुभव करने लगा।

इस समय तक रामरक्खामल्ल को सोमनाथ की लड़की साधना के घर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से लापता हो जाने की सूचना मिल गई थी। उसने सोमनाथ को कुछ भर्त्सना के भाव में कहा, ''सोमनाथ! तुमको मुझसे यह बात, आज से एक मास पहले कहनी चाहिए थी। मैं तुम्हारी लड़की की बदनामी नहीं होने देता। लड़की को भागने की भी आवश्यकता अनुभव न होती।''

''भापा! मैं बहुत शर्मिन्दा हूँ। मुझको तो उस हकीम के बच्चे ने ही धोखा दिया है।''

''अच्छी बात है। अब विचार करेंगे कि लड़की कहाँ हो सकती है? मुझे तो डर है कि कहीं रावी में न डूब मरी हो।''

''मर गई तो ठीक है, परन्तु यदि किसी के साथ भाग गई है तो मुझको बहुत दुःख होगा।''

रामरक्खामल्ल चुप रहा। वह स्वयं अपने मन में यह निश्चय नहीं कर सका था कि अब उसको क्या करना चाहिए। दिन–पर–दिन व्यतीत होने लगे और साधना का कोई पता नहीं चला। उसका शव भी नदी से प्राप्त नहीं हुआ।

पुलिस की बात शान्त हो गई। महकमे की जाँच क्या हुई, किसी को पता भी नहीं चला। हाँ, उस दिन के बाद साधना के विषय में उस मुहल्ले में कोई भी जाँच करने के लिए नहीं आया। वास्तव में यह जाँच का विषय था भी नहीं। जवाहरलाल परीक्षा से अवकाश पा गया तो रामरक्खामल्ल ने उससे पूछ लिया, ''कैसे किए हैं पर्चे?''

''बहुत अच्छे।'' जवाहर का उत्तर था।

''अब बताओ, क्या करना चाहते हो?''

''मेरा विचार था कि इम्तिहान के बाद मैं साधना से विवाह कर लूँगा। इसलिए मेरा और आगे पढ़ने को चित्त नहीं करता था। परन्तु अब तो विवाह करने की बात रही नहीं। आप कहें तो मैं पढ़ूँगा।''

''पढ़ाई क्या बेकार आदमी के करने की वस्तु है? अब विवाह हो नहीं रहा, इस कारण बेकार हो और मेरे कहने पर पढ़ोगे? देखो जवाहर! मैं पढ़ाई को इतनी व्यर्थ की वस्तु नहीं समझता। यदि तुम्हारा चित्त विद्या–लाभ करने को करता है तो उस दिशा में सोचा जा सकता है। अन्यथा जीवन का यह अध्याय समाप्त समझकर दूसरे काम की बात पर विचार करो। पढ़ाई पढ़ाई के लिए है। बेकारी में दिल बहलाने के लिए नहीं।''

''पढ़ने से क्या होगा भापा?''

''पढ़ने से बुद्धि का विकास होता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो मैं भी इसीलिए पढ़ूँगा।"

"तो पहले यह समझ लो कि पढ़ाई और विवाह का कुछ अधिक सम्बन्ध नहीं है। हाँ, पढ़ाई और स्कूल–कॉलेज का घना सम्बन्ध है। मेरा मतलब है कि क्या पढ़ा जाए, जिससे पढ़ाई का उद्देश्य पूर्ण हो सके, यह एक विचारणीय बात है।"

"क्या पढ़ सकता हूँ मैं?"

"तुम वह पढ़ो, जिससे तुम्हारा इन्द्रियों पर संयम बढ़े। तुम्हारी बुद्धि ठीक प्रकार से विचार करना सीखे और तुम्हारे शरीर में स्फूर्ति और सतर्कता बनी रहे।"

"और खाने–पाने के लिए?"

"खाने–पीने की कुछ अधिक कठिनाई अनुभव नहीं होगी। हाँ, बेकार खर्चे के लिए धन की उपलब्धि में कठिनाई अवश्य होती है।

"जवाहर! मैं चार आना से अधिक खर्च नहीं करता। इसमें ढाई आने के लगभग मैं खर्च करता हूँ, एक आना तुम्हारी माँ को देता हूँ, एक आना तुम नित्य जेब खर्चा लेते रहे हो। तुम क्या खाते रहे हो, मैं नहीं जानता; परन्तु मैं तो दो आने में ही तृप्त हो जाया करता हूँ। तुम्हारी माँ तो एक आना भी व्यथ नहीं करती। शेष रही भोजन–वस्त्र की बातें। उस पर सब मिलाकर कुल तीस रुपये महीने भर में खर्च होते हैं।

"मेरे अकेले की कमाई चार–पाँच रुपया रोज है। औसतन पिछले दस वर्ष से मैं एक सौ रुपया प्रतिमास जमा करता रहा हूँ। इस समय मेरे हिसाब में दुकान में चौदह हजार रुपये से ऊपर जमा है। यदि तुम मेरा हाथ बँटाओगे तो हमारी कमाई आठ–दस रुपये तक हो जानी सहज है। इस कारण मैं कहता हूँ कि कमाई की चिन्ता नहीं। चिन्ता खर्चे की है। वह तुम्हें निश्चित सीमा से अधिक पढ़ने नहीं देना चाहिए।"

"तो फिर मेरे आगे पढ़ने की आवश्यकता नहीं?"

"मैंने यह नहीं कहा। मैं पढ़ाई करनी, जीविका के लिए आवश्यक नहीं समझता। मैंने इसकी आवश्यकता में कारण बता दिया। उस पढ़ाई के लिए कॉलेज में भरती होने की भी आवश्यकता नहीं होगी। वहाँ पर पढ़ाई के उद्देश्य को न तो समझा जाता है, न ही बताया जाता है।

"कल से तुमको संस्कृत पाठशाला, जो रत्नचंद के मन्दिर में लगती है, जाना चाहिए। संस्कृत भाषा का ज्ञान हो जाएगा तो मैं तुमको उपनिषदादि शास्त्र पढ़ाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इनके पढ़ने से क्या होगा?"

"तुम्हारे ज्ञान–चक्षु खुलेंगे।"

जवाहरलाल इस ज्ञान–चक्षु के खुलने की बात सुन विस्मय में मुख देखता रह गया। वह समझ नहीं सका था कि दस वर्ष तक स्कूल में पढ़ने से उसके ज्ञान–चक्षु नहीं खुले क्या? रामरक्खामल्ल ने आगे और कह दिया, "केवल ज्ञान–चक्षु खुलने से कुछ नहीं बनेगा। साथ ही संयम, स्वभाव में धैर्य, व्यवहार में सभ्यता और मन में संतोष भी उत्पन्न होना चाहिए।"

"तो ये गुण मुझमें नहीं हैं क्या?"

"यदि ये गुण तुममें होते तो तुम साधना से कुछ न करते। उसका परिणाम तुम देख रहे हो। प्रथम तो पड़ोसी की लड़की को बहिन मानकर उसका आदर करते। यदि उससे विवाह की बात हो गई थी तो इस बात पर विवाह हो जाने तक संतोष करते और संयम से रहते। तुम जानते थे कि तुम उससे मिथ्या व्यवहार कर रहे हो। तभी तो अपने इस व्यवहार को अपने माता–पिता से भी चोरी रखते रहे हो।"

"तो ये सब बातें संस्कृत जानने से आ जायेंगी?"

"ये बातें केवल पढ़ने मात्र से नहीं आ जातीं। इनके लिए तुमको योग, ध्यान, तपस्या करने की आवश्यकता है। वह मैं तुमको सिखाऊँगा।"

"तो आप वह सब करते हैं?"

"हाँ, मैं प्रातः तीन बजे उठकर शौच, स्नानादि से छुट्टी पा दो घण्टे तक प्राणायाम, समाधि और चिन्तन करता हूँ। साढ़े पाँच बजे मैं मंदिर में जल चढ़ाने के लिए जाता हूँ। छः बजे हवन–संध्या परिवार के सदस्यों में बैठकर करता हूँ, फिर एक घण्टा स्वाध्याय करता हूँ। तदनन्तर मैं भ्रमण के लिए निकल जाया करता हूँ।"

"मुझको किस समय सिखाया करेंगे?"

"प्रातःकाल ही।"

"उस समय तो मेरी नींद नहीं खुला करेगी?"

"अभ्यास से खुलने लग जाएगी।"

"परन्तु भापा! आपकी बात मेरी समझ में नहीं आती। आप स्वामी दयानन्द के गुणानुवाद गाते थकते नहीं, परन्तु उनके कहने के विपरीत शिवजी पर जल चढ़ाने जाते हैं, बावली साहब में ग्रन्थ साहब पर फूल चढ़ाते हैं, सुथरों की छड़ी के सामने भी माथा टेकते हैं।"

"इस बात को तुम अभी समझ नहीं सकोगे। पहले कुछ वर्ष योग–ध्यान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
का अभ्यास कर लो तो यह बातें तुम्हारी समझ में आने लगेगी।

"देखो! एक बात तुमको बताता हूँ। समाधि का अर्थ है अपनी पूर्ण शक्ति को केन्द्रित कर जीवन–रहस्य को समझने का यत्न करना, तब सत्य ज्ञान हो जाता है। यह समाधि दो प्रकार की है। एक सविचार और दूसरी निर्विचार। सविचार समाधि से प्रकृति की सूक्ष्म बातों का ज्ञान होता है और निर्विचार समाधि का फल अध्यात्म ज्ञान की प्राप्ति है।

"ऐसा योगशास्त्र में लिखा है–

एतयैव सविचारा निर्विचारा च सूक्ष्मविषया व्यख्याता।।
सूक्ष्म विषयत्व चालिंगपर्यवसानम्।।
ताः एवं सबीजः समाधिः।।
निर्विचार वैशारद्यऽध्यात्म प्रसादः।

"जब समाधि सफल होती है तो मनुष्य में एक विशेष प्रकार की बुद्धि उत्पन्न हो जाती है, जिसको ऋतम्भरा कहते हैं। इससे इन्द्रियों से जाने तथा अनुमानादि से प्राप्त हुए ज्ञान में भी विशेषता प्राप्त होती है। इस ऋतम्भरा प्रज्ञा के प्राप्त होने से एक नवीन प्रकार के संस्कार उत्पन्न होते हैं। ये संस्कार इन्द्रिय–ज्ञान और अनुमानादि से उत्पन्न संस्कारों से भिन्न प्रकार के होते हैं। यह निर्बीज–समाधि को उत्पन्न करने वाले हैं। निर्बीज का अर्थ है कि ये संस्कार साधारण संस्कारों की भाँति सांसारिक कर्मों का बीज नहीं बन सकते।

"इसको इस प्रकार लिखा है–

ऋतम्भरा तत्र प्रजा।
श्रुतानुमाप्रज्ञाभ्यामन्यविषया विशेषार्थत्वात्।
तज्जः संस्कारोऽन्यसंस्कार प्रतिबन्धौ समाधिः।
तस्यापि निरोधे सर्वनिरोधान्निबंजिः।

"जिन मनुष्यों के संस्कार वही हैं जो इन श्रवणादि इन्द्रियों और अनुमान आदि प्रमाणों से प्राप्त होते हैं, वे तो मूर्ति–पूजन करते समय यह समझते हैं कि भगवान् उसमें ही है और वह पूजन से प्रसन्न हो रहा है। वे बेचारे भूल में फँसे यही समझते हैं किं उस पूजन से उनको ऋद्धि–सिद्धि तथा मोक्ष मिलने वाला है। परन्तु ऋतम्भरा प्रज्ञा वाला मनुष्य यह जानता है कि शिवलिंग एक पत्थर का टुकड़ा है। इस पर भी यदि वह उसका पूजन करता है तो इस कारण नहीं कि उससे भगवान प्रसन्न होता है प्रत्युत इसलिए कि इससे आत्मोन्नति होती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

"क्या आत्मोन्नति हुई है आपमें इससे?"
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्लामल्ल हँस पड़ा। उसने हँसते हुए कहा, "तुमको विदित नहीं क्या, कि उस दिन जब पुलिस साधना के विषय में जाँच करने आई थी और तुम्हारे विषय में उनसे झगड़ा हो गया था, तो कैसे देखते ही देखते डेढ़ सौ व्यक्ति वहाँ कोतवाली में एकत्रित हो गए थे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह उस आत्मोन्नति के कारण था जो शिवालय अथवा गुरुद्वारे में जाने से मुझमें हुई है।

"मन्दिर, मस्जिद, गिरजाघर में एकत्रित होना एक सामाजिक कृत्य है। इससे लोक–संग्रह होता है और यही उस दिन मैं कोतवाली में कर सका था। इस दिन के लोक–संग्रह का एक परिणाम यह भी हुआ कि थानेदार मुझको मुहल्ले और बाजार का चौधरी समझने लगा है और मैं उसको सन्मार्ग दिखाने का यत्न करता रहता हूँ।"

"तो आपके गुरुद्वारे में गुरु–ग्रन्थ साहब पर फूल चढ़ाने से परमात्मा प्रसन्न नहीं होते?"

"परमात्मा क्या इतनी क्षुद्र भावना और आत्म–श्लाघा वाला है कि गुरु ग्रन्थसाहब पर दो पुष्प चढ़ा देने से प्रसन्न हो जाता है? वह तो निरन्तर निष्काम भाव से अपना कर्त्तव्य पालन करने से प्रसन्न होता है। इसमें दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। एक तो कर्त्तव्य का ज्ञान और दूसरे कर्त्तव्य पालन में लाभ–हानि का विचार छोड़ देना। ये दोनों बातें योग, ध्यान, तपस्या, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान से उत्पन्न होती है।

"जब महर्षि स्वामी दयानन्द डिब्बी बाजार वाली बावली से निकाले गए तो वे रत्नचन्द डाढ़ीवाले की सराय में चले गए। वहाँ मैं उनसे मिलने के लिए गया था। बातों–ही–बातों में मैंने उनसे कहा था, 'महाराज! यहाँ तो मूर्ति–पूजा का खण्डन नहीं करना चाहिए।'

"वे पूछने लगे, 'क्यों?'

"मैंने बताया, 'यह सनातन धर्मावलम्बियों का गढ़ है। वे इस मन्दिर के सामने बैठकर आपको, भक्तजनों की निन्दा करते देख नहीं सकेंगे।'

"उनका कहना था–'तो मैंने कभी किसी भक्तजन की निन्दा की है? मैं केवल यह कहता हूँ कि मूर्ति–पूजा से न तो परमात्मा प्रसन्न होते हैं, न ही तुमको अपने कर्त्तव्य का ज्ञान होता है। मैंने यह भी कहा था कि मूर्ति भगवान नहीं है। भगवान् तो सर्वव्यापक है। इसको भगवान् माननेवाले अन्धकार में ही विचरते हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर भी स्वामीजी ने पहले दिन तो हिन्दू समाज की विधर्मियों से रक्षा के लिए अपना प्रवचन दिया। उन्होंने ईसाइयों के धर्म की समीक्षा की परन्तु अगले दिन एक ब्राह्मण ने स्वामीजी के प्रवचन के उपरान्त पूछ लिया, 'यह सामने शिवालय में शिव की मूर्ति स्थापित है। आप इस पर जल चढ़ाने नहीं जाते?'

" 'जल चढ़ाने से क्या होगा?'

" 'भगवान प्रसन्न होते हैं।'

" 'किसी ने प्रसन्न होते देखा है? भगवान क्या प्यासे हैं जो तुम्हारे चुल्लू भर जल से तृप्त हो तुमको आशीर्वाद देने लगेंगे। इस पत्थर के टुकड़ों को भगवान मानने लगे तो–

'अन्धन्तमः प्रविशन्ति योऽविद्यामुपासते।'

"स्वामीजी के ऐसा कहने पर प्रश्नकर्ता ने हल्ला कर दिया, 'यह नास्तिक इस मन्दिर को भ्रष्ट कर रहा है।' इस पर स्वामी जी पर ईंटें बरसने लगीं। ऐसा प्रतीत होता था कि कुछ लोग उस सभा में झगड़ा करने का निश्चय करके ही आए थे।

"उसी रात स्वामीजी को वहाँ से चले जाने के लिए आदेश हो गया। अगले दिन स्वामीजी का व्याख्यान ब्रह्म–समाज में हुआ। वहाँ भी एक–दो दिन तो शान्ति से निकले, फिर किसी शरारती ने प्रश्न कर दिया, 'भगवान तो एक है, और यह खुदा, गॉड, यहोबा इत्यादि नाम उसी भगवान के हैं, जिसको हम राम, कृष्ण, विष्णु इत्यादि नामों से स्मरण करते हैं। आप क्या समझते हैं?'

"स्वामीजी न तो किसी बात से डरते थे, न ही उनका कभी किसी भी कार्य में स्वार्थ रहता था। अतः जब पूछा गया तो उन्होंने अपने विचार बताना अपना कर्त्तव्य समझा। वे कहने लगे, 'आप ठीक कहते हैं, परमात्मा एक ही है। नाम की भिन्नता के कारण वह अनेकानेक नहीं हो सकता। भिन्नता परमात्मा के नामों के कारण नहीं, प्रत्युत उसके माने जाने वाले गुणों के कारण है।

" 'उदाहरण के रूप में अंजील में लिखा है कि छः दिन तक दुनिया को बनाते–बनाते खुदा थक गया तो सातवें दिन उसने आराम किया। खुदा क्या कोई मजदूर है जो काम करता–करता थक भी जाता है? हमारी कल्पना परमात्मा के विषय में इससे भिन्न है। हम परमात्मा को सर्वज्ञ, सर्वान्तर्यामी और सर्वशक्तिमान् मानते हैं। वह किसी मजदूर की भाँति काम करता–करता थकता नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'हमारा मतभेद ईसाइयों और मुसलमानों से इसी विषय में है कि हमारी कल्पना परमात्मा तथा आत्मा के विषय में उनसे भिन्न है। यह परमात्मा के नाम के विषय में नहीं, प्रत्युत उसके गुणों के विषय में है। वह सातवें आसमान पर बैठा इस सृष्टि के विषय में जानने के लिए फरिश्ते नहीं भेजता, प्रत्युत वह तो सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी है।'

"इस प्रकार स्वामीजी, आर्य धर्म का, ईसाई तथा मुसलमानों के धर्मों से तुलना करने पर वहाँ से भी निकाले गए। ब्रह्म–समाज के मन्त्री उनसे कहने लगे कि आप यहाँ रहकर किसी भी धर्म की निन्दा नहीं कर सकते। स्वामीजी ने पूछ लिया, 'सत्य बात को कहना क्या निन्दा होती है?'

"मंत्री महोदय वकील थे और बोले, 'कानून में निन्दा उसको कहते हैं, जिससे किसी का मन दुःखी हो।

" 'अर्थात् यदि किसी वेश्यागामी को कहा जाए कि वह एक कुतिया से सम्भोग करता है और इससे उसको दुःख होगा, तो यह उसकी निन्दा हो गई?'

" 'हाँ।'

" 'चोर को चोर कहने से उसको दुःख हो सकता है?'

" 'यह भी निन्दा है और कानून से वर्जित है।'

"सब सुनने वाले हँस पड़े। हँसने वालों में एक रहीम खाँ भी थे। वह स्वामीजी की युक्ति से बहुत प्रभावित हुए और वकील को निरुत्तर और मूर्ख बनते देख बोल उठे, 'स्वामीजी महाराज! ये लोग हैं जिनके 'वैस्टिड इन्टरेस्ट' (निहित स्वार्थ) हैं। यह इस सभा के मन्त्री हैं। मन्त्री बने रहने से इनकी सभ्य समाज में प्रतिष्ठा है। अतः यह मन्त्री बने रहने में अपनी स्वार्थपूर्ति मान कोई भी, नेक–से–नेक काम भी, जो इनको मन्त्री पद से हटाने वाला हो, यहाँ नहीं होने देंगे।

" 'इसलिए आप यह स्थान छोड़कर मेरी कोठी पर चलें और अपना प्रचार–कार्य करें। मैं अपनी बातों के लिए किसी के अधीन नहीं हूँ। मैं डाक्टर हूँ। लोक कल्याण का कार्य करता हूँ और लोग स्वयं को मेरे अनुगृहीत मान मुझको फीस देते हैं। मैं निस्वार्थ भाव से लोक–सेवा करता हूँ। इससे मुझको किसी का डर नहीं। अतः आपको भी मेरी कोठी में निडर होकर कार्य करने का अवसर मिलेगा।'

"डाक्टर साहब की कोठी में मैंने एक दिन उनसे पूछ लिया, 'महाराज! यहाँ कैसे चलता है?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह कहने लगे, 'यह डाक्टर सत्य ही एक महात्मा है। यहाँ पर इसलाम पर भी चर्चा होती है। मैं निर्भीकता से इसलाम की आलोचना करता हूँ। कुछ मुसलमान डाक्टर साहब से कहने के लिए आए थे कि मुझको निकाल दें। मैं जाने के लिए तैयार भी हो गया था। मैंने डाक्टर साहब से पूछा, 'अब तो आपके भी हम–मजहब मेरे प्रवचनों पर आपत्ति करने लगे हैं। क्या मुझको यहाँ से भी चल देना होगा?'

"डाक्टर साहब का स्पष्ट कहना था–'नहीं; वे मेरे हम–मजहब भी नहीं। मेरा मजहब; (डाक्टर ने माथे पर उँगली रखकर कहा।) 'अक्ल में है। आप भी हर बात में अक्ल का प्रयोग करते हैं। इससे आप और मैं हम–मजहब हैं। इसीलिए आप मेरी कोठी में जब तक चाहें, रह सकते हैं और अपने लैक्चर दे सकते हैं।'

"देखो जवाहर! मैं भी तुममें यही प्रतिभा उत्पन्न करना चाहता हूँ। जब वह प्रज्ञा, जिसको ऋतम्भरा कहते हैं, उत्पन्न हो जाएगी तो इस संसार में तुम ऐसे रहने लगोगे, जैसे तालाब में कमल रहता है। कमल कीचड़ में से भी वह तत्त्व ग्रहण कर लेता है जो उसमें रूप, रस, गंध उत्पन्न कर देता है। यह तुम कर सकोगे।"

: 18 :

उस समय तो जवाहरलाल अपने पिता की बात से इतना प्रभावित हुआ कि वह अगले दिन पिता के उठाने पर रात के तीन बजे उठ बैठा। स्नानादि से निवृत्त हो वह मकान की छत पर आसन जमा प्राणायाम का अभ्यास करने लगा। उसी दिन वह संस्कृत पाठशाला में भरती भी हो गया। संस्कृत भाषा का नए ढंग से अध्ययन करने लगा। दयानन्द स्कूल में भी वह संस्कृत बढ़ता था परन्तु वहाँ और यहाँ में एक अन्तर था। वहाँ लघु कौमुदी कंठस्थ कराई जा रही थी और अब वह सूत्रों को ही दिन रात रटता रहता था।

सदानारायण उसको सोते–सोते भी "इति महेश्वर सूत्राणि" बड़बड़ाते सुन हँस पड़ा। अगले दिन उठकर उसने पूछ लिया, "क्या हो गया है तुमको?"

"क्यों? क्या हो गया है?"

"रात को सोये–सोये जो बड़बड़ाते रहते हो?"

"क्या बड़बड़ा रहा था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम कुछ बोलते हो जो मैं नहीं जानता। कुछ अ, इ, उ, ऋ, लृण आदि करते रहते हो।"

"मैं संस्कृत पढ़ रहा हूँ। कौमदी के सूत्र कंठस्थ कर रहा हूँ।"

"रात को सोये–सोये भी?"

"हाँ।"

"तो बहुत कठिन हैं वे?"

"हाँ।

"फिर मैं नहीं पढ़ूँगा।"

"तुमको कौन पढ़ाता है? श्याम दादा कहते थे कि तुम कॉलेज में जाकर विज्ञान पढ़ोगे। विज्ञान पढ़ने वाले संस्कृत नहीं पढ़ते।"

"यह 'दंत कटा–कटेति' तो नहीं करना होगा न।"

यह पहला व्यंग्यात्मक विरोध था जो जवाहर को सुनना पड़ा। उसके लघु–कौमुदी के स्मरण करने को 'दंत कटा–कटेति' माना जा रहा था। जवाहर यह भी सोचता था कि सदा की वह आलोचना उसकी अपनी नहीं होगी। उसको विश्वास था कि वह बात श्याम दादा की ही हो सकती है। श्यामनारायण कई बार कह चुका था कि बड़े भापा की पढ़ाई–लिखाई किसी भी काम की वस्तु नहीं है। उससे कोई नौकरी नहीं पा सकता।

परन्तु इससे भी तीव्र विरोध दयानन्द स्कूल के एक अध्यापक महोदय का हुआ। जवाहरलाल उन पंडितजी से हिन्दी और संस्कृत पाँचवीं श्रेणी तक पढ़ता रहा था। पंडितजी का नाम लक्ष्मीचन्द ज्ञानाचार्य था। यह ज्ञानाचार्य की उपाधि उसी पाठशाला की शिक्षा पूर्ण करने की उपाधि थी, जिसमें जवाहरलाल भरती हुआ था।

एक दिन जवाहरलाल लघुकौमुदी और पंचतन्त्र बगल में दबाये हुए शाहालमी दरवाजे से बाहर को जा रहा था कि पंडित लक्ष्मीचन्द दरवाजे में प्रवेश करते हुए मिल गए। जवाहरलाल ने नमस्कार किया तो पंडित जी ने पूछ लिया, "परचे कैसे किए हैं, जवाहर?"

"बहुत अच्छे हो गए हैं पंडितजी!"

"अब किस कॉलेज में प्रवेश पाने का विचार है?"

"मैं रत्नचन्द के मन्दिर वाली संस्कृत पाठशाला में संस्कृत पढ़ने लगा हूँ।"

"किस लिए?"

जवाहरलाल मुस्कराया और बोला, "विद्याध्ययन के लिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो जो कुछ अब तक पढ़ते रहे हो, वह अविद्या थी?"

"तो क्या वह विद्या थी?"

"हाँ! देखो, मैं भी इस विद्यालय में संस्कृत पढ़ा हूँ, जिसमें तुम भरती हुए हो। मैंने ज्ञानाचार्य की उपाधि प्राप्त की है। ज्ञानाचार्य संस्कृत में एम.ए. के बराबर है। इस पर भी मुझको वेतन मिलता है पैंतीस रुपये और जो संस्कृत में एम.ए. पास हैं, वे कॉलेज में पढ़ाते हैं और पाते हैं एक सौ पचास रुपये मासिक। बताओ, विद्या वह है या यह? तुम्हारे जैसा योग्य विद्यार्थी यदि वजीफा पा जाए तो आश्चर्य नहीं। इस पाठशाला में भला क्या पाओगे? निर्धन माता–पिता के लड़के अथवा जो स्कूल कॉलेज की फीस नहीं दे सकते, वे ही इस पाठशाला में पढ़ने के लिए जाते हैं।

"मेरे पिताजी, 'जौड़े–मोरी' में पांधा थे। उनकी समझ में यही आया कि मैं लोगों के घर से 'हंदे' माँग–माँग कर संतोष कर लूँगा। पढ़ने के बाद मैं यही काम करने लगा। पचास–साठ 'हंदे' नित्य मिल जाते थे। उनमें से जो साफ–सुथरे और नरम होते थे, हम खा लेते थे। माता–पिता और मैं दस–बारह 'हंदे' ही खा सकते थे। शेष पचास के लगभग हम सुखाकर गौओं के खाने के लिए बेच दिया करते थे। इस प्रकार हमें दो आने रोज मिल जाते थे।

"पर इन दो आनों से मेरा पेट नहीं भरा। इस समय इस स्कूल में एक संस्कृत अध्यापक का स्थान रिक्त हुआ तो मैंने अर्जी भेज दी। मुझको मुलाकात के लिए बुलाया गया। मेरे साथ तीन और प्रार्थी थे। एक बी.ए. संस्कृत में था। एक काशी के पढ़े दर्शनाचार्य थे और एक मैं।

"भेंट करने के लिए तीन निरीक्षक थे। उनमें एक तो स्कूल के ही हैडमास्टरजी थे। वे संस्कृत भाषा से सर्वथा अनभिज्ञ थे। दूसरे कॉलेज के संस्कृत के प्रोफेसर थे। तीसरे मैनेजिंग कमेटी के सदस्य थे। बी.ए. वाला तो बेचारा एक वाक्य भी संस्कृत में बोल नहीं सका। मैं और काशी का वह पंडित–दर्शनाचार्य धारा–प्रवाह बोल सकते थे। परन्तु संस्कृत के प्रोफेसर की सम्मति में सर्वप्रथम दर्शनाचार्य, द्वितीय स्थान पर मैं और बी.ए. वाला सर्वथा अयोग्य माना गया। इस पर भी प्राथमिकता बी.ए. पास को दी गई। अस्वीकृति में मुझको और यदि मैं भी न मानूँ तो दर्शनाचार्य को नौकरी देने का निर्णय हुआ। शर्त यह थी कि बी.ए. पास को साठ रुपये और मुझको अथवा दर्शनाचार्य को तीस रुपये मासिक वेतन मिलेगा।

"बी.ए. पास ने साठ रुपये पर नौकरी करनी स्वीकार नहीं की। उसने अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बी.टी. कर ली है और डेढ़ सौ रुपये महीना पाता है। दर्शनाचार्य जी वापस बनारस को लौट गए। मैं तीस रुपए महीना पर ही नौकर हो गया। अब पैंतीस लेता हूँ। इस पर भी दो–दो आने में पचास–पचास हंदे बेचने से यह कार्य अच्छा है।

"मैं तो यह कहता हूँ कि यदि तुम एम.ए. पढ़ लोगे तो तुमको दो–ढाई सौ की नौकरी मिल जानी किसी भी प्रकार कठिन नहीं।"

इस दिन तो जवाहरलाल का मन उदास हो गया। वह पाठशाला तो गया, परन्तु पढ़ाई में मन नहीं लगा सका। उसको उस दिन वहाँ का वातावरण भी पसन्द नहीं आया। कुछ दिन बाद ही जवाहरलाल का परीक्षा–फल घोषित हुआ। वह मैट्रिक परीक्षा में अपने प्रान्त–भर में प्रथम रहा था। स्कूल के हैडमास्टर ने स्वयं जवाहरलाल के पिता को बधाई भेजी और बताया कि इसको पन्द्रह रुपये महीना छात्रवृत्ति मिलेगी।

जिस दिन हैडमास्टर का पत्र आया, श्यामनारायण ने घर के सब पुरुष–स्त्रियों को बुलाकर कह दिया, "बड़े भापा! स्कूल के हैडमास्टर का पत्र आया है कि जवाहरलाल को पन्द्रह रुपये मासिक छात्रवृत्ति मिलेगी। इसके लिए इसको कॉलेज में भरती होना चाहिए।"

"मैंने तो निश्चय कर लिया है कि जवाहरलाल अब संस्कृत और वह भी संस्कृत विद्यालय में ही पड़ेगा।" रामरक्खामल्ल का कहना था।

इस निश्चय की बात सुन किसी को कुछ कहने का साहस नहीं हुआ। जवाहरलाल देख रहा था कि उसके पिता से कोई भी युक्ति करने का साहस नहीं करता। अतः वह स्वयं ही साहस बाँधकर बोला, "बड़े भापा! मैं संस्कृत तो पढ़ना चाहता हूँ परन्तु कॉलेज में पढूँगा।"

"क्यों?"

"भापा! एम.ए. पास करूँगा तो सरकारी कॉलेज में नौकरी पा जाऊँगा। आरम्भ से ही ढाई सौ रुपये मिलने लगेंगे। साथ ही कॉलेज में प्रोफेसर बनने से मेरी ही प्रतिष्ठा नहीं बढ़ेगी, प्रत्युत परिवार का भी नाम होगा।"

इस बात को सुन विष्णुनारायण ने उसकी बात का समर्थन कर दिया। उसने कहा, "कुछ दिन हुए, पंडित लक्ष्मीचंद मुझको मिले थे। वह कह रहे थे कि लड़का होनहार है। व्यर्थ की भावुकता के कारण हमको उसका भविष्य नष्ट नहीं करना चाहिए।"

विष्णुनारायण ने आगे कहा, "पंडितजी ने एक बात और कही थी कि आर्य समाजियों ने स्कूल खोल रखा है, गरीबों के बच्चों के लिए। जितने नेता लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं, वे अपने बच्चों को पढ़ने के लिए विलायत भेज रहे हैं। जो वहाँ नहीं भेजते वे अपने बच्चों को गवर्नमेण्ट कॉलेज में भरती करवा रहे हैं।''

अपने चाचा की बात सुन जवाहरलाल की आँखों के सामने गवर्नमेन्ट कॉलेज लाहौर की भव्य इमारत का चित्र चक्कर काटने लगा। यह इमारत एक टीले पर दोमंजिली थी और उसके बीच में गगनचुम्बी स्तूप था, जिस पर घड़ी लगी थी। लाहौर की कुछ सुन्दर इमारतों में से यह एक थी। उस इमारत में बैठ पढ़ने की बात से ही उसको रोमांच हो आया था।

इसकी तुलना में दयानन्द ऐंग्लो–वैदिक कॉलेज की पढ़ाई पुरानी कोठियों में होती थी। वह तुरन्त बोल उठा, ''भापा! मैं यहाँ ही पढ़ूँगा।''

''कहाँ?''

''गवर्नमेन्ट कॉलेज में।''

अब सुमित्रा ने कहा, ''भापा! बच्चे की महत्त्वाकांक्षा में बाधा न बनो। बच्चे तो घर में सबके साँझे होते हैं। सब उसको आगे पढ़ाने में सहमत हैं।''

आखिर रामरक्खामल्ल ने कहा, ''मैं पढ़ाने का विरोध कर रहा था? मैं तो कॉलेज की शिक्षा का विरोध करता था। देखो विष्णु! मैं, जो कुछ तुम सब कहते हो, उसको गलत मानता हूँ। इस पर भी जब तुम सब की इच्छा है कि जवाहलाल कॉलेज में पढ़े तो मैं मान जाता हूँ। भगवान से मेरी यही प्रार्थना है कि यह संसार में सफल हो।''

''धन्य हो भापा!'' विष्णुनारायण ने कह दिया–''हम सब तुमसे यही आशा करते थे।''

अगले दिन जवाहरलाल गवर्नमेन्ट कॉलेज में भरती होने चला गया।

यह सन् 1900 था। एप्रिल का अन्त था। कॉलेज में प्रवेश के लिए भीड़ नहीं लगा करती थी। कॉलेज हाल के बाहर नोटिस लगा था कि प्रवेश साढ़े बारह बजे आरम्भ होगा। अतः सब प्रार्थी हाल में एकत्रित हो गए थे। कॉलेज का क्लर्क हाल के एक कोने में फार्म लेकर बैठा था। वह प्रार्थियों के फार्म स्वयं भरकर ही ले रहा था। प्रार्थी को केवल हस्ताक्षर करने होते थे। केवल चालिस विद्यार्थियों के लिए स्थान था। इनमें बीस विद्यार्थी विज्ञान की पढ़ाई के लिए लेने थे और बीस 'आर्ट्स' के लिए।

जवाहरलाल ने इस विषय पर कभी विचार ही नहीं किया था। वह पिता को कह आया था कि संस्कृत पढ़ेगा, परन्तु जब क्लर्क उसका फार्म भरने लगा तो यह जान कि वह लड़का प्रान्त–भर में प्रथम आया है, उसने स्वयं ही उसके विषय विज्ञान, फिजिक्स–केमिस्ट्री, जुऑलौजी, बॉटनी, इंग्लिश, मैथमैटिक्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिख दिए। जब वह लिख चुका तो जवाहरलाल ने कहा, "मैं तो संस्कृत पढ़ना चाहता हूँ।"

इस पर वह क्लर्क विस्मय में जवाहरलाल का मुख देखने लगा। फिर बोला, "लड़के! तुम नहीं जानते, पर मैं जानता हूँ कि तुम्हारे लिए क्या अच्छा होगा यही ठीक है। देखो, डाक्टर बनोगे तो लाखों कमाओगे। बाप–दादा का नाम रोशन करोगे और दीन–दुखियों की सेवा कर सकोगे। लो, यहाँ हस्ताक्षर कर दो।"

लाखों कमाओगे, बाप–दादा का नाम रोशन करोगे, दीन–दुखियों की सेवा कर सकोगे आदि ने जवाहर को एकदम चकाचौंध कर दिया और उसने झट हस्ताक्षर कर दिए। चालीस के स्थान पर पचास के लगभग प्रार्थी थे। कॉलेज का नियम था कि फर्स्ट डिविजन में पास हुए विद्यार्थी ही भर्ती किए जाएँगे।

साढ़े बारह बजे घंटा बजा। हैडक्लर्क सब फार्म लेकर प्रिन्सिपल के कमरे में चला गया। वे सब, जो फर्स्ट डिविजन में पास होकर आये थे, भरती कर लिए गए। क्लर्क उनके फार्म लेकर बाहर आ गया। उनकी संख्या केवल पच्चीस थी। शेष प्राथियों को एक–एक कर बुलाया जाने लगा। प्रिन्सिपल ने अपने विशेष अधिकार से शेष में से पाँच विद्यार्थी और भरती किये। अन्य को कह दिया गया कि वे किसी अन्य कॉलेज में प्रवेश लेने का यत्न करें।

ठीक दो बजे जवाहरलाल फीस और दाखिला दे अपना नाम रजिस्टर करा घर जा पहुँचा। घर जाता हुआ वह मन में विचार कर रहा था कि अपने पिता के पूछने पर कि उसने कौन–से विषय लिए हैं, किस प्रकार बतायेगा कि वह संस्कृत नहीं पढ़ रहा और विज्ञान पढ़ने का फार्म भरकर दे आया है। वह क्लर्क की बात को बढ़ा–चढ़ाकर बताना चाहता था। उसने मन में प्रिन्सिपल से भेंट की एक काल्पनिक कहानी भी बना ली थी। अतः मन में अपनी सफाई देने की पूरी तैयारी कर वह घर पहुँचा। वह पिताजी के सामने जा उपस्थित हुआ। रामरक्खामल्ल अभी भोजनोपरान्त विश्राम करके उठा था। लेखवती उसके पीने के लिए पानी का गिलास लाई थी, जिससे वह सोने की सुस्ती दूर कर सके। रामरक्खामल्ल ने गिलास हाथ में पकड़ा तो जवाहरलाल आ गया। रामरक्खामल्ल ने जल लेते हुए पूछ लिया, "हो गये हो भरती?"

"हाँ भापा!" जवाहरलाल अगले प्रश्न की प्रतीक्षा करते हुए खड़ा रहा। रामरक्खामल्ल ने जल लिया और खाली गिलास लेख के हाथ में देकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाट से उठकर कपड़े पहनने लगा। जवाहरलाल अभी भी खड़ा था। रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, ''कितना खर्चा बैठा है?''

"सब मिल–मिलाकर पचहत्तर रुपये लगे हैं। रसीद मिल गई है।''

"ठीक है। पुस्तकों के लिए कितना चाहिए?''

''एक सूची कार्यालय से मिली है, परन्तु दूसरे विद्यार्थी कह रहे थे कि कल प्रोफेसर बतायेंगे, तब ही खरीदेंगे।''

''क्या अनुमान है खर्च का?''

''दीवान हुकमचन्द का लड़का भी मेरे साथ भरती हुआ है। उसका अनुमान है कि दो सौ रुपये के लगभग खर्च होंगे।''

''तुम्हारे पास कितने रुपये हैं अब?''

''सवा सौ अभी हैं।''

''अच्छी बात है। इतना खर्च करो और आवश्यकता होगी तो बता देना, मिल जायेंगे।''

: 19 :

यह बात घर में सबको पता थी कि जवाहरलाल दो सौ रुपये लेकर कॉलेज में भरती होने के लिए गया है। इसका प्रभाव मोहिनी पर तो यह हुआ कि वह जवाहरलाल के लिए नये कपड़ों के विषय में विचार करने लगी। उसने सुन रखा था कि सरकारी कॉलेज में बड़े बड़े रईसों तथा अफसरों के लड़के ही पढ़ते हैं। वह चाहती थी कि जवाहर भी पोशाक में उनसे कम न दिखाई दे। अतः जब भरती होकर लौटा तो उसने जवाहर के कमरे में जाकर पूछ लिया, ''जवाहर भैया! किस प्रकार के कपड़े पहने लड़के वहाँ गए थे?''

''भाभी!'' जवाहरलाल ने कहा, ''मेरे कपड़े किसी से मैले नहीं थे। बहुत साफ और भली–भाँति लोहा किए हुए थे। इस पर भी प्रायः लड़कों के कपडे भिन्न–भिन्न प्रकार के थे। पगड़ी तो केवल दो लड़के बाँधे हुए थे। एक मैं था और एक अन्य था। उसको दाखिला नहीं मिला। पायजामा पहने हुए कई थे, परन्तु कुछ लड़के सलवार पहने थे और कुछ चूड़ीदार पायजामा। कई तो पैंट, कोट तथा नेक्टाई भी पहने हुए थे। मेरा तो जूता देसी था, परन्तु वहाँ सबके सब बूट और मोजे पहने हुए थे। एक–दो लड़के तो उस्तरे से ठुड्डी पर हजामत बनवाये हुए थे। एक लड़का था जिसकी मूँछ भी सफा थी।

''भाभी! मेरी पगड़ी खुल गई तो सब मेरी बड़ी–सी चोटी देख मुस्कराने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे। किसी ने हँसी नहीं उड़ाई। नहीं तो, मैं समझता हूँ कि दो–तीन को तो एकदम पीट सकता था।''

मोहिनी हँस पड़ी। वह बोली, ''भैया! पिताजी से एक सौ रुपया लेकर जेठजी के साथ अनारकली बाजार में नये ढंग के कपडे बनवा लो। नहीं तो कॉलेज में मास्टर और लड़के हँसी उड़ाएँगे और लज्जा हमको आयेगी।''

लेखवती यह बात बैठी सुन रही थी। उसने अपना एक–एक आना जो रामरक्खामल्ल उसको प्रति दिन देता था, जमाकर दो सौ रुपये के लगभग इकट्ठे कर रखे थे। उसने एक सौ रुपया अपनी संदूकची में से निकाल कर जवाहर को देते हुए कहा, ''देखो! कपड़े बनवा लाओ। जब पहनोगे तो अपने पिताजी को कह देना कि रुपया कहाँ से लिया है। पहले मत कहना। समझे?''

जवाहर समझ गया कि माँ को डर है कि पिताजी कपड़ों पर व्यर्थ रुपया खर्च करना पसन्द नहीं करेंगे। वह विचार कर रहा था कि उसके पिता ने तो उससे पूछा भी नहीं कि उसने संस्कृत ली है अथवा नही। इस पर उसको विस्मय तो हुआ था, परन्तु साथ ही यह समझ वह अभी भी भयभीत था कि जब पता चलेगा तो क्या होगा। उनका क्रोध शान्त करना कितना कठिन होगा!

इस समय घर में एक और घटना घटी और इसका ज्ञान सबसे पहले कला को हुआ। लेखवती कुएँ पर स्नान करने गई तो कला वहाँ पहले से नहा रही थी। जब से कला को पति की डाँट पड़ने लगी थी और उसमें अपनी इच्छा से वासना उत्पन्न करने में वह असफल रहने लगी थी, तब से वह बहुत प्रातः काल उठने लगी थी और गृह–उपासना में भी सम्मिलित होने लगी थी। वह हवन के समय से पहले ही स्नानादि से अवकाश पा, अपने श्वसुर और श्वसुर के बड़े भाई के पूजागृह में पहुँचते ही जा पहुँचती थी। ऐसा करते हुए उसको तीन मास होने जा रहे थे। अब तो उसको घर का काम करने में और हवनादि में रस आने लगा था। इस उपासना में सम्मिलित होने से एक बात यह हुई थी कि उसने श्वसुर और श्वसुर के बड़े भाई से घूँघट निकालना छोड़ दिया था। हवन के समय तो लेखवती भी घूँघट नहीं करती थी। आगे–पीछे वह विष्णुनारायण से घूँघट करती थी।

अब वह प्रातः शौचादि से निवृत्त हो स्नान कर छः बजे पूजागृह में आती थी। लेखवती भी उस समय. तक स्नानादि से छुट्टी पा वहाँ आ जाती थी। प्रायः घर की स्त्रियाँ जो पूजा में सम्मिलित होतीं, इकट्ठे ही स्नान करती थीं। आज कला का ध्यान लेखवती के पेट की ओर चला गया और वह देखती रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। लेखवती ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''क्या देख रही हो, बहू?''

''ताई! क्या घर में और प्राणी आने वाला है?''

''हाँ, कुछ ऐसा ही मालूम होता है।''

इस समय सुमित्रा आ गई। कला ने उससे कह दिया, ''माँजी! ताईजी भी हमारी साथिन बनना चाहती हैं।''

सुमित्रा का ध्यान इधर नहीं गया था। इससे कला के कहने का अर्थ न समझ, जब प्रश्न–भरी दृष्टि में वह उसकी ओर देखने लगी तो लेखवती ने स्वयं कह दिया, ''वह यह कह रही है कि मुझको दिन चढ़े प्रतीत होते हैं।''

''सच लेख!''

''हाँ! माँजी!'' वह अपनी देवरानी को माँजी कहकर पुकारा करती थी।

''अच्छी बात है। भगवान तुम्हें पुत्र दे।''

सबको पूजागृह में जाने की जल्दी थी। इससे बात आगे नहीं चल सकी। इस बात की चर्चा फिर चली, जब सब मध्याह्न का भोजन करने बैठीं।

कला ने पूछ लिया, ''ताई! जवाहर कितने वर्ष का है?''

''आगामी श्रावण में सोलह का पूरा होगा।''

''और इतने वर्ष तक कहाँ रही हो?''

''यहीं इसी घर में। तुम क्या समझती हो कि मैं कहाँ रही हूँ?''

''मेरे समझने की बात नहीं। मेरे तो देखने की बात है। देख रही हूँ कि ताईजी को पति अब मिले हैं।''

लेखवती मुस्करा कर चुप हो रही। कला ने आगे पूछ लिया, ''पर आपको कै इत्यादि का कष्ट नहीं हो रहा?''

''जवाहर के समय भी नहीं हुआ था।''

''मैं तो मधु के समय मरणासन्न हो गई थी।''

''यह मुझ पर ईश्वर की कृपा है।''

इस पर सुमित्रा ने पूछ लिया, ''पर लेख बहिन! है तो बात ठीक न? कहीं कोई कष्ट तो नहीं बढ़ रहा?''

''मुझको विश्वास है कि ठीक है और फिर वे तो यह भी कहते हैं कि लड़का ही होगा।''

''बडे भापा यह कैसे जान गए?''

''वे बड़े हैं न, इस कारण हम सबसे कुछ अधिक ही जानते हैं। जब उन्होंने जवाहर की साधना से उच्छृंखलता को देखा तो एक और सन्तान की इच्छा करने लगे। उसका ऐसा विचार था कि जवाहर हाथ से गया। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कारण उन्होंने सोचा कि उनको अपना अन्य उत्तराधिकारी बनाना चाहिए। जब उनकी इच्छा हुई तो यह हो गया।"

"तो यह इच्छा के अधीन है क्या?"

"उनकी इच्छा से ही प्रतीत होता है। जवाहर के उत्पन्न होने के बाद वे कहने लगे कि एक सन्तान ही ठीक है। मैं समझी कि वे पुनः साधु होने का विचार करने लगे हैं। इस कारण भयभीत हो मैं पूछने लगी, 'मैं तो अभी सत्रह वर्ष की हूँ। मेरा पेट इतने से नहीं भरा।'

"इस पर वे हँसकर बोले, 'और मैं बाईस वर्ष का युवा पुरुष हूँ। मेरा पेट भी तुमसे नहीं भरा। मैं सन्तान की बात कर रहा हूँ।'

"मैं पूछ लिया, 'तो यह कैसे रुक सकेगी?'

"इस पर उन्होंने मुझको प्राणायाम का एक ढंग बताया और फिर मुझको अभ्यास कराया। जब तक मैं अभ्यास करती रही, मुझको संयम से रहने के लिए कह दिया। इस अभ्यास में छः मास लगे। तदनन्तर हम साधारण जीवन व्यतीत करने लगे। जिस दिन वे मेरी सेवा की इच्छा करते थे, मैं सदा तैयार रहती थी और उसके बाद पाँच मिनट तक की प्राणायाम कर लेती थी। इस प्रकार लगभग पन्द्रह वर्ष हो गए, कुछ नहीं हुआ।"

"पाँच मास हुए उन्होंने मुझको कहा तो हमने दिन, तिथि, मुहूर्त देख लिया। इस बार मैंने प्राणायाम नहीं किया और उसी बार यह बन गया है।"

"प्राणायाम करने से क्या होता था?" कला ने पूछ लिया।

"प्राणायाम करने से एक प्रकार के जल का स्राव होने लगता है, जिससे गर्भद्वार और गर्भाशय धुलकर साफ हो जाता है। तीन मिनट तक मैं यह प्रक्रिया करती थी, अधिक नहीं। उनका कहना है कि अधिक काल तक करने से दुर्बलता होने लगेगी और इससे अधिक काल तक की आवश्यकता भी नहीं हुई।"

सब औरतें विस्मय में देखती रह गईं। कला ने फिर पूछा, "ताई! मुझको यह विद्या सिखा दोगी क्या?"

"मैं सिखा नहीं सकूँगी। इस पर भी उनका कहना है कि यह सब सीख भी नहीं सकतीं।"

"क्यों?"

"यह तुम उनसे पूछ लेना।" कहकर लेखवती मुस्कराई।

"ताई! मधु अब डेढ़ वर्ष का हो चला है और मैं सदा भयभीत रहती हूँ। इसके समय बहुत बीमार हो गई थी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारे बड़े भापाजी से कहूँगी। इस पर भी मुझको संदेह है कि वे इस क्रिया को तुम्हारे लिए ठीक समझें।"

"ताई! मेरी ओर से उनकी मिन्नत कर देना।"

"कल हवन के समय तुम मुझको संकेत कर देना। मैं उनसे कहूँगी।"

आजकल कला और मोहिनी में गहरी छन रही थी। यह सम्बन्ध भी श्याम के साथ सम्बन्ध शिथिल पड़ने के पश्चात् ही आरम्भ हुआ था। एकाएक उसको अपने किस्से-कहानियों से अधिक रामायण सुनने में रस आने लगा था। मोहिनी प्रायः मध्याह्न भोजन के पश्चात् रामायण पढ़ा करती थी। कला उसके पास आ बैठा करती थी। रामायण पाठ के बाद मोहिनी घर के प्राणियों के कपड़े मरम्मत किया करती थी। प्रातःकाल हवन तथा पूजा के बाद वह कुएँ पर जाकर कपड़े धोया करती थी। इस समय तक वे सूख जाया करते थे। अतः उनको लोहा करने से पूर्व मरम्मत कर लिया करती थी।

इस समय कला उसके समीप बैठी इधर-उधर की बातें किया करती थी। इस अन्तरंग और हृदय की बातों का परिणाम ही था कि दोनों में घनिष्ठता बढ़ने लगी थी।

आज लेखवती के विषय पर ही बात होने लगी। कला ने छूटते ही कहा, "मुझको तो ताई की बातों पर विश्वास नहीं आया।"

"क्या विश्वास नहीं आया? यह तो प्रत्यक्ष ही है कि वे गर्भवती हैं। उनके स्तनों के रंग से भी उनके कहने का समर्थन होता है।"

"यह रंग की बात तुमको किसने बताई है?"

"मैं अपने में देख रही हूँ।"

"तो तुम भी बैठ गई हो?"

"हाँ! मुझको चौथा मास जा रहा है।"

"कैसा अनुभव हो रहा है तुमको?"

"रामजी की कृपा है। मुझको तो मितली भी नहीं होती। भूख लगती है तो कुछ थोड़ा खा लेती हूँ। पेटभर कभी नहीं खाती और भूख न होने पर खाती ही नहीं।"

"तो तुम भी ताई से वह विद्या सीख लेना?"

"मुझको आवश्यकता अनुभव नहीं होती। मैं तो सात बच्चों की माँ बनना चाहती हूँ। इस पर भी यह सब रामजी की कृपा पर निर्भर करता है।"

"क्या करोगी इतने बच्चे लेकर?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब बूढ़ी हो जाऊँगी तो कोई पाँव दबायेगा, कोई सिर दबायेगा, कोई रोटी खिलाएगा और कोई कपड़े पहनायेगा।"

"तो तुमको विश्वास है कि तुम्हारे बच्चे तुम्हारी सेवा करेंगे?"

"जब मैं अपने बड़ों की सेवा करती हूँ तो वे भी मेरी सेवा करेंगे।"

"कौन जाने! जमाना बड़ी तेजी से बदल रहा है। मैं तो जवाहर की बात सुन आश्चर्य ही करती हूँ। मैं तुमको एक बात बताती हूँ। मेरा तुम्हारे जेठजी से विवाह के पूर्व का परिचय है। मैं स्कूल में जाया करती थी। ये मुझको देख मेरे पीछे लग गए। उस समय मैं नौ वर्ष की रही हूँगी। मेरी माँ को पता चला तो मेरा स्कूल जाना बन्द हो गया, परन्तु ये जान गए कि मैं अपनी माँ के साथ 'बावली साहब' जाया करती हूँ। ये मुझको वहाँ देखने पहुँचने लगे। मेरा वहाँ भी जाना बन्द हो गया। इस पर ये मेरे पिताजी से मिले और अपने स्कूल का काम समझने के बहाने आने लगे। पिताजी, तुम जानती हो स्कूल में मास्टर हैं।

"माँ ने पिताजी को बता दिया कि यह लड़का कला के पीछे लगा रहता है और इसी निमित्त आया है। इस पर पिताजी ने कह दिया, 'तो क्या हुआ? लड़का होशियार, समझदार और पैसे वालों का बेटा है। फिर अपनी ही जात–बिरादरी का है। यदि इसके पिता मानेंगे तो कला का विवाह कर दूँगा।"

"इस पर माँ ने कह दिया, 'तो इसके पिता से पूछ लो।'

"पिताजी ने कह दिया–'पूछ लूँगा। अभी जल्दी क्या है।'

"इसके पश्चात् मुझ पर इनके सामने आने और बातचीत करने का प्रतिबन्ध उठ गया। इसका परिणाम यह हुआ कि हम एकान्त में मिलने की इच्छा करने लगे। कई बार यह अवसर मिला भी। परन्तु हमने परस्पर कभी एक–दूसरे को छुआ नहीं था। कई बार यह पिताजी से कुछ समझने के लिए आये और उस समय माता–पिता घर पर नहीं होते थे। हम कितने ही समय तक बैठे बातें करते रहते थे। एक बार, जब यह नवीं जमायत की परीक्षा देने वाले थे, बोले, 'कला, मेरा तुम से विवाह होगा।'

"मैंने कह दिया, 'मुझको विदित है।'

"इन्होंने कहा–'किसने कहा है तुमको?'

" 'माँ ने।' मैंने कह दिया।

" 'तो उन्होंने मुझसे मिलने से तुम्हें मना नहीं किया?'

" 'कोई आवश्यकता नहीं समझी।'

" 'पर मैं तुम्हारे मुख को तो चूम सकता हूँ।'

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'क्यों, किसलिए मुख चूमेंगे?'

" 'क्योंकि यह बहुत सुन्दर है।'

" 'परन्तु आखिर आपका ही तो होने वाला है। अभी जल्दी क्या पड़ी है!'

"मैं उस समय ग्यारह साल की ही थी। इस पर भी मुझको ज्ञान था कि पति–पत्नी परस्पर प्रेम करते हैं और प्रेम में ऐसा भी करते हैं।"

मोहिनी ने बताया, "मुझको तो इन बातों का ज्ञान नहीं था। मेरा जब विवाह होने वाला था, तब माँ ने बताया, 'मोहिनी! तुम्हारा विवाह होगा।'

"मैंने इसका अर्थ न समझते हुए कहा, 'इससे क्या होगा माँ?'

" 'तुम अपते पति के घर चली जाओगी। जैसे मैं तुम्हारे पिता के घर में आई हूँ।'

"क्या जरूरत है इसकी? मैं यहाँ बहुत सुखी हूँ।' मेरा कहना था।

" 'देखो! सब लड़कियों को अपने–अपने पति के घर जाकर रहना होता है। वहाँ उनको बहुत सुख मिलता है। फिर जैसे तुम, सोहन और काहन मेरे बच्चे हो, वैसे ही तुम्हारे भी बच्चे होंगे।'

" 'कैसे होंगे?' मैंने हैरान होकर पूछा।

"इस पर माँ ने मुस्कराते हुए कहा, 'यह सब तुम्हारा पति तुमको सिखा देगा।'

"मैं कुछ भी नहीं समझी। इस पर भी चुप रही।"

"तुम्हारे विवाह के समय तुम्हारी कितनी आयु थी?"

"मैं तेरह वर्ष की थी, जब माँ ने मुझे बताया था। इसके दो मास पश्चात् ही मेरा विवाह हुआ था। पिताजी ने कुछ अधिक तैयारी नहीं की थी। मेरे 'सूहे–सालू' माँ ने तैयार किए और कुछ मिठाईयाँ पिताजी ले आए। अपने पड़ोसियों से दरियाँ–चादरें उधार माँग लीं। भाइयों ने मकान के प्रांगण में बिछा दीं। जब बाराती पहुँचे तो उन पर बिठा दिए गए। मुझको कपड़े पहना बेदी पर लाकर बैठा दिया गया। ब्राह्मण ने कुछ पढ़ा और पूजा–पाठ किया और सब लोगों ने मेरे पिताजी को बधाईयाँ दीं। तत्पश्चात् बारातियों को मिठाइयाँ खिलाई गईं और मुझको विदा कर दिया गया।

"ससुराल में आकर यहाँ माताजी ने इनके पिताजी से कहा, 'समधियों ने कुछ भी तो नहीं दिया?'

"पिताजी ने कह दिया, 'मोहिनी के पिता ने लड़की जो दे दी है और क्या चाहती हो तुम?'

"माताजी चुप कर गईं और फिर कोई बात नहीं हुई। यह तो मुझको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
तुम्हारे देवरजी ने ही बताया था कि पति–पत्नी परस्पर प्यार की बातें करते हैं।''

"मैं तो यह सब कुछ पहले ही जानती थी। अर्थ न समझते हुए भी मैंने माताजी–पिताजी को इकट्ठे सोते देखा था। पिताजी की अलमारी में कहानियों की बहुत किताबें थीं जो मैं बचपन से ही पढ़ती रही थी। फिर हमारे जैसी सुविधा, विवाह से पहले ही पति से एकान्त में मिलना और बातें करने का अवसर तो सबको मिलता ही नहीं। इस पर भी हमारे मन में धैर्य था।

"परन्तु मोहिनी बहिन! यह जवाहर ने तो कमाल ही कर दिया है। कैसे दोनों में परिचय हुआ और फिर किस समय मेल–मुलाकात हुई और वे मन में क्या समझते होंगे। सबसे बड़ी बात तो यह है कि साधना स्कूल में एक दिन भी पढ़ने के लिए नहीं गई। अपनी आयु की लड़कियों से वह कभी नहीं मिली। इस पर भी दोनों में मेल हो गया। जमाना कितना बदल गया है! जहाँ जवाहर जैसे युवक संयम से नहीं रह सकते, वहाँ ताई लेख–जैसी बत्तीस–तैंतीस आयु की स्त्री भी संयम से नहीं रह सकी।''

"मैं तो,'' मोहिनी ने सकुचाते हुए कहा, "समझती थी कि तायाजी पिछले कई वर्ष से ताई से मिले ही नहीं; परन्तु बात उलटी निकली।''

"हाँ।'' कला ने पुनः कहा–"मुझको तो ताईजी की प्राणायाम इत्यादि की कहानी पर विश्वास नहीं आया। जरूर कुछ दाल में काला प्रतीत होता है।''

"क्या काला है?''

"यही कि ताई की होने वाली संतान बड़े भापा की नहीं है। मुझको विश्वास नहीं आता कि वे इस अवस्था में भी सन्तान उत्पत्ति की क्षमता रखते हैं।''

"तो किसकी सन्तान हो सकती है?'' मोहिनी ने आश्चर्य में अपनी जेठानी का मुख देखते हुए पूछ लिया।

"घर में तीन युवा पुरुष तो हैं ही। फिर मुहल्ला भरा पड़ा है।''

मोहिनी ने सूई–धागा सदानारायण की कमीज पर टाँग दिया। वह कला के ताई लेखवती पर लांछन का रस नहीं ले सकी। उसको यह सब अनर्गल बात प्रतीत हुई थी। उसने कला की आँखों में देखते हुए कह दिया, "मुझको इस विचार पर विश्वास नहीं आता। ताई बेचारी गौ है। उसके मन में पाप तो कभी भी दिखाई नहीं दिया।''

"वे तो गौ हैं परन्तु दूसरे भी सांड हैं। मुझे तो संदेह हो रहा है कि तुम्हारे जेठजी की यह करतूत है। मैं अब उनकी अपने प्रति अरुचि का कारण समझने लगी हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब से यह अनुभव कर रही हो?"

"पाँच–छः मास हो चुके हैं। पहले तो एक दिन भी वे मुझको छोड़ते नहीं थे, परन्तु अब तो सप्ताह ही व्यतीत हो जाते हैं पर वह मेरी सुध नहीं लेते।"

"मैं समझती हूँ, कला बहिन? यह तुम्हारा भ्रम है।"

"हाँ, मेरे पास प्रमाण तो नहीं। इस पर भी मुझको संदेह है।"

मोहिनी को कला की मनोवृत्ति पसन्द नहीं आई। उसने इस विषय में बात समाप्त करने के लिए कह दिया–"मैं तो इस प्रकार की बात मुख पर ला नहीं सकती। ताई हमारी माँ के समान है। माँ–पुत्र के सम्बन्ध में ऐसी बात करना लज्जा की बात है।"

: 20 :

इस पर भी कला से नहीं रहा गया। उसने उसी रात अपने पति से कहा, "मैं भी इस दुनिया में रहती हूँ।"

"तो तुम समझती हो कि मुझको कम दिखाई देने लगा है?"

"यह तो नहीं, परन्तु कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि अब यह दृष्टि किसी दूसरे पर लग रही है।"

"यह तुम्हारा भ्रम है, कला! तुम अभी भी मेरे हृदय की रानी हो। हाँ, पहले के व्यवहार में अन्तर अवश्य आ गया है।"

"यही तो कह रही हूँ। जो कुछ मैं पहले थी, वह अब नहीं रही न। अब कोई अन्य इन आँखों का आकर्षण–केन्द्र बन गया है।"

श्यामनारायण हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "कोई अन्य आकर्षण–केन्द्र नहीं है, आकर्षण–केन्द्र तो तुम ही हो। अन्तर यह हो गया है कि पहले पशुपन मुझमें अधिक था, इससे तुम्हारे पीछे–पीछे भागता फिरता था। अब मैं अपने को मनुष्य और पुरुष मानने लगा हूँ और तुम मेरे पीछे भागने लगी हो। यह तो स्वाभाविक स्थिति ही है। आदिकाल से स्त्रियाँ ही पुरुषों का पीछा करती रही हैं, पुरुष नहीं। नर, मादा के पीछे तो पशुओं में भागते हैं।"

"जी नहीं। पशु और मनुष्य में अन्तर नहीं है। यदि आप में अन्तर आया है तो इस कारण कि आपको अन्य मिल गई है?"

"कौन मिल गई है?" श्यामनारायण ने कला का अभिप्राय समझ माथे पर त्यौरी चढ़ाकर पूछा।

कला कुछ डरी। उसने पति के माथे पर त्यौरी देख ली थी। इस पर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कहा, "सत्य बात बहुत कड़वी होती है। इसी कारण लोग सत्य बोलने की अपेक्षा मौन रहना ठीक समझते हैं।

"छोड़िए इस बात को। मैं तो अपना अधिकार ही पाना चाहती हूँ।"

"कैसा अधिकार चाहती हो जो तुम्हें नहीं मिल रहा?"

"आपके और मेरे सम्बन्ध वैसे ही हो जायें, जैसे पाँच–छः मास पूर्व रहते थे।"

"वे सम्बन्ध ठीक नहीं थे।"

"देखिए! मैं आपको एक बात बताती हूँ। ताई लेखवती के पन्द्रह वर्ष पश्चात् गर्भ ठहर गया है। आपके मेरे साथ एकाएक शीतल हुए व्यवहार को मेरे अतिरिक्त अभी और कोई नहीं जानता। इस कारण आप पर कोई सन्देह नहीं करता। इस पर भी लेखवती ताई के पेट में बीज बड़े भापा का ही है, इस बात पर भी कोई विश्वास नहीं कर सकता। इससे मैं कहती हूँ कि....।"

कहती–कहती कला चुप हो गई। श्यामनारायण का मुख क्रोध से तमतमा रहा था। वह डर गई थी। इस पर भी वह अनुभव करती थी कि वह इतना कुछ कह देने के पश्चात् बात स्पष्ट ही कर दे तो ठीक है।

इससे वह पुनः कहने लगी, "मैं कहती हूँ कि घर में आप ही एक ऐसे व्यक्ति है जिस पर घर के प्राणियों का सन्देह हो सकता है। यदि आप मुझसे व्यवहार ठीक रखने लगें तो मैं आपके कंधे से कंधा भिड़ाकर घर के प्राणियों के आरोपों का विरोध करूँगी।"

"और आज की इस वार्ता के पश्चात् मैं तुमसे रहा–सहा सम्बन्ध भी तोड़ दूँ तो फिर क्या करोगी?"

"यही कहूँगी कि रात आपका पलँग सूना रहता है।"

श्याम अब और अधिक सहन नहीं कर सका। उसने अपने पूरे बल से कला के मुख पर थप्पड़ दे मारा और कहा, "जाओ। जो मरजी है कहो और करो। आज से तुम जैसी नीच विचार की स्त्री का मुख नहीं देखूँगा। तुम माँ–पुत्र पर लांछन लगाकर घोर पाप कर रही हो।"

श्याम ने कपड़े पहने और नीचे की मंजिल पर बैठक में जा, बैठक को भीतर से बन्द कर सो रहा। कला को अपने कहने पर पश्चात्ताप तो लगा था, परन्तु उसको अपने कथन पर सोलहों आने नहीं तो चौदह आने विश्वास था। दो आने की भी कसर इस कारण थी कि उसने अपने पति को अपनी ताई के साथ कभी देखा नहीं था। वह मन में सोचती थी कि उसके पति कौन पूर्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भक्त हैं, जो युवा माता से परहेज कर सकते हैं। जमाना बदल रहा है और उसके पति भी बदल गए हैं तो कोई विस्मय की बात नहीं।

इस पर भी वह अब विचार करती थी कि यदि वह चुप रहती, तो अच्छा नहीं था? अन्धे को अन्धा कहना मूर्खता ही तो है।

इस पर भी वह मानने को तैयार नहीं थी कि उसका पति दोषी नहीं। अब उसके क्रोध में उसको पीटकर चले जाने से तो उसको विश्वास हो गया कि अवश्य ही दाल में कुछ काला है।

रात तो इस विषय में किसी को पता नहीं चला। केवल मोहिनी और महानारायण में इस विषय पर बातचीत हुई। बात मोहिनी ने ही आरम्भ की थी। उसने कहा, ''आपकी भाभी कला अच्छी औरत नहीं हैं।''

''क्यों? क्या हुआ है?''

''हुआ यह है कि आपकी ताई के गर्भ ठहर गया है। आज मध्याह्न के भोजनोपरान्त बात हुई तो ताईजी ने इस चमत्कार की व्याख्या कर दी। उन्होंने समझाया कि आपके तायाजी ने उनको प्राणायाम का एक ऐसा तरीका बताया है जिससे वे इच्छा से गर्भ धारण कर सकती हैं।

''परन्तु भाभी को ताईजी की व्याख्या पर विश्वास नहीं आया। वह मुझको बताने लगीं कि उनको ताई की बात पर विश्वास नहीं है। यह गर्भ ताया जी का तो हो नहीं सकता। वे इतने बूढ़े हो गए हैं कि अब इस कार्य के योग्य ही नहीं रहे। इससे ताईजी ने पाप–कर्म किया है। कहीं अन्यत्र से यह प्राप्त किया है।

''भाभी को सन्देह है कि उसका पति ताईजी से अनुचित सम्बन्ध रखता है।''

महानारायण इस लांछन को सुन अवाक् बैठा रह गया। वह तो इसका अर्थ ही समझ नहीं सका। इस पर मोहिनी ने एक अन्य बात भी बताई, ''एक बार पहले भी भाभी ने ताई पर व्यंग्य कसा था। उसने ताई जी से पूछा था, 'क्यों ताईजी! वे बहुत बूढ़े हैं?' इस पर ताई ने कहा था, 'नहीं। कला उनसे लज्जा अनुभव कर ठीक ही करती है।' आज कला ने कहा है कि उसके पति उससे लड़े रहते हैं। उनका उससे कई महीने से प्रेममय व्यवहार नहीं है।''

''मैं समझता हूँ,'' महानारायण ने कह दिया, ''कला भाभी का दिमाग खराब हो गया है।''

''जी, यह तो है ही। मैं कुछ और कह रही हूँ। ऐसी औरत घर की ईंट से ईंट बजा देगी।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम ही उससे बहुत घुल–मिलकर बातें करती रहती हो।"

"तभी तो आपको समय पर ही बता रही हूँ कि इस औरत का कुछ इलाज करना चाहिए। 'फिर पछताए होत क्या, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।' वाली बात न हो जाय।"

"अच्छा, भापाजी से बात करूँगा?"

"और वे बड़े भापा को कह देंगे। बड़े भापा लेखवती ताई से कहेंगे और वह कला भाभी से कहेगी। इस प्रकार घर में घोर संग्राम चल पड़ेगा।"

"तो तुम क्या चाहती हो?"

"मैं तो यह चाहती हूँ कि आप पिताजी से कहकर अपने दादा और भाभी को पृथक् घर में रहने की स्वीकृति दिला दें। इस घर के वातावरण को आपकी यह भाभी इतना गंदा कर देगी कि बच्चों तक के लिए यहाँ रहना कठिन हो जाएगा। सदानारायण के भी अब पर निकलने लगे हैं। वह भी भाभी और मुझमें तुलना करने लगा है।"

"क्या कहता था?"

"कहता था कि बड़ी भाभी गोरी और सुन्दर है और छोटी काली और कुरूप है। वह भैया बड़ी भाभी को पसन्द कर लाए थे और छोटी के माता–पिता छोटे भैया की मिन्नत–खुशामद कर यहाँ छोड़ गए हैं। उस को यह किसी ने सिखाया जरूर है। मेरा अनुमान है कि आपकी भाभी की ही कारगुजारी है।

महानारायण ने कह दिया, "पिताजी से कल इस विषय में बात करूँगा।"

परन्तु महानारायण को इसके कहने का अवसर ही नहीं मिला। प्रातःकाल ही घर की स्थिति ने एक नया मोड़ ले लिया। जब रामरक्खामल्ल शिवालय में जल चढ़ाकर आया तो कला कपड़े पहन हाथ में कपड़ों की गठरी पकड़े और गोद में मधु को उठाए सीढ़ियाँ उतरती मिली। रामरक्खामल्ल ने उसे इस प्रकार मकान की छत से उतरते देखा तो एक ओर खड़ा हो मार्ग देता हुआ पूछने लगा, "बहू! कहाँ जा रही हो?"

"ताईजी से पूछ लीजिएगा। यदि न बतायें तो आपको अपने भतीजे से पता चल जाएगा।"

कला ने घूँघट तो उठा ही दिया था। आज उसने क्रोध से यह कहा तो रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, "तो तुम तीनों ने घर में एक गुट बना लिया है?"

कला इसका अर्थ समझने खड़ी हो गई। दोनों ड्योढ़ी में खड़े थे। अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, "श्याम कहाँ है?"

"नरक–कुण्ड में।"

"तुम अकेली ही स्वर्ग में जा रही हो क्या?"

इस व्यंग्य का अर्थ भी वह नहीं समझी। वह घर से बाहर निकल गई और रामरक्खामल्ल विस्मय में देखता खड़ा रह गया। उसने समझा कि अपनी सास से पूछकर ही गई होगी। इस कारण निश्चिन्त हो पूजा–गृह को चला गया। विष्णुनारायण हवन–सामग्री में घी मिला रहा था। सुमित्रा कुण्ड में समिधा जोड़ रही थी। इस समय लेखवती और मोहिनी भी वहाँ आ गईं। महानारायण और श्यामनारायण कभी–कभी ही पूजा–गृह में आते थे। अब सदानन्द और जवाहरलाल भी आने लगे थे।

हवन के पश्चात् सतवंती ने ठाकुरों की चौकी के सामने बैठते हुए पूछा, "आज कला नहीं आई। ठीक है सही?"

उत्तर में रामरक्खामल्ल ने बता दिया, "वह तो कपड़ों की गठरी बगल में लिए हुए कहीं घर से बाहर गई है।"

"घर से बाहर गई है?" सुमित्रा ने घूम अपने जेठ की ओर देखते हुए पूछा।

"हाँ।" साथ ही रामरक्खामल्ल ने सीढ़ियों के नीचे हुई पूर्ण बात बता दी।

इस पर सतवंती ने कहा, "श्याम रात अपने कमरे में नहीं सोया। मैं जब प्रातःकाल चार बजे स्नान करने कुएँ पर जा रही थी तो बैठक का द्वार खुला देख मैं भीतर चली गई। श्याम भूमि पर लेटा खर्राटे भर रहा था।"

"लाज!" विष्णुनारायण ने अपनी विधवा लड़की को कहा, "बेटा! जरा देखना श्याम कहाँ है? उसको बुला लाओ।"

श्याम अभी बैठक में था। वह जाग तो रहा था, परन्तु अभी गम्भीर विचार में निमग्न बैठा था। लाज ने उसको पिता का संदेश दिया तो आँखें मलता–मलता वह ऊपर की मंजिल पर पूजा–गृह में आ खड़ा हुआ। विष्णुनारायण ने पूछा, "बहू कहाँ है श्याम?"

"अपने कमरे में होनी चाहिए। यहाँ नहीं आई क्या?"

"वह अपने कमरे में भी नहीं है।"

"और मधु?"

"वह भी नहीं है। वह मधु को गोदी में लिए और बगल में कपड़ों की गठरी दबाए कहीं बाहर गई है।"

"तो जरूर अपनी माँ के घर गई होगी। मुझको कहकर नहीं गई।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"रात तुम अपने कमरे में नहीं सोए?"

"नहीं, मैं उससे लड़ पड़ा था।"

रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, "तुम लड़े थे अथवा वह तुमसे लड़ी थी?"

"बड़े भापा! मैं उससे लड़ा था। कभी वह मुझसे लड़ा करती थी। रात बात उलटी हुई है। कभी वह मुझको पीटा करती थी, रात मैंने उसको पीटा है?"

रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "वाह रे शेर बहादुर! भला क्यों पीटा है?"

श्यामनारायण आँखें नीची कर विचार करने लगा। कुछ विचारकर बोला, "भापा! यह मेरी और उसके बीच की बात है। मैं समझता हूँ कि न कहूँ तो ठीक रहेगा।"

अब पुनः विष्णुनारायण ने पूछ लिया, "उसको लेने कब जाओगे?"

"अभी तो यही निश्चय है कि मैं न जाऊँ। इतना पता करना चाहता हूँ कि वह अपने माता–पिता के घर गई है अथवा कहीं अन्यत्र। सदा अभी जाकर पता कर आएगा। तब मैं निश्चिन्त हो उसकी प्रतीक्षा करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: 1 :

"दयालसिंह हाई स्कूल में अंग्रेजी के मास्टर दुनीचंद की इकलौती लड़की कला माता–पिता की अतिप्रिय थी। यही कारण था कि उसका स्वभाव उच्छृंखल–सा हो गया था। पिता एक स्वतन्त्र विचारों के व्यक्ति समझे जाते थे। अपने ढंग से वे अनेक सामाजिक बँधनों को तोड़ चुके थे। उन दिनों लड़कियों का विवाह भी प्रायः आठ से दस वर्ष की आयु में कर दिया जाता था, परन्तु मास्टर दुनीचंद ने अपनी लड़की का विवाह सोलह वर्ष की आयु में किया था। मास्टरजी के घर में कभी पूजा–पाठ नहीं होता था। किसी धार्मिक पर्व पर भी घर में किसी प्रकार का समारोह नहीं मनाया जाता था। होली–दीवाली का ज्ञान भी उन्हें स्कूल में होने वाले अवकाशों के कारण ही होता था। उस दिन केवल सो रहने के अतिरिक्त घर पर अन्य कुछ कार्य नहीं होता था। दीवाली के दिन वे भले ही घूमने के लिए कहीं चले जाएँ, परन्तु होली के दिन तो मास्टरजी के घर का द्वार ही बन्द रहता था।

मास्टर जी रात के भोजनोपरान्त थोड़ी सी व्हिस्की का सेवन भी करते थे। वे इसे रोटी पचाने के निमित्त मानते थे। इस पर भी यह एक पैग तक हो जाती थी। कभी–कभी कला की माँ भी इसका रस ले लेती थी।

जिन दिनों श्यामनारायण दसवीं श्रेणी में पढ़ता था, वह मास्टर दुनीचंद से अंग्रेजी और गणित पढ़ने के लिए आ जाया करता था। मास्टर का परिचय श्याम के पिता विष्णुनारायण के साथ था। वास्तव में श्यामनारायण पढ़ाई में अच्छे लड़कों में था और उसको स्कूल के अतिरिक्त किसी मास्टर की सहायता की आवश्यकता नहीं थी, इस पर भी उसने अपने पिता से कहकर, मास्टरजी के घर जाकर उनसे अपनी पढ़ाई में सहायता लेने की स्वीकृति ले ली। दुनीचंद को जब विष्णुनारायण ने इस विषय में कहा तो वह मुफ्त की शोभा कमाने के लिए मान गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यामनारायण ने मास्टरजी की लड़की को स्कूल से आते–जाते देखा था और वह उस पर मुग्ध हो चुका था। यह मास्टरजी के घर में जाकर पढ़ने की योजना, कला से परिचय बढ़ाने तथा मास्टरजी को प्रसन्न कर उससे विवाह करने के विचार से बनी थी।

मास्टरजी की पत्नी तो लड़के की नीयत को समझ गई थी। उसने अपने पति से कहा भी, "यह तो वही लड़का है जो कला के पीछे लगा रहता है। इसीलिए तो लड़की को स्कूल से उठाया था और उसके घूमने जाने का समय भी बदला था।"

मास्टरजी ने गम्भीर होकर कहा, "बात तो कुछ ऐसी ही प्रतीत होती है। यह लड़का अपनी श्रेणी में सदा प्रथम रहता है। इस पर भी इसने अपने पिता को यह कहकर कि इसको कुछ समझने की आवश्यकता रहती है, मुझसे घर पर आकर पढ़ने की स्वीकृति ले ली है।"

"तो किसी बहाने से इसको मना कर दीजिए।"

"क्यों?"

"इसका लड़की से सम्बन्ध बन जाने का भय है।"

"ऐसा होना स्वाभाविक ही है। इस स्वाभाविक बात में हम रुकावट क्यों डालें? मैं कला का इससे विवाह कर दूँगा।"

"मुझको भय है कि विवाह से पूर्व ही कुछ गड़बड़ न हो जाये।"

"तो तुम क्या करती रहती हो घर पर? इतना ध्यान रखना तो तुम्हारा काम है। इनको मिलने दो, परन्तु जब ये सीमा से पार जाने लगें तो इनको रोक दो।"

मास्टरजी की पत्नी कमला, यह तो जानती थी कि हिन्दुस्तानियों की बहुत–सी बातें मास्टरजी को पसंद नहीं, परन्तु अपनी स्वतन्त्रता का प्रसाद वे अपनी लड़की को भी दे देंगे, यह वह आज ही समझ सकी थी। इस पर भी यह बात उसकी समझ में आ गई कि लड़का अच्छा है और यदि कला का उससे विवाह हो सके तो हानि नहीं। इस प्रकार का विचार कर वह घटनाचक्र को स्वाभाविक ढंग पर चलने देने लगी।

फिर कला और श्यामनारायण में भेंट हुई, बातें होने लगीं और परिचय बढ़ने लगा। श्यामनारायण पढ़ने आता तो माँ कला के हाथ चाय बना श्याम के लिए भेज देती। श्याम ने घर पर चाय कभी नहीं पी थी। यहाँ पी तो उसको बहुत पसन्द आई।

इस पर भी मास्टर और कमला को संतोष था कि दोनों को नियम–विरुद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी बात करते अथवा व्यवहार करते देखा या सुना नहीं गया।

श्यामनारायण ने दसवीं पास की तो उसको विदित हो गया था कि अब मास्टरजी अपनी लड़की का विवाह कर देंगे। शर्त यह लगाई गई थी कि वह कहीं नौकर होकर स्वतंत्र कार्य करने लगे। मास्टरजी ने उसको अच्छी नौकरी को पाने का ढंग बता दिया कि वह 'एकाउन्टैंसी' पढ़े और टाइप करना सीख ले। एक वर्ष इसमें लगा। इस पर भी पच्चीस रुपये महीने की नौकरी मिली। इसका परिणाम यह हुआ कि तीन वर्ष तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

इस बीच में विष्णुनारायण ने श्याम की कहीं अन्यत्र, विवाह के लिए बातचीत आरम्भ की तो श्याम ने पिताजी को कह दिया, 'पिताजी! मेरे विवाह के लिए आप मास्टर दुनीचंद को कहें। उनकी लड़की बहुत ही सुन्दर है और मुझको पसन्द है।"

विष्णुनारायण को यह बात पसन्द नहीं आई। परन्तु जब बात घर पर हुई तो रामरक्खामल्ल ने लड़के की इच्छा का समर्थन कर दिया। रामरक्खामल्ल घर में सबसे अधिक पढ़ा–लिखा और समझदार माना जाता था। इससे उसके समर्थन ने श्याम के पक्ष में निश्चय करा दिया। रामरक्खामल्ल को ही मास्टर साहब से बात करने के लिए कहा गया।

रामरक्खामल्ल ने मास्टर साहब से मिलकर बात की तो जहाँ मास्टर जी ने श्याम की प्रतिभा और चरित्रवान होने की प्रशंसा की वहाँ अपनी लड़की के चौथी पास होने की बात भी की। इस पर तो रामरक्खामल्ल गम्भीर हो गया। मास्टर दुनीचंद ने श्यामनारायण के ताया के मुख पर चिन्ता की रेखाएँ देखीं तो पूछ लिया, "क्या बात है? लड़की देखेंगे आप?"

"नहीं, मैं तो यह विचार करने लगा था कि वह चौथी श्रेणी तक पढ़ी है तो उसमें उसी मात्रा में अभिमान भी तो आया होगा?"

"वाह! यह आप कैसे कहते हैं? विद्या से तो विनय आती है।"

"हाँ, परन्तु वह विद्या दूसरी होती है। यह स्कूलों में जो कुछ पढ़ने को मिलता है, वह विनय से दूर करने वाला ही है।"

मास्टर दुनीचंद हँस पड़ा। उसने कहा, "कोई मूर्ख व्यक्ति आपको मिल गया प्रतीत होता है और उसने आपके मन यह भ्रम उत्पन्न कर दिया है।"

रामरक्खामल्ल अभी भी गम्भीर विचार में खोया–सा था। कुछ देर विचार कर उसने कहा, "यदि आपसे एक बात पूछूँ तो आप नाराज तो नहीं होंगे?"

"नहीं–नहीं! आप पूछिए। मुझ को श्याम ने बताया है कि आप बहुत पढ़े–लिखे हैं। आप धर्मशास्त्र बहुत पढ़ते रहते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया–''आपने इतिहास पढ़ा है?''

''हाँ; चौदहवीं श्रेणी तक।''

''राम किस सम्वत् में पैदा हुआ था?''

मास्टरजी खिलखिलाकर हँस पड़े। उन्होंने कहा, ''हमारे इतिहास में तो राम नाम का कोई व्यक्ति किसी दशरथ के घर में पैदा नहीं हुआ। जब पैदा नहीं हुआ तो उसके जन्मदिन की बात कैसे बन गई?''

''देखिए मास्टर साहब! मैं कैलास से कन्या कुमारी तक और कराची से रंगून तक घूमा हूँ। देश के गाँव–गाँव और नगर–नगर से मैं परिचित हूँ। अपने जीवन के पूरे अठारह वर्ष तक मैं घूमता रहा हूँ और मैंने इतने बड़े देश के कोने–कोने में राम का जन्म, राम की लंका पर विजय और अयोध्या में अभिषेक के पर्व मनाये जाते देखे हैं। क्या एक काल्पनिक बात का इतना व्यापक प्रचार हो सकता है? फिर आप तो जानते ही हैं कि किसी बात का गलत उत्तर भिन्न–भिन्न लड़कों का सदा भिन्न–भिन्न होता है। ठीक उत्तर सबका एक ही होता है। इसी कारण जब एक महापुरुष का जन्मदिन पूर्ण देश में एक ही दिन मनाया जाता है तो वह एक वास्तविक तिथि ही है, कल्पना नहीं हो सकती।''

''इन बातों को जिनका प्रमाण नहीं, हमारे इतिहास में प्रामाणिक नहीं माना जाता।''

''प्रमाण तो है। अयोध्या है, रामायण है, लंका है और फिर रामायण में जन्म–कुण्डली है। पंचांगों में सम्वत् और काल का भी वर्णन है।''

''इन सबको इतिहास पढ़ने वाले नहीं मानते।''

''क्यों नहीं मानते? मान लेने से क्या दुःख होता है उनको?''

''रामायण में बहुत सी बातें ऐसी लिखी हैं जो सम्भव नहीं हैं।''

''आपने रामायण पढ़ी है?''

''नहीं, परन्तु सुनी तो है। ताड़का जब मरी तो उसका शरीर सौ योजना लम्बा था।''

''मास्टरजी। योजन कितना लम्बा होता है? कभी बम्बई गये हैं?''

''नहीं।''

''वहाँ हमारी छः छटाँक के बराबर सेर होता है। यहाँ देहात में सवा सेर के बराबर सेर होता है। क्या जाने राक्षसों का शरीर मापने के समय चार अंगुल के बराबर योजन रहा हो।''

दुनीचंद हँस पड़ा और बोला, ''प्रतीत होता है कि आप आर्य समाजी हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब हँसने की बारी रामरक्खामल्ल की थी। उसने कहा, "संस्कृत भाषा में जो मैं पढ़ा हूँ, इसी का नाम अभिमान अथवा दर्प है। अभिमान का अर्थ है अल्पज्ञान, अपनी शक्ति अथवा बुद्धि को अत्यधिक समझना। इस पर भी क्षमा करें। मैं तो आपकी लड़की को श्याम के साथ विवाह के लिए माँगने आया हूँ। लड़के ने लड़की को देखा है और पसन्द किया है।"

"मुझको यह सम्बन्ध स्वीकार है। इस पर भी कुछ देर अभी प्रतीक्षा करनी चाहिये। जरा श्याम के वेतन में वृद्धि हो जाने दीजिये तब विवाह हो जायेगा।"

इस प्रकार श्याम का विवाह तभी हुआ, जब उसका वेतन तीस रुपये हो गया। उस समय श्याम की आयु बीस वर्ष की थी और कला की सोलह वर्ष की। विष्णुनारायण ने विवाह बहुत धूमधाम से किया। आर्य समाज के पंडित विवाह कराने के लिए पहुँचे थे। मास्टर दुनीचंद तो इस सब झगड़े के बिना भी लड़की का हाथ लड़के को पकड़ा देता, परन्तु विष्णुनारायण के और अपनी पत्नी कमला के कहने पर उसने विवाह पर धूमधाम की तथा खिलाने–पिलाने और साथ ही वस्त्र–भूषण पर दो हजार रुपये व्यय कर दिए।

: 2 :

श्यामनारायण को मनपसन्द पत्नी चिर–प्रतीक्षा के उपरान्त मिली तो उसके संयम का बाँध टूट गया। वह पत्नी के लिए व्याकुल रहने लगा। स्त्री–सहज स्वभाव से कला ने इसका प्रयोग पति पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए किया।

कला के घर लड़का हुआ। इस पर भी श्याम की पत्नी के लिए तृष्णा नहीं मरी। कला ने जब अपने पति को अपने अधीन समझा और अपने को लड़के की माँ बन जाने पर श्रेष्ठ पदवी पर पाया तो उसने पृथक् होने की माँग करनी शुरू कर दी।

कला को इस घर में पूजा–पाठ, संध्या–हवन, रामायण का पाठ आदि अस्वाभाविक प्रतीत होता था और वह इस पूर्ण वातावरण से पृथक होने की रट लगाने लगी। साथ ही उसको उस स्वतन्त्रता की अत्यधिक लालसा थी, जो उसे अपने माता–पिता के घर पर प्राप्त रही थी।

अपनी सास और श्वसुर के व्यवहार में तो उसको कोई दोष प्रतीत नहीं हुआ था, इस कारण जब पृथक् होने के लिए कहती तो श्याम पूछ लेता–"क्यों, माताजी ने कुछ कहा है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं तो।"

"तो फिर पृथक् होने की आवश्यकता क्यों है?"

इस पर कला चुप रहती।

जब बार–बार पृथक् होने की बात पर श्याम कारण पूछने लगा तो उसने बड़े भापा के निखट्टू होने की बात चला दी। श्यामनारायण और कला को दलाली कोई काम नहीं प्रतीत होता था। वे इसको समय खराब करना समझते थे। परन्तु कला के कथन का उत्तर न दे सकने पर भी श्यामनारायण अपने माता–पिता से अलग होने से इनकार करता रहा।

एकाएक इस समय पति–पत्नी में झगड़ा हुआ और इसका पता रामरक्खामल्ल को चल गया। इस पर रामरक्खामल्ल ने उसको बताया कि वह दुबलेन्द्रिय होने से पत्नी के पीछे भाग रहा है और वह उसके गले में रस्सा डाल एक गाय की भाँति उसको हाँकती हुई ले जा रही है।

साथ ही रामरक्खामल्ल ने अपनी जीवन–कथा सुना दी। उस समय तो श्याम ने कह दिया कि यह कहानी मात्र है, परन्तु उसका भाव वह समझ गया। वह इस बात को जान गया कि जो कुछ वह कर रहा है, वह सर्वथा पशुपन है। उसकी समझ में आ गया कि नर–पशु मादा–पशु के पीछे भागता है परन्तु मनुष्यों में इसके विपरीत बात है। इससे उसने अपना व्यवहार अपनी पत्नी के प्रति बदला। इस परिवर्तन में कला की उसके मुख पर चपत का बहुत बड़ा भाग था।

धीरे–धीरे अवस्था यह हुई कि कला पति की संगत के लिए लालायित रहने लगी और श्याम दफ्तर से आकर बड़े भापा की बातें सुनने में रुचि लेने लगा।

सायंकाल रामरक्खामल्ल के पास मुहल्ले और बाजार के, उसके मंदिर के साथी और गुरुद्वारा तथा सुथरे की धर्मशाला में जाने वाले साथी और सबसे अधिक आर्यसमाज के साथी, मिलने आ जाते थे। वे भी रामरक्खामल्ल से उसके अनुभव की बातें सुनकर उनका रसास्वादन करते थे। श्याम इन गोष्ठियों में बैठने लगा। उसको भले ही रामरक्खामल्ल की बातें पसन्द नहीं आती थीं, पर उसके मन पर नवीन संस्कार पढ़ने लगे थे।

इस समय लेखवती के गर्भ ठहरा तो कला को अपने पति को पृथक् घर लेने के लिए विवश करने का बहाना मिल गया। यद्यपि उसको उसकी देवरानी मोहिनी ने समझाया था कि वह अपने मन का संदेह घर में किसी से न कहे, कोई भी इस पर विश्वास नहीं करेगा और वह व्यर्थ में निन्दा की पात्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन जायेगी, परन्तु कला ने समझा कि अपने मन की बात बताने का इससे अच्छा अवसर फिर कभी मिलना कठिन है और इस कारण उसने उसी रात बात चला दी और अपने पति से झगड़ा कर बैठी। वह अपने पति में हो रहे परिवर्तन का पता नहीं लगा सकी थी और छः—सात मास के अन्तर में चपत मारने वाली औरत चपत खाने वाली औरत हो गई। इस पर भी श्यामनारायण रूठकर बैठक में सोने के लिए चला गया तो वह मन में इस झगड़े से इच्छित फल निकालने के लिए कटिबद्ध हो गई। इस निश्चय का ही परिणाम था कि वह अपने पति के जागने से पूर्व अपनी माँ के घर को चल दी थी।

पूजा के बाद जब श्याम ने बताया कि सदा जाकर पता कर आये कि वह माँ के घर पहुँची है अथवा नहीं, तो सदानारायण को भेज दिया गया। मास्टर दुनीचंद का मकान गुमटी बाजार में था। सदानारायण को वहाँ जाने में पाँच मिनट लगे। उसने जाकर दरवाजा खटखटाया तो कला ने ही द्वार खोला। वह श्याम के पता करने की आशा कर रही थी। श्याम के स्थान पर सदानारायण को द्वार के बाहर खड़ा देख पूछने लगी, "किस लिए आये हो?"

"भाभी का कुशल—क्षेम पूछने।"

"किसने भेजा है?"

"भैया के कहने पर पिताजी ने?"

"तो कह देना कि अभी जीवित हूँ।"

"भाभी! चाहो तो मैं ले जा सकता हूँ।"

"तुम क्यों ले जाओगे? तुम्हारे भैया क्यों नहीं आये?"

"भैया तो तुम्हारी घर पर प्रतीक्षा कर रहे हैं और मैं घर में छोटा होने से सबका काम कर सकता हूँ।"

कला मुस्कराई और पूछने लगी, "चाय पियोगे?"

"हाँ, भैया एक दिन बता रहे थे कि भाभी के पिता के घर की चाय ने ही उनका भाभी से विवाह करा दिया था।"

कला हँसकर बोली, "तो तुम भी चाय पी लो। कदाचित् तुम्हारा भी विवाह हो जाए।"

"बात तो ठीक है भाभी! परन्तु यहाँ तो कोई लड़की है नहीं और साथ ही मैं अभी छोटा हूँ।"

"आओ, चाय में लड़की बन जाएगी।"

सदा भीतर गया तो मास्टर दुनीचंद अभी बिस्तर पर लेटे—लेटे चाय ले रहे थे। कला की माँ उनके बिस्तर के पास खड़ी चाय दे रही थी। सदा ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमस्ते करने के लिए हाथ जोड़े तो मास्टरजी ने सदा को अपने सामने कुर्सी पर बैठा लिया और पूछने लगे, ''कैसे आए हो सदा?''

''भाभी बिना बताए चली आई हैं। इस कारण इनको देखने के लिए आया था कि ठीक–ठिकाने पहुँच गई हैं अथवा नहीं?''

''तो देख लिया है?''

''जी हाँ। मैंने कहा है कि वे मेरे साथ घर चलना चाहें तो मैं ले जा सकता हूँ।''

''किसके कहने पर कह रहे हो यह?''

''अपने मन से ही कह कहा हूँ।''

''तुम्हारा मन क्या कहता है?''

''भाभी को मेरे साथ चलना चाहिए।''

इस समय तक कला एक प्याला चाय और दो बिस्कुट लेकर आ गई। चाय सदानारायण के हाथ में देते हुए कला ने पूछ लिया, ''मुझको ही चलना चाहिए। तुम्हारे भैया को आकर क्यों नहीं ले जाना चाहिए?''

''यह तो भाभी जानें अथवा भैया जानें। मैं तो सेवा करने की बात कह रहा हूँ।''

इस समय वह चाय पीने लगा था। दो सुरकी लगा उसने कह दिया, ''भाभी, चाय तो बहुत ही स्वादिष्ट है। वहाँ क्यों नहीं बनातीं?''

''जो जिसके योग्य होता है, उसको ही वह मिलता है।''

''तो भाभी! यह अयोग्य को चाय पिला रही हो?''

सदानारायण की हाजिरजवाबी देख माता–पिता और लड़की, तीनों हँसने लगे। सदानारायण मजे में चाय पीता रहा। जब पी चुका तो कला ने कह दिया, ''अब तुम भाग जाओ। भैया से कह देना कि अब मैं उस घर में नहीं आऊँगी। जब वे अपना कोई पृथक् घर बनायेंगे तो मैं उनके साथ उस मकान में जाऊँगी।''

सदानारायण प्रसन्नचित्त घर लौटा। चाय पीने में तथा बातचीत में उसको काफी देर लग गई थी। इस कारण उसके आने पर विष्णुनारायण ने पूछ लिया, ''बहुत देर लगा दी है।''

''पिताजी! भाभी चाय पिलाने लगी थीं।''

''तो वह वहाँ है?''

''बहुत मजे में है।''

''कैसे जाना कि वह बहुत मजे में है?'' सुमित्रा ने पूछा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कहा था कि यदि वह चाहे तो मैं उसको यहाँ से ले जा सकता हूँ। इस पर भी वह आने को तैयार नहीं हुई। इससे मैं यही समझता हूँ कि वह वहाँ मज़े में हैं।"

उसी दिन सायंकाल सदानारायण ने अपने बड़े भाई को बताया कि भाभी कहती हैं कि भैया नया मकान लेंगे तो वह वहाँ उनके साथ चलेंगी।

श्यामनारायण ने इस विषय में अपना निश्चय पक्का कर रक्खा था कि वह उसकी इच्छाओं का विरोध करेगा, इस कारण वह चुप कर रहा।

कई दिन तक मास्टरजी के घर में श्यामनारायण की प्रतीक्षा होती रही, परन्तु जब वह नहीं आया तो वहाँ चिन्ता की जाने लगी। सबसे अधिक चिन्ता कला की माँ को थी। इसी समय तक कला ने अपना सन्देह कि उसका सम्बन्ध अपनी ताई लेखवती से हो गया है, अपने पिता दुनीचंद और माता कमला को भी बता दिया था। इससे तो कमला की चिन्ता और भी बढ़ गई थी, क्योंकि वह समझती थी कि पुरुष को अपनी पत्नी की आवश्यकता केवल वासना तृप्ति के लिए होती है और श्याम की वह आवश्यकता यदि घर में ही अन्य स्त्री से पूरी हो रही है तो उसको अपनी पत्नी की आवश्यकता नहीं रहेगी। इस कारण भी वह शीघ्रातिशीघ्र दोनों में सुलह करा देना चाहती थी।

दुनीचंद मन में एक दूसरी योजना बना रहा था। वह चाहता था कि कला मैट्रिक और तदनन्तर जे.ए.बी. पास कर ले। इतने काल के लिए वह उसका खर्चा देगा। तत्पश्चात् कला अपने तथा बच्चे के लिए पर्याप्त आय कर लेगी।

कला को अपनी माँ के घर में आये बीस दिन हो चुके थे। कमला अधीर हो गई। उसने कला को अपने पास बैठाकर पूछ लिया, "क्या चाहती हो तुम?"

उस समय मास्टर साहब स्कूल गए हुए थे और माँ–बेटी अकेली थीं। मधु दूध पी सो रहा था। कला से यह प्रश्न ऐसे पूछा गया, मानो उसने कोई अपराध किया है। इससे उसने सतर्क हो कहा, "माँ! इसके बताने की आवश्यकता है क्या? औरत अपने पति से क्या चाहती है?"

माँ ने इस विषय पर बहुत मनन किया था और अब एक निष्कर्ष पर पहुँच चुकी थी। उसने बता दिया, "अनेक बातें हैं जो पत्नी चाहती है। कभी जब सब प्राप्त नहीं होतीं तो केवल उन बातों पर ही संतोष करना पड़ता है, जो प्राप्त होती हैं। उदाहरण के रूप में एक स्त्री भूषण, वस्त्र, मकान, जेबखर्चा, शृंगार का सामान, पढ़ने की पुस्तकें, सखियों से मिलने–जुलने की स्वतन्त्रता, पति की संगत, सन्तान और फिर सन्तान के लिए पालन–पोषण की सामग्री

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि बहुत–सी चीजों की इच्छा रखती हैं। कभी इन वस्तुओं की विशेष मात्रा में प्राप्ति का भी स्त्री आग्रह करती है। अब बताओ कि तुम क्या चाहती हो जो तुमको ससुराल में प्राप्त नहीं?''

''माँ! कपड़े, भूषण आदि सब उपलब्ध हैं। मुझको अपने पति की संगत का अभाव अनुभव होने लगा है।''

Central Library
167909
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

''कब से?''

''लगभग पाँच–छः मास से।''

''क्या इसका नितान्त अभाव हो गया है अथवा इसमें कमी आ गई है?''

कमला ने इस प्रकार की व्याख्या से अपनी लड़की से अभी तक नहीं पूछा था। आज पूछने लगी तो कला को अपने विचार प्रकट करने में कठिनाई अनुभव होने लगी। उसने पहले तो विचार किया कि माँ के सामने झूठ बोल दे और कह दे कि नितांत अभाव हो गया है। परन्तु इतना बड़ा झूठ वह कह नहीं सकी। उसने यथार्थ अवस्था का ही वर्णन कर दिया। इस पर कमला ने पूछ लिया, ''उस दिन से पहले क्या बात हुई थी? देखो कला! सत्य बताना। मैं आज इस उलझन को सुलझाने के लिए तुम्हारी सास के पास जा रही हूँ और यदि कोई बात गलत निकली तो मैं तुम्हारी सहायता नहीं कर सकूँगी।''

इस पर कला ने उस रात का वृत्तान्त बता दिया, जिस रात उसने अपने पति के मुख पर चपत मारी थी। माँ वह वृत्तात सुनकर लज्जा से लाल हो गई। उसने कहा, ''तो तुमने अपने पति के मुख पर चपत मारी?''

''हाँ, माँ!''

''और वह चपत तुमने इसलिए मारी कि तुम अपनी सास से पृथक् रहना चाह रही हो? क्यों?''

''यह स्वाभाविक है भी! संसार में सब ऐसा करते हैं। पशु–पक्षी भी और सब देशों के मनुष्य भी। मुझमें भी इच्छा है कि मैं स्वतन्त्रता से चलूँ–फिरूँ।''

यही बात तो मास्टर साहब उसको कहते रहते थे। मास्टर साहब उसको अपने साथ सैर करने, घुड़दौड़ देखने, बाजार से क्रय–विक्रय करने इत्यादि के लिए चलने को कहा करते थे। परन्तु वह स्वभाव से यह समझती थी कि जब घर बैठे सब प्राप्त हो तो व्यर्थ में जूता घिसने के लिए क्यों जाए? जहाँ तक भ्रमण का सम्बन्ध था, वह नित्य प्रातःकाल बावली साहब हो आया करती थी। शेष के लिए, जब तक उसका पति सब–कुछ बैठे–बैठाये ला देता है, वह क्यों कष्ट करे?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब यही बात कला कह रही थी। कमला ने पूछ लिया, "तुमने कभी श्याम को ले चलने के लिए कहा है और उसने अथवा उसकी माँ ने आपत्ति की है?"

कला मौन थी। ऐसी कोई बात कभी भी नहीं हुई थी। इसके विपरीत जब वह हवन पर नहीं जाया करती थी तो उसके श्वसुर के बड़े भाई कहा करते थे, "बहू! जब यहाँ नहीं आती तो बावली साहब ही हो आया करो। प्रातःकाल उठकर काम–धंधा अथवा भ्रमण स्वास्थ्य के लिए बहुत ही अच्छा होता है।"

जब कला चुप रही तो कमला ने कह दिया, "देखो कला! तुम व्यर्थ में कष्ट भोग रही हो। कोई ऐसी बात नहीं, जिसके लिए यह सम्बन्ध टूटे। तुमको अपने घर चले जाना चाहिए।"

"माँ! एक बात और है। उनका सम्बन्ध अब अपनी ताईजी से जो बन गया है?"

"यह तो तुमने पहले भी बताया था। इसी कारण मैंने तुमसे पूछा था कि तुमको संगत मिलती भी है अथवा बिल्कुल नहीं? जब तुम्हरा पेट भर जाता है तो फिर वह ताई से सम्बन्ध रखे हुए हैं, अथवा माँ से, तुमको क्या? जितना तुमको चाहिए, उतना कुछ मिल रहा है।

"देखो कला! तुम्हारे पिता भी देवता नहीं हैं। वे भी कभी 'हीरा–मण्डी' में चले जाते हैं। क्यों? यह मैं नहीं जानती। मैंने कभी पूछा भी नहीं। मैं जब स्वस्थ नहीं होती अथवा उनकी संगत से ऊब जाती हूँ तो वे चले जाया करते हैं। यह कोई लड़ने का कारण नहीं है।"

"वाह माँ! कारण क्यों नहीं है? जो कुछ मेरा है, वह मुझको ही मिलना चाहिए।"

"तुम्हारा कितना है? यह कैसे नापा जाए?"

"उनका सब–कुछ मेरा है?"

"यदि वे दान–दक्षिणा में कुछ देना चाहें तो भी नहीं दे सकते?"

"यह दान–दक्षिणा है क्या?"

"निस्संदेह। मैं नहीं जानती कि तुम्हारा सन्देह कहाँ तक सत्य है। उसको सत्य मान भी लूँ तो मैं लेखवती की तुलना उस निर्धन की पत्नी से करती हूँ कि जिसका पति निखट्टू है और घर पर गुजारे लायक भी नहीं दे सकता। किसी सम्बन्धी का उसको गुजारे लायक अपनी आय में से कुछ देना दान–दक्षिणा ही तो कहलाएगा। परन्तु कला! तुम्हारे पास इस सन्देह का कोई प्रमाण भी है क्या?"

कला फिर चुपकर रही। इस पर कमला ने कहा, "अब दो उपाय हैं। या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अभी तैयार हो जाओ और मैं तुम को तुम्हारे घर छोड़ आती हूँ। अथवा मैं अकेली जाती हूँ और तुम्हारे पति के पाँव पकड़ तुम्हारी ओर से उससे क्षमा माँग लेती हूँ। उसको राजी कर ले आती हूँ और वह तुमको आकर ले जाएगा।''

''और उस योजना का क्या हुआ जो पिताजी बना रहे थे?''

''स्कूल अध्यापिका बनने की?''

''हाँ।''

''तुम गणित नहीं जानतीं। आखिर चौथी जमाअत तक ही तो पढ़ी हो। कुछ अधिक सीखी भी नहीं हो।''

कला को अपनी सास की बात स्मरण हो आई। एक दिन उसने भी उसको कहा था कि उसको गणित नहीं आता। आज उसकी सास की बात का समर्थन उसकी माता ने किया था। इससे उसने कह दिया, ''माँ! पिताजी तो बी.ए. पास किए हैं। वे तो मुझसे और तुमसे अधिक गणित सीखे हैं?''

''मैं समझती हूँ कि आजकल अंग्रेजी पढ़ाते–पढ़ाते वो गणित, जो उन्होंने केवल स्कूलों में सीखा था, भूल गए हैं। मुझको तो घर का हिसाब रखना होता है। इस कारण मैं उनसे अधिक जानती हूँ। गणित तो अभ्यास की विद्या है।

''भला बताओ तो एक जे.ए.वी. पास किए अध्यापक को कितना वेतन मिलता है?''

''पच्चीस रुपये।''

''ठीक। कितने वर्ष में यह परीक्षा पास कर लोगी?''

कला ने मन–ही–मन गिनती कर बताया, ''बहुत तेजी से पढ़ूँ तो भी सात वर्ष तो लग ही जायेंगे।''

''मेरी गिनती के अनुसार सात वर्ष की मेहनत के पश्चात् तुम उतना भी पैदा नहीं कर सकोगी, जितना तुम अब पाती हो।''

''अब तो केवल पाँच रुपये मिलते हैं?''

''यही तो तुम गिनना नहीं जानतीं। एक कमरे में रहती हो, रोटी, कपड़ा, भूषण, श्रृंगार का सामान सब कुछ का मूल्य, मैं समझती हूँ कि तीस–चालीस रुपये महीने से कम नहीं बैठेगा। तुम्हारा बच्चा दिन में सवा सेर दूध पी जाता है। वह एक महीने में चालीस सेर के लगभग होता है। दो आने सेर दूध समझ ले तो पाँच रुपये महीने का तो उसका दूध ही हो जाता है। उसके कपड़े इत्यादि हैं और फिर वह बड़ा होगा तो उसकी पढ़ाई का खर्चा भी करोगी।''

कमला ने कुछ ठहरकर और कला के चेहरे पर दृष्टि डालकर कहा,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"साथ ही यह भी सोच लो कि तुम पढ़ाती–पढ़ाती बूढ़ी हो जाओ तो भी वेतन पचपन तक ही पहुँच सकेगा।"

कला को अब सास की गिनती का रहस्य पता चला। वह उदास होकर बोली, "तो माँ! क्या करने को कहती हो?"

"एक भली औरत की भाँति कपड़े पहनो, अपने बच्चे को उठाओ और चलो मेरे साथ। जाकर दोनों सासों के चरण–स्पर्श करना, अपनी फफेस को भी पांय–लागूँ कहना। ननद और देवरानी के गले से मिलना। पति के आने से पहले उसके लिए कमरे की सफाई और पलंग पर सफेद बिछौना तैयार रखना।" इतना कहते–कहते माँ के मुख पर मुस्कराहट आ गई।

कला की आँखें डबडबा आई थीं। वह अपनी पराजय से विक्षुब्ध हो उठी थी। इस पर भी वह उठी और बच्चे को तैयार करने लगी।

: 3 :

श्याम के मन में उदासी बनी रहती थी और कभी–कभी वह विचार करता कि सुलह कर लेनी चाहिए। औरत मूर्ख होती है, वह यह कहकर अपने मन को अपनी बुद्धि के विपरीत कार्य करने के लिए समझाने का यत्न करता रहता था। एक बात उसके मन में बैठ रही थी कि उसका ताया बहुत समझदार व्यक्ति है। इससे वह, जब–जब भी उसके मन में अपने विषय में सन्देह होने लगता था, अपने ताया के पास जा अपने संदेह का निवारण कर लेता था।

"भापा!" वह पूछता, "हठ की निन्दा क्यों की गई है, और हठी व्यक्ति को बुरा क्यों माना गया है?"

"श्याम! हठ उस बात के करने पर दृढ़ रहने को कहते हैं, जिसको अक्ल न माने, जिसको आप्त पुरुष मेरा मतलब है विद्वान लोग गलत समझें और जिसको धर्म–मर्यादा बुरा माने।"

इससे वह अपने मन में सोचता कि अपनी पत्नी को उसका न लाना क्या हठ है? इसकी और व्याख्या के लिए उसने पूछ लिया, "और भापा! युक्तियुक्त बात पर, जो धर्म, न्याय और मर्यादा से ठीक हो, डटे रहने को क्या कहते हैं?"

"उसको निष्ठा, कर्त्तव्य–परायणता अथवा धर्माचरण कहते हैं। इससे स्वर्ग प्राप्त होता है।"

"स्वर्ग क्या होता है? किसी ने देखा है क्या?"

"हाँ; मैंने देखा है। नित्य देखता हूँ। वह इसी भूतल पर है। देखो श्याम!"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामरक्खामल्ल ने कहा, ''मैंने एक दिन तुमको अपने जीवन का एक पृष्ठ पढ़कर सुनाया था। तुमको उस पर विश्वास नहीं आया था, परन्तु तुम भूल गए थे कि उस वृत्तान्त का एक प्रमाण तो तुम्हारी ताई यहाँ उपस्थित है। उससे कभी पूछते तो वह तुमको बताती कि कैसे उसको यह ज्ञात हुआ था कि मेरा उससे जन्म–जन्मान्तर का सम्बन्ध है।

''यह तो तुम उससे पूछना, परन्तु मैं तुमको अपने जीवन का एक दूसरा पृष्ठ पढ़कर सुनाता हूँ। मुझको लेख–जैसी प्रिय, प्रेममयी और मेरी समस्त इच्छाओं को पूर्ण करने वाली स्त्री क्यों मिली?

''मैं कैलास की यात्रा पर जा रहा था। हिमाचल की अन्तिम पर्वत–शृंखला पार कर रहा था। हम बहुत ऊँचाई पर थे और सर्दी बहुत अधिक थी। रात होने वाली थी। पहाड़ के नीचे एक घाटी में धुआं दिखाई दिया तो मैं अपने सब साथियों को छोड़ नीचे उतर गया। दो–तीन सौ फुट नीचे उतरा हूँगा कि एक गुफा में से धुआँ निकलता दिखाई दिया। वहाँ ऊपर से कुछ कम सर्दी थी, इस पर भी पर्याप्त थी। गुफा में आग की सम्भावना देख मैं भीतर घुस गया। एक कोने में आग जल रही थी। आग के सामने एक तिब्बती आदमी और एक स्त्री बैठी थी। उनके बीच में एक बंगाली युवक था। मैंने नमस्कार किया और आग के सामने अपना कम्बल बिछाकर बैठ गया। मुझे देख वे तीनों मेरी ओर प्रश्न–भरी दृष्टि में देखने लगे। तिब्बती आदमी उस बंगाली युवक को बताने लगा कि सुगम मार्ग कैलास की प्रदक्षिणा करने का यहाँ से नीचे को चला जाता है। ऊपर के मार्ग से बर्फ के ढेले गिरने की सम्भावना सदा बनी रहती है।

''मुझको साधुओं ने बताया था कि नीचे का मार्ग अब टूट चुका है और चालू नहीं। इसीलिए मैंने उस तिब्बती से पूछा, 'नीचे का मार्ग कबसे खुला है?'

''इस पर तिब्बती विस्मय से मेरा मुख देखने लगा। मैंने इससे संशित–मन हो बंगाली महाशय से पूछ लिया कि वह कहाँ से आया है और अकेला सामान आदि के बिना क्यों आया है?

''इस पर बंगाली ने बताया कि वह तीन नौकरों के साथ है। उसका सारा सामान एक याक पर लदा हुआ है। वे ऊपर के मार्ग से जा रहे हैं। यह तिब्बती लामा उसको नीचे ले आया है। इसका कहना है कि कल प्रातःकाल यह जाकर मेरे नौकरों को और सामान को नीचे ले आयेगा और तब सब इकट्ठे यहाँ से चलेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बंगाली इस योजना को बताता हुआ कुछ सुख अनुभव कर रहा था, परन्तु वह तिब्बती और उसके साथ एक युवा स्त्री चिन्ता अनुभव करते प्रतीत हो रहे थे। उन दोनों की परेशानी का कारण मेरी समझ में नहीं आ रहा था।

"मैंने अपने थैले में से चने और गुड़ निकाला और खाने के लिए बंगाली और तिब्बती को भी देना चाहा। इस पर उस तिब्बती ने कहा, 'हमारे लिए खाना बन रहा है?'

" 'कहाँ?' मैंने पूछा।

" 'इस लड़की की माँ इस गुफा के भीतर खाना बना रही है।'

"मेरी समझ में नहीं आया कि गुफा का भीतर भी कहीं है। मैंने अब कुछ ध्यान से गुफा को देखना आरम्भ किया। दूर एक अन्धेरे कोने में एक दरार दिखाई दी। मैं समझा कि हो–न–हो वही भीतर का द्वार है। मैंने उस तिब्बती से पूछा, 'तुम इसी स्थान पर रहते हो?'

"उस तिब्बती पुरुष ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप मेरा मुख देखता रहा। उसका यह व्यवहार मेरे मन में सन्देह ही उत्पन्न करता था। एकाएक वह युवा लड़की उठी और मेरे समीप मेरे कम्बल पर आ बैठी और मेरी ओर लालसा भरी दृष्टि से देखने लगी। मैं चने चबा रहा था। मैंने कुछ चने हाथ पर रखकर उसकी ओर कर दिये। इस पर उसने उस पुरुष की ओर देखा। वह तिब्बती मुस्कराया तो उसने चने ले लिए और चबाने लगी। मैं इस सब का अर्थ नहीं जान सका। कुछ देर तक हम चुपचाप बैठे रहे। बाहर अंधेरा हो गया था। गुफा में तो पहले ही अँधेरा था। केवल जलती हुई अग्नि का प्रकाश था।

"मुझको कुछ ऐसा भास होने लगा था कि ये उस बंगाली युवक का कुछ अनिष्ट करने वाले हैं। इस पर भी यह सन्देहमात्र ही था। मैंने नीचे के रास्ते के विषय में पुनः बात चलाई तो वह बोला, 'दिन निकलने पर बताऊँगा।'

"पर्वत की उस दरार में से एक स्त्री एक प्याले में एक दलिए की भाँति बनी हुई वस्तु लेकर आई। उसने मुझको देखा तो विस्मय से मेरा मुख देखने लगी। इस पर तिब्बती ने उसको अपनी भाषा में कुछ कहा। उस स्त्री ने इसका कुछ उत्तर दिया। इससे तिब्बती फिर परेशानी अनुभव करने लगा। कुछ विचार कर उसने फिर उस स्त्री को कुछ कहा। इस पर वह भीतर चली गई। कुछ देर बाद एक खाली प्याला ले आई। मैंने देखा, उस खाली प्याले में दलिया लगा हुआ है। अब उसने पहले प्याले का आधा दलिया इस खाली प्याले में डालकर दोनों प्याले मेरे और बंगाली महाशय के सामने लाकर रख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिए। बंगाली खाने लगा तो मैंने उसके सामने अपना प्याला भी रख दिया और कहा, 'मुझको भूख नहीं और मेरे पास चने भी हैं। यह भी तुम खाओ।'

"इस पर युवा लड़की ने मुझको अपना प्याला बंगाली को देने से मना कर दिया। तिब्बती ने कहा, 'बाँटकर खाना चाहिए।'

"इस पर मैंने हँसते हुए कहा, 'तो आओ सब खायें। जितना–जितना हिस्से में आएगा, उतना ही लेंगे।'

"एकाएक तिब्बती के मुख से निकल गया, 'हमारे लिए और बन रहा है।'

" 'तो वह भी आ जाने दो।'

" 'नहीं, आप दोनों खाइये।'

"मैंने बंगाली महाशय को अपना संदेह बताते हुए कहा, 'मत खाना यह विष–युक्त है।'

"बंगाली का हाथ मुख में जाता–जाता रुक गया।

"तिब्बती ने अपनी भाषा में कुछ क्रोध में कहा। मैंने अनुमान लगाया कि वह मुझको गाली दे रहा है। इस पर मेरे कम्बल पर बैठी युवती ने मेरी जांघ पर हाथ रख मुझको कुछ संकेत किया। मैं उसका अर्थ नहीं समझा। बंगाली ने प्याला उठाकर तिब्बती के सामने रख कर कहा, 'सब आ जाने दो, तब ही खायेंगे।'

"अब तिब्बती ने कुछ कड़ी भाषा में मुझे कहा, 'साधु! क्या प्रमाण है तुम्हारे कहने का?'

" 'तो तुम यह खाकर दिखाओ?'

"इस पर तिब्बती ने दोनों प्याले उठाकर उस प्रौढ़ा स्त्री को देकर कहा, 'यह साधु सन्देह करता है। इस कारण इनको ले जाओ।'

"वह स्त्री पर्वत की दरार में चली गई। इसके पश्चात् वह पुरुष भी उस औरत के पीछे–पीछे भीतर चला गया। मैंने बंगाली को कह दिया, 'कल तुम मेरे साथ ऊपर के मार्ग से ही चलना।'

"बंगाली भयभीत था। इतने में वह बड़ी आयु की स्त्री एक कम्बल ले आई और आग के समीप बिछा, उस पर लेटकर और कुछ ऊपर ओढ़कर बंगाली को संकेत से अपने साथ लेट जाने को कहने लगी।

"बगाली ने मेरी ओर देखा तो मैंने अपने कम्बल पर बैठी युवती को अपनी माँ के पास जाकर लेट जाने को कहा, परन्तु वह मुस्कराते और मेरे ही कम्बल में सोने का संकेत करने लगी। मैंने भी संकेत से अपने कानों के कुण्डल छूकर बताया कि मैं साधु हूँ। इस पर वह हँस पड़ी और हँसकर बोली, 'मैं सुन्दर और युवा हूँ?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुझको उसे हिन्दुस्तानी बोलते देख विस्मय हुआ। यह पहला ही वाक्य था, जो वह बोली थी। मैंने उसको कहा, 'अपने पति के पास चली जाओ।'

"मेरा अनुमान था कि वह उस तिब्बती की पत्नी है। साथ ही मैं यह समझ रहा था कि यह बूढ़ी स्त्री उस तिब्बती की सास होगी। परन्तु वह युवती बोली, 'वह पुरुष मेरा पिता है। यह माँ है।'

"तुम्हारा पिता कहाँ गया है?"

"वह गुफा के भीतर सो रहा है।"

"तो तुम लोग यहाँ रहते हो?"

"हाँ, हम यात्रियों से उनको मार्ग दिखाने पर दान–दक्षिणा माँगते हैं।"

"इस पर मैंने कह दिया, 'मार्ग दिखाकर अथवा यमपुरी पहुँचाकर?'

"वह मुस्कराई और मेरे साथ सटकर धीरे से बोली, 'तुम बीच में क्यों पड़ते हो?'

"और तुम इस पाप में क्यों सम्मिलित हो रही हो?' मैंने भी उसके कान में कह दिया।

" 'तो पेट कैसे भरें?'

" 'चलो मेरे साथ। तुमको मालामाल कर दूँगा।'

"बंगाली आग के कुछ और समीप हो गया था। आग कुछ धीमी पड़ गई थी। मेरे कथन पर वह मुस्कराई और बोली, 'मैं तुम्हारे साथ रहूँगी।'

" 'मैं तो साधु हूँ।' मैंने कहा।

" 'मैं साध्वी बन जाऊँगी।'

" 'इस यात्री के साथ ही चली जाओ। यह बहुत धनी प्रतीत होता है।'

" 'हाँ, इसके पास पाँच सहस्र रुपया है।'

" 'इसके घर पर तो और भी अधिक होगा।'

" 'यह मुझको पसन्द नहीं। तुम ठीक हो। आज रात मेरे साथ सोकर देख लो।'

" 'नहीं; यहाँ सबके सामने यह नहीं हो सकता। मेरे साथ चलो। अपने पिता को बुलाओ। यात्री का सब रुपया दिलवा देता हूँ तुमको मोल लेने के लिए। फिर हमारे साथ चलना। यहाँ सर्दी में क्या करोगी?'

"वह चुप रही। उसको मेरी बात ठीक प्रतीत हो रही थी। एकाएक वह अपनी भाषा में अपनी माँ से बातें करने लगी। मैं समझ गया कि वह मुझको भी अपने षड्यन्त्र में सम्मिलित करने की योजना बना रही थी। बंगाली मुझको इस लड़की के साथ घुल–घुलकर बातें करते देख मुझ पर भी संदेह करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा था। इस समय वह बड़ी स्त्री उठी और गुफा के भीतर चली गई। मैं आग सुलगाने के बहाने बंगाली के समीप चला गया और उससे बोला, 'बाबू! बुरी तरह फँस गए हो इनके जाल में।'

" 'यह लड़की बहुत बदमाश है। यही मुझको फँसाकर यहाँ लाई है।'

" 'तुम देखते जाओ। मैं इससे निपट रहा हूँ।'

"इतने में वह तिब्बती हाथ में खुखरी लिए हुए सामने आ खड़ा हुआ। अब तो बात स्पष्ट हो गई थी। मैंने बंगाली को कह दिया, 'डरो नहीं।'

"मुझको अब ध्यान से देखने पर प्रतीत हुआ कि वह तिब्बती नहीं, कोई नेपाली है। उसकी खुखरी ने रहस्योद्घाटन कर दिया था। धोखा उसके और इन स्त्रियों के वस्त्र देखकर हुआ था। मैंने नेपाली से कहा, 'कितना रुपया चाहते हो?'

"जितना इसके पास है।'

"मैंने मुख से हवा कर आग तेज कर दी। आग के इस प्रकाश से मैंने देखा कि दोनों स्त्रियों के हाथ में भी खुखरियाँ है। इस प्रकार तीन शस्त्र–धारियों के बीच अपने को घिरा देख मैं अपनी योजना बनाने लगा। मैंने कहा, 'इस रक्तपात की आवश्यकता नहीं। सब रुपया तुमको दे दिया जाएगा। मैंने यात्री को राजी कर लिया है। परन्तु वह आप तीनों की खुखरिया इस धन के बदले में चाहता है।''

" 'यह नहीं होगा।' नेपाली ने कहा।

"मैंने उसको कहा, 'मेरी बात सुन लो।' इस समय मैं उठ खड़ा हुआ था, 'तनिक इधर आओ। मैं तुमको समझाता हूँ।'

" 'वह मेरे झांसे में आ गया। कदाचित् वह भी मुझसे बात करना चाहता था। हम दोनों गुफा के द्वार के पास चले गए। मैंने उसको कहा, 'रुपया मिल जाएगा। वह कल प्रातःकाल अपने नौकरों के साथ कैलास–यात्रा पर चला जाएगा।'

'और उसके नौकर नीचे आकर हमारी हत्या कर देंगे।'

'तो तुम उसको लूटकर यहाँ ही रहोगे? तुम भी चलो। तुम रुपया लेकर नेपाल चले जाना। मैं तुम्हारी सहायता कर दूँगा।'

" 'तुम क्यों करोगे?'

" 'व्यर्थ की हत्या से बचाने के लिए। यह भारी पाप है। बिना पाप किए रुपया मिल रहा है।'

" 'तुम लड़की को ले जाओगे?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'उसका नेपाल में किसी अच्छे आदमी से विवाह कर देना। मैं साधु हूँ। औरत को छू नहीं सकता।'

"इस समय मैं देख रहा था कि वह असावधान होता है अथवा नहीं। मैंने लड़की के विषय में अपने विचार बताये तो वह कुछ निश्चिंत हुआ। मैंने उसकी खुखरी वाली बाँह पकड़कर उठा दी और खुखरी छीन ली। यह सब एकाएक हुआ और वह भौचक्का मुख देखता रह गया। मैंने उसकी कलाई को इतनी जोर से पकड़ा कि उसकी पकड़ ढीली पड़ गई थी। मैंने खुखरी छीनी तो वह चिल्लाया। इस समय एक खुखरी मेरे कंधे पर आ गिरी। यह उस बड़ी स्त्री ने निशाना बाँध मारी थी। अंधेरे के कारण अथवा अन्तर पर्याप्त होने के कारण निशाना ठीक नहीं बैठा। मेरे हृदय–स्थल के स्थान पर मेरा बाया कंधा घायल हुआ। मेरी पकड़ नेपाली के हाथ की ढीली पड़ गई। नेपाली अब मेरे दाहिने हाथ से खुखरी छीनने को आगे बढ़ा तो मैं दो पग पीछे हट गया। इस समय लड़की की खुखरी उड़ती हुई आई। वह भी मेरे लिए ही थी। पहली खुखरी का वार खाली जाता देख लड़की ने यह वार कर दिया प्रतीत होता था। परन्तु मेरे दो पग पीछे हो जाने के कारण यह निशाना भी चूक गया। मेरे स्थान पर यह नेपाली के हृदय में लगी और वह वहीं ढेर हो गया।

"मेरा बायाँ कंधा बुरी तरह घायल हुआ था। इस पर भी मैं अभी लड़ने की क्षमता रखता था। परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी। वह बंगाली अब दोनों स्त्रियों को शस्त्र–विहीन देख उस प्रौढ़ा पर पिल पड़ा। इस समय मैं दाहिने हाथ में खुखरी लिए वहाँ पहुँच गया। लड़की तो दूर हट गई और मैंने अब देरी न करने के विचार से अपनी खुखरी उस बड़ी आयु की स्त्री की कुक्षि में घुसेड़ दी। वह भूमि पर लेट तड़पने लगी। मेरे कंधे से भी बहुत रक्त बह रहा था। कुछ अधिक समय नहीं था। मैं दुर्बलता अनुभव करने लगा था। मैंने उस लड़की को बुलाया, 'इधर आओ।'

"वह सहमी हुई समीप आई तो मैंने उसको कहा, 'चलोगी मेरे साथ?'

"उसने कह दिया, 'मैंने पिता की हत्या भी इसी कारण की है।'

"मुझको उसके कथन पर सन्देह था। इस पर भी अब और अधिक झगड़ा न करने के लिए कह दिया, 'मेरे कंधे पर बाँधने के लिए कपड़ा है?'

"वह कुछ परेशान प्रतीत होती थी। कदाचित् वहाँ कोई कपड़ा नहीं था। बंगाली ने तुरन्त अपना कोट उतारा और अपनी कमीज फाड़ डाली। उसने मेरे कंधे पर पट्टी बाँध दी। इसमें भी लड़की अधिक योग्य सिद्ध हुई। उसने मेरा घाव बाँधा तो रक्त बंद हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब तक नेपाली और उसकी स्त्री बिल्कुल ठंडे हो चुके थे। मैंने तीनों खुखरियों को अपने अधिकार में कर लिया। अग्नि के प्रकाश में सामने बैठी लड़की का पीत–मुख देख मैं पूछने लगा, 'बताओ! तुमको भी तुम्हारे माता–पिता के साथ ही सुला दूँ।'

"वह बोली, 'साधु! मैंने तुम्हारी जान बचाई है। पिता के स्थान मैं तुमको समाप्त कर सकती थी। यह सब तुम्हारे लिए ही है। मैं तुम्हारे साथ चलूँगी।'

"मुझको उसके कथन पर किंचित् मात्र भी विश्वास नहीं था। इस पर भी वहाँ से लौटने का मार्ग भी तो पाना था। साथ ही व्यर्थ की हत्या का विचार छोड़ मैंने उसको कहा, 'इस कम्बली में सो जाओ।' मैंने उसकी माँ के कम्बल की ओर संकेत कर दिया।

"वह जाकर उसमें लेट गई। बंगाली युवक ने मेरा कम्बल मेरे ऊपर डाल दिया। मैंने उसको कहा, 'सोयेंगे नहीं। आग सुलगाते रहो। मेरा घाव अब पीड़ा करने लगा है।'

"हमने पूरी रात आग के आश्रय में काट दी। वह लड़की सोई अथवा नहीं, कहना कठिन है। वह चुपचाप कम्बल में लिपटी पड़ी रही। अगले दिन उठकर उस लड़की को साथ ले हम ऊपर चढ़ गए। मैं दुर्बलता अनुभव कर रहा था। धीरे–धीरे हम चढ़कर उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ याक और उस बंगाली के नौकर बैठे हुए थे।

"उसने अपने नौकरों को बताया, 'मैं लौट रहा हूँ, मैं आगे नहीं जाना चाहता।'

"मेरे घाव में भी तीव्र वेदना हो रही थी। बंगाली इतना भयभीत हो गया था कि आगे जाने का साहस नहीं हुआ।

"इस प्रकार हम सब लौट पड़े।

: 4 :

"मार्ग में बंगाली ने बताया कि उस लड़की ने ही उसको रात में प्रसन्न करने का वचन देकर निचले स्थान पर चलने के लिए तैयार किया था। वह नेपाली और ये दोनों स्त्रियाँ अल्मोड़ा से ही उसके साथ आ रहे थे।

"अल्मोड़ा पहुँचने तक मैंने उस लड़की को बता दिया कि मैं साधु होने के कारण विवाह नहीं करूँगा। वह बहुत रोई–धोई, परन्तु मैं नहीं माना। वह बंगाली तो उसको साथ ले जाने को तैयार नहीं होता था। अन्त में वह बंगाली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के एक नौकर से सांठगांठ लगा, उसके साथ चल दी। बंगाली मुझे एक हजार रुपया देने लगा, परन्तु मैंने कुछ नहीं लिया।

"मेरा घाव ठीक होने में एक मास लग गया और तब तक मैं अल्मोड़ा में ही रहा।

"देखो श्याम! यह है जिसके कारण मुझको यह स्वर्ग मिला है, जिसको मैं अब भोग रहा हूँ।"

"क्या स्वर्ग भोग रहे हो भापा?"

"तो तुम नहीं जानते? मैं इस संसार में सब प्रकार से सुखी हूँ। पत्नी है, जो सुन्दर, सुशील, आज्ञाकारी और प्रेममयी है। तुम्हारे माता–पिता हैं। वे मेरा आदर करते हैं। दिन में दो–ढाई घंटा काम करता हूँ और खाने–पीने से अधिक कमाई कर लेता हूँ। शेष समय स्वाध्याय और लोक–कल्याण में लगाता हूँ। प्रातः प्राणायाम, योग–साधना तथा जप–तप में व्यतीत होता है। मध्याह्न उपनिषदादि ग्रन्थ पढ़ता हूँ। सायंकाल मित्रों में बातचीत होती है। मन्दिर में भक्तजनों से मिलता हूँ। बावली साहब में निष्ठावान सिक्खों के दर्शन होते हैं। आर्य समाज के विद्वानों से सम्पर्क होता है। फिर सुथरे–साधु हैं। ये बेचारे सरल चित्त और स्पष्ट वक्ता हैं। इनमें से कुछ तो मेरी भाँति दूर–दृष्टि रखने वाले भी हैं।

"श्याम! इतना कुछ ही तो स्वर्ग होता है। मुझको किसी प्रकार की कोई चिन्ता नहीं। कोई जिये, कोई मरे, सुथरा घोंल बतासा पिये।"

"और जवाहर के विषय में क्या विचार है आपका?"

"वह नास्तिक बन रहा है। वह सुख, आराम और ऐश का जीवन व्यतीत करेगा। मैंने उसके श्रेय का मार्ग बताया था। उसने प्रेय का मार्ग स्वीकार कर लिया है। इस पर भी उसकी करनी का फल उसके साथ है। मेरी करनी का मेरे साथ।"

"भापा! मैं कला के विषय में कुछ पूछ रहा हूँ।"

"क्या पूछा है तुमने?"

"यही कि क्या मैं हठ छोड़कर उसको ले आऊँ?"

"वह आयेगी नहीं। तुम्हारे कहने से नहीं आयेगी। अपने मन में जब वह अपनी भूल स्वीकार करेगी, उस समय ही वह आकर रह सकेगी। मैं समझता हूँ कि हठ वह कर रही है। वह हठ छोड़ेगी तो तुमको और उसको भी सुख मिलेगा।"

इस वार्त्ता के एक सप्ताह पश्चात् श्यामनारायण अपने कार्यालय से लौटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि घर के सब प्राणी उसकी ओर देख–देख मुस्करा रहे हैं। वह बैठक से घर में गया तो माँ ने आकर उससे कहा, "आज अल्पाहार तुमको अपने कमरे में ही मिलेगा।"

"यहीं ले आओ माँ!"

"नहीं बेटा! वहाँ रखा है।"

श्याम इसका कुछ अर्थ न समझते हुए ऊपर कमरे में चला गया। वहाँ कला को खड़े और तिपाई पर दूध–मिठाई रखे देख विस्मय में मुख देखता रह गया। उसके पहुँचने पर कला ने एक नई बात की। वह भूमि पर बैठ गई और अपना माथा उसके चरणों में रख नमस्कार करने लगी। श्याम पीछे हट पूछने लगा, "क्या करती हो कला?"

"अपने पाप का प्रायश्चित कर रही हूँ।"

"तो तुमने कोई पाप किया था?"

वह उठकर खड़ी हो गई और बोली, "आप अल्पाहार लीजिए। मैं अब वचन देती हूँ कि जन्मभर कोई अवज्ञा नहीं करूँगी।"

"अच्छी बात है। सुबह का भूला रात को घर आ जाये, तो भी यह प्रसन्नता की ही बात है।"

दोनों नाश्ता करने लगे तो श्याम ने पूछ लिया, "ऐसा प्रतीत होता है कि तुम अपनी माँ के घर भूखी रहती रही हो।"

"हाँ, माँ कहती थी कि लड़कियों का पेट माँ के घर में नहीं भरता।"

"और तुम क्या कहती हो?"

"मुझको भी माँ की बात ठीक प्रतीत हुई है।"

"तो पेट भर लो।"

"वह तो कर रही हूँ। आपकी कृपा बनी रही तो यह गड्ढ़ा शीघ्र ही भर जायेगा।"

श्याम हँस पड़ा। कला भी हँसी और कहने लगी, "मैं समझती थी कि पति को पत्नी की अधिक आवश्यकता रहती है, परन्तु अनुभव इसके विपरीत हुआ है। मैं झख मारकर लौट आई हूँ।"

"तुम तो समझती थीं कि सुन्दर स्त्रियाँ संसार पर राज्य करती हैं। अब बताओ क्या विचार है?"

"मुझको अपना–आप, कुरूप दिखाई देने लगा है।"

"हाँ, मेरा विचार है कि थोड़ा श्रृंगार करना सीख लो। कुछ तो ठीक हो ही जाओगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विचार तो ठीक है। सोचती हूँ कौन सिखायेगा इस मूर्ख, गँवार को?"

"मैं बताता हूँ। ताई लेखवती है और यदि उससे सुर न मिले तो भाभी मोहिनी है। दोनों अपना रूप-रंग ऐसा बनाकर रखती हैं कि उनके पति उनकी प्रशंसा करते थकते नहीं।"

"तो जिसको आप उचित गुरु समझें, उससे मेरी सिफारिश कर दें।"

"मैं औरतों की बातों में दखल नहीं देता। हाँ, यदि वे दोनों ही तुमको ना कर दें तो माँ से कहना। उनके सामने तो मैं भी सिफारिश कर दूँगा।"

"और ताई तथा भाभी के सामने क्यों नहीं?" कला ने मुस्कराते हुए पूछा।

"इसलिए कि मेरा जो अधिकार माँ पर है, वह ताई और भाभी पर नहीं। मुझको तो ऐसा प्रतीत होता है कि मैं माँ का ही एक अंश हूँ।"

कला को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके चले जाने को, घर के सब प्राणी सर्वथा साधारण बात समझ विस्मरण कर चुके हैं। जब उसकी माँ उसे लेकर आई तो रामरक्खामल्ल भोजन करने के लिए आ रहा था। वह गली में प्रविष्ट हुआ तो कला और कमला आगे चलती हुई दिखाई दीं। रामरक्खामल्ल ने पीछे से आवाज दे दी, "समधिन बहिन! कुशल तो है? मास्टरजी कैसे हैं?"

कला ने आवाज सुन घूँघट कर लिया। कमला ने हाथ जोड़कर कह दिया, "सब ठीक है। बहुत दिन हुए थे बहिनजी के दर्शन किए। मैंने समझा कि आज चलना ही चाहिए।"

इस समय वे घर के द्वार पर पहुँच गए थे। रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "तो आओ, सुमित्रा बहिन रसोईघर में होंगी। आओ कला! मधु ठीक रहा है न?"

रामरक्खामल्ल धड़ाधड़ सीढ़ियों पर चढ़ गया। कमला इस वृद्ध को युवा पुरुषों की भाँति सीढ़ियाँ चढ़ते देख विस्मय करती रह गई। रामरक्खामल्ल तो हाथ धो रसोईघर में चला गया, कला और कमला रसोईघर के बाहर जा खड़ी हो गईं। भीतर विष्णुनारायण भी बैठा था। सुमित्रा ने उनको देखा तो कह दिया, "कला बेटी! अपनी माँ को कमरे में बैठाओ। मैं अभी इनको खाना परोस कर आती हूँ।"

इस पर भी कला भीतर आई और तीनों घर के वृद्ध जनों को भूमि पर सर टेक चरण-वंदना कर हाथ जोड़े खड़ी रह गई। उसने अभी भी घूँघट निकाला हुआ था। विष्णुनारायण ने कह दिया, "सुखी रहो बेटी! अभी बैठो। सुमित्रा अभी आती है।"

जब पुरुष-वर्ग भोजन कर चुका तो सतवन्ती, लाज, लेख और मोहिनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ गई। सुमित्रा श्याम के कमरे में गई और कला तथा उसकी माँ कमला को भी ले आई।

कला ने सब का यथायोग्य अभिवादन किया तो मोहिनी ने कला की बाँह पकड़कर अपने पास बैठा लिया। सुमित्रा ने दोनों को भोजन करने के लिए कहा तो कला ने कह दिया, "माँजी! हम भोजन कर चुकी हैं। वहाँ तो पिताजी दस बजे ही भोजन करके चले जाते हैं। हम भी उसी समय कर लेती हैं।"

मधु वहाँ कमरे में ही सो रहा था। कमला और कला वहीं बैठ गईं। अन्य स्त्रियाँ भोजन करने लगीं। आधा घंटा–भर भोजन होता रहा और सब परस्पर बातें करती रहीं। अनेकानेक विषयों पर बातें होती रहीं परन्तु किसी ने कला के जाने अथवा लौट आने के विषय में बात नहीं की।

जब भोजन समाप्त हुआ तो सुमित्रा ने कला से कहा, "कुछ खास बात थी, जो कमला बहिन यहाँ छोड़ने आई हैं?"

उत्तर कमला ने दिया, "इसने अपराध किया था और यहाँ आने से डरती थी। इसको क्षमा दिलाने के लिए साथ आना पड़ा है।"

"तब तो आपको श्याम के आने तक ठहरना होगा। इसने कोई अपराध किया होगा तो उसका किया होगा। हमने तो इसका कोई अपराध देखा नहीं।"

"जो कुछ भी है मेरी ओर से आप इसको क्षमा दिलवा दीजियेगा। मैंने तो इसको आपकी लड़की बनाकर यहाँ भेजा था।"

"उससे मैंने कभी इन्कार नहीं किया। ऐसा प्रतीत होता है कि इसको अभी भी मुझसे अधिक आप पर विश्वास है। यह विचार इसका गलत है। मुझको तो यह अपनी तारा और लाज से भी अधिक प्रिय है।"

इस प्रकार बात तय हो गई। श्याम के आने का समय हुआ तो माँ ने कला को बता दिया, "श्याम आने वाला है। उसके लिए जलपान अपने कमरे में ले जाओ।"

जो बात पहाड़–सी प्रतीत हो रही थी, वह सरलता से पार हो गई। दोनों परिवार किसी लम्बे झगड़े की आशंका करते थे। रात श्याम और कला जब सोने लगे तो श्याम ने पूछ लिया, "अब तो तुमको अपनी ताई से ईर्ष्या नहीं होती?"

'बहुत बड़ी भूल हो गई थी। मुझको उस भूल का ज्ञान आज ही हुआ है और मैं ज्ञान होते ही चली आई हूँ।"

"क्या ज्ञान हुआ है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यही कि सब को अपने काम से वास्ता रखना चाहिए। दूसरों की बात में हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। प्रमाण–रहित दावे, आधार–रहित विचार और युक्ति–रहित सिद्धान्त माननीय नहीं होते।"

"तब तो बहुत कुछ सीख आई हो, इन बीस–पच्चीस दिनों में।"

"पच्चीस नहीं कुल बीस दिन। मैं तो दिन गिन–गिनकर गुजारती रही हूँ।"

"और मुझे एक–एक दिन दो–दो के बराबर दिखाई देता रहा है।"

"मुझे बहुत दुःख है इस कष्ट के लिए जो आपको मेरे कारण सहन करना पड़ा।"

"परन्तु जो शिक्षा तुम इस काल में अपनी माँ से लेकर आई हो, वह उस कष्ट का अच्छा प्रतिकार है। मैं प्रसन्न हूँ।"

जीवन सरल और सरस चलने लगा। दिनचर्या में बहुत अन्तर आ गया था। इसका ज्ञान कला को एक–दो दिन में ही हो गया। अब श्याम भी प्रातः ब्रह्ममुहूर्त में उठकर अपने तायाजी के साथ मकान की छत पर जा प्राणायाम और ध्यान का अभ्यास करता था। पाँच बजे वह भी हवन–पूजा के लिए पूजा–गृह में जा बैठता था। नौ बजे भोजन कर वह कार्यालय चला जाया करता था। यहाँ से लौट जलपान कर वह तायाजी की संगत के लिए लालायित रहता था। सायं आठ बजे उनकी गोष्ठी समाप्त होती तो वह उनके साथ ही भोजन कर लेता और फिर अपने कमरे में आ सत्यार्थप्रकाश पढ़ने लगता। एक घंटा इसका पाठ कर वह सोने की तैयारी कर लेता।

कला ने दिन के बाद दिन यही कार्यक्रम देखा तो पूछने लगी, "अब तो आपके पास दो बातें करने का भी समय नहीं?"

"तो दिन–भर अपनी देवरानी और सास से बातें करके तुम थकती नहीं?"

"मैं तो आपसे बातें करना चाहती हूँ।"

श्याम ने घड़ी की तरफ देखा, दस बज रहे थे। उसने सत्यार्थप्रकाश बंद कर कह दिया, "अच्छी बात है। आज तुम्हारी भी सुन लेता हूँ। बताओ क्या कहती हो?"

"यह कौन–सी पुस्तक पढ़ते रहते हैं आप?"

"इतनी हिन्दी तो तुम जानती ही हो कि नाम पढ़ सको। यह स्वामी दयानन्द रचित 'सत्यार्थप्रकाश' है।

"क्या लिखा है इसमें?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम समझना चाहती हो? पहले कहतीं तो इसमें से पढ़कर सुना देता। मैं समझा था कि यह उन किस्सों की भाँति रोचक तो है नहीं जो तुम पढ़ती हो। इस कारण तुम इसको पसन्द नहीं करोगी।"

"परंतु इसमें क्या लिखा है, यह तो बताइये।"

"संक्षेप में कुछ बताये देता हूँ। फिर चित्त करे तो नित्य सुन लिया करना।"

"बताइये।"

"इसमें लिखा है कि परमात्मा एक है। वह सृष्टि को रचने वाला है। उसने यह सृष्टि रची है प्रकृति से। प्रकृति चेतना–रहित है।"

"किसने देखा है उसको रचते हुए?" कला के मन में अपने पिता के मुख से सुनी बातें जागृत होने लगी थीं।

"बनते समय तो नहीं देखा, परन्तु बनी हुई तो दिखाई देती है।"

"इसको स्वयंभू क्यों नहीं मान लेते?"

"इस कारण कि इसमें कभी अपने आप बनने की शक्ति नहीं है। देखो, जल ऊपर से नीचे की ओर गिरता है, इस कारण कि पृथ्वी में आकर्षण है। यदि यह आकर्षण न हो तो यह गिर नहीं सकता। इसी प्रकार जल समुद्र से ऊपर चढ़ आकाश में बादल रूप हो जाता है। यह सूर्य के उष्णत्व के कारण है। बिना सूर्य के आकर्षण के जल आकाश में नहीं जा सकता। इसी प्रकार प्रकृति से कुछ भी नहीं हो सकता, जब तक इसको कोई हिलाने–डुलाने वाला न हो।"

"तो पृथ्वी और सूर्य में आकर्षण के रूप में परमात्मा है?"

"हाँ, तत्त्व रूप में यह शक्ति परमात्मा की ही है। इसको प्राण कहा है। प्राण इस अचेतन प्रकृति में हलचल उत्पन्न करता है।"

"मैं तो समझती हूँ कि इस प्रकार के विचार करने में समय व्यर्थ गँवाना है। यही समय हम सुख–भोग में व्यतीत कर सकते हैं।"

"अच्छा बताओ, क्या सुख भोगना चाहती हो जो इस पुस्तक पढ़ने ने छीन लिया है।"

"आपसे बातें करने को चित्त करता है।"

"सो तो कर रहा हूँ। तुमने पुस्तक की बात पूछी तो मैंने भी बता दी। कुछ और बात भी कर सकती हो।"

"तो आप कुछ नहीं पूछेंगे?"

"हाँ, क्यों नहीं? तुम बताओ; माँ ने तुमको क्या कहकर मेरे घर आने के लिए तैयार कर दिया था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ ने कहा था कि दो रोटी से पेट भर जाता है और जिसके पास दो से अधिक हों, वे दान कर देनी चाहिये। इससे किसी भूखे का पेट भर जाए तो पेट भरे हुए को ईर्ष्या करने की आवश्यकता नहीं।"

"दान करने से क्या होगा? क्यों किसी भूखे का पेट भरा जाए? उसके भूखा होने से हमको, जिनका पेट भर गया है, कोई कष्ट तो होता नहीं?"

कला ने विचार कर कहा, "दया करना अच्छा है।"

"क्या अच्छाई है इसमें?"

"चित्त प्रसन्न होता है।"

"यही तो पूछ रहा हूँ। किसी पर दया करने से अपना चित्त प्रसन्न क्यों होता है?"

कला ने कहा, "प्रसन्न तो होता है परंतु क्यों का उत्तर मैं नहीं जानती।"

"मैं जानता हूँ। परमात्मा दयामय है। वह सब में उपस्थित है। जब कोई किसी दूसरे को कष्ट में देखता है तो उसके भीतर बैठा परमात्मा दुखी पर दया करने के लिए कह देता है। कभी–कभी मनुष्य परमात्मा की आवाज को सुनता नहीं और वह दयापूर्ण व्यवहार नहीं अपनाता। साथ ही ऐसे भी मनुष्य हैं, जो अपने हृदय को परमात्मा से सुस्वर किए रखते हैं। वे स्वयं भूखे और नंगे रहकर भी दूसरे की सहायता करने लगते हैं।"

"वाह! इसमें परमात्मा की बात कैसे आ गई?"

"इस कारण कि यह पत्थर, जल, वायु जिससे मनुष्य बना है, दया करना नहीं जानते। दयामय तो केवल परमात्मा ही है और मनुष्य दया परमात्मा की प्रेरणा से ही करता प्रतीत होता है।"

कला मन में विचार करती थी कि यदि परमात्मा ही दया करने की प्रेरणा देता है तो फिर उसको मानना ही पड़ेगा। इस पर उसका ध्यान लेखवती की ओर चला गया। उसने ताई से पूछा था, "ताई! कब तक एक और बच्चे की माँ बनने वाली हो?"

लेखवती ने मुस्कराते हुए कहा था, "आगामी ज्येष्ठ सुदी अष्टमी अथवा नवमी को।"

"बहुत ठीक–ठीक गिन डाला है आपने?"

"हाँ; दो सौ बयासी दिन लगते हैं पूर्ण बालक के निर्माण में। मुझको इसके आरम्भ के दिन का ज्ञान है।"

कला को स्मरण हो आया कि ताई ने किंसी प्राणायाम का उल्लेख किया था, जिसके करने से बीजारोपण नहीं होता। उसने बताया था कि इस बार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने प्राणायाम नहीं किया और गर्भ स्थित हो गया है। इस पर भी उसने यह पूछ लिया, "क्या तायाजी प्रसन्न हैं इससे?"

"उनकी आज्ञा से ही मैंने यह धारण किया है। जब उन्होंने यह कहा कि एक संतान और होनी चाहिए तो मैं मान गई और इस बार मैंने प्राणायाम नहीं किया। अगले दिन से ही उचित लक्षण प्रकट होने लगे। अब हम धैर्य से इसके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं।"

"क्या आशा करती हैं आप, लड़का अथवा लड़की!"

"इस बात का निश्चय भी उन्होंने ही किया है। वे लड़के के पक्ष में थे, मैं लड़की के। इस पर भी चलती उनकी ही है।"

"क्यों?"

"वे मुझसे अधिक पढ़े–लिखे और बुद्धिमान हैं।"

"लड़के की क्यों इच्छा की है उन्होंने?"

"मैंने कारण पूछा नहीं, इस पर भी मुझको विश्वास है कि कुछ प्रबल कारण अवश्य होगा।"

आज कला लेखवती की इस बात को स्मरण कर गम्भीर विचार में पड़ गई थी। श्याम ने उसको चुप देख पूछ लिया, "अब चुप क्यों हो गई हो?"

"मैंने रूठकर जाने से पूर्व आप पर ताईजी के साथ सम्बन्ध का आरोप लगाया था। माँ ने तो उसको भिक्षा और दया की बात से समझा दिया था। परन्तु ताई ने इसको एक दूसरे ढंग से समझाया है। उसका कहना है कि तायाजी और उनका सम्बन्ध नियमपूर्वक चलता है और ताईजी को असन्तोष का कोई कारण नहीं?"

"पर मैं पूछता हूँ कि तुम दूसरों की बात की इतनी चिन्ता क्यों करती हो? कला! तुम्हारे अपने सब काम समाप्त हो गये हैं क्या? कोई क्या करता है, कितना करता है, क्यों करता है, उसका क्या होने वाला है और क्यों होने वाला है? क्या ये किसी प्रकार से भी चिन्ता करने के विषय हैं? देखो कला! मैं अब चौबीस वर्ष का होने वाला हूँ। मेरी चौथाई आयु समाप्त हो चुकी है। मुझको चिन्ता करनी चाहिए कि शेष आयु पूरी भोग करूँ और इसमें कुछ संचय करूँ, जो किसी आवश्यकता के समय व्यय कर सकूँ।"

"आपके बैंक मैं कितना जमा हो गया है?"

"कल पास–बुक ठीक करवाई है। पाँच हजार दस रुपये हैं।"

"इतने तो पिछले–मास भी थे?"

"हाँ, इस मास और कुछ भी जमा नहीं करा सका। तायाजी ने कहा था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि मुझको कुछ दान–दक्षिणा देनी चाहिए। मैंने अपने वेतन में से दस रुपये दान कर दिये हैं। पाँच रुपये तुमको पिछले मास के वेतन से दिये थे। पाँच सदानारायण को जेब–खर्चे के लिए दिए हैं। इस मास एक गरम कोट और पायजामा भी बनवा लिया है। तीस रुपये उस पर व्यय हो गये हैं।''

''इस मास कहीं बाहर जाने का काम नहीं बना क्या?''

''कलकत्ता गया था। परन्तु अब आगे से मैंने यह निश्चय कर लिया है कि जो खर्चा करूँगा वही लूँगा। एक तो मैंने इंटर क्लास में ही यात्रा की है। थर्ड क्लास में जाकर बचत करता था, वह नहीं की। दूसरे, जो ठीक खर्चा हुआ है, वह ही लिया है। परिणाम यह हुआ कि बचा कुछ भी नहीं।''

''यह तो ठीक नहीं किया आपने?''

''ठीक तो अब ही किया है। पहले गलत करता था।''

''वह तो आपको नियमानुसार मिलता था न?''

''नियम है सफर खर्चे का। इसमें भी मेरे लिए सीमा थी कि इतने से अधिक नहीं खर्च कर सकता।''

श्याम ने आगे कहा, ''इस बार मैंने बिना किसी कष्ट के सफर किया है और इस पर भी जहाँ पहले एक सौ बीस रुपया लिया करता था, इस बार केवल पचहत्तर रुपये दस आने में सब कुछ हो गया है। मैनेजर साहब ने कहा था कि यदि मैं चाहूँ तो और भी ले सकता हूँ, केवल हिसाब जाली बनाना पड़ेगा।''

''तो आपने क्या कहा?''

''मैंने कहा, यह मैं नहीं करूँगा। पहले भी जो कुछ किया था, उसका मुझको पश्चात्ताप है।''

''इस पर मैनेजर कह नहीं सका कि मैं झूठा हिसाब बनाकर दूँ।''

''यह आपने क्यों किया?''

''मुझको परमात्मा के अस्तित्व पर विश्वास हो रहा है। इसलिए अब कोई भी पाप करते समय मुझको भय होने लगता है।''

कला को यह सब पसन्द नहीं था। इस पर भी उसमें लड़ने के लिए साहस नहीं रहा था। एक बार लड़कर गई थी और भीगी बिल्ली की भाँति आकर रहने लगी थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 5 :

रामरक्खामल्ल ने श्याम को समझाया था कि खुली और शुद्ध वायु में बैठ, प्राणायाम करने से रक्त में मिश्रित मल जल जाता है। मस्तिष्क को शुद्ध रक्त मिलने से मस्तिष्क में विचार करने की शक्ति बढ़ जाती है। शरीर में पाँच प्रकार की वायु चलती हैं। उन पर नियंत्रण करने और उनका ठीक संचालन करने को ही प्राणायाम कहते हैं। शरीर के इस वायु पर अधिकार प्राप्त करने को योग–सिद्धि कहते हैं। यह अभ्यास से प्राप्त होती है।

श्याम ने, जब कला अपनी माँ के घर चली गई थी, तो अभ्यास आरम्भ किया था। इस समय उसका श्वास पर नियंत्रण हो चुका था और इसका परिणाम भी प्रकट होने लगा था। उसको अपने विचारों की दिशा पहले से भिन्न दिखाई देने लगी थी।

अब वह 'सत्यार्थप्रकाश' पढ़ा करता था। उसमें उसने पढ़ा था– 'जिस व्यापक अविनाशी सर्वोत्कृष्ट परमेश्वर में सब ब्रह्माण्ड और पृथ्वी आदि सब लोक स्थित हैं और जिसको सब वेद वर्णन करते हैं, उसको न जानकर, वेद पढ़ने से भी कुछ नहीं होगा।'

पहले वह परमात्मा के नाम पर हँसी उड़ाया करता था। अब वह परमात्मा की बात सुन गम्भीर हो जाया करता था।

अब वह अपने तायाजी के साथ आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में भी जाने लगा था। वहाँ से सदैव विचार–प्रोत्साहन की सामग्री लेकर घर आता। प्रातः विचार करने से वह अपने निष्कर्ष निकालने का यत्न करता।

इस सबका परिणाम यह हो रहा था कि एक अंग्रेजी फर्म का क्लर्क, दयालसिंह स्कूल में पढ़ा हुआ, आत्मा–परमात्मा की हँसी उड़ाने वाला, अब एक नये मार्ग पर चल पड़ा था। इस मार्ग पर चलते हुए उसको ऐसा भास होने लगा कि देश और समाज के सुख–दुख से उसका हृदय भी स्पन्दन करने लगता है।

श्याम अपने दफ्तर से जब घर आता तो लाहौरी गेट के बाहर से समाचार–पत्र खरीद लाता। साप्ताहिक पत्र 'आर्य गजट' का तो वह ग्राहक बन गया। अब रामरक्खामल्ल की सायंकाल की गोष्ठी में श्याम का समाचार–पत्र पढ़ना एक नियम बन गया था। समाचार–पत्र सुनने के लोभ में मुहल्ले के कुछ युवक भी आकर बैठने लगे थे। कभी श्याम को दफ्तर से आने में देरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाती तो सब उत्सुकता से उसकी प्रतीक्षा करते रहते थे। वह आता तो समाचार–पत्र का पाठ होता था।

एक दिन श्याम अभी नहीं आया था और लोग उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे कि सदानारायण स्कूल से आया और बताने लगा, ''भापा! आज लंगे मण्डी में, पानी के तालाब वाले मैदान में लैक्चर हो रहा है।''

''किसका?'' रामरक्खामल्ल ने पूछा।

''लाला लाजपतराय का।''

''तुमको किसने बताया है?''

''दरवाजे पर इश्तिहार लगे हैं?''

गोष्ठी में बैठे एक ने सुझाव दे दिया, लैक्चर सुनने चला जाये। दूसरों ने इस सुझाव का समर्थन कर दिया। सब उठाकर लैक्चर सुनने के लिए चल पड़े। लाला लाजपतराय कलकत्ता में हुए कांग्रेस अधिवेशन से लौटे थे और जनता को वहाँ पर हुई बातें बताने के विचार से जलसा किया गया था।

अंग्रेजी का एक पत्र 'पंजाबी' नाम से निकलने लगा था। उस पत्र के सम्पादक बाबू कालीचरण इस जलसे के प्रधान थे। डेढ़ घटा–भर लाला लाजपतराय अपनी ओजस्वी वाणी में व्याख्यान देते रहे। लगभग दो सहस्र लोग एकत्रित थे। सब दत्तचित्त होकर सुनते रहे।

व्याख्यान आठ बजे रात तक चला। व्याख्यान के बाद भिन्न–भिन्न प्रकार की बातें करते हुए श्रोतागण अपने–अपने घरों को लौट गये। मार्ग में रामरक्खामल्ल से भी लोग भिन्न–भिन्न प्रकार की बातें पूछने लगे थे।

रामरक्खामल्ल का एक पड़ोसी सन्तराम था। उसी की आयु का था और आजकल दफ्तर से पेन्शन ले चुका था। वह रामरक्खामल्ल की गोष्ठी में नियम से आता था और आर्यसमाज के कार्य में भी रुचि लेता था। इसी कारण वह भी सबके साथ लालाजी का व्याख्यान सुनने गया था।

''लाला रामरक्खामल्ल!'' उसने पूछ लिया, ''पहले तो तुम भी कांग्रेस के जलसों में जाया करते थे।''

''हाँ; परन्तु ये लोग अंग्रेजी में भाषण देते हैं, बातें करते हैं और सब प्रस्ताव पास करते हैं। मैं इस भाषा को जानता नहीं। इस कारण मैंने इस सभा के अधिवेशनों में जाना छोड़ दिया है।''

''भापा! तुम तो इसमें सन् 1885 से ही रुचि ले रहे हो। यदि तुम चाहते तो समझने योग्य अंग्रेजी सीख सकते थे?''

''सीख सकता था। कुछ–कुछ तो बिना पढ़े भी समझने लगा था, परन्तु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मैं तो इस भाषा का प्रयोग ही गलत समझता हूँ और फिर देश के कामों में इसका प्रयोग तो और भी अनुचित है।''

''तो वे लोग क्या करेंगे, जो मद्रास आदि प्रान्तों के रहने वाले हैं?''

''जो मेरे जैसे उत्तरी भारत के रहने वाले करते हैं।''

सन्तराम विस्मय में रामरक्खामल्ल का मुख देखते हुए बोला, ''भापा! उत्तरी भारत में केवल तुम ही नहीं रहते। लाला लाजपतराय, लाला मुरलीधर, पंडित मदनमोहन मालवीय और अनेक अन्य भी हैं, जो अंग्रेजी में ही बोलते हैं और बातें करते हैं।''

रामरक्खामल्ल ने हँसते हुए कहा, ''सन्तराम! ये तीन–चार नाम बताकर तुमने बारह–तेरह करोड़ रहने वालों को समुद्र में डुबो दिया है। ये अंग्रेजी पढ़े उत्तरी भारत में ही नहीं, प्रत्युत दक्षिण भारत में भी नगण्य ही हैं। हकीकत यह है कि जब कांग्रेस बनी थी तो यह घोषणा की गई थी कि इसमें केवल वे ही सम्मिलित हो सकेंगे जो अंग्रेजी भाषा बोल व समझ सकते हैं। घोषणा इस सभा के संस्थापक ए.ओ. ह्यूम ने की थी। प्रत्यक्ष रूप में इसका अर्थ यह बताया गया था कि यह नियम, भिन्न–भिन्न प्रान्तों के रहने वाले की सुविधा के लिए है, परन्तु वास्तव में इसका प्रयोजन यह था कि केवल अँग्रेजी सभ्यता में लिप्त हिन्दुस्तानी ही इस संस्था में आ सकें।

''सर ह्यूम की नीति तो अति गम्भीर थी। वह चाहता था कि पूर्ण देश में अंग्रेजी पढ़े–लिखे लोगों की एक संस्था ऐसी बने, जिसे सरकार का आशीर्वाद प्राप्त हो और यह संस्था अंग्रेजी ढंग पर भारत की सामाजिक अवस्था में सुधार करे। इसका परिणाम यह होता कि हमारे धार्मिक नेता ये अंग्रेजी पढ़े–लिखे, गोमांस और अण्डे–मुर्गी खाने वाले तथा हिन्दू अहिन्दू हो जाते।

''दक्षिण में थियोसोफिकल सोसायटी, बम्बई में प्रार्थना समाज और फिर उत्तरी भारत में आर्यसमाज के प्रयत्नों से, देश के हिन्दुओं के एक संगठन में आकर हिन्दू समाज के उद्धार में लग जाने की सम्भावना से ह्यूम डर गया था। वह हिन्दुओं में इस जागृति को अंग्रेजी पढ़े–लिखों के अधीन कर देना चाहता था।

''परन्तु लॉर्ड डफरिन, जो उस समय भारत का वायसराय था और लॉर्ड रिपन जो सेक्रेटरी ऑफ स्टेट था, दोनों ही सर ह्यूम से सहमत नहीं हुए। वे समाज–सुधार को इतना महत्त्व नहीं देते थे। इस कारण उन्होंने कांग्रेस को एक समाज सुधारक संस्था बनाने की अपेक्षा एक राजनीतिक सुधार की संस्था बनाना स्वीकार किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''कुछ भी हो, बात यह हुई है कि देश का राजनीतिक नेतृत्व इन अंग्रेजी पढ़े–लिखों के हाथ में आ गया है और देश में राजनीतिक सुधार अंग्रेजी ढंग से होने लगे हैं। परिणामस्वरूप वे करोड़ों, जो अंग्रेजी नहीं जानते, मूक पशुओं की भाँति इन नेताओं के तबेलों में बँध जाएँगे।''

संतराम हँसता हुआ बोला, ''जन–साधारण तो सदा नेताओं के तबेलों में बँधता ही है। इसमें रोष करने की बात ही कहाँ है?''

''परन्तु भारत के नेता अंग्रेजी पढ़े–लिखे ही हों, यह किस वेद में लिखा है?''

''परन्तु ये लोग बातें तो ठीक ही कहते हैं?''

''इसी में तो मेरा मतभेद है। देखो संतराम! मद्रास में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ। मैं वहाँ गया था। पूना के रहने वाले एक ब्राह्मण बाल गंगाधर तिलक के पकड़े जाने के विरोध में प्रस्ताव था और ये अंग्रेजी पढ़े–लिखे सबके सब उस प्रस्ताव का विरोध करने लगे। मैंने लखनऊ के एक प्रतिनिधि से पूछा, 'यह झगड़ा क्या है?' उसने बता दिया, 'तिलक की लेखनी में बल है। वे जब अपने समाचार–पत्र में लेख लिखते हैं तो लाखों के हृदय फड़क उठते हैं। अन्य नेता इतने योग्य नहीं हैं। एक तो ये अंग्रेजी में बोलते और विचार करते हैं। न तो जन–साधारण इनकी टाँय–टाँय को सुन और समझ सकता है और न ही ये उस ढंग से ही सोचते हैं, जिससे जन–साधारण सोचता है। ये उनके नेता नहीं हैं। तिलक ही जनता का नेता है। इस कारण ये सब उससे ईर्ष्या करते हैं।'

''यह सुन मुझको स्वामी दयानन्द की बात स्मरण हो आई। सन् 1883 में स्वामीजी जोधपुर में बीमार पड़े थे। समाचार सुना तो मैं भी उनके दर्शनों के लिए वहाँ जा पहुँचा। मैं स्वामीजी से एकान्त में भेंट का इच्छुक था। पर परिचारक इस भेंट को स्वामीजी के लिए ठीक नहीं समझते थे। इस कारण मैं दो दिन तक स्वामीजी के दर्शन भी नहीं कर सका। एक दिन स्वामीजी की दृष्टि खिड़की में से मुझ पर पड़ गई। मैं खिड़की के बाहर बरामदे में खड़ा था। स्वामाजी ने सेवक को भेजकर मुझको बुला लिया। रुग्णावस्था में भी स्वामीजी के मुख पर तेज टपकता था। मैंने चरण–स्पर्श किए तो वे बोले, 'गरीब!' वे मुझको इसी नाम से स्मरण करते थे–'देश की क्या अवस्था है?'

'' 'महाराज! मैं छः वर्ष से भारत भ्रमण के लिए नहीं गया। इस पर भी मुझको कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि देश का स्वप्न–भंग हो गया है। सारा देश अपने को रुग्णावस्था में समझता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'एक धनी की सन्तान को बीमार देख अनेकानेक चिकित्सक चिकित्सा करने के लिए दौड़ पड़े हैं। सुना है मद्रास में योग, ज्ञान और साधना की महिमा होने लगी है। वे शिव और रंगास्वामी की पूजा के स्थान आत्मशुद्धि की महिमा को मानने लगे हैं। बम्बई में प्रार्थना–समाज भी कुछ इसी दिशा में कार्य करने लगा है। और अपने यहाँ समाज नए–नए शिष्यों का सृजन कर रहा है।'

"स्वामीजी गम्भीर हो गए और फिर बोले, 'मैं तो यह चाहता हूँ कि देश की चिकित्सा वेद द्वारा की जाए। मुझको भय है कि कहीं भारत के रोग की चिकित्सा अंग्रेजी सरकार ने अपने हाथ में ले ली तो हमारी चिकित्सा की भाँति वह भी रोगी को मारकर ही साँस लेगी।'

"मैंने कह दिया, 'तो महाराज! आप इस अलीवर्दी खाँ की चिकित्सा छोड़ क्यों नहीं देते?"

" 'रोगी तो परिचारकों के हाथ में है न? मैं तो प्रभु की इच्छा के ही अधीन हूँ। इस पर भी गरीब! मैं तो दूसरी बात कर रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि वेद को गुरु मान सारा देश संगठित हो। वेद–विरोधी देश का कल्याण नहीं कर सकेंगे। साथ ही भाषा संस्कृत हो। शुद्ध व पूर्ण भाषा ही विचार और ज्ञान को पूर्ण करने वाली होती है। क्षात्रधर्म का देश में जागरण हो। दास और बनिए राज्य को नहीं चला सकेंगे।'

"मैं स्वामीजी की, उस बीमारी की अवस्था में भी विचार की स्पष्टता पर चकित रह गया। आज लालाजी ने कहा है–'यह कांग्रेस हमारी आवश्यकताओं, भावनाओं और आकांक्षाओं को पूर्ण कर सकेगी। मुझको, इसमें सन्देह है।'

"इससे मुझको स्वामीजी की बात स्मरण हो आई है। स्वामीजी ने कहा था कि कहीं देश की चिकित्सा सरकार के हाथ में चली गई तो यह देश की हत्या करके ही छोड़ेगी। यह कांग्रेस, एक अंग्रेज द्वारा, भारत के वायसराय के आशीर्वाद से स्थापित हुई है और इसमें अंग्रेज पढ़े–लिखे सम्मिलित हो रहे हैं।

"इसकी स्थापना का हेतु ही यह था कि देश का संगठन हिन्दू धर्म के आधार पर न हो जाए। मिथ्या आधार पर, मिथ्या बातें करते हुए और लँगड़ी भाषा में अधिकार माँगना ही इस संस्था का काम है।"

"तो इसमें सुधार करना चाहिए न?"

"अभी तो बिगाड़ ही हो रहा है। इन अंग्रेजी पढ़े–लिखे नेताओं ने यह विख्यात कर रखा है कि हिन्दू अकेले कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते। न ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इनको धर्म–कर्म की आवश्यकता अनुभव होती है। ये प्रायः शराबी, कबाबी, रंडीबाज और नास्तिक हैं।''

इस समय सब अपने मुहल्ले में पहुँच गए थे। भोजन का समय हो गया था। इस कारण सब अपने–अपने घरों को चले गए।

रामरक्खामल्ल को पता चला कि रसोईघर में उसकी प्रतीक्षा हो रही है। अतः आते ही वह ऊपर चढ़ गया और हाथ धो रसोईघर में जा बैठा।

श्यामनारायण ने पूछ लिया, ''भापा, कहाँ गए थे आज?''

रामरक्खामल्ल ने बताया तो श्याम ने समाचार–पत्र की बात बता दी। उसने कहा, ''राजस्थान में भारी अकाल पड़ गया है। अन्न की कमी पड़ गई है और लोग भूखे मर रहे हैं।''

''उन बेचारों की सहायता करनी चाहिए।''

''सहायता के लिए ईसाई वहाँ पहुँच गए हैं। उनके काम की प्रशंसा बीकानेर के रेजिडेन्ट ने की है। उस प्रशंसा में लिखा है कि तीन सौ भूखे मरते बच्चे, स्त्रियाँ यतीमखाने में पहुँचा दिए गए हैं।''

''श्याम! इस दिशा में कुछ काम करना चाहिए।''

''क्या कर सकते हैं भापा! सिविल मिलिटरी गजट में एक समाचार छपा था कि इंग्लैंड के प्रेसबिटेरियन चर्च ने दस हजार पौंड इन अकाल पीड़ितों के लिए दिए हैं। दस हजार पौंड का अर्थ है डेढ़ लाख रुपया। मैं विचार करता हूँ कि कल दस रुपये मैं भी इस कोष में दे दूँगा।''

''किस कोष में?''

''यही ईसाइयों द्वारा खोले गए इस कोष में। उसी गजट में रुपया भेजने का पता भी लिखा है।''

रामरक्खामल्ल दीर्घ निःश्वास छोड़ गम्भीर हो चुप कर रहा। आज वह एक रोटी खाकर ही खाना छोड़ बैठा। विष्णुनारायण ने पूछा, ''भापा! खाना नहीं खा रहे?''

''भूख नहीं रही।'' वह उठ हाथ धो रसोईघर से निकल गया।

''क्या हुआ है श्याम?''

''ऐसा प्रतीत होता है कि भापा को इस अकाल के समाचार से बहुत दुःख हुआ है।''

अगले दिन हवन से उठते ही रामरक्खामल्ल ने कपड़े पहने और घर से निकल गया। उस सायंकाल भी रामरक्खामल्ल की बैठक में गोष्ठी नहीं लगी। आर्य समाज में एक जलसे पर ही सब लोग उपस्थित थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस सभा में लाला लाजपतराय के व्याख्यान की घोषणा थी। लगभग तीन–चार सौ आदमी एकत्रित हुए थे और राजस्थान अकाल फंड और सेवा–कार्य के लिए स्वयं सेवकों के लिए अपील की गई थी। तुरन्त तीन हजार रुपया इकट्टा हो गया। इस तीन हजार रुपये में एक हजार तो राम रक्खामल्ल ने बजाजे में से एकत्रित किया था। लाला लाजपतराय ने अकेले ही तीन सौ रुपया दिया था। रामरक्खामल्ल ने अपने पास से एक सौ रुपया दिया। लालाजी की अपील इतनी संवेदनात्मक भाषा में थी कि श्रोतागण आँसू नहीं रोक सके थे और वहाँ बैठों में कोई नहीं था, जिसने अपनी जेब वहाँ खाली न कर दी हो।

रात रामरक्खामल्ल घर पहुँचा तो विष्णुनारायण ने पूछ लिया, ''भापा! दिन के समय कहाँ रहे हो? भोजन करने भी नहीं आए?''

''समय नहीं था। बाजार से ही पूरी खा ली थी। पूजा के बाद सीधा लालाजी के मकान गणपतराय रोड पर जा पहुँचा था। लालाजी को जब, श्याम से कल रात सुना समाचार बताया तो वे बोले, 'यह तो मैं भी विचार कर रहा हूँ। परन्तु ईसाइयों के मुकाबले में आर्य–समाज की शक्ति कितनी है? शेष हिन्दू समाज तो सो रहा है।'

''मैंने कहा, 'जो कुछ और जितना भी हो सके, उतना तो करना ही चाहिए।'

'' 'पर क्या करें?' उनका प्रश्न था।

'' 'लालाजी!' मैंने कह दिया, 'आज सायंकाल आप समाज में व्याख्यान दें। धन और जन के लिए अपील करें। फिर देखें, क्या परिणाम होता है।

'' 'मैं समझता हूँ कि दस से अधिक लोग एकत्रित नहीं होंगे और पचास रुपये से अधिक जमा नहीं होंगे।''

''' मेरा आग्रह था कि कार्य आरम्भ तो कर ही देना चाहिए। यदि एक भी हिन्दू लड़की इससे इन ईसाइयों के पंजे से बच सकी तो मैं अपने को कृतकृत्य ही मानूँगा।'

''लालाजी मेरी बात सुन विस्मय में मेरा मुख देखने लगे। फिर बोले, 'तो तुम अपनी सेवाएँ देते हो?'

'' 'जी हाँ, आपका आशीर्वाद होना चाहिए।'

'' 'तो आज नगर में डुग्गी पिटवा दो।'

''मैंने कह दिया, 'सायंकाल छः बजे आर्य समाज अनारकली में।''

''इस प्रकार बात तय कर मैं आर्य समाज के मंत्री के घर जा पहुँचा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनसे मंदिर में सभा करने की स्वीकृति ले डुग्गी करने वाले के पास गया। इसके बाद मैं बाजार से चन्दा एकत्रित करने लगा। पहले तो कोई साथी नहीं मिला। फिर एक सुथरा डिब्बी बाजार में मिल गया। कभी उसके पास बैठकर चरस के दो सूटे लगा चुका था। मैंने उसको साथ लिया और चन्दा इकट्‌ठा करने लगा। दुकानदार विस्मय करते थे कि वह सुथरा भला अकाल फंड के लिए रुपया एकत्रित करने कैसे चल पड़ा है। पूछने पर वह कह देता, 'लाला! सुथरे की पादशाही हिन्दुस्तान की रक्षा के लिए है। यह ईसाई हो रही हिन्दू लड़कियों को रक्षा के लिए जा रहे हैं तो फिर सुथरा रक्षा नहीं करेगा तो क्या तुम करोगे?'

"सायंकाल चार बजे तक एक हजार रुपया एकत्रित कर मैं आर्यसमाज में सभा के लिए तैयारी करने चला गया। विष्णु! तीन हजार रुपये इकट्‌ठे हो गए हैं। इस रुपये को देख तो लालाजी का भी उत्साह बढ़ गया है और अब तो आर्य समाज का मंत्री कहने आया था कि आर्य समाज की ओर से ही यह कार्य होगा।

"मैं कल बीकानेर जा रहा हूँ। मेरे साथ संतराम भी जा रहा है। हम वहाँ कैम्प खोल देंगे और लालाजी ने वचन दिया है कि और स्वयंसेवक, धन तथा अनाज भेजने का प्रबन्ध कर दिया जाएगा।"

: 6 :

अभी भी सदानारायण और जवाहरलाल एक ही कमरे में बैठकर पढ़ा करते थे। जनवरी का महीना था। सदानारायण रात को नौ बजे सो जाया करता था और प्रातः चार बजे उठकर अपने स्कूल की पढ़ाई किया करता था। पहले जवाहरलाल भी ऐसे ही किया करता था, परन्तु धीरे–धीरे उसका प्रातःकाल जागना छूटने लगा। सदानारायण कभी कहता भी, "जवाहर भैया! आज पढ़ाई नहीं करनी?"

"करनी तो है। परन्तु कल फुटबाल का मैच खेला था और इतना थक गया था कि आज नींद ही नहीं खुली। आँख खुली तो सात बज गए थे।"

रामरक्खामल्ल राजस्थान चला गया था और अकाल–पीड़ित क्षेत्रों में सहायता–कार्य कर रहा था। इससे जवाहरलाल पर से अंकुश उठ गया था। वह सदा के सामने अथवा माँ के सम्मुख ऐसी बात बना देता कि किसी को कुछ कहने के लिए स्थान नहीं रह जाता था।

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह ठीक था कि जवाहरलाल कॉलेज की फुटबाल की फर्स्ट टीम का सदस्य हो गया था और कॉलेज–अधिकारी इस वर्ष टीम को सर्वश्रेष्ठ बनाने का यत्न कर रहे थे। परन्तु केवल यही बात नहीं थी, जिसके कारण रात को सोने में देरी हो रही थी और जिसके कारण प्रातः नींद नहीं खुलती थी। गवर्नमेंट कॉलेज की इस टीम का कैप्टन था शमशाद कुरेशी। वह जिला जेहलम के गुजरात नगर के एक जमींदार का लड़का था और उसकी जवाहर से बहुत पटने लगी थी। टीम में शमशाद 'सेन्टर फारवर्ड' खेला करता था तो जवाहर उसके साथ 'लैफ्ट–इन'। दोनों टीम में परस्पर भारी सहयोग देते थे और फिर तो टीम के बाहर भी दोनों में सहयोग होने लगा।

दोनों की दोस्ती का प्रथम प्रभाव हुआ। जवाहर की चोटी विलुप्त हो गई। फिर यज्ञोपवीत लुप्त हुआ। तदनन्तर दोनों रात के दस–दस बजे तक इकट्ठे घूमने का प्रोग्राम बनाने लगे। दस बजे शमशाद को होस्टल में लौट जाना होता था। इस कारण जवाहरलाल उसको पौने दस बजे होस्टल में छोड़ सवा दस बजे के लगभग घर आ पहुँचता और साढ़े दस बजे भोजन कर सो जाता। प्रातः सात बजे उठता। स्नानादि से निवृत्त हो आठ–नौ बजे तक जल्दी–जल्दी लिखने–पढ़ने का काम समाप्त कर, भोजन कर, दस बजे से पूर्व ही कॉलेज जा पहुँचता।

एक दिन वह सायं छः बजे ही घर आ गया। भोजन कर वह सो गया। नौ बजे सदानारायण आया तो वह भी सो गया। अकस्मात् सदानारायण की जाग साढ़े दस बजे खुली तो उसने देखा कि जवाहर की खाट खाली है। उसने समझा कि लघुशंका आदि के लिए ऊपर गया होगा, परन्तु जवाहर आधा घण्टा तक नहीं आया। चिन्तित मन सदानारायण उठ बैठा। उसने लैम्प जलाया और ताई लेखवती को जाकर उसने उठाया। वह उठी तो इस समाचार को सुन बहुत परेशानी अनुभव करने लगी। वह घर की छत पर गई। उसको साधना की घटना अभी तक स्मरण थी। परन्तु जवाहर वहाँ पर नहीं था। उसने घर का द्वार देखा तो वह खुला मिला। इससे उसको यह पता चल गया कि जवाहर घर से बाहर गया है।

वह भीतर आई और सदा से बोली, "सदा! अब सो जाओ। इस विषय में कल प्रातःकाल पता करेंगे।"

सदानारायण लेट तो गया, परन्तु सो नहीं सका। लेखवती ने घर के द्वार को अन्दर से बन्द कर कुण्डा लगा दिया। वह अपने कमरे में जाकर लेट रही। वह भी सो नहीं सकी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात दो बजे लेखवती को विचार आया कि वह द्वार खोलकर देखे कि कहीं जवाहर द्वार बन्द देख बाहर खड़ा न हो। वह निकली और द्वार खोल देखने लगी, तो सत्य ही जवाहरलाल द्वार के बाहर सीढ़ी पर बैठा, दीवार का आश्रय लिए सो रहा था। कुछ क्षण तक तो लेखवती उसको देखती रही। फिर उसको हिलाकर उसने जगाया। जवाहरलाल घबराया और परेशानी में माँ का मुख देखने लगा।

वहाँ घर के बाहर गली में खड़े–खड़े बात करना ठीक न समझ लेखवती ने उसको संकेत से घर के भीतर आने को कहा। द्वार बन्द कर वह उसको अपने कमरे में ले गई। सरसों का दीपक जला और जवाहर को सामने बैठा उसने पूछा, ''कहाँ गए थे?''

''माँ! एक अत्यावश्यक काम से गया था।''

''वही तो पूछ रही हूँ। क्या काम था? कहाँ था वह काम और फिर चोरी–चोरी क्यों गए थे?''

''माँ! मेरा एक मित्र है शमशाद। वह हमारी फुटबाल टीम का बड़ा कैप्टन है और मेरा गहरा दोस्त है। कुछ दिन हुए वह मुझको एक बैठक पर गाना सुनाने ले गया था। वह बैठक पुरानी अनारकली में है। वहाँ दो लड़कियाँ नित्य 'मुजरा' करती हैं। उनमें एक साधना है। मैं साधना को देख चकित रह गया। मेरा विचार था उसने मुझको पहचाना नहीं और मैं दूसरे–तीसरे दिन उसका गाना सुनने जाने लगा। साधना की साथिन तो गजल बहुत ही अच्छा गाती है। उसका नाम नासिरबाई है और साधना का नाम वहीदन रखा गया है।

''हम जब भी जाते थे, रात के आठ बजे से साढ़े नौ बजे तक ही वहाँ बैठा करते थे। जब एक गजल अथवा ठुमरी समाप्त होती तो लोग निछावर फेंकते थे। हमने भी कई बार रुपये दिए हैं। रुपया–रुपया करके, कभी दो कभी तीन।

''कल मैं जब उसकी बैठक से उतरने लगा तो एक छोटी सी सात–आठ वर्ष की आयु की लड़की मुझको सीढ़ियों पर मिली और मुझको एक चिट्ठी दे सलाम कर बख्शीश माँगने लगी। बख्शीश शमशाद ने दे दी और हम दोनों नीचे आ वह चिट्ठी पढ़ने लगे। चिट्ठी साधना ने लिखी थी।

''उसने लिखा था, 'जवाहर! आते हो और मजलिस उठने से पहले ही चले जाते हो। मैं तुमसे मिलना चाहती हूँ। कल आना और मजलिस उठने तक रहना। पीछे मैं तुमसे अपने मुहाफिज के सामने ही मिल सकूँगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सावधानी से बात करना। उसको पता नहीं लगना चाहिए कि हम एक–दूसरे को पहले से जानते हैं अथवा तुम मेरे घर वालों से परिचित हो। मैं तुमसे कुछ कहूँगी। तुम सुनते रहना।'

"इस कारण आज मैं और शमशाद रात को दस बजे उसकी बैठक पर पहुँच गए। शमशाद ने होस्टल में बहाना बना रात की छुट्टी ली और मैं आप सबको धोखा दे चला गया था।

"मजलिस उठी तो साधना ने हमको संकेत से बुला लिया। हम ठहर गए। मजलिस के लोग हैरानी में हमको देखने लगे। परन्तु उन औरतों के मुहाफिजों ने सबको निकाल दिया और हम दोनों ही रह गए।

"इस पर साधना ने मुझसे पूछ लिया, 'क्यों जवान! आते हो और ऐसे ही चले जाते हो? क्या हम पसन्द नहीं हैं?'

"मेरी ओर से शमशाद ने कह दिया, 'बाईजी! पसन्द तो बहुत हैं, पर हम तो कॉलेज में पढ़ने वाले हैं। हमारी जेब में आपकी खिदमत करने के लिए इतना कुछ ही होता है। इससे ज्यादा नहीं।' मुझसे बात बनानी न आई।

"इस पर सामने बैठा मुहाफिज बोल उठा, 'तो ठीक है। आप जा सकते है।'

"हम जाने लगे तो साधना ने मुस्कराते हुए मुहाफिज की ओर देखकर कहा, 'बुद्धू मियाँ! तुम कॉलेज के लड़कों को नहीं जानते। जरा बाहर ठहरो। हम इनसे बात कर लें तो तुम आ जाना।'

" 'मैं कहता हूँ कि ये फक्कड़ हैं। इनसे कुछ मिलेगा नहीं।'

" 'तुम जरा जाओ तो। हमको इनकी जेबें भारी मालूम होती हैं।'

"वह बोला, 'अच्छी बात है। मगर मेरा कमीशन पहले ही मिलना चाहिए।'

"इस पर शमशाद ने उत्तर दिया, 'कमीशन वह देता है, जिसको रुपया मिलता है। यह नासिर बाई देगी।'

" 'अरे मियाँ! कुछ दोगे तो हमको मिलेगा न?'

"इस पर शमशाद ने घूरकर उस आदमी की ओर देखा और कह दिया, 'बहुत शोर मचाया तो इस खिड़की से बाहर फेंक दूँगा। जाओ, जरा बात करने दो।'

"वह उठकर बैठक से नीचे उतर गया। साधना उठी तो उसने बैठक का दरवाजा भीतर से बन्द कर कुण्डा लगा दिया। शमशाद ने उसके आते ही कह दिया, 'बाईजी! हमारे पास हकीकत में कुछ नहीं। महीने का आखीर है। घर से खर्चा भी महीने की दूसरी–तीसरी तारीख को आता है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अब नासिर उठकर भीतर की कोठरी में चली गई। शमशाद उसके साथ चला गया। माँ! साधना ने बताया है कि वह बहुत कष्ट में है। उसको छुड़ाने का प्रबन्ध करना चाहिए। मेरे पूछने पर उसने अपनी कहानी सुना दी।

"उसने बताया, 'जिन हकीम साहब का इलाज होता था, उसने मुझको बरगलाया था। मुझको वचन दिया था कि अपने भानजे से मेरी शादी कर देगा। मैं इस पर भी घर से न भागती, परन्तु माँ मजबूर कर रही थी कि मैं अफीम पीकर आत्महत्या कर लूँ। पर मैंने आत्महत्या करने से, मुसलमान होना पसन्द किया। हकीम साहब से किए गए निश्चयानुसार रात को नियत समय पर मैं घर से निकली और दो मुसलमान एक टमटम लिए खड़े दिखाई दिए। मुझको देख एक ने पूछा, 'साधना हो?'

" 'मेरे हाँ कहने पर वे मुझको, यह कह कि उनको हकीम साहब ने भेजा है, टमटम पर बैठाकर दरिया के पार बेगमकोट में ले गए। वहाँ मुझको एक मकान में रखा और मुझसे दिन में दो–दो बार बदफैली करने लगे। मैंने उनको मना किया तो कहने लगे कि मेरा हमल गिरा रहे हैं। मैं परेशान थी। उस मकान में कितने ही लोग आते–जाते थे और प्रत्येक दिन मेरी यही दुर्दशा होने लगी। इसका स्वाभाविक परिणाम हो गया। हमल गिर गया। इसके बाद मुझको गुजरांवाला ले जाया गया। वहाँ मुझको गाना सिखाया गया। तानालाप का अभ्यास भी कराया गया। छः महीने के अभ्यास के बाद हमको इस मकान में लाकर रखा गया। मुहाफिज वह है जिसने मेरी परवरिश और गाना सिखाने का खर्च किया है। उसने उनको भी कुछ दिया था, जो मुझे गली के बाहर से टमटम में बैठाकर बेगमकोट ले गए थे।

" 'बेगमकोट में वे मुझसे पैसा कमाते रहे थे। परन्तु गुजरांवाला में इन्होंने मुझको बेचा नहीं। यहाँ लाहौर में आई हूँ तो नासिर बाई यहाँ पहले ही थी। अब हम दोनों इसी मकान में रहती हैं और गाने से पैसा कमाती हैं। पर कभी–कभी अपनी असमत भी बेचनी पड़ जाती है।'

" 'ये दोनों भाई यही काम करते हैं। इन्होंने हमारी खिदमत के लिए यहाँ एक औरत रखी हुई है और हमारे खाने–पीने का खर्चा देते हैं। हमारी गाने की कमाई का आधा ये ले लेते हैं। आधे में से हमको तबला, सारंगी वालों को देना पड़ता है और उसमें से ही अपने वस्त्र–भूषण तथा शृंगार पर खर्च करना पड़ता है।

" 'मैं तो यहाँ से ऊब गई हूँ। जिस दिन से मैंने तुमको देखा है, मैं यहाँ से भाग जाने की योजना बनाने लगी हूँ। परन्तु भागना तो तुम्हारे साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
चाहती हूँ और तुम हो कि बात भी नहीं करते।'

"माँ! मैंने उसको बताया है कि मैं घर वालों से चोरी–चोरी आता हूँ। यह मेरा साथी भी मेरे साथ कॉलेज में पढ़ता है।

"इस पर साधना ने पूछ लिया, 'अब बताओ। मुझको यहाँ से निकाल सकते हो?'

"मैंने कहा–'अपने पिताजी से पूछे बिना कुछ भी नहीं बता सकता। तुमको यहाँ से निकालने के लिए या तो फौजदारी करनी पड़ेगी या पुलिस की मदद लेनी पड़ेगी। मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। पूछकर ही बता सकता हूँ।'

"इस पर उसने कहा है–'मैं अब न तो तुमसे विवाह की आशा करती हूँ और न ही यह सम्भव समझती हूँ। पिताजी से कह किसी यतीमखाने में रखवा दोगे तो भी मैं उनका ऐहसान मानूँगी।'

" 'तुम्हारे पिताजी से कहूँ?' मैंने पूछा।

" 'नहीं। मुझको उनका व्यवहार पसन्द नहीं। वे मेरा विवाह तुमसे पसन्द नहीं करते थे, परन्तु मुझे विष देकर मार देने को तैयार थे। जब मैं घर पर बीमार थी, तो तुम्हारे पिता आए थे और उस अवस्था में भी मुझे वह अपने घर ले जाने को तैयार थे, परन्तु मेरे पिताजी ने उस समय भी तुमसे विवाह स्वीकार नहीं किया। अब वे मुझे अपने घर में ले जाना कभी भी पसन्द नहीं करेंगे।'

"मैंने उसको बताया है कि पिताजी, राजस्थान में अकाल के क्षेत्रों में सेवा–कार्य के लिए गए हुए है। हम आशा कर रहे हैं कि अभी उनको वापस आने में लगभग एक मास अवश्य लगेगा। उनके आने पर ही मैं उनको तुम्हारी बात कह सकता हूँ।'

"इस पर उसने मुझसे वचन लिया है कि मैं कभी–कभी उसकी बैठक पर गाना सुनने के लिए आता रहूँ और जब पिताजी सहायता करनी स्वीकार कर लें तो आज रात की भाँति वहाँ ठहरकर उसको बता दूँ।

"माँ! मैं और शमशाद, दोनों वहाँ से रात के साढ़े बारह बजे चले थे। मेरा साथी शमशाद भी मेरे साथ मेरे घर पर सोना चाहता था, परन्तु यह दरवाजा बन्द देख, वह कुछ देर तक तो यहाँ ठहरा रहा। फिर मैं यहाँ दरवाजा खुलने की प्रतीक्षा करने लगा और वह कहीं अन्यत्र सोने के लिए चला गया है।"

लेखवती इस कथा को सुन काँप उठी। वह बिना अपने पति से राय किए इस विषय में कुछ कह नहीं सकती थी। उसने जवाहर को कह दिया, "अभी यह बात किसी से मत कहना। यदि तुम्हारे पिता उसकी सहायता करना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वीकार करेंगे तो फिर सहायता का ढंग भी सोच लिया जाएगा।''

जवाहर विचार करता रहा। लेखवती उसको, अपने कमरे में जाने से पहले बोली, ''एक बात स्मरण रखना। यदि फिर तुम इस प्रकार इतनी देर तक घर से बाहर रहे तो रात–भर बाहर ही पड़े रहा करोगे। मैं दरवाजा नहीं खोलूँगी। तुमको मुझसे पूछकर ही उसकी टोह लेने जाना होगा।''

शमशाद रात अनारकली की सराय में ठहरा था। वहाँ उसे झूठा नाम, झूठा पता लिखाना पड़ा था। अगले दिन दोनों मित्र कॉलेज में मिले तो शमशाद ने पूछ लिया, 'यह नासिर बाई तो बहुत मजेदार औरत है। एक घंटा भर उससे बहुत आनन्द का व्यतीत हुआ। तुम्हारी महबूबा कैसी रही?''

जवाहरलाल ने बता दिया, ''मैंने तुमको बताया तो था कि वह हमारे एक पड़ोसी की लड़की है जो घर से भाग गई थी। वह अब यह चाहती थी कि मैं अपने पिताजी से कहकर उसको वहाँ से निजात दिलवाऊँ। मैं तो उसकी कहानी ही सुनता रहा। न उसने मुझे अपनी सोहबत का निमन्त्रण दिया न ही मेरी तबीयत उसको ऐसा करने के लिए कह सकी।''

''हकीकत में तुमको इसका तजरबा नहीं। तभी तो तुम्हारी तबीयत नहीं की।''

जवाहर उसको साधना से अपने अधिक घनिष्ठ सम्बन्ध का परिचय देना नहीं चाहता था। इस कारण चुप रहा। इस पर शमशाद ने एक दोस्त के नाते कह दिया, ''फिर कभी वहाँ गए तो हम अपने साथी बदल लेंगे।''

जवाहर यह प्रस्ताव सुन काँप उठा। इस सम्भावना से बचने के लिए उसने बताया, ''रात माँ ने डेढ़ बजे दरवाजा खोला था। वह तो ऐसे ही मुझे देखने आई थी और मैं सीढ़ी पर बैठा–बैठा सो गया था। मुझे उठा बहुत डाँटने लगी। मैंने कान को हाथ लगा उससे क्षमा माँगी और फिर कहीं इतनी रात घर से बाहर न रहने का वचन दिया है। तुम भी अब बार–बार होस्टल से छुट्टी कैसे ले सकोगे?''

शमशाद अपनी छुट्टी की कठिनाई को सुन गम्भीर हो गया। इसके बाद जीवन पुनः सामान्य रूप में चलने लगा। जवाहरलाल से सदानारायण ने उसी रात पूछ लिया था कि वह कहाँ गया था? इस पर जवाहर ने उसको, किसी को न बताने का वचन ले, एक कहानी सुना दी। उसने बताया, ''मुझको डाकू पकड़कर ले गए थे। उनका विचार था कि मैं किसी धनी बाप का बेटा हूँ। वे पिताजी से मुझे छोड़ने पर धन वसूल करना चाहते थे। मुझे उन्हें समझाना पड़ा कि मेरे पिता एक मामूली दलाल हैं और रुपया–दों रुपया रोज से अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं कमाते हैं। सब चरस में फूँक देते हैं। मैं बच्चों को पढ़ा–पढ़ाकर कॉलेज का खर्चा करता हूँ। साथ ही बहुत मिन्नत करने पर वे मुझसे वचन लेकर कि घर पर किसी को नहीं बताऊँगा, मुझको छोड़ गए।''

इस कहानी से सदानारायण को सन्तोष हो गया। उसने घर पर किसी को बताया नहीं। इस घटना के बाद शमशाद ने भी कभी जवाहर को उस जगह चलने के लिए कहा नहीं। लगभग एक मास बाद रामरक्खामल्ल घर लौटा और उसने बताया कि अभी दो मास का कार्य और है। लोगों को काम देने के लिए महाराज बीकानेर ने एक नहर बनवाने का कार्य आरम्भ किया है। नहर की खुदवाई पर बीस हजार मजदूर लगा दिए गए हैं। उनको मजदूरी कुछ तो अनाज के रूप में और कुछ नकदी के रूप में दी जाने लगी है। पुरुष, स्त्री, बाल–वृद्ध सबको काम मिल रहा है। इस कारण इसका परिणाम यह हुआ है कि लोग जो अपनी भूख से तंग आकर अपने बच्चों को बेचने लगे थे, अब नहीं बेचते। इस पर भी कुछ बच्चे ऐसे रह गए हैं, जिनके माता–पिता या तो उन्हें छोड़कर ही भाग गए हैं अथवा मर गए हैं। उन सबको हमने अपने संरक्षण में ले लिया है। साथ ही कुछ वृद्ध पुरुष–स्त्रियाँ भी हैं, जो काम नहीं कर सकते और उनके पास खाने को भी कुछ नहीं है। इनके लिए हमने अन्न भण्डार खोल दिया है और वहाँ नित्य भोजन उनको मिलने लगा है।

रामरक्खामल्ल ने यह भी बताया–''एक सहस्र से ऊपर बच्चे हमने अपने संरक्षण में लिए हैं। हमारे वहाँ जाने से ईसाइयों का काम ढीला पड़ गया है। यद्यपि उनके पास जाने वाले सब बच्चों और बूढ़ों को खाना और वस्त्र आदि अच्छे मिलते हैं, इस पर भी लोग हमारे पास आना पसन्द करते हैं।

''अकाल–पीड़ित स्थान पर आर्यसमाज के कैम्प में कार्य करने वाले स्वयंसेवकों की संख्या एक सौ से ऊपर हो गई है। लाला लाजपतराय और कुछ अन्य आर्य समाजियों के यत्न से धन, अन्न और वितरण करने के वस्त्र बहुत मात्रा में एकत्रित होने लगे हैं। अब उन बच्चों को रखने और पढ़ाने के लिए फिरोजपुर में एक अनाथालय खोलने का विचार किया गया है। उसके लिए एक पृथक् संस्था बन रही है और वह पाँच सौ से ऊपर बच्चों के रहने का प्रबन्ध करेगी।''

लेखवती ने अपने पति को साधना की बात बताई। उसे सुन रामरक्खामल्ल गम्भीर हो गया। फकीरचन्द वकील से इस विषय में सम्मति ली गई। उसने पहले भी जब साधना घर से लापता हुई थी और पुलिसवालों ने गली में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सबको तंग करना आरम्भ किया था, तो रामरक्खामल्ल की सहायता की थी। यह वकील फकीरचन्द सन्तराम का साला था और रामरक्खामल्ल के साथ शिवालय में जल चढ़ाने जाया करता था। दोनों में सहिष्णुता थी।

फकीरचन्द ने राय दी कि साधना के पिता को लड़की को छुड़ाने के लिए डिप्टी कमिश्नर के सामने अर्जी करनी चाहिए। वहाँ से हुक्म होने पर पुलिस की सहायता से ही वह छुड़ाई जा सकती है। इससे पहले लड़की को भी पक्का कर लेना चाहिए कि वह पुलिस में बयान देगी कि उसको पेशा करने के लिए बलपूर्वक विवश किया जा रहा है।

इस योजना में मुख्य भाग साधना के पिता सोमनाथ को निभाना था। अतः रामरक्खामल्ल उसके पास गया। जब रामरक्खामल्ल ने उसे सब बताया तो वह पहले तो रो पड़ा, परन्तु पीछे बोला, ''भापा! साधना की बात पुरानी हो गई है। यह मुहल्ले वाले और बिरादरी वाले भी भूल गए हैं। विश्वनाथ की सगाई की चर्चा चलने लगी है। इस समय यदि साधना को घर लाऊँगा तो सोई बला जगाने वाली बात ही होगी।''

''परन्तु सोमनाथ! वह हिन्दू की सन्तान बाजार में बैठ पेशा करती ठीक प्रतीत नहीं होती?''

''भापा! वह समाज का गन्दा अंग था। कट गया और समाज उसकी बदबू से बच गया। अब गले–सड़े अंग को पुनः समाज में लाना समाज में रोग उत्पन्न करना ही होगा। नहीं भापा! मुझसे यह नहीं होगा।''

''देखो सोम!'' रामरक्खामल्ल ने कुछ क्रुद्ध होकर कह दिया, ''तुम एक बार डिप्टी कमिश्नर को अर्जी कर दो। शेष खर्चा और लड़की को रखने तथा उसके विवाहादि का प्रबन्ध मैं करूँगा। तुम उसे घर मत लाना।

''नहीं, मैं नहीं जाऊँगा। मुझको अपने दूसरे बच्चों का विवाह आदि भी करना है। मैं ऐसा कार्य कर उनकी जिन्दगी खराब नहीं कर सकता।''

''तो एक बात निश्चय जानो। मैं आर्यसमाज के मंत्री की ओर से यह अर्जी करा दूँगा और तुम्हारे विषय में विख्यात करूँगा कि तुम भी इस दुराचार में सम्मिलित हो। तुमने जान–बूझकर लड़की को घर से बाहर भेज दिया था। वहाँ उसका गर्भपात कराया है। अब उससे पेशा करा रुपया बटोरते हो। याद रखो सोम! मैं तुमको किसी काम का नहीं रखूँगा।''

इतना कह रामरक्खामल्ल वहाँ से उठ खड़ा हुआ। जाने से पूर्व उसने एक और बात कह दी, ''वे लड़की के दलाल तुमको फँसता देख प्रसन्न होंगे और तुम गर्भपात कराने के अपराध में सात वर्ष कैद के भागी बन जाओगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बदरुद्दीन भी यह गवाही दे देगा कि तुम उसे गर्भपात के लिए कहा करते थे और जब उसने ऐसा करने से इन्कार किया तो तुमने उसको बेगम के कोट में छुपाफर गर्भपात कराया।''

सोमनाथ इससे पहले घबराया, फिर कुछ विचारकर बोला, ''भापा! तुम अपने को परमात्मा मानने लगे हो। तुम समझते हो कि जो करोगे और कहोगे, ऐसा होता चला जाएगा, जैसे तुम भगवान का अवतार हो। यदि तुमने इसमें कुछ भी हल्ला–गुल्ला किया तो मैं तुमको भी लपेटे में ले आऊँगा। मुझको यह भी स्मरण है कि तुम पुलिस से झगड़ा कर चुके हो और अब पुलिस तुमको किसी तरह फँसाने का यत्न करेगी।''

इस पर रामरक्खामल्ल यह समझ कि सोमनाथ उन हिन्दुओं में से एक है, जिनको न तो अपने परिवार की मान–प्रतिष्ठा का विचार है, न ही जिनके हृदय में मानवता का अंकुर है, उठ घर को चल पड़ा। मार्ग में वह विचार करता था कि वह इस विषय में और आगे चले अथवा नहीं।

कहने को तो वह कह आया था कि वह सोमनाथ को लड़की का दलाल कहकर मुकदमे में फँसा देगा। परन्तु मन में वह इस गन्दगी से पृथक् रहने का ही निश्चय करता हुआ आ रहा था। वह समझता था कि उसने अपने लड़के के कुकर्म का प्रायश्चित कर दिया है और इससे अधिक न वह कर सकता है और न ही उसको करना चाहिए।

रामरक्खामल्ल को सोमनाथ के व्यवहार से दुःख तो बहुत था, परन्तु समाज में वही अकेला ऐसा व्यक्ति नहीं था जो इतने संकीर्ण विचारों से युक्त हो। रामरक्खामल्ल को पूर्व काल की एक अन्य घटना स्मरण हो आई थी। तब अभी देश में रेल का प्रचलन नहीं हुआ था। वह हरिद्वार से दिल्ली को जा रहा था। हरिद्वार के कुछ अन्तर पर रुड़की के समीप एक गाँव के बाहर बहुत से लोग एकत्रित हो रहे थे। उनके एकत्रित होने का कारण जानने के लिए वह वहाँ जा पहुँचा। तीस–चालीस स्त्री–पुरुष थे। वे सब अपने बिस्तर और गठरियाँ सिर पर रखे चलने के लिए तैयार दिखाई दिए। एक युवा लड़की एक पुरुष के पाँव पकड़ भूमि पर लेटी हुई रो–चिल्ला रही थी।

उसने जब इस दृश्य को देखा तो एक यात्री से पूछ लिया, ''यह क्या बात है?''

यात्री ने कह दिया, ''वह देखो। उस पेड़ पर एक आदमी बैठा है। उसने इस लड़की को भ्रष्ट कर दिया है।''

पेड़ पर बैठे एक युवा मुसलमान को देख रामरक्खामल्ल को क्रोध आ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया। उसने समझा कि उसने लड़की के साथ व्यभिचार किया है। उसको विस्मय इस बात पर हो रहा था कि वे लोग तीस के लगभग थे और मुसलमान अकेला था। यदि उसने कोई अनाचार किया है तो सब उसको दंड क्यों नहीं देते? इससे उसने उसी यात्री से पूछ लिया, "यह लड़की क्या कहती है?"

"यह विधवा है। इसका कोई नहीं। हमारे गाँव में रहती थी। जब हम तीर्थयात्रा को चले तो हमारे साथ चल पड़ी। अब यह पतित हो गई है। हमने निश्चय किया है कि इसको यहीं छोड़ दिया जाए। यह चाहती है कि इसे अपने साथ चलने की स्वीकृति दी जाए। इस कारण हमारे मुखिया का पाँव पकड़कर रो रही है।"

यह बात तो उसको और भी विचित्र प्रतीत हुई। लड़की को पतित करने वाले को दण्ड देने के स्थान पर ये लोग लड़की को ही उसको भेंट में दे रहे हैं। इस पर उसको क्रोध चढ़ आया। वह उस लड़की और चौधरी के पास चला गया और वहाँ जाकर पूछने लगा, "लड़की ने क्या बुरा किया है?"

उत्तर लड़की ने दिया, "हम सब चले आ रहे थे। यह म्लेच्छ यहाँ खड़ा हुआ कुल्ला कर रहा था। जब मैं समीप से गुजर रही थी तो उसने मुझ पर कुल्ला कर दिया। उसका झूठा जल मेरे सिर, मुख और कपड़ों पर पड़ा है। ये मेरे गाँव वाले कहते हैं कि मैं इससे पतित हो गई हूँ और मुझको साथ ले जाने से इनकार करते हैं। मैं इनसे कह रही हूँ कि हरिद्वार में जाकर मैं इसका प्रायश्चित कर लूँगी, पर ये मानते नहीं।"

रामरक्खामल्ल ने क्रोध में आकर कहा, "चौधरी! यह तो अन्याय है। इसका शरीर और कपड़े ही मैले हुए हैं। यह गंगा–स्नान कर और कपड़ों को गंगा–जल में डुबोकर सबको धो डालेगी। इसका मन तो अपवित्र नहीं हुआ।"

चौधरी ने कहा, "बाबा! तुम कहते तो ठीक हो, परन्तु गाँववालों को कौन जाकर समझाएगा? हमको बिरादरी वाले बिरादरी से निकाल देंगे।"

"क्यों निकाल देंगे? इसमें क्या खराबी है?"

"इस पर एक म्लेच्छ का झूठा जल पड़ गया है।"

गरीबदास इस समय तक स्वामी दयानन्द और आर्य समाज के सिद्धान्तों की जानकारी प्राप्त कर चुका था। उसने कहा, "अरे मूर्ख! गंगा का तो नाम मात्र लेने से लोग पवित्र हो जाते हैं और तुम इसके जल में स्नान करने को भी पर्याप्त नहीं समझते? देखो, मैं तुम लोगों के साथ चलता हूँ। वहाँ पंडों से प्रमाण–पत्र ले दूँगा कि यह पवित्र हो गई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीबदास के ऐसा कहने पर सब लोग और चौधरी भी उसका मुख देखने लगे। एक स्त्री अब लड़की की सहायता में बोल उठी, "चौधरी! बाबा ठीक तो कहते हैं। जब पंडा प्रमाण–पत्र दे देगा तो बिरादरी वाले भला क्यों नहीं मानेंगे?"

चौधरी मन से तो माना नहीं, परन्तु उस औरत के कहने पर, जो उसकी अपनी पत्नी थी, इनकार नहीं कर सका। अब अन्य कई यात्रियों ने भी समर्थन कर दिया। इस पर वह लड़की से बोला, "ठीक है, चल सकती हो। परन्तु हमसे पृथक् चलना। अपना पृथक् भोजन करना। जब तक प्रायश्चित न कर लो, तब तक हमारे साथ बैठ अथवा खा नहीं सकती हो।"

इस पर गरीबदास ने कहा, "जो वास्तविक अपराधी है उसका क्या करोगे?"

"हम परदेशी भला उसका क्या कर सकते हैं?"

"तुम उसको पीटकर इसका दण्ड तो दे ही सकते हो।"

यह बात उन यात्रियों को पसन्द नहीं आई। परन्तु गरीबदास उस पेड़ के नीचे जा पहुँचा और बोला, "ए, नीचे उतरो।"

वह मुसलमान पूर्ण बातचीत को सुन रहा था और परिवर्तित परिस्थिति को समझ वहाँ से भागने की सोच रहा था। इस पर भी यह समझ कि रोब से काम बन जाएगा, वह पेड़ पर से ही बोला, 'ओ साधु के बच्चे! तुम कौन हो बीच में दखल देने वाले?"

"तुम नीचे तो आओ।"

उस मुसलमान ने बड़े दबदबे में कहा, "मेरा इस औरत से पुराना ताल्लुक है। वह मेरी बीवी है।"

गरीबदास ने कह दिया, "सच? तो नीचे आओ। उसको तुम्हारे हवाले कर दूँगा।"

वह मुसलमान मुस्कराया और फिर हँसा, परन्तु शीघ्र ही साधु के मुख पर क्रोध की रेखाएँ देख सहम गया। अब उसने भागने के लिए पेड़ से छलाँग लगा दी। कूदते ही वह भागने लगा, परन्तु गरीबदास सतर्क था। अतः उसने लपककर उसको बाँह से पकड़ लिया और सब यात्रियों के देखते–देखते उसकी मरम्मत करके ही उसे छोड़ा। छूटने पर वह गालियाँ देता हुआ भाग गया।

रामरक्खामल्ल सिद्धांत से उस घटना और सोमनाथ के व्यवहार में समानता पाता था। वह समझ रहा था कि हिन्दू समाज में ब्राह्मण–वर्ग मूर्ख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और महास्वार्थी हो गया है। स्वामी दयानन्द का कहना था कि विद्वान तो मोक्ष की प्राप्ति की लालसा में ज्ञान की बातें कर रहे हैं और मूर्ख, स्वार्थी, शास्त्र से अनभिज्ञ, जाति में ब्राह्मण बन बैठे हैं। दोनों स्वार्थरत हो गए हैं।

: 7 :

सोमनाथ समझा कि रामरक्खामल्ल को डरा–धमका दिया है, परन्तु वह मानेगा नहीं। इससे उसके चले जाने के पश्चात् वह डर गया। उसका ध्यान रामरक्खामल्ल के मुहल्ले और बाजार में दबदबे की ओर चला गया। वह मन में विचार करने लगा कि यदि सत्य ही यह बात विख्यात कर दी गई कि उसने ही गर्भपात कराने का यत्न किया है तो हकीम बदरुद्दीन, जिसको वह गालियाँ दे चुका था, उसके विरुद्ध ही गवाही दे देगा और उसको फँसाने के लिए झूठे साक्षी भी बना देगा। इससे घबराया हुआ वह उठा और दुकान को लड़के के हवाले कर सीधा संतराम के घर जो पहुँचा।

फकीरचन्द अपने बहनोई संतराम से मिलने आया हुआ था। ये दोनों सोमनाथ को आया देख समझ गए कि साधना के विषय में बात करने आया है। इससे वे भी साधारण आवभगत के पश्चात् पूछने लगे, "सोमनाथ! कैसे आना हुआ है?"

"रामरक्खामल्ल कुछ बढ़–चढ़कर बातें करने लगा है। भापा! उसका कुछ इलाज करने के लिए राय करने आया हूँ। विचार था कि तुमको लेकर ही वकील के पास राय करने चलूँगा। यह तो सौभाग्य की बात है कि ये यहीं मिल गये हैं।"

"क्या हुआ है?" फकीरचन्द ने सीधे ही बात करनी आरम्भ कर दी।

"वह मुहल्ले में कहता फिरता है कि मैंने ही लड़की को लापता कर रखा है और उससे पेशा करवाता हूँ तथा उसकी कमाई खाता हूँ।"

फकीरचन्द इस आरोप पर मुस्कराया। उसको सोमनाथ की इस बात पर विश्वास नहीं आया था। उसने जिरह आरम्भ कर दी, "किससे ऐसा कहा है?"

"कइयों को कहा है। अभी–अभी दुकान पर आया था और मुझको भी धमकी दे गया है।"

"क्या धमकी दे गया है?"

"यही कि लड़की को दलालों से छुड़ाने के लिए पाँच सौ रुपया लगेगा। यदि नहीं दूँगा तो वह मुझे बदनाम करना शुरू कर देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कौन लेगा रुपया?"

"आर्य समाज।"

आर्य समाज के विषय में फकीरचन्द की सम्मति इतनी बुरी नहीं थी। इस पर भी उसने बात को तूल न देने के लिए ये कहा, "रामरक्खामल्ल की बात तो पीछे देख लेंगे। पहले तुम यह बताओ कि लड़की को बैठक से उठवाना चाहते हो या नहीं?"

"वह बैठक पर है? कौन–सी और कहाँ?"

"यह तुमको नहीं बताऊँगा। वह लाहौर में है। बीसियों परिचित उसे देख चुके हैं और उसका नाच–गाना सुन आये हैं।"

"आप भी देख आये हैं?"

"मेरे पास तो हकीम बदरुद्दीन आया था और कहता था कि उसका दवाइयों का बिल एक सौ रुपये का है। अगर लाला सोमनाथ को जेल से बचना है तो मेरा रुपया दे, नहीं तो वह सब राज फाश कर देगा।"

"क्या राज फाश कर देगा?"

"यही कि तुमने उसका हमल गिराया है। बेगम–कोट में यह पाप–कर्म किया गया है। उसके पास इस बात के गवाह मौजूद हैं।"

सोमनाथ को जिस बात का डर था, वही सामने आ उपस्थित हुई। यह सुन तो उसके माथे पर पसीने की बूँदे टपकने लगीं। उसने पंखा लेकर हवा करनी आरम्भ कर दी। लाला फकीरचन्द और संतराम सोमनाथ के मुख पर देख रहे थे। आखिर दिल को कड़ा कर सोमनाथ ने कह दिया, "यह सब उसी रामरक्खामल्ल की ही बदमाशी है। उसने ही हकीम को भड़काया मालूम होता है।"

"मैं इसीलिए तो पूछ रहा हूँ कि तुम लड़की को छुड़ाना चाहते हो या नहीं?"

"मैं भला कब पसन्द कर सकता हूँ कि लड़की को पेशा करते देखूँ? पर क्या करूँ? लड़की को छुड़ा भी लूँ तो क्या उसका अचार डालूँगा? अब भला उसके कौन विवाह करेगा?"

"यह तो हम पीछे देख लेंगे। पहले यह बताओ कि तुम उसको वहाँ बैठक पर पेशा करते देखना चाहते हो अथवा उसको वहाँ से अपने घर में लाकर रखना चाहते हो?"

"घर पर भला कैसे रख सकता हूँ? इससे तो दूसरे बच्चों पर भी बुरा प्रभाव पड़ेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जहाँ वह है, वहाँ से तो नगर–भर को खराब कर रही है।"

"नहीं; मैं उसको अपने घर में नहीं रख सकता।"

"तो जाओ! हकीम बदरुद्दीन की तरफ से मैं मुकदमा करूँगा।"

"उसको मैं एक सौ के स्थान सवा सौ दे आऊँगा।"

"मुकदमा तो इस पर भी चलेगा। एक बात तुम नहीं समझते कि वह हिन्दू भले परिवार को बदनाम करने के लिए अवश्य मुकदमा करेगा। मेरी मदद लेकर वह अपनी रक्षा करना चाहता है। और कहीं लड़की ने कह दिया कि उसकी माँ उसे अफीम पिलाकर उसकी हत्या करना चाहती थी, तब क्या करोगे?"

"वकील साहब! मैं गलत जगह पर आया हूँ क्या? मैं तो संतराम को अपना मित्र और पड़ोसी समझ यहाँ आया था।"

अब सन्तराम ने बात आरम्भ कर दी, "सोमनाथ! अपने मित्र और पड़ोसी के सामने झूठ तो न बोलो। देखो, वकील साहब पूछ रहे हैं कि तुम लड़की को बचाना चाहते हो अथवा नहीं?"

"बचाना तो चाहता हूँ।"

"तो इनके साथ अभी चले जाओ। ये तुम्हारी सहायता कर देंगे। पुलिस वालों को कुछ लेना–देना पड़ेगा।"

"परन्तु मैं तो विचार कर रहा हूँ कि उसको रखूँगा कहाँ?"

"इसके लिए रामरक्खामल्ल की मिन्नत करो। वह अनाथालय में प्रबन्ध करा देगा। कदाचित् वहाँ उसके खाने–पीने के लिए वह तुमसे रुपया माँगता होगा।"

सोमनाथ जानता था कि उसने कुछ भी नहीं माँगा। उसने कह दिया, "सन्तराम भापा! वह तुम रामरक्खामल्ल से कहकर ठीक करवा दो। मैं उसके कहीं विवाह हो जाने तक उसके रोटी–कपड़े के लिए खर्चा दे दूँगा।"

अब फकीरचन्द हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "मैं तो तभी सहायता करने को तैयार हूँगा, जब तुम अपनी लड़की को अपने घर में लाकर रखने को तैयार हो जाओगे।

"देखो सोमनाथ! अपनी पत्नी से जाकर पूछ आओ कि अदालत में मुलजिम के कठघरे में खड़ी होना चाहती है अथवा उसको अपने घर में रखना चाहती है। तुम दोनों पापी हो, इसमें सन्देह नहीं है।"

सन्तराम अपने साले की नीति समझ चुप रहा। सोमनाथ किसी अन्य वकील का दरवाजा खटखटाने का विचार करने लगा। कुछ सोच कर उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठते हुए कहा, "अच्छा वकील साहब! मैं साधना की माँ से पूछ लूँ। यदि उसने लड़की को घर पर रखने में कोई हानि नहीं समझी तो मैं सायंकाल आपसे मिलूँगा।"

"नहीं। पाँच बजे से पूर्व ही समाचार भेजना। साधना से मिलकर उसको भी ठीक बयान देने के लिए तैयार करना होगा। देखो बहुत हल्ला करते फिरोगे तो लड़की के दलालों को पता चल जायेगा। इससे वे लड़की को किसी दूसरे नगर में ले जायेंगे। फिर हमारे करने से भी कुछ नहीं हो सकेगा।"

सोमनाथ अनिश्चित–मन घर पहुँच गया और अपनी पत्नी को पृथक् में बुला साधना की बात बताने लगा। उसने जो कुछ बात रामरक्खामल्ल से हुई थी और फिर सन्तराम और उसके साले फकीरचन्द से हुई थी, सारी सुना दी। यमुना तो बात सुन पीत–मुख हो बैठी रह गई। सोमनाथ ने पत्नी को चुप बैठे देखा तो पूछ लिया, "अब कहो, क्या चाहती हो?"

"देखो जी! रामरक्खामल्ल यह जानकर भी कि लड़की गर्भवती है, उसको अपने घर ले जाने के लिए कहता था। आप नहीं माने। अब वह फिर कहने आया था और वह कहता है कि लड़की को रखने का प्रबन्ध वह कर देगा। तब भी आप नहीं माने। अब वकील की बात कि उसको घर लाकर रखोगे तो वह सहायता करेगा का विचार करने चले आये हो। कुछ अक्ल ठिकाने नहीं रही आपकी?"

"तो क्या कहती हो?"

"अभी रामरक्खामल्ल के पास चले जाओ। इस समय वह घर पर ही होगा। उसके पाँव पकड़कर पूर्ण योजना बना लो। कुछ देना भी पड़े तो दे देना। वह अनाथालय में रखे तो भी ठीक है। मैं तो उसको अपने घर में भी रख लूँगी।"

"तो दूसरे बच्चों के विवाहादि का क्या होगा?"

"विवाह आप करेंगे क्या? बिना भगवान की सहायता के? साधना का कर लिया है न? अब औरों का भी हो जायेगा।"

सोमनाथ घबरा–सा उठा और रामरक्खामल्ल के घर जा पहुँचा। घर का द्वार खुला था और बैठक में कुछ लोग बातें कर रहे थे। सोमनाथ ने बैठक में झाँककर देखा तो फकीरचन्द और सन्तराम को वहाँ बैठे देख डर गया। फिर कुछ विचारकर बैठक में जा खड़ा हुआ।

जब सोमनाथ पत्नी से राय करने के लिए गया था, सन्तराम ने वकील

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
साहब से कह दिया था, "बहुत सख्त डॉटा है फकीर!"

"हाँ भापा! यह उन हिन्दुओं में से है, जो गन्दगी के कीड़ों की भाँति गन्दगी में रहते हुए आनन्द मानते हैं। मुझको रामरक्खामल्ल ने इस लड़की की पूर्ण कथा बताई है। यह भी बताया है कि वह लड़की को बदकार, गर्भवती जानते हुए भी विवाह कर घर में लाने के लिए तैयार था। अब भी वह लड़की को पतोहू बना घर लाने का विचार रखता है। यह मूर्ख न जाने क्यों यह पसन्द नहीं करता। उसकी भलमनसाहत का यह फल देने आया है कि उसको ही फँसाने की योजना बना रहा है।"

"अब क्या होगा? लड़की को तो बचाना ही चाहिए।"

"वह तो मैं करूँगा ही। लड़की का बाप अर्जी करता तो ठीक था। नहीं तो अब किसी अन्य को तैयार करना पड़ेगा। मैं विचार कर रहा हूँ कि जवाहरलाल से ही अर्जी करा दूँ। इसमें एक बात यह करनी पड़ेगी कि उसको लड़की से अपना पूर्व सम्बन्ध अपनी अर्जी में लिखकर यह घोषणा करनी होगी कि वह उसको अपनी पत्नी मानता है।"

"परन्तु जवाहर क्या इतना कुछ करने के लिए तैयार हो जायेगा?"

"मैं तो इसमें कोई हानि नहीं मानता। लोग रंडियों को रखैल बनाकर रखते हैं। वह भी इसको रख सकता है। चाहेगा तो सन्तान के लिए वह एक और से विवाह कर लेगा।"

सन्तराम मुस्कराया। उसने कहा, "मैं तीन महीने रामरक्खामल्ल के साथ बीकानेर में रहा हूँ और उसके विचारों से भली–भाँति परिचित हूँ। वह तो मान जाएगा। असल बात जवाहरलाल की है। वह अब गवर्नमेंट कॉलेज में पढ़ता है। भगवान जाने कहीं उसके दिमाग में भी अभिमान, झूठी मान–प्रतिष्ठा का विचार घुस आया हो।"

फकीरचंद ने कुछ विचार कर कहा, "मेरा विचार है कि रामरक्खामल्ल से मिलकर सोमनाथ से स्वतन्त्र योजना बनानी चाहिए। जवाहरलाल को कॉलेज से बुलाकर उसको साधना की बैठक पर भेज देना चाहिए और किसी ढंग से साधना को समझा देना चाहिए कि वह किस प्रकार अपने बयान दे, जिससे कम से कम झंझट के साथ वह छूट सके।"

"तो लो चलें। इस समय रामरक्खामल्ल अपने घर पर ही होगा।" वे उठे और सोमनाथ के पहुँचने से पहले ही रामरक्खामल्ल के घर पर जा पहुँचे। रामरक्खामल्ल भोजन कर विश्राम के लिए अपने कमरे में गया ही था कि द्वार खटखटाने पर बाहर चला आया। सन्तराम और फकीरचंद को देख वह उन्हें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बैठक में ले आया और सोमनाथ की बात बता कहने लगा, "मैं तो उसके व्यवहार से इतना निराश हुआ हूँ कि इस कीचड़ में अपना हाथ न डालनें का फैसला कर बैठा हूँ।"

फकीरचंद ने कुछ चिन्तित भाव से पूछ लिया, "भापा! तुम साधना को बचाने और उससे जवाहर का विवाह करने के लिए क्या इस कारण तैयार हुए थे कि वह सोमनाथ की लड़की है अथवा उसमें कोई अन्य कारण भी था?"

रामरक्खामल्ल गम्भीर हो गया। उसने कहा, "सोमनाथ इसमें कहीं भी स्थान नहीं रखता। मैं दो दृष्टियों से बात करता था। एक तो जवाहर का उसको खराब करने में हाथ है और मैं इसका प्रायश्चित यही समझता हूँ कि जवाहर उससे विवाह कर उसकी परवरिश करे। दूसरे, मैं एक हिन्दू की लड़की को पेशा करते नहीं देख सकता। मैं उसका इस पतितावस्था से उद्धार करना चाहता था।"

"तो अब क्या सोमनाथ की बकवास से जवाहर दोषमुक्त हो गया है या वह हिन्दू की लड़की नहीं रही?"

"परन्तु मैं कैसे यह योजना अब चला सकता हूँ?"

"इसी के लिए मैं यहाँ आया हूँ। सोमनाथ हमारे पास होकर गया है। वह इस विषय में कुछ अधिक सहायता करता प्रतीत नहीं होता।"

"अब क्या चाहते हैं आप? बताइए मैं...!"

इस समय सोमनाथ बैठक में प्रवेश करता दिखाई दिया। रामरक्खामल्ल चुप कर गया। जब सोमनाथ आकर बैठ गया तो फकीरचन्द ने पूछ लिया, "हाँ सोमनाथ! कहो क्या विचार किया है तुमने?"

"मै डिप्टी कमिश्नर के पास अर्जी करने चलूँगा। लड़की को घर पर रखने के विषय में मैं आपके पाँव पड़ता हूँ और कहता हूँ कि मेरी मान–प्रतिष्ठा को अपनी ही मान–प्रतिष्ठा समझ, जो कुछ आप कहेंगे, मैं कर लूँगा। आखिर मुहल्ले में मुझे रहना है। यदि मुहल्ले वाले मेरी हिमायत करेंगे तो मुझे मुहल्ले के बाहर के लोगों का कुछ भी विचार नहीं।"

फकीरचन्द ने इसे अपनी धमकी का प्रभाव समझा। उसने कह दिया, "सोमनाथ! अब तुम चुपचाप घर जाकर बैठो। कल प्रातःकाल मेरे पास आ जाना। मैं अर्जी लिखकर तुम्हें साहब के घर ले चलूँगा। हमारी सब योजना की सफलता इसी पर निर्भर करती है कि हम चुपचाप सब कार्य करें। अचानक ही उस बैठक पर छापा डालना पड़ेगा अन्यथा सब बात बिगड़ जायेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सन्तराम ने कह दिया, "यदि हम लड़की को निकालने में सफल हो गए तो मैं मुहल्लेवालों की पंचायत बुलाकर तुम्हारी और लड़की की सफाई दूँगा। तुम यह विश्वास जानो कि हम इस बात में तुम्हारे साथ कंधे–से–कंधा मिलाकर लोकमत का विरोध करेंगे।"

: 8 :

जवाहरलाल ने अपने पिता को पिछली रात सब बात बता दी थी और पिता के इस प्रस्ताव को भी मान लिया था कि वह साधना से विवाह कर लेगा। रामरक्खामल्ल ने वकील से राय कर करणीय–कार्य का निर्णय किया। जवाहरलाल समझ रहा था कि एक–आध दिन में वह साधना को छुड़ाने में सफल हो जाएगा। इस विचार से वह प्रसन्न था। वह मन में विचार कर रहा था कि उसके पिता ने उसके साधना के विवाह को स्वीकार कर भारी उदारता का परिचय दिया है। उस दिन अति प्रसन्नावस्था में वह कॉलेज पहुँचा। विश्रांति के समय शमशाद उसको ढूँढ़ता हुआ कॉलेज आ पहुँचा। जवाहरलाल अपने अन्य मित्रों को यूनिवर्सिटी टूर्नामेंट में फुटबाल का कप अपने कॉलेज में लाने का विश्वास दिला रहा था कि इस समय फुटबाल कैप्टन शमशाद को आया देख एक लड़के ने नारा लगा दिया, "थ्री चीयर्ज फॉर दि कैप्टन।"

दस–बारह लड़के बोल उठे, "हिप–हिप हुर्रे।"

शमशाद ने लड़कों को चुप कराते हुए कहा, "बेवकूफ क्यों बन रहे हो? प्रिंसिपल साहब कमरे में हैं।"

"इस समय रिसेस पीरियड है। वे भी चाय पी रहे हैं।"

परन्तु शमशाद ने लड़कों का जोश ठंडा करने के लिए जवाहर की बाँह में बाँह डाली और उसको हाल से बाहर ले गया। बाहर बरामदे में से होकर वे लॉन में जा पहुँचे। शमशाद ने उसको साथ–साथ घसीटते हुए कहा, "मैं तुमको सुबह से ढूँढ़ रहा हूँ। कहाँ रहे हो तुम?"

"मैं आज देरी से आया था। इस कारण तुमसे मिल नहीं सका।"

"कल शाम को भी नहीं आए?"

"पिताजी राजस्थान के दौरे से तीन मास बाद लौटे हैं। उनसे उनके दौरे के हालात सुनता रहा था।"

"मैं पुरानी अनारकली वाली बैठक पर कल रात गया था। मन में यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैसला करके गया था कि रात होस्टल से बाहर रहूँगा। वहाँ पहुँचा तो नासिर बाई का एक अन्य ग्राहक बैठा था। गाने के पश्चात् मैंने नासिरबाई से कहा तो उसने कह दिया, 'मुझको आज रात फुरसत नहीं है।'

"मैंने कहा, 'मैं आज देने के लिए रुपये भी लाया हूँ।'

" 'कितने लाए हो?' उसने पूछा।

'पचास।'

" 'इस पर नासिरबाई ने दूसरे आदमी से पूछा, 'क्यों साहब! आप क्या लाए हैं?'

"उसने पूछा, 'तो क्या नीलामी होगी?'

"कुछ हर्ज है इसमें?'

"इस पर उसने कह दिया, 'इकावन रुपये।'

"मेरे पास तो पचास से अधिक नहीं थे। मैंने वहीदन की ओर देखा तो उसने मुख मोड़ लिया। मैंने उससे कहा, 'वहीदन! तुम तो खाली हो?'

"उसने कुछ विचार कर कहा, 'हाँ, खाली तो हूँ परन्तु मैं अपनी एक शर्त रखती हूँ।'

" 'हाँ बताओ। मैं तैयार हूँ।'

"उसने कह दिया, 'शर्त पीछे बताऊँगी। पहले वायदा करो कि मानोगे।'

" 'हाँ, वायदा करता हूँ कि तुम्हारी शर्त मानूँगा।'

" 'ईमान की कसम खाओ।'

"इस पर मैंने हैरान हो पूछा, 'ईमान और यहाँ?'

" 'हाँ, यहाँ भी ईमान से काम होता है। हजरत! अगर यह न हो तो', उसने अपने मुहाफिजों की ओर देखकर कहा, 'ये हमको चीर–फाड़कर खा जायें।'

"वे मुस्कराए और मुझसे बोले, 'हाँ साहब! यहाँ भी हम ईमानदारी से ही काम करते हैं।'

"मैं मान गया। मुहाफिज गए तो नासिर ने दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और अपने आदमी को लेकर पिछले कमरे में चली गई। वहीदन ने मुझे एक निहायत ही दिल–सोज कहानी सुना दी और कहा, 'मैं मुहाफिज की कमीशन अपने पास से दे दूँगी। अब तुम जाओ। मैं अपनी मर्जी के बिना किसी को अपने बिस्तर पर कदम रखने नहीं देती। अपने गाने की आमदनी से ही इस प्रकार मैं मुहाफिजों को रुपये देती रहती हूँ। इन तीन महीनों में, जब से मैं यहाँ आई हूँ, सिर्फ एक पशु मिला है जो अपना वादा भूल मुझसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबर–जनाह कर गया है। मेरी आपसे इल्तजाह है कि मुझको मुआफ रखें।'

"मेरे दिल में रहम आ गया। मैंने दस का एक नोट उसके सामने फेंका तो उसने वह नोट उठाकर मेरी जेब में डाल दिया और बोली, 'खुदा आपका रुतबा बुलन्द करे।'

इतना कह शमशाद चुप कर गया और सामने देखता रहा। जवाहर ने पूछा, "क्या नाम बताया है उसने अपने महबूब का?"

"नाम नहीं बताया। पहले तो मुझको शक हुआ था कि शायद तुम ही वह हो। मैंने उसने पूछा तो उसने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। सारा वक्त कहानी बताते हुए वह रोती रही। मुझसे उस पर जबर्दस्ती नहीं की गई। मैंने उससे पूछा कि वह यहाँ से भाग क्यों नहीं जाती? इस पर उसने कह दिया, 'आपके दोस्त से मैंने कहा था कि मेरे माता–पिता से मेरी ओर से क्षमा माँग मुझको यहाँ से निकालने का बन्दोबस्त करे। मगर उस दिन के बाद वह भी नहीं आया।'

"देखो दोस्त! मैं उससे यह वादा करके आया हूँ कि मैं तुमको उसके पास भेजूँगा।"

जवाहर को एक बात की खुशी हुई कि उसमें अभी भी इखलाक का कुछ अंश शेष है। इस पर भी वह अभी अपनी और अपने पिता की योजना शमशाद को बताना नहीं चाहता था। इस कारण उसने अपने मित्र से कह दिया, "आज रात मैं उससे मित्रने के लिए जाऊँगा।"

"मैं भी तुम्हारे साथ चलूँगा। उम्मीद है कि नासिर आज फुरसत में ही होगी।"

"शमशाद! जो औरत इस तरह अपने को बेचती फिरती है, वह किसी भी वक्त आतशक की बीमारी में फँस सकती है।"

"उम्मीद तो नहीं। फिर भी अपनी किस्मत के भरोसे ही मैं वहाँ जाता हूँ।"

"तो आज फिर छुट्टी लोगे?"

"होस्टल सुपरिन्टेंडेंट को मैंने अपना मित्र बना लिया है। वह मेरी अर्जी आँख मूँदकर मंजूर कर लेता है।"

नियत समय और स्थान पर दोनों मित्र मिले और गाना सुनने के लिए जा पहुँचे। वहीदन गा रही थी। उसने दोनों को आते देखा तो पुलकित हो गाने लगी। वह आशा करने लगी थी कि जवाहर कुछ संदेशा लेकर ही आया होगा। इस कारण उसके गाने में शोखी, उसके हाव–भाव में स्पष्टता और उग्रता के साथ ही उसकी आवाज में मधुरता आ गई। उसने गाया–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'घर जब बना लिया तेरे दर पर कहे बगैर
आयेगा अब भी तू न मेरा घर कहे बगैर।
काम उससे आ पड़ा है कि जिस जहान् में
लेवे न कोई नाम सितमगर कहे बगैर।।'

सब लोग वाह–वाह कर रहे थे। वहीदन इसका प्रत्युत्तर हाथ से सलाम कर मुस्कराकर दे रही थी। इस पर लोग जेब से रुपये निकाल नजर कर रहे थे।

गजल आगे चली–

'छोड़ूँगा मैं न उस बुते काफिर का पूजना,
छोड़े न खल्क गो मुझे काफिर कहे बगैर।
गालिब न कर हुजूर में तू बार–बार अर्ज,
जाहिर है तेरा हाल सब उन पर कहे बगैर।'

आज का गाना बहुत ही रसमय रहा। सुनने वाले मुकर्रर–मुकर्रर कहते रहे और नजर फेंकते रहे।

रात बारह बजे सब उठे तो शौकीनों में से एक ने अपना रूमाल गाने वाली की ओर फेंका। वहीदन ने वह रूमाल वापस कर दिया। इस समय सब उठ खड़े हुए। मुहाफिज ने वहीदन से कह दिया, "बहुत खरी असामी है। रूमाल क्यों वापस कर दिया?"

"मुझको आज फुरसत नहीं है।"

"वही कल वाला लौंडा बहुत पसन्द आया है?"

"नहीं, उसका साथी।"

"क्या देगा वह?"

"जो कुछ भी देगा। तुमको तुम्हारा कमीशन मिल जाएगा।"

"मगर मुझको वह कुछ उसके अलावा भी देने वाला है।"

"तो उसको कह दो कि कल आ जाए।"

"वहीदन! तुम बहुत परेशान करने लगी हो।"

"मियाँ बुद्धू! तुम हद से बाहर होते जा रहे हो।"

बुद्धू चुपचाप वहाँ से चला गया। रूमाल फेंकनेवाले के पास जा उसने बता दिया, "यह आज खाली नहीं है। इसका आशिक आया हुआ है।"

"बुद्धू मियाँ! यह लड़की हाथ से निकल जाएगी।"

"मैं कल तक इसको सीधी कर रखूँगा। आप कल तशरीफ ले आइएगा।"

गाना सुननेवाले तो पहले ही जा चुके थे। अब वह रूमालवाला भी उतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
गया तो वहीदन ने दरवाजा बन्द कर लिया। नासिर और शमशाद पिछली कोठरी में चले गए और वहीदन (साधना) तथा जवाहर वहाँ ही फर्श पर बैठ गए।

जवाहर ने बताया, "पिताजी कल आए हैं और कल तुम्हें यहाँ से निकालने का इन्तजाम कर लिया गया है। उम्मीद की जा रही है कि अब एक-दो दिन में ही तुम्हारे पिता पुलिस लेकर आएँगे। तुम्हारे बयान होंगे। तुम्हें पुलिस में न तो अपने हमल की बात लिखानी है, न ही माँ के अफीम घोलकर देने की बात बतानी है। तुमको यही कहना है कि तुमसे हकीम बदरुद्दीन के भानजे ने शादी का वायदा किया था और हकीम साहब के कहने पर तुम घर से भागी थीं। तुमको दो आदमी टमटम लिए हुए मिले थे। उन्होंने हकीम साहब का हवाला देकर तुमको टमटम में बैठाया और पहले बेगमकोट और फिर वहाँ से गुजरांवाला ले गए। वहाँ तुमको गाना-बजाना सिखाया गया और अब तुमसे गाना-बजाना और पेशा कराया जा रहा है।

"देखो साधना! वकील साहब का कहना है कि इसके अलावा कुछ भी नहीं कहना। नहीं तो इस किस्म की पेचीदगी पैदा हो सकती है कि तुमको और साथ ही तुम्हारे माता-पिता को तकलीफ हो।"

"मुझको कहाँ रखने का विचार हो रहा है?"

"अभी तो तुमको तुम्हारे माता-पिता के घर पर ही रखा जाएगा। पीछे विचार कर लिया जाएगा।"

घंटा-भर के पश्चात् शमशाद और नासिर बाई अपने कमरे से निकले। दोनों एक-दूसरे से प्रसन्न प्रतीत होते थे। उनके निकलते ही जवाहर उठ खड़ा हुआ और शमशाद के साथ चल पड़ा।

बैठक के नीचे उतर शमशाद ने पूछा, "सूखे ही आए या कुछ मिला?"

"मैंने बताया तो था कि मैं इस काम के लिए नहीं आता। इसके घर वाले इसे घर पर रखने को तैयार नहीं हैं। इससे वह उदास बैठी रही है।"

"उसका नाम पूछना था, जिससे वह मुहब्बत करती है?"

"पूछा था, मगर उसने बताया नहीं। इतना कहा है कि वहाँ भी अब उसे अपने घर ले जाने से इनकारी है।"

"बहुत अजीब औरत है! इस तरह कब तक चल सकेगा? मैं समझता हूँ कि हमको इसकी मदद करनी चाहिये।"

"मैं अभी कोई तरीका ढूँढ़ नहीं सका। अगर वह अपने महबूब का नाम-पता बता दे तो हम उससे मिलकर इसकी सुलह करा सकते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर किसी दिन आकर पूछना चाहिये। यह काम मुश्किल तो है, इस पर भी कोशिश की जा सकती है।"

डिप्टी कमिश्नर चार्ली जौन्सन नाम का एक अंग्रेज था और सदा पीड़ितों के साथ सहानुभूति रखता था। प्रार्थना सुनते ही हुक्म हो गया कि लड़की को पकड़कर तीन बजे अदालत में उपस्थित किया जाये। पुरानी अनारकली के थाने में हुक्म जाने से और दस रुपये का एक नोट थानेदार की जेब में डालने से दो कॉन्सटेबल और एक हैडकॉस्टेबल मिल गए और दस बजे से पूर्व ही सब लोग बैठक के नीचे जा पहुँचे। बुद्धू मियाँ और उसका भाई दोनों वहाँ उपस्थित थे। वे अभी–अभी सोकर जागे थे। पुलिस के साथ लाला रामरक्खामल्ल, लाला सोमनाथ, लाला सन्तराम और फकीरचन्द थे। लड़की का, पाँच सौ रुपये का मुचलका और पाँच सौ रुपये की हाजिर जमानत देकर उसको घर लाया गया। बुद्धू मियाँ और उसका भाई तथा नौकरानी पकड़ लिए गए।

साधना घर पहुँची। उसकी माँ और घर के अन्य बच्चे एक–दूसरे के समीप बैठे रोते रहे। माँ और लड़की रोने लगीं तो बच्चे भी रोने लगे थे। माँ और लड़की तो सब कुछ जानते थे, उनको एक–दूसरे से कुछ भी पूछने की आवश्यकता नहीं थी। बच्चे इस कारण रो रहे थे क्योंकि माँ–बेटी रो रही थीं।

यमुना ने, साधना की छोटी बहिन लक्ष्मी को खाना बनाने के लिए भेज दिया। विश्वास दुकान पर चला गया था और मदन स्कूल गया हुआ था। छोटे बच्चे जब इधर–उधर खेलने लगे तो माँ ने लड़की से पूछ लिया, "जवाहर से विवाह करोगी?"

साधना ने सिर हिलाकर इनकार कर दिया। इस पर माँ ने विस्मय में पूछ लिया, "तो अब क्या करोगी?"

"अभी विचार करूँगी।"

"किस प्रकार विचार करोगी?"

साधना नहीं जानती थी कि किस प्रकार विचार करेगी। इच्छा से विचार करना तो वह सीखी हो नहीं थी। वह तो घटनाओं और परिस्थितियों के अधीन बहती चली जा रही थी। अपने जीवन में उसने पहली बार विचार तब ही किया था, जब जवाहर उस गाने–बजाने वाली बैठक में शमशाद के साथ आया था। वह विचार करने लगी थी कि वह क्यों आया है? क्या यह केवल घटना–मात्र है अथवा इसमें जवाहरलाल की ओर से कोई प्रयत्न किया जा रहा है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब दो–तीन बार जवाहर आया और बिना बोले चला गया तो वह अपनी अवस्था पर विचार करने लगी थी। उस अवस्था से निकलने की इच्छा तो प्रत्येक उस समय उसके मन में होती थी, जब–जब बुद्धू मियाँ उसके लिए कोई ग्राहक लेकर आता और वह इनकार नहीं कर सकती थी। वह प्रायः यह कहकर इनकार किया करती थी कि उसके गाने के अभ्यास में विघ्न पड़ता है। वह प्रायः ग्राहकों की मिन्नत–समाजत कर उनको लौटा देती थी। बुद्धूमियाँ की कमीशन अपने गाने की आय में से वह दे देती थी। अब उसने नाचना भी सीखना आरम्भ कर दिया था और सिखाने वालों का यह अनुमान था कि लड़की अच्छी नाचने वाली बन जाएगी। इसलिए अब बुद्धू मियाँ, भविष्य में अच्छी आय की आशा में, वेश्यावृत्ति पर उसको बहुत विवश भी नहीं करता था।

जब पुलिस वालों ने छापा मारा और बुद्धू मियाँ तथा उसके साथियों को पकड़ लिया गया तो उसकी समझ में आ गया कि यह लड़की के पास आने वाले कॉलेज के लड़कों की शरारत है। बुद्धू मियाँ ने वहीदन को गालियाँ सुनाई और अपने रुपये का, जो उसने उस पर खर्च किया था, रोना आरम्भ कर दिया।

अतः जब माँ ने पूछा, किस प्रकार विचार करोगी, तो साधना विचार करने लगी कि वह विवाह नहीं करेगी। फिर वह सोचती कि यदि जवाहरलाल उनके साथ विवाह के लिए राजी हो जाएगा तो वह क्यों नहीं करेगी? इन दोनों प्रश्नों का उत्तर वह अभी समझ नहीं पा रही थी। इस कारण उसने पुनः कहा, "माँ! अभी तो तीन बजे मुझे अदालत में उपस्थित हो अपने बयान देने हैं। पीछे यदि मैं छूट गई तो कदाचित् हकीम साहब पर मुकदमा होगा और फिर मुझको बयान देने होंगे। वह सब वकील साहब बता रहे थे। इसलिए अभी कुछ नहीं कह सकती कि क्या करूँगी।"

रामरक्खामल्ल ने अपने मन में एक योजना बना रखी थी, परन्तु उसकी उस योजना में साधना की माँ ही सहायक हो सकती थी। उसका विचार था कि यमुना कुछ काल तक अपने बच्चों और लड़की को लेकर हरिद्वार चली जाए और वहाँ पर परमात्मा के भजन तथा कीर्तन में दिन व्यतीत करे।

मध्याह्नोत्तर सोमनाथ, सन्तराम इत्यादि साधना को लेकर डिप्टी कमिश्नर की अदालत में उपस्थित हो गए। वहाँ उनके बयान हुए। साधना ने वही बयान दिए, जो जवाहरलाल ने बता रखे थे। इस पर हकीम बदरुद्दीन, बुद्धू मियाँ और उसके साथियों के वारंट जारी हो गए। सबके वारंट बाजमानत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जारी हुए। बुद्धू मियाँ और उसके साथियों के जामन न होने के कारण उनको तो हवालात में डाल दिया गया, पर हकीम साहब के वारंट की तामील हुई और जमानत हो गई।

हकीम बदरुद्दीन को जब बुद्धू मियाँ इत्यादि के हवालात में होने का पता चला तो उसने उन सबकी जमानत का भी प्रबन्ध कर दिया।

बदरुद्दीन ने अपना शागिर्द सोमनाथ के पास भेजकर सब परिस्थिति का ज्ञान हासिल करना चाहा। सोमनाथ ने अपना पीछा छुड़ाने के लिए कह दिया, "मैं इस विषय में कुछ नहीं जानता। हमारे एक पड़ोसी लाला रामरक्खामल्ल हैं। वे आर्यसमाजी हैं और सब कुछ कर रहे हैं।"

पुलिस वाले तो केवल यह बता सके कि सोमनाथ की दरख्वास्त पर लड़की को बैठक पर पकड़ा गया और यह तो लड़की के बयानों पर हकीम साहब के वारंट जारी हुए थे। लड़की के बयानों की नकल ली गई। मुकदमे में पैरवी की तैयारी की गई।

इसके साथ ही हकीम साहब ने इसको हिन्दू–मुसलमान का सवाल बनाने की भी कोशिश की। इस घटना के कुछ ही काल पूर्व आर्यसमाज के एक उपदेशक पंडित लेखराम के पेट में छुरा घोंपकर उनको मार डाला गया था। वे मुसलमानों से धर्म चर्चा किया करते थे। इस घटना में हत्यारे के न पकड़े जा सकने के कारण मुसलमानों के हौसले बढ़ गए थे।

अतः 'नवाबसाहब के चौक' मस्जिद में मुसलमानों की एक गुप्त सभा बुलाई गई। उनमें हकीम बदरुद्दीन साहब को बुलाया गया। हकीम साहब ने वहाँ एक तकरीर कर दी और इसमें उन्होंने बताया, "मेरा कोई भतीजा नहीं है। मैंने एक नौजवान को, जिसका नाम बताना कुछ मायने नहीं रखता, लड़की को दिखाकर मुसलमान बनाने की एक साजिश की थी। उस नौजवान ने पहले तो यह शादी करना मंजूर की, पीछे लड़की का हमल देख भाग गया। इसका नतीजा यह हुआ कि लड़की दलालों के हाथ में पड़ गई।"

हकीम साहब ने खुदा परवर्दिगार की कसम खाकर कहा, "मेरे मन में किसी किसम के गुनाह का ख्याल नहीं था। मेरे मन में खालिस इस्लाम की तबलीग का सवाल था और मैंने जो कुछ किया, सब इस्लाम की तरक्की के लिए किया था।"

इस पर वहाँ फैसला हो गया कि हकीम साहब की मदद करनी चाहिए। मदद करने के दो तरीके ढूँढ़े गए। एक तो यह कि डिप्टी कमिश्नर की अदालत में, हजारों की संख्या में मुसलमान तारीख के दिन एकत्रित हों और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे, जो आदमी रामरक्खामल्ल की हत्या करे उसके लिए इनाम और उसके मुकदमे के लिए रुपया भी इकट्ठा किया जाए। एक धनी दाढ़ी वाले मुल्ला ने यह बताया, "खुदा के फजल से जब मुल्क दार–उल हरम था, तब किसी काफिर की मजाल नहीं होती थी कि किसी मुसलमान हुए शख्स को इस्लाम से मुन्किर होने की तरगीब दे। तब यह एक गुनाह अजीम समझा जाता था। मगर जमाने के फेर से यहाँ अंग्रेजी राज हुआ और इन काफिरों ने फिर सिर उठाने शुरू कर दिए हैं। यह इस दार–उल–हरम की वजह ही है कि आर्यसमाज जैसी काफिरों की जमात पैदा हो गई है।

"एक काफिर का एक गाजी ने सफाया किया था। अब एक और काफिर सरकश हो रहा है। मैं समझता हूँ कि इस्लाम की, ऐसे काफिरों को सीधा करने का रिवाज, कायम रहेगी और कोई मनचला गाजी बन सीधा बहिश्त पाने के लिए कमरबस्ता हो जाएगा।"

जलसा समाप्त हुआ। तीन नौजवान जो इस काम के लिए रजामंद हुए, उनको दातागंज बख्श की दरगाह में पहुँचा, छुरा चलाने का अभ्यास कराया जाने लगा।

पहली बार ही, पेशी में पुलिस ने हकीम बदरुद्दीन और बुद्धू मियाँ तथा उसके साथियों को अदालत में पेश किया तो अदालत में जोश से पागल हुए हजारों मुसलमानों की भीड़ थी। फकीरचंद ने लड़की को वहाँ लाना मुनासिब नहीं समझा और उसने अदालत में उपस्थित हो एक अर्जी लिखकर प्रस्तुत कर दी कि यहाँ उसके जीवन का भय है। उसके बयान किसी सुरक्षित स्थान पर हों।

अदालत के बाहर लोगों ने 'हकीम साहब–जिन्दाबाद' के नारे लगाने शुरू कर दिए ये। डिप्टी–कमिश्नर के लिए यह कोई नया अनुभव नहीं था। वह लेखराम के कत्ल की जाँच का हाल सुन चुका था। उस मुकदमे पर उसको भारी सन्देह था कि पुलिस ने मुजरिम को फरार होने में सहायता दी थी।

अतः फकीरचन्द की अर्जी पर पुलिस को बुलाया गया और अनारकली थानेदार से पूछा गया कि ये लोग किसलिए आए हैं?

"हुजूर! ये लोग समझते हैं कि एक मुसलमान को तआस्सुब से फँसाया जा रहा है।"

"किसने किसको फँसाया है?"

"एक रामरक्खामल्ल आर्यसमाजी है। यह उसकी ही शरारत कही जाती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है। मुल्जिमों के बयान हो जाएँ और यदि बयानों में कुछ ऐसा शुबहा हुआ कि रामरक्खामल्ल का इस मुआमले में कोई नावाजिब हाथ है तो उसके भी वारंट निकाल दिए जायेंगे।"

"हुजूर! उसके दिलचस्पी लेने में तो शक ही नहीं है। वह अब भी बाहर खड़ा है।"

इस पर फकीरचन्द ने बता दिया, "रामरक्खामल्ल लड़की के बाप का पड़ोसी है। वह मुहल्ले में चौधरी समझा जाता है। उसका अपने पड़ोसी की लड़की के अगवा के मुआमले में दिलचस्पी लेना ऐन मुनासिब है।"

डिप्टी–कमिश्नर अभी विचार ही कर रहा था कि एकाएक बाहर फिर नारे लगने आरम्भ हो गए और रामरक्खामल्ल को घायल अवस्था में अदालत के कमरे के भीतर लाया गया। घायल करने वाला फरार हो गया था। वह नारे लगाती हुई भीड़ में विलुप्त हो गया था।

रामरक्खामल्ल के कंधे पर तेज छुरे से वार किया गया था। कंधे पर चार इंच लम्बा और एक इंच गहरा घाव था। घाव से रक्त बह रहा था।

इस पर डिप्टी–कमिश्नर ने पुलिस को कह दिया कि वह सुरक्षा से रामरक्खामल्ल को अस्पताल में ले जाए। साथ ही उसने भीड़ को दस मिनट में तितर–बितर करने का हुक्म दे दिया। इस पर थानेदार ने कहा "हुजूर! इतनी पुलिस नहीं है कि इतनी भारी भीड़ को तितर–बितर किया जा सके।"

डिप्टी–कमिश्नर ने नगर पुलिस अधिकारी को टेलीफोन करके दो, दर्जन लठबन्द पुलिस वालों को बुला लिया। रामरक्खामल्ल को वहीं अदालत में ही रखा गया और वहीं उसकी पट्टी करा दी गई। इस समय तक पुलिस आ गई। जब डिप्टी–कमिश्नर दफा 144 लगाने की घोषणा करने कमरे से बाहर आया तो पत्थरों की बौछार से उसका स्वागत किया गया। अतः लाठी से भीड़ को तितर–बितर करने की आज्ञा दे दी गई। दो मिनट में कचहरी का आँगन, जो भीड़ से भरा हुआ था, खाली हो गया।

डिप्टी–कमिश्नर के सिर पर चोट आई थी और उसमें से रक्त बहने लगा था। उस पर पट्टी कर दी गई। उसी दिन हकीम बदरुद्दीन तथा बुद्धू मियाँ की जमानतें रद्द कर दी गईं और उनको हवालात में भेज दिया गया। इसके साथ ही रामरक्खामल्ल और सोमनाथ के घर के नीचे उनकी रक्षा के लिए पुलिस बैठा दी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 9 :

डिप्टी–कमिश्नर हकीम और उसके साथियों से सख्त नाराज था। जब हकीम साहब से बयान लिया गया और उस पर सरकारी वकील ने जिरह की तो बुद्धू मियाँ और हकीम दोनों बेकसूर सिद्ध होने लगे। इस पर फकीरचंद ने कह दिया कि उसको लड़की की ओर से जिरह करने की इजाजत दी जाए। डिप्टी–कमिश्नर तुरन्त मान गया। अब फकीरचन्द ने पहले बुद्धू मियाँ से जिरह आरम्भ की। उसने पूछा, "बुद्धू मियाँ! ये लड़कियाँ वहीदन और नासिर तुमको कहाँ मिली थीं?"

"ये लाहौर की गलियों में आवारा घूमती मिली थीं। मैंने इनसे कहा था कि ये कुछ गाना–नाचना सीख लें तो इनको गुजर का तरीका बता दूँगा।"

"तुम कभी इनको लाहौर में, उससे पहले भी मिले हो, जिस दिन ये आवारा घूमती हुई मिली थीं?"

"कभी नहीं।"

"यह कब की बात है?"

"जनवरी की तीसरी तारीख की।"

"तुम इनको गाना सिखाने के लिए कहाँ ले गए थे?"

"कहीं नहीं। एक गाना सिखाने वाला मास्टर रख दिया था। वह इनको सिखाने आया करता था।"

"यह मकान तुमने कब भाड़े पर लिया था?"

"कुछ दिन पहले लिया था।"

"किस लिए भाड़े पर लिया था?"

"अपने रहने के लिए।"

"तुमने अपने बयान में कहा है कि तुम्हारे माता–पिता नवाब साहब के चौक में रहते थे। अब बताओ, तुमने यह बैठक किस मतलब के लिए ली थी?"

"अपने बैठने–उठने के लिए।"

"तुम क्या काम करते थे?"

"कुछ नहीं, कभी मजदूरी कर लेता था।"

"तुम कभी गुजरांवाला भी रहे हो?"

"नहीं।"

"कभी बेगमकोट में?"

"नहीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके बाद हकीम साहब से जिरह होने लगी— "आप सोमनाथ को जानते हैं?"

"जी हाँ। बहुत अर्सा से जान–पहचान है।"

"इनकी आपसे दुश्मनी है क्या?"

"नहीं।"

"ये आपके खिलाफ किसलिए हो गए हैं?"

"मेरा इनसे कोई झगड़ा नहीं। यह तो रामरक्खामल्ल ने तआस्सुब से मेरे खिलाफ बयान दिलवा दिए हैं।"

"लड़की को उस दिन से, जब से उसके बयान हुए थे, पहले कहाँ देखा था आपने?"

"मैंने इसको एक–आध बार अपने मतब में देखा है। यह इलाज कराने अपनी माँ के साथ आई थी।"

"आपने इसका कभी अपने प्राइवेट कमरे में मुआइना किया है?"

"किया होगा, मुझको याद नहीं।"

"आपका कोई भाँजा है?"

"नहीं।"

"कोई रिश्ते में भी नहीं?"

"रिश्ते में तो कई बहनें हैं और उनमें से कइयों के लड़के हैं।"

"आप इन बुद्धू मियाँ को जानते हैं?"

"नहीं।"

"आपने बुद्धू मियाँ की जमानत करने में मदद दी थी क्या?"

"वह इसलिए कि यह गरीब मुसलमान था और एक मुतासिब हिन्दू उसको तंग कर रहा था।"

"तो यह आपको मालूम था कि बुद्धू मियाँ बेकसूर है?"

"इसके कसूर का फैसला तो अदालत ने करना है। मैंने तो इसके हाजिर होने के लिए जमानत दिलाई थी।"

"एक रंडियों के दलाल के लिए आपके मन में हमदर्दी क्यों पैदा हो गई?"

"वह भी इंसान है।"

"रामरक्खामल्ल की आपसे दुश्मनी है?"

"हर आर्यसमाजी मुसलमानों के साथ नफरत करता है।"

"इसमें कोई वजह है क्या?"

"इनके एक पंडित लेखराम को किसी मुसलमान ने मार डाला था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और रामरक्खामल्ल को भी मार डालने का मुसलमानों में विचार था?"

"मुझको इस बात का इलम नहीं।"

"जब रामरक्खामल्ल पर कातिलाना हमला किया गया था तो आप कहाँ थे?"

"मैं अदालत के कमरे में खड़ा था।"

"लोग बदरुद्दीन हकीम साहब जिन्दाबाद के नारे लगा रहे थे।"

"मैंने सुने थे।"

"तो वे सब लोग आपको जानते थे?"

"जरूर जानते होंगे।"

"आपको वे मोमिन समझते होंगे?"

"वह तो मेरी सूरत–शक्ल ही जाहिर करती है।"

इसके बाद इस्तगामा के बयान हुए और उसमें पुलिस ने अपने तीन गवाह पेश किए। एक हैड–कांस्टेबल जो गाने वाली की बैठक पर पुलिस के साथ गया था, एक बैठक के नीचे का हलवाई और तीसरा एक पेशेवर सरकारी गवाह था।

इस पर फकीरचन्द ने अदालत में कहा, "पुलिस कुछ निहायत जरूरी गवाह यहाँ उपस्थिति नहीं कर रही। मैं इजाजत चाहता हूँ कि उनको अदालत के सामने पेश कर दिया जाए।"

"मसलन?"

"नासिर बाई, वह औरत जो इनकी बैठक पर खिदमत के लिए रखी हुई थी, बेगम के कोट और गुजरांवाले के कुछ लोग, बुद्धू मियाँ के माता–पिता, नवाब का चौक मोची दरवाजा की पुलिस चौकी के हलके में है। वहाँ के सब–इंस्पेक्टर पुलिस।"

"इन सब गवाहों की किस लिए जरूरत है?"

"लड़की के बयान की तसदीक के लिए तथा मुलजिमों को झूठा साबित करने के लिए।"

इस पर अदालत ने साक्षी उपस्थित करने की स्वीकृति दे दी। सबसे पहले नासिरबाई को कटघरे में खड़ा किया गया। फकीरचन्द ने उससे पूछा–

"उस बैठक पर पुलिस छापे के बाद तुम कहाँ रही हो?"

"हमारी एक नौकरानी थी। उसको हम माँ कहते थे। वह पहले तो पकड़ी गई थी, पीछे उसके एक रिश्तेदार के जमानत देने पर छोड़ दी गई थी। मैं उसी बैठक में रही थी और तब से मैं वहाँ ही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम उस वैठक में कब आईं थीं?"

"मैं वहाँ पर एक वर्ष से रहती हूँ।"

"गुजर कैसे होता है?"

"मैं गाना–बजाना करती थी और लोग गाना सुन इनाम दिया करते थे।"

"यह बुद्धू मियाँ वहाँ क्या करते थे?"

"ये मेरे मुहाफिज थे।"

"कब से मुहाफिज का काम करते थे?"

"जब से मैं इस बैठक में आई थी।"

"तुम इनको कब से जानती हो?"

"अर्सा ढाई साल से।"

"इससे पहले तुम कहाँ थीं?"

"गुजरांवाला में।"

"वहाँ बुद्धू मियाँ से कैसे वाकफीयत हुई?"

"बुद्धू मियाँ के भाई से मेरा इश्क हो गया था। वह मुझको अपने माँ–बाप के घर से भगाकर अपने भाई के पास ले गया। वह गुजरांवाला में एक बैठक में रहता था। वहाँ दोनों भाई मुझसे मुहब्बत करते रहे। पीछे इन्होंने मुझको गाना और नाचना सिखाया। जब मैं कुछ सीख गई तो ये मुझको लाहौर ले आए। मैं तब से इसी बैठक में हूँ।"

"गाने–बजाने के अलावा भी कुछ काम करती थीं?"

"हाँ, मगर वह मेरी मर्जी पर होता था। कई गाना सुनने के लिए आने वाले रात मेरे साथ बसर करने की ख्वाहिश करते थे। जब मैं मान जाती तो वे वहाँ रह जाते थे।"

"किसी के वहाँ रह जाने पर बुद्धू मियाँ कुछ कमीशन लेते थे?"

"हाँ, एक रात के दस रुपये।"

"तुमको आम तौर पर क्या मिलता था?"

"यह साथ रहने वाले के जजबात और तौफीक पर मुनहसिर होता था। मगर जो मिलता, वह दस रुपये से ज्यादा ही होता था।"

"शमशाद खाँ कुरेशी को जानती हो?"

"हाँ, वह गवर्नमेंट कॉलेज में पढ़ता है।"

"वह भी कभी आया है तुम्हारे पास?"

"कई बार।"

"वहीदन को इस बैठक में आए कितने दिन हुए थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पुलिस के छापा से तकरीबन तीन महीने पहले यह आई थी।"

"इसके आने पर तुम्हारे काम में तरक्की हुई क्या?"

"हाँ, इसकी आवाज ज्यादा साफ और अलफाज खालिस थे। यह गजल बहुत अच्छी गा लेती थी।"

"इसे कौन लेकर आया था?"

"बुद्धू मियाँ का भाई।"

"यह कहाँ से लाई गई थी?"

"यह रहने वाली तो लाहौर की है मगर गुजरांवाला में वहीं से गाना सीखकर आई थी, जहाँ से मैंने सीखा था। इसका उस्ताद भी वहीं था, जो मेरा उस्ताद रहा था।"

"यह भी पेशा करती थी जैसा कि तुम करती थीं।"

"बहुत कम। कभी कोई बहुत इसरार करता तो यह मान जाती थी। यह पीछे कहा करती थी कि इसने अपनी मुहब्बत किसी के साथ बताकर उस ग्राहक को भगा दिया है। इस पर भी किसी आदमी के वक्त के बाद वहाँ रह जाने पर बुद्धू मियाँ का कमीशन तो बन ही जाता था।"

"तुमको मालूम है कि वहीदन ने कभी कोई चिट्ठी हलवाई की लड़की से शमशाद के दोस्त को दिलवाई थी?"

"मालूम है। वह हमको सामान लाकर दिया करती थी। वहीदन ने एक चिट्टी लिखी और लड़की को शमशाद के दोस्त को दिखाया और चिट्ठी उसें दे आने के लिए कह दिया। चिट्ठी दी गई, जिससे दोनों दोस्त अगली शाम को आए। शमशाद मेरे साथ रहा और उसका दोस्त वहीदन के साथ। इसके बाद शमशाद कई बार अकेला मेरे साथ रहने के लिए आया था।"

"अब बुद्धू मियाँ का उस बैठक के साथ क्या ताल्लुक है?"

"वही जो पहले था।"

इसके बाद कई गवाह लाहौर, बेगम कोट और गुजरांवाले के पेश हुए और फकीरचन्द यह सिद्ध करने में सफल हो गया कि बदरुद्दीन अपने मतब के साथ–साथ तबलीग का काम भी करता है। हकीम साहब का एक बिल साधना के इलाज का वहाँ उपस्थित किया गया और वह तकरीबन सौ रुपये का था। उस बिल में प्राइवेट तौर पर मुआइना करने की फीस भी थी।

बहस भी फकीरचन्द ने की। सरकारी वकील तो मुख लटकाए बैठ रहा। हकीम साहब को, बुद्धू मियाँ को और उसके भाई को सात–सात साल का कठोर दण्ड दिया गया। रामरक्खामल्ल पर कातिलाना हमला करने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ा नहीं जा सका। इस पर भी उस दिन अदालत में हाजिर होने वाले मुसलमानों में से, सात लोगों से क्रिमिनल प्रोसीजर कोड की धारा एक सौ सात के अधीन एक–एक साल के लिए एक–एक हजार की जमानत ले ली गई।

हकीम साहब, बुद्धू मियाँ और उसके भाई ने सैशनकोट और फिर चीफ कोर्ट में अपील की। फकीरचन्द ने मुकदमा इतना मजबूत कर रखा था कि दण्ड में कोई कमी नहीं हो सकी।

मुकदमे में एक वर्ष लग गया। इस पर भी पहली अदालत के बाद रामरक्खामल्ल और फकीरचन्द ने मुकदमे में रुचि प्रकट नहीं की। रामरक्खामल्ल तो एक सप्ताह अस्पताल में पड़ा रहा। पीछे वह घर आ गया और फिर घर पर ही मरहम–पट्टी होती रही। उसको ठीक होने में एक मास लग गया।

जवाहरलाल अपनी करतूत के इस लम्बे परिणाम पर बहुत लज्जित था। उसने शमशाद को अपनी सब बात बताई तो शमशाद की भी हमदर्दी साधना के साथ हो गई। साधना के, एक वेश्या का काम करने के लिए विवश होने पर भी, वह अपने को पाक–साफ करने की कोशिश से वह बहुत प्रभावित हुआ था। यह उसकी ही कोशिशों का परिणाम था कि नासिर फकीरचन्द के सामने सब कुछ सत्य–सत्य कहने पर तैयार हो गई थी।

जब रामरक्खामल्ल का घाव ठीक हो गया और पहली अदालत में मुलजिमों को दण्ड दिया गया तो साधना के विषय में विचार होने लगा। मुकदमा समाप्त होते–होते दो महीने निकल गए थे। इस समय तक मुहल्ले तथा खत्री बिरादरी में बहुत हल्ला मच गया था। मुहल्ले की औरतों ने तो कुएँ पर बैठकर साधना का 'सियापा' किया। बिरादरी वालों ने बिरादरी की बैठक बुलाकर सोमनाथ और उसके परिवार वालों का हुक्का–पानी बंद कर दिया। मुहल्ले वालों ने उनको, कुएँ से पानी भरने की मना कर दी।

खत्री बिरादरी की बैठक में तो सन्तराम सोमनाथ की हिमायत करता रहा। सन्तराम ने अपनी पूर्ण योग्यता से बिरादरी वालों को समझाने का यत्न किया। बिरादरी का कहना था–''एक हिन्दू की लड़की, जो मुसलमान के घर खा–पी आई है और पेशा करती रही है, वह दोबारा हिन्दू नहीं हो सकती।''

सन्तराम का इस पर प्रश्न था, ''जब यह कहा जाता है कि सौ कोस दूर से गंगा का नाम लेने से आदमी पवित्र हो जाता है तो वह, जो गंगा स्नान कर आई है, पवित्र क्यों नहीं हो गई?''

बिरादरी के पुरोहित पंडित ब्रजलाल ने कह दिया–''वह सन्तराम और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
सूद जाति के लाला रामरक्खामल्ल आर्य-समाजी हैं। ये स्वामी दयानन्द के चेले हैं, जिसने ठाकुर की मूर्तियों को रावी में बहाने की प्रेरणा दी थी। उसी धर्म भ्रष्ट करने वाले स्वामी के ये चेले हैं। अतः इनकी दलीलें नास्तिकों की हैं और माननीय नहीं हैं।''

इस पर सन्तराम ने पूछ लिया, ''तो पडितजी! लड़की के लिए क्या आज्ञा दे रहे हैं?''

''उसको घर से निकाल देना चाहिए। उसको रावी में जाकर डूब मरना चाहिए।''

''वह पुनः मुसलमान हो जाएगी?''

''तो हो जाए। हम धर्म का ह्रास सहन नहीं कर सकते।''

इस पर सन्तराम ने कह दिया, ''तो आज्ञा दीजिए।''

सबने पंडित ब्रजलाल की बात का समर्थन कर दिया। इस पर फकीरचन्द ने बताया, ''किसी को आत्महत्या की प्रेरणा देना एक अपराध है और यदि यह पुलिस वालों को पता चल गया तो वह पंडितजी को, बिरादरी के चौधरी को और अन्य प्रमुख व्यक्तियों को पकड़कर मुकदमा चला देगी।''

इस पर चौधरी डर गया और उसने पास होने वाले 'फतवे' में संशोधन कर दिया। अब 'फतवा' यह दिया गया कि-''हमारा मत यह है कि हम सोमनाथ और उसके सब परिवार को हिन्दू धर्म से पतित हो गया मानते हैं और सब धर्मात्मा हिन्दुओं से यह आशा करते हैं कि सोमनाथ और उसके परिवार से सहयोग न करें।''

इसी प्रस्ताव के बल पर मुहल्ले वालों ने सोमनाथ के परिवार को कुएँ से पानी भरने से मना कर दिया था। उस दिन से मुहल्ले के कुछ युवकों ने कुएँ पर धरना आरम्भ कर दिया।

इस पर सोमनाथ तथा उससे सहानुभूति रखने वाले कुछ लोग रामरक्खामल्ल की बैठक में एकत्रित हो विचार करने लगे। फकीरचन्द की सम्मति थी कि कमिश्नर साहब के पास अर्जी करनी चाहिए। वहाँ से पुलिस की सहायता लेकर कुएँ से जल भरा जा सकता है। परन्तु रामरक्खामल्ल ने इस प्रस्ताव का विरोध कर दिया। रामरक्खामल्ल का कहना था, ''यह हमारे धर्म का मुआमला है। इसे कचहरी में नहीं ले जाना चाहिए।''

''क्यों?''

''हम सरकार को, जो अपने धर्म की नहीं है, अपने धर्म के विषय में हस्तक्षेप करने का निमन्त्रण नहीं दे सकते।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"परन्तु भापा! क्या आप जल भरने की मनाही को धर्म का काम समझ रहे हैं?"

"मैं इसको अधर्मयुक्त व्यवहार मानता हूँ, परन्तु जो ऐसा कर रहे हैं वे इसे धर्म का व्यवहार समझकर ही कर रहे हैं। इसमें उनका अपना कोई सांसारिक स्वार्थ नहीं है। परमार्थ का स्वार्थ भी भ्रम के कारण है। परमार्थ की बातों के लिए मैं कानून की सहायता लेना नहीं चाहता। विशेष रूप में विधर्मियों की सरकार से। यह मतभेद मैं अपनी तपस्या से मिटाना चाहता हूँ, राजदण्ड से नहीं।"

"परन्तु भापा! यह तो एक व्यक्ति के नागरिक अधिकारों में बाधा है न? जल तो जीवन के लिए भोजन से भी अधिक आवश्यक है। जल से वंचित करने का कार्य तो अपने विपरीत मत रखने वाले की हत्या के तुल्य हो जाएगा।" इस तरह वकील साहब ने अपना दृष्टिकोण उपस्थित किया।

"देखो फकीरचन्द! यदि नगर में यह एक ही कुआँ होता और इस कुएँ के अतिरिक्त कोई अन्य साधन जल प्राप्त करने का न होता तो मैं समझ जाता कि जल बन्द कर हत्या करने का अपराध ही किया जा रहा है। कुआँ बन्द करने से मुहल्लेवाले, इस कुएँ का, जिस पर वे हिन्दुओं का अधिकार मानते हैं, अपने विचार से एक मुसलमान को प्रयोग नहीं करने देते।

"मैं यह तो पसन्द करता हूँ कि इनको समझा–बुझा दूँ कि लाला सोमनाथ अथवा मैं मुसलमान नहीं हैं, परन्तु अपने को हिन्दू सिद्ध करने के लिए मैं सरकार से सहायता नहीं लेना चाहता।"

फकीरचन्द विस्मय में मुख देखता रह गया। लाला रामरक्खामल्ल ने सोमनाथ को कहकर एक जल भरने वाला नौकर रख दिया जो बाजार में लगे एक सार्वजनिक नल से पानी भरकर दोनों घरों में देने लगा। इसके साथ ही सोमनाथ और विष्णुनारायण ने म्यूनिसिपल कमेटी में, दोनों घरों में नल लगाने की प्रार्थना भी कर दी।

: 10 :

इसके साथ ही एक और समस्या उत्पन्न हो गई। इस निर्णय के अगले ही दिन ब्रह्मनाल के शिवालय के बाहर बीस के लगभग लोग उस समय जा खड़े हुए, जब रामरक्खामल्ल वहाँ जल चढ़ाने जाया करता था। प्रातः पाँच बजे वह योगध्यान से अवकाश पा, लोटे में दूध की लस्सी लिए हुए वहाँ पहुँचा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वे बीस लोग उसका मार्ग रोककर खड़े हो गए।

रामरक्खामल्ल समझ गया कि यह भी उसका, सोमनाथ की लड़की को घर ले आने में सहयोग देने का परिणाम है। इस पर भी उसने पूछ लिया, ''क्यों भाई! किस कारण मन्दिर में जाने नहीं देते?''

''यह हिन्दुओं का मन्दिर है और तुम लोग मुसलमान हो गए हो।''

''और तुम हिन्दू हो?''

''हाँ।''

''और यह मन्दिर तुम्हारा है?''

''हाँ।''

''तो मैं इसमें नहीं जाऊँगा। तुमको निश्चित रहना चाहिए कि मैं वह नहीं हूँ, जो तुम हो। जैसे हिन्दू तुम हो वैसा हिन्दू मैं नहीं हूँ और यदि तुम जैसों का यह मन्दिर है तो यह मेरे लिए नहीं है।''

इतना कहकर रामरक्खामल्ल लौट पड़ा। ज्यों ही वह लौटा, एक अन्य युवक ने, जो मन्दिर में जल चढ़ाने आया था, लालाजी को मंदिर के बाहर से ही लौटते देख, पूछ लिया, ''क्या बात है लालाजी! जल नहीं चढ़ाइयेगा?''

''कुछ लोग कह रहे हैं कि मन्दिर उनका है और मैं वह नहीं, जो वे हैं। इसलिए वे मुझको भीतर जाने नहीं देंगे। मैंने उनके कथन को ठीक समझा है। यदि मन्दिर उनका है तो सत्य ही वह मेरा नहीं हो सकता। मैं अपने को उनसे भिन्न मानता हूँ। मैं उस मन्दिर में, अब चल चढ़ाने जाया करूँगा जो मेरा अपना होगा।''

''कहाँ होगा वह?''

''वह मेरे मन में है।''

वह युवक हँस पड़ा। हँसते हुए उसने पूछ लिया, ''परन्तु वह तो पहले भी था। क्या आपको विदित नहीं था?''

''विदित तो था। परन्तु मैं भूल यह कर रहा था कि मैं इनको वह समझता था, जो मैं हूँ, क्योंकि मैं 'आत्मवत् सर्वभूतेषु' मानता था। परन्तु ये लोग वह नहीं हैं जो मैं हूँ।

''मैं सम्मिलित प्रार्थना में विश्वास रखता हूँ। परन्तु उनमें सम्मिलित होकर, जो मेरी भाँति सब प्राणियों में अपने समान आत्मा मानते हैं। जो इस एक छोटी–सी बात से, कि मैंने एक हिन्दू लड़की को मुसलमान होने से बचाया है और ये लोग वैसा करना ठीक नहीं समझते, मेरे साथ प्रार्थना करने को उचित नहीं समझते, उनके साथ मिलकर प्रार्थना करने में मुझे कुछ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ प्रतीत नहीं होता।''

वह नवयुवक शम्भूनाथ, रामरक्खामल्ल के व्यंग्य को समझने लगा था। उसने भी मन्दिर से लौट जाना उचित समझा। वह अभी एक बात के विषय में अपने मन में स्पष्ट नहीं था। अतः उसने पूछ लिया, ''लालाजी यह तो मैं समझ गया हूँ कि आप वह नहीं, जो मन्दिर में आपके प्रवेश को रोकने वाले हैं। परन्तु आप हिन्दू हैं क्या?''

"हाँ, और शैव हूँ।''

"मैंने तो सुना है कि आप आर्यसमाजी हैं। कल जब मन्दिर में आपके विषय में चर्चा हो रही थी तो सबका यह विचार था कि आप मन्दिर को भी भ्रष्ट करने आते हैं। आपका विश्वास तो शिव पर है ही नहीं?''

"देखो शम्भूनाथ! मैं तुमको बताता हूँ कि मैं किस प्रकार का शैव हूँ। मैं परमात्मा को शिव अर्थात् कल्याणमय मानता हूँ। यह जो पत्थर वहाँ पर पड़ा है, इसको परमात्मा नहीं मानता। इस पर भी मैं इस पत्थर पर जल चढ़ाता हूँ। वह इसलिए कि हमारे समाज ने शिव, कल्याणमय परमात्मा की पूजा का यह एक ढंग बना लिया है। सम्मिलित प्रार्थना में कुछ–न–कुछ विधि–विधान तो बनाना ही पड़ता है। शैवों ने यह ढंग बनाया है। मैं जब संसार के कल्याण करने के लिए त्रिशूल अर्थात् अस्त्र–शस्त्र धारण करने वाले परमात्मा का चिन्तन करता हूँ तो मैं उस सर्व–व्यापक, निराकार, निर्विकार, निर्लेप का चिंतन करता हूँ, जो सबके हृदय में विद्यमान है। वैसा चिन्तन करते हुए मैं इस लिंग अर्थात् चिह्न पर जल चढ़ाता हूँ। केवल इसलिए कि शैवों ने इस क्रिया के साथ निश्चित किया है। यह इसी प्रकार है जैसे आर्यसमाज के विधि–विधानानुसार स्वस्तिवाचन अथवा भक्तिपूजा के मंत्र पढ़–पढ़कर हम आहुति देते हैं? आर्य समाज ने मंत्र पढ़ते हुए अग्नि में घी–सामग्री इत्यादि डालने का नियम बना रखा है। अतः जब सम्मिलित हवन होगा तो आहुति डालना ठीक ही है।

"मैं एक बात और बताता हूँ। पूजा–चिन्तन इत्यादि चाहे तो साकार की करो, चाहे निराकार की, यह भगवान को प्रसन्न करने के लिए नहीं होती। भगवान न तो नाराज ही होते हैं और न ही प्रसन्न। इस पूजा–पाठ, चिन्तन, प्रार्थना, उपासना का अर्थ अपने अन्तःकरण की शुद्धि और एकाग्रता प्राप्त करना है। उस शुद्ध, पवित्र एवं एकाग्र अन्तःकरण से योग–ध्यान तपस्या में चित्त लगता है और एकाग्र हुए चित्त से मोक्ष की प्राप्ति में सुविधा मिलती है।''

शम्भूनाथ चलता–चलता खड़ा हो गया। उसने पूछ लिया, ''आप मूर्ति को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमात्मा नहीं मानते। उसको आप कल्याणमय, सर्व कष्टहर, भक्तवत्सल नहीं मानते क्या?"

"भोले शम्भू! मूर्ति में इतनी सत्ता नहीं है। यह सत्ता तो सर्वनियन्ता सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान्, इस चराचर जगत् के रचने वाले उस प्रभु में ही है। हमने अर्थात् पूजन करने वालों ने इस लिंग पर जल चढ़ाना एक ढंग बना लिया है। वैसे ही जैसे सेना अपने देश का एक ध्वज मान उसकी रक्षा और सम्मान का प्रण कर लेती है। युद्ध में उस ध्वज की रक्षा के लिए सेना लड़ मरती है। इस पर भी वह ध्वज तो देश नहीं होता। यही बात पूजन के समय होती है।"

शम्भूनाथ विस्मय में मुख देखता रह गया। पिछले दिन भी जब रामरक्खामल्ल को मन्दिर में प्रवेश करने से मना करने की बात हो रही थी तो वह उसका विरोधी था। उसको लोग अपने पक्ष में करने के लिए कई प्रकार की युक्तियाँ दे रहे थे और आज उन्हीं युक्तियों को वह रामरक्खामल्ल के सामने दोहरा रहा था। उसने अब अपने मन की एक बात कह दी, "मेरे घर में तीन लड़कियाँ हुईं तो मुझे मेरे एक मित्र ने कहा कि मैं भगवान् भोलेनाथ की पूजा किया करूँ। इससे मेरे घर निस्सन्देह लड़का होगा। मैंने वैसा ही किया तो चौथी बार लड़के का जन्म हुआ। भला बताओ, यदि भोलेनाथ में यह शक्ति नहीं, तो यह कैसे हो गया?"

रामरक्खामल्ल मुस्कराकर बोला, "यह हुआ तो उसी सर्वशक्तिमान् एवं व्यापक भगवान् की कृपा से। तुमने पूजन भी उसी सर्वव्यापक का किया है, पत्थर का नहीं। यह तो एक बहाना बन गया है। यह ठीक वैसे ही हुआ है, जैसे सेना की टुकड़ी अपने राष्ट्रीय ध्वज की रक्षा करते–करते शत्रु का संहार करती है और वास्तव में अपने देश की रक्षा में कारण हो जाती है। ध्वज देश न होते हुए भी, उस ध्वज की रक्षा करने वाले सैनिकों द्वारा देश की रक्षा में, साधन बन जाता है।"

"तो इस मूर्ति की पूजा भी सार्थक हो सकती है?"

"हाँ, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि यह मूर्ति ही साक्षात् भगवान् है। वही ध्वज वाले उदाहरण का चिंतन करो। ध्वज देश का चिह्न अवश्य है, परन्तु वह देश की जनता नहीं है। यदि सेना यह मान ले कि ध्वज उस देश की शक्ति है और शत्रु के आक्रमण के समय वह शक्ति ही स्वयं अपनी रक्षा कर लेगी, तो पराजय निश्चित है। इस प्रकार यदि पूजा करते समय लिंग–मूर्ति को ही तुम सर्वेसर्वा मान लेते और पूजा–काल में संयम से न रहते अर्थात् एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निश्चित काल के पश्चात् ही स्त्री के पास न जाते और मान लेते कि तुम्हारा कार्य मूर्ति कर देगी, तो पुत्र छोड़ कुछ भी उत्पन्न न होता।''

शम्भूनाथ विचार करता था कि बात तो कुछ ऐसी हो हुई थी। उसको लिंग पर जल चढ़ाने वाले ने कहा था कि तीन मास तक संयम से रहते हुए वह मूर्ति पर जल चढ़ाया करे और सदा भगवान् का मन में चिन्तन करता रहे तो भोले बाबा प्रसन्न हो पुत्र की उत्पत्ति में सहायक हो जायेंगे। उसने सत्य हृदय से यही किया था। उसने अपनी स्त्री को कह रखा था कि वह एक अनुष्ठान में लगा हुआ है और इस अनुष्ठान–काल में ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है। साथ ही वह दिन–रात उस भोले बाबा का चिंतन करता रहता था। तीन मास इस घोर तप के उपरान्त गर्भ तो तब ही स्थापित हुआ था, जब वह स्त्री के संसर्ग में आया था।

बातें करते हुए दोनों गली के कुएँ तक आ पहुँचे थे। कहार घर में, जल भर रहा था। गली के कुछ युवक पुरुष तथा स्त्रियाँ कुएँ पर धरना दे रहे थे। शम्भू उसी गली का निवासी होने के कारण इस धरने का कारण जानता था। उसने रामरक्खामल्ल से पूछ लिया, ''लालाजी! इसका क्या करेंगे?''

''कुछ भी नहीं। धरना तो मुहल्ले के कुछ मूर्ख दे रहे हैं। जब थक जायेंगे, तब छोड़ देंगे। मैंने अपने और सोमनाथ के घर जल का प्रबन्ध कर लिया। जो बाजार में म्युनिसिपल नल लगा हुआ है, एक कहार रख दिया है जो दोनों घरों में वहाँ से जल भर दिया करेगा।''

''यह सब कब तक चलेगा?''

''जब तक मुहल्ले के ये पथ–भ्रष्ट लोग थक नहीं जाते। म्युनिसिपल कमेटी में दोनों घरों में नल लगवाने की अर्जी कर दी है। दो–एक दिन में अर्जी स्वीकार हो जाएगी और नल लगना आरम्भ हो जाएगा।''

''आपने इस अत्याचार के प्रतिकार में पुलिस में रिपोर्ट क्यों नहीं की?''

''इस कारण कि यह हमारे हिन्दुओं के घर का और धर्म, आचार तथा साथ ही विश्वासों का प्रश्न है। विधर्मी सरकार के हाथ में यह प्रश्न मैं देना नहीं चाहता। यह परस्पर समझने और समझाने की बात है और उसके लिए मैं यत्न कर रहा हूँ।''

''क्या यत्न कर रहे हैं?''

''इन मूर्खों की अवहेलना। ये जब अपने इस धरने की व्यर्थता को समझ जायेंगे, तब स्वयं इसको छोड़ देंगे। तब ही इनको अपनी मिथ्या दिशा का ज्ञान होगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शम्भूनाथ कितना संतुष्ट हुआ और कितना समझ सका, कहना कठिन है। यह स्वयं भी यह नहीं जान पाया था कि रामरक्खामल्ल के कथन ने उसके मन में कोई परिवर्तन किया है अथवा नहीं। हाँ, उसके मस्तिष्क में एक विचार का समर्थन हुआ। इसने उसको विचार करने पर विवश कर दिया था। वह गम्भीर विचार में लौट पड़ा।

पिछले दिन मुहल्लेवालों की सभा में उसने कहा था कि वे एक गैर–कानूनी बात कर रहे हैं और रामरक्खामल्ल जैसा समझदार व्यक्ति उनको कचहरी में ऐसा रगड़ा देगा कि वे सब लोग तोबा–तोबा कर उठेंगे। उसके ऐसा कहने से कुछ लोग भयभीत हुए थे, परन्तु उग्रवादियों ने अपनी बात मनवाकर छोड़ी।

आज उसको रामरक्खामल्ल की मानसिक अवस्था का दिग्दर्शन हुआ तो उसको उन उग्रपन्थियों के हृदयहीन होने का ज्ञान हो गया। सबसे बड़ी बात यह हुई कि रामरक्खामल्ल के आर्यसमाजी और स्वामी दयानन्द का शिष्य होते हुए भी, शिवालय में जल चढ़ाने के लिए जाने का रहस्य उसे पता चल गया।

जिस व्यक्ति ने उसको शिवालय में जल चढ़ाने के लिए कहा था, उससे उसने पूछा था कि भला यह भोलेनाथ लड़की से लड़का कैसे उत्पन्न कर देंगे और जब भाग्य में लड़कियाँ लिखीं, ज्योतिषी ने बताई हैं, तो फिर वह भाग्य को कैसे और क्यों टाल देगा? इस पर उस सम्मति देने वाले ने कहा था, "यह बुद्धि का विषय नहीं है। परमात्मा की बातों में बुद्धि काम नहीं करती। बुद्धि तो प्रकृति का एक अंश है। इसकी पहुँच उस परब्रह्म परमात्मा, जो इस संसार में आत्म–तत्त्व है, तक नहीं हो सकती।'

परन्तु आज रामरक्खामल्ल ने पुत्र–संतान के होने का रहस्य युक्ति से समझाया था और उसकी समझाई बात घटनाचक्र से मेल खाती थी। वह अन्यमनस्क–भाव में घर पहुँच गया। आज लोटे में लस्सी, पूरी की पूरी वापस लाये देख उसकी पत्नी ने पूछ लिया, "क्यों जी! शिवालय में नहीं गए आज?"

"नहीं गया। आज मंदिर का द्वार बंद था।"

"क्यों? पुजारी मर गया है क्या?"

"हाँ, उसके स्थान पर कोई अन्य था और कुछ वह मूर्ख प्रतीत हुआ है।"

पत्नी ने समझते हुए कहा, "यह तो भारी अनर्थ हो जाएगा। आप आज घर पर ही पूजन कर लीजिए। पिछले वर्ष नर्मदा से लिंग की मूर्ति जो लाये थे, मैं उसको निकाल देती हूँ और आप उसकी ही पूजा कर लें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर शम्भू ने हँसते हुए कहा, "हाँ, याद आ गया है, निकालो कहाँ है वह?"

शम्भूनाथ रामरक्खामल्ल की युक्ति स्मरण कर विचार कर रहा था, यह तो वैसे ही हो रहा है, जैसे एक परास्त सेना अपना ध्वज शत्रु के हाथ में खो आए और उनका उच्च अफसर सेना को एक नवीन ध्वज देकर कहे, 'अच्छा, आज से आपका यह ध्वज है।' इस विचार पर तो वह खूब हँसा।

उसकी पत्नी सन्दूक में से संगमरमर की लिंग की मूर्ति निकाल लाई। अपने पति को उस प्रकार हँसते हुए देखकर पूछने लगी, "क्यों, क्या बात है?"

"कुछ नहीं रानी! मैं तो विचार कर रहा हूँ कि कहाँ स्थापित करूँगा इसे?"

"अभी तो इसको रसोईघर के कोने में रख लीजिए। आज मैं यह सीढ़ी के साथ वाली कोठरी खाली कर दूँगी और फिर यह भोले बाबा वहाँ पर ही रहेंगे।"

उसने मूर्ति ले ली और पत्नी से कहा, "घर में गंगाजल है क्या?"

"हाँ, है तो?"

"तो ले आओ। उससे इसको धोकर पवित्र कर लें।"

उसकी पत्नी गंगाजल ले आई तो शम्भूनाथ ने मूर्ति को धोकर रसोईघर के एक कोने में एक चौकी पर रख प्रतिष्ठित कर दिया। वह शिवस्तोत्र पढ़ने लगा–

नमो रुद्राय नीलाय भीमाय परमात्मने।
कपर्दिदने सुरेशाय व्योमकेशाय वै नमः।।

इस प्रकार शिवस्तोत्र का जप करते हुए उसने उस पर जल चढ़ाया और फिर अपने नित्य के कर्म में लीन हो गया।

आज उसकी पत्नी ने भी अपने पति के साथ बैठकर भगवान् देवन के देव महादेव की मूर्ति पर जल चढ़ाया और माथा टेककर नमस्कार किया।

: 11 :

रामरक्खामल्ल का अनुमान ठीक निकला। जब उसके और सोमनाथ के घर नल लग गए और उन्होंने स्नानागार बनवा लिए तो मुहल्ले वालों का जोश ठण्डा पड़ गया। दोनों घरों के सब प्राणी घर में ही स्नान करने लगे तथा रसोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए और पीने के लिए पानी भी वहीं से लेने लगे। धरना उठ गया, इस पर भी ये लोग कुएँ से पानी लेने अथवा वहाँ स्नान करने नहीं जाते थे।

मुकदमा समाप्त हुआ, तब तक मुहल्ले और मन्दिर के धरने उठ चुके थे। मन्दिर का पुजारी जिसे रामरक्खामल्ल से कुछ–न–कुछ मिलता रहता था, एक दिन लालाजी से मिलने चला आया। मध्याह्न का समय था और रामरक्खामल्ल भोजन कर विश्राम करने के लिए अपने कमरे में जाने वाला था कि द्वार के बाहर से पुजारीजी ने आवाज दे दी, ''लालाजी!''

रामरक्खामल्ल ने द्वार खोला तो पंडित गौरीशंकर खड़ा था। रामरक्खामल्ल ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया और उसको भीतर बैठक में ले आया। एक आसन पर उसको बैठाकर उसने पूछा,''पडितजी! कैसे आगमन हुआ है?''

''मैं इस गली में बाबू शम्भूनाथ से मिलने आया था। विचार आया कि चलो आपके भी दर्शन लाभ करूँ। सुनाइए कुशल–मंगल तो है?''

''सब भगवान की कृपा है।'' रामरक्खामल्ल का उत्तर था।

''अब मन्दिर में आपके दर्शन नहीं होते?''

''मेरे ज्ञान चक्षु खुल गए हैं, इसलिए।''

''क्या दिखाई देने लगा है आपको इन ज्ञान–चक्षुओं के खुल जाने से?''

''यही कि मन्दिर में म्लेच्छों का आना–जाना है और उनके साथ मिलकर मैं पूजा–पाठ नहीं कर सकता।''

''कौन म्लेच्छ हैं?'' पुजारी ने विस्मय में रामरक्खामल्ल का मुख देखते हुए पूछ लिया।

''वही जो हिन्दू–धर्म के ठेकेदार बन मन्दिर में अपना अधिकार जमा बैठे हैं।''

''किसी ने अधिकार नहीं जमाया। यह तो कुछ भ्रम हो गया था। वह अब मिट चुका है।''

''मैं समझता हूँ पंडितजी! भगवान् से मन्दिर बनते हैं। मन्दिर से भगवान् नहीं बनते। अतः भगवान् सर्वत्र हैं। उनके मन्दिर सर्वत्र हैं। जहाँ भी चाहो, वहीं उनका मन्दिर स्थापित हो सकता है और हो गया है।''

''वहाँ भी तो भगवान् हैं?''

''हाँ, हैं तो; परन्तु आपके मन्दिर में उनका आना–जाना है, जो भगवान् के उपासकों को मन्दिर में घुसने नहीं देते। वे स्वयं मन्दिर के ठेकेदार बन बैठे हैं। वे तो हिन्दुओं को लातें मार–मार कर हिन्दू धर्म से निकालने में लगे हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अतः मैं अब उस मन्दिर में नहीं जाऊँगा। हाँ, यदि मन्दिर की शुद्धि हो जाए और उन सब लोगों से प्रायश्चित्त कराया जाए, जिन्होंने उस मन्दिर के द्वार बंद करने की धृष्टता की थी, तो मैं पुनः वहाँ जाने के विषय में विचार करूँगा।"

पुजारी यह प्रायश्चित्त की बात सुनकर अपना–सा मुँह लेकर वहाँ से चला आया। शम्भूनाथ ने तो उसको अपने घर पर ही शिवालय बना लेने की सूचना दी और अपने आपको, इससे संतुष्ट प्रकट कर दिया था।

अब तो मुहल्लेवाले भी उसको कहते थे, "भापा! कुएँ का जल, नल के जल से अधिक पवित्र होता है।"

रामरक्खामल्ल का उत्तर रहता था, "जी! परन्तु लाहौर के नलों में भी तो जल कुओं का ही आता है। उन कुओं में तो कोई बर्तन इत्यादि अथवा बाहर का कूड़ा–करकट जाता नहीं। इस कारण वहाँ का पानी और भी अधिक स्वच्छ होता है।"

युक्ति से तो बात रामरक्खामल्ल की ठीक रहती, परन्तु पापी पाप से मुक्त होने के लिए तैयार नहीं होता। मिथ्या अभिमान में वह अपने को ठीक ही मानता है।

जब इन झंझटों से मुक्ति मिली तो साधना के विवाह की चर्चा होने लगी। जवाहरलाल से पूछा गया तो उसने पिता को कह दिया कि उसको आपत्ति नहीं, पर साधना ने अपनी माँ को स्पष्ट रूप में कह दिया, "मैं विवाह नहीं करूँगी।"

"क्यों?" माँ का प्रश्न था।

"बस नहीं। देखो माँ! यदि तुम समझती हो कि मुझको जीवन–भर रोटी खिलाने की बात असम्भव है तो बता दो। मैं अपने लिए पैदा करने का विचार कर लूँगी।"

यमुना पहले तो अपनी लड़की का मुख देख उसके मन के विचारों का अनुमान लगाती रही। परन्तु जब कुछ नहीं समझ सकी तो बोली, "देखो साधना! तुम्हें घर लाने के लिए मैंने और तुम्हारे पिता ने कितनी बदनामी सही है। इससे यह तुम अनुमान लगा सकती हो कि यह दो रोटी का प्रश्न नहीं। यह हमारा तुमसे स्नेह है, जिसका मूल्य हम दे रहे हैं। उसके लिए रोटी खिलाने की बात तो एक बहुत ही सरल बात है। इस पर भी हम तुम्हारा इसी में कल्याण मानते हैं कि तुम्हारा विवाह हो जाए। अब तो जवाहरलाल मान रहा है। पीछे कभी वह न भी कर सकता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं जवाहरलाल और उसके पिता के अहसान के नीचे दबी हुई हूँ। मैं यह जानती हूँ कि जो कुछ तुमने और पिताजी ने किया है, उनकी प्रेरणा से ही किया है, इस पर भी मेरा यही निश्चय है कि अब इस जीवन में विवाह नहीं हो सकेगा।"

"तो फिर इतना लम्बा जीवन कैसे निकलेगा? तुम अपनी उस अवस्था का अनुमान लगा लो; जब तुमने पहली बार जवाहर को आत्मसमर्पण किया था। वैसी अवस्था पुनः भी तो आ सकती है।"

"जब आएगी तब देख लूँगी।"

"तो इस घर में कैसे रहोगी?"

"जैसे लाजवंती अथवा उसकी बूआ सतवंती श्याम भापा के पिता के घर में रह रही है?"

माँ बितर्-बितर् लड़की का मुख देखती रह गई। उसे निरुत्तर देख साधना ने कह दिया, "माँ! इस समय मेरे मन की अवस्था यह है कि मेरी विवाह में रुचि नहीं है। ऐसी अवस्था में विवाह किया गया तो बहुत ही अल्पकाल में वैमनस्य उत्पन्न हो जाएगा। पीछे कभी विवाह की इच्छा हुई तो देख लूँगी। तब की बात तो भगवान भरोसे ही है।"

यह बात यमुना ने अपने पति सोमनाथ से कही और उसने रामरक्खामल्ल से कह दी। इतना कहकर उसने क्षमा के भाव में कह दिया, "भापा! आपने साधना को छुड़ाने में जो कुछ किया और उसके परिणामस्वरूप आए कष्टों को जिस प्रकार झेलते रहे हो, मैं देख रहा हूँ। मैंने और यमुना ने समझाने की बहुत चेष्टा की है, परन्तु लड़की ऐसी कृतघ्न है कि कुछ समझती ही नहीं।"

"सोमनाथ! मैंने जो कुछ किया है, वह लड़की को लड़के से विवाहने के लिए नहीं किया था। वह तो केवल मात्र जवाहरलाल के पापों के प्रायश्चित के रूप में था। जवाहरलाल भी इसी भावना से विवाह के लिए तैयार हुआ था। इस कारण यह समझ लो कि न तो हमारा उसके ऊपर किसी प्रकार का अहसान था, न ही वह कृतघ्न है। उसकी इस अवस्था में उसको विवाह के लिए विवश नहीं करना चाहिए। हाँ, इतना उसको आश्वासन मिलना चाहिए कि तुम्हारी ओर से सदैव जहाँ भी वह विवाह के लिए कहेगी, बाधा न रहेगी।"

"चाहे वह किसी विधर्मी से विवाह करना चाहे तो भी?"

"बाधा तब भी नहीं खड़ी करनी चाहिए। हाँ, उससे बचने की प्रेरणा दी जा सकती है। इस कार्य के लिए, यदि मेरी सम्मति मानो तो तुम उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखवती के पास नित्य पढ़ने के लिए भेज दिया करो। शेष सब भगवान् के अधीन है।''

''क्या पढ़ायेंगी वे? साधना पहले ही हिन्दी पढ़–लिख सकती है।''

''हिन्दी पढ़–लिख सकना तो एक कला मात्र है। उस कला का प्रयोग लेखवती सिखाएगी। देखो, हमारे घर में नित्य मध्याह्न दो बजे से चार बजे तक रामायण का पाठ होता है। रामायण पाठ तो करती है महानारायण की बहू और व्याख्या करती है लेखवती। इसको भी उस समय भेज दिया करो!''

सोमनाथ ने कह दिया, ''मैं उसे कहूँगा।''

इतना कह वह अपने घर लौट आया। साधना के उत्तर से वह अपने घर की अवस्था पर विचार कर रहा था। उसको यही समझ में आ रहा कि साधना की घर में उपस्थिति से घर के अन्य बच्चों आदि के विवाह नहीं हो सकेंगे।

सायंकाल जब जवाहरलाल घर आया तो पिता ने उसको एकांत में बैठाकर पूछ लिया, ''साधना से तुम्हारे विवाह में विघ्न पड़ रहा है।''

''क्यों विघ्न पड़ रहा है?''

''वह तुमसे विवाह करना स्वीकार नहीं कर रही।''

''इतना तो मुझको विदित है। मैं उसको मिला हूँ। वहीं घर की छत पर।''

''किस समय?''

''मध्याह्न के समय। मैं लघुशंका करने के लिए ऊपर गया तो वहाँ मिल गई। हम आधा घन्टा बातचीत करते रहे हैं। मैंने उसको बहुत कहा था कि उसको इस बात का भय नहीं करना चाहिए कि हमारे घर में कोई भी उसका अपमान कर सकेगा, परन्तु वह केवल नहीं कहती रही। वह रोती रही थी। मुझको यह सन्देह भी हुआ कि कदाचित् उसका मन किसी अन्य युवक की ओर आकर्षित हो गया है। उस वेश्यालय में कौन–कौन उसकी खुशामद करता रहा, कहा नहीं जा सकता। मैंने इस ओर संकेत किया था, परन्तु उसने स्पष्ट कह दिया कि ऐसी बात भी नहीं है।

''मैंने उसको यह भी बताया कि मैं उसकी भाँति ब्रह्मचर्य का पालन नहीं कर सकूँगा। उसने मेरी बात का कोई उत्तर नहीं दिया। अन्त में मैंने उससे कहा था कि अभी कुछ दिन तक वह आराम करे और शांति से विचार करे। मेरी पढ़ाई समाप्त होने तक अभी बहुत समय है, मैं उससे पहले तो विवाह करूँगा नहीं। हाँ, यदि वह तैयार होगी तो उससे करने के लिए अवश्य तैयार हो जाऊँगा।''

उस पर रामरक्खामल्ल ने कहा, ''मेरी दो बातें सत्य सिद्ध नहीं हो रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हैं। एक तो मुझको कुछ ऐसा मालूम हुआ था कि श्याम की बहू उसको सबसे पृथक् कर कहीं अन्यत्र ले जाएगी। दूसरी बात थी तुम्हारा साधना से विवाह। परन्तु घटनाएँ ऐसी हुई हैं कि ये दोनों बातें असम्भव नहीं तो कठिन हो रही प्रतीत होती हैं। इस पर भी मुझे इनके न हो सकने का दुःख नहीं है। न ही इनके होने पर मुझे कोई प्रसन्नता होती।

"अतः परमात्मा जो भूत, वर्तमान और भविष्य को जानता है, उसकी कृपा एवं भरोसे पर रहना चाहिए। जिस विधि राखे राम, तिस विधि रहिहौं।"

बात समाप्त हो गई। रामरक्खामल्ल अपने पुत्र की वेश्या की बैठकों में जाने की बात भी जान गया था। जवाहरलाल से उसने कह दिया, "देखो जवाहर! मैं तुम्हारे कॉलेज में भरती होने के लिए राजी नहीं था। तुमने कहा तो मैं मान गया। मुझको तुम्हारी कमाई में से कुछ पाने की लालसा नहीं है। ईश्वर की कृपा है कि मैं तुमको, बिना किसी प्रकार का भी कष्ट उठाए, कॉलेज का खर्चा दे सकता हूँ।

"इससे मैं तुमको आज कहता हूँ कि यदि तुमने आवारागर्दी करनी है तो पढ़ाई नहीं हो सकेगी। इस अवस्था में यह अच्छा है कि तुम पढ़ाई छोड़कर कोई काम–धन्धा करो। यही रुपया जो कि तुम्हारी पढ़ाई पर खर्च हो रहा है, तुमको काम करने के लिए पूँजी के रूप में मिल जाएगा।"

जवाहरलाल ने गम्भीर होकर कह दिया, "बड़े भापा! मैं विचार करके ही बताऊँगा।"

"हाँ! अपना निश्चित मत बताना। फिर उस पर दृढ़ रहना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाग दो

प्रथम परिच्छेद

: 1 :

एक दिन जवाहर को शमशाद ने बताया, "मैंने नासिरा से विवाह कर लिया है और उसको उसके मकान से निकालकर चंघर मुहल्ले के एक मकान में ले आया हूँ। अभी मैंने इस विषय में अपने माता–पिता को नहीं लिखा। इस कारण मैं उसका खर्चा अपने पास से देने में मुश्किल महसूस कर रहा हूँ। मुझको घर से केवल सवा सौ रुपया महीना ही आता है। इसमें पचास रुपये तो कॉलिज की फीस होती है। दस–बीस रुपये पाकेट खर्च के। मेरे पास पचास रुपये बच जाते हैं। यह मैं उसको दे देता हूँ। इसमें से वह मकान का भाड़ा पन्द्रह रुपये तथा चौका–बासन करने वाली को पाँच रुपये देती है। शेष रुपयों में रोटी–कपड़ा बहुत मुश्किल से पूरा करती है। नतीजा यह है कि अब गाना–बजाना सुनने नहीं जाता। जा सकता भी तो नहीं। जेब खर्च तो महीना खत्म होने से पहले ही खत्म हो जाता है।"

जवाहरलाल ने कह दिया, "मैं भी विचार कर रहा हूँ कि इधर–उधर भटकने के बजाय अपनी पढ़ाई में मन लगाना चाहिए। प्रथम वर्ष की परीक्षा में मेरा दर्जा तीसरा हो गया है। मैं यह पसन्द नहीं करता। इसका परिणाम यह होगा कि मेरे पास दस–बीस रुपये प्रतिमास बच जाया करेंगे। यदि तुम मानो तो ये रुपये मेरी ओर से तुम नासिरा को भेंट में दे दिया करो।"

शमशाद घूरकर उसकी आँखों में देखने लगा। वह इस भेंट का गलत अर्थ लगा रहा था। उसने पूछा, "क्या मतलब है तुम्हारा? मैंने उससे निकाह पढ़ा लिया है और अब किसी दूसरे की नजर उस पर पड़ने नहीं दूँगा।"

जवाहरलाल हँस पड़ा और बोला, "शमशाद! यह तुम में हसद कब से पैदा हो गई दोस्त?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर शमशाद उसकी ओर देखकर विस्मय में पूछने लगा, "क्या यह हसद है?"

"और क्या? इस बेबुनियाद बात पर तुम कुछ गुस्सा-सा करने लगे हो। मैंने कभी भी नासिरा से अपना सम्बन्ध बनाने का यत्न नहीं किया। अब मित्र की पत्नी भाभी हो गई है न? और शमशाद! हिन्दुओं में बड़ी भाभी को माँ ही समझा जाता है।"

इस पर दोनों हँसने लगे और एकाएक गले मिलने लगे। कसकर छाती से लगा, शमशाद ने जवाहर से कहा, "अच्छा बेटाजान! कितने रुपये अपने इस बाप को आसानी से दे सकते हो?"

जवाहर ने हिसाब सुना दिया, "पिताजी पचहत्तर रुपये महीना देते हैं। माँ दस रुपये पिताजी से चोरी देती है। चाची पाँच रुपए देती है। चाचा भी, जब मैं दुकान पर जा खड़ा होता हूँ तो एक-दो जेब में डाल ही देते हैं। इस प्रकार लगभग एक सौ रुपया महीना मिल जाता है। कॉलेज की पन्द्रह रुपए फीस है। नियम से पन्द्रह रुपए जेब-खर्च और पाँच रुपए दान-दक्षिणा। शेष चालीस रुपए बचते हैं। इनमें से बीस रुपए तो आसानी से दे सकता हूँ।"

"तो! लाओ बेटा! आज तो घर में बिना गोश्त के पालक बना है।"

"लो अब्बाजान!" इतना कह जवाहरलाल ने अपनी जेब में से दो दस-दस के नोट निकालकर शमशाद की हथेली पर रख दिए। शमशाद ने पुनः जवाहरलाल को गले से लगा लिया।

उसी सायंकाल जवाहरलाल ने अपने पिता से कह दिया, "पिताजी! मैंने अपने भविष्य के विषय में विचार कर लिया है कि मैं पढ़ूँगा। मैं आपको यह भी वचन देता हूँ कि आपको कभी मेरे विषय में कोई शिकायत नहीं मिलेगी।"

रामरक्खामल्ल ने इससे प्रसन्न होकर कहा, "कभी किसी वस्तु की आवश्यकता हो तो बताना।"

यह क्रम तीन-चार मास तक चलता रहा। जवाहरलाल नियम से अपने मित्र को बीस रुपए महीना उसकी गृहस्थी चलाने के लिए देता रहा। इस काल में लेखवती के दूसरा लड़का हुआ। लेखवती को किसी प्रकार का विशेष कष्ट नहीं हुआ। तेरहवें दिन लड़के का जात-कर्म संस्कार किया गया। आर्य-समाज के पंडित आए। हवनादि कर लड़के का नाम रत्नलाल रखा गया। इसी संस्कार के उपलक्ष्य में अपने सम्बन्धियों और मित्रों को रामरक्खामल्ल ने एक भोज दिया। दिल्ली से तारा और उसका पति रघुनाथ भी आया हुआ था। तारा के साथ दो बच्चे भी थे। जवाहर ने शमशाद को भी निमन्त्रण दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
दिया। शमशाद को जब पता चला कि सत्रह वर्ष के बाद जवाहर का छोटा भाई हुआ है तो उसे भी आश्चर्य हुआ। उसने बधाई दी तथा साथ ही कह दिया–"जवाहर! मैं तो तब ही आऊँगा जब अपनी भाभी को भी बुलाओगे।"

जवाहरलाल ने कह दिया, "हाँ–हाँ! निमन्त्रण तुम दोनों के लिए है।"

शमशाद ने इस पर कह दिया, "कहीं तुम्हारे माता–पिता एक मुसलमान को दावत पर बुलाने पर रजामन्द न हों?"

"मैं पूछकर उनकी राय ले चुका हूँ।"

"और नासिरा के लिए?"

"यह मैं कह दूँगा। दोस्त! रविवार है, कॉलेज होगा नहीं। तुम आ जाना और फिर देखना, पिताजी और हमारे घर के दूसरे प्राणी कितने फराखदिल हैं।"

मियाँ–बीवी दोनों, अगले दिन ग्यारह बजे आ पहुँचे। उस समय भोजन करने वाले सब लोग उपस्थित थे। लोग एक सूट–बूट पहने तथा उसके साथ एक बुर्का पहने औरत को आते देख चकित रह गए। सोमनाथ के घर के सब बच्चे एवं औरतें आई हुई थीं। साधना भी आई थी।

जब शमशाद आया तो जवाहर ने आगे बढ़ पिताजी से उसका परिचय करा दिया। रामरक्खामल्ल जवाहरलाल की माता और नवजात शिशु के साथ अभी भी वेदी पर बैठा हुआ था। उसके सामने मिठाइयों और फलों का ढेर लगा था। ये सम्बन्धियों और मित्रों ने सकुन के रूप में दिए थे। आर्यसमाजी पुरोहित वेदी से उठ हाथ में मोतीचूर का लड्डू लिए खा रहा था। विष्णुनारायण, उसके लड़के और परिवार के अन्य लोग एक ओर बैठे बधाइयाँ ले रहे थे। सुमित्रा देवी गुलाबी दुपट्टा ओढ़े थी और अपने सम्बन्धियों को कह रही थी, "बहिनजी! बैठिए! भोजन करके ही जाइएगा।"

शमशाद को देख रामरक्खामल्ल ने जब बाहर की ओर प्रश्न–भरी दृष्टि से देखा तो जवाहरलाल ने कह दिया, "भापा! ये हैं मेरे परम मित्र शमशाद कुरेशी और ये हैं इनकी धर्मपत्नी।"

"ओह! ठीक। इनको बैठाओ। और देखो इनकी श्रीमती को साथ के कमरे में स्त्रियों के पास बिठा दो।"

जवाहरलाल ने बुर्का पहने उस औरत को कहा, "आओ भाभी! तुमको तुम्हारी सहेली से मिलाऊँ।"

वास्तव में नासिरा आई ही इस कारण थी कि वह वहीदन से मिले। उसको पता था कि वह जवाहर बाबू की पड़ोसिन है। इस पर भी वह यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आशा नहीं करती थी कि भेंट इनके घर पर ही हो सकेगी। वह तो खाना खा लेने के पश्चात् पड़ोस के घर में जाकर उससे मिलने का विचार रखती थी। उसने साधना को स्त्रियों में खड़ी, दोने में मिठाई और गिलासों में दूध बाँटते देखा तो वह कमरे के द्वार पर खड़ी रह गई। उसने उसको बुलाने के स्थान अपना बुर्का मुख से हटा लिया। साधना ने देखा तो वह वही हाथ में पकड़ी मिठाई भूमि पर रख उसकी ओर लपकी और उससे गले मिलने लगी।

"तुमने तो कमाल कर दिया है नासिरा!" साधना ने कहा।

"हाँ, तुमसे मिलने आई हूँ। आओ, बैठो।"

साधना उसको वहाँ बैठाने के बजाय साथ वाले जवाहरलाल और सदानारायण के पढ़ने और सोने के कमरे में ले गई। कमरा खाली था। वहाँ नासिरा को एक ओर बैठा स्वयं उसके सामने बैठ, साधना पूछने लगी, "कैसे आ पाई हो यहाँ?"

"तो तुमको पता नहीं? मेरी शादी हो गई है?"

"नहीं; किससे?"

"जवाहर बाबू के दोस्त हैं न शमशाद मियाँ, उनसे।"

"ओह! बहुत अच्छा किया है।" इस समय उसकी दृष्टि उसके पेट पर चली गई। वह समझ गई, "तो कहाँ रहती हो?"

"चंघर मुहल्ला में, एक मकान ले रखा है। शाम–सवेरे आते हैं। रात को वे बोर्डिंग हाउस में सोते हैं। मैंने एक औरत अपने पास रहने के लिए नौकर रख ली है।"

"तो वे तुम्हारे पास क्यों नहीं रहते?"

"अभी उन्होंने अपने वालिद शरीफ को लिखा नहीं। इसलिए बोर्डिंग–हाउस को छोड़ नहीं सकते। पाँच–छः महीने में उनका इम्तिहान होगा। तब वे मुझको अपने साथ अपने घर ले जायेंगे। इनसे शादी करते समय एक वायदा मुझको करना पड़ा है कि यदि वे दूसरी शादी करेंगे तो मुझको कोई एतराज न होगा।"

इससे साधना की प्रसन्नता आधी रह गई। उसने गम्भीर होकर कह दिया, "नासिरा! खुदा की इबादत किया करो। वह ही इस मुश्किल से पार कर सकेगा।"

"मगर मुझको तो कोई मुश्किल नजर नहीं आ रही। वे बिल्कुल वही करते हैं जो मैं उनको करने को कहती हूँ। बहुत ही मुहब्बत करते हैं मुझसे।"

"फिर भी खुदा का नाम लेने में कोई दिक्कत है क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज तक उसका नाम लिया नहीं। उस पर एतबार नहीं। उसका पता भी नहीं कि वह है या नहीं?"

"मैं भी ऐसा ही समझती थी, मगर अब वह दिखाई देने लगा है। एतबार करने से उसके दीदार होने लगते हैं।"

"और एतबार कैसे होता है?"

"बुजुर्गों की बात मानने से और उनकी बात पर अक्ल लड़ाने से। बाहर जवाहरलाल के पिता बैठे हैं, देखे हैं न?"

"दो आदमी गुलाबी पगड़ी बाँधे बैठे हैं। उनमें कौन है, पता नहीं चला।"

"वे दोनों भाई–भाई हैं। उनमें से वृद्ध जवाहर बाबू के पिता हैं। और साथ के, मुकाबलतन कम उमर के उनके चाचा हैं। दोनों की पत्नियाँ गुलाबी दुपट्टे ओढ़े अपने–अपने पति के पास बैठी हैं। जवाहरलाल के पिता इस समय चौंसठ वर्ष की आयु के है। मगर देखने में वे चालीस–पैंतालीस के मालूम देते हैं। इनकी पत्नी तैंतीस–चौंतीस साल की हैं। उसके ही बच्चा पैदा हुआ है।

"हाँ, तो यह जवाहरलाल के पिता कहते हैं कि परमात्मा है और यह हर चीज के जर्रे–जर्रे में मौजूद है। वह इस सूर्य–चन्द्र और सितारागान को चलाने वाला है। उसकी इबादत से सब मुश्किलें हल हो जाती हैं।

"इनके कहने पर मैं विचार करती हूँ कि सूरज, चाँद, सितारे कैसे आराम से चलते रहते हैं। आपस में न तो टकराते हैं, न ही चलते–चलते ठहरते हैं। कुछ ताकत ही है जो इनको चला रही है। इस बात को कहने का मेरा मतलब यह है कि कोई बहुत बड़ी अक्ल और ताकत इनको चला रही है। वह परमात्मा है।

"जब वह ताकत इतना कुछ कर सकती है तो हमारी मुश्किलों को आसान भी कर सकती है।"

"पर मैं तो कह रही थी कि मेरी कोई मुश्किल है ही नहीं।"

"नासिरा बहिन! आगे की कौन कह सकता है! इसलिए उसको याद कर लिया करो।"

"मैं तो तुमको याद कर लिया करती हूँ। जब हम इकट्ठा रहती थीं, तुम कहा करती थीं कि तुम भी किसी से मुहब्बत करती हो और तुम्हारे अपने वालिद शरीफ के घर पहुँच जाने से वे तुमको मिल जायेंगे। बताओ मिल गए हैं?"

"हाँ, मिल गए हैं। परन्तु अभी शादी नहीं हो सकी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब होगी?"

"कह नहीं सकती। मैं शादी की तैयारी कर रही हूँ। मालूम नहीं कब यह मुमकिन होगा।"

"कौन हैं वे?"

"बताने का हुक्म नहीं।"

नासिरा विस्मय में साधना का मुख देखने लगी। उसको जवाहरलाल के विषय में सन्देह हुआ तो बोल उठी, "मत बताओ। मैं समझ गई हूँ।"

"तो मुबारिक हो।"

इस मुबारिकबादी ने नासिरा के मन में पुनः अपने विचार के ठीक होने में सन्देह उत्पन्न कर दिया। बितर–बितर मुख देखती रह गई।

इस समय जवाहरलाल आया और बोला, "नासिरा भाभी! माँ खाने के लिए बुला रही हैं।"

सब लोग छत पर शामियाने के नीचे बैठे भोजन कर रहे थे। कुछ गिने–चुने लोग बैठक में भोजन कर रहे थे। सतवंती, लाज, लेखवती, सुमित्रा, मोहिनी और कला तथा रामरक्खामल्ल, विष्णुनारायण, श्याम, महानारायण और सदानारायण वहाँ बैठे थे। शमशाद से पूछा गया था कि उसकी बीवी घर की औरतों के साथ ही खायेगी अथवा पृथक्? शमशाद इस बात का उत्तर नहीं दे सका था। जब नासिरा बाहर निकली तो साधना उसके साथ ही थी। शमशाद ने देखा तो विस्मय में पूछने लगा, "तो यह घर तुम्हारा है?"

"नहीं, मेरे पिता का घर साथ वाला है। मैं भी यहाँ दावत खाने के लिए आई हूँ।"

"देखो नासिरा!" शमशाद ने उससे पूछ लिया, "घर के औरत–मर्द इकट्ठे ही बैठे हैं। तुम उनमें बैठकर खा लोगी या अलहदा में खाओगी?"

"आप क्या कहते हैं?"

"जैसी तुम्हारी तबीयत हो।"

"सब में बैठ खाऊँगी तो पर्दा नहीं कर सकूँगी।"

"यहाँ पर्दा तुम मेरे किए से कर रही हो क्या?"

जवाहर हँस पड़ा। नासिरा ने जवाहर के कमरे में जाकर अपना बुर्का उतारकर रख दिया और शमशाद के साथ बैठक में जा बैठी। दोनों करो इस बात से बहुत संतोष था कि उनसे किसी प्रकार का भेद–भाव अथवा परहेज नहीं रखा गया।

शमशाद बहुत ध्यान से जवाहरलाल के पिता को देख रहा था। वह वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर बैठे हुओं में सबसे ऊँचा सिर निकाले हए, सीधी कमर, चौड़ी छाती, चौड़ा माथा और बड़ी–बड़ी आँखें और बहुत ही रोब–दाब–वाला आदमी मालूम होता था। बात करते समय भी ऐसा मालूम होता था कि उसकी आवाज में हुक्म करने का लहजा है। जब सब खाना खा रहे थे तो उसने कहा, "शमशाद बेटा! हमको मालूम नहीं था कि तुम बहू को साथ ला रहे हो। अब उसके यहाँ आ जाने से कुछ खास इन्तजाम नहीं किया जा सका। वर्ना उसका हक बनता था कि वह मुझसे एक जोड़ा कपड़े और एक–आध भूषण ले जाए। तुम जब जवाहर के दोस्त हो तो तुम्हारी बहू हमारी पतोहू लगती है।"

"सब आपकी मेहर है। आपने हमारी जो इज्जत अफजाई की है, उसके लिए हम आपके बहत शुक्रगुजार हैं।"

जवाहरलाल ने बताया, "भापा! शमशाद अगले अप्रैल में इम्तिहान देकर घर चला जाएगा। यह कह रहा है कि इसके वालिद शरीफ इसको जमींदारी के काम में लगाने वाले हैं। तब तो इसका लाहौर आना मुश्किल हो जाएगा।"

"मगर हम तो इसके गाँव में जा सकेंगे?"

"मुझमें आपको दावत देने की तौफीक हुई तो मैं आपको क्या सारे कुनबे को बुलाऊँगा।"

"तौफीक न होने की भी कोई बात है?" श्यामनारायण ने पूछा।

"हाँ, मेरे वालिद साहिब ने चार शादियाँ की थीं। मेरी माँ का इन्तकाल हो चुका है। दूसरी तीनों अम्मियाँ जिन्दा हैं। वालिद साहब ने लिखा है कि जमींदारी का काम मैं सम्भालूँ, मगर मेरी अम्मियों को यह मंजूर होगा या नहीं, खुदा जानता है। अम्मियों से एक दर्जन से दो कम भाई–बहनें हैं। वे सब झगड़ा भी कर सकते हैं। सबसे बड़ी बात यह है कि मैंने यहाँ उनसे पूछे बिना ही नासिरा से शादी कर ली है। अब वे इसको पसन्द करेंगे या नहीं, कह नहीं सकता। ऐन–मुमकिन है कि ये सब बातें मिलकर मुझको खाना–बदोश बना दें। तब मैं लाहौर में नौकरी करने के लिए आऊँगा।"

"तुम कितने भाई हो?"

"सात भाई और चार बहिनें। दो बहिनों की शादी हो चुकी है। दो की शादी होनी रहती है। भाई सब अभी पढ़ते हैं। अभी तो सबके दिल में हसद की आग भड़क रही है। सब कह रहे हैं कि वे भी एम.ए. तक पढ़ेंगे। मैंने उन सबको कहा है कि कॉलेज में दाखिल होने लायक नम्बर लेकर मैट्रिक पास करें, नहीं तो कॉलेज में दाखिला नहीं मिल सकेगा। सब हसद की आग में जलते हैं परन्तु वे एम.ए. करने की बात तो दूर, कॉलेज में भरती होने लायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं हो सकेंगे। नतीजा यह होगा कि उनकी हसद बढ़ेगी, कम नहीं होगी।''

रामरक्खामल्ल ने कुछ विचार कर कहा—''इस हालत में सबसे बेहतर बात तो यह होगी कि अपने वालिद साहब से अपने काम के बदले में तनख्वाह, अपने हिस्से के अलावा, तय कर ही वहाँ जाओ। हिस्सा तो तब मिलेगा, जब बँटवारा होगा, मगर तनख्वाह तो उस दिन से ही मिलनी चाहिए, जिस दिन काम पर पहुँचो।''

शमशाद को यह तजवीज पसन्द आई। ''मगर,'' उसने पूछ लिया, ''पीछे अगर भाइयों ने मिलकर निकाल दिया तो?''

''वालिद साहब और भाइयों से लिखा लेना चाहिए कि अगर किसी बेईमानी के इलजाम के अलावा उन्होंने तुम्हें निकाला तो तुम मुआवजा लोगे जो तीस हजार रुपये से कम नहीं होगा।''

शमशाद समझ गया कि जवाहर के पिता का मस्तिष्क बहुत वेग से काम करता है। उसने रामरक्खामल्ल का शुक्रिया अदा किया और कहा, ''मैं जरूर आपकी इस तजवीज पर गौर करूँगा।''

''तुम्हारे खानदान की ऐसी हालत में, सब कुछ लिखित में आ जाना चाहिए।

''देखो शमशाद! 'जायंट फैमिली' जिसके मैम्बरान में मुहब्बत और इखलाक गायब हो, वह सिर्फ एक 'जायंट स्टॉक कम्पनी' रह जाती है। एक जायंट स्टॉक कम्पनी का 'मेमोरेंडम ऑफ एसोसिएशन' होता है। वैसा ही तुम्हारे परिवार का भी होना चाहिए। उस कम्पनी में तुम चीफ डायरेक्टर बनोगे। इस कारण सब कुछ लिखा–पढ़ी हो जाने में अच्छाई ही होगी।''

रामरक्खामल्ल ने आगे समझाते हुए कह दिया, ''कभी ऐसा नहीं होता है कि परिवार का कर्त्ता अपने अच्छे सलूक से सब घर वालों के दिल में हमदर्दी और इखलाक पैदा कर दे। तब इस लिखा–पढ़ी की जरूरत नहीं भी रहती, मगर तब तक के लिए तो ऐसा होना ही चाहिए।''

शमशाद इनके घर से विदा हुआ तो ऐसा महसूस करता था कि वह बहुत कुछ सीखकर निकला है। घर पहुँचकर नासिरा ने बताया कि जवाहर की माँ ने उसे एक सौ रुपया नकद दिया है।

''तब तो बहुत मजा रहा। यह रुपया तुम रखो। बच्चा होने के वक्त काम आएगा।''

''मगर वहीदन, उसका हिन्दुआना नाम भूल जाती हूँ, कहती थी कि किसी समय भी कोई मुसीबत आ सकती है, इसलिए खुदा की बन्दगी किया करूँ। वह सबकी मदद करता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर शमशाद खिलखिलाकर हँस पड़ा।

: 2 :

इस दावत का परिणाम यह हुआ कि जवाहरलाल शमशाद के घर में आने-जाने लगा। रुपये से सहायता तो वह पहले भी देता था, नासिरा के प्रसव के समय तो वह उसका बहुत सहायक सिद्ध हुआ। लेडी डाक्टर तथा नर्स को वह बुलाकर लाया था, फिर उस रात को वह सारी रात वहीं रहा। दवाई और खाने-पीने का सारा सामान वही लाकर देता रहा था।

प्रसव के काल में शमशाद और नासिरा का खाना अनारकली की सराय के बाहर वाले ढाबे से आता रहा। इस महीने जवाहर ने शमशाद के घर के खर्चे का भारी अंश अदा किया। इस सब सहायता और सेवा का प्रभाव नासिरा पर बहुत अच्छा पड़ा। परन्तु शमशाद के मन में इसका परिणाम ईर्ष्या के रूप में प्रकट हुआ। उसको यह सन्देह होने लगा कि जवाहर जरूर नासिरा पर डोरे डालने लगा है।

शमशाद के मनोभावों का संकेत एक दिन जवाहर को मिल गया। कॉलेज का समय हो चुका था। जवाहर लेबोरेटरी का काम समाप्त कर निकला तो शमशाद, जिसका पढ़ाई का समय दो बजे से पहले ही समाप्त हो चुका था, लॉन में खड़ा कुछ लड़कों से गप्पें लगा रहा था। उस दिन डी.ए.वी. कॉलेज की टीम से उनका फुटबाल का मैच था। जवाहर की निक्कर-कमीज और जूते शमशाद के घर पर थे। पिछले दिन जवाहर उन्हें वहाँ रख आया था। उसका विचार था कि शमशाद अपनी क्लास के पश्चात् अपने घर जाएगा तो वह भी उसके साथ चला जाएगा और फिर दोनों तैयार हो मैच खेलने चले आएँगे।

परन्तु जवाहर के सोचने के विपरीत शमशाद की निक्कर-कमीज बोर्डिंग हाउस में रखी हुई थी और अब वह पहनकर लॉन में खड़ा था। जवाहर जब अपनी क्लास से निकला और उसने शमशाद को देखा तो पूछने लगा, "शमशाद! मेरी निक्कर?"

"कहाँ है?"

लड़कों के सामने वह कह नहीं सका कि चंघर मुहल्लेवाले मकान में थी। इसलिए उसने कह दिया, "जहाँ तुम्हारी थी?"

"वहाँ तो दिखाई नहीं दी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय वे दोनों लड़कों से पृथक् होकर बोर्डिंग हाउस की ओर चल पड़े।

अब जवाहरलाल ने कह दिया, "मैं तो कल तुम्हारे घर पर तुम्हारे कपड़ों में रख आया था।"

"तो वहाँ जाकर ले आओ। अभी मैच शुरू होने में बीस मिनट हैं।"

"तो चलो, ले आयें।"

"तुम चले जाओ। नासिरा तुम्हारी प्रतीक्षा में बैठी होगी।"

"क्यों? क्या बात है?"

"इसी कारण तो उसने मुझे तुम्हारी यूनिफार्म दी नहीं।"

"तो चलो। अभी दस मिनट में लौट आयेंगे।"

"नहीं, तुम जाओ। मैं भाभी–देवर के तन्हाई में मिलने का लुत्फ जाया नहीं करना चाहता।"

जवाहरलाल को इस व्यंग्य का अर्थ तुरन्त समझ में नहीं आया। वह बोर्डिंग हाउस के बीच में से निकल, फिर पिछली दीवार में लगी चरखड़ी से गुजर चंघर मुहल्ले की ओर चल पड़ा। इस समय वह शमशाद के कहे शब्दों के अर्थ समझने का यत्न करता रहा। एकाएक उसकी समझ में आया कि पति–पत्नी में वैमनस्य उत्पन्न हो गया है और इस वैमनस्य में प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष ढंग से उसका नाम भी है। इस सन्देह के उत्पन्न होते ही उसके पग नासिरा के घर की ओर जाते–जाते रुक गए। वह एक क्षण में, यह विचार कर कि वह बिना यूनिफार्म के ही मैच खेलेगा, लौट पड़ा। पाँच मिनट में ही वह, जहाँ से चला था, वहाँ वापस पहुँच गया और अपने साथियों में जा खड़ा हुआ। खेलने वाले अपने कोट आदि उतार रहे थे। जवाहर ने अपनी पुस्तकें वहाँ रखीं, कोट और जूता उतार, पायजामा–कमीज के साथ ही और नंगे पाँव ग्राउण्ड में जा पहुँचा। शमशाद, उसको इस प्रकार खेल के लिए आया देख, उसके पास चला आया। उसने पूछा, "यूनिफार्म नहीं मिली क्या?"

"मैं गया ही नहीं। रास्ते से ही लौट आया हूँ।"

"परन्तु बिना जूते के कैसे खेलोगे?"

"खेल लूँगा।"

"यह रूल्ज के खिलाफ है।"

"तो भैया! तुम यहाँ मेरी जगह पर किसी अन्य को बुला लो। मैं तो अब जूता नहीं ला सकता।"

शमशाद ने बड़ी परेशानी अनुभव की। इस पर भी उसको अपने कहे का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात्ताप नही लगा। उसने थर्ड ईयर के एक विद्यार्थी लहनासिंह को यूनिफार्म पहनकर आने के लिए कह दिया।

जवाहरलाल ग्राउंड के बाहर आकर खड़ा हो गया। वह वहाँ, जब तक खेल आरम्भ नहीं हुआ, खड़ा रहा। तत्पश्चात् अपना कोट, जूता पहन कर और किताबें उठा, अपने घर की ओर चल पड़ा। मैच में डी.ए.वी. कॉलेज की विजय हुई। इससे शमशाद चिढ़ा हुआ, कपड़े पहन बोर्डिंग हाउस को चला गया। वह नासिरा से भी मिलने को नही गया। उसको अभी भी खयाल हो रहा था कि जवाहर नासिरा के पास गया होगा।

वह रात के आठ बजे भोजन करने घर पहुँचा। नासिरा खाना तैयार कर उसकी प्रतीक्षा में बैठी थी। शमशाद ने आते ही पूछा, "जवाहर चला गया है क्या?"

"वह आया ही नहीं। उसकी यूनिफार्म तो यहाँ रखी थी। मैच कैसे खेला होगा?"

"सच कहती हो या झूठ? वहाँ से तो वह यूनिफार्म पहनने के लिए आया था।"

"क्या? यहाँ तो नहीं आया।"

शमशाद मन में सन्तोष अनुभव कर रहा था, परन्तु नासिरा को अभी सन्तोष नहीं हुआ। खाना खाते हुए उसने फिर पूछ लिया, "जवाहर बाबू मैच नहीं खेले आज?"

"जवाहर बाबू! जवाहर बाबू!! आखिर उसके साथ क्या लगा हुआ है?" शमशाद ने क्रोधावेश में कहा।

नासिरा को समझने में देर नहीं लगी कि दोनों में किसी कारण से अनबन होने लगी है। कारण वह समझ नहीं सकी। अपने को कारण होने का उसे किंचित् मात्र भी सन्देह नहीं हुआ। इस पर भी उसने बात आगे नहीं चलाई। वह किसी अन्य अवसर पर वैमनस्य का कारण जानने का विचार कर चुप कर गई।

इसके पश्चात् जवाहरलाल नहीं आया। शमशाद ने कभी उसको आने के लिए नहीं कहा। परीक्षा समीप आ गई थी। जवाहरलाल को एफ.ए. की और शमशाद को एम.ए. की परीक्षा देनी थी। दोनों पढ़ाई में लग गए।

जवाहरलाल की परीक्षा पहले आरम्भ हुई और पहले ही समाप्त हुई। इस पर भी न तो जवाहरलाल नासिरा से मिलने आया और न ही शमशाद ने उसको नासिरा के विषय में कुछ कहा। महीना आरम्भ होने पर जवाहरलाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने शमशाद को ढूँढ़कर मासिक सहायता के बीस रुपये दे दिए। शमशाद ने रुपये ले लिए और पूछ लिया, ''पढ़ाई कैसी चल रही है?''

''अच्छी चल रही है।''

बस इतनी सी बात उस समय हुई। फिर अगला महीना आरम्भ हुआ, जब शमशाद की परीक्षा हो रही थी। जवाहर उसको यूनिवर्सिटी हाल के बाहर मिला और उस महीने के बीस रुपये दे आया। इस बार शमशाद ने पूछ लिया था, ''पर्चे कैसे हुए हैं?''

''स्प्लैंडिड! और तुम कैसे कर रहे हो?''

''सो–सो।''

जवाहर घर चला आया। उस दिन जब शमशाद घर पहुँचा और उसने नासिरा को जवाहर के बीस रुपये दिए तो उसने पूछ लिया, ''तीन महीने होने जा रहे हैं, वह कभी मिलने भी नहीं आया।''

''उसकी मर्जी है।''

''आपके इम्तिहान कब खत्म होने वाले हैं?''

''बस दो पर्चे रह गए हैं।''

''उसके बाद?''

''पहले तो यह खयाल था कि वालिद साहब को लिख दूँ कि मैं उनकी बहू और पोते को साथ लेकर आ रहा हूँ। मगर अब सोचकर यही फैसला किया है कि चुपचाप वहाँ जा धमकूँ और तुमको उस कमरे में 'इन्स्टाल' (स्थापित) कर दूँ, जहाँ मैं रहा करता था।''

''अच्छी बात है। मैं सामान वगैरह तैयार कर बाँधती हूँ। परसों शाम को चल देंगे।''

''नहीं, उससे अगले दिन। उस दिन शाम को कॉलेज में म्यूजिकल कानसर्ट है।''

''तो ठीक है। यदि आप मानें तो मैं उस रात जवाहरलाल की माँ से मिल आऊँ। रात उनके ही घर रह जाऊँगी। सुबह आप जाकर ले आइएगा।''

''मेरी राय है कि अगले दिन हम दोनों दोपहर के वक्त चलें और घंटा–आध घंटा लगाकर वहाँ सबको मिल आयें।''

वास्तव में नासिरा की तबीयत कर रही थी कि जवाहरलाल से मिल कर दोनों मित्रों में झगड़े का कारण जाने, मगर ऐसे वक्त जब उसका खाविन्द उसको अपने माता–पिता के घर में प्रविष्ट कराने वाला था, वह कोई भी बात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसको नाराज करने की नहीं करना चाहती थी। इस कारण वह चुप कर रही।

तीसरे दिन शमशाद सुबह का गया शाम का लौटा। नासिरा जवाहरलाल के घर जाने के लिए व्याकुल हो रही थी, परन्तु जब उसके घर वाले ने कह दिया था कि दोनों चलेंगे, इसलिए अकेली न जा सकीं।

शाम के समय शमशाद ताँगा लिए हुए ही आया और सामान ताँगे में रखकर स्टेशन को चल पड़ा। मार्ग में नासिरा ने कहा, "हमें तो जवाहरलाल के माता–पिता से मिलने के लिए जाना था?"

"ओह हाँ?" शमशाद ने ऐसा प्रकट किया जैसे भूल–सा गया हो। तत्पश्चात् उसने जेब से घड़ी निकालकर पूछ लिया, "अभी दस मिनट मिल सकते हैं। कहो तो चलें।"

"चल सकें तो अच्छा ही है।"

ताँगेवाले को शाहालमी दरवाजे के भीतर चलने को कह दिया गया। ताँगे को गली के बाहर बाजार में खड़ा कर दोनों लाला रामरक्खामल्ल के मकान के बाहर जा पहुँचे। पहले शमशाद भीतर गया। उसने देखा कि जवाहरलाल का पिता बैठक में अपने मित्रों से बातचीत कर रहा है। वह जब द्वार के भीतर जा खड़ा हुआ तो रामरक्खामल्ल की दृष्टि उस पर पड़ गई। वह उठकर द्वार पर आकर पूछने लगा, 'आओ बेटा! कैसे आए हो?"

"हम आज गाँव को जा रहे हैं। खयाल आया कि आपके दीदार करते चलें। नासिरा माँ जी से मिलने आई है।"

"कहाँ है?"

शमशाद ने घर के बाहर खड़ी नासिरा की ओर संकेत दिया।

"तो उसको ले आओ न।"

शमशाद नासिरा को अन्दर बुलाने के लिए कहने गया तो रामरक्खामल्ल ने लेखवती को बुलाकर उनके जलपान का प्रबन्ध करने की बात कह दी।

शमशाद ने नासिरा को लेखवती के साथ बात करते हुए कह दिया, "बस कुछ मिनट का ही वक्त है। नहीं तो गाड़ी छूट जाएगी।"

इतना कह वह स्वयं रामरक्खामल्ल के साथ बैठक में जाकर बैठ गया। उसने पूछ लिया, "जवाहर कहाँ है?"

"वह घूमने निकल गया है। प्रायः नौ बजे लौटा करता है।"

"हम तो जल्दो ही चले जाएँगे। सवा नौ बजे गाड़ी छूट जाती है।"

सदानारायण को भेज साधना को बुला लिया गया। सुमित्रा और साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिनी भी नासिरा से मिलने लेखवती के कमरे में आ गई। कला अपनी माँ के घर गई हुई थी। दस मिनट तो खड़े–खड़े ही व्यतीत हो गए। इस पर भी नासिरा को खाने को कुछ मिठाई तथा पीने के लिए दूध दिया गया। यही कुछ ही शमशाद को भी मिल गया। जब वे चलने लगे तो साधना नासिरा को एक ओर ले जाकर पूछने लगी, "सुनाओ, कैसे चल रही है गाड़ी?"

"अभी तक तो वे मेहरबान हैं।"

"परमात्मा का धन्यवाद है। मैं तुम्हारे लिए नित्य प्रार्थना किया करती हूँ।"

"अच्छा? भला क्यों?"

"मैं समझती हूँ कि हमारा जीवन जो पहले रहा है, उसकी परछाईं हर समय हमारे जीवन पर रहेगी। परमात्मा ही उनके परिणामों से बचाने वाला है।"

"तुम अपने लिए भी तो दुआ पढ़ा करो।"

"वह भी करती हूँ। परन्तु अभी भटक रही हूँ।"

इस समय शमशाद ने आवाज लगा दी कि गाड़ी का वक्त हो गया है। नासिरा साधना से गले मिली और साधना ने उसके गोद के बच्चे का मुख चूम लिया।

जवाहर परेड ग्राउंड में एक प्राइवेट टीम में फुटबॉल खेलने के लिए जाया करता था। वहाँ से प्रायः अपने एक मित्र साधुराम के घर चला जाता और फिर रात्रि नौ बजे घर लौटता। उस समय सब पुरुष वर्ग भोजन करने के लिए तैयार बैठा होता था। वह भी हाथ धोकर सीधा रसोईघर में जा पहुँचता था।

आज वह आया तो उसके पिता ने कह दिया, "जवाहर! तुम्हारा मित्र, शमशाद और उसकी बीवी तुमसे मिलने के लिए आए थे और तुमको पूछते थे।"

"मुझको उनके आने का पता होता तो आज जल्दी आ जाता। उनको शुक्रिया का एक पत्र लिख दूँगा।"

मन में वह विचार करता था कि घर नहीं था तो ठीक ही हुआ है। न जाने नासिरा कुछ कह बैठती और पति–पत्नी में झगड़ा हो आता।

शमशाद का परीक्षाफल पहले निकला। वह थर्ड डिवीजन में पास हो गया था। इस पर भी जवाहरलाल ने शमशाद को बधाई भेज दी। उसने पत्र में लिखा, "शमशाद भाई! यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि तुम्हारे जीवन का एक दौर समाप्त हुआ है। आगे क्या कार्यक्रम है? माता–पिता से बन रही है न? जमींदारी के काम में मन लग गया है न?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं समझता हूँ कि जिसके घर जमींदारी की देख–रेख का काम हो, उसको कहीं नौकरी करने की आवश्यकता नहीं रहती।

"भाभी को मेरी आदाब अर्ज कर देना। मुन्ना को प्यार देना। मेरा परीक्षा–फल तो अगले मास के मध्य में निकलेगा। इस पर भी मेरे लिए अभी कॉलेज की चक्की पीसने के चार वर्ष शेष हैं।"

पत्र का उत्तर नासिरा ने दिया। उसने लिखा– "आपके दोस्त घर पर नहीं हैं। जेहलम गए हुए हैं। एक सप्ताह तक वहाँ रहेंगे। इसलिए चिट्ठी का जवाब मैं ही दे रही हूँ।

"मैं आने से पहले आपसे मिलने की अजहद ख्वाहिश रखती थी, मगर मौका ही नहीं मिला। और जब ऐन चलने के वक्त मौका मिला तो आप घर पर नहीं मिले। मुझको ऐसा मालूम हुआ था कि समद के वालिद आपसे नाराज हैं। क्यों, यह मैं समझ नहीं सकी। आपसे इसकी बाबत ही जानना चाहती थी। इस पर भी उनकी मर्जी के बिना न तो आपसे मिल सकी, न ही आप मिलने के लिए आए।

"इस पर भी आपने जितनी मदद उस मुश्किल के वक्त दी, उसके लिए बहुत शुक्रगुजार हूँ।

"यहाँ पर वालिद शरीफ तो मेरे आगे–पीछे ऐसे घूमते रहते हैं, जैसे वे ही मुझको ब्याह कर लाए हैं। इसलिए अम्मियाँ मुझ पर कड़ी नजर रखती हैं। ऊपर से वे मेरे साथ मुहब्बत का इजहार करती हैं मगर उनके मन का शक अक्सर दिखाई देता रहता है।

"आपके दोस्त के भाई तो मुँह फुलाए रहते है। लगभग सभी रावल पिण्डी में रहते हैं। एक–दो दिन के लिए वे यहाँ आए थे। उनका ख्याल है कि मुझको आपके दोस्त पर जोर डालकर नौकरी के लिए तैयार करना चाहिए। वे सब तो शहरों के आराम और ऐश की याद दिलाया करते हैं। पर मैं इस मुआमले मैं चुप हूँ।

"एक बात और हो रही मालूम होती है। जेहलम के एक वकील अब्दुलमजीद खाँ अपनी लड़की को मुझ पर सौकन बनाने की कोशिश कर रहे हैं। मैं अपने मन को इन हालात के लिए तैयार कर रही हूँ। आप अपने नतीजा निकलने की खबर जरूर भेजें।"

जवाहरलाल एफ.एस–सी. में यूनिवर्सिटी में प्रथम रहा और इस बार भी पच्चीस रुपए की छात्रवृत्ति पा गया। इस बार जवाहरलाल ने पत्र लिखने के बजाय अपने पास होने का कार्ड, जो यूनिवर्सिटी से उसको आया था, शमशाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के पते पर 'रि–डायरेक्ट' कर दिया। पर वहाँ से कोई समाचार नहीं आया।

: 3 :

गुजरात में अवस्था सामान्य नहीं थी। यही कारण था कि जवाहरलाल को वहाँ से मुबारिकबाद, जिसके आने की बहुत आशा थी, नहीं आई।

जिस दिन शमशाद अपने गाँव पहुँचा और ताँगे में से, जो उसने गुजरात स्टेशन से भटियाँ गाँव तक जाने के लिए किया था, सामान उतारने लगा तो एक खिदमतगार की नजर अपने मालिक के बड़े लड़के पर चली गई। वह भागकर सामान उतारने को लपका। परन्तु ज्योंही संदूक उतारने लगा, ताँगे में से एक स्त्री को, बुर्के में, एक बच्चे को गोदी में लिए उतरते देख विस्मय में खड़ा रह गया। शमशाद ने इस पर कुछ डाँटकर कहा, "कासिम! क्या देख रहे हो? उतारो सामान।"

"हाँ हुजूर! देखने लगा था कि नई मालकिन आई हैं?"

"बदतमीज कहीं के। मेरे साथ मालकिन नहीं होंगी तो और कौन होगा? देखो, यह सब सामान, संदूक, बिस्तर, गठरियाँ वगैरह सब ग्यारह नग हैं। मेरे कमरे में ले आओ।"

नौकर को यह कहकर शमशाद ने नासिरा को सम्बोधिन करके कह दिया, "हाँ बेगम! आओ पहले अब्बाजान की कदमबोसी कर आयें।"

शमशाद भीतर प्रविष्ट हुआ तो नासिरा उसके पीछे–पीछे थी। कासिम ने आवाज़ दे दी–"फातिमा! ऐ फातिमा!! मालकिन की गोदी से बच्चा ले ले।

बस फिर क्या था! कोट में धूम मच गई। सब भागे हुए देखने आए कि कौन मालकिन गोदी में बच्चा लिए आ पहुँची है। कोट की नौकरानियाँ, नौकर, मालकिनें और मालिक, भटिया के जमींदार खलीफा अजीमुल्ला खाँ कुरैशी भी कासिम की आवाज सुनकर कमरे से बाहर निकल कोट की ड्योढ़ी में आ खड़े हुए। शमशाद की अम्मियाँ भी आईं, मगर खलीफा साहब को खड़ा देख सब पीछे हट गईं। वे बुर्का नहीं पहने थीं। इस कारण वे सब कोट की ड्योढ़ी में नहीं आ सकीं। इस पर भी नौकर–नौकरानियाँ तो मालिक के साथ खड़ी हुई थीं।

नासिरा बहुत घबराई हुई थी। वह नहीं जानती थी कि उससे क्या सलूक होने वाला है। वह लड़खड़ाते कदमों से शमशाद के पीछे–पीछे चली आ रही थी, जैसे न कुछ सुन रही हो न देख रही हो। एकाएक शमशाद खड़ा हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह भी खड़ी हो गई। शमशाद ने कह दिया, "अब्बाजान! सलाम–वाले–कुम।"

पूर्व इससे कि उसके सलाम का बाप कुछ उत्तर दे, शमशाद ने नासिरा से कहा, "वालिद खड़े हैं। कदमबोसी करो।"

नासिरा झुक गई। सामने खड़े आदमी के पाँव के पास भूमि को छूकर अपने होठों तक ले गई और फिर खड़ी हो गई।

"अब्बाजान! यह आपकी बहू है। इसकी गोदी में आपका पोता है। आप अपनी सरपरस्ती का हाथ इन पर रखिए।"

खलीफा साहब ने कह दिया, "अन्दर आओ।"

कमरे में शमशाद और नासिरा पहुँचे तो उनकी तीनों माताएँ भी आ गईं। खलीफा साहब ने कहा, "हमारी दुआ बदसूरत औरतों के लिए नहीं है। इसलिए बुर्का उठाओ। देखें, तुम कौन हो, कैसी हो?"

इस समय तक नासिरा ने अपने सामने खड़े आदमी के साथ खड़ी तीनों औरतों को देख लिया था। उसका अनुमान था कि वह उनसे किसी तरह कम खूबसूरत नहीं। इससे वह फर्श पर घुटने टेक बैठ गई। अपने सोए बच्चे को श्वसुर के पाँव में लिटा दिया और अपने मुख से बुर्का उठा आँखें मूँद भूमि की ओर मुख किए बैठी रही।

खलीफा साहब ने देखा और अकस्मात् उनके मुख से निकल गया, सुभानअल्लाह! मंजूर! शमशाद, तुम्हारी बीवी पसंद है। जाओ अपने कमरे में इसे ले जाओ। खुदा करे तुम दोनों की वस्ल–ता–हयात पुरम–सर्रत (आनन्दमय) बनी रहे।"

नासिरा की जान में जान आई। उसने पुनः कदमबोसी की। वह अपने बच्चे को उठाने लगी तो एक बेगम ने उसे उठाकर छाती से लगा लिया। वह जाग पड़ा तो वह उसको चुप कराती हुई भीतर ले गई।

उसी सायंकाल खलीफा अपने लड़के को कहने लगा, "यह तुम्हारी बीवी है तो निहायत ही खूबसूरत, मगर क्या कुछ मिला है, इसके वालिदन से?"

"अब्बाजान! यह लाहौर की गलियों में भीख माँगती मिली है। इसके कपड़े भी फटे थे। मुझको पहले तो इस पर रहम आया। मैं इसे खाना देने के लिए एक ढाबे पर ले गया। वहाँ जब मैंने इसको गौर से देखा तो इसकी मुहब्बत में फँस गया। पहले इसको मैंने अपने एक दोस्त के घर पर रखा और फिर इससे निकाह पढ़ाकर इसको एक भाड़े के मकान में ले गया। इसको मेरे साथ रहते हुए डेढ़ साल हो चुका है। वहीं इसके लड़का हुआ है।"

"यह सब तो ठीक है। मगर बरखुरदार! शोरबे में घी न डाला जाये तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जायकेदार नहीं बनता।''

''अब्बाजान! क्या घी अपने यहाँ नहीं है? वह आप डाल दीजिए। मेरा मतलब है कुछ जेवर और कपड़े बनवा दीजिए।''

''वह तो करूँगा ही। मगर अपने घर की लड़कियाँ जब दूसरें के घरों में जायेंगी, तो यहाँ से बहुत कुछ लेकर जायेंगी। इसी तरह बाहर से भी तो लाने वाली होनी चाहिए।''

''वह मैं कर लूँगा। आपने मुझको तालीम दें इस लायक बनाया है कि मैं एक अच्छी नौकरी कर सकता हूँ।''

''नौकरी करता हुआ कोई अमीर होता नहीं देखा गया। जितनी तनख्वाह बढ़ती है, उतना खर्च बढ़ जाता है। हाँ, कोई पुलिस की अफसरी या तहसीलदारी वगैरह मिल जाए तो पौ बारह हैं।''

''अब्बाजान! आप ही बताइए क्या करूँ? मैं नासिरा से अजहद मुहब्बत करता हूँ।''

''बेवकूफ न बनो। तुम इसको अपने हरम में रखो। मुझे कोई एतराज नहीं। मैं तो दो बातें तुमसे चाहता हूँ। जमींदारी सँभालो और साथ ही जेहलम वाले वकील अब्दुल मजीदखाँ की लड़की से शादी कर लो। वे लड़की के साथ दस हजार रुपया नकद देने की बात कह रहे हैं। रुपया अपने फार्म पर पम्प लगवाने में और खलियान बनवाने में खर्च करो। जमींदारी की आमदनी बढ़ जाएगी।''

''मैं तैयार हूँ अब्बाजान! मगर दो बातें मेरी भी हैं। जमीदारी के मुताल्लिक मुझे लिखकर हुक्म सादिर किया जाए कि मैं अपने और अपनी दो बीवियों के लिए दो सौ रुपये तनख्वाह पाऊँ। रोटी और कपड़ा इससे अलहदा होगा।''

''दो सौ रुपये? इतना लेकर क्या करोगे?''

''लाहौर की लड़की को बीवी बनाया है। वहाँ की भिखमंगी औरतें भी देहात के काश्तकारों की बीवियों से अच्छी तरह रहती हैं। उसके लिए और फिर वकील साहब की पढ़ी–लिखी लड़की के लिये शृंगार का सामान भी तो मामूली बात नहीं होगी?''

''अच्छी बात है। इतना तुम आमदनी में से निकाल लिया करना।''

''इसके साथ ही यह हुक्म सादिर किया जाए कि अगर किसी वक्त मुझको इस जमींदारी की मैनेजरी से निकाला गया तो जितने साल की नौकरी होगी उतने हजार रुपया मुझे मिल जाए।''

''यह भी हो सकता है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो अब्बाजान! लिखकर दे दीजिए।"

"लिख दूँगा।"

"और दूसरी बात है शादी के मुताल्लिक। वकील साहब की लड़की मैं देखूँगा, तब विवाह की मंजूरी दूँगा।"

"यह नहीं हो सकता। यह तो शरअ के खिलाफ है।"

"अब्बाजान! मैं शरअ के लिए नहीं हूँ, शरअ मेरे लिए है। इसमें मेरे फायदे में जो कुछ है, वह शरअ है।"

"इस पर भी वकील साहब से पूछकर ही बताया जा सकेगा।"

"पूछ लीजिए। मेरा तो यह कहना है कि मैं एक खूबसूरत बीवी को लाया हूँ। अब इसके सामने किसी बदसूरत को नहीं ला सकता।"

"तुम कुछ बेवकूफ हो। एक खूबसूरत बीवी मिल गई, एक बदसूरत भी आ जाए तो क्या हरज है? अभी तो दो बीवियों के और आने की भी गुंजाइश बाकी है।"

शमशाद समझ गया। इस पर भी अपनी बात को दोहराने लगा, "यह बात तो हम बाद में सोचेंगे। जब लड़की का बाप लड़की को दिखाने से इनकार करेगा, उस समय हम दहेज की रकम बढ़ाने की बात कर देंगे।"

इससे तो खलीफा साहब बहुत ही प्रसन्न हुए। वे समझ गए कि उनका यह लाड़ला फिजूल में पढ़कर नहीं आया, कुछ अक्ल भी सीखकर आया है। इसके अगले दिन ही जेहलम वाले वकील साहब को चिट्ठी लिख दी गई।

चिट्ठी के उत्तर आने में एक महीना लग गया। खलीफा साहब इस देरी पर चिन्ता व्यक्त करने लगे। उनका ख्याल था कि वकील साहब ने उनकी शर्त को ठुकरा दिया है। जब वे चिट्ठी का इन्तजार करते–करते थक गए तो उन्होंने शमशाद को, जो अब बाकायदा जमींदारी का मैनेजर बन गया था, कह दिया, "शमशाद! तुम्हारी शर्त ठीक नहीं थी। देखो, वकील साहब का कोई जवाब नहीं आया।"

"अब्बाजान! शर्त तो गलत नहीं, थी। मैं समझता हूँ कि यह वकील साहब गलत आदमी हैं, जो मेरी वाजिब शर्त को मान नहीं रहे।"

"यह वाजिब कैसे हुई?"

"एक बार मुझको आप उनके पास ले चलिए। मैं इसके मुताल्लिक खुद बात कर लूँगा।"

"अब तुमको लेकर चलूँ और अपने एक मेहरबान दोस्त से झगड़ा मोल लूँ। मैं नहीं जाऊँगा। अगर तुम अपनी तजवीज खुद जाकर रखना चाहते हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो मेरी चिट्ठी लेकर चले जाओ।''

''यह भी ठीक है। मैं तीन–चार दिन में जाऊँगा। कल तहसीलदार हमारे जंगल में शिकार खेलने आ रहा है। वह दो दिन यहाँ रहेगा। उसके यहाँ से चले जाने के बाद मैं आपकी चिट्ठी लेकर चला जाऊँगा। आप यकीन जानिए, लड़की को देख–भाल कर ही भाव–ताव करूँगा। जितनी कम खूबसूरत होगी, उतनी ही दहेज की मिकदार ज्यादा कराने की कोशिश करूँगा।''

इस प्रकार बाप–बेटे में बात तय हो गई। मगर खलीफा साहब को पत्र लिखने की आवश्यकता नहीं रही। तहसीलदार के लौटने से पहले ही पत्र का उत्तर आ गया। जवाब में लिखा था, ''जनाब खलीफा अजीमुल्ला खाँ साहब! आदाब–अर्ज हो। आपका खत मिला है। मुझको तो लड़की दिखाने में एतराज नहीं, पर बेगम को एतराज था। वह कहती थीं कि जब मैंने उसको देखे बिना, उससे शादी की है तो कोई वजह नहीं कि आप का लड़का इस किसम की बात पर इसरार करे। यह है वजह आपके खत के जवाब में देरी की। मेरी बात लड़की ने कर दी। उसने अपनी अम्मीजान को समझाया है। उसका कहना था कि जब एम.ए. पास दामाद चाहती हैं तो इस किसम की बातें बर्दाश्त करनी ही होंगी।

''लड़की की माँ को मनाने में एक महीना लग गया। वह मान गई है। मगर एक शर्त के साथ। वह यह कि लड़का उनके घर लड़की देखने आएगा तो यहाँ मुहल्ले वाले लोग बदनामी करेंगे। इसलिए लड़का जेहलम दरिया के किनारे वाली कोठी में आपके साथ आ जाए और हम लड़की को लेकर वहाँ पहुँच जाएँगे। वहाँ सब बात तय हो जाएगी। इस मुलाकात की खबर नौकरों तक को भी नहीं होनी चाहिए। लड़की का भाई अनवर वहाँ पर चाबी लिए मौजूद होगा। आप बैठिएगा तो हम पहुँच जायेंगे।

''हाँ, इससे भी पहले मैं लड़का देखना चाहूँगा। इस वजह से आपको पहले जेहलम में आ जाना चाहिए। मैं पहले यह देखूँगा कि लड़का इस लायक है भी या नहीं कि मैं उसको अपनी लड़की को देखने का मौका दूँ।''

खत पढ़कर खलीफा साहब ने लड़के से पूछ लिया, ''बताओ बरखुरदार! अब क्या चाहते हो?''

''अब्बाजान! मैं तो बुर्का पहनता नहीं। इसलिए मुझे अपने–आपको दिखाने में कोई एतराज नहीं है।''

परिणामस्वरूप शमशाद को जेहलम भेज दिया गया। वह अकेला ही गया,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिससे किसी को पता न चले कि वह शादी के सिलसिले में गया है। उसके साथ कोई खिदमतगार भी नहीं भेजा गया।

जेहलम में एक होटल में शमशाद ठहर गया और पहुँचने के दूसरे दिन चार बजे वह वकील अब्दुल मजीद खाँ की कोठी पर जा पहुँचा। शमशाद ने अपना नाम बता, हाथ मिलाने के लिए बढ़ाया तो वकील साहब ने हाथ मिलाते हुए उसको सिर से पाँव तक देखा। उसे देख प्रसन्नता प्रकट करते हुए उसने कहा, "बैठो। तुम्हारे साथ और कौन–कौन आया है?"

"मैं अकेला ही हूँ। आपने सब कुछ चोरी रखने के लिए कहा था न?"

"कहाँ ठहरे हो?"

"सिलवन होटल में।"

"यह तो अंग्रेजी होटल है। क्या खर्च पड़ता है वहाँ रहने का?"

"कमरा और खाने का एक आदमी का पन्द्रह रुपये रोज।"

"पन्द्रह रुपए रोज? यह तो बहुत ज्यादा है।"

"मगर आप एक बात भूल रहे हैं। मैं अपने लिए एक पढ़ी–लिखी बीवी को ढूँढ़ने के लिए आया हूँ। अगर बीवी इतना कुछ खर्च करने के लायक नहीं तो वह पाने के लायक भी नहीं हो सकती।"

"लड़की तो इससे भी ज्यादा कीमती है। मगर तुम खुद किस लायक हो, देखने की बात तो यह है?"

"मैं एम.ए. पास हूँ। जहाँ कहीं नौकर हुआ तो इतना पा सकूँगा कि जिन्दगी भर इतना कुछ खर्च कर सकूँ। फिर मैं एक जमींदार का लड़का और साथ ही जमींदारी का मैनेजर हूँ। हमारे फार्म की आमदनी पाँच हजार रुपये साल की है। हमारे यहाँ स्टीड–फारमिंग (घोड़े पालने का काम) भी होता है। हम हर साल पचास से ऊपर जवान घोड़े सरकार के पास बेचते हैं। अक्सर सब खरीद लिए जाते हैं। अगर कोई वहाँ मंजूर न भी हो तो बाजार में अच्छे दामों पर बिक जाता है। इस प्रकार पन्द्रह हजार रुपया साल की आमदनी इस मद से होती है। जमींदारी भी है। इससे आपको पता होना चाहिए कि मैं पन्द्रह रुपए रोज से ज्यादा कीमत रखता हूँ?"

"तुम अपनी बीवी की क्या कीमत लगाते हो?"

"यह तो उसको देखने और उससे गुफ्तगू करने के बाद ही बता सकूँगा।"

वकील साहब हँस पड़े। हँसते हुए बोले, "नाश्ता कर आए हो?"

"नहीं, अब जाकर करने का खयाल है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यहाँ ही कर लो न।"

"मुझको क्या एतराज हो सकता है!"

हकीकत में वकील साहब शमशाद को भी अपनी बीवी और लड़की को दिखाना चाहते थे। उन्होंने कमरे के बाहर खड़े अनवर को आवाज देकर बुलाया।

अनवर आया तो वकील साहब ने उसको कह दिया, "अनवर! ये भटिया से मेरे दोस्त खलीफा अजीमुल्ला खाँ साहब के साहबजादे आए हैं। इनके लिए नाश्ता लगवा दो।"

अनवर ने नजर भरकर शमशाद की ओर देखा। और फिर मुस्कराकर साथ के गोल कमरे में इन्तजाम करने चला गया। जब अनवर चला गया तो वकील साहब ने कहा, "घोड़े बेचने का ही काम करोगे या और भी?"

"मुझको अपने घर आए एक महीना से कुछ ऊपर हुआ है। मैं जमींदारी की आमदनी बढ़ाने के लिए नए जराय सोच रहा हूँ। हम सात भाई हैं। सात बहुएँ आएँगी तो चौदह हो जायेंगे और अगर किसी के दिमाग में एक से ज्यादा शादियाँ करने का खयाल हुआ तो फिर कम से कम दो दरजन इकट्ठी हो जायेंगी। उनके लड़के होंगे। आप समझ सकते हैं कि वालिद साहब ने कितनी जिम्मेदारी मुझ पर डाली है। सबके लिए खाने–पीने और रहने का इन्तजाम करना है।"

वकील साहब तो इस वार्त्तालाप से बहुत प्रसन्न थे। वे समझ रहे थे कि लड़का समझदार है। उन्होंने पूछ लिया, "क्या यह अच्छा न होगा कि तुम लोग एक स़े ज्यादा शादियों की रिवाज बंद कर दो।"

शमशाद हँस पड़ा। हँसकर कहने लगा, "शादी का मसला कानून और रिवाज के मातहत नहीं हो सकता। यह हर इन्सान की तबीयत के साथ ताल्लुक रखता है।"

"मगर योरप के मुल्कों में तो शादी कानूनन एक वक्त में एक से ज्यादा से मना है। वहाँ कैसे चल जाती है?"

"चचाजान! मैं अभी वहाँ गया नहीं। एक दिन जाने का इरादा रखता हूँ। फिर देखूँगा कि वहाँ क्या होता है। सुना तो यह है कि यह कानून वहाँ के पादरियों के लिए है, जो शादियाँ कराते हैं, न कि शादी करने वालों के लिए। पादरी एक मर्द की और एक औरत की एक शादी करते हैं। मगर वहाँ मर्द और औरत जब चाहते हैं, पादरी से पूछे बिना शादी कर लेते हैं। यह भी सुना है कि ऐसी शादियाँ वहाँ गिरजाघर की शादियों से ज्यादा होती हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वकील साहब खिलखिलाकर हँस पड़े। वह समझ गए कि लड़के में विनोद–भावना भी है। कुछ और परीक्षा करने के लिए उन्होंने कह दिया, "मगर ऐसी शादियों के लिए अदालत में पहली बीवी को हर्जाना दिलवाने का कानून भी तो है।"

"जी हाँ। जानता हूँ। मगर यह उस हालत में जब दूसरी शादी पहली की रजामन्दी से न हो। मुझको किसी ने बताया है कि विलायत में बहुत सी बीवियाँ हैं जो अपने अपने खाविन्दों को दूसरी किस्म की बीवियाँ रखने पर एतराज नहीं करतीं। इन दूसरी किस्म की बीवियों को मिस्ट्रसिज कहते हैं। पादरी से ब्याही बीवियों को मिसेज कहते हैं और इनको मिस्ट्रसिज। थोड़ा ही फरक है।"

इस समय अनवर आया और वकील साहब तथा शमशाद को गोल कमरे में ले गया। यहाँ कुर्सियाँ और मेज लगी थीं। शमशाद को एक ऐसी कुर्सी पर बैठाया गया, जिससे खिड़की की रोशनी उस पर पड़े। साथ ही शमशाद का मुख सामने के पर्देदार द्वार की ओर रहे।

शमशाद बैठा तो समझ गया कि वकील साहब के अतिरिक्त भी उसको देखने वाले हैं, जो पर्दे के पीछे बैठे ही देखना पसन्द करेंगे। इससे उसके मन में गुदगुदी पैदा हो गई। वह भी उस पर्दे के पीछे से देखने वालों को देखने के लिए उत्सुक था। अनवर और वकील साहब शमशाद के सामने और पर्दे वाले द्वार की तरफ पीठ किए बैठे थे।

अनवर काट–काटकर फल देने लगा और वकील साहब और शमशाद दोनों खाने लगे। शमशाद ने कहा, "अनवर साहब! आप भी खाइए न?"

अनवर ने मुस्कराकर कह दिया, "आपके खाने से मुझको तसल्ली हो रही है।"

वकील साहब ने उसी विषय पर बात आरम्भ कर दी, जिसे वह बैठक में कर रहे थे। उन्होंने कहा, "तो तुम समझते हो कि वहाँ कुछ औरतें ऐसी हैं जो अपने खाविन्दों को दूसरों से बाँटकर इस्तेमाल करना चाहती हैं?"

"यह मेरे जैसा न–तजुर्बाकार नौजवान बता नहीं सकता। मैं तो इतना जानता हूँ कि वालिद साहब ने चार शादियाँ की हैं और एक की बात छोड़कर, जो अब नहीं है, तीनों मजे से रहती हैं। मुझको इसमें कुछ ऐसा समझ आया है कि उनमें खाविन्द के इस्तेमाल पर झगड़ा नहीं होता बल्कि खाविन्द की बनी जायदाद के इस्तेमाल पर होता है। कुछ बेवकूफ आदमी ज्यादा बीवियाँ रखने की तौफीक न रखते हुए भी एक से ज्यादा बीवियाँ रख लेते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिए सबको एक बराबर खुश नहीं रख सकते। इसी से झगड़ा होता है।"

"नहीं बरखुरदार!" वकील साहब ने कुछ गम्भीर होकर कहा, "कुछ जिस्म की भी ख्वाहिशात होती हैं। वे ला–इन्तहा नहीं हो सकतीं। झगड़े की सबसे बड़ी वजह यह होती है।"

"आपको कुछ तजरबा है इस बात का? अपनी अम्मियों को देखकर मेरा तो यही कयास है। बहरहाल यह तो देखना ही पड़ता है कि किसी के पास एक औरत रखने की ताकत है या ज्यादा की। मैं तो समझता हूँ कि वालिद साहब इसमें भी बहादुर आदमी हैं।"

"तुम क्या समझते हो?"

"मैं तो समझता हूँ कि अगर एक आदमी में जिस्मानी और खाने–पीने की तौफीक हो तो दो–तीन बीवियाँ रखने में हरज नहीं। मगर यह भी बीवी की मंजूरी से होना चाहिए।"

"खुदा ने एक आदम के लिए एक हव्वा बनाई थी।"

"मुझको इस बात पर एतकाद नहीं। यदि खुदा ने ऐसा बनाया होता तो फिर दूसरी औरत के पास जाते वक्त इन्सान नामर्द हो जाता। मैं तो इसको तौफीक और तबीयत का ही मसला मानता हूँ। न तो यह खुदा के तय करने की बात है, न ही कानून के।"

"शमशाद बेटा! तुम वकील बन जाते तो बहुत नेकनामी कमाते। तुम दलील खूब करते हो।"

"चचाजान! मैं दलील करता जरूर हूँ मगर मैं दलील करने से जिन्दगी का लुत्फ उठाने को ज्यादा पसन्द करता हूँ।"

: 4 :

इन बातों के दौरान में शमशाद की एक नजर सामने टँगे पर्दे पर ही थी। वह देख रहा था कि उसका अनुमान कि उस पर्दे के पीछे कोई उसको देख रहा है, ठीक है या नहीं। इस समय पर्दा हिला। इसका अर्थ यह था कि या तो कोई देखकर चला गया है या कोई देखने आया है। वह सावधान होकर बातें करने लगा। वकील साहब पूछ रहे थे, "किस मजमून में एम.ए. किया है?"

"बी.ए. में तो तवारीख और फारसी ली थी।"

"बहुत खूब! मगर फारसी का जमाना तो जा रहा है। अंग्रेजी आ रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अंग्रेजी तो सबको पढ़नी ही पड़ती है। इस पर भी मेरा शौक तवारीख में रहा है। इसलिए एम.ए. में मैंने तवारीख ही ली है।"

"यह हव्वा और खुदा का किस्सा किस मुल्क की तवारीख में आता है?"

"किसी मुल्क की तवारीख में नहीं। वह तवारीख जो हमको पढ़ाई गई है, एक किस्म के बहुत छोटे कीड़े से शुरू होती है। उस कीड़े का नाम अमीबा है। यह कीड़ा ही बड़ा होता–होता कई लाख साल में इन्सान बन गया।"

"यह लाखों साल पहले की तवारीख किस किताब में लिखी है और किसने लिखी है? उस वक्त तो इन्सान था नहीं?"

"चचाजान! तवारीख लिखने वाले तो उस वक्त नहीं थे। उस वक्त तक भी नहीं थे, जब इन्सान बन्दरों की तरह पेड़ों पर फुदकता फिरता था। उसके बहुत पीछे इन्सान ने पढ़ने–लिखने का इल्म ईजाद किया और तब यह तवारीख भी लिखी जाने लगी। शुरू–शुरू में तो इन्सान के पैदा होने की कहानी वह बताई गई जो 'बाइबल' के पुराने एहदनामे में लिखी है। उसके मुताबिक खुदा ने आदम बनाया और पीछे हव्वा बनाई। जब इनको इल्म हुआ तो ये औरत और मर्द बन कर रहने लगे, जिससे यह सब मखलूक पैदा हुई।

"मगर अब सायंसदानों ने यह मालूम किया है कि कीड़े–मकौड़े में से कई परिन्दे बन गए, कई मछलियाँ बन गईं और बदलते–बदलते जंगल के जानवर बने। इन्सान इन जंगल के जानवरों में ऐवोल्यूशन की आखिरी कड़ी है।"

"यह आखिरी क्यों है? इससे बदलकर भी तो कुछ बनना चाहिए।"

"यह मैं नहीं जानता। कोई भी नहीं जानता।"

"तो ये सायंसदान लाखों साल पुरानी कहानी के बारे में सोच सकते हैं, आगे की क्यों नहीं बताते?"

"मैं सायंसदान नहीं हूँ।"

"मैं समझता हूँ कि सायंस नहीं पढ़ी तो ठीक ही किया है। कम–से–कम अपने को बंदर की औलाद तो नहीं मानते।"

"मानता तो हूँ। मुझको इस मानने में शर्म नहीं। बरअक्स इससे एक इन्सान फख्र कर सकता है कि उसने कितनी छोटी चीज से तरक्की करते–करते क्या हासिल कर लिया है?"

"तो तुम काफिर हो?"

"जी नहीं। मैं काफिर नहीं हूँ। मैं मुहम्मद साहब के रसूल को मानता हूँ।"

"खुदा के बिना रसूल को?"

"खुदा के मुताल्लिक मैं जानता नहीं। मैंने उसको देखा नहीं। लेकिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहम्मद साहब को तवारीख की मार्फत देखा है। मोरक्को से इण्डोचाइना तक उसका जहूर देख रहा हूँ। इस वक्त दुनिया के तख्ते पर दूसरे दर्जा पर मुसलमान कौम है।''

इस पर वकील साहब गर्व से फूलने लगे। एकाएक सामने का पर्दा हिला और एकदम छ इंच के लगभग खुल गया और उसके पीछे एक अति सुन्दर मुखड़ा दिखाई दिया। यह एक क्षण के लिए ही था। बादलों में बिजली की चमक की भाँति वह मुखड़ा काले पर्दे के पीछे पुनः विलीन हो गया। जैसे चमकने वाली बिजली आँखों के पर्दे पर अपना प्रभाव छोड़ जाती है, इसी प्रकार वह मुस्कराता हुआ मुखड़ा शमशाद के मस्तिष्क पर अपनी छाप लगा गया।

बातचीत चलती रही। वकील साहब ने पूछ लिया, ''अब घर पर अंग्रेजी जुबान का तो कुछ भी काम नहीं रहा होगा?''

''बहुत कम रह गया है। कुछ 'नावल' वगैरा मँगवा लेता हूँ और वह पढ़ा करता हूँ। यों तो उर्दू जुबान में भी अफसाने आते रहने हैं, मगर जो लुत्फ अंग्रेजी नावल पढ़ने में आता है, वह उर्दू के अफसानों में नहीं आता।''

''कुछ फारसी और अरबी का अदब भी पढ़ लिया करो।''

''अरबी आती नहीं। सोच रहा हूँ किसी मौलाना को नौकर रख लूँ और उससे पढ़नी शुरू कर दूँ। मगर इसके लिए वक्त मिलता नहीं।''

''दिन भर क्या करते हो?''

''फार्म, स्टीड्स–फार्मिंग, पोल्टरी। अब एक डेयरी फार्म खोलने का इरादा बना रहा हूँ।''

''गाय रखोगे या भैंसें?''

''दोनों। गाय घरवालों के लिए और भैंसों के दूध का घी बनाकर बेचने के लिए।''

''घरवाले गाय का दूध पीते हैं क्या? उसमें क्या लुत्फ आता होगा। पानी ही पानी तो होता है।''

''मगर चचाजान! भैंस के दूध से अक्ल मोटी पड़ जाती है।''

''यह तुमको किसने कहा है?''

''मेरे एक दोस्त हैं जवाहरलाल। उसके पिता यह बताते थे।''

''इन हिन्दुओं के चक्कर में न पड़ जाना। ये वेवकूफ न तो अपना ही भला कर सकते हैं, न ही किसी दूसरे का।''

शमशाद ने इस विषय पर आगे बातचीत करनी ठीक नहीं समझी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब बात कर वह उठने लगा तो उसने कह दिया "चचाजान! यह शर्बत बहुत लजीज था। कुछ ज्यादा पी गया हूँ। एक पान मिल सके तो।

"यहाँ पान नहीं मिल सकता। जेहलम में कहीं नहीं मिलेगा। हाँ, चूरण कहो तो घर में ही है।"

अनवर उठा और सामने वाले पर्दे के पीछे चला गया। कुछ देर में वह एक शीशी में लाहौर, गुमटी बाजार के भाइयों की दुकान के लेबल लगी चूर्ण की शीशी ले आया। शमशाद ने थोड़ा मुख में लेकर चूसते हुए कहा, "मजेदार है।"

जब वह दोबारा उठने लगा तो उसको खुलकर एक डकार आ गयी। इस पर उसने कह दिया, "वाकई चूर्ण बहुत बेहतर है, मगर है काफिरों की दुकान का।"

"अब तो हम लोग इन हिन्दुओं को जज्ब नहीं कर सकते। जब अपनी हुकूमत थी, तब भी हम सबको मुसलमान नहीं बना सके। अब तो हुकूमत अंग्रेजों की है और अब कुछ नहीं हो सकता। ये अंग्रेज इन काफिरों की हौसला–अफजाई करते रहते हैं। सुना है लाहौर में फिर आर्य समाजियों से मुबाहसे होने लगे है। एक काफिर की जान हलाक करने पर ये मुबाहसे बंद हुए थे। अब ये लोग सरकश होने लगे हैं।"

शमशाद की शिक्षा वकील साहब से दूसरी किस्म की थी और वह वकील साहब के मनोद्‌गारों को पसन्द नहीं कर रहा था। मगर पर्दे के पीछे वाला वह खूबसूरत मुखड़ा उसके दिमाग में अभी भी असर रखता था। यह विचार कर कि वह अभी भी पर्दे के पीछे खड़ी उनकी बातें सुन रही होगी और वह अपने बाप के ही विचारों की होने से उसके विचारों को सुन, कहीं उसके खिलाफ न हो जाए, इससे वह चुप था। मन–ही–मन सोच रहा था कि वकील साहब पढ़े हुए तो हैं मगर पढ़ाई से ज्यादा उन पर इस्लाम असर रखता है।

वे बातें करते हुए बाहर आ गए। जब वे बैठक में आए तो शमशाद ने पूछ लिया, "अब मेरे लिए क्या हुक्म है?"

'सिलवन होटल के किस कमरे में रहते हो?"

"कमरा नम्बर तीन में।"

"तो यह अनवर तुमसे कल किसी वक्त मिलेगा।"

"किस वक्त इंतजार करूँ?"

"कल दोपहर का खाना खाने के वक्त तक अनवर मिल सकेगा।"

रात–भर शमशाद उस खूबसूरत मुखड़े के स्वप्न लेता रहा। वह मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विचार कर रहा था कि यह दर हकीकत ही नासिरा से ज्यादा खूबसूरत है, यद्यपि उसने केवल मुख ही देखा था। उसकी ऊँचाई तथा शरीर के गठन का अभी अनुमान नहीं लगा सका था, इस पर भी मुख से शेष शरीर की कल्पना कर वह आनन्द–विभोर हो रहा था। बहुत रात बीत जाने पर ही वह सो सका। परिणामस्वरूप बहुत दिन चढ़े तक वह सोता रहा। उसकी नींद तब खुली, जब उसके कमरे का दरवाजा खटखटाया जा रहा था। वह उठा और दरवाजा खोलकर बाहर झाँककर देखने लगा। होटल का बैरा खड़ा था। वह बोला, "हुजूर! आपसे कोई मिलने वाले बाहर खड़े हैं और आपके लिए बेड–टी लाऊँ? अगरचे अब तो ब्रेक–फास्ट का वक्त हो गया है!"

"आने वाले को भेज दो। बेड–टी लाने की जरूरत नहीं। ब्रेक–फास्ट गुसल के बाद लूँगा।"

शमशाद को नाइट सूट में देखकर उस बैरे ने कह दिया, "मिलने वाले दो हैं। एक मर्द है और एक औरत। आप कपड़े पहन लीजिए। उनको हम बाहर ही बैठाते हैं।"

"अच्छी बात! उनसे कहना मैं गुसल कर रहा हूँ। कोई मैगजीन उनको पढ़ने के लिए देना। मैं पाँच मिनट में आता हूँ।"

शमशाद का खयाल था कि वकील साहब और उनकी बेगम साहिबा होंगी। ये या तो जवाब देने आए हैं कि बैरंग वापिस लौट जाए या कुछ लेन–देन की बात करने आए है। इस प्रकार के विचारों में फँसा हुआ वह शौच गया और फिर स्नान कर कपड़े पहन, बाहर होटल की लौंज में जा पहुँचा। वकील साहब नहीं थे। अनवर था और एक बुर्का पहने औरत उसके पास कुर्सी पर बैठी थी। शमशाद ने यह देख अनुमान लगाया कि अनवर अपनी बहिन के साथ आया है। इससे बहुत ही खुशी–खुशी बोला, "अनवर भापा! आओ! कमरे में ही आ जाओ। मुआफ रखना, रात को नींद कुछ ठीक नहीं आई। तुम जानते हो इन्तजार बहुत ही बुरी चीज है। इससे रात सो नहीं सका। जब तुम लोग आए तो अभी सो रहा था।"

ये तीनों कमरा नम्बर तीन की ओर जा रहे थे। रास्ते में बैरा मिला। उसको देख शमशाद ने तीन आदमियों के ब्रेक–फास्ट का आर्डर दे दिया। तीनों जब कमरे में पहुँचे तो कमरे के दरवाजे का पर्दा ठीक करके, जिससे बाहर से गुजरने वाला भीतर बैठों को देख न सके, वे कमरे के सेन्टर में रखी मेज के चारों ओर बैठ गए। इस समय अनवर ने कमरे को देखते हुए कहा, "कमरा अच्छा सजा हुआ है। पलंग भी खूब चौड़ा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, कमरा अच्छा है। कमरे के साथ ही टट्टी और गुसलखाना भी है। वह देखिए, यह पंखा है। रात–भर बाहर बैठा आदमी हवा करता रहा है। बाहर खसखस की टट्टी लगी है। हवा ठंडी और खुशबूदार आती रही है।"

"तभी। मैं सोच रहा था कि आप कमरे के अन्दर इस गर्मी के मौसम में भला कैसे सो सके होंगे?"

"बाहर तो रात भर लू चलती रही है। अन्दर पंखे की ठंडी हवा थी। खैर! छोड़िए इस बात को। मैं आपके आने की उम्मीद दोपहर के वक्त कर रहा था।"

"वालिद साहब का खयाल था कि हम आपसे सुबह–सुबह मिलकर उनके कचहरी जाने से पहले लौट आयेंगे। हम घर के ताँगे में आये हैं। ताँगा मैं ही चलाकर आया हूँ। होटल के बाहर एक बैरे के हवाले कर आया हूँ।"

"तो वकील साहब को कचहरी जाने में देरी हो जायेगी।"

"नहीं, अब तक तो वे कोई भाड़े का ताँगा लेकर चले गये होंगे। इससे हम इत्मीनान से बैठ बातचीत कर सकेंगे।"

बैरा तीन आदमियों के लिए ब्रेक–फास्ट ले आया। वह उनके लिए लगाने लगा। उबले अंडे, मक्खन, टोस्ट, दलिया, दूध और चाय थी। जब सजाकर बैरा चला गया तो बुर्का उठ गया और मुस्कराता हुआ चेहरा उस पर्दे से निकल दिखाई देने लगा। शमशाद मंत्र–मुग्ध हुआ उसको देखता रह गया। यह वही मुख था, जो पिछले दिन एक क्षण के लिए पर्दे के पीछे से बिजली की भाँति उसकी आँख के सामने चमक गया था। जब शमशाद अवाक् उसका मुख देखने लगा तो वह मुस्करा दी और पूछने लगी, "पसन्द आ गई हूँ?"

"वह तो कल ही आ गई थीं।" शमशाद ने इस बात का संकेत कर दिया कि उसने उसको देख लिया था।

इस पर तो अनवर ने हैरान होकर पूछ लिया, "कल ही? मतलब?"

"कुछ नहीं, अनवर भापा! कल इनके हाथ का बना शर्बत जो पिया था।"

"वह तो हमारी नौकरानी ने बनाया था।"

"मगर मुझको तो उसमें इनके हाथ की खुशबू आ रही थी। क्यों जी! आपने जरूर उसको छुआ होगा।"

"अनवर! ये ठीक कहते हैं। शरबत मैंने ही बनाया था।"

अनवर इस पर हँस पड़ा और बोला, "तो अभी से ही इनकी हिमायत शुरू हो गई? अच्छी बात है सरवर! मैं भी तुम्हारी भौजाई लाऊँगा जो तुम को कभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससुराल से लायेगी ही नहीं, जिससे तुम इनकी और यह तुम्हारी हिमायत करते ही रहा करें।''

तीनों हँसने लगे। शमशाद ने कहा, ''भाईजान! मैं आपका और आपकी होने वाली बीवी का निहायत शुक्रगुजार हूँगा। मुझको फुरसत की घड़ियाँ सहनी नहीं पड़ेंगी।''

''ओह! अभी से बेताब हो रहे हैं।'' सरवर ने टेढ़ी दृष्टि से देखते हुए पूछ लिया।

''हाँ मेरी जान! मैं यह पूछना चाहता हूँ कि किस दिन यहाँ से तशरीफ ले चलने का खयाल है?''

''यह मेरे कहने की बात नहीं है। यह तो अम्मी और अब्बाजान ही बता सकेंगे।''

''तो उनसे पूछने की जरूरत है?''

''यों तो जाने की इजाजत मिल चुकी है। मगर आप तो कब की बात पूछ रहे है न।''

''मेरी ख्वाहिश तो है कि अब घर जाने की जरूरत नहीं। देखो जी! जब मियाँ–बीवी राजी तो क्या करेगा काजी? बताइए! मेरे लिए तो बस आपकी रजामंदी चाहिए।''

''यह बगावत अपने वालदैन से कोई अच्छी बात तो है नहीं। मत समझिए कि यह बेताबी एक तरफ से ही है। तो भी जरा सब्र करिए। वालिद और अम्मी आपसे मिलने आयेंगे। तब बात कर लीजिएगा। मैं उम्मीद करती हूँ कि अब किनारा दिखाई दे गया है। किश्ती किनारे लगेगी ही।''

ब्रेक–फास्ट खत्म हुआ तो अनवर ने अपनी बहिन से कहा, ''सरवर! अब हमें चलना चाहिए। तुम्हारे यहाँ आने का मकसद तो हल हो ही गया है। क्यों शमशाद भापा! मैं ठीक समझता हूँ न?''

''हाँ, अब मैं बेताबी से आपके वालिद और अम्मीजान का इन्तजार करूँगा।''

दोपहर के खाना खाने के समय वकील साहब और उनकी बेगम साहिबा आईं। शमशाद को बेचैनी से अपने कमरे में टहलते हुए देख वकील साहब पूछने लगे, ''क्यों शमशाद बेटा! कहीं जाने वाले हो क्या?''

''जी हाँ। मुझको कुछ ऐसा महसूस हो रहा था कि एक युग बीत गया है, आपका इन्तजार करते हुए। ख्याल था कि अगर आप खाने के वक्त तक न आए तो आपकी कोठी पर जा धमकूँगा और बात तय कर बरात की तैयारी करने घर पर चला जाऊँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बरात की क्या जरूरत है? मैं तो तजवीज लेकर आया हूँ कि आज शाम को निकाह पढ़ा लिया जाए। रात तुम हमारी कोठी में रहो और कल सुबह तुम अपने गाँव के लिए रवाना हो जाना।"

"तब तो ठीक है। अपने वालिद साहब से बहुत अच्छा मजाक रहेगा। मैं तैयार हूँ।"

"उनसे कैसा मजाक रहेगा?"

"यही कि वे अपने सब गाँववालों को मेरी बरात में लाने की बातें बहुत किया करते हैं। वे गुजरात का सबसे बढ़िया बाजा और फिर ढोल–ढमकीरों और तवाइफों के नाच के इन्तजाम का भी ख्याल रखते हैं।"

"इन सबका तुम्हारी शादी से कोई ताल्लुक नहीं है। मेरा खयाल है कि तुम कल अपने गाँव को अपनी बीवी के साथ लौट जाना। वहाँ तुम खूब जश्न उड़ाना। बाजे बजवाना, नाच–रंग करवाना और इस सब के खर्च के लिए मैं तुमको एक हजार रुपया और कहो तो ज्यादा भी दे दूँगा।"

"और कितना आप देने का इरादा रखते हैं?"

"तुम क्या उम्मीद रखते हो?"

"वालिद साहब ने कहा था कि शादी तो करनी ही है। एक दोस्त की लड़की का सवाल है। इनकार हो सकता ही नहीं। इस पर भी मैं खयाल करता था कि अगर लड़की बदसूरत या मामूली सूरत–शक्ल की हुई तो दहेज कुछ ज्यादा माँगूँगा और अगर वह खूबसूरत हुई तो फिर जो भी आप देंगे, चुपचाप मंजूर कर लूँगा।"

"कैसी लगी है लड़की?" अनवर की माँ ने पूछ लिया।

अनवर की माँ ने बुर्का उठाया हुआ था। इस पर शमशाद को मजाक सूझा। उसने कह दिया, "आप से तो कम ही खूबसूरत है। इस पर भी हमारे गाँव और रिश्तेदारों में तो वैसी खूबसूरत और कोई लड़की नहीं।"

अनवर की माँ ने कहा, "बहुत खुशामदी हो शमशाद! देखो, सरवर मेरी लड़की नहीं है। मेरी एक सौकन थी। उसका इन्तकाल हो चुका है। अनवर मेरा लड़का है। यह तो सब कोई जानते हैं कि सरवर अपनी माँ से भी ज्यादा खूबसूरत है और वकील साहब सरवर की माँ को मुझसे कहीं ज्यादा खूबसूरत समझकर लाए थे।"

"पसन्द अपनी–अपनी है चचीजान! बहरहाल मैं समझता हूँ कि शादी तो जितनी जल्दी हो सके, मुझको मंजूर है। ज्यादा बात, आप मेरे बड़े हैं, सोच–समझ लीजिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने दस हजार रुपये सरवर को देने के लिए रखा हुआ है। एक हजार रुपये दावत के लिए ज्यादा दे दूँगा। अगर खलीफा साहब को शौक हो यहाँ आने का, तो वह आते रहते हैं और फिर भी आया ही करेंगे। उनकी मुनासिब खातिर–तवज्जु होती रहेगी।"

शमशाद चुप रहा। उसका खयाल था कि जैसे वह नासिरा को लेकर बिना बताए घर पहुँचा था, वैसे ही सरवर को लेकर पहुँच जाए तो क्या हरज है? नासिरा तो एक पैसा भी लेकर नहीं आई थी। यह तो दस हजार नकद, जेवर, कपड़े व घर का अन्य सामान लेकर जाएगी। किसी के नाराज होने में वजह नहीं। साथ ही वह विचार कर रहा था कि अपनी नई बीवी को लेकर बाजे–गाजे के साथ भी जा सकता है। इससे वह चुपचाप अपने श्वसुर की बात सुनता रहा।

अनवर की माँ ने कह दिया, "बारात आएगी। उसकी तैयारी में कम से कम एक महीना लगेगा। हजारों तुम्हारे वालिद के खर्च होंगे और हजारों हमारे खर्च होंगे। हमारे जो इस तरह से बचेंगे, उनको जेवर, कपड़ों व बर्तनों पर सर्फ कर देंगे। जो तुम्हारा बचा रहेगा, उसे जमा रखना। वक्त पर काम आएगा।"

इस जल्दी का रहस्य तो रात को निकाह के बाद जब मियाँ–बीवी को इकट्ठे सोने का अवसर मिला, मालूम हुआ। सरवर ने खुद बताया, "जब आपने कहा कि आप मेरी सोहबत के लिए बेताब हो रहे हैं तो मैंने अपने दिल को टटोला और उसे भी वैसा ही बेताब पाया। नतीजा यह हुआ कि मैंने अम्मी को कह दिया, 'अगर निकाह शाम तक पढ़ा जाता है तो ठीक, वरना मैं रात आपके साथ होटल में बिना निकाह के ही रहूँगी।" इस पर अम्मी ने पूछ लिया कि आप न जाने मुझसे कैसा सलूक करें। मैंने कह दिया– 'अम्मी जान! आप मुझको कोई अनपढ़ देहात की गँवार लड़की न समझें। मैं इस वक्त उन्नीस साल की जवान लड़की हूँ। 'मेरी' के कॉन्वेन्ट स्कूल में सीनियर कैम्ब्रिज की पढ़ाई पास की हुई है'।"

"तो आपको स्कूल में यह इल्म भी सिखाते हैं?" शमशाद ने मुस्कराकर पूछ लिया।

"नहीं, स्कूल में तो नहीं सिखाते, मगर बोर्डिंग हाउस में रहने वाली लड़कियाँ बहुत कुछ सिखा देती है।"

"और वे कहाँ से सीखकर आती हैं?"

"यह एक रिवाज बन जाता है। बड़ी लड़कियाँ छोटी को सिखा देती हैं। इस तरह ट्रेडीशन चल पड़ती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत मजेदार स्कूल है आपका?"

शमशाद को सरवर एक पके आम की तरह गिरने वाला फल प्रतीत हुई और उसने उसे खूब जी भरकर चूसा। अगले दिन विदाई हो गई। सरवर को यह मालूम था कि उसे क्या मिलने वाला है। इससे उसने सब कुछ संदूकों में बंद करवा रक्खा था। वकील साहब ने दस हजार के सौ–सौ रुपये के नोट गिनकर सरवर के हाथ में पकड़ा दिए और दस वैसे ही नोट शमशाद के हाथ में।

दस तो बड़े–बड़े सन्दूक थे, जिनमें वस्त्राभूषण, बर्तन तथा और सामान भरा हुआ था। पलंग इत्यादि नहीं था। हाँ, एक शृंगारदान था। वह एक संदूकचीनुमा, दस संदूकों के अलावा था।

लड़के को एक बहुत बढ़िया रावलपिंडी का बना पेशावरी फैशन का ताँगा और एक बहुत ही तन्दुरुस्त घोड़ा, उसमें जुता हुआ दिया गया। कपड़े और हाथ में पहनने की अंगूठी और पेशावरी तिलई जूते भी दिए गए।

यह सब सामान लिए वर–वधू, घर के कुछ नौकरों और दो नौकरानियों के साथ रेल के स्टेशन पर और वहाँ से गुजरात स्टेशन पहुँच, पाँच ताँगों में सामान लादकर गाँव को चल पड़े। लड़के को मिलने वाला ताँगा–घोड़ा, तो सड़क के रास्ते एक कोचवान के साथ भटिया को सीधा रवाना कर दिया गया था।

: 5 :

जब शमशाद जेहलम गया था तो वह अपनी बीवी नासिरा को यही बताकर गया था कि जमींदारी का एक मुकदमा है और उसके सिलसिले में ही उसको एक सप्ताह के लगभग लग जाएगा। मगर उसी सायंकाल शमशाद की सबसे छोटी माँ, सुल्ताना उसके पास आई और पूछने लगी, "कैसी हो बहू?"

"आपकी इनायत है।"

"शमशाद तो जेहलम गया है?"

"हाँ।"

"वह तो कई दिन वहाँ रहने के लिए गया है?"

"हाँ, कहकर गए हैं कि एक हफ्ता तक लग सकता है।"

"तो रात कैसे गुजरेगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जैसी गुजरनी चाहिए।"

"बहुत तकलीफ होगी?"

"खयाल तो है कि नहीं होगी।"

"क्यों? क्या रात कोई अन्य आने वाला है?"

नासिरा को शक हो गया कि उसकी सास किसी खास मतलब से बात कर रही है। इससे वह सतर्क हो गई और कहने लगी, "अम्मी! यहाँ कोई नहीं आ सकता। यह जिस्म सिर्फ एक के हवाले ही हो सकता है और वह अपना खाविन्द है।"

सुल्ताना हँस पड़ी। उसने हँसते हुए कहा, "मगर जब बीवी का खाविन्द किसी नई बीवी की तलाश में गया हो यह जिस्म बेचारा बेताब तो होगा ही? देखो बहू! शमशाद एक नई शादी करने के लिए गया हैं। अगर उसको लड़की के बाप ने पसन्द कर लिया तो शादी होगी ही। मैं इस नई हालत का जिक्र कर रही हूँ। हम, मेरा मतलब है मैं, अनवरी और नरगिस इस मुश्किल को महसूस करती रहती हैं।

"फिर जब से तुम आई हो, हमारे मियाँ तुम पर लट्टू हो रहे हैं। यह नई शादी भी उनके ही इसरार पर की जा रही है। वे चाहते हैं कि तुम अपने खाविन्द से फुरसत पा जाओ तो फिर उनके बिस्तर को भी रौनक बख्श सको।"

नासिरा हँस पड़ी। उसने कहा, "अम्मी! मेरी वजह से आपको कोई तकलीफ नहीं होगी। मैं आपके मियाँ साहब को अपने वालिद की तरह मानती हूँ। आपको तसल्ली रखनी चाहिए कि इन तिलों में वह तेल नहीं, जिसका आपको डर लग रहा है।"

नासिर ने कहने को तो यह कह दिया, मगर वह अपने श्वसुर के हाव–भाव से आशंकित पहले से ही थी। इससे उसको चिन्ता लग गई। उसने बात बदल दी।

"किसकी लड़की है जिसको आपके साहबजादे देखने गए हैं?"

"जेहलम में वकील अब्दुल मजीदखाँ। उनकी लड़की 'मेरी कॉन्वैन्ट' स्कूल से पढ़कर आई है और शमशाद के एम.ए. पास कर आने की इन्तजार में थी। वकील साहब तो हमेशा खलीफा साहब से कहा करते थे कि लड़की शमशाद के लिए ही मुकर्रिर है। उसके आते ही शादी कर दी जाएगी। मगर वह यहाँ आया तो तुमको अपने साथ ले आया। इससे खलीफा साहब को बहुत परेशानी हुई। मगर जब उन्होंने तुम्हारा हुस्न देखा तो तुमको भी घर में रख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेने पर राजी हो गए। अब वे ही पुरजोर कोशिश कर रहे हैं कि शमशाद की दूसरी शादी जल्दी हो जाए तो तुमको कोट के उस तरफ, जिधर हम रहती हैं, एक कमरा दे दिया जाए।''

नासिरा मुस्कराकर चुप कर रही। रात को ही सुल्ताना की बात को सत्य करने के लिए खलीफा अजीमुल्ला खाँ आ पहुँचे। नासिरा बच्चे को खटोले में सुला पेशाब करने गुसलखाने में गई थी। जब वहाँ से लौटी तो खलीफा साहब उसके कमरे में एक कुर्सी पर डटे हुए थे।

नासिरा अपने श्वसुर से पर्दा नहीं करती थी। इससे आँखें नीचे किए हुए वह कमरे में अपने बच्चे के खटोले के किनारे पर बैठ बोली, ''अब्बाजान! आपके बड़े बेटे क्या दूसरी शादी करने के लिए गए हैं?''

''शादी करने के लिए तो नहीं। हाँ शादी का इन्तजाम करने के लिए जरूर गया है। उसके होने वाले श्वसुर ने उसकी देखनी करने के लिए बुलाया है। यों तो शमशाद की फोटो उनके पास है। मगर फोटो पर भरोसा न कर उन्होंने लड़के को ही बुला लिया है।''

''शादी कब तक होगी?''

''यह तो वकील साहब, जिनकी लड़की से शादी का फैसला होना है, तय करेंगे।''

''आपके साहबजादे कब तक वापस आ जायेंगे?''

''एक हफ्ता तक लग सकता है। आज शाम को वहाँ पहुँचेगा। दो–तीन मुलाकातें तो वकील साहब से होंगी ही। इसलिए पाँच–छः दिन लग जाने मुमकिन हैं।''

''अच्छी बात है।''

''मुझको तो तुम्हारी फिकर लग रही है।''

''किस बात की?''

''यही कि वह अमीर आदमी की लड़की है और वह तुम्हरे खाविन्द को धन–दौलत के जाल में बाँध लेगी।''

''परन्तु मैं भी तो एक बड़े जमींदार की लड़की हूँ। मुझको मेरा खाविन्द 'हेच' नहीं मानेगा।''

''किसकी लड़की हो तुम?'' खलीफा ने हैरानी में पूछा। उसको शमशाद ने कुछ और ही बताया था।

नासिरा ने मुस्कराते हुए कहा, ''आपकी। मैं ससुर और वालिद में फर्क नहीं मानती।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर मैं वालिद बनना मानता हूँ क्या? देखो नासिरा! मैंने तो तुमको देखकर पसन्द किया है। कोई ससुर अपनी लड़की या बहू को देख कर पसन्द नहीं करता। शमशाद की शादी तो होगी ही और तुम दर-दर की भिखारिन न बनो, इस कारण तुम्हारे लिए एक कमरा अपनी तरफ तैयार करा रहा हूँ।"

इस पर नासिरा ने गम्भीर हो कह दिया, "अच्छी बात है। मेरे सामने दो बातें हैं। या तो यह घर छोड़कर चली जाऊँ या अपने वालिद से बदफैली करूँ। मगर इन दोनों में से एक चुनने का तो वक्त तब ही होगा, जब आपके साहबजादे दूसरी शादी कर नई बीवी लेकर आयेंगे और मुझको अपनी बीवी मानने से इनकार कर देंगे।"

"अच्छी बात है उसको आने दो।"

"तो अब आप तशरीफ ले जाइए। आपकी बात सुन ली है। मुझको इन सब बातों पर सोचने का मौका दीजिए।"

जिस शान्ति से नासिरा बात कर रही थी, उससे खलीफा साहब को न तो इत्मीनान ही हुआ और न ही नाउम्मीदी। वे उठे और चल दिए। उनके जाने के बाद सासें आ धमकीं और खिल-खिलाकर हँसती हुई नासिरा को देखने लगीं। नासिरा परेशानी से गम्भीर हो अपने बच्चे की ओर देख रही थी। अपनी सासों को आए और हँसते देख उसने उन्हें बैठने के लिए कह दिया।

"देखो नासिरा!" सुल्ताना ने कहा, "मैंने तुम्हारे दिल के जजबात इनको बताए तो हम यह जानने के लिए पेचोताब खा रही थीं कि तुम किस तरह हमारे मियाँ को टालती हो। जब तुम गुसलखाने में गई तो वे हमको अपने-अपने कमरे में भेजकर यहाँ चले आए। पर हम छिपकर तुम्हारी उनसे गुफ्तगू सुनने के लिए आ गईं। हम बाहर खड़ी हो सब सुनती रही हैं। हमने जब तुम्हारे मुख से यह सुना कि 'अब आप तशरीफ ले जायें।' तो बगल के कमरे में भाग गईं। हम तुम्हारी पाकजदगी की दाद देती हैं और मुबारकबाद भी देती हैं।"

इतना कह सब हँसती हुई चली गईं। नासिरा तो अपने खाविन्द के मुताल्लिक सोच रही थी। वह सोचती थी कि यह लड़का, उससे उम्मीद करता है कि वह तवाइफ का पेशा इख्तियार नहीं करेगी। इस इरादे से उसने अपने में उत्साह का संचय कर सिर को सीधा खड़ा कर लिया और बच्चे को गोदी में लेकर भीतरी प्रांगण में अपने पलंग पर, जो नौकरानी ने लगा दिया था, जाकर सो रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन जवाहरलाल का पत्र आया जिसमें उसने शमशाद के एम.ए. में पास होने का समाचार भेजा था। उसने उस चिट्‌ठी को खोला, पढ़ा और उसको उत्तर लिख अपनी नौकरानी के हाथ गाँव के डाकखाने में डालने के लिए भेज दिया।

इसके दो दिन बाद ही गुजरात के एक बहुत बढ़िया बाजे वालों के साथ पाँच ताँगों में सामान लादे हुए शमशाद एक डोली में सरवर को लिए कोट के द्वार तक आ पहुँचा। सारे गाँव के साथ–साथ कोट में इस बात की धूम मच गई कि छोटा मालिक एक और शादी करके आया है। इसकी उम्मीद तो अजीमुल्ला खाँ भी नहीं करता था। वह तो यह उम्मीद लगाए हुए था कि शमशाद बात तय करके वापस आयेगा और फिर बरात की तैयारी की जाएगी। गाँव के लोग सब नाचते–गाते हुए। बारात में जायेंगे। तीन दिन तक वकील साहब के यहाँ दावतें उड़ेंगी। तब डोली लेकर वे धूमधाम से वापस आयेंगे। वे इस सोच में ही खोए से थे कि शमशाद ताँगे से उतरकर उनके सामने आ खड़ा हुआ। उसको देखते ही वह बोल उठे, "शमशाद, यह क्या ले आए हो?"

"जिसके लिए आपने भेजा था।"

"मगर इस तरह से?"

"हाँ; हालात ऐसे बन गए कि शादी कल रात हुई और आज इसको विदा कर दिया गया। यह बाजा, ताँगे और यह डोली भी गुजरात में आकर खुद मैंने इनका इन्तजाम किया है।"

"तुम भी पढ़े–लिखे बुद्धू हो। अबे गधे! उस रुपये का, उस दहेज का, उन दावतों का जो वकील साहब देने वाले थे, क्या हुआ?"

"सब का इंतजाम कर आया हूँ।"

"क्या कर आए हो?"

यही कि आप, वे सब जश्न, जो जेहलम में जाकर मनाना चाहते थे, यहीं मना लें और बिल वकील साहब को भेज दें। मैं कल रात गाँववालों की तफरीह के लिए एक जश्न का इन्तजाम कर रहा हूँ। कल शाम को अपने सब काश्तकारों, गाँव के लोगों को दावत हम देंगे। दावत के बाद एक जेहलम की और एक गुजरात की मशहूर रकासा आयेगी, जो रात के आठ बजे तक गाँववालों को अपने नाच और गाने से खुश करेगी। सब खर्चे का बिल वकील साहब की लड़की की मार्फत वकील साहब को भेज दिया जाएगा। वे उसकी अदायगी कर देंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और दूसरा रुपया?"

"वह उन्होंने सरवर के हाथ में दे दिया है।"

इससे खलीफा अजीमुल्ला को कुछ तसल्ली हुई। इस बात के खयाल से कि नासिरा उसके साथ रह सकेगी, वह चुप कर रहा।

रास्ते में शमशाद ने अपनी नई बीवी को कहा था कि उसको अपने श्वसुर की कदमबोसी करनी होगी। इस पर सरवर ने कह दिया था कि वह किसी की कदमबोसी नहीं करेगी। उसका सिर किसी के सामने खम नहीं हो सकता।

"मेरे भी?" शमशाद ने पूछा था।

सरवर का कहना था– "आपके सामने तो सब कुछ खम हो गया है। यहाँ सिर और पाँव का सवाल ही नहीं।"

इस कारण अब शमशाद ने अपनी बीवी को दोबारा कदमबोसी के लिए कहा ही नहीं। सरवर ने बुर्का नहीं उठाया और शमशाद के कहने पर सीधी उसके साथ कमरे में चलने के लिए तैयार हो गई। उसको बैठक घर से अन्तःपुर की ओर जाते देख खलीफा साहब बोले, "शमशाद! बहू को इधर लाओ।"

"आओ बेगम!" शमशाद ने पीछे–पीछे बुर्के में चली आती सरवर को कहा।

सरवर अपने खाविन्द के साथ बैठक में जा पहुँची। खलीफा साहब ने बैठते हुए कहा, "बैठो।"

शमशाद बैठ गया और उसके साथ ही सरवर भी। तीनों बेगमें भी वहाँ पर आ गईं। नासिरा इस समय अपने बच्चे को दूध पिला रही थी और अपने कमरे में बैठी थी। शमशाद ने नजर दौड़ाई और नासिरा को वहाँ न देखकर इत्मीनान ही महसूस किया। अजीमुल्ला खाँ ने अपनी इस नई बहू को देखकर कहा, "बेगम, पर्दा उठाओ ! जरा हम देखना चाहते हैं कि तुम कैसी हो?"

इस पर सरवर उठ खड़ी हुई और बोली, "जिनको पसन्द करना चाहिए था, वे पसन्द करके ही लाए हैं।" यह कह वह कमरे से बाहर की ओर चल पड़ी।

"ठहरो!" खलीफा साहब ने कुछ डाँट के भाव से कह दिया। सरवर ठहर गई। घूमकर अपने श्वसुर की ओर देखकर उसने कहा, "हजरत! मुहम्मद साहब वली इस्लाम ने औरतों को पर्दे में रहने का हुक्म दिया है। मैं आपके सामने पर्दा उठाने को ठीक नहीं समझती।" साथ ही वह बैठक से निकलकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर जा खड़ी हुई। वह जानती नहीं थी कि किधर जाना है। इसलिए बाहर जाकर खड़ी हो गई और अपने पति की प्रतीक्षा करने लगी।

बाप ने बेटे से कह दिया, "बड़ी बददिमाग है यह औरत?"

"इसी वास्ते तो इससे शादी की है। अब जरा इसका तआरुफ एक और से करा आऊँ। फिर आता हूँ।"

इतना कह वह बैठक से निकल गया। वह सरवर को लेकर उस कमरे में चला आया, जिसमें नासिरा बैठी थी।

नासिरा ने भी बाजे की आवाज सुनी थी। उसकी खास नौकरानी ने आकर उसको समाचार दिया था कि उसकी सौकन की डोली आई है। इसके बाद वह यह भी बताने के लिए आई थी कि नई बहू खलीफा साहब के सामने आई है और उसने कमदबोसी नहीं की।

इस समय शमशाद सरवर के साथ आ गया। नासिरा उनको आया देख समझ गई। उसने नौकरानी को बच्चा दिया और कहा, "फातिमा! जाओ। इसे जरा घुमा लाओ।"

जब फातिमा निकल गई तो उसने बुर्के की ओर देखते हुए कहा, "आओ बहिन! बैठो! सुनाओ, कुछ रास्ते में तकलीफ तो नहीं हुई।"

सरवर ने सामने खड़ी औरत को सिर से पाँव तक देखा और बुर्के को उठाकर अपने खाविन्द की ओर मुस्कराकर देखते हुए उसने पूछा– "आपने मुझको यह बताया नहीं कि आप पहले ही शादी किए हुए हैं?"

शमशाद ने मुस्कराते हुए कहा, "सरवर! बैठो तो।"

सरवर बैठ गई। शमशाद भी बैठ गया। नासिरा खड़ी रही। इस पर भी शमशाद ने उसको बैठने के लिए नहीं कहा। सरवर अभी विचार कर रही थी कि वह अपने खाविन्द पर नाराज हो या अपनी सौकन पर। शमशाद ने इस पर यह कह दिया, "एक मुसलमान की बीवी को यह समझ लेना चाहिए कि उसकी तीन सौकनें हो सकती हैं।"

यही तो सरवर भी विचार कर रही थी कि मुसलमान होने से कैसे इसको अस्वीकार कर सकती है? इस समय उसको नासिरा के खड़े होने का ज्ञान हो गया। उसने नासिरा की बाँह पकड़कर उसे अपने समीप की कुर्सी पर बैठा लिया और उससे पूछने लगी, "क्या नाम है तुम्हारा?"

"नासिरा। एक गरीब की लड़की हूँ। इन्होंने धूल में पड़ा पाया तो धो–पोंछ कर अपने दिल में जगह दे दी। बस यही है मेरी छोटी–सी कहानी। तुम्हारे बारे में कुछ तो सुन लिया है, बाकी कभी फुरसत के समय सुन लूँगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं तुम्हें अपने से हर हालत में बेहतर पाती हूँ।''

''मैं तुम्हारे साथ अभी इसी कमरे में रहूँगी। ठीक है न?''

''यह गोली किसकी और गहने किसके?'' इतना कह नासिरा ने ताली बजाई और नौकरानी के आने पर उससे बोली, ''बेगम साहिबा के लिए नाश्ता ले आओ।''

''अभी तो खाना भी नहीं खाया।'' सरवर ने कह दिया।

''ब्याह वाले घर में नाश्ता और खाने में बहुत कम फरक होता है। अब तो रात के वक्त खाना होगा।''

शमशाद दोनों को घुलकर बातें करते देख उठते हुए बोला–''तो अब तुम दोनों का तआरुफ हो गया। मैं जरा वालिद साहब को समझाकर आता हूँ।

इतना कह वह वहाँ से बाहर निकल गया।

शमशाद गया तो फातिमा बच्चे को गोदी में लिए हुए आ गई और आकर बोली, ''हुजूर! छोटी अम्मी आप दोनों को रसोईघर में नाश्ते के लिए बुला रही हैं।''

उत्तर सरवर ने दिया, ''देखो! अम्मीजान से कह दो कि मैं बहुत थकी हुई हूँ। मेरे लिए अगर कुछ भेजना है तो यहीं भेज दें।''

फातिमा मुस्कराई और बाहर चली गई। नासिरा ने कहा, ''इस घर में इसी अम्मी की चलती है। ये सबसे छोटी सास हैं।''

''ससुर साहब ने अभी मेरी भारी बेइज्जती की है और उसके लिए मैं उनको मुआफ नहीं कर सकती।''

''क्या हुआ है?''

''कहने लगे, बुर्का उठाओ। हम देखना चाहते हैं कि तुम कैसी हो? इस पर मैंने कह दिया, जिनको देखना था देखकर ले आए है। उनको अब देखने की जरूरत नहीं है।''

''तो उठा देती। आखिर वे बाप की जगह पर ही तो हैं।''

''वे बाप बनकर कहते तो कुछ बात भी थी। बाप के घर में लड़की खूबसूरत हो या बदसूरत, लड़की ही रहती है। वहाँ यह नहीं देखा जाता कि कैसी है या कैसी नहीं है।''

इतने से ही नासिरा समझ गई कि उसकी सौकन किस मिट्टी की बनी हुई है। इस पर उसने मुस्कराकर कहा, ''मैं तो जब आई थी, मैंने उनकी कदमबोसी की और अपने बच्चे को उनके कदमों पर डाल दिया और बुर्का उठाकर अपने को देखने दिया। इस सब हलीमी का एवज मुझको मिल गया है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सच! क्या मिला है?"

"जब उस बच्चे के वालिद शरीफ तुमसे शादी करने जेहलम गए, तो हजरत मेरे कमरे में आए और बोले कि उनके साहजादे दूसरी शादी करने गए हैं और वे मेरी दिलजोई करने को तैयार हैं, मुझको पसंद करते हैं और अपने बगल के कमरे में मुझको ले जाना चाहते हैं। अगर मैं नहीं मानती तो मुझको दर-दर भीख माँगनी पड़ेगी।"

"तो तुमने क्या पसन्द किया?"

"अभी तो खाविन्द शरीफ ने यह नहीं बताया कि मेरा उनके साथ ताल्लुक रहेगा या नहीं। उनके खयाल जानने के बाद ही मैं चुनूँगी कि मुझे दर-दर भीख माँगनी है या अपने ससुर के पलंग की रौनक बनना है।"

सरवर सोचने लगी कि यह औरत क्या करेगी? उसने उसके मन की अवस्था को जानने के लिए पूछ लिया, "देखो नासिरा! मैं तो तुमको अपनी बहिन ही बनाकर रखूँगी, मगर तुमने मेरी रूप-जवानी को देखा है। इसकी मौजूदगी में वे तुमको बिल्कुल भूल भी सकते हैं। मेरे यह कहने पर कि तुम पर भी रहम करें, वह नफरत कर सकते हैं। उस हालत में क्या करोगी?"

"मैं उस बात की भूखी नहीं, जिसकी ओर तुम्हारा इशारा है। मेरा बच्चा है। इसकी परवरिश निहायत जरूरी है। साथ ही इसकी माँ भले ही भिखारिन हो जाए, असमत-फरोश नहीं होगी। मैं तो तुम्हारी खिदमत में भी रहना पसन्द कर लूँगी।"

सरवर अवाक् रह गई। वह मन में सोचती थी कि क्या यह कर सकेगी? उसने कहा, "अभी तो कोई ऐसी बात भी नहीं। जब खाविन्द शरीफ के दिमाग में खराबी आने लगेगी, तब सोच लिया जाएगा। इतना मैं तुम्हें यकीन दिला सकती हूँ कि तुम्हें और तुम्हारे बच्चे को खाने-पहनने के लिए किसी किस्म की जलालत सहनी नहीं पड़ेगी।"

"शुक्रिया! तुम्हारी बातों से वह परेशानी नहीं रही, जो पिछले तीन दिन तक रही है। जब तुमने तसल्ली दी है तो फिर मैं सब्र और इस्तकबाल से अपने मुस्तकबिल का इन्तजार कर सकती हूँ।"

इस समय बड़े से थाल में पूरी-कचौड़ी, साग-भाजी तथा हलुवा आ गया। साथ ही एक सोमावार में तैयार चाय और तीन प्याले लाकर रख दिए गए। सरवर समझ गई कि यह सब सामान शमशाद और उसकी दोनों बीवियों के लिए है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 6 :

शमशाद सरवर को नासिरा के पास छोड़ अपने वालिद के पास जा पहुँचा। खलीफा साहब क्रोध में पागल हो रहे थे। जब सरवर उनके सामने बुर्का उठाने से इन्कार कर चली गई थी तो उनकी तीनों पत्नियों ने उनकी खिल्ली उड़ाई थी। सुल्ताना ने कहा था, ''हजरत! ये आजकल की लड़कियाँ वैसी नहीं रहीं, जैसी हम थीं। हमारी शादी पिछली सदी में हुई थी। इनकी इस सदी में हुई है। हम तो कहीं पढ़ी–लिखी नहीं और अब अंग्रेजी स्कूल में पढ़ी लड़की घर में आई है। क्या खूब जवाब दिया है उसने कि जिनको पसन्द करना था, पसन्द कर ही लाए हैं।''

''मैं उसको सीधा कर दूँगा।'' खलीफा साहब का कहना था।

''जहे किस्मत।'' नरगिस ने कह दिया।

सुल्ताना ने कहा, ''मैं जरा इस नई बहू के लिए नाश्ता तैयार करवा दूँ। क्या जाने कब की घर से चली हुई है।''

''भूखी मरने दो इसको।''

''हम भी साथ ही मरेंगी क्या? भूख तो हमें भी लगी है।''

''सब बनाओ, खाओ। मगर इस नई आई को तब तक खाना नहीं मिलेगा, जब तक वह बुर्का उठाकर हमारी कदमबोसी के लिए तैयार नहीं होती।''

''क्या यह कुफ्र नहीं है हजरत?''

''मैं दोजख की आग सह लूँगा मगर अपने लड़के की बीवी से जलील नहीं हो सकता।''

इस समय शमशाद लौट आया और यह सुन कि वालिद शरीफ ने सरवर के लिए खाना बन्द कर दिया है, सुल्ताना अम्मी से कहने लगा, ''अम्मी जल्दी से कुछ खाने को बनवाओ। मैं तो भूख से मर रहा हूँ। वालिद साहब को मैं समझा देता हूँ। जाओ, जल्दी करो।''

जब तीनों बेगमें चली गई तो शमशाद ने कहा, ''अब्बाजान! आपने उसको देखना था तो गलत तरीका क्यों इस्तेमाल किया?''

''क्या करता? उसके पाँव पड़ जाता?''

''नहीं, इनकी जरूरत नहीं थी। आपको चाहिए था कि आप उसको कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नजर करते और कहते, यह अपने वालिद जैसे ससुर से पर्दा उठाने के लिए है।"

"यही तो मेरा मतलब था।"

"मगर आपके अलफाज से यह जाहिर नहीं होता था। आपने तो हुक्म की तरह कह दिया था कि वह पर्दा उठाए, आप देखना चाहते हैं कि वह कैसी है। इसका मतलब यही है कि आप देखना चाहते हैं कि वह खूबसूरत है या बदसूरत? यह काम आपका नहीं। यह काम मेरा था और मैं कर आया हूँ।"

"मगर नासिरा ने तो इनकार नहीं किया था।"

"इसलिए कि वह मेरे साथ डेढ़ साल रह कर आई थी। उसके दिल में आपके लिए इज्जत पैदा की जा चुकी थी। मगर इससे तो कल ही शादी हुई है और इन बाईस घण्टों में अभी दिल खोलकर बातें भी नहीं हुई।"

"फिर भी वह है कैसी?"

"निहायत खूबसूरत है। नासिरा से कई गुना ज्यादा दिलकश है।"

इस पर बाप ने कह दिया, "मैं समझता हूँ इस नई बीवी को पाकर तुम पुरानी को तर्क कर दोगे?"

"आपने ऐसा किया था क्या?"

"मुझको तो पिछली औरतें पहली से बदसूरत मिलती गईं। सुल्ताना सबसे ज्यादा बदसूरत है।"

"तो आपने शादी क्यों कराई? आपको चाहिए था कि देख–भालकर शादी करते?"

"अब ऐसा ही करने का इरादा है। अगर तुम नासिरा को छोड़ दो तो मैं उससे शादी कर लूँगा।"

"आप नासिरा से शादी करेंगे?"

"हाँ; मगर तुम्हारे उसको छोड़ देने के बाद। ऐसी तो शरअ है।"

"मैंने उसको छोड़ने का कोई फैसला नहीं किया।"

"क्यों? क्या दुनिया की सब खूबसूरत औरतों पर तुम्हें ही कब्जा करना है?"

"पर अब्बाजान। इन दो के बाद क्या दुनिया के परदे से हुस्न उठ गया है? आप कहीं और ढूँढ़िए।"

"देखो! अगर तुम मान जाओ तो ठीक है, नहीं तो हम जबरदस्ती ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारी बीवी पर कब्जा कर लेंगे।''

इस समय नौकरानी आई और बोली, ''छोटे मालिक! नाश्ता कहाँ करेंगे?''

''अपने कमरे में, तीनों के लिए लगा दो। समझी हो न?''

जब नौकरानी चली गई तो खलीफा साहब ने कहा, ''शमशाद! अपने इस बूढ़े बाप पर तरस खाओ। इस उमर में भला कौन खूबसूरत लड़की मेरे साथ शादी करेगी?''

''अच्छा अब्बाजान! मैं नासिरा को आजादी दे दूँगा। आप उसको राजी कर लीजिए। मगर मैं जबरदस्ती नहीं करने दूँगा। आप उसको लालच दे सकते हैं।''

''तुम एक बात करो। एक महीना तक उसके बिस्तर पर पाँव न रखो। उसकी आँखों के सामने अपनी नई बीवी से प्यार करो। मुझको मौका दो कि मैं उसको फुसला सकूँ।''

''एक महीना नहीं, मैं आपको दो महीने का अर्सा, उसको फुसलाने के लिए देता हूँ। अगर आप आज से साठ दिन में भी मिन्नत–समाजत, लालच से उसमें ख्वाहिशात पैदा कर उस पर काबू न पा सके तो इकसठवें दिन मैं जो चाहूँगा, वह करूँगा।''

''एक शर्त और है। इस इकरारनामे की बात उससे नहीं करना।''

''नहीं करूँगा।''

इस तरह बाप–बेटे में एक एहदनामा हो गया। यह इकरार कर शमशाद नासिरा के कमरे में आ गया। नाश्ता आ चुका था।

नासिरा और सरवर प्रतीक्षा कर रही थीं। शमशाद आया तो तीनों खाने लगे। नासिरा ने तो अपनी सासों के साथ दोपहर के समय भोजन किया था, इसलिए थोड़ा–थोड़ा खा रही थी। सरवर और शमशाद दिल खोलकर खा रहे थे। नासिरा को सरवर ने तसल्ली दी थी और वह पहले से अधिक प्रसन्न थी। उसने अपने पति से कहा, ''इस बार तो आप बहुत बढ़िया शै घर पर लाए हैं?''

''और घटिया कब लाया हूँ? जब मैंने तुमको पसन्द किया था तो मेरे दिमाग में अपनी अम्मियाँ थीं। तुम उनसे कहीं ज्यादा खूबसूरत हो। अब सरवर का चुनाव तुमको पा जाने के बाद किया है और इन्शाअल्ला तुमसे अच्छी चीज लेकर ही यहाँ आया हूँ।''

''मैं आपको मुबारिकबाद देती हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शुक्रिया नासिरा! मगर मैं सरवर से इन्साफ करना चाहता हूँ। तुम से शादी किए एक साल और आठ महीने हो चुके हैं। कम–से–कम इतना अर्सा ही इससे शादी किए हो जाये, तब मैं इसको तुम्हारे बराबर हो गई मानूँगा।"

"और तब तक तीसरी के आने की भी तो उम्मीद की जा सकती है! उस तीसरी से भी इन्साफ करना होगा?"

"हाँ, अगर वह सरवर से भी खूबसूरत मिल गई तो वह करना ही पड़ेगा।"

"मैं खुदा से दुआ करती हूँ कि आपकी चारों बीवियाँ एक–से–एक खूबसूरत हों।"

"यह खुदा को कब से मानते लगी हो?"

"जब से आपके वालिद शरीफ के दिमाग पर इश्क का शौक सवार हुआ है। मैं सोचा करती हूँ कि यहाँ पुलिस और कोई हाकिम तो है नहीं, जो मुझ जैसी कमजोर नाजनीन को किसी की जबर्दस्ती से बचा सके। इससे अब मुझको वहीदन की बात याद आ गई है। उसने कहा था, न जाने कब कौन मुसीबत आ पड़े। वह सबकी इमदाद करता है।"

"तो तुम, वालिद साहब के तुम्हारे इश्क में मुबतला हो जाने को मुसीबत मानती हो?"

"क्या आप भूल गए हैं कि आपमें और मुझमें क्या–क्या कौलोकरार हुए थे। मैं उनको भूली नहीं।"

"मैं भूला नहीं, मगर सोचता हूँ कि जमींदारी के मैनेजर की बीवी से जमींदारी की मालकिन तो बदर्जा बेहतर होगी। एक इन्सान को तरक्की करने की आजादी होनी चाहिए। मैं कौन हूँ, जो तुम्हारी तरक्की होने में रुकावट डालूँ। तुमको वालिद साहब से मेल–मुलाकात का मौका देना मेरा फर्ज है।"

"एक शख्स मगरिब की तरफ मुँह कर खड़ा हो तो, उसका उस तरफ बढ़ना ही तरक्की समझी जाएगी और मशरिक की तरफ मुँह किए शख्स को अपना मशरिक की तरफ बढ़ना ही तरक्की समझ आएगा। मगर मैं तो अपने खयालात के मुताबिक आगे बढना ही तरक्की मानूँगी।"

"यही जानना चाहता हूँ कि तुम इस में तरक्की समझती हो या नहीं?"

"बता तो दिया है कि मैं अपना फर्ज जानकर कौल पर डटे रहने में ही अपनी तरक्की मानती हूँ।"

नासिरा तो पेट भर चुकी थी। वे दोनों अभी खा रहे थे। इस समय नासिरा ने अपने लिए एक प्याले में चाय डाल ली और पीने लगी। इस सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समय सरवर चुपचाप दोनों की बातें सुनती रही थी। नासिरा ने चाय आरम्भ की तो सरवर ने पूछ लिया, "क्या आप मुहब्बत नाम की किसी शै से वाकिफ हैं?"

"हाँ, जानता हूँ। कल से खूब जान गया हूँ।"

सरवर हँस पड़ी। हँसकर बोली, "कल रात तो जो कुछ हुआ, वह तो नफसानी ख्वाहिशात का इजहार ही था। मुहब्बत की तो अभी शुरुआत ही है। आहिस्ता–आहिस्ता आपके मेरे साथ सुलूक से और मेरे आपके साथ सुलूक से मुहब्बत बनेगी। ऐसा मालूम होता है कि आप नासिरा बहिन से बहुत अच्छा सुलूक करते रहे हैं, जो यह आपकी मुहब्बत में मुबतला है।"

शमशाद हँस पड़ा। हँसकर उसने कहा, "मैं जरा इसका इम्तिहान ले रहा हूँ। जबानी पर्चे में तो यह कामयाब हो गई है। असली पर्चा यह कैसा कर पाएँगी, देखना चाहूँगा। मैं अभी डेढ़–दो साल तक इसकी मुहब्बत का स्वाद ले नहीं सकूँगा। मैं अपनी नई बीवी से, उसके हुस्न और जवानी से इन्साफ करना चाहता हूँ।

"मैंने फैसला किया है कि मैं और नासिरा एक ही कमरे में रहेंगी। यह कमरा तीनों के लिए काफी बड़ा है।"

"यह नासिरा के फैसला करने की बात है। मुझको इसमें एतराज नहीं हो सकता।"

सरवर वहीं उस कमरे में रहने लगी। पहले ही रात नासिरा ने पूछा, "अगर मेरे यहाँ रहने से किसी किस्म की दिक्कत हो तो मैं अपने लिए यह बगल का कमरा खाली करवा सकती हूँ।"

"मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे साथ रहो।" सरवर का अनुरोध था।

सरवर का ख्याल था कि नासिरा इतनी बदसूरत नहीं कि उसकी कभी भी जरूरत महसूस न हो। मगर वह नहीं जानती थी कि बाप–बेटे में किसी किस्म का एहदनामा हुआ है। न ही वह नासिरा के मुताल्लिक कुछ जानती थी। नतीजा यह हुआ कि दिन गुजरने लगे, रात के बाद रात आने लगी और पलंग के दो गज के ही फासले पर शमशाद और सरवर अपनी जवानी का खुमार उतारते थे और, नासिरा उनकी तरफ पीठ किए लेटी रहती।

एक दिन नासिरा ने कहा, "आपके दोस्त जवाहर बाबू का एक खत आया था कि आप पास हो गए हैं। उन्होंने मुबारिकबाद भेजी थी। जवाब दे दिया था।"

"कब की बात है यह?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब आप जेहलम गये हुए थे।"

"क्या लिखा था तुमने?"

"उसकी मुबारिकबाद का शुक्रिया अदा किया था और खैर–खैरियत लिखी थी।"

"इस शादी के मुताल्लिक भी लिखा था?"

"उस वक्त मुझको इसका इल्म नहीं था।"

"तुम लाहौर जाना चाहोगी?"

"वहाँ क्या है?"

"वहाँ जवाहर बाबू जो हैं?"

"मगर यहाँ शमशाद बाबू हैं। मेरा उनसे लगाव ज्यादा है।"

शमशाद चुप रहा। मगर इसका नतीजा यह हुआ कि जवाहर का कार्ड आया, जिसमें इम्तिहान की बात लिखी थी, तो किसी ने जवाब नहीं दिया। शमशाद फार्म से लौटा तो सरवर ने वह कार्ड लाकर दे दिया। शमशाद ने पढ़ा और उसे नासिरा को देते हुए कहा, "जवाहर बाबू के पास होने का कार्ड आया है।"

"देख रही हूँ।"

"तो जवाब लिख दो।"

"मुझको तो आया नहीं।"

"तो पहली चिट्ठी तुमको आई थी क्या?"

"उसमें मुझको भी याद फरमाया था उन्होंने। चिट्ठी आपने भी देखी थी। पर मैं जवाब न देती, अगर मुझको उनके मुताल्लिक आपके जजबात का पता चल जाता। अब मैं समझ गई हूँ कि आपकी डाक का जवाब देना मेरा काम नहीं है।"

शमशाद ने भी उसको मुबारिकबाद नहीं भेजी।

नासिरा के ताल्लुकात दिन–ब–दिन अपने श्वसुर से बिगड़ रहे थे। वह इसरार करने लगा था कि नासिरा को अलहदा कमरा मिलना चाहिये। सरवर के आने से अगले दिन ही एक कमरा, जो शमशाद के कमरे से कुछ फासले पर था, खुलवा, साफ करवा और वहाँ सामान लगवा दिया गया था। नासिरा ने वह कमरा देखा तो वह समझ गई कि उसको अलग कमरा मिला है। इस पर भी वह रात को सोने के समय सरवर के कमरे में चली आती। सरवर भी इसको पसन्द करती थी। अलहदा कमरे में वह नासिरा की अस्मत और जिन्दगी खतरे में समझती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक बार खलीफा अजीमुल्लाखाँ ने सरवर को कहा भी, "तुम रात को नासिरा को अपने पास क्यों सुलाती हो?"

"आपको इससे क्या तकलीफ होती है?"

"मैं तो तुम्हारी तकलीफ का खयाल कर रहा हूँ।"

"आपको कुछ फिकर करने की जरूरत नहीं है।"

सरवर ने अभी तक अपने श्वसुर से पर्दा हटाया नहीं था। श्वसुर उसको फिर कभी पर्दा उठाने के लिए कह भी नहीं सका था। सरवर ने भी पर्दा उठाना मुनासिब नहीं समझा था। दिन के समय श्वसुर साहब हमेशा इस कोशिश में रहते थे कि वह एकान्त में नासिरा से भेंट कर सकें। कई दिन तक वह यत्न करते रहे। आखिर एक दिन वक्त पा गये। सरवर और शमशाद अभी सो रहे थे। नासिरा स्नानागार से स्नान कर कपड़े पहन, अपने कमरे में खुदा की इबादत के लिए पहुँची तो खलीफा साहब बोले, "नासिरा! तुमसे एक–दो बातें करने के लिए आया हूँ।"

"तो आइये, मैं आपके बरखुरदार साहबजादे के सामने आपकी बातें सुन लेती हूँ। इससे किसी किस्म की गलतफहमी होने की गुजाइश नहीं रहेगी।"

"नहीं, मैं अलहदा में बात करना चाहता हूँ।"

"तो आप करिये। मैं सुन रही हूँ।" नासिरा अभी भी कमरे के द्वार पर ही खड़ी थी।

"इधर मेरे पास आ जाओ। वहाँ आने–जाने वाले सुन लेंगे।"

"यही तो मैं चाहती हूँ कि आने–जाने वाले आपके सुहावने पुरलुत्फ सुखानों को सुन मुस्तफीद हों।"

"देखो नासिरा! कुछ बातें होती है जो एक मर्द और औरत में छुपकर ही की जा सकती है।"

"खुदा ने आपको तीन–तीन औरतें बख्शी हैं। आप जी भरकर छुपकर करने वाली बातें उनसे कर सकते है। मैं तो आपकी औरत हूँ नहीं।"

"मैं बनाना चाहता हूँ।"

"यह तो गुनाहे–अजीम हो जायेगा।"

"शमशाद तुमको तलाक दे देगा।"

"तो दे देने दीजिये। इस्लाम में औरत, मर्द को तलाक नहीं दे सकती।"

"मुझको तो पता चला है कि उसने तुमको तलाक दे रखा है।"

"यह जो कुछ है, वह उनकी नई बीवी के साथ इन्साफ करने के लिए है। वह अभी मेरे बराबर नहीं पहुँची।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कब पहुँचेगी?"

"जब उसके भी एक बच्चा हो जाएगा।"

"कब होगा?"

"खुदा जाने? मैं कैसे बता सकती हूँ।"

"मैं तुम्हारी फिराक में दिन रात बेचैन रहता हूँ।"

"फजूल है। तीन–तीन बीवियों के होते रात बेचैनी में काटनी अक्लमन्दी नहीं।"

"तो मुझको तुम बेवकूफ समझती हो?" इतना कह खलीफा साहब उसको पकड़ने के लिए लपके। परन्तु नासिरा सावधान थी। खलीफा साहब के उठते ही वह कमरे से बाहर हो, अपने पति के कमरे की ओर भागी। अजीमुल्लाखाँ उसके पीछे–पीछे थे। सुल्ताना ने इस दृश्य को देखा तो मियाँ जी की बाँह पकड़ कह दिया, "वहाँ मत जाइए।"

"क्यों?"

"आपके साहबजादे और उनकी नई बीवी हमबिस्तर हो रहे हैं। दोनों आदम और हव्वा की सी हालत में हैं। कहीं वहाँ गए और सरवर ने देख लिया तो जूतों से मरम्मत हो जायेगी।"

खलीफा को इस बात का विश्वास आ गया। सरवर उसको डाँटती तो अभी भी रहती थी। उसकी तेजमिजाजी से वह भली–भाँति परिचित था।

नासिरा भागती हुई कमरे में गई, तो उसने उस भय से कि वह उनके पीछे–पीछे वहाँ भी चला आ रहा है, खट से दरवाजा बन्द कर कुण्डा लगा दिया। दरवाजे के बन्द होने की आवाज से सरवर और शमशाद की नींद खुल गई। सरवर उठकर पूछने लगी, "क्या बात है नासिरा?"

नासिरा भाग कर आने के कारण हाँफ–सी रही थी। उसने बता दिया, "इनके अब्बाजान कमरे में घुसे आ रहे थे।"

सरवर ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछा, "क्यों?"

"सुबह–सुबह उन पर बहशत सवार हो रही थी। मैं गुसलखाने से आ रही थी कि मुझको पकड़ने के लिए लपके। मैं भागी तो वह मेरा पीछा करते हुए इधर आने लगे। जिस्म के भारी होने की वजह से पीछे रह गए। मैंने कमरे में दाखिल होते ही दरवाजा बन्द कर लोना मुनासिब समझा।"

सरवर ने उठ कपड़े पहने और अपने खाविन्द से बोली, "बस हद हो गई है। मैं इस घर में नहीं रहूँगी। अगर आप में भी कुछ हया है तो आप को भी यहाँ से चलना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शमशाद भी कपड़े पहनने लगा था। उसने कहा, "वहशत उन पर सवार हो और सजा मुझको मिले। यह कहाँ का इन्साफ है? देखा सरवर! कोई और तरीका सोचो। इस घर में नौकर–चाकर हैं और फिर मेरा काम भी यहाँ है। यहाँ से जाने का नतीजा यह होगा कि यह जमींदारी कुत्तों के मुँह में चली जाएगी और हम या तो भूखों मरने लगेंगे या मजबूर हो दूसरों की गुलामी करने लगेंगे।"

"एक दूसरा तरीका और भी है।"

"क्या है बताओ।"

"इस खूँखार दरिन्दे के गले में पट्टा डाल इसको, सांकल से कीट के सेहन में बाँध कर रखा जाए।"

इस पर शमशाद हँसते हुए बोला, "मेरी जान! वह मेरे वालिद हैं। यह मुझसे नहीं हो सकेगा। साथ ही यहाँ नौकर–चाकर इतने हैं कि मुमकिन भी नहीं। कोई और तरकीब सोचो।"

"एक अलहदा मकान बनवा लीजिए। मैं वहाँ दो बुलडौग पाल लूँगी। जब आपके वालिद तशरीफ लायेंगे तो वे उनको फाड़ डालेंगे।"

"यह तजवीज पहले से अच्छी है। मगर इसको अमल में लाने में छः–सात महीने निकल जाने तो आसान हैं।"

"तब तक के लिए हम दोनों अपने पास एक–एक जूता फालतू रख लेंगी और हजरत के इधर आने पर उनकी खातिर कर दिया करेंगी।"

"यह मंजूर है। मगर तुम जैसी नाजुक नाजनीन ऐसा कर नहीं सकेगी।"

"तो एक बात और हो सकती है। मेरा टैगी जेहलम में है। मैं आज ही नौकर को भेजकर उसको यहाँ मँगवा लूँगी और उसको इस हिस्से में बाँध रक्खूँगी। वह हम दोनों की हिफाजत कर सकेगा।"

"हाँ! यह हो सकता है। मैं भी आज ही नये मकान के लिए तजवीज करता हूँ।"

: 7 :

सुल्ताना का पिता रावलपिंडी का एक रईस था। रावलपिंडी में बहुत सी जायदाद थी और वहाँ से मरी तथा श्रीनगर तक उसके ताँगे चलते थे। रियासत कश्मीर की डाक और वहाँ से फल पंजाब में लाने का काम भी मियाँ इलमुद्दीन करता था। इलमुद्दीन की अपनी बड़ी कोठी थी और उसमें वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी बीवी अर्थात् सुल्ताना की माँ के साथ रहता था। उसकी एक ही लड़की थी, सुल्ताना। इस कारण वह अजीमुल्ला खाँ के बच्चों को अपने पास रखता था। अजीमुल्ला खाँ के तीन बच्चे अमजद, सादिक और सोना तो पढ़ते थे। अमजद रावलपिंडी में दसवीं श्रेणी में पढ़ता था, सादिक स्कूल की नवीं श्रेणी और सोना लड़कियों के स्कूल में पढ़ती थी। वह भी नवीं श्रेणी में थी। दोनों लड़के अनवरी बेगम के थे। सोना सुल्ताना की लड़की थी। सुल्ताना के दो लड़के और थे। नरगिस के चार बच्चे थे, दो लड़के और दो लड़कियाँ। इस प्रकार कुल नौ बच्चे, सब के सब इलमुद्दीन की कोठी में रहते थे। इलमुद्दीन की बीवी, रोशनारा बेगम को इन बच्चों की देख–रेख में बहुत खुशी मिलती थी। वह इन सबको पालती हुई, अपनी इस जिन्दगी को व्यतीत करने में सुख अनुभव करती थी।

चार छोटे बच्चे तो अभी स्कूल जाने के लायक नहीं थे अन्य सब स्कूल में जाते थे। भाटिया में तो कोई स्कूल भी नहीं था और रावलपिंडी में एक कॉलेज भी था। इस कारण सभी बच्चों को रावलपिंडी में रखना सुविधाजनक था। इलमुद्दीन कभी बच्चों का हल्ला–गुल्ला सुन चिढ़ जाया करता था मगर रोशनारा उसको डाँट देती, "अपनी तो हिम्मत नहीं है बच्चे पैदा करने की और जब कि ये मुफ्त में मिल रहे हैं, तो इसमें नाराज होने में क्या अक्लमन्दी है?"

इलमुद्दीन इस बेदलील लांछन को सुन हँस देता था। इस पर उसकी पत्नी कह देती, "जब ये बच्चे भाटिया चले जाते हैं तो मेरे करने को कुछ भी तो नहीं रह जाता। इससे मैं उदास हो जाती हूँ।"

"यह तो ठीक है। मैं इनको रखने में एतराज नहीं करता। मैं तो इनके शोर मचाने की मनाई करता हूँ।"

"आप जरा इनसे दूर रहा करें। भला बच्चे शोर नहीं मचायेंगे तो क्या बूढ़े मचायेंगें! देखिये जी! जिनको शोर पसन्द नहीं, वे कोठी के दूसरे हिस्से में ही रहें तो ठीक नहीं क्या?"

परन्तु इधर इसका परिणाम यह हो रहा था कि मियाँ अजीमुल्लाखाँ, घर में बच्चों के न होने के कारण दिन–प्रतिदिन उच्छृंखल होता जाता था। तीन पत्नियों के होते हुए भी वह नह नौकरानियों तक से छेड़खानी करने लगा था।

वासना की पूर्ति से कभी तृप्ति नहीं होती। वासना–पूर्ति तो अग्नि में घी का कार्य करती है। इससे अग्नि की भाँति, यह और अधिक प्रज्वलित होती है। यही अजीमुल्लाखाँ के साथ हो रहा था। उसकी प्रवृत्ति में प्रथम बाधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नासिरा ने खड़ी की। इसमें सरवर भी नासिरा की सहायक हो गई। शमशाद अपने पिता को वचन देने के कारण इस सब नाटक का निष्पक्ष द्रष्टा हो गया।

जब सरवर ने अपनी और नासिरा की रक्षा के लिए अपने शिकारी कुत्ते टैगी को अपने पिता के घर से बुलाने का विचार प्रकट किया तो शमशाद ने इसमें आपत्ति नहीं की। वह विचार करता था कि यह तो घर है। यों तो बलात्कार गैरों के साथ भी क्षम्य नहीं। यदि गैर अपनी रक्षा कर सकते हैं तो नासिरा और सरवर भी अपनी रक्षा कर सकती हैं। नासिरा ने इस योजना पर दुःख प्रकट किया, परन्तु वह सरवर को कुत्ता मँगवाने के लिए मना नहीं कर सकी। सरवर ने प्रथम अवसर में ही अपने पिता को चिट्ठी लिख दी थी कि किसी नौकर के हाथ टैगी कुत्ते को यहाँ भेज दें। चिट्ठी लेकर फातिमा गई। फातिमा को बताया नहीं गया कि वह क्या लेने जा रही है। उसको केवल यही बताया गया कि वह सरवर के घर से कुछ जरूरी सामान लेने के लिए जा रही है।

अगले दिन ही वह एक कुत्ता, एक नौकर के साथ लेकर आ गई। कुत्ता कोट के उस विभाग में बाँध दिया गया, जिसमें शमशाद अपनी पत्नियों के साथ रहता था। 'टैगी' आया तो सरवर उसको समझाने लगी कि कौन मित्र है और कौन शत्रु।

इधर शमशाद के पिता ने देखा कि एक खूँखार कुत्ता आ गया है तो वह डर गया। उसने शमशाद से पूछ लिया, ''यह क्या गंदगी घर में इकट्ठी कर रहे हो?''

शमशाद इस समय सीधा खेतों से आ रहा था। उसको विदित नहीं था कि घर में कुत्ता आ गया है। इस कारण उसने पूछ लिया, ''क्या गंदगी आई है?''

''आओ दिखाऊँ।'' वह उसको लेकर उस ओर चला, जहाँ शमशाद का कमरा था। कमरे के बाहर एक भयानक रूपरेखा वाला कुत्ता बैठा था। उस समय वह सांकल से बँधा था। इस पर भी वह उन दोनों को देख उठकर खड़ा हो गया और गुर्राने लगा। उसका गुर्राना सुन सरवर कमरे से निकल आई। उसने अपने घर वाले से कह दिया, ''इधर मत आइये। यह आपको पहचानता नहीं है। दो दिन में यह सब घर वालों को पहचान लेगा। आज आप पिछवाड़े की खिड़की से आ जाइए।''

अजीमुल्ला खाँ ने हँसते हुए कहा, ''इस कुत्ते के आने से एक बात हो गई है। सरवर के दीदार हो गए हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरवर कुत्ते का गुर्राना सुन कर बिना बुर्के के बाहर आ गई थी। अब ध्यान कर वह अपने कमरे में भाग गई। पिता ने पूछा, "यह क्यों मँगवा लिया है?"

"अब्बाजान! यह मैंने नहीं मँगवाया। यह सरवर ने अपनी मर्जी से मँगवाया है।"

"पर मैं पूछता हूँ कि इसकी क्या जरूरत थी?"

"शायद घर में कोई बच्चा नहीं। इस कारण दिल बहलाने के लिए इस कुत्ते को मँगवा लिया हो।"

"नासिरा का लड़का जो है?"

"वह तो अभी बहुत छोटा है।"

पिता हँसता हुआ बोला, "चलो, एक बात तो हुई है कि इसका पर्दा छूटा है। यह बहुत खूबसूरत है। नासिरा से कई गुना ज्यादा।"

"कमोवेश की बात मैं जानता नहीं। हाँ, दोनों के ढाँचे में फरक है।"

शमशाद जब पिछले रास्ते से कमरे में पहुँचा तो नासिरा, जो अभी से कुत्ते से हिल–मिल गई थी, कुत्ते को खोल उसकी जंजीर हाथ में पकड़े हुए आ गई। सरवर ने कुत्ते को प्यार किया और जब तीनों के लिए नाश्ता आया तो एक प्लेट कुत्ते के आगे रख, उसको भी मेज के नीचे बैठाकर खाने को दे दिया गया।

सरवर ने कह दिया, "अपने वालिद शरीफ से कह दीजिए कि वे इधर न आयें। अगर कुत्ते ने काट खाया तो मैं जिम्मेवार नहीं हूँ। और हाँ, आप दो–तीन दिन तक कुत्ते को प्यार दें, तभी यह आपको पहिचानने लगेगा?"

"और अब्बाजान को नहीं पहिचानने लगेगा?"

"पहिचानने तो लगेगा, पर वैसे ही जैसे किसी नावाजिब आदमी को पहिचाना जाता है।"

सरसरी तौर पर शमशाद ने अपने पिता को बता दिया। मगर अजीमुल्ला खाँ ने रोज कुत्ते को बावर्चीखाने का बचा–खुचा गोश्त डालना आरम्भ कर दिया। दूसरी ओर सरवर वालिद साहब के आने पर कुत्ते को उन्हें दिखा भड़का दिया करती थी। मगर अजीमुल्ला खाँ ने समझ लिया था कि अब कुत्ता उसे कुछ नहीं कहेगा। इस प्रकार कुत्ते को मांस की रिश्वत से जीता गया समझ, अजीमुल्ला खाँ ने एक रात कोट के इस तरफ आने के जुर्रत की। बावजूद गर्मी के, शमशाद और सरवर कमरे में सो रहे थे। शमशाद ने होटल के ढंग का एक पंखा लगवा दिया था, जो फातिमा कमरे से बाहर बैठी हिलाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती थी। नासिरा भी कमरे में थी। एकाएक वह उठी और कमरे से बाहर निकल गई।

सरवर को इस घर में आये डेढ़ महीने से अधिक हो गया था। इस अर्से में एक दिन भी शमशाद ने नासिरा की ओर नहीं देखा था। नासिरा अपनी आँखों के सामने उन दोनों को प्यार करते और कामातुर हो वासना तृप्ति करते देख मन में बेचैनी अनुभव करती थी, परन्तु परिस्थितिवश पराधीन वह अपनी अवस्था को अधिक बिगाड़ना नहीं चाहती थी। इससे चुपचाप सहन कर रही थी। आज उसका मन नित्य से कुछ अधिक विक्षुब्ध था। वह इसे और अधिक सहन नहीं कर सकी। इस कारण वह कमरे से निकल चटाई ले, पक्के चबूतरे पर उसे बिछा, जा लेटी।

जब वह चली गई तो सरवर ने कहा, ''आपको उस बेचारी पर रहम नहीं आता क्या?''

शमशाद ने इसका उत्तर नहीं दिया।

सरवर ने आगे कह दिया, ''जो कुछ हम उसके सामने करते रहते हैं, इससे तो पत्थर भी मोम हो जाता है। वह तो फिर इन्सान का ही दिल रखती है।''

''बेगम! मैं मजबूर हूँ।''

''कौन मजबूर करता है आपको?''

''तुम्हारा हुस्न।''

''तो जाइए, मैं आपको आज से छोड़ती हूँ।''

''छोड़ने से कुछ नहीं होगा। जब तक तुम्हारी शादी हुए एक साल दस महीने नहीं हो जाते या तुम्हारे हमल नहीं ठहर जाता, तब तक उसको यह सहना ही होगा।''

''इससे तो वह मजबूर हो, आपके वालिद शरीफ के आगोश में जा पड़ेगी।''

''तो इसमें मैं क्या कर सकता हूँ? मैं उसको कई बार कह चुका हूँ कि उसे अलहदा कमरे में सोना चाहिए। वह जाती ही नहीं।''

''वह आपके शरीफ वालिद से डरती है।''

''तुम तो कहती हो कुत्ता....''

इसके आगे वह कह नहीं सका। बाहर प्रांगण में खलीफा साहब की चीखो–पुकार सुनाई देने लगी थी। बहुत जल्दी–जल्दी कपड़े पहन वे बाहर आए तो नासिरा टैगी को पकड़कर भौंकने से रोक रही थी और खलीफा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहब उस चटाई पर लेटे कराह रहे थे, जिस पर नासिरा लेटी थी। शमशाद और सरवर लालटेन लिए वहाँ पहुँचे तो पिता को लहूलुहान देख बहुत परेशान हुए। सरवर ने कुत्ते को जा पकड़ा और शमशाद ने अपने वालिद को उठाकर पूछा, "अब्बाजान! यहाँ किसलिए आए थे?"

इस समय तक तीनों बेगमें और दूसरी नौकरानियाँ भी आ चुकी थीं। बेगमों ने नौकरानियों की मदद से खलीफा साहब को उठवाया और अपने शयनागार में ले गईं। शमशाद उनके साथ ही था।

नासिरा कुत्ते को सरवर के हवाले कर खुद अपने कमरे में चली गई थी। सरवर ने कुत्ते को प्यार से शान्त किया और उसको बाँधकर वह भी कमरे में चली आई। वह वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि नासिरा सिर–मुँह चादर में दिए लेटी है। उसने कहा–"मैं समझ गई हूँ और इस वारदात से बहुत खुश हूँ।"

परन्तु नासिरा को उसी प्रकार मुँह लपेटे सोते देख, सरवर मन में विचार करने लगी कि अब भविष्य में वह अपने पति पर से अपना एकाधिकार हटा लेगी। यह सोच नासिरा के पलंग पर बैठ उसने आवाज दी, "नासिरा बहिन! इस हादसे में मेरा भी तो कुछ हाथ है ही।"

नासिरा ने मुख पर से कपड़ा नहीं हटाया तो सरवर ने चादर खींच दी। उसने देखा कि वह रो रही है। यह देख उसने पूछ लिया, "तुम तो रो रही हो?"

इस पर तो वह और भी फूट–फूटकर रोने लगी। सरवर ने उसके समीप लेट उसके गले में बाँह डाल उसका मुख अपनी ओर कर कहा, "तो मुझसे बहुत नाराज हो?"

नासिरा बोल नहीं सकी। इस पर भी उसने सिर हिला कर नाराज न होने का संकेत कर दिया। सरवर ने उसको चुप कराने का यत्न करना आरम्भ कर दिया। उसे छाती से लगा लिया और उसका मुख चूम बोली, "मैं मुआफी माँगती हूँ और वायदा करती हूँ कि अब हमेशा की तरह बात नहीं होगी।"

बहुत कठिनाई से नासिरा चुप हुई। उसने शान्त हो कहा, "मैं आप से, मेरा मतलब है तुमसे या उनसे, किसी तरह भी नाराज नहीं हूँ। मैं तो उनके वालिद शरीफ की बुरी हालत पर रो रही थी। यह मेरी वजह से ही हुआ है। मैं अब इस किस्म की जिन्दगी से उचाट हो गई हूँ।"

"यह सब क्या हुआ था? किस तरह यह श्वसुर शरीफ वहाँ पहुँच गए थे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आज मैं यह समझी थी कि मेरे यहाँ रहने से आपके ऐश में कुछ रुकावट पड़ रही है। आप मेरी मौजूदगी को महसूस करते थे। इसलिए मैंने समझा कि जरा बाहर खुली हवा में घूम आऊँ। जब आप सो जाएँगे तो मैं लौट आऊँगी। मैं चबूतरे पर चटाई बिछा लेट गई। इस वक्त ऊपर की मँजिल पर सुल्ताना अम्मी के कमरे की खिड़की खुली और कोई खिड़की में आ खड़ा हुआ। आँगन में चाँदनी–सी छिटक रही थी। आज चाँद की चौदहवीं है। सुल्ताना अम्मी के कमरे में अंधेरा था। मैं तो देख नहीं सकी कि खिड़की में कौन खड़ा है मगर उसमें खड़े होने वाले ने मुझको देख लिया मालूम होता था। कुछ देर बाद पिछवाड़े की खिड़की में से कोई आँगन में आया और मैं अभी सोच ही रही थी कि कौन हो सकता है कि श्वसुर शरीफ मुझ पर आ लपके। मैंने 'छोड़ो! छोड़ो!!' का हल्ला किया तो टैगी लपक कर उनकी पीठ पर सवार हो गया। उन्होंने झट मुझको छोड़ दिया, मगर टैगी ने उनको नहीं छोड़ा। मैं जब तक सांकल ला उसके गले में डाल, उसको खींच पीछे करने में कामयाब हुई, श्वसुर मियाँ लहूलुहान हो चुके थे।"

सरवर हँस पड़ी। उसने बताया, "वालिद साहब के एक मुअक्किल थे। एक दिन उनका पड़ोसी उनकी छत पर कूद उनकी लड़की को पकड़ बैठा। अचानक लड़की का भाई वहाँ आ पहुँचा। उसने लड़की को छुड़ाया और उस आदमी को वहीं मार डाला। वालिद साहब ने मुकदमा किया और उस लडकी के भाई को साफ बचा लिया। यही बात टैगी ने की है। अगर ये मियाँ हलाक हो जाते तो भी मैं टैगी को बरी करवा लेती।"

इस वक्त शमशाद आ गया। उसने बताया, "अब्बाजान बहुत बुरी तरह जख्मी हो गए हैं। एक कान तो आधा कट गया है। गाँव से जर्राह बुलाया गया है और वह उनकी मरहम पट्टी कर रहा है।

"सुल्ताना अम्मी उनको रावलपिंडी ले जाने की बात कर रही हैं। उनका यह खयाल है कि वालिद साहब का दिमाग खराब हो रहा है। इसमें नासिरा का भारी हाथ है। नासिरा से दूर रहकर ही वे ठीक रह सकेंगे।"

"कैसे?" सरवर ने पूछा।

"सुल्ताना अम्मी कहती हैं कि जब से उन्होंने नासिरा को देखा है वे इसको अपनी बीवी बनाने की उम्मीद लगाए बैठे हैं।"

"किस वजह से उम्मीद लगाये बैठे हैं?" नासिरा ने पूछा।

"वह कहती हैं कि नासिरा ने पहले दिन ही पर्दा उठा लिया था। इसके अलावा वह अपने श्वसुर के सामने बैठ खाना खाती थी। उनके साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँस–हँसकर बातें करती थी। घंटों ही उनके पास अकेली बैठ किस्से–कहानियाँ सुनाया करती थी। इससे खलीफा साहब कहा करते थे कि उसकी आँख से जाहिर होता है कि वह उन पर लट्टू है।''

''वाह,'' नासिरा के मुख से निकल गया, ''मैं तो उनको अपने वालिद के बराबर इज्जत और मोतबिर समझती थी। मैं उनकी लड़कियों के बराबर हूँ। यह तो जिस दिन आप जेहलम शादी के लिए गए थे, उस दिन ही मुझको उनके इरादों का पता चला था। तब से मैंने न तो उसके पास बैठना ही पसन्द किया है, न ही उनसे बातें करना। इसको भी अब डेढ़ महीने से ज्यादा हो चुका है और अब तक इतने अर्से में उनको समझ जाना चाहिए था।''

इस पर शमशाद ने कह दिया, ''नासिरा! मैं तुमको एक राज की बात बताता हूँ। जिस दिन मैं सरवर को लेकर आया था, उसी दिन वालिद साहब ने अपने दिल की हालत बयान की थी। मैंने उनसे कहा था कि तुम ऐसी नहीं हो जो मुझसे बेवफाई करो। इस पर वे कहने लगे कि मैं तुमको तलाक दे दूँ, तब वे तुमसे निकाह पढ़ा लेंगे। मेरा कहना था कि तलाक देने पर भी तुम मानोगी नहीं। फिर वे मेरी मिन्नत करने लगे और तुमको फुसलाने का मौका माँगने लगे। मैंने वायदा कर दिया कि दो महीने तक मैं तुमको छुऊँगा भी नहीं। तुम्हारे सामने ही सरवर से प्यार करूँगा और इससे जो तुम्हारे दिल की हालत पैदा होगी, उससे वे फायदा उठा सकते हैं। साथ ही मेरी यह शर्त थी कि वे तुम पर जबर्दस्ती नहीं करेंगे। अगर करेंगे तो मेरा वायदा खत्म हो जाएगा। सो आज की जो बात उन्होंने की है, उससे उस वायदे की अदूली हो गई है। अब मैं अपना वायदा वापिस ले आया हूँ।''

''क्या बताया है उन्होंने?'' सरवर ने पूछ लिया।

''वह सुल्ताना अम्मी के कमरे में थे। गरमी से तंग आकर उन्होंने आँगन में लगने वाली खिड़की खोली तो नासिरा को चटाई बिछा चबूतरे पर लेटते देख वह यह समझे कि अगर इस चाँदनी रात में वह इससे वस्ल के लिए कहेंगे तो यह मान जाएगी। उनको मालूम था कि यह डेढ़ महीने से खाविन्द के बगैर रह रही है। इससे वे सीधे रास्ते नहीं आये। टैगी के डर से पिछली तरफ से आगन में पहुँच गए। यह चाँदनी की ठंडक में मस्त लेटी थी। इसे देखकर वह अपने को काबू में नहीं रख सके। जो कुछ वह मिन्नत से माँगने वाले थे, वह जबरदस्ती लेने के लिए लपके। इस पर इसने शोर मचा दिया। टैगी उन पर लपक पड़ा। उसने तीन–चार जगह से मांस नोच खाया है। एक कान आधा गायब हो गया है। हाथों की उँगलियों में हड्डियाँ दिखाई देने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी हैं। उनकी पीठ पर कुत्ते के पंजे से बहुत से खप्पे पड़ गए हैं।''

''बच तो जायेंगे?''

''हाँ, जर्राह कहता है कि तीन जख्म भरने में तो महीना लग जायेगा। बाकी दो–तीन दिन में ठीक हो जायेंगे।''

''शुक्र है। मैं भी यही समझती हूँ कि या तो हम जमींदारी छोड़ शहर को चले जायें या यह मियाँ पैन्शन ले लें और किसी दूसरी जगह जाकर रहें। हम अब इकट्ठे तो रह नहीं सकते।''

''मैंने यह तजवीज रखी थी। तीनों अम्मियाँ भी वहीं थीं। वालिद साहब तो बोले नहीं। लेकिन वे कहती थीं कि मेरे चले जाने से तो जमींदारी खत्म हो जाएगी और सब बाल–बच्चे भिखारी बन जाएँगे। उन सबकी यही राय है जो कि सुल्ताना अम्मी की है।''

''और वे भी साथ जाएँगी?''

''जाने के लिए सिरफ सुल्ताना अम्मी ही तैयार हैं। दूसरी अम्मियाँ तो वालिद साहब के बिना भी यहाँ रहेंगी।''

: 8 :

रावलपिण्डी जाने की जरूरत नहीं पड़ी। खलीफा अजीमुल्लाखाँ कुत्ते के काटे जाने के बाद ठीक नहीं हो सके। काटे जाने की घटना के दूसरे दिन उनका शरीर सूज गया। जर्राह ने कह दिया कि अब उसकी पहुँच की बात नहीं रही। खलीफा साहब को एक मजबूत खाट पर डालकर, गुजरात लाया गया। सरकारी हस्पताल में उन्हें दिखाया गया। तब कुत्ते की परीक्षा की गई। कुत्ता ठीक था। उसमें पागल होने के लक्षण नहीं थे, न ही खलीफा साहब में ही किसी पागल कुत्ते के काटे जाने पर जो लक्षण दिखाई देने चाहिए थे, दिखाई पड़े। इस कारण सारा दोष जर्राह पर लगा दिया गया। यह कहा गया कि उसने कोई ऐसी दवा लगा दी है, जिससे पूर्ण शरीर विषाक्त हो गया है।

वहाँ जख्मों को धोया गया। दोबारा मरहम–पट्टी की गई। खाने के लिए दवाई दी गई, मगर कुछ भी असर नहीं हुआ। तीन दिन हस्पताल में तड़फने के बाद खलीफा साहब का देहान्त हो गया। देहान्त के पहले खलीफा साहब के सब बच्चे, बहुएँ और गाँव तथा जमींदारी के मुख्य–मुख्य कर्मचारी हस्पताल में पहुँच गए थे। सबमें यह विख्यात कर दिया गया कि कुत्ते के काटने से यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ है। इस पर भी डाक्टर ने रिपोर्ट में लिख दिया; 'डैलिबरेट पौयजनिंग वाई ए विलेज सर्जन।'

इस रिपोर्ट का परिणाम यह हुआ कि शव–परीक्षा की गई और फिर मुआमला पुलिस के हाथ में चला गया। जर्राह को पुलिस के थाने में आने का आदेश जारी हुआ तो वह भाग खड़ा हुआ। अभियुक्त को फरार घोषित कर दिया गया।

इन बातों से फुरसत पा जमींदारी के मुताल्लिक विचार होने लगा। यह जमींदारी कोई जागीर नहीं थी। इस कारण कोर्ट ने इसके बँटवारे के लिए सालस नियुक्त कर दिए।

वकील अब्दुल मजीदखाँ ने बच्चों की माताओं को और रावलपिंडी के इलमुद्दीन को बहुत समझाया कि जमींदारी टूक–टूक हो जाने से किसी का भी कल्याण नहीं हो सकता, परन्तु कोई नहीं माना। पूर्ण परिवार में एक सुल्ताना ही ऐसी औरत थी जो इस तजवीज को ठीक मानती थी और चाहती थी कि इसकी कोई और योजना तैयार की जाए। परन्तु वह न तो स्वयं ही कोई इस प्रकार की योजना बना सकी और न ही किसी अन्य ने उसकी सम्मति को स्वीकार किया।

शमशाद अपने पिता की उच्छृंखलता का यह सब परिणाम देख काँप उठा। वह मन–ही–मन अपना नासिरा से सम्बन्ध ही इस सब में कारण मानता था। एक दिन वह जेहलम में अपने श्वसुर की कोठी में बैठा अपने भविष्य के विषय में विचार कर रहा था और उसको कुछ सूझ नहीं रहा था। लाहौर में इस्लामिया कॉलेज में इतिहास के प्रोफेसर की नौकरी उसे मिल गई थी। उसमें सवा सौ रुपया वेतन मिलने की बात थी। वह मन में विचार करता था कि इतने तो, उसको विद्यार्थी जीवन में, अकेले रहते हुए भी पूरे नहीं पड़ते थे। जब उसने नासिरा से विवाह किया था तो जवाहरलाल की सहायता से गुजर होता था। इसी प्रकार के विचारों में लीन हाथ में इस्लामिया कॉलेज लाहौर का नियुक्ति–पत्र लिए वह वकील साहब की कोठी में बैठा था। नासिरा उसके मुख की खिन्न मुद्रा देख चुप बैठी थी। एकाएक शमशाद के मुख से निकल गया, "नासिरा! यह तुम्हारे साथ गुनाह का नतीजा है।"

नासिरा इसका अर्थ नहीं समझ सकी। इस कारण उसने पूछ लिया, "मेरे साथ कैसा गुनाह किया है आपने?"

इस पर शमशाद ने अपने मन के भावों का वर्णन कर दिया। वह उस दिन से ही अपने मन में नासिरा से सम्बन्ध के पूर्ण इतिहास का मनन कर रहा था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस दिन उसकी छोटी माँ सुल्ताना ने कहा था कि नासिरा की मीठी–मीठी बातों ने उसके अब्बाजान के मन में एक उम्मीद बना दी थी। आज नासिरा को अकेले देख और अपने मन की उथल–पुथल से परेशानी अनुभव कर उसने कह दिया, ''देखो नासिरा! मैंने तुमसे निकाह नहीं पढ़ाया और अपने परिवार में सबके सामने झूठ बोला। मैंने तुमको पेशा करते हुए पकड़ा और सबके सामने एक मुअज्जिज खातून मशहूर किया। तुमने हमारे वालिद शरीफ से वैसा ही सुलूक किया, जैसा एक पेशेवर औरत बे–गुनाह बन्दों को अपने फंदे में फँसाने के लिए करती है। तुम्हारे एक पेशेवर औरत के से नाज–नखरों से ही वालिद शरीफ का हमेशा यह ख्याल बना रहा कि तुम उनके मन की बात मानने वाली हो। तुम यह सब जानबूझ कर करती थीं या अपनी फितरत से करती थीं, मैं नहीं जानता। इस पर भी यह हुआ तुम्हारी वजह से। मुझको बहुत अफसोस है कि मैंने तुमको अपने कुनबे में वह जगह दी, जो शरीफ औरतों को मिलनी चाहिए थी।''

नासिरा तो अवाक् रह गई। शमशाद विवाहित जीवन के दो वर्ष व्यतीत हो जाने के बाद उन बातों का उल्लेख कर रहा था, जो इस जीवन के आरम्भ करने से पूर्व सोची जानी चाहिए थीं। वह बैठी बहुत देर तक अपने खाविन्द का मुख देखती रह गई। शमशाद अपने भविष्य के विषय में विचार करने में खोया–सा था। नासिरा ने मन में सोचा कि क्या वह जिन्दगी–भर इस प्रकार के ही ताने सुनती रहेगी? आज उसके शमशाद के घर आने के बाद यह पहला दिन था, जब उसने उसकी पत्नी बनने से पहले के जीवन का उल्लेख किया था। वह मन में सोच रही थी कि अब यह बात अवश्य फैलेगी। इससे कदाचित् परिवार के दूसरे लोग उसको धक्के दे–देकर निकाल दें। वह ऐसा समझने लगी कि उसका अन्न–पानी इस घर से समाप्त हो चला है। इस समय तक जमींदारी पर एक सरकारी रिसीवर बैठ चुका था और शमशाद के साथ वे सरवर के बाप की दया से निर्वाह कर रहे थे।

इस प्रकार मन में विचार कर उसने पूछ लिया, ''तो सचमुच आप मेरे साथ अपने ताल्लुकात को गलत समझने लगे हैं?''

''हाँ।''

''क्या इस गलती को सुधारा जा सकता है?''

''सुधारना ही चाहिए। देखो! उस दिन वकील साहब भी कह रहे थे कि तुम बहुत शोख औरत हो। तुम किसी भी आदमी को बेवकूफ बना सकती हो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपका मतलब यह है कि मैंने आपको बेवकूफ बना रखा है?"

"यह तुम जानो।"

"मैंने जो कुछ जाना अथवा समझा है, वह मैं जानती हूँ। उसको अगर मैं दो साल की अपनी जिन्दगी से आपके दिल पर नक्श नहीं कर सकी तो अब दो बातों से क्या कर सकूँगी? आप बताइए, आप क्या चाहते हैं?"

"मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा।"

"मेरी समझ में कुछ आ रहा है। अगर कहें तो अर्ज करूँ?"

"क्या?"

"मैं आपको छोड़ जाती हूँ। एकदम और हमेशा के लिए। मैं आपको चिट्ठी लिख कर दे जाती हूँ कि मैं खुदकुशी करने जा रही हूँ। यह चिट्ठी आप अपने रिश्तेदारों को दिखा दीजिएगा। आपको मुझसे छुट्टी मिल जाएगी। मेरा काला साया आप की जिन्दगी से दूर हो जाएगा। इस सबके लिए सिर्फ एक वायदा आपसे चाहती हूँ। मेरा बच्चा आपके पास रहेगा। इसकी परवरिश आपको करनी होगी। दूसरे, किसी के सामने और इस बच्चे के सामने खास तौर पर, मेरी पहली जिन्दगी का राज न खुलने पाए।"

"मगर जो कुछ नुकसान मेरा हो चुका है, उसको यह तुम्हारा जाना कैसे पूरा कर देगा?"

"वह खुदा पूरा करेगा। बंदा किसी को क्या दे सकता है! हाँ! मेरे चले जाने से मेरे बुरे असर से आप बच जायेंगे।"

शमशाद अभी फैसला नहीं कर पा रहा था कि नासिरा की तजवीज का क्या उत्तर दे कि सरवर आ गई। सरवर इतनी हीन भावना नहीं रखती थी, जितना शमशाद। उसने आते ही पूछा, "क्या फैसला किया है आपने इस्लामिया कॉलेज की नौकरी का?"

"अभी कुछ फैसला नहीं किया।"

"मेरा कहा मानिए, आप इसको मंजूर कर लीजिए। मुझको तो अपने बाप के घर में रहते हुए बहुत शर्म आ रही है। एक बार आप लाहौर चलिए। मैं भी किसी लड़कियों के स्कूल में कोई जगह ढूँढ़ लूँगी। फिर तीनों मिलकर शान से गुजर कर लेंगे।"

"कल तक और सोच लेने दो सरवर!"

"जी नहीं।" नासिरा ने कह दिया, "आप आज ही लिख दीजिए। मेरा मन कह रहा है कि आप बड़ा नाम कमायेंगे। आप फुटबाल के फर्स्ट क्लास खिलाड़ी हैं। इसकी कद्र की जायेगी और जल्द ही कॉलेज में आपकी तरक्की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जायेगी। मैं आपकी आमदनी में तो इजाफा नहीं कर सकती, लेकिन एक नौकरानी बन कर आपकी खिदमत और खर्चे में बचत जरूर कर सकूँगी।''

इस पर सरवर ने उसके गले में बाँह डालकर कहा, ''अब मान भी जाइये। आपमें 'इनफीरिऔरिटी काम्प्लेस' कैसे आ गया है?''

विवश शमशाद को पत्र लिखना पड़ा। इसमें उसने अपनी नियुक्ति की स्वीकारोक्ति दे दी।

सरवर ने वह चिट्ठी ली और अपने पिता के कार्यालय में जा उसी समय की डाक में डलवाने के लिए मुंशी को दे दी।

आज क़ई रातों के बाद शमशाद गहरी नींद सोया। उसने एक मार्ग पर चलना स्वीकार कर लिया था। अब वह लाहौर जाने की तैयारी का विचार करने लगा था।

वकील साहब के घर में सरवर और नासिरा को दो कमरे मिले हुए थे। शमशाद बाहर के कमरे में अकेला सोता था। इस पर भी कभी–कभी शमशाद की रुचि अनुसार इनमें से एक शमशाद के कमरे में सोने जाया करती थी। आज सरवर ने नासिरा को वहाँ भेजने का मन ही मन फैसला कर रक्खा था। मगर नासिरा ने अपनी तबीयत खराब का बहाना बना दिया। सरवर शमशाद के कमरे में थी। सुबह दोनों उठे। जब शमशाद स्नानादि के लिए गुसलखाने में गया, सरवर नासिरा के पास चली आई। परन्तु ज्यों ही वह कमरे में पहुँची तो उसने देखा कि बिस्तर पर बच्चा सोया हुआ है और उसके पास एक चिट्ठी लिखी पड़ी है। नासिरा वहाँ नहीं थी। वह इसका अर्थ समझने के लिए कुछ देर तक सोचती रही। उस कमरे का दरवाजा उस कमरे में ही खुलता था, जिसमें वह अपने पति के साथ सोई हुई थी और उसके कमरे का दरवाजा उसी तरह भीतर से बन्द था। नासिरा वाले कमरे में खिड़की थी। उधर से कोई जा सकेगा, वह समझ नहीं सकी। कोई क्यों उधर से जाएगा? वह सोचती थी।

उसने चिट्ठी उठा कर देखी। लिफाफे पर लिखा था–मोहतरिम जनाब शमशाद साहब एम.ए.। उसको लिखावट नासिरा की मालूम हुई। वह यह नहीं समझ सकी कि चिट्ठी का क्या मतलब है। चिट्ठी खोलने से पहले वह उसकी लिखने वाली को देखना चाहती थी। उसने खिड़की में झाँक कर देखा। यह खिड़की जमीन से दस फुट ऊँची थी। उसने देखा कि खिड़की के डंडे के साथ नासिरा का दुपट्टा बंधा है। वह दो गज लम्बा था। वह समझ गई है कि वह यहाँ से कूद कर गई है। परन्तु क्यों और कहाँ गई है?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस रहस्य को उसे इस चिट्ठी में मिलने की आशा थी। अतः चिट्ठी ले वह अपने पति के पास चली गई। उसका पति उसके पिता के पास बैठा हुआ बातें कर रहा था। उसने संकेत से उसको बुलाया और कहा, ''जल्दी कमरे में चालिए।''

''क्यों? क्या बात है?'' शमशाद ने साथ चलते हुए पूछा।

''यह देखिए,'' उसने नासिरा की चिट्ठी दिखा दी और कहा, ''और नासिरा अपने कमरे में नहीं है?''

''कहाँ गई है? कैसे गई है?''

इस समय तक वे कमरे में पहुँच चुके थे। सरवर ने अपने पति को खिड़की में लटका दुपट्टा दिखा दिया। इस समय शमशाद ने वहाँ खड़े–खड़े ही चिट्ठी खोल डाली और पढ़ ली। नासिरा ने लिखा था–

''जनाब आली! मैं जा रही हूँ। मुझको ढूँढ़ने की कोशिश मत करिएगा। मैं दरिया में अपने को खत्म करने का फैसला कर चुकी हूँ। जब तक यह चिट्ठी आपको मिलेगी, मेरी लाश मछलियाँ और मगरमच्छ खत्म कर चुके होंगे।

''जब से आपके वालिद शरीफ का इन्तकाल हुआ है, मेरे मन पर एक भारी बोझ रहा है कि उनकी बेवक्त मौत की पूरी जिम्मेदारी मुझ पर है। मैं अपने को कातिल समझती हूँ और उस जुर्म की सजा अपने आप लेने जा रही हूँ।

''मेरी इल्तजा है कि मेरे बच्चे की, जो आपका भी है, मुनासिब परविरिश करें और इस नाचीज खादिम के सब कसूर और गुनाह भूल जायें।

बदकिस्मत–नासिरा।''

: 9 :

शमशाद को याद आ गया कि वह पिछले दिन यही तो कह रही थी। इसके साथ ही उसको उसकी वह प्रार्थना जो उसने अपने पुत्र के विषय में कही थी, स्मरण हो आई। अब उसको अपने कथन पर अफसोस लगने लगा। इस पर भी इस झमेले में फँसने से बचने के लिए वह सीधा वकील साहब के पास गया। उसने उनको चिट्ठी दिखा दी और कमरे में लाकर खिड़की में लटका वह दुपट्टा भी दिखा दिया। वकील साहब ने जल्दी–जल्दी एक चिट्ठी थानेदार साहब को लिखकर भेज दी। इस पर पुलिस आ गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पुलिस ने घटना–स्थल देखा। खिड़की के नीचे किसी के कूदने के पाँवों के निशान बने थे। इसके बाद जेहलम नदी में लाश ढूँढ़ने का भी यत्न किया गया, पर लाश नहीं मिली। पुलिस ने शमशाद की तरफ से रिपोर्ट लिख ली और बात खत्म कर दी। पुलिस की तहकीकात की रिपोर्ट में नासिरा की चिट्ठी की नकल लगा दी गई और साथ ही लिख दिया गया, ''यह खयाल किया जाता है कि उसकी लाश किसी मगरमच्छ के पेट में जा चुकी है।''

लाहौर इस्लामिया कॉलेज में हाजिर होने की तारीख आने पर उसने पहले अकेले ही जाना मंजूर किया। सरवर को नासिरा के बच्चे के साथ वकील साहब के घर पर ही छोड़ दिया। वहाँ नौकरी का चार्ज लेकर उसने कॉलेज के करीब नई बस्ती, जो मोची दरवाजे के बाहर चैम्बरलेन रोड पर बन रही थी, में एक मकान बीस रुपये महीने का लेकर सरवर को बुला लिया।

इस तरह वह लाहौर से जाने के डेढ़ साल बाद एक विद्यार्थी से प्रोफेसर बन लौट आया। वह चाहता था कि जवाहरलाल और उनके पिता से मिले और उनसे अपने पहले जैसे ताल्लुकात पैदा करे, परन्तु यह विचार कर कि नासिरा के विषय में वह क्या कहेगा और वे इसका क्या मतलब समझेंगे, जाने में संकोच करने लगा।

इस पर भी भेंट का अवसर बन गया।

इस्लामिया कॉलेज की टीम का गवर्नमेंट कॉलेज की टीम से फुटबाल का मैच था। शमशाद इधर टीम का इंचार्ज था और उधर गवर्नमेंट–कॉलेज की टीम का कैप्टन जवाहरलाल था। इस कारण भेंट होनी स्वाभाविक थी।

जवाहरलाल मैच शुरू होने से पहले इस्लामिया कॉलेज की टीम का स्वागत करने गया तो वहाँ शमशाद को खड़े देख भौचक्का रह गया। शीघ्र ही उसके मुख से निकल गया, ''शमशाद भाई, यहाँ कब से?''

शमशाद ने देखा तो दोनों बगलगीर होने लगे। इस्लामिया कॉलेज टीम के लड़के और दोनों कॉलेजों के विद्यार्थी इनको इस प्रकार गले मिलते देख विस्मय में दोनों का मुख देखने लगे।

शमशाद ने पूछा, ''तो टीम में मेरी जगह तुमने ले ली है?''

''हाँ भापा! तो तुम इस कॉलेज में प्रोफेसर हो गए हो?''

इससे पूर्व कि शमशाद इसका उत्तर दे, जवाहर ने आगे कह दिया, ''तुम तो कहते थे कि नौकरी नहीं करोगे?''

''हालात बदल गए हैं जवाहर! मजबूर हो गया हूँ।''

''नासिरा कैसी है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह अब नहीं है। एक दिन रात को भाग खड़ी हुई। ऐसा मालूम होता है कि उसने खुदकुशी कर ली है। कई बार मुझको यहाँ खयाल आया कि मैं तुम से और तुम्हारे वालिद शरीफ से मिलने आऊँ, मगर नासिरा की बात सोच मैं बहुत शर्मसार था।"

"मगर इसमें तुम्हारा क्या कसूर है? तुम जरूर आओ शमशाद! वहाँ पर तुमको सब याद करते हैं।"

"एक बात और है। मैंने एक दूसरी शादी भी कर ली है।"

"सच? तब तो जरूर आओ। उसको भी साथ लेते आना।"

"इस तरह नहीं। पहले तुम एक दिन मेरे घर पर चलो। फिर उसको और मुझको अपने घर पर चलने की दावत दो। तब हम जरूर आयेंगे।"

"तो जिस दिन तुम कहो, उसी दिन चलूँ।"

"आज मैच के बाद ही चलना।"

"तुम्हारी नई बीवी नाराज हो जायेगी। पहले पूछ तो लो।"

"नहीं जवाहर! मैं उसको तुम्हारे मुताल्लिक बता चुका हूँ। वह तुमसे मिलकर खुश ही होगी। उसको भी नासिरा का बहुत अफसोस है।"

"नासिरा ने गाँव में जाकर एक चिट्‌ठी लिखी थी। उसमें उसने एक बात कही थी। इसी वजह से मैंने फिर चिट्‌ठी नहीं लिखी।"

"क्या लिखा था?"

"अब तो तुम हमारे घर चलोगे ही। चिट्‌ठी भी दिखा दूँगा।"

"आज मैं तुम को नासिरा की आखिरी चिट्‌ठी दिखाऊँगा। उसका बच्चा भी हमारे साथ है। सरवर, तुम्हारी नई भाभी, उससे बहुत मुहब्बत करती है।"

इस समय रैफरी ने सीटी बजाई तो दोनों टीमें खेलने के मैदान में निकल आईं। जवाहर अपनी टीम के आगे आ खड़ा हुआ। टॉस किया गया और टॉस गवर्नमेंट कॉलेज जीत गया।

शमशाद देख रहा था कि जवाहर अब सैंटर फारवर्ड खेलता है और टीम की ट्रेनिंग बहुत बढ़िया हो गई है। उसके मुकाबिले में इस्लामिया कॉलेज की टीम कुछ नहीं थी। एक घण्टे के खेल में गवर्नमेंट कॉलेज ने सात गोल किए। जब खेल समाप्त हुआ तो जवाहरलाल ने अपना ब्लेजर पहना और शमशाद के पास आ पूछने लगा, "क्यों भापा! चलें?"

"हाँ, मैं तुम्हारी टीम के 'ऐक्सलेंट' खेल पर तुमको मुबारिकबाद देता हूँ।"

"इस वर्ष हमारा मुकाबिला फोरमन क्रिश्चियन कॉलेज की टीम से है। अगले सप्ताह ही उनसे मैच है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
"मैं देखने आऊँगा।"

दोनों ताँगे में सवार हो चैम्बरलेन रोड की ओर चल पड़े।

चैम्बरलेन रोड पर एक मकान के नीचे खड़े हो शमशाद ने दरवाजा खटखटाया तो भीतर से आवाज आई, "कौन है?"

"शमशाद, एक दोस्त के साथ।"

"तो ठहरिए।"

शमशाद ने जवाहर से कहा, "अब पर्दा करने के लिए गई है।"

"हाँ भाई! मेरी भी शादी हो गई है।"

"सच? कहाँ?"

"यहीं! तुमको दिखाऊँगा। वह तुमसे पर्दा नहीं करेगी।"

"तुम खुश हो उससे?"

'बहुत।"

इस समय द्वार खुला और द्वार के पीछे एक बुर्का खड़ा दिखाई दिया। बाहर के इस दरवाजे के अन्दर बैठक थी। उसमें बैठने के लिए कुर्सी रक्खी थी। शमशाद के पढ़ने के लिए एक मेज थी। एक तरफ दीवार के साथ एक अलमारी थी। अलमारी में किताबें रक्खी थीं। जवाहर ने शमशाद के पीछे पीछे कमरे में दाखिल हो और लैम्प के प्रकाश में ही बुर्के की ओर देखकर कह दिया, "भाभी! आदाबअर्ज।"

इस पर शमशाद ने कह दिया, "यह मेरे दोस्त जवाहरलाल हैं। तुम तो जानती हो, यह नासिरा के भाई बने हुए थे।"

"ओह!" सरवर ने हाथ जोड़ दिये और बुर्का उठाकर कहा, "तब तो मेरे भी आप भाई ही हैं। आइए, बैठिए। क्या नोश फरमाइएगा?"

"आजकल तो पढ़े लिखों में चाय का रिवाज हो रहा है।"

"हाँ, हम भी इसी के शौक में मुबतिला हैं। आप बैठिए। पाँच मिनट में चाय तैयार हो जायेगी।"

शमशाद ने अपने घर की तबाही के हालात बयान कर दिए। उसने सुनाया, "अब भाइयों में मुकदमेबाजी हो रही है। कुछ भाई–बहिनें अभी नाबालिग हैं। जब तक बालिग नहीं हो जाते, रिसीवर बैठा दिया गया है। उसने अभी हम लोगों का गुजारा मुकर्रिर नहीं किया। इसलिए मजबूर हो नौकरी करने चला आया हूँ।

"नासिरा के दिमाग में कुछ ऐसा समा गया था कि हमारी मुसीबत उसकी वजह से ही हुई है। इसलिए वह एक रात खिड़की में से कूद कर भाग गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने पीछे अपने लड़के को और एक चिट्ठी छोड़ गई।''

अब शमशाद ने नासिरा की वह अन्तिम चिट्ठी निकाल कर दिखा दी। चिट्ठी पढ़कर जवाहर ने कह दिया, ''यह खुदकशी करने वाले की लिखी चिट्ठी मालूम नहीं होती?''

''वह कैसी होती है?''

''मरने का इरादा किए हुए इन्सान का हाथ स्थिर नहीं हो सकता। उसके ख्यालात इतने साफ और पुरमायना नहीं हो सकते। इसमें एक भी लफज ऐसा नहीं, जो बेमतलब हो या आगे–पीछे हो गया हो।''

''खुदा करे तुम्हारा कहना दुरुस्त हो मगर उसको बहुत ढूँढ़ा गया है। वह न तो मिली है न उसने ही, अगर वह जिन्दा है तो मिलने की कोशिश की है।''

''उसके पास कुछ रुपये थे क्या?''

''दस–बीस हों तो हों। ज्यादा नहीं हो सकते। हाथ में चूड़ियाँ जरूर थीं।''

''कुछ नहीं कहा जा सकता। क्या वह बहुत 'डिस्टर्ब्ड' (खिन्न) मालूम होती थी?''

''कुछ तो जरूर थी। घर की गरीबी की वजह से थी।''

इस वक्त सरवर ट्रे में चाय लगा लाई। तीनों ने मिलकर पी। जवाहर जाने से पूर्व बोला, ''भाभी! आज जुम्मेरात है। ऐतवार के दिन दोपहर का खाना हमारे घर खाइये। माताजी आप से मिलकर बहुत खुश होंगी।''

: 10 :

जवाहर का विवाह हो गया था। घर लौटने के बाद साधना विवाह करने से इनकार इस कारण कर रही थी कि उसको भय था कि उसका मान ससुराल में नहीं होगा। उसके गर्भ–धारण और घर से भाग जाने तथा उसके वेश्यावृत्ति करने की सब बातों का पता जवाहरलाल, उसके पिता तथा सब घर वालों को था। उसके इस जीवन से अवगत होकर उसका कौन मान करेगा? इस कारण उसने यह निश्चय कर लिया था कि वह जीवन भर विवाह करेगी ही नहीं। जवाहरलाल ने एक दिन मध्याह्न की धूप में छत पर खड़े हो साधना को समझाने का यत्न किया था। जब वह नहीं मानी तो उसने उसको कह दिया कि वह, जब तक उसका विवाह नहीं हो जाता, उससे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवाह के लिए तैयार रहेगा। उसकी ऐसे ही प्रतिष्ठा करेगा, जैसे एक कुमारी से विवाह कर वह करता।

इस पर भी साधना को विश्वास नहीं आया था। उसने जवाहर के इस आश्वासन पर उसका धन्यवाद किया और भेंट समाप्त हो गई। विवाह नहीं हुआ, परन्तु रामरक्खामल्ल ने लेखवती से कह दिया कि यदि साधना कभी आये तो उसको भी रामायण पढ़ाया करो और सीख देती रहा करो। क्या जाने उसको कभी अपने ही घर रख लेने की आवश्यकता पड़ जाए।

इधर लेखवती के लड़का हुआ तो जवाहर का मित्र शमशाद लड़के के जात–कर्म संस्कार पर आ गया। साथ में उसकी पत्नी नासिरा भी आई। नासिरा की प्रसन्नता और उसके प्रति रामरक्खामल्ल के घर वालों का सद्–व्यवहार साधना के मन में एक अन्य प्रकार का परिवर्तन करने वाला सिद्ध हुआ। अब वह पुनः जवाहरलाल से मेल–मुलाकात करने लगी। यह भेंट छुप–छुप कर नहीं होती थी, प्रत्युत सबके सामने होती थी। समय पाकर शमशाद गाँव चला गया। वह नासिरा को साथ ले गया, परन्तु इससे पुनः साधना के मन में विवाह की लालसा उत्पन्न हो गई। जब जवाहरलाल पास हुआ और उसको इस बार भी छात्रवृत्ति मिली तो जवाहर की धूम मुहल्ले में मचने लगी।

सोमनाथ ने भी घर पर जवाहर के पास होने और छात्रवृत्ति प्राप्त करने की चर्चा की। साधना के मन पर इसका भारी प्रभाव हुआ। साधना की छोटी बहिन लक्ष्मी के विवाह का, रामरक्खामल्ल की सहायता से एक आर्यसमाजी परिवार में प्रबन्ध हो गया। उन लोगों ने बड़ी लड़की के अभी तक कुंवारेपन की बात की तो रामरक्खामल्ल ने स्पष्ट कह दिया कि वह किसी मुसलमान के भड़काने से कहीं भाग गई थी। वहाँ वह मुसलमान हो गई थी और फिर उससे पेशा करवाने का काम भी लिया गया था। अब वापस हिन्दू धर्म में आ गई है।''

''परन्तु वह अब विवाह क्यों नहीं करती?''

''वह किसी से प्रेम करती है और वह लड़का अभी विवाह के लिए तैयार नहीं। अभी वह पढ़ता है।''

रामरक्खामल्ल के इस कथन का ज्ञान जब साधना को हुआ तो वह समझ गई कि वे लोग अभी भी उसके जवाहर के साथ विवाह की आशा छोड़े नहीं हैं। इसके पश्चात् एक अन्तिम बात हुई। जवाहर की सगाई उनकी अपनी बिरादरी के एक अच्छे प्रतिष्ठित परिवार की लड़की के साथ होने की बातचीत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने लगी। लड़की का पिता डिस्ट्रिक्ट जज था। यों भी समाज में उस परिवार की भारी प्रतिष्ठा थी। इस परिवार की स्त्रियाँ बातचीत करने और जवाहर को देखने के लिए रामरक्खामल्ल के घर आने लगीं। एक रविवार के दिन भोजन के बाद जब रामायण की कथा हो रही थी तो वे आईं। रामरक्खामल्ल के परिवार में सारा स्त्री वर्ग कथा सुन रहा था। वे आईं तो वे भी बैठकर कथा सुनने लगीं। साधना भी इस समय आई हुई थी।

कथा समाप्त हुई तो उन स्त्रियों ने अपना परिचय दिया और आने का कारण बता दिया। आई स्त्रियों में से एक ने कह दिया, "लाला जी की बात लड़के के पिता से आर्य समाज के साप्ताहिक अधिवेशन के समय हुई है। लालाजी ने लड़की को भी देखा है। हम लड़के को देखने के लिए आई हैं। हम यह भी जानने के लिए आई हैं कि यदि लड़का लड़की को देखना चाहता है तो उससे दिन समय निश्चय कर लें।"

लेखवती ने इस पर कह दिया, "लड़का तो अभी पढ़ रहा है और विवाह के लिए तैयार नहीं होता।"

"हम भी तो अभी सगाई की बात कर रहे हैं। लड़की भी पढ़ती है। अभी वह नौवीं जमायत में है। जब तक लड़का एम.ए. पास करेगा, लड़की इण्टर पास कर लेगी। तब ही विवाह होगा। यदि लड़के की स्वीकृति हुई तो लड़की बी.ए. में पढ़ने की इच्छा रखती है।"

साधना इतना अच्छा सम्बन्ध आया देख समझ बैठी कि जवाहरलाल का यहाँ विवाह हो जायेगा। इसके साथ ही उन औरतों ने दहेज की बात भी करनी चाही। एक ने कह दिया, "लालाजी का सरकार में भारी रसूख है। लड़के को किसी अच्छे काम पर लगाने में बहुत सहायता दे सकते हैं। अगर लड़के का विचार किसी कारोबार में लगने का हुआ तो उसके लिए साधन भी जुटा सकते हैं।"

इस पर लेखवती ने कह दिया, "बहिन जी! ये सब बातें तो पीछे विचार करेंगे। पहले तो सम्बन्ध होने की बात है। हम परमात्मा पर अगाध विश्वास रखते हैं और ऐसा मानते हैं कि बिना उसकी कृपा के मनुष्य एक तिनका भी तोड़ नहीं सकता।"

"परन्तु यत्न तो मनुष्य ही करता है।"

"हाँ, परन्तु प्रभु की प्रेरणा से।"

"इस पर भी परमात्मा ने बुद्धि दी है। उसका प्रयोग भी तो करना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, परन्तु फिर भी होता वही है, जो उसको स्वीकार होता है। अभी राम के वन जाने की कथा हो रही थी। बुद्धि से, जन–जन की भावना से और कैकेयी के अतिरिक्त परिवार के सब प्राणियों की मति से राम के वन जाने में किसी का कल्याण दिखाई नहीं देता था। पिता के वचन की बात थी, परन्तु पिता अपने मुख से तो कहता नहीं था। साधारण अवस्था में राम को जाने से इनकार करने के लिए प्रत्येक परिस्थिति कह रही थी। यह तो राम के मन की भावना थी कि पिता के वचन का पालन होना चाहिये। यह भावना प्रेरणा का विषय है, जब कि विशेष रूप से यह भावना लोकमत, बुद्धि और स्वार्थ के विपरीत हो।

"फिर भी यत्न करना ही चाहिए। लड़का अपने कमरे में पढ़ रहा है। चलिए मैं आपको दिखा देती हूँ। शेष बात भी आप उसी से कर लीजिएगा।"

दो स्त्रियाँ आई थीं। दोनों उठकर लेखवती के साथ जवाहरलाल को देखने के लिए, उसके कमरे में चली गईं। जवाहरलाल बैठा हुआ कुछ लिख रहा था। माँ ने कमरे के बाहर ही आवाज दे दी, "जवाहर बेटा!"

"हाँ माँ!" वह माँ के साथ दो अपरिचित स्त्रियों को देख उठ खड़ा हुआ। कलम को कलमदान में रख वह बोला, "माँ! क्या बात है?"

लेखवती दोनों स्त्रियों को उसी के कमरे में ले गई और उनको वहाँ बैठा जवाहरलाल को बैठने को कह बोली, "ये नानकचंद जज के घर से आई हैं और तुम्हारी सगाई के विषय में बात करना चाहती हैं।"

"माँ! मैंने तो कह रक्खा है कि मैं अभी विवाह नहीं करूँगा।"

"बेटा! सज्जन लोगों से सम्बन्ध बनाने का सौभाग्य बहुत ही पुण्य कर्मों के फल से मिलता है। इससे सब बातें एक ही नियम से, अथवा सब लोगों को एक ही लाठी से हाँकना ठीक नहीं। तुम लड़की के पिता से मिल लो। यदि चाहो तो लड़की भी देख लो। फिर निश्चय कर लो। विवाह अभी तीन वर्ष बाद ही होगा। तब तक दोनों परिवारों में मेल–मुलाकात होते रहने से और भी सामीप्य हो जायेगा। बेटा! अब मान जाओ।"

जवाहरलाल ने आँखें मूँदकर विचार किया और कह दिया, "अच्छा माँ! मुझको विचार करने के लिए एक सप्ताह का अवसर और दो। आगामी रविवार को मैं अपने मन की बात बता दूँगा। विवाह करने का निश्चय करके ही लड़की देखने की बात पर विचार करूँगा।"

इस पर आई स्त्रियों में से एक बोल उठी, "विवाह के निश्चय में परिवार, धन–सम्पदा और लड़की की रूपरेखा की बात भी तो विचारणीय है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिये माँ जी!" जवाहरलाल ने कह दिया, "ये सब बातें गौण हैं। ये प्रलोभन भी हो सकती हैं। पथ से विचलित करने के लिए भी हो सकती हैं। इसलिए मुझको इसके बिना अपने कल्याण की बात विचार करने दीजिये। लड़की कुछ कम रूपवान भी हो तो इतनी हानि नहीं हो सकती, जितनी स्वभाव न मिलने वाली पत्नी से हो सकती है।

"मुझको आप समय दें। तब मैं अपने मन की बात जज साहब के सामने किसी न किसी प्रकार रख पाऊँगा।"

ऐसी दो–टूक और युक्तियुक्त बात सुनने के बाद कुछ कहने–सुनने को शेष नहीं रहा। वे स्त्रियाँ यह आशा व्यक्त कर कि वह समय पर उचित उत्तर दे ही देगा, चली गईं।

लेखवती ऊपर, जहाँ घर की अन्य स्त्रियाँ जवाहर से बातचीत का वृत्तान्त सुनने के लिए बैठी थीं, आ गईं। लेखवती ने जवाहर की बात बताई तो साधना के मन में पुनः यह विचार आया कि उसको भी अब निर्णयात्मक प्रेरणा जवाहरलाल को दे देनी चाहिए। वह अभी भी अपने मन को विवाह के लिए तैयार नहीं पाती थी। इस घटना के पश्चात्, वह सोचती थी यदि उसके कारण ही जवाहरलाल और उसके पिता निर्णय नहीं कर पाते, तो उसको भी अन्तिम निर्णय कर ही लेना चाहिए।

इस पर भी वह समझती थी कि जवाहरलाल को इतने अच्छे सम्बन्ध से हटाकर अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास तो उस पर अन्याय होगा। उसने लगभग यह निर्णय ही कर लिया था कि वह जवाहरलाल को यह कह देगी कि वह उसकी आशा में थी जीवन व्यर्थ न गँवाये और यह सम्बन्ध अवश्य स्वीकार कर ले।

बृहस्पतिवार का दिन था। जवाहरलाल कॉलेज की लेबोरेटरी के काम से अवकाश प्राप्त कर घर पहुँचा तो साधना उसके घर की सीढ़ियों से उतर रही थी। जवाहरलाल ने यह विचार किया कि आज इससे बात कर कोई निश्चय कर ले, जिससे अपनी प्रस्तावित सगाई के विषय में अपनी सम्मति बना सके।

साधना के साथ लेखवती भी ऊपर की मंजिल से उतर रही थी। उसने साधना को बुला लिया, "साधना! इधर आओ। तुमसे एक बात पूछनी है।"

साधना अनिश्चित मन खड़ी रह गई। उसके मन में अभी भी द्वन्द्व चल रहा था। इतने में लेखवती ने कह दिया, "जाओ बेटा! डरो नहीं।"

"डर की कोई बात नहीं। माताजी! मैं... ।"

जवाहरलाल ने बीच में ही टोककर कहा, "आओ माँ! तुम भी आ जाओ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं उन जज साहब को अपना उत्तर भेजने का निश्चय करना चाहता हूँ।"

लेखवती और साधना दोनों जवाहर के कमरे में जा पहुँचीं। जब वे बैठ गईं तो जवाहर भी बैठ गया। उसने बैठते ही पहले माँ से पूछा, "माँ, तुम इस विषय में क्या कहती हो? मैं उन जज साहब को क्या उत्तर दूँ? आज पिताजी ने पुनः स्मरण कराया है कि मुझे रविवार से पूर्व उनको बताना है कि उनकी लड़की को देखने कब जाऊँगा।"

लेखवती ने कह दिया, "मैं तुमको कुछ भी नहीं कहूँगी। तुम अपने मन की प्रेरणा के अनुसार काम करो।"

"मैं यह जानना चाहता हूँ माँ! कि तुम्हें धनी पढ़ी-लिखी बहू चाहिए अथवा मेरे पसन्द की?"

"देखो जवाहर! बहू तुम्हारे सांसारिक भोग-विलास और समाज के ऋण से उऋण होने के लिए आएगी। जीवन की साथिन वह तुम्हारी बनेगी। मैं तो कब तक जिऊँगी, कहना कठिन है। जिऊँ भी तो तुम लोगों के साथ रह सकूँगी क्या? मान लो तुम कहीं लाहौर से बाहर काम पर जाते हो तो मैं तुम्हारे साथ जा सकूंगी क्या?

"इसलिए मैं कहती हूँ कि तुम अपने मन में अपना ध्यान रखकर निश्चय कर लो।"

"अच्छा साधना! अब तुम बताओ। तुमने अभी विवाह का निश्चय किया है अथवा नहीं? तुम विवाह के लिए अपने मन को तैयार कर सकी हो अथवा नहीं?"

इस क्षण तक भी साधना अनिश्चित मन थी। अतः उसने बात का विश्लेषण करने के लिए पूछ लिया-"यदि मैं अब भी विवाह न करने का निश्चय ही रक्खूँ तो आप क्या करेंगे?"

"यदि यह और यदि वह की बात छोड़ो। मैं तुमसे विवाह करने के लिए वचनबद्ध हूँ। इसी कारण सबसे पहले तुम से ही तुम्हारे मन की अवस्था जानना चाहता हूँ। वचन-मुक्त होने के पश्चात् ही मैं किसी निर्णय पर पहुँच सकता हूँ। तुम बताओ, क्या कभी निकट अथवा दूर भविष्य में तुम विवाह की इच्छा कर सकती हो? मैं तुम्हारे लिए प्रतीक्षा कर सकता हूँ।"

"तो आपने इस नानकचन्द जी की लड़की के विषय में अभी कुछ विचार नहीं किया? "

"नहीं, इस पर भी मैं एक बात विचार कर रहा हूँ कि अकारण किसी को जवाब देने से मनुष्य अभिमानी और अदूरदर्शी मान लिया जाता है। यदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमको कुछ ऐसा समझ आ रहा हो कि तुमने अपना विवाह करना ही नहीं, तो फिर मैं लड़की और लड़की के परिवार के गुण–दोषों पर विचार करूँ। मैं व्यर्थ में दूसरों को छिद्रान्वेषण करने वाला बनना नहीं चाहता।"

इस बात ने साधना को पुनः असमंजस में डाल दिया। उसने कहा, "मैं आपकी कठिनाई अनुभव कर रही हूँ। मैं आपसे चौबीस घण्टे का अवसर और चाहती हूँ। मुझको इतना और विचार कर लेने दीजिए। कल इस समय से पूर्व ही मेरे मन की अवस्था का ज्ञान आपको हो जाएगा।"

इतना कह वह उठ खड़ी हुई और हाथ जोड़कर नमस्ते कह कमरे से बाहर निकल गई।

उसके जाने के पश्चात् माँ ने कह दिया, "बेटा! यह अनिश्चयात्मक बुद्धि वाली है। ऐसे लोगों का कल्याण बहुत कठिन है।"

"माँ! जानता हूँ। परन्तु मैं अनिश्चित बुद्धि नहीं हूँ। मैं खिलाड़ी हूँ और खिलाड़ी निश्चय करने में कोई देर नहीं लगाते। देरी करने से तो वे जीती बाजी हार सकते हैं।"

"इस पर भी मैं तुमसे यही कहूँगी कि साधना मन की अच्छी लड़की है। पढ़ी–लिखी न सही परन्तु बुद्धि की प्रखर है। वह बात समझ जाती है और अब तो परमात्मा का चिन्तन करने से चित्त में शान्ति और सरलता का अनुभव करने लगी है।"

"इस पर भी माँ! मैं उसकी इच्छा के विपरीत तो विवाह नहीं कर सकता।"

अगले दिन साधना कथा सुनने के लिए आई और जाने से पूर्व एक पत्र, लिफाफे में बन्द लेखवती के हाथ में दे गई। जवाहरलाल अपने कमरे में बैठा उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। साधना उस ओर न जा अपने घर चली गई। लेखवती ने साधना का पत्र जवाहरलाल के सामने रख दिया।

जवाहरलाल ने पत्र खोल पढ़ दिया। साधना ने लिखा था, "परमप्रिय लालाजी!" इसी प्रकार वह जवाहरलाल को सम्बोधन करने लगी थी, "मेरा यह जीवन भर का निर्णय है कि मैं विवाह न करूँ। मेरा मन कहीं अन्यत्र विवाह के लिए नहीं कर रहा। परन्तु मैं आपका जीवन कालिमायुक्त करके उसमें दुख की सृष्टि करना नहीं चाहती। अतः आप अपने विषय में विचार कर लें। मैं आपको कुछ भी सम्मति देने का अधिकार नहीं रखती। इस पर भी विवाह तो करना ही है और वर्तमान सम्बन्ध का प्रस्ताव संसार की यात्रा के लिए कुछ खराब प्रतीत नहीं होता। शेष आप भापाजी से विचार कर निर्णय कर लीजिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं अपने को मर गई ही समझती हूँ।

आपकी दासी
साधना।''

इस पत्र के पश्चात् भी स्थिति वही रही जो पहले थी। केवल अन्तर यह पड़ गया कि जहाँ पहले मौखिक बात हुई थी और जवाहरलाल के कहने पर कि वह उसकी प्रतीक्षा करेगा, साधना चुप रही थी, अब अन्तिम बात साधना ने कही थी और उसने कह दिया था कि प्रतीक्षा करने से कुछ लाभ नहीं।

माँ ने कहा, ''जवाहर! अब तुम इतना पढ़ गए हो। यह तुम देख लो कि यह करना चाहते हो या नहीं। हम, मेरा मतलब है कि मैं और तुम्हारे पिता इस विषय में तुम्हारी इच्छा का समर्थन करेंगे।''

रात को जवाहर ने अपने पिता से कहा, ''मैं विवाह करूँगा और मैं चाहता हूँ कि माताजी नानकचन्द की लड़की को देख लें।''

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा, और बोला, ''तो क्या साधना ने बिल्कुल इनकार कर दिया है?''

इस पर जवाहरलाल ने साधना का पत्र निकालकर दिखा दिया। रामरक्खामल्ल ने पत्र पढ़ा और कहा, ''अच्छा, तुम अपने कमरे में जाओ। तनिक मैं साधना से बात कर लूँ। मैं ऐसा समझता हूँ कि वह अपने मन के भावों को समझ नहीं सकी। अभी तो वह बच्ची ही है। कुछ भावुक भी अधिक है।''

जवाहरलाल चला गया तो लेखवती को भेज, रामरक्खामल्ल ने साधना को बुला लिया। रामरक्खामल्ल ने उसको सामने बैठा कर पूछा, ''साधना! तुमने जवाहरलाल से विवाह करने से फिर इनकार कर दिया है।''

साधना भूमि की ओर देखती हुई चुप रही।

रामरक्खामल्ल ने आगे कह दिया, ''मैंने तुम्हारा पत्र जो तुमने जवाहर के नाम लिखा है, पढ़ा है। उसमें मुझे विरोधाभास दिखाई देता है।''

''नहीं भापा! मैंने अपनी बात स्पष्ट लिख दी है।''

''देखो! मैं समझाता हूँ। तुमने उसको परमप्रिय सम्बोधित किया है। तुमने लिखा है कि तुम्हारा कहीं अन्यत्र विवाह करने को चित्त भी नहीं करता। इसका कारण जो तुमने उस पत्र में बताया है, वह गलत है। उसमें तुमने अपनी कालिमायुक्त करनी को ही कारण बताया है। यही गलती है। मैं, तुम्हारे पिता और तुम्हारी माँ और जवाहरलाल की माँ, हम चारों तुमसे आयु में बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं और अधिक अनुभव रखते हैं तथा हम तुम्हारे चरित्र को जब कालिमायुक्त नहीं मानते तो तुमको हमारा अनुमान ठीक ही मानना चाहिए।

"देखो! मैं तुमको बताता हूँ। शरीर की मैल तो स्नान करने से दूर होती है। पेट की मैल जुलाब लेने से निकल जाती है। कर्मों की मैल प्रायश्चित्त और तपस्या से दूर हो जाती है। मन की मैल अच्छी संगत और स्वाध्याय से दूर हो जाती है।

"तुम्हारा शरीर गंदा नहीं था। जो कुछ गंदगी वेश्यावृत्ति से तुम में एकत्रित हुई थी, वह उस जीवन के बाद अपने के घर पर रहने से धुल गई है। मन सदा तुम्हारा निर्मल रहा है। हम तुममें किसी प्रकार की भी मलिनता नहीं देखते। इस कारण तुम्हारा यह कहना कि उसकी परछाईं जवाहरलाल के जीवन में दुःख की सृष्टि करेगी, निराधार बात है।"

"मुझको कुछ ऐसा ही समझ आ रहा है भापा!"

"जब मतभेद हो जाए तो बड़ों और अनुभवी लोगों की बात माननी चाहिए।"

"आपका विचार है कि मैंने कोई पाप कर्म नहीं किया?"

"यदि तुमने अपने बयान अदालत में और जवाहर के सामने सत्य–सत्य ही दिए हैं तो मेरा यह निश्चित मत है कि तुमने कोई पाप–कर्म नहीं किया। जो कुछ पाप कराया गया है, उसका फल उनको मिलेगा, जिन्होंने वह पाप कराया है। तुम तो निर्मल हो। यदि न होतीं तो तुम उस पापकुण्ड से निकलने का यत्न भी नहीं करतीं।"

"अब आप क्या करने को कहते हैं?"

"मैं यह कहता हूँ कि तुम स्वेच्छा से, बिना इस बात का विचार किए कि तुमने कुछ बुरा काम किया है और उसमें तुम दूषित हो, अपना व्यवहार निश्चय करो। तुम्हारे पत्र के पढ़ने से मेरी समझ में यह आया है कि तुम मन से जवाहर से विवाह करना चाहती हो, परन्तु तुमको भय है कि तुम पतित हो गई हो। परन्तु ऐसी कोई बात नहीं है।"

"तो जैसा आप कहें।"

"मुझको तुम्हें अपने घर ले आने में कोई आपत्ति नहीं।"

जवाहरलाल को जब यह सब बताया गया तो विवाह हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

: 1 :

नासिरा रेल में बैठी लाहौर जा रही थी। उसने पर्दा करके यात्रा करनी उचित नहीं समझी। न ही उसके पास कोई बिस्तर इत्यादि था। जेहलम से भागते समय वह अपने साथ एक कम्बल से अधिक नहीं ला सकी थी। सलवार, कुर्ता, सर पर एक चादर ओढ़े और एक कम्बल साथ लिए वह स्टेशन पर पैदल ही पहुँची थी। पेशावर एक्सप्रेस रात के एक बजे जेहलम से गुजरती थी। नासिरा टिकट लेकर प्लेटफार्म पर पहुँची ही थी कि गाड़ी आ पहुँची। जनाना डब्बा ढूँढ़कर वह उसमें जा बैठी।

जब गाड़ी चल पड़ी तो उसने सोचा कि अब आगे के विषय में विचार करना चाहिए। घर से चलते समय उसके पास लगभग एक सौ रुपया था। इसके अतिरिक्त चार सोने की चूड़ियां, कानों में बुन्दे, नाक में सोने की कील उसने पहिन रखी थी। वह इन सबका मूल्य केवल एक सौ रुपये तक आँकती थी। कपड़े उसके पास केवल वे ही थे, जो वह उस समय पहने हुए थी।

रेल के उस डब्बे में दो औरतें और भी थीं, किन्तु वे सो रही थीं। नासिरा भी कम्बल ओढ़कर सोने का बहाना करने लगी। वह लेटे–लेटे विचार कर रही थी कि लाहौर में वह कहाँ जाएगी। उसकी समझ में कुछ आ नहीं रहा था। पेशा करने का तो उसका विचार तक नहीं था। रुपये कुछ तो उसके पास थे, किन्तु उतने रुपयों में तो जीवन भर का निर्वाह नहीं हो सकता था। आत्महत्या करने का भी उसका विचार नहीं था।

तो फिर क्या किया जाए? इसका उत्तर सोचते हुए उसके मन में अनेक विचार आए और तब तक गुजरांवाला आ गया। उन दो औरतों में से एक वहाँ उतर गई। स्टेशन पर उसको लेने के लिए उसके सम्बन्धी आए हुए थे। उसके पास एक सन्दूक और बिस्तर था। कुली ने जब उसका सन्दूक निकाला तो उसकी गड़गड़ाहट से बराबर की सीट पर सोई हुई दूसरी औरत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की नींद खुल गई। नासिरा तो जागी नहीं, क्योंकि वह सोई ही नहीं थी। जब वह उतरने वाली स्त्री उतर गई और उस स्टेशन से उस जनाने डब्बे में अन्य कोई स्त्री सवार नहीं हुई। नासिरा के बराबर की लेटी हुई औरत ने पुनः सीट पर सोने का प्रयत्न किया। इस समय प्रातः के पाँच बज रहे थे। गाड़ी के चलते ही वह स्त्री पुनः उठी और शौचादि के लिए चली गई।

नासिरा अभी तक भी निश्चय नहीं कर पाई थी कि लाहौर में वह कहाँ जायेगी। वह रहने वाली अमृतसर की थी। चौदह वर्ष की आयु में जब वह माता–पिताविहीन हुई तो दलालों के हाथ पड़ गई। वे उसको गुजरांवाला ले गए और वहाँ उसको गाने तथा नाचने की शिक्षा देते रहे। इसके अतिरिक्त वेश्यावृत्ति के योग्य अन्य चलन भी उसको सिखाया गया।

इस प्रकार सीखते हुए जब नासिरा सोलह वर्ष की हुई तो उसको लाहौर में लाकर अनारकली बाजार नें एक औरत के संरक्षण में एक बैठक पर बिठा दिया गया। उन दिनों वेश्यावृत्ति के लिए किसी प्रकार के न तो लाइसेंस की आवश्यकता होती थी और न ही इस कार्य के लिए कोई मोहल्लाही निश्चित किया गया था। सब कुछ अनियन्त्रित ही चलता था।

उसके आने के पाँच साल बाद वहीदन नाम की लड़की साथिन बन गई। वहीदन उससे इस पेशे की निन्दा किया करती थी। पहले तो वह वहीदन को बेवकूफ समझती रही किन्तु धीरे–धीरे उसके विचारों में भी परिवर्तन होने लगा। वह समझने लगी थी कि वास्तव में उसके साथ अन्याय और अत्याचार हो रहा है। धीरे–धीरे उसने अपना ध्यान गाने–बजाने की ओर अधिक आरम्भ कर दिया।

जब वहीदन के परिजनों ने पुलिस की सहायता से उस बैठक पर छापा मार कर बुद्धू मियाँ, उसके भाई तथा नौकर को पकड़ लिया और वहीदन को अपने घर ले गए तो नासिरा अकेली रह गई। वह परेशानी अनुभव करती थी कि क्या करे? सौभाग्य से उसी सायंकाल नौकरानी लौट आई और अगले दिन बुद्धू मियाँ भी छूट कर आ गया। बुद्धू मियाँ का कहना था कि पुलिस को बहुत कुछ देना पड़ा है। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को हिन्दुओं के खिलाफ भड़काना पड़ा है।

उस समय नासिरा यह तो समझने लग गई थी कि वहीदन को छुड़ाकर उसके परिजनों ने ठीक ही किया है। इस पर जी अपने लिए जीविकोपार्जन का कोई अन्य साधन न पा, वह अपना कार्य करती रही। मुकदमा होते–होते ही नासिरा और शमशाद में परस्पर वचन हो गया और मुकदमे में बुद्धू मियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
के कहने के विपरीत साक्षी देने के दिन ही, वह फिर अपनी बैठक में लौटकर नहीं आई।

उस दिन से वह चंघर मोहल्ले के एक मकान में शमशाद के साथ रहने लगी।

वहीदन के हिन्दू होने और शमशाद के मित्र जवाहर के पड़ोस में उसके माता–पिता के रहने का ज्ञान तो उसको जवाहरलाल को चिट्ठी देने के दिन से ही था। इस कारण वह शमशाद से कहती रहती थी कि उसकी मुलाकात वहीदन से कराई जाये। किन्तु यह भेंट तब ही हो पाई, जब जवाहरलाल के भाई रत्नलाल का नामकरण–संस्कार हुआ। इसके बाद जवाहरलाल से उनकी मेल–मुलाकात रही। समय पर नासिरा के भी लड़का हुआ। जवाहरलाल का उनके घर में आना–जाना था। लड़का होने के बाद अपनी अनुपस्थिति में जवाहर का नासिरा से मिलना शमशाद को अखरा और इससे दोनों मित्रों में अनबन हो गई।

जब नासिरा को इस अनबन का ज्ञान हुआ तो वह इसका कारण जानने का यत्न करने लगी। परन्तु उसे सफलता नहीं मिली। इस समय तक उसको वहीदन का वास्तविक नाम भी विदित हो गया था।

साधना से नासिरा की दूसरी और अन्तिम भेंट शमशाद के अपने बाप की जमींदारी में जाने से पहले हुई थी।

उसने जवाहरलाल को उसकी बधाई की चिट्ठी का उत्तर दिया था और उसमें उसने पति और जवाहर में हुई अनबन के बारे में भी पूछा था कि यह क्यों हुई?

गाड़ी गुजरांवाला स्टेशन से निकली तो वह भी उठकर बैठ गई। इस समय तक नासिरा को इस अन्धकारमय संसार में केवल जवाहरलाल ही एक आश्रय दिखाई दिया था। उसका मन कह रहा था कि वहाँ उसको शरण मिलेगी और पथ–प्रदर्शन भी। उसका विचार एक बार बुद्धू मियाँ की बैठक की ओर भी गया। परन्तु एक तो यह विदित होने के कारण कि उसके वहाँ से चले आने के बाद बुद्धू मियाँ ने बैठक छोड़ दी थी और दूसरे उसको उस वृत्ति से अरुचि हो गई थी, उसने उस पर ध्यान नहीं दिया।

वह जवाहरलाल के पिता के घर जाने का मन–ही–मन निश्चय कर चुकी थी। जब रेल के डब्बे की साथिन शौचघर से निकली तो वह पेशाब करने चली गई। जब वह उठकर गई तो दूसरी औरत उसकी ओर बहुत ध्यान से देखती रही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब नासिरा लौट कर अपनी सीट पर बैठ कम्बल ओढ़ने लगी तो दूसरी औरत ने पूछ लिया, "आप कहाँ जा रही हैं?"

"लाहौर।"

"वहाँ आप किस मुहल्ले में रहती हैं?"

नासिरा जवाहरलाल के मुहल्ले का नाम नहीं जानती थी। इस कारण विचार करने लगी। फिर कुछ विचार कर बोली, "मेरी एक सहेली है, मैं उसके पास जा रही हूँ। उसके मकान का वैसे तो मुझे पता है, लेकिन मैं उस मुहल्ले का नाम नहीं जानती।"

"और आप आ कहाँ से रही हैं?" मुस्कराते हुए उसने पूछ लिया।

"जेहलम से।"

इस पर उस औरत ने अपना परिचय बताते हुए कहा, "मैं बम्बई की रहने वाली हूँ। वैसे मैं भी हूँ तो पंजाबिन ही, किन्तु शादी एक गुजराती से हुई है। मेरा नाम रुक्मिणी है।"

"इधर कैसे आई हैं?" नासिरा ने पूछा।

"मेरी माँ रावलपिण्डी में रहती हैं। मैं उससे मिलने के लिए आई थी।"

"अब बम्बई जा रही हैं क्या?"

"हाँ।"

"सुना है बहुत बड़ा और खूबसूरत शहर है वह?"

"हाँ, वह सुन्दर और असुन्दर, दोनों ही तरह का है। साथ ही साथ बड़ा और छोटा भी। भलाई–बुराई दोनों का नमूना है।"

"तो आप उसके मुताल्लिक बहुत कुछ जानती हैं?"

"हाँ, मैं तो सारे नगर से परिचित हूँ।"

नासिरा ने दीर्घ श्वास छोड़ा। विचार की दौड़ में एक समय वह बम्बई भी पहुँची थी। परन्तु उस बड़े नगर में जाकर क्या करेगी, यह वह समझ नहीं पाई थी। इसके बाद ही वह लाहौर रामरक्खामल्ल का आश्रय ढूँढ़ने की इच्छा कर बैठी थी।

नासिरा को ठण्डा साँस लेते देख रुक्मिणी ने पूछा, "बम्बई चलने को चित्त करता है क्या?"

"बम्बई का नाम ही कुछ ऐसा है कि उसको देखने का किसका मन नहीं करेगा? मगर सब काम सब वक्त नहीं हो सकते।"

"क्यों, आपके लिए यह काम इस वक्त क्यों नहीं हो सकता? क्या नाम है आपका?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी तक तो नासिरा ने अपना छद्म नाम भी नहीं सोचा था। इससे वह फिर विचार में पड़ गई। उसको गहन विचारों में लीन देख रुक्मिणी ने कहा, "मैं एक बात बताऊँ, जो मैं समझ पाई हूँ? नाराज न हों तो बताऊँ?"

"हाँ, बताइये।" नासिरा ने कहा। इस समय तक वह अपना नाम सोच चुकी थी।

रुक्मिणी ने कहा, "आप घर से भाग कर जा रही हैं और आपको यह विदित नहीं है कि आप किधर जा पहुँचेंगी।"

एक क्षण के लिए नासिरा हँसी, परन्तु अगले ही क्षण वह चुप हो गई। उसके मुख पर गम्भीरता छा गई। इस पर रुक्मिणी ने पूछा, "क्या मेरा अनुमान गलत है?"

"यह आप किस प्रकार कह रही हैं?"

"आप किसी धनी परिवार की स्त्री हैं। यह आप के नाक की कील और उसमें जड़े हुए हीरे से पता चलता है। इस पर भी आपके पास कोई सामान नहीं है, यहाँ तक कि रात के सोने लिए कपड़े नहीं। बदलने के लिए कपड़े नहीं। इसके अतिरिक्त आप हिन्दू सहेली के घर जा रही हैं। जिसका आप नाम तो जानती हैं किन्तु पता नहीं। आप मुसलमान हैं और किसी भी अमीर घराने की औरत बिना बुर्के के बाहर नहीं निकलती।"

"आप यह कैसे कहती हैं कि मैं मुसलमान हूँ?"

"आपका जूता देखकर। हमारे यहाँ ऐसा जूता मुसलमान औरतें ही पहनती हैं और आप बोलती भी अच्छी उर्दू हैं। आपका फारसी का उच्चारण बहुत साफ है।"

नासिरा समझ गई कि यह औरत समझदार है। इसके सम्मुख झूठ बोलने से काम नहीं चलेगा। इस पर भी उसने निश्चय कर लिया था कि अपने घर वाले और परिवार का पता नहीं देगी।

वह अभी इस विषय में विचार ही कर रही थी कि अपनी साथिन को कितना बताये और कितना उससे गुप्त रक्खे कि रुक्मिणी ने हँसते हुए कहा, "आपने अपना कुछ नकली नाम भी रख लिया है कि नहीं?"

इस पर नासिरा हँस पड़ी और बोली, "रख लिया है। मेरा नाम राधा है।"

"राधा नाम तो बहुत सुन्दर चुना है। मैं आपके पीछे वालों का पता नहीं पूछूँगी। यह पूछना भी नहीं चाहिए। हाँ, यदि चाहें तो यह बता सकती हैं कि किस कारण आप घर से भाग आई हैं।"

"मेरे घरवाले ने मुझे निकाल दिया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय गाड़ी शाहदरा स्टेशन से आगे निकल गई थी। कुछ विचार कर रुक्मिणी ने पूछा, "राधाजी! लाहौर में जाकर क्या करेंगी? मेरे साथ चलिए। मैं आपको इस मुश्किल में से निकलने का रास्ता बता सकती हूँ।"

"कैसे?"

"मेरे साथ बम्बई चलिए।"

"मगर मेरे पास लाहौर का टिकट है?"

"वह तो आगे के लिए भी बन जायेगा।"

"मेरे पास सिर्फ एक सौ रुपया है।"

"बहुत है। दिखाइये टिकट।"

नासिरा ने झिझकते हुए टिकट निकाला। रुक्मिणी ने टिकट देख अपने पर्स में रखते हुए कहा, "आप बैठी रहिए। मैं सब प्रबन्ध कर दूँगी।"

रुक्मिणी थर्ड क्लास में यात्रा कर रही थी, क्योंकि फर्स्ट क्लास में महिलाओं के लिए कोई पृथक् डब्बा नहीं होता था। नासिरा थर्ड क्लास में इसलिए यात्रा कर रही थी, क्योंकि उसके पास फालतू रुपये नहीं थे। रास्ते में रुक्मिणी ने अपनी कहानी बताते हुए कहा, "कई वर्ष पहले की बात है, हम रावलपिण्डी में रहते थे और वहीं मेरी शादी भी हुई। शादी के दो महीने के अन्दर ही मैं विधवा हो गई। सुसराल वालों ने मुझे घर से निकाल दिया। मेरे सास और श्वसुर नहीं थे केवल जेठ थे। उन्होंने मेरे हाथ पर पाँच सौ रुपया रख कर मुझे माँ के घर भेज दिया। मेरी माँ बेचारी भी विधवा थी। अपनी मजदूरी और पाँच सौ रुपये से हमने पाँच साल निकाले। इस अवधि में दिन-रात काम करते हुए हम थक गई थीं। मैं दो कुरते सी कर दर्जी को देने उसकी दुकान पर गई तो कुरते लेकर दर्जी ने कहा कि पैसे फिर मिलेंगे। जब मैंने कहा कि हमारे पास तो आज के खाने लिए भी कुछ नहीं है तो वह कहने लगा, 'ग्राहक ये कुरते कल ले जावेगा और अगर पैसे दे गया तो परसों तुम्हें चार आने मिल जावेंगे।'

"मैं परेशान थी। अपना कोट सिलवाने के लिए आया हुआ एक आदमी वहाँ खड़ा हमारी बातें सुन रहा था। मैंने दर्जी से रोनी सूरत बना कर कहा, 'भापा! तुम ठीक कहते हो। परन्तु हमारे पास तो आज ही खाने के लिए नहीं है।'

"उसने तुरन्त कह दिया, 'मेरें पास भी देने के लिए कुछ नहीं है।'

"इस पर उस आदमी ने कहा, 'हैं तो? पाँच रुपये तो अभी मैंने ही दिए हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर दर्जी बोला, 'वह तो जिसने कोट सिया है, उसको दे दूँगा।'

"उस आदमी ने पूछा, 'ग्राहक से कुरते की सिलाई क्या लेते हो?'

" 'चार आने।' दुकानदार ने कहा।

" 'तो उसमें से दो आने का कुरता तुम दे ही सकते हो। तुमको तो चार आने मुफ्त में ही बच रहे हैं।'

"मेरे गालों पर आँसू टपकने लगे थे। उसने केवल यह कहा, 'बहुत ही जालिम मालूम होते हो!' फिर मेरी ओर देख कर बोला, 'कहाँ रहती हो तुम?'

" 'इसी साथ वाली गली में।'

" 'और कौन हैं तुम्हारे साथ?'

" 'मेरी माँ है।'

"उस दर्जी ने अपनी उदारता दिखाने के लिए कह दिया, 'माँ–बेटी दोनों विधवा हैं। मैं इनको पन्दह–बीस रुपये महीने का काम देता हूँ, इस प्रकार मजे में इनका गुजारा हो जाता है।'

"उस भद्रपुरुष ने कहा, 'चलो, तुम मुझे अपनी माँ से मिला दो। मैं तुम्हें और अच्छा काम दिलवा दूँगा। उससे तुम दो रुपये रोज से अधिक कमा लिया करोगी।'

"मैं निराश दर्जी की दुकान से लौटी तो वह मेरे पीछे–पीछे चल पड़ा। मैंने अपनी चलने की गति तीव्र की तो वह भी लम्बे–लम्बे डग भरता हुआ मेरे साथ आकर कहने लगा, 'डरो नहीं। मैं खूँखार जानवर नहीं हूँ।'

"मैंने उसके मुख पर देखा तो सत्य ही वह मुझे भला व्यक्ति प्रतीत हुआ। मैं जब अपने मकान के नीचे पहुँची तो उसने वहीं खड़े होकर कहा, 'मैं यहाँ पर खड़ा तुम्हारी माँ की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। तुम उसको यहाँ भेज दो।"

"मैंने माँ के पास जाकर जब सारी घटना उसे बताई तो वह मुझे वहीं छोड़ बाहर चली आई। लगभग आधे घण्टे तक दोनों में बातचीत होती रही। माँ जब लौटकर भीतर आई तो उसके हाथ में बहुत से नोट थे। माँ ने मुझसे केवल यही कहा, 'हम कल बम्बई चलेंगे।'

" 'क्या है वहाँ?' मैंने पूछा।

"तुम्हारी नौकरी लग गई है। काम सीखने तक पचास रुपये महीना। काम सीख जाने पर दो सौ रुपये महीना और लाभ पर एक आना रुपया कमीशन।"

" 'क्या करना होगा?"

" 'नाटक करना।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं दो सौ रुपये सुन कर तो मुग्ध हो गई थी, परन्तु नाटक, मैं समझ नहीं सकी कि होता क्या है? मैंने माँ से पूछा, 'वह होता क्या है?'

" 'तुमने रामलीला देखी है?'

" 'बहुत छोटी अवस्था में देखी थी। मुहल्ले के लड़के राम–रावण का खेल खेला करते थे।'

"मैंने माँ के मुख पर प्रश्न भरी दृष्टि से देखा तो उसने कहा, 'कुछ वैसा ही है। मैं साथ जाऊँगी तो मुझे पच्चीस रुपया महीना मिलेगा। दोनों को भोजन तथा मकान कम्पनी की ओर से मिलेगा।'

"मैं विचार करती थी कि माँ ने यह स्वीकार करके ठीक किया है अथवा नहीं? मुझे विचारों में लीन देख माँ ने कहा, 'छः मास का वेतन चार सौ रुपये और बम्बई जाने का भाड़ा पचास रुपये वह पहले ही दे गया है। साथ ही अपना नाम–पता भी बता गया है। साढ़े सात बजे से पहिले ही हमें स्टेशन पर पहुँच जाना चाहिए।'

"हम स्टेशन पर गये और टिकट खरीद कर गाड़ी वाले प्लेटफार्म पर पहुँचे ही थे कि वही आदमी एक अन्य स्त्री के साथ हमें वहाँ खड़ा दिखाई दिया। वह उस औरत को लेकर हमारे पास आकर कहने लगा, 'सरला! यह है रुक्मिणी देवी। नाटक कम्पनी में काम सीखने के लिए बम्बई चल रही है।'

"मैं भूमि की ओर देखती हुई खड़ी थी। उस औरत ने मुझे ध्यान से देखा होगा। उस आदमी ने उससे पूछा, 'क्या देखा है सरला!"

" 'ठीक है। देखें, सीख कर क्या बनती है।'

"मेरी बाँह में बाँह डालकर वह मुझे दूर ले गई। वहाँ जाकर उसने कहा, 'रुक्मिणी! तुम बहुत सुन्दर हो। और देखो, यदि इस सौन्दर्य की रक्षा कर सको तो बहुत सुखी रहोगी। बम्बई अच्छी जगह नहीं है। कभी कोई कठिनाई आए तो मुझसे पूछ लेना। मैं सदा तुम्हारी सहायता करूँगी।'

"सरला का घर वाला लाहौर का कोई धनी था। उसने बम्बई में नाटक कम्पनी खोल रक्खी थी। कश्मीर की सैर से लौटता हुआ वह रावलपिंडी में ठहर गया था। वहाँ एक कोट की मरम्मत करवाने गया तो मैं मिल गई। उसका भी यही अनुमान था कि मैं सुन्दर हूँ। अपने सौन्दर्य की इतनी प्रशंसा मैंने प्रथम बार ही सुनी थी।

"वे भी उसी गाड़ी के फर्स्ट क्लास के डब्बे में यात्रा कर रहे थे। हम दोनों माँ–बेटी थर्ड क्लास के जनाने डब्बे में बैठी थीं। उनके साथ एक नौकर भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था जो उनके कहने पर मार्ग में हमारे खाने–पीने और अन्य सुख–सुविधा का प्रबन्ध करता रहा।

"बम्बई पहुँचकर, जिस मकान में कम्पनी के नौकर रहते थे, उसमें रहने के लिए हमको एक कमरा मिल गया। भोजन की व्यवस्था सबके लिए साँझी थी। मध्याह्न में सब काम सीखते थे और सायंकाल थियेटर में उपस्थित होकर, कुछ तो अपना–अपना काम करते थे, शेष देखते और फिर अगले दिन प्रातः के अल्पाहार के बाद पिछले दिन के खेल पर डायरेक्टर टीका–टिप्पणी करता था। वह उनके गुण–दोष बताता था।

"बम्बई पहुँचते ही मुझे एक उस्ताद के पास गाना सीखने के लिए भेज दिया गया। वहाँ मैं एक घण्टे तक सीखा करती थी और एक घंटा थियेटर में गाने लायक गाने का भी अभ्यास किया करती थी।

"एक दिन हमारे मालिक की पत्नी सरला आई और मेरे अभ्यास का काम देखती रही। फिर मुझसे कहने लगी, 'रुक्मिणी! तुम बहुत अच्छा गाने वाली बन सकती हो और इसी से हजार दो हजार रुपया मासिक पैदा कर सकती हो। तुम्हें प्रातः चार बजे उठकर अभ्यास करना चाहिए।'

"उसने मुझे एक हारमोनियम भेज दिया और मैं प्रातः चार बजे उठ कर अभ्यास करने लगी। तीन महीने तक उस्ताद से सीखने के बाद मुझे एक अन्य उस्ताद के पास भेज दिया गया। अब तक मैं गजल और दादरा बड़ा सुन्दर गाने लगी थी। किन्तु सरला देवी को इससे सन्तोष नहीं हुआ। उसने मुझे शास्त्रीय संगीत सीखने पर लगा दिया।

"इस प्रकार अभ्यास के छः मास व्यतीत होते–होते मैं एक बहुत अच्छी गाने वाली समझी जाने लगी। अब तानपूरे के साथ गाया करती थी। कुछ–कुछ तानालाप भी लेने लगी थी। मुझे ठुमरी गाने का विशेष अभ्यास कराया गया।

"एक दिन थियेटर कम्पनी के मालिक मनोहरलाल वर्मा आए और मेरी परीक्षा ली गई। उस दिन मुझे यह भी विदित हुआ कि वर्मा जी और उनकी पत्नी दोनों ही गाने में निपुण हैं। उसी दिन मुझे यह भी विदित हुआ कि अपना शौक पूरा करने के लिए उन्होंने यह नाटक कम्पनी खोल रक्खी है। मेरी परीक्षा लेने के उपरान्त 'बिल्व मंगल' नाटक में मुझे रकासा का अभिनय करने के लिए कहा गया।

"मुझे डायलॉग कंठस्थ कराये गए। गाने और अभिनय का अभ्यास कराया गया। मेरी कला और बिल्वमंगल नाटक की, समाचार–पत्रों द्वारा धूम मचा दी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। नियत दिन मुझे मंच पर लाया गया। मैंने वेश्या का अभिनय इतनी निपुणता से किया कि देखने वाले 'वन्स मोर' के नारों से नाटक आगे चलने ही नहीं देते थे। मैंने एक ठुमरी गाई और इतनी पसन्द की गई कि वह ठुमरी मुझे दस बार गानी पड़ी।

"प्रथम बार बम्बई के रंगमंच पर तानपूरे और सारंगी के साथ एक अभिनेत्री गाने के लिए उतारी गई थी। इससे पूर्व रंगमच पर पारसियों का अधिकार था और वे वेश्याओं का वह रूप प्रस्तुत नहीं कर सके थे, जो कि वास्तविक था। वेश्या की बैठक और वहाँ गाने–बजाने तथा अभिनय को वर्माजी ने ऐसा वास्तविक बनाया था कि देखने वाले मुग्ध हो गए।

"जो नाटक नित्य प्रति रात को साढ़े बारह बजे समाप्त हो जाया करता था, उस दिन दो बजे समाप्त हुआ। और फिर तीन मास तक निरन्तर यही नाटक चला। बम्बई–भर में इसकी धूम मच गई। मेरे चित्र छपे, भेंट–स्वरूप रुपए और मोहरें मंच पर फेंकी जाने लगीं।

"सरला नित्यप्रति मुझसे मिलती थी और अधिक उन्नति के लिए मुझे प्रोत्साहित करती रहती थी। हमारा डायरेक्टर शिवराज घटाटे नामक एक मराठा व्यक्ति था। वह भी मेरी सफलता पर चकित रह गया। उसका कथन था कि इस सफलता के दो रहस्य हैं। एक तो मेरा सौन्दर्य और दूसरा वह वातावरण जो वाद्य–यन्त्रों और रूपसज्जा ने मंच पर तैयार किया था।

"उसका यह निश्चित मत था कि मेरा संगीत न तो शास्त्रीय है और न नाटकीय पद्धति का ही। इससे शीघ्र ही यह नापसन्द हो जावेगा। इसके विपरीत कम्पनी के संचालक का कथन था कि मेरी सफलता का रहस्य एक तो मेरा अभिनय है, जिसको वह अद्वितीय कहा करते थे और दूसरा नाटकीय संगीत पद्धति में शास्त्रीय संगीत कला का समावेश।

"तीन मास में नाटक के टिकटों की बिक्री नब्बे हजार रुपये हुई थी। इन तीन मासों में मुझे छः सौ रुपया मासिक वेतन और चौदह सौ रुपया कमीशन मिला। चलने को तो यह खेल और भी चल सकता था, मगर मुझे एक मास का अवकाश दिया गया, जिसमें मुझे विश्राम करने और एक अन्य नवीन नाटक का अभिनय सीखने को कहा गया। इस नवीन नाटक का नाम 'मीराबाई' था। इसका विज्ञापन तो पहले ही आरंभ हो गया था। अब नित्य रिहर्सल होने लगी।

"नाटक में कहानी लिखने वाला कहानी लिखता है। गीत लिखने वाला गीत लिखता है और डायरेक्टर नाटक के लिए वार्त्तालाप तैयार करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तदुपरांत नाट्यकार उसको रंगमंच पर प्रस्तुत करते के लिए अभ्यास किया करते हैं।

"इस दूसरे नाटक से तो मेरी ख्याति और भी बढ़ गई। इस बार तो मीरा के भजनों की झड़ी लगा दी गई। मैंने 'मीरा प्रेम दीवानी' का अभिनय भी बहुत सुन्दर किया। इस खेल ने मेरा भविष्य बना दिया। इन दिनों भेंट तो और भी अधिक मिली। मैं अमीर होने लगी। इस नाटक का अभिनय करते हुए मुझ प्रेम दीवानी के पीछे एक दीवाना घूमने लगा। यह बम्बई की बहुत सी मिलों का स्वामी एक गुजराती युवक था। वह मुझसे विवाह का इच्छुक था। मेरी माँ के मुख से निकल गया कि सरला देवी की सम्मति के बिना इस विषय में कुछ नहीं किया जा सकता। इस पर वह सरला देवी के पास पहुँच गया और उनकी स्वीकृति से हम दोनों का विवाह हो गया।

विवाह के बाद भी मैं नाटक कम्पनी में काम करती रही। परन्तु समाज में अपने पति की स्थिति का विचार कर अब मैं अभिनय नहीं करती। इस पर भी वर्माजी की कम्पनी अभी चलती है। सरला देवी भी जीवित हैं और मेरे साथ उनके बहुत अच्छे सम्बन्ध हैं। मेरे विवाह के बाद मेरी माता जी रावलपिंडी में आकर रहने लगी हैं।

"देखो राधा! मैं तुम में कुछ ऐसे गुण देखती हूँ कि तुम भी मेरी भाँति ख्याति अर्जन कर सकती हो।"

नासिरा इस आशा से कि उसको अपने संगीत और नृत्य के आश्रय जीवन–निर्वाह का साधन मिल रहा है, बहुत प्रसन्न थी।

: 2 :

बम्बई पहुँच कर सरला से राधा का परिचय कराया गया। सरला तुरन्त भाँप गई कि राधा कोई मुसलमान औरत है। उसने राधा की कहानी जैसी कि रुक्मिणी जानती थी, सुनी तो कह दिया, "राधा! यह कहानी तो अधूरी है। तुम चाहो तो न बताओ। यदि चाहो तो पूरी कहानी बता भी सकती हो। इस पर भी मेरी सहानुभूति तुम्हारे साथ है।

"हाँ, यदि तुम परिश्रम करोगी तो दूसरी अभिनेत्रियों की भाँति उन्नति, बिना अपनी वास्तविक कथा बताये भी कर सकती हो।"

नासिरा ने कहा, "मैं मुसलमानिन हूँ।" और साथ ही संक्षेप में उसने अपना इतिहास भी बता दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर सरला ने उसे अपना आशीर्वाद दिया और वह 'दि–एलफैड थियेट्रिकल कम्पनी' में काम करने लग गई। उसका नाम राधा ही रखा गया और शनैः–शनैः वह प्रगति करने लगी।

ख्याति प्राप्त करने के लिए नासिरा को चार वर्ष का कठोर परिश्रम करना पड़ा और तब उसकी ख्याति कम्पनी से बाहर के क्षेत्रों में प्रसारित होने लगी। गाने तथा नाच के समारोहों में उसकी माँग होने लगी और बम्बई में संगीत नृत्य प्रेमियों के मुख पर राधा का नाम नृत्य करने लगा।

इस समय बम्बई में प्रथम बार सिनेमैटोग्राफ अर्थात् मूक चलचित्र आया। इसके चित्र अभी तो विलायत से ही बनकर आते थे। परन्तु मनोहरलाल समझ गया कि यह नाट्यकला को मात कर देगा। इस पर विचार कर उसने अपनी कम्पनी बेच दी। वह स्वयं सिनेमा उद्योग का कार्य सीखने के लिए विलायत चला गया। उसकी कम्पनी एक पारसी ने खरीद ली। उसने इसका नाम 'दि न्यू एलफ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी' रक्खा। राधा से नया वचन–पत्र लिखाया गया। उसका सात सौ रुपये मासिक वेतन नियत किया गया। यात्रा करने पर प्रथम श्रेणी का रेल–भाड़ा और दस रुपया नित्य का भत्ता उसे देने का वचन था। टिकट बिक्री पर कमीशन की कोई व्यवस्था नहीं थी।

इस पर नासिरा बहुत प्रसन्न थी। कम्पनी का मालिक नासिरा से प्रेम करने लगा था। और ऐसे भी समय आने लगे, जब वह उसको प्रसन्न करने के लिए राजी हो जाया करती थी। सन् 1906 में कम्पनी के मालिक ने कम्पनी के भारत भर के दौरे का कार्यक्रम बनाया। समाचार, पत्रों में इस कार्यक्रम की धूम मचा दी गई और फिर दौरा आरम्भ किया गया। नासिरा जानती थी कि उसका पति लाहौर में प्रोफेसर है। इस पर भी अपने हिन्दुआना नाम के कारण और शमशाद को थियेटर का शौक न होने के कारण, नासिरा समझ रही थी कि वह उसकी दृष्टि में नहीं पड़ेगी।

कम्पनी बम्बई से नागपुर, लखनऊ, कलकत्ता, पटना, दिल्ली, लाहौर पेशावर और कराची जाने वाली थी। सब पर्दे, दृश्य, पोशाकें तथा अन्यान्य वस्तुएँ सन्दूकों में बन्द कर स्थान–स्थान पर ले जाने का प्रबन्ध था। इन बड़े–बड़े नगरों में 'हॉल' रिजर्व कर लिए गये थे।

दौरा आरम्भ हुआ, किन्तु कम्पनी का नाम चमका कलकत्ता जाकर। वहाँ हिन्दुस्तानी नाटक की महिमा बहुत कम थी। बंगला नाटक की ही महिमा थी। इस कम्पनी के आने से पासा पलटा और हिन्दुस्तानी रंगमच की प्रतिष्ठा बढ़ गई।

In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब तक कम्पनी लाहौर पहुँची, इसकी ख्याति आकाश को छू रही थी। कम्पनी का मालिक 'खटाऊजी' स्वयं मुख्य पात्र का अभिनय किया करता था और उसके साथ राधा ही प्रायः मुख्य अभिनेत्री का अभिनय किया करती थी। दोनों ही कुशल नाट्यकार थे। जिस खेल में दोनों होते वह खेल कई दिन तक निरन्तर चलता रहता था। इस कम्पनी का एक नाटक 'दोरंगी दुनिया' के नाम में विख्यात हो रहा था। लाहौर में यह खेल लगातार एक मास तक चला। लाहौर से 'पैसा' नामक एक समाचार पत्र निकलता था। उसमें इस खेल पर एक प्रकार का विवाद चल पड़ा।

इस विवाद का परिणाम यह हुआ कि हाल नित्य भरा रहने लगा। कई दिन पहले ही टिकट बिकने लगे।

खेल का कथानक था, बम्बई का एक धनी–मानी सेठ मानकराव बहुत धर्म–कर्म करता था। उसने कई मन्दिर बनवाये थे। उसका एक अनाथालय भी चलता था। वह जहाँ जाता था, सभी उसकी प्रशंसा किया करते। उसको पुष्पमालाएँ पहनाई जातीं। समाचार–पत्रों में उसके चित्र छपते। उसके जीवन–चरित्र प्रकाशित होते।

उसकी एक धर्मपत्नी थी– सौभाग्यवती। वह बेचारी नित्य पूजा–पाठ में संलग्न रहा करती थी। बिना ग्यारह ब्राह्मणों को भोजन कराये स्वयं भोजन नहीं करती थी। सेठ मानकराव की एक रखैल थी, जिसका नाम जंजीरा था। वह यहूदी थी। दोनों में परस्पर बहुत प्रेम था। किन्तु सेठ साहब के यश की भागिनी थी सौभाग्यवती ही। जंजीरा के विषय में कोई जानता ही नहीं था।

सेठ साहब का स्मगलिंग का व्यापार था। वे अफ्रीका से सोना और दक्षिणी अमरीका से चाँदी मँगवाते थे और बिना चुंगी दिये देश में प्रविष्ट कराते थे। इस व्यापार का परिणाम यह होता था कि वे तीन–चार लाख रुपया ऊपर कमा लिया करते थे।

जंजीरा को सेठ साहब के इस व्यापार का ज्ञान हुआ तो उसने उनको इस व्यापार को न करने का आग्रह करना आरम्भ कर दिया। किन्तु सेठ साहब नहीं माने। इस पर जंजीरा रूठने लगी। फिर भी दोनों में संबन्ध बना रहा। धीरे–धीरे जंजीरा सेठ साहब की प्रेमिका रहते हुए भी उनके धन को अपने प्रयोग में लाना छोड़ने लगी। वह बहुत कम पैसों पर निर्वाह करने लगी। मकान की सज–धज के लिए जो सेठ साहब लाखों रुपये देते थे, वह गरीबों में बाँट देती थी।

दोनों में इस विषय पर बात होती तो जंजीरा कह देती, "मेरे लिए आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पाप कर्म न कीजिये। मुझको कुछ न दीजिये। मैं सूखी खाकर भी आपकी सेवा करूँगी, परन्तु यह काम आप छोड़ दीजिये।''

सेठ मानकराव हँस देता और अपने ढर्रे पर चलता रहता। एक दिन सेठ पकड़ा गया जेल के अधिकारी को धन देकर वह वहाँ से फरार हो गया। उसकी पूर्ण सम्पति जब्त हो गई। सौभाग्यवती को इस घटना से इतना आघात पहुँचा कि उसकी हृदय–गति रुक जाने से मृत्यु हो गई।

सेठ साहब जेल से भागकर जंजीरा के घर में जा पहुँचे। पुलिस ने वहाँ भी पीछा किया, तो जंजीरा उनको लेकर भाग खड़ी हुई। स्थान–स्थान पर पुलिस चौकियों, बैंकों, सार्वजनिक स्थलों, धर्मशालाओं, चौराहों, कचहरियों और अस्पतालों में सेठ साहब के फोटो लगवा दिये गए।

सेठ को लेकर जंजीरा कलकत्ता जा पहुँची। सेठ का नाम बदलकर एक बहुत ही निर्धन के झोंपड़े में उसको रक्खा गया। स्वयं सड़कों और गलियों में भीख माँग–माँगकर जंजीरा उसका पालन करने लगी। सेठ इस अवस्था को सहन करता रहा, परन्तु एक दिन जंजीरा घायल अवस्था में झोपड़े में पहुँची। सेठ ने जब उससे इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि एक आदमी उसको भिक्षा देने के बहाने अपने घर के भीतर ले गया था। वहाँ उस पर बलात्कार करने लगा तो दोनों में लड़ाई होने लगी। जंजीरा के हाथ में उसका रिवाल्वर आ गया। उसने उस पर गोली चला दी और वह वहीं ढेर हो गया।

इस लड़ाई में जंजीरा भी घायल हो गई थी। झोपड़ी में पहुँच सेठ ने जंजीरा के घावों पर तेल की पट्टी करनी आरम्भ की ही थी कि जंजीरा का पीछा करती हुई पुलिस उस झोंपड़े में आ पहुँची। जंजीरा कत्ल के अपराध में पकड़ी गई और सेठ भी पहचान लिया गया तथा उसको स्मगलिंग के अपराध में बन्दी बना लिया गया।

सेठ का मुकदमा बम्बई में चला। अब मित्र–सम्बन्धी और वे लोग, जो उससे दान–दक्षिणा एवं सहायता लिया करते थे, उससे मुँह मोड़ गए। जंजीरा के पास एक पैसा भी नहीं था, जिससे वह अपना मुकदमा करती।

इस पर भी वह छूटी। उसने अपने बयान में कहा था कि उसने अपने सम्मान की रक्षा के लिए रिवाल्वर उठाया था। बिना वकील के ही वह अपना मुकदमा लड़ती रही। बन्दी बनाये जाने के तीन मास उपरान्त जब वह छूटी तो तब तक सेठ मानवराव के मुकदमे का निर्णय होकर उसको सात वर्ष का कठोर कारावास का दण्ड मिल चुका था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात वर्ष तक जंजीरा भिक्षार्जन से निर्वाह करती रही। अपनी भिक्षा से थोड़ा बचाकर वह सेठ से जेल में मिलने जाते समय कुछ फल–मिठाई आदि ले जाती थी। इन वस्तुओं में अधिकांश तो जेल के अधिकारी हजम कर जाते थे। इस पर भी यह जान कि सेठ को कुछ अंश तो मिलता ही है, जंजीरा के मन में संतोष होता है।

सेठ साढ़े छः वर्ष का कठोर दण्ड भोगकर रुग्णावस्था में जेल से छूटकर आया और भिखारियों की बस्ती में पहुँच, जंजीरा के घुटनों पर सिर रखते ही उसका प्राणान्त हो गया। इस घटना से नाटक का अन्त होता था।

नाटक के मुख्य कलाकार खटाऊजी और राधा ही थे।

न केवल नाटक के कथानक की ही धूम थी, प्रत्युत नाट्यकारों के अभिनय की भी सब प्रशंसा किया करते थे। नाटक को चलते हुए बीस दिन हो चुके थे। एक दिन जवाहरलाल ने अपने पिता के सम्मुख अपनी इच्छा प्रकट की कि वह उक्त नाटक देखना चाहता है। जवाहरलाल इस समय मेडिकल कॉलेज में पढ़ता था। अब तक वह दो बच्चों का बाप बन चुका था।

आर्थिक दृष्टि से पिता पर निर्भर होने के कारण इस प्रकार मनोरंजन के स्थानों पर वह उनकी आज्ञा के बिना नहीं जा सकता था। अब तो साधना को भी साथ में ले जाने का वह विचार कर रहा था।

नाटक देखने के लिए जाने का विचार उत्पन्न हुआ था सरवर के दिमाग में। वह नियमपूर्वक 'सिविल ऐन्ड मिलिटरी गजट' पढ़ा करती थी। इस कम्पनी के नाटक 'दोरंगी दुनिया' पर उस पत्र में समालोचना छपी थी। एक अंग्रेजी समाचार पत्र में समालोचना छपने पर उसने अपने पति से चलने के लिए कहना आरम्भ कर दिया और अन्त में एक दिन शमशाद को उसका आग्रह मानना ही पड़ा। वह चार सीटें बुक करा आया और फिर मेडिकल कॉलेज जाकर अपने मित्र जवाहरलाल को साथ चलने का निमन्त्रण भी दे आया।

जवाहरलाल ने कहा, "इसमें दो कठिनाइयाँ हैं। एक तो पिताजी से स्वीकृति लेने की और दूसरे बच्चों की।"

"दूसरी मुश्किल तो हमारी भी है। सरवर के दो बच्चे हैं और छोटा तो अभी छः मास का ही है। तुम ऐसा करो, अपने बच्चों को लेकर आठ बजे से पहले मियाँ–बीवी हमारे घर आओ। बच्चों के लिए यहाँ अम्मी हैं। जहाँ वे दो की देखभाल करेंगी, वहाँ चार की भी कर लेंगी। तुम नाटक के बाद वहीं आ जाना और सवेरे अपने घर चले जाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पिताजी से पूछना होगा।"

"कहो तो मैं चलकर तुम्हारी अर्जी पेश कर दूँ?"

"नहीं, इसकी जरूरत नहीं है। यदि इजाजत न मिली तो मैं कल बताऊँगा। तब तुम किसी दूसरे साथी का प्रबन्ध कर लेना।"

"नहीं जवाहरलाल! जायेंगे तो तुम्हारे साथ ही, नहीं तो मैं चारों टिकट फाड़कर फेंक दूँगा। देखो, रिजर्व क्लास के चार टिकट बारह रुपये में आये हैं। इतना खर्च तो मैं सिर्फ तुम्हारे लिए ही कर सकता हूँ। एक बात और है। सरवर मेरे कॉलेज के सब प्रोफेसरों से पर्दा करती है। सिर्फ तुमसे ही वह पर्दा नहीं करती। थियेटर में वह बुर्का लेकर जाना नहीं चाहती।"

"तो ऐसा करते हैं। मैं आज पूछ लेता हूँ। सब बात बताऊँगा तो वे मान जावेंगे। नहीं तो कल तुम दोनों हमारे घर पर आ जाना। फिर सरवर के कहने पर वे इनकार नहीं करेंगे।"

बात तय हो गई। सरवर और शमशाद जवाहर के घर में आते–जाते थे और रामरक्खामल्ल का इनसे विशेष लगाव था। सरवर उसको नासिरा से अच्छी लड़की मालूम दी थी। परिणाम यह हुआ कि जब जवाहरलाल ने पूरी योजना बताई तो जवाहरलाल की माता से पूछ लिया गया। उसने कहा, "बच्चों को तो मैं भी रख लूँगी। मगर नाटक में क्या होगा, इसकी बात मैं नहीं जानती।"

"जानता तो मैं भी नहीं।" रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "इतना जानता हूँ कि आजकल की कहानियों में एक राजा होता है और एक रानी। दोनों में परस्पर प्रेम होता है। रानी से अथवा राजा से कोई दूसरा युवक या युवती प्रेम करने लग जाते हैं। इस पर राजा अथवा रानी को सन्देह हो जाता है कि उसका साथी विश्वस्त नहीं रहा और फिर उस व्यक्ति की हत्या कर दी जाती है। इससे नाटक दुःखान्त हो जाता है और देखने वाले डबडबाई आँखों से बाहर निकल आते हैं।"

लेखवती बोली, "कितनी व्यर्थ की बात है! इससे अच्छा नाटक तो साधना और जवाहर ने खेला था।"

"सो तो है ही माँ! परन्तु शमशाद टिकट खरीद कर ले आया है और वह मेरे बिना जावेगा नहीं। यदि आज आपने मुझे स्वीकृति नहीं दी तो वे दोनों पति–पत्नी कल आपसे कहने के लिए स्वयं ही आवेंगे।"

"नहीं बेटा! उसको कह देना, इस काम के लिए आने की जरूरत नहीं है। तुम और साधना चले जाना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखवती सदा जवाहरलाल के पक्ष की ही बात किया करती थी। रामरक्खामल्ल कहता भी रहता था कि जवाहरलाल तुम्हारा लड़का है और रत्न मेरा।

जब जवाहरलाल ने बी. एस–सी. पास किया था तो कुछ ऐसी ही अवस्था उत्पन्न हो गई थी। उस समय लेखवती और रामरक्खामल्ल में मतभेद हो गया था। जवाहर इस परीक्षा में भी प्रान्त में प्रथम रहा था और उसको एम. एस–सी. में पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति मिलने वाली थी, परन्तु जवाहर के मन में डाक्टर बनने की लालसा थी। उसने अपने पिता से कह दिया, "पिताजी! मेरा मन डाक्टर बनने के लिए करता है।"

"व्यर्थ है।"

"क्यों?"

"तुम आयुर्वेद पढ़ो।"

"वैद्यक की तो यहाँ प्रतिष्ठा ही नहीं है।"

"किसके मन में नहीं है?"

"सरकार के मन में। पहले मैडिकल कॉलेजों में आयुर्वेद और यूनानी दोनों ही पढ़ाये जाते थे। अब पाँच–छः वर्ष से आयुर्वेद का महकमा दयानन्द कॉलिज कमेटी को और यूनानी का महकमा इस्लामिया कॉलेज को दे दिया गया है।"

"परन्तु जानते हो ऐसा क्यों किया गया है?"

जवाहरलाल जानता तो था, परन्तु वह समझता था कि उसके पिता को इस विवाद का ज्ञान नहीं होगा। यह विवाद सिविल ऐण्ड मिलिटरी गजट में छपा था। उसमें मैडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल मिस्टर सैंडरसन और एक हिन्दुस्तानी डाक्टर श्री कौल के लेख प्रकाशित हुए थे। उन लेखों का आशय सायंकाल की गोष्ठी में फकीरचन्द वकील आकर सुना गया था। रामरक्खामल्ल को यह बात अभी स्मरण थी। जवाहरलाल समझता था कि उसका पिता नहीं जानता। यदि जानता भी होगा तो ठीक बात नहीं जानता होगा। इससे वह विस्मय में अपने पिता का मुख देखता रह गया।

रामरक्खामल्ल ने कह दिया, "कॉलेज के प्रिंसिपल ने तो यह कहा था कि वह आयुर्वेद के सिद्धान्त नहीं जानता। इससे आयुर्वेद पढ़ाने वाले प्रोफेसर जो चाहते हैं, वे पढ़ा देते हैं। वह उन पर नियन्त्रण नहीं रख सकता। उन प्रोफेसरों की भाषा और आयुर्वेद के पारिभाषिक शब्दों को भी वह नहीं जानता। इस कारण वह ऐसी शिक्षा का उत्तरदायित्व नहीं ले सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"डॉ. कौल ने लिखा था कि जो लड़के आयुर्वेद और ऐलोपैथी दोनों पढ़ लेंगे, उनकी प्रतिष्ठा उन डाक्टरों से जो केवल ऐलोपैथी पढ़े हैं, अधिक हो जावेगी। यह एक गलत बात होगी।

"जवाहर! दोनों महामूर्ख थे। दोनों की युक्तियाँ थोथी थीं। इस पर भी सरकार ने निर्णय कर दिया। जानते हो क्यों? उनको हिन्दुस्तानी डाक्टर की युक्ति अधिक पसन्द आई। जिस प्रयोजन से वे हमको अंग्रेजी पढाते हैं, अंग्रेजी में अदालती काम करते हैं, अंग्रेजों को बड़े–बड़े ओहदों पर नियुक्त करते हैं और रेलगाड़ियों में भी अंग्रेजों के लिए पृथक् डब्बे रखते हैं, वही बात हमारे हिन्दुस्तानी डाक्टर ने बताई थी। अंग्रेजी चिकित्सा पद्धति की पराजय उनको स्वीकार नहीं थी।"

"परन्तु पिताजी! मैं तो इस विचार से कहता हूँ कि एक डाक्टर को पाँच और दस रुपया फीस मिलती है और वैद्य तथा हकीम को एक रुपया।"

"हाँ–हाँ, मैं यह जानता नहीं क्या? परन्तु यह भी तो उस नीति का परिणाम है जो मैंने ऊपर वर्णन की है।"

"परन्तु यह फीस तो प्रायः हिन्दुस्तानी ही दिया करते हैं। वही लोग जो वैद्य चुन्नीलाल को एक रुपया देते हैं, डॉ. बेलीराम को पाँच रुपया देते है।"

"इसमें भी वही बात है। वैद्यों और हकीमों पर सरकारी मोहर नहीं लगी और न लगने देने की बात ही डॉ. कौल ने कही थी।"

"इसीलिए मैं अपनी विद्या पर सरकारी मोहर लगवाना चाहता हूँ।"

लेखवती, जो समीप बैठी यह वार्तालाप सुन रही थी, कहने लगी, "इसमें डाक्टरी और वैद्यक की बात नहीं। न ही इसमें फीस की बात है। मैं तो यह समझती हूँ कि जवाहर चौदह जमायतें पढ़ कर जो काम अपने लिए अच्छा समझता है, उसे हम कैसे बुरा कह सकते हैं?"

"ठीक है, जवाहर तुम्हारा बेटा है। जो तुम कहोगी मैं मान लूँगा। इसी कारण मैंने रत्न को अपना बेटा मान लिया है। उसके विषय में मैं तुम्हारी बात नहीं मानूँगा।"

लेखवती कहने लगी, "वह भी देख लेंगे।"

इस प्रकार जवाहर मैडिकल कॉलेज में प्रविष्ट हो गया।

जवाहरलाल और साधना नाटक देखने गए। अपने बच्चों को वे घर पर ही छोड़ गए। उनको अकेले आये देख शमशाद ने पूछा, "बच्चे?"

"माँ के पास ही हैं।"

"इसका मतलब यह है कि तुम रात हमारे घर नहीं रहोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माँ ने कहा है रात के दो बजे अकेले इधर आकर क्या करोगे? या तो तुम दोनों को उधर ले जाऊँ अन्यथा हम दोनों तुम्हारे घर पर ठहर जावें।"

शमशाद जानता था कि रामरक्खामल्ल का परिवार अन्य हिन्दू परिवारों से विलक्षण है। दूसरे लोग तो मुसलमान के हाथ छू जाने पर भी खाना फेंक देते हैं और यह न केवल अपने बर्तनों में खिलाते हैं प्रत्युत उनको अपने घर में रखने के लिए तैयार भी हैं।

उसने सरवर से पूछा, "क्यों सरवर! क्या ख्याल है? रात को इस घर में आओगी या कूचा हिंगना में जाने का ख्याल है?"

"मैं अकेली जाने वाली होती तो इनके घर जाना पसन्द करती। अब आप साथ हैं, इसलिए जहाँ ले जावेंगे, मुझे कोई एतराज नहीं होगा।"

"और बच्चों का क्या होगा?"

"वे अम्मी के पास रहेंगे। पहले चार की देखभाल करनी पड़ती, अब तो दो की ही करनी होगी।"

"अम्मी से पूछ लो।"

शमशाद के स्वर्गीय पिता खलीफा की सबसे छोटी बेगम सुल्ताना, शमशाद के पास रहती थी। वह अपने बच्चों और वालिद साहब से लड़ पड़ी थी। उसके खाविन्द की सम्पत्ति का बँटवारा उसकी मृत्यु के दो साल के बाद हुआ और सब जायदाद बिक-बिका कर तीस हजार रुपया मिला। ग्यारह बच्चे और तीन बेगमों के हिस्से में दो-दो हजार आया। सब बच्चे अलग-अलग हो गए और बेगमें अपने-अपने बच्चों के साथ चली गईं। सुल्ताना अपने तीनों बच्चों को लेकर अपने बाप इल्मुद्दीन की कोठी रावलपिण्डी में रहने लगी। इल्मुद्दीन ने तीनों बच्चों को अपना मुतबन्ना बना लिया। उन्होंने सोना की शादी कर दी और मजीद और सादिक को अपने कारोबार में शामिल कर लिया। जब शमशाद को दो हजार का हिस्सा मिला तो वह उसने सुल्ताना के पास रख दिया। उसने कहा कि दो हजार तो किसी भी काम नहीं आयेगा। यह अम्मी अपने वालिद शरीफ को कहकर किसी करोबार में लगवा दें। इस प्रकार सुल्ताना के बच्चों का और शमशाद के हिस्से का दस हजार रुपया इल्मुद्दीन ने कश्मीर के मेवों के व्यापार में लगा दिया। जब वर्ष के बाद लाभ गिना गया तो वह बारह हजार निकला। इल्मुद्दीन का मन बेईमान हो गया। उसने शमशाद को आठ आने सैकड़ा के हिसाब से सूद भेज दिया और शेष पत्तीदारों में लाभ का पौने बारह हजार रुपया बाँट दिया। शमशाद को जब सूद के एक सौ बीस रुपये मिले तो भौचक्क रह गया। उसने सूद ले लिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
और रुपया भेजने के लिए लिख दिया। किन्तु रुपया नहीं आया।

रामरक्खामल्ल से जब इस विषय में बात हुई तो उसने कह दिया, "रुपया मँगवा लो। मैं किसी व्यापार में लगवा दूँगा। उससे तुम्हें लाभ, मिलने लगेगा।"

शमशाद ने जब बार–बार लिखा और रुपया भेजने के लिए आग्रह किया तो बात सुल्ताना तक चली गई। उसने अपने पिता से पूछा, "शमशाद को मुनाफे का हिस्सा क्यों नहीं दिया?"

"क्योंकि उसने कोई काम तो किया ही नहीं था?"

"काम किसने किया है?"

"मैंने।"

"आपने क्या काम किया है?"

"चिट्ठी–पत्री।"

"तो इतने काम का आपने क्या लिया है?"

"मुनाफा तो अपने बच्चों में बाँट दिया है।"

"मैंने भी कुछ काम नहीं किया और न ही मजीद और सादिक ने।"

"तुम मेरे बच्चे हो।"

"और शमशाद मेरा बच्चा है।"

"सुल्ताना! वह अच्छा आदमी नहीं है।"

"यह आप कैसे कहते हैं?"

"मेरा ख्याल है कि उसने अपनी बीवी को खुदकुशी करने के लिए मजबूर किया है।"

"मैं उसको ऐसा नहीं समझती।"

"सच? तो तुम उसके पास चली जाओ।"

बस बात बिगड़ गई और सुल्ताना लाहौर चली आई। सरवर ने उसको अपने पास रख लिया। रुपयों के लिए अभी भी लिखा जा रहा था। अब सुल्ताना ने भी अपने हिस्से का रुपया भेजने का आग्रह करना आरम्भ कर दिया था। किन्तु इल्मुद्दीन आज–कल करके टाल रहा था।

सुल्ताना सरवर के बच्चों की देख–भाल कर देती थी। सरवर सरकारी स्कूल में अंग्रेजी पढ़ाने लग गई थी। उसको साठ रुपया मासिक वेतन मिलता था। इस प्रकार सुल्ताना के आने पर व्यय की अपेक्षा घर की आय में वृद्धि ही हुई थी।

यह निश्चय ही था कि सरवर के बच्चे सुल्ताना के पास रहेंगे और वे रात जवाहर के घर चले जावेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 3 :

थियेटर का पर्दा उठा और परमात्मा की प्रार्थना की गई। तदुपरान्त नाटक आरम्भ हुआ। प्रथम अंक में तो सेठ मानकराव की सार्वजनिक ख्याति और व्यापार के ही दृश्य सम्मुख आते रहे। इस अंक के पूर्ण होते–होते सेठ की एक नाइट क्लब में जंजीरा से भेंट हुई। दोनों पहली ही नजर में एक दूसरे पर मुग्ध हो गये। जंजीरा ने क्लब में गाने गाए और नृत्य किया। प्रत्येक गाने पर 'वन्स मोर, वन्स मोर' हो रहा था। नृत्य पर तो तालियाँ बज रही थीं। अन्त में जबर्दस्ती ड्राप–सीन हुआ।

हाल में छोटे दर्जों में गंडेरियाँ और मूँगफली तथा सोडा–लैमन बिकने लगा। शमशाद उठ कर बाहर गया और एक दुकान से चाय और कुछ खाने के लिए ले आया। खाते हुए साधना ने पूछा, "भापा! जंजीरा को देखा है?"

"हाँ, बहुत खूबसूरत है।"

"उसकी ठुमरी सुनी है?"

"हाँ, उसी ने तो उसको सारे शहर में मशहूर कर रक्खा है। गली–गली में यही गया जा रहा है, 'हाय राम! कौन बुझावे तपन मेरे मन की'?"

"इस ठुमरी ने मुझे किसी और का स्मरण करा दिया है। देखो भापा! यदि इसका मेकअप उतार दिया जाये तो मैं विश्वास से कहती हूँ कि यह नासिरा निकल आयेगी।"

"नासिरा?" तीनों के मुख से सहसा निकल पड़ा और वे साधना का मुख देखने लगे।

"हाँ, उसकी शक्ल–सूरत से तो पहले मुझे भी शक हुआ था, परन्तु इस ठुमरी के बोल और उसके गाने का ढंग, 'रामा' शब्द पर उसकी भाव–भंगिमा और स्वर–विन्यास उसकी अपनी खास चीज है। इससे मुझे तो विश्वास हो गया है।"

"मैंने उसे इस ठुमरी को गाते कभी नहीं सुना। इससे मैं पहिचान नहीं पाया। मुख पर तो लीपा–पोती हुई है। जिस्म भी कुछ भारी हो गया है।"

"खेल के बाद उससे मिलने की कोशिश की जाए।"

"मैं अगले ड्राप के वक्त उसको अपना कार्ड भेज दूँगा।"

चाय समाप्त हुई और दुकानदार का नौकर बर्तन उठा कर ले गया। उधर नाटक पुनः आरम्भ हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अंक में जंजीरा और सेठ का पृथक्–पृथक् मकान में रहना और मकान की सज–धज तथा शराब और कबाब सब कुछ आए। जंजीरा को सेठ ने अपने व्यापार का रहस्य बताया। उसे विश्वास नहीं आया। सेठ एक दिन रात्रि के समय उसको समुद्र के किनारे पर ले गया। वहाँ रात के समय चोरी से लाया गया माल किनारे पर उतारा जा रहा था। यह चोरी होते देख जंजीरा को भय होने लगा। घर पर पहुँच उसने सेठ को खुदा का डर दिखाया।

"कहाँ है खुदा?" सेठ ने पूछा।

"उस मन्दिर में है, जो आपने चालीस हजार की लागत से बनवाया है।"

"वह तो पत्थर की मूरत है। जयपुर में बनवाई थी और बनाने वाले अनपढ़ उजड्ड मुसलमान कारीगर थे।"

"तो फिर उस मन्दिर पर इतना रुपया क्यों खर्च किया था?"

"बेवकूफ खलकत को बेवकूफ बनाने के लिए।"

"मगर खुदा को आप बेवकूफ नहीं बना सकेंगे।"

"वह तो कहीं दिखाई नहीं देता।"

इस प्रकार नाटक चलता रहा। इस अंक का खात्मा हुआ पुलिस का चोरी से लाया हुआ सोना पकड़ लेने पर। पुलिस ने जाँच की। नौकर बक गए। और सेठ साहब के वारंट निकल गये। पुलिस ने सेठ साहब को पकड़ कर जेलखाने में भेज दिया। जेलर को बीस हजार रुपया दिया गया और सेठ जेल की दीवार फाँदकर भाग निकला। जेलर ने अपनी जान बचाने के लिए पुलिस को सेठ का सुराग दे दिया। पुलिस ने जंजीरा के मकान पर घेरा डाला। जब तक जंजीरा के मकान की तलाशी के वारंट आये, दोनों अपने मकान की छत पर पहुँच, दूसरे मकान की तीस फुट नीची छत पर कूदकर रफूचक्कर हो गये।

भागकर वे कलकत्ता पहुँचे और अंक समाप्त हुआ।

इस बार तो चारों ने पहिचान लिया था कि जंजीरा का अभिनय करने वाली नासिरा ही है। शमशाद ने अपने कार्ड की पीठ पर उर्दू में लिख दिया–'बहुत हैरान हूँ। खेल के बाद इन्तजार करूँगा।'

वह कार्ड उसने हलवाई के नौकर को देकर कहा, "यह कार्ड राधा को दे आओ तो एक रुपया इनाम मिलेगा।"

"रुपया पहले लाइये, मैं अभी चाय देने के लिए जा रहा हूँ।"

शमशाद ने **चाँदी** का चमचमाता हुआ एक रुपया उसके हाथ पर रक्खा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो वह कार्ड लेकर चला गया।

साधना ने कहा, ''देखिये जी! मैंने आपकी दूसरी बीवी ढूँढ़ दी है।''

''तुम्हारी भाभी जो ठहरी।''

''देखें, वह आती है कि नहीं।'' सरवर ने सन्देह प्रकट किया।

''वह आयेगी जरूर। लेकिन आपके साथ रहेगी या नहीं, इस बारे में मैं कुछ नहीं कह सकती। अब तो बहुत अमीर हो गई होगी।'' साधना ने कहा।

''हाँ।'' सरवर ने कहा, ''अखबार में लिखा था कि उसका बैंक बैलेंस सवा लाख रुपया है।''

''सवा लाख?'' शमशाद ने हैरानी में पूछा, ''फिर तो वह मुझ गरीब से मिलने की जरूरत महमूस नहीं करेगी। मैंने ही तो उसको घर से निकल जाने के लिए कहा था।''

सभी उत्सुकता से नाटक समाप्त होने की प्रतीक्षा करने लगे। परन्तु नासिरा ने उसी कार्ड में एक पंक्ति लिखकर अपना उत्तर भेज दिया–

''मैं आपको पहचान गई थी। अब आपने भी पहचान लिया है तो कल दोपहर के वक्त जवाहर भैया के घर पर मिलूँगी। नाटक के बाद नहीं।''

शमशाद उसकी लापरवाही पर तो लज्जित हुआ किन्तु जवाहरलाल के घर पर भेंट के समाचार से उसको प्रसन्नता हुई। वह समझता था कि वहाँ किसी किस्म का झगड़ा नहीं करेगी। साथ ही लाला रामरक्खामल्ल भी इस अवस्था में अपना बहुमूल्य सुझाव दे देंगे।

नाटक समाप्त हुआ। चारों अपने–अपने विचारों में लीन घर के लिए चल पड़े। बाहर निकल शमशाद ने ताँगे वाले को कहा, ''टकसाल, सुआ बाजार।''

सरवर ने कह दिया, ''नहीं, मोची दरवाजे के बाहर चैम्बरलेन रोड पर।''

शमशाद ने प्रतिवाद नहीं किया। सरवर ने साधना से कहा, ''मैं समझती हूँ कि आज आप अलहदा ताँगा कर अपने घर चले जाइए। अब आप से कल मुलाकात करेंगे।''

साधना हँस पड़ी और बोली, ''सरवर बहिन! इस घर में तुम्हारा स्थान छिन नहीं सकता।''

सरवर इस पर कुछ नहीं बोली। जवाहरलाल ने एक और ताँगा किया और वह साधना के साथ अपने घर की ओर चल दिया। रास्ते में साधना ने पूछा, ''क्या मतलब हो सकता है इसका?''

''मतलब साफ है। यदि शमशाद और नासिरा में सुलह हो गई तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शमशाद बम्बई चला जावेगा और वहाँ जाने पर नासिरा का रुतबा बढ़ जावेगा।''

''मुझे तो कुछ और ही लगता है।''

''क्या?''

''दोनों लड़ पड़ेंगे। दोष शमशाद का ही है। वह आकर इसको फटकारेगी।''

''बड़े भापा के घर मिलने का अभिप्राय है कि सुलह होगी।''

''देखें।''

उधर दूसरी ओर शमशाद और सरवर में घर जाते हुए मार्ग में कोई बात नहीं हुई। घर पहुँचकर सोने से पूर्व शमशाद ने सरवर से पूछा, ''आज यह मुँह क्यों फूला हुआ है?''

''मेरा मुख नहीं फूला हुआ है। मैं उससे मिलने से पहले आपसे एक बात करना चाहती थी और वह बात साधना के सामने नहीं हो सकती थी।''

''हाँ, तो बताओ। क्या बात करना चाहती हो?''

''अगर वह आपके पास आकर रहना चाहेगी तो आप क्या करेंगे?''

''एक बड़ा मकान लेना पड़ जावेगा।''

''नहीं, मैं जेहलम चली जाऊँगी।''

''क्यों?''

''इसी में मेरी भलाई होगी।''

''क्यों, यह कैसे कहती हो?''

''एक वक्त था, मैं ज्यादा खूबसूरत थी। अब दो बच्चों की माँ हो जाने के बाद न तो सीने में वह गरमी रही है, न ही मुख पर वह रौनक। तब मैं अमीर की लड़की थी। अब दोनों बातों में फरक पड़ गया है। वह अमीर हो गई है। एक हजार से ज्यादा एक महीने में कमाती है। ऊपर की कमाई इससे अलग होती है। इसलिए मैं अब उसका, किसी भी बात में मुकाबिला नहीं कर सकती।''

''तुम दो बच्चों की माँ हो।''

''उसका बच्चा भी तो है। स्कूल में पढ़ता है, जहीन है, खूबसूरत है। मेरे बच्चे गोल–मटोल और बुद्धू हैं।''

''देखो सरवर! यह तो तुम अपनी हसद जाहिर कर रही हो। अभी वह आई नहीं और तुम उससे पहले ही डर रही हो। यह किसी तरह से भी ठीक बात नहीं है। मैं तुमको यकीन दिलाता हूँ कि तुमसे मेरा ताल्लुक कभी टूट नहीं सकता।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नासिरा को भी तो आपने ऐसा ही यकीन दिलाया था। उसने मुझे यह बताया था। और आज आपने बताया है कि आपने ही उसको घर से निकाला था। बताइये, आपकी बातों का क्या एतबार हो सकता है?"

"मैं नासिरा के साथ बेइन्साफी करके बहुत अफसोस कर चुका हूँ। अपने आपको बहुत लानत–मलामत कर चुका हूँ। अब फिर वह गलती नहीं करूँगा।"

इस प्रकार बड़ी कठिनाई से शमशाद सरवर को शान्त कर पाया। आज शमशाद को मालूम हुआ कि सरवर, जो नासिरा के चले जाने पर अफसोस किया करती थी, वह नकली था। वास्तव में वह उसके चले जाने पर प्रसन्न थी। एक बात वह समझ रहा था कि नासिरा का रामरक्खामल्ल के घर पर भेंट का स्थान निश्चित करना किसी कारण–विशेष से ही हो सकता है। वह आशा करती है कि लाला जी उसका पक्ष लेंगे। जैसे उन्होंने वहीदन का पक्ष लिया था, वैसे ही वह उसके इस गुप्त जीवन की खराबियों को भूल जाने की बात कहेंगे। इसका अभिप्राय यह हुआ कि नासिरा इस घर में आना चाहती है। इससे उसको प्रसन्नता थी। परन्तु क्या वह नासिरा को सरवर पर उपमा दिया करेगा? सरवर को यही डर था और वह अपने मन को टटोलता था कि क्या सरवर का डर सत्य है?

जवाहरलाल ने कॉलेज जाने से पहले अपने पिता से रात की घटना बता दी और कह दिया कि अपने पति से मिलने के लिए वह आपके घर को ठीक स्थान समझती है। रामरक्खामल्ल इससे गम्भीर विचार में पड़ गया। उसने केवल यह कहा, "यद्यपि मैं किसी दूसरे के मामले में पड़ना नहीं चाहता था, मगर यह परिवार जबरदस्ती मेरे जीवन में घुसता चला आ रहा है।"

जवाहरलाल कॉलेज का काम छोड़ कर आ नहीं सका। सबसे पहले नासिरा आई। वह सीधी लेखवती के कमरे के बाहर जाकर खड़ी हो गई। लेखवती ऊपर की मंजिल से रामायण का पाठ सुनकर आई थी और अभी खाने का समय न होने के कारण अपने कमरे में बैठी थी। उसने नासिरा को सामने खड़े देखा तो चकित रह गई। नासिरा पूर्वापेक्षा अधिक सुन्दर हो गई थी। उसके कानों में बड़े–बड़े रत्नजड़ित फूल लटक रहे थे। नाक में हीरे की कील थी। हाथों में जड़ाऊ चूड़ियाँ थीं और माथे पर लाल बिन्दी लगी थी। लेखवती ने देखा तो बुला लिया, "नासिरा! आओ बेटा! बहुत दिनों के बाद आई हो।"

"माँ जी! मैं अब नासिरा नहीं राधा हूँ। देखिये न, माथे पर बिन्दी लगाई है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सो तो देख रही हूँ, मगर बिन्दी लगाने से क्या हिन्दू हो जाते हैं? अगर यही बात होती तो फिर हिन्दू होना सुगम हो जाता।"

नासिरा बैठ गई और बोली, "तो वह बात बता दीजिए जिससे हिन्दू बना जाता है। वैसा करने का मैं यत्न करूँगी।"

"मगर तुम हिन्दू बनना क्यों चाहती हो? हम तो तुमको मुसलमान रहते भी एक बहुत ही प्यारी लड़की मानते थे।"

"यह तो माताजी! फिर बताऊँगी। पहले बताइए, साधना कहाँ है?"

"बुलाती हूँ। तुम बैठो। वह अभी जेठानी से बातें कर रही है। न जाने ये युवा लड़कियाँ क्या–क्या बातें करती हैं। इनकी बातें कभी समाप्त ही नहीं होतीं।"

लेखवती ने सीढ़ियों में आ आवाज दे दी–"साधना! नीचे आओ, तुम्हारी सहेली आई है।"

साधना एकदम नीचे उतर आई। लेखवती पीछे रह गई और साधना पहले कमरे में पहुँच नासिरा से गले मिलने लगी। साधना का बड़ा बच्चा जो इस समय तीन वर्ष का था, उसके पीछे–पीछे आ गया और दोनों औरतों को गले मिलता देख, दूर खड़ा विस्मय में देखता रह गया। नासिरा समझ गई कि यह जवाहर का लड़का है। उसने उसे अपने पास बुलाने के लिए कहा, "इधर आओ लल्ला! क्या नाम है तुम्हारा?"

लड़का अपनी माँ की ओर देखने लगा। साधना ने उसको पुकारा, "माणिक! इधर आओ। देखो यह तुम्हारी मौसी हैं। इन्हें नमस्ते करो।"

माणिक धीरे–धीरे समीप आकर पूछने लगा, "कौन–सी मौसी हैं यह?"

साधना कुछ उत्तर दे, इससे पूर्व ही नासिरा बोली, "राधा मौसी। समझे?"

"राधा मौसी!" नाम स्मरण करने के निमित्त माणिक ने उसको दोहराया और बोला, "तुम कहाँ थीं मौसी?"

"बम्बई।"

"वह कहाँ है?"

"बहुत दूर है। चलोगे मेरे साथ?"

"भापा चलेंगे तो चलूँगा।"

"भापा कहाँ हैं?"

"पढ़ने गए हैं।"

"अभी पढ़ते ही हैं?"

"हाँ, बड़ी–बड़ी किताबें पढ़ते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर नासिरा ने उसे अपनी गोद में उठा, उसका चुम्बन ले लिया। माणिक कहने लगा, "तुम्हारा मुख मैला हो गया है।"

"अच्छा, मैंने भी तो तुम्हारा मुख मैला कर दिया है।"

"क्यों किया?"

"तुमको अपना बेटा बनाने के लिए।"

"तुम मौसी हो तो बेटा तो मैं तुम्हारा हूँ ही। मेरी एक लक्ष्मी मौसी हैं। वह तुम जैसी नहीं है।"

"क्यों, वह कैसी है?"

"तुम जैसी नहीं। तुम....तुम....।" इस समय उसका ध्यान उसके कर्णकूलों पर चढ़ गया। उसने पूछ लिया, "यह कहाँ से लाई हो?"

"बम्बई से।"

"माँ!" उसने साधना को सम्बोधित करते हुए कहा, "हम भी बम्बई चलेंगे। चलोगी?"

"हाँ चलेंगे, लेकिन तब, जब तुम्हारे पिताजी की पढ़ाई पूरी हो जावेगी।"

"तो क्या मौसी के पिताजी की पढ़ाई पूरी हो गई है?"

"हाँ।" नासिरा ने उत्तर दिया और तीनों औरतें हँस पड़ीं।

राधा ने बात बदलकर कहा, "साधना! अब मैं राधा हूँ। नासिरा मर गई। वह जेहलम में डूब मरी है।"

"सुना तो यही था मगर....।"

"अगर–मगर कुछ नहीं। वह सत्य ही डूबकर मर गई है। मैं राधा हूँ। माताजी कह रही थीं कि माथे पर बिन्दी लगाने से ही कोई हिन्दू नहीं होता और मैं पूछ रही थी कि क्या करने से हिन्दू हुआ जाता है? यह मैं पूछ लूँगी और तब इस बिन्दी और नाम के साथ वह भी करने लगूँगी।"

इस पर लेखवती ने कहा, "मैं जानती नहीं। किसी समय मैं यह जानती थी कि हिन्दू वह होता है जो किसी का झूठा नहीं खाता, नित्य स्नान करता है और हिन्दू माँ के पेट से उत्पन्न होता है। अब तो ऐसा प्रतीत नहीं होता। जितनी साफ–सुथरी तुम हो, उतनी तो हमारे महा की बहू भी नहीं। हम तुम्हारे साथ खाते हैं और आर्यसमाज तो अब जन्म के मुसलमानों को भी हिन्दू बना रही है। नाम से भी कोई हिन्दू–मुसलमान होता है, पता नहीं चलता। इसकी बहन के लड़के का नाम इकबाल है।"

"तो फिर कोई कैसे हिन्दू हो सकता है और कैसे आर्यसमाज किसी को हिन्दू बना लेता है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तुम्हारे भापा आयेंगे तो उनसे पूछ लेना।"

"अच्छा, वह तो पूछ लूँगी, मगर माता जी! मेरा नाम अब राधा है। मेरी नौकरी और वेतन इसी बात पर निर्भर है।"

"क्या तुम्हारी नाट्यकला पर नहीं?"

"नाट्य–कला तो है ही। मगर अब हिन्दुस्तान भर में यह विख्यात हो रहा है कि राधा एक विधवा ब्राह्मणी की लड़की बहुत अच्छा गाती है और नृत्य करती है। नाम का राज खुलने से मेरी प्रतिष्ठा कम हो जावेगी और मेरा वेतन भी कम हो सकता है।"

"परन्तु तुम पर अपने अधिकार का दावा करने के लिए तुम्हारे पति मियाँ शमशाद आने वाले हैं।"

"मैं जानती हूँ। मैंने तो इन सबको पहले ही सीन में देख लिया था। मेरा ख्याल था कि इन लोगों ने पहिचाना नहीं होगा। मेरे मुख पर सफेदा और रूज बहुत ज्यादा लगा था। पीछे जब समद के पिता का कार्ड आया तो मैं समझ गई।

"मैं जब से लाहौर आई थी, तब से ही आपके घर आकर सब की खैरियत जानने के लिए आना चाहती थी, मगर झिझकती थी। जब कार्ड आया तो मैंने यही उचित समझा कि आपके घर ही मुलाकात हो। मुझको सबसे बड़ी हैरानी साधना को जवाहर भैया की बगल में बैठे देखकर हुई थी। उन्होंने इससे विवाह कर ठीक ही किया है।"

इस समय विष्णुनारायण खाना खाने के लिए आ गया। वह सीधा ऊपर चढ़ गया। राधा ने पूछ लिया, "भापा जी कब आवेंगे?"

"आने ही वाले हैं।"

"मैं तो आपके यहाँ खाना खाने के विचार से आई हूँ। खिलायेंगे?" लेखवती ने कहा, "तुम्हें इसमें सन्देह क्यों हुआ?"

"यहाँ तो मैंने एक ही बार खाना खाया था। वह भी बैठक में बैठकर। अब तो आप रसोईघर में बैठकर खाएँगी न?"

"हाँ, तुमको वहाँ खाने पर आपत्ति है क्या?"

"मुझे तो कोई एतराज नहीं। लेकिन आप वहाँ खिलाएँगी क्या?"

"अच्छा ठहरो। रसोई बनाती हैं बूआ सतवंती।" साधना ने कहा, "वे खिलाने से ना करेंगी तो फिर हम नीचे बैठक में ही खाएँगे।"

साधना ने माणिक को कहा, "माणिक! जाओ, लाज बूआ को बुला लाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माणिक ऊपर चला गया। राधा ने पूछा, ''तो तुमको संदेह है कि बूआ आपत्ति भी कर सकती है?''

''सन्देह तो नहीं है। इस पर भी ऐसी परिस्थिति पहले कभी नहीं आई। देखें, वे इस विषय में किस प्रकार सोचती हैं?''

लाज नीचे आई तो नासिरा को पहचान कर बोली, ''नासिरा! सुना था तुम्हारा तो स्वर्गवास हो गया है?''

नासिरा ने हँसते हुए पूछ लिया, ''तो क्या आपके स्वर्ग में मुसलमान भी जा सकते हैं?''

''स्वर्ग में तो जात–पात नहीं होती। देखो, कबीर ने कितनी सुन्दर बात कही है–

अमर वह देशवा, जहाँ से आयो।
पानी न पवन, न धरती न अगवा।
चाँद न सूरज, रैन न दिनवा।
ब्राह्मण, क्षत्री, न शूद्र न वैशवा,
मुगल, पठान न सैयद न शेखवा।
आदि देव, नहीं गौरी गणेशवा,
ब्रह्मा, विष्णु, महेश न केशवा।
जोगी न जंगम, मुनि गण भेषवा
आदि न अन्त, न काल कलेशवा
दास कबीर ले आओ सन्देशवा
दारु शब्द कही चलो वह देशवा।''

''तो हम सब वहाँ से आए हैं?''

''हाँ, और वहीं हमारा घर है। वहाँ ही हमको जाना है। हम सब यत्न करते हैं, इस पर भी बहुत से वहाँ पहुँच नहीं पाते।''

''तो लाज बहिन! मैं भी वहाँ नहीं पहुँच पाई। अपने खोटे कर्मों के कारण वहाँ से धक्के देकर फिर इस जाति–पांति वाले देश में पहुँच गई हूँ। इस बार मेरा जन्म एक हिन्दू के घर में हुआ है। अब मेरा नाम राधा है।''

इस पर साधना ने पूछ लिया, ''और इस जन्म के तुम्हारे पिता का क्या नाम है?''

''माता का नाम रुक्मिणी है। पिता का नाम मिस्टर मनोहरलाल वर्मा है। पर एक बात बता देती हूँ कि ये दोनों पति–पत्नी नहीं हैं। रुक्मिणी के पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का नाम विट्ठल भाई देसाई है। वह बहुत–सी मिलों के मालिक हैं। और मिस्टर मनोहरलाल वर्मा की पत्नी का नाम सरला देवी है। वे दोनों मुझको बना गये हैं, जो मैं इस समय हूँ। रुक्मिणी देवी ने मुझे डूबते–डूबते बचाया और श्री मनोहरलाल ने मुझको जीने योग्य बना दिया।''

इस समय रामरक्खामल्ल आया तो अपने कमरे में जमघट देखकर समझ गया कि नासिरा आई है। उसने पूछा, ''शमशाद आया है क्या?''

लेखवती ने उठकर कह दिया, ''नहीं, अभी नहीं। आप भोजन कर लीजिए। फिर वे लोग आवेंगे तो बातों में देरी हो जावेगी।''

रामरक्खामल्ल ऊपर चढ़ गया। लाजवन्ती को लेख ने कह दिया कि वह ऊपर जाकर सतवंती से पूछ आए कि नासिरा आई है, उसके भोजन की व्यवस्था रसोई में होगी या बैठक में?

इस पर लाज बोली, ''यह तो कह रही थी कि नासिरा मर गई है यहाँ तो राधा आई है!''

''लाज! तुम इस बात का उत्तर ले आओ। यह राधा की कहानी मत बनाना।''

लाजवन्ती चुपचाप ऊपर चली गई। नासिरा समझ रही थी कि लेखवती को विश्वास है कि उसको रसोईघर में बैठाकर रोटी खिलाने में किसी को आपति नहीं होगी।

पुरुष वर्ग खाना खाकर नीचे आया को महिलाएँ ऊपर चली गईं। नासिरा उनके साथ ही थी। लाज उसको ले जाने के लिए आई थी।

रसोईघर में सुमित्रा, सतवंती, लाज, मोहिनी, लेख, साधना और नासिरा थीं। एक पटरे पर माणिक भी अपनी माँ के पास बैठा था। अन्य बच्चे स्कूल चले गए थे।

''एक प्राणी की मूरत दिखाई नहीं दे रही है?'' नासि़रा ने लेखवती की ओर देखकर कहा।

''हाँ।'' लेखवती ने उत्तर देते हुए बताया, ''तुम कलावती की बात पूछ रही हो न? वह घर से पृथक हो गई है।''

''क्यों?''

''उसके दूसरा बच्चा हुआ तो उसने झगड़ा आरम्भ कर दिया। किसी न किसी बहाने वह झगड़ा करती रही। हमारा संयुक्त परिवार है। हम सबको आवश्यकतानुसार गुजारा मिलता है। वह अपने पति की आय का एक पैसा तो परिवार को देती नहीं थी, मगर भूषण, वस्त्रादि सबसे अधिक माँगती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर जवाहरलाल के चाचा ने उसको पृथक् मकान ले दिया है। सुना है, वहाँ भी झगड़ा चलता है।''

''अब क्या झगड़ा चलता है?''

''वह अपने पति को कहती है कि परिवार की सम्पत्ति में से हिस्सा बाँट दिया जाए। उसको सिखा–पढ़ा यहाँ भेजती है। वह बेचारा यहाँ आता है और रो–धोकर चला जाता है।''

''तो क्या पृथक् होने के समय उसको कुछ मिला नहीं?''

''एक छः हजार रुपये का मकान मोल ले दिया था। उसमें सात सौ रुपए फर्नीचर के लिए और छः मास का रसद पानी उसको दे दिया गया था।''

''तो और क्या माँगती है वह?''

''वह लड़ना माँगती है किन्तु यहाँ से कोई लड़ता नहीं है।''

''ऐसा क्यों? माताजी!''

''पूर्व जन्म के कर्मों का फल ही मानना चाहिए। उसका घरवाला अच्छा कमाता है। उसका वेतन ढाई सौ रुपया है।''

इस समय किसी ने आकर समाचार दिया कि नीचे नासिरा के घरवाले आ गए हैं।

नासिरा ने लाज से कहा, ''भापा को बता दो कि यहाँ नासिरा नहीं राधा है।''

सब हँस पड़े। सुमित्रा ने कहा, ''बेटा! यह बात तुम तो अपने घर वाले से निश्चय करना कि अब तुम फिर नासिरा बन जाओगी या राधा ही बनी रहोगी।

''जब तुम उससे फैसला कर लोगी तो जो कुछ तुम कहोगी, वही हम भी तुम्हें मान लेंगे।''

''चाची!'' नासिरा ने कहा, ''एक हिन्दू के चौके में बैठकर खाना खाने से तो मैं हिन्दू हो गई हूँ।''

''हम इन बातों में हिन्दू–मुसलमान नहीं मानते। यह तुमको हमारे जेठजी कभी बतायेंगे कि हम हिन्दू किसको मानते हैं। हम तो उनके कहने से ही यह सब कुछ करते और कहते हैं।''

नासिरा के लिए अब अवसर आ गया था कि वह फैसला करे कि उसको क्या करना चाहिए। वह गम्भीर हो गई। जब तक भोजन समाप्त नहीं हुआ, वह बोली नहीं। किसी अन्य ने भी इस विषय में भी बात नहीं की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 4 :

शमशाद और सरवर आये तो सुल्ताना और नासिरा के लड़के समद को भी ले आये। इन सबको बैठक में बैठाया गया। रामरक्खामल्ल ने उनको बैठाते हुए कहा, "वह ऊपर खाना खा रही है। मैं आप लोगों के आने की सूचना भेज देता हूँ। आप लोग भी भोजन करेंगे क्या?"

"जी नहीं, शुक्रिया। हम खाना खाकर आए हैं।"

"कुछ जल आदि?"

"अभी प्यास नहीं है। जवाहर कहाँ गया है?"

"वह कॉलेज गया है। कह रहा था कि पाँच बजे से पूर्व आना कठिन है।"

शमशाद को जवाहर की नासिरा के विषय से अनसिक्तता, जो उसने उसके ऊपर सन्देह करने की जानकारी होने पर दिखाई थी, स्मरण हो आई। उसने समझ लिया कि अभी भी वही भाव है। शमशाद इस विषय में भी नासिरा के साथ अन्याय करने वाला ही अपने को समझने लगा। वे सब लोग चुपचाप बैठे रहे। सरवर और सुल्ताना बुर्का ओढ़कर आई थीं। उन्होंने अपने बुर्का को उतारकर खूँटी पर लटका दिया था। रामरक्खामल्ल अपने कमरे में चला गया था।

नासिरा ने बैठक में प्रविष्ट होने पर सबको सलाम–आलेकुम की। सरवर उठकर उससे गले मिली। नासिरा ने सुल्ताना से पूछा, "अम्मी! आप भी यहाँ आ गई हैं क्या?"

"हाँ बेटा! अपने अब्बाजान और बच्चों से लड़ाई हो गई है। सोना का तो ब्याह हो गया है और लड़के अपने नाना के साथ कारोबार कर रहे हैं।"

"खैर, एक तसकीन की बात है कि सरवर बहिन को अम्मी में कोई खराबी नहीं मालूम हो रही। क्यों सरवर! अम्मी के साथ रहने पर कोई कष्ट तो नहीं है न?"

"कष्ट! वह क्या होता है?"

"ओह! कुछ नए इल्फाज बम्बई में रहकर सीख गई हूँ। मेरा मतलब है तकलीफ।"

"अगर कुछ है तो वह अब दूर हो जाएगी। क्योंकि तुम कुछ बाँट लोगी।"

"मैं बाँटने की बात नहीं कह रही। मैं तो अगर तुम्हें कोई तकलीफ हो तो उसे सारी की सारी दूर करने की बात सोच रही हूँ। बताओ अम्मी मेरे साथ बम्बई चलोगी?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो तुम अब यहाँ नहीं रहोगी?"

"जी नहीं करता। मैं सोचती हूँ कि किसलिए रहूँ?"

"अपने खाविन्द के पास किसलिए रहा जाता है?"

"अम्मी! खाविन्द तो मेरा कभी था ही नहीं। एक प्रेमी था। प्रेमी को दूसरी प्रेमिका मिली तो मुझे दरिन्दों के हवाले करने का इरादा कर लिया। यह तो सरवर बहिन की मेहरबानी थी कि उन्होंने 'टैगी' मँगवा लिया वरना वह दरिन्दा मेरी हड्डी–बोटी चट कर गया होता। वहाँ से बची तो मेरे प्रेमी मुझे बोझा खयाल करने लगे। इस पर मैंने खुदकुशी करने का फैसला कर लिया।

"उस समय एक शरीफ औरत ने मुझे बचाया। उसने मुझे इस उरुज पर पहुँचने का रास्ता दिखाया है। मैं अपनी इस हालत पर खुश हूँ।"

"तो तुम शमशाद की शादीशुदा बीवी नहीं थीं?"

"यह तो आप इनसे पूछिये कि मैं क्या थी। मैं यह जानती हूँ कि दो साल तक इनके पास रही थी। इस अर्से में इनको कभी किसी किस्म की शिकायत का मौका नहीं दिया। लेकिन जब इन्होंने कहा कि इनको मुझे घर ले जाने का अफसोस है, मेरी वजह से ही इनके वालिद साहब की मौत हुई है, ये जायदाद से बेदखल हुए हैं और ये मुझको बोझा भी बताने लगे...।"

शमशाद बीच में ही बोल पड़ा, "नासिरा! मैं अपने किए पर शर्मिन्दा हूँ। मुझे मुआफ कर दो और बताओ कि तुम किस तरह आ सकती हो?"

"देखिए, मैं अब नासिरा नहीं हूँ। मैं राधा हूँ। मेरा नाम आपने इश्तहारों में पढ़ा होगा। मैं हिन्दू हो गई हूँ और अब एक मुसलमान के घर नहीं आ सकती।"

"कैसे हिन्दू हो गई हो?"

"जैसे आपकी बीवी बनी थी। जब तक बीवी रही, तब तक वफादार बीवी रही। उस अर्से में अपनी जानकारी में मैंने कोई बुरी बात नहीं की। अब हिन्दू हूँ और एक वफादार हिन्दू बनकर रहूँगी। तब तक ऐसी ही रहूँगी, जब तक आपकी तरह हिन्दू भी धक्के देकर निकाल नहीं देंगे।"

"तो हिन्दुओं की तरह तुम भी मुआफी नहीं दे सकतीं?"

"हिन्दू मुआफी नहीं देते क्या?" राधा का प्रश्न था।

"जब कोई हिन्दू मुसलमान हो जाता है तो वे उसे फिर दोबारा हिन्दू नहीं बनाते।"

"यह बात पुरानी हो गई है साहब! अब तो यह सिर्फ हिन्दुओं में आ रही है और मुसलमानों में गुम हो रही है। जिस औरत ने मुझे खुदकुशी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते–करते बचाया था, वह हिन्दू थी। उसने मुझे मुसलमान जानते हुए भी हिन्दू बन जाने की राय दी। उसी ने एक दिन बताया था कि मजहब तबदीली करने के लिए डुग्गी पीटने की जरूरत नहीं होती। हिन्दुओं जैसे कार्य करने से आदमी हिन्दू हो जाता है। मैंने उनके कहे मुताबिक किया है और अब मैं हिन्दू हूँ।

"आप मुसलमान हैं। आपने जब मुझे गन्दी नाली में से उठाया था, उस समय जो कौलोकरार किए थे, वे सब मुझे याद हैं। आपने कहा था, 'मैं वायदा करता हूँ कि तुमको एक शादीशुदा बीवी की तरह रक्खूँगा। जब तक तुम वफादार बनी रहोगी, तुमको किसी किस्म की तकलीफ होने नहीं दूँगा। तुम और मैं एक जान और दो कालिब होकर रहेंगे।'

"मैंने अपना कौल पूरा किया और आप, अपना कौल तोड़कर मुझे अपने वालिद साहब के हवाले करने के लिए दो महीने तक मुझे तंग करने का वायदा कर बैठे। उन दो महीनों में ही वालिद साहब चल दिए। मगर आपको तो मुझसे नजात हासिल करनी थी। आप उन दो महीनों में मुझे कोई पलीत जानवर समझ मुझसे दूर रहे। इस पर भी जब मैं नहीं गई तो फिर एक दिन आप कह ही बैठे कि मैं आपकी मुसीबतों की जड़ हूँ।"

"मैं यह सब कुछ मानता हूँ और अपनी करतूत के लिए शर्मिन्दा हूँ। अब मुझे मुआफ कर दो।"

नासिरा ने इस बात का कोई उत्तर नहीं दिया। फिर कुछ देर तक विचार कर बोली, "ठीक है। मेरा मतलब है ताल्लुक बन सकता है अगर आप भी हिन्दू बनकर मेरे साथ बम्बई चलने को तैयार हों?"

"और ये सरवर और अम्मी?"

"ये भी आ जावें।"

"हिन्दू बनकर?"

"नहीं, इनको हिन्दू बनने की कोई जरूरत नहीं है। लेकिन मेरे खाविंद बनने वाले के लिए यह जरूरी है।"

"क्यों?"

"क्योंकि मैं अब हिन्दू हूँ। मेरा नाम राधा है। शमशाद खाँ की बीवी राधा नहीं हो सकती।"

"क्यों नहीं हो सकती?"

"यह तो मुसलमान ही कहते हैं। हमारी कम्पनी में एक जयन्ती नाम की लड़की थी। उसने एक मुसलमान बौरा सौदागर से शादी कर ली तो उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नाम सुल्ताना रख दिया गया। मैंने जयन्ती से इसका कारण पूछा तो उसने बताया कि जयन्ती हिन्दुआना नाम है और एक मुसलमान की बीवी हिन्दू नहीं रह सकती।''

''मैं तुमको हिन्दुआना नाम रखने की इजाजत दे सकता हूँ।''

''मगर मैं नहीं दे सकती। आपको अपना हिन्दुआना नाम रखना होगा और जो बातें रुक्मिणी जी ने हिन्दुओं के विषय में बताई थीं, वे माननी और करनी होंगी।''

''क्या बातें बताई थीं उन्होंने?''

''गाय का गोश्त नहीं खाना, हर रोज दिन निकलने से दो घड़ी पहले उठकर परमात्मा, मेरा मतलब है खुदा की इबादत करना। इबादत करने से पहले रोज नहाना और खाने के पहले हाथ धोना और खाने के बाद कुल्ला करना। सबको हाथ जोड़कर नमस्कार करना और पर–स्त्री से परहेज करना।''

''तुम वह सब करती हो क्या?''

''हाँ, करने की कोशिश करती हूँ। कभी–कभी करना भूल भी जाती हूँ और याद आने पर फिर कोशिश करती हूँ।

''रुक्मिणी मौसी कहती थी कि यह कोशिश ही असल बात है। जो सच्चे दिल से कोशिश करता है वह मोक्ष, मेरा मतलब है नजात पा जाता है।''

''ये सब अलफाज और बातें, तुम रुक्मिणी से ही सीखी हो?''

''हाँ।''

''वह कौन है?''

''बम्बई के एक कारखानेदार विट्ठलभाई देसाई की पत्नी हैं। वे हैं तो पंजाबिन, मगर पत्नी हैं एक गुजराती सेठ की।''

''देखो नासिरा....।''

''नासिरा नहीं राधा कहिए।'' राधा ने बीच में ही टोककर बताया।

''देखो राधा! मैं हिन्दू नहीं हो सकता। तुमको मैंने छोड़ा था और तुम एक आर्य समाजी के चंगुल में फँस गई। मुझे मेरी बीवी ने छोड़ा नहीं है। न ही मैं किसी आर्यसमाजी के चंगुल में फँसा हूँ।''

''फँसे तो आप भी हैं?''

''किसके?''

''इस भापा जी के चंगुल में।''

''तो क्या यह आर्यसमाजी हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, अभी लाजवन्ती बहिन कह रही थीं कि वे बतायेंगे कि किस प्रकार आर्य समाज हिन्दू बनाते हैं।"

"तुम कैसे हिन्दू बनी हो?"

"मैं तो ऐसे बनी हूँ, जैसे किसी इन्सान के ख्याल बदल जावें और वह दूसरे ख्यालों का हो जावे। मुझे जितना रुक्मिणी बहिन ने बताया है, उससे मुझे बहुत सुख और चैन मिला है।"

"तो चलो सरवर! चलें।" शमशाद बोला।

सरवर इससे तो प्रसन्न थी कि नासिरा उसके साथ चलने के लिए तैयार नहीं है। मगर उसको दो बातों का दुःख था। एक तो एक मुसलमान के हिन्दू हो जाने का और दूसरे मुसलमानों को हिन्दू से निम्न समझा जाने का। उसने कहा, "नासिरा! तुम अब अमीर हो गई हो और ऐसी शर्तें करने लगी हों। अपनी उस वक्त की औकात याद करो जब तुम जमींदारी पर थीं और हमारी खिदमत कर जिन्दगी बसर करने की बात किया करती थीं।"

"सरवर बहिन! तुमसे गिला नहीं है। तुम्हारी खिदमत तो अब भी करने के लिए तैयार हूँ। तुमसे हिन्दू हो जाने की भी शर्त नहीं है। गिला और शर्त तो उससे है, जिसने अपना कौल तोड़ा है। जिसने मेरी खिदमत का यह मतलब समझा कि मैं दो टुकड़े रोटी खाने के लिए उसके पीछे लगी हूँ। मैं दो टुकड़े रोटी के लिए नहीं, बल्कि बाइज्जत जिन्दगी बसर करने के ख्याल से उनके साथ लगी थी। उन्होंने ऐसा करने में मेरी मदद का इकरार किया था। उन्होंने अपना वह कौल तोड़ मुझे दोबारा वैसी ही जिन्दगी बसर करने के लिए खुली दुनिया में भेज दिया था।"

"तो अब तुम हमारे घर नहीं आओगी?"

"कैसे आ सकती हूँ! मैं अब दो रोटी की मोहताज नहीं रही। जिस चीज की मोहताज थी, वह आपके घर के बिना भी बहुत अच्छी तरह मिल रही है। मेरा मतलब इज्जत से है।"

"यह थियेटर की ऐक्ट्रेस की भी कोई इज्जत है! एक बुलबुले की तरह किसी वक्त भी फूट सकती है।"

"उस वक्त के लिए मैं अभी से इन्तजाम कर रही हूँ।"

"तो करो।" इतना कहकर सरवर उठ खड़ी हुई। सुल्ताना अभी बैठी थी। राधा ने समद को अपने पास बुला कर पूछा, "समद! जानते हो मैं कौन हूँ?"

"हाँ, अब्बा कहते हैं तुम मेरी अम्मी हो।"

"तो मेरे साथ चलोगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समद शमशाद का मुख देखने लगा। शमशाद बोला, "नहीं समद! तुम्हारी अम्मी ठीक नहीं रहीं। तुम अपने अब्बा के ही पास रहोगे।"

"पर अब्बाजान! अम्मी तो रहीम से प्यार करती हैं। मुझे घर से बाहर भेज कर पीछे से उसको दूध पिलाया करती हैं।"

"बदमाश कहीं के। घर तो चल। तेरी चमड़ी उधेड़ दूँगा।" शमशाद ने क्रोध में उबलते हुए कहा।

"समद! ऐसे नहीं। अब्बाजान से मेरे साथ चलने की इजाजत माँग लो। वे दे देंगे, फिर सलाम अर्ज करना। और देखो, तुमको कभी–कभी अब्बाजान से मिलने के लिए यहाँ भेज दिया करूँगी।"

"क्यों बच्चे का दिमाग खराब कर रही हो?"

"अब्बाजान! मैं जाऊँगा, मुझे भेज दो।"

सरवर चुप रही। शमशाद ने सुल्ताना से कहा, "अम्मी! चलना चाहिए।"

सुल्ताना ने कहा, "शमशाद! तुम तो कहते थे कि लालाजी इसको नौकरी छोड़ने के लिए राजी कर लेंगे और उनको बीच में डाले बिन लड़ पड़े हो?"

शमशाद अपनी गलती समझ गया। उसने कह दिया; "ओह! ठहरो नासिरा! मैं अपने वकील को बुला लाऊँ, तब जाना।"

"मेरा भी तो उनसे मिले बगैर जाने का विचार नहीं है।"

शमशाद बैठक से निकल कर रामरक्खामल्ल के कमरे के बाहर जाकर आवाज देते हुए बोला, "भापा! जरा आओ न?"

रामरक्खामल्ल बाहर आकर बोला, "क्या मैं सुलह हो जाने की बधाई दूँ?"

"नहीं भापा! वह नहीं मानती।"

"क्या कहती है?"

"यह आप आकर सुन लें और उसको समझा दें।"

"भाई शमशाद! मैं तो मियाँ–बीवी के झगड़े में पड़ना नहीं चाहता था, इस कारण चुप बैठा था।"

"अब तो आपके आए बिना काम नहीं चलता।"

रामरक्खामल्ल गम्भीर विचारों में मग्न बैठक में आ गया। नासिरा बैठी थी। उसके सामने सुल्ताना थी। समद नासिरा के पास खड़ा था। सरवर और शमशाद खड़े थे।

रामरक्खामल्ल ने पूछा, "नासिरा! मुझसे कुछ कहना चाहती हो क्या?"

"कहना तो चाहती थी। इसलिए ही इनसे भेंट करने के लिए यह जगह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकर्रिर की थी। मगर इन्होंने आपको बुलाने का मौका ही नहीं दिया।'

"इससे पूर्व कि आप इस विषय में कुछ राय दें, मैं आपको अपना पूर्ण इतिहास बता देना चाहती हूँ।"

इस पर नासिरा ने अपने जीजा के घर में पलने, वहाँ से भागने, गाना नाचना सीखने और फिर रकासा का काम करने की कहानी बता दी। इसके बाद उसने शमशाद और जवाहरलाल के बैठक पर आने और जवाहरलाल द्वारा साधना के छूटने की कहानी बताई। अन्त में उसने शमशाद के साथ अपने कौलों–करार और दो वर्ष का विवाहित जीवन, फिर शमशाद के अपने वालिद से कौलो–करार का वर्णन कर दिया। उसी अवधि में खलीफा अजीमुल्ला खाँ की मौत का हाल सुनाने के बाद, शमशाद का उसको उसकी मुसीबतों का कारण बताकर घर से निकल जाने की बात बता दी।

इसके बाद उसने अपनी डाँवाँडोल हालत का चित्र खींच कर रुक्मिणी से भेंट और उसके द्वारा थियेट्रिकल कम्पनी में नौकरी मिलने तथा उन्नति करने का ढंग और उसमें रुक्मिणी की सहायता की कहानी बता दी।

रामरक्खामल्ल देख रहा था कि उसके वर्णन में फारसी के शब्दों की अपेक्षा हिन्दी के शब्दों का प्रयोग अधिक हो रहा है। इससे वह इस परिणाम पर पहुँचा कि नासिरा इस अवधि में मरहटों अर्थात् हिन्दुओं के सम्पर्क में रही है।

जब नासिरा ने बताया कि वह अब स्वयं को हिन्दू मानती है और शमशाद हिन्दू नहीं होना चाहता, तो रामरक्खामल्ल ने पूछा, "इसका हिन्दू होना जरूरी है क्या?"

"एक तो मेरी नौकरी इसी बिना पर है कि मैं हिन्दू हूँ, मेरा नाम राधा है। एक हिन्दू नर्तकी अथवा गायिका की समाज में इज्जत है। किन्तु कोई मुसलमान औरत अगर यह काम करे तो उसे बाजारू औरत समझा जाता है। उसका वेतन भी कम होता है। और उसे आवारा मानकर लोग उसके पीछे लगे रहते हैं। इसके लिए हत्याएँ तक हो जाया करती हैं।"

"मेरी समझ से तो तुम्हें यह काम छोड़कर घर लौट जाना चाहिए।"

"सोचती तो मैं भी यही थी। यहाँ आने तक मेरा ख्याल भी यही था। मगर मैं सोचती हूँ कि यदि मैं फिर गरीब हो गई तो फिर घर से निकाली जा सकती हूँ।"

"मगर इस काम–धन्धे के लिए हिन्दू बने रहना और उसके लिए अपने खाविन्द को भी हिन्दू बन जाने के लिए कहना तो धोखा देना है। यह भारी पाप है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा! यह बात नहीं। मैं तो मन से हिन्दू बन चुकी हूँ। इनको तो इसलिए कह रही हूँ कि ऐसे ही यहाँ आने से मेरी जिन्दगी दूभर हो जावेगी। मान लीजिए मैं हिन्दू बनी हुई इनके पास आकर रहूँ तो ये मुझे हिन्दू बनी रहने देंगे?

"इस पर तो भापा! यहाँ भारी झगड़ा हो जावेगा। और ये मेरी पिछली जिन्दगी का जिकर कर मुझे बदनाम करने लगेंगे।"

"बताओ शमशाद! तुम क्या कहते हो?"

"मैं हिन्दू नहीं बन सकता। मैं आम हिन्दुओं से नफरत करता हूँ। आपको तो मैं हिन्दू मानता ही नहीं। इसलिए आपके मुताल्लिक नहीं कह रहा।"

"क्यों, मुझे क्या समझते हो तुम?"

"मैं आपको इन्सान मानता हूँ। आपका हर फेल इन्सानियत से पुर है।"

"तो जिनको तुम हिन्दू मान नफरत करते हो, वे हिन्दुओं का भूसा हैं। तुम गेहूँ को भूसा समझ, और भूसे को गेहूँ मान, उससे नफरत करने लगे हो।

"इसी तरह जब तुमने जवाहर को अपनी नासिरा से शादी के विषय में बताया था तो मैंने तुमको इन्सान ही माना था और तुमसे मुहब्बत करने लगा था। मगर अब तुम्हारा इस लड़की के साथ व्यवहार सुनकर तो मैं यही समझ पाया हूँ कि मैं भूसे को गेहूँ का दाना मान बैठा था। तुम तो निरे भूसे ही निकले। इस पर भी मैं एक राय देता हूँ। तुम दोनों उस राय पर विचार करने का वायदा करो तो कहूँ?"

"कहिए।" शमशाद ने कहा।

"और तुम क्या कहती हो?" रामरक्खामल्ल ने नासिरा से पूछा।

"मैं तो आपको अपने पिता के समान मानती हूँ। आप बताइये। आपकी राय पर मैं उतना ही गौर करूँगी जितना किसी लड़की को अपने पिता की बात पर करना चाहिए।"

"देखो, मैं मजहब की तबदीली कपड़े बदलने के समान नहीं समझता। अभी तुम जवाहर की माँ से कह रही थीं कि तुम बिन्दी लगाती हो और तुम्हारा नाम राधा है, इसलिए तुम हिन्दू हो। ऐसा नहीं नासिरा! एक मजहब को छोड़ने और दूसरे को अपनाने से पहले मानसिक परिवर्तन की आवश्यकता है।

"तुम कह रही हो कि वह परिवर्तन तुम में हो गया है। यह तो तुम ही जान सकती हो। मगर मैं पूछता हूँ कि यह तुम किस प्रकार आशा करती हो कि एक चुटकी मारने से ही शमशाद मुसलमान से हिन्दू हो जावेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इसी तरह शमशाद! यह कहती है कि यह हिन्दू हो गई है। यह पहले से ज्यादा पाक साफ है। भला तुम यह किस प्रकार आशा कर सकते हो कि यह एक सैकण्ड में ही अपनी गलती मानकर अपने पुराने ढर्रे पर आ जावेगी?

"इस कारण मेरा यह सुझाव है कि तुम दोनों अपनी–अपनी राह पर चलते हुए एक–दूसरे से मिलते रहा करो। एक–दूसरे पर अपनी जिन्दगी की खूबियों और अच्छाइयों का असर डालने का यत्न करो। और इसमें कामयाबी हासिल करने का यत्न करो।

"यह अपना थियेटर का धन्धा करती रहे। तुम अपनी प्रोफेसरी करते रहो। समय मिलने पर दोनों मिलते रहो। दोनों कोई ऐसा काम न करो, जिससे कि दूसरा बदनाम हो। न ही एक–दूसरे पर बल प्रयोग का प्रयत्न करो।

"इन्सानियत इसी को कहते हैं। और इसी तरह आत्माओं का मिलन होता है। जहाँ दोनों के रास्ते नहीं मिलते, वहाँ एक–दूसरे को बलात् रास्ता बदलते के लिए मत कहो। अपने रास्ते की अच्छाइयाँ बताते रहो और दूसरे को समझने का मौका दो।

"देखो शमशाद! एक जमाना था, जब मजहबी तबादला सिर्फ एक सिम्मत से दूसरी सिम्मत में ही हो सकता था। मगर अब राज्य विदेशियों का होने से वह बात नहीं चल सकती। अब तो मजहबी तबादला दोनों तरफ चलेगा। इसलिए इन्सान से इन्सानियत की तरह सलूक रक्खो।"

शमशाद इस तजवीज की खूबियों और खामियों को समझने की कोशिश करता हुआ चुप रहा। नासिरा ने एक क्षण विचारकर कहा, "भापा! मुझे यह तजवीज पसन्द है। यह मेरे घर बम्बई आ सकते हैं और रह सकते हैं। मुझे देखें और अपने अन्दर की खूबियों का मेरे दिमाग पर प्रभाव उत्पन्न करें। जब हम एक ही रास्ते के राही हो जावेंगे। फिर हम पति–पत्नी भी हो जावेंगे। मैं इनको पूरा मौका देना चाहती हूँ कि यह मुझको मुसलमान बनने के फायदे समझाया करें। मगर कभी इन्होंने जबर्दस्ती की तो यह पुलिस के हवाले कर दिए जायेंगे।"

शमशाद उठकर बोला, "भापा! मैं आपकी तजवीज पर इतनी जल्दी फैसला नहीं कर सकता।"

"नासिरा! तुमने कैसे इसको तुरन्त मान लिया?" रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए पूछ लिया।

"भापा! मैं हिन्दू हो गई हूँ न? मुझे बताया गया है कि हिन्दू किसी पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबरदस्ती अपने ख्यालात थोपा नहीं करता। आपने भी तो यही कहा है। मैं ऐसा तो पहले ही मानती हूँ।''

''परन्तु पहले तो तुम यही कुछ नहीं कर रही थीं?''

''जी नहीं। पहले तो मैं अपने और इनके भिन्न–भिन्न मजहबों के मानने मुश्किलाहत की बात कह रही थी। मैं नौकरी नहीं छोड़ सकती। आर्थिक दृष्टिकोण से मैं इनके अधीन नहीं रह सकती। इससे नौकरी छोड़ने का विचार छोड़ना पड़ा। ये मुझे अपने घर में तभी रख सकते हैं, जब मैं मुसलमान बन जाऊँ। मैं इनको अपने साथ बम्बई तब ही ले जा सकती हूँ, जब ये हिन्दू बन जावें। इस कठिनाई का ही मैंने इनसे जिकर किया था। जहाँ तक मेल–मुलाकात का सम्बन्ध है, मैं इनको मना नहीं कर सकती। उसमें इनके और मेरे लिए भी दिक्कत पेश हो जावेगी।''

''एक बात और है भापा! यह अब ऐसी जबान सीख गई है जो न तो बच्चे समझ सकते हैं और न मैं, या सरवर ही।'' शमशाद का कहना था।

''यह तो कोई वजह नहीं।'' रामरक्खामल्ल ने कहा–''जैसे यह सीखी है, वैसे ही भूल भी सकती है। साथ ही तुम भी वही जबान सीख सकते हो। यह तो संगत का फल है।''

''कुछ भी हो। मुझे इस तजवीज पर गौर करने का मौका मिलना चाहिए। अगर मैं इस बात को ठीक समझूँगा तो मैं इससे मिलता रहूँगा।''

सुल्ताना ने कहा, ''शमशाद! लालाजी ठीक तो कहते हैं।''

''मगर अम्मी! मुझे भी तो अपनी नौकरी का ख्याल करना है? एक कॉलेज का प्रोफेसर एक न वनी से कैसे मेल–मुलाकात रख सकता है? हाँ, अगर यह मेरी बीवी बनना चाहे तो बात दूसरी है। साथ ही एक इस्लामिया कॉलेज के प्रोफेसर की बीवी हिन्दू कैसे रह सकती है। अगर यह बात बाहर के लोगों को मालूम हो गई तो मेरी नौकरी छूटने के साथ–साथ लाहौर में हिन्दू–मुस्लिम फसाद भी हो सकता है।''

''इसी कठिनाई की बात मैं भी कह रही थी।'' राधा ने कहा।

''इस समद का क्या होगा?'' शमशाद का प्रश्न था।

''मैंने तो इसको कहा है कि अपने अब्बा जान से इजाजत लेकर मेरे साथ चले।''

''मेरी इसमें दिलचस्पी नहीं रही। तुम इसे ले जा सकती हो।''

''अच्छी बात।'' फिर उसने समद की उँगली पकड़कर कहा, ''समद! मैं बम्बई जा रही हूँ। चलोगे मेरे साथ?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"चलूँगा।"

: 5 :

शमशाद, सरवर और सुल्ताना गए तो सुल्ताना के मुख पर असंतोष की झलक स्पष्ट थी। सरवर आने के समय की अपेक्षा जाने के समय अधिक प्रसन्न दिखाई देती थी। शमशाद का मुख पीला पड़ गया था।

जब ये चले गए तो रामरक्खामल्ल ने कहा, "राधा! तुमने एक बहुत बड़ा खतरा मोल ले लिया है।"

"कैसे भापा!"

"शमशाद के तास्तुब पर से तहजीब की नकाब उतर गई है। उसका मुख नाउम्मीदी से पीला पड़ गया था। नाउम्मीदी में लोग मूर्खता करने लग जाते हैं और परिणाम बुरा ही होता है।"

"मैं जवाहरलाल जी से मिलकर जाना चाहती हूँ।"

"मगर वह तो कह गया था कि आज उसका हस्पताल जाने का दिन है। इस कारण वह सायं सात–साढ़े सात से पहले नहीं आवेगा।"

"तो ठीक है। मैं रविवार के दिन ठीक बारह बजे यहाँ आऊँगी और भोजन आपके यहाँ ही करूँगी।"

यह कहकर नासिरा भी चली गई। रामरक्खामल्ल शमशाद से अपना सम्बन्ध अकल्याणकारी मानने लगा था। वह मन में विचार करता था कि यह तो सब मुसलमानों की भाँति साम्प्रदायिक ही निकला। वह जवाहरलाल को समझा देना चाहता था कि उसको वह अब इस घर में न लावे।

रामरक्खामल्ल गम्भीर भाव में अपने कमरे में आया तो लेखवती और साधना उत्सुकता से यह जानने की प्रतीक्षा कर रही थीं कि उन लोगों में क्या फैसला हुआ है। किन्तु रामरक्खामल्ल का गम्भीर मुख देख वे विस्मय में बैठी ही रहीं। रामरक्खामल्ल ने कहा, "उनमें सुलह नहीं हुई। विपरीत इसके, मैं यह समझता हूँ कि दुश्मनी बढ़ गई है। इसका नतीजा भी बहुत बुरा होगा।"

"किसके लिए?"

"नासिरा के लिए।"

"क्यों?" साधना ने पूछा।

"इसलिए कि उसने एक मजहबी मुसलमान के सामने अपना हिन्दू बन जाना बयान कर दिया है।"

 CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर वह हिन्दू हो गई है क्या?"

"हिन्दू बनने की कोई विधि तो उससे पूरी की नहीं है। हाँ, मन से वह हिन्दू हो गई मालूम पड़ती है। इस पर भी उसको इस प्रकार बताने की जरूरत नहीं थी।"

"अब क्या होगा?"

"वही, जो कुछ मेरे साथ हुआ था। कोई दीवाना छुरा लेकर उस पर लपक पड़ेगा। मैं शरीर मजबूत होने के कारण बच गया। लेकिन वह समाप्त हो जावेगी।"

"आपने उसको मना नहीं किया?"

"मैं क्या मना करता? एक तो मैं यह नहीं जानता था कि शमशाद कोई अन्ध–विश्वासी मुसलमान है। दूसरे, मेरे वहाँ जाने से पहने ही वह अपने पति से झगड़ा कर चुकी थी। मैंने बात समझाकर सुलह कराने का यत्न किया था, परन्तु शमशाद नहीं माना। एक सत्य हृदय से हिन्दू मनोवृत्ति वाली की भाँति नासिरा मान गई थी। मगर शमशाद ने इन्कार कर दिया।"

"भापा! हमें अब इनसे ताल्लुक नहीं रखना चाहिए।"

"मैं जवाहरलाल को मना कर दूँगा।"

बात तो समाप्त हो गई, परन्तु चिन्ता नहीं मिटी। जवाहरलाल रात को दस बजे लौटा। पिता और पत्नी दोनों उसकी अपने–अपने कमरे में प्रतीक्षा कर रहे थे। वह सीधा अपने पिताजी से मिलने के लिए आया। आते ही उसने पूछा, "पिताजी! क्या हुआ है? मैं शमशाद से मिलने के उसके घर पर गया था। वह आगबबूला हो रहा था। सरवर खुश नजर आ रही थी। केवल शमशाद की अम्मी ही सही दिमाग मालूम होती थीं।"

इस समय साधना भी वहाँ आ गई। विष्णुनारायण भी नीचे उतर आया था। रामरक्खामल्ल के अनुमान से शमशाद अब विश्वसनीय नहीं रहा था। उसने पूछा, "वहाँ क्या हुआ है, सब बताओ।"

"मैं वहाँ साढ़े सात बजे पहुँचा था। मैं यह तो उम्मीद नहीं करता था कि नासिरा वहाँ रहने के लिए चली गई होगी। इस पर भी मैं यह सुनने की आशा करता था कि मियाँ–बीवी में समझौता हो गया है।

"कल शमशाद के मुख से ये शब्द निकले थे कि उसने ही उसको घर से निकाला था। इससे मैं दोनों में झगड़ा होने की सम्भावना कर रहा था परन्तु मुझे यह आशा थी कि आपके यत्न से दोनों में सुलह हो जावेगी।

"मैं जब वहाँ गया तो शमशाद कहीं बाहर से आया था। मुझे देखते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने कहा, 'जवाहर! घर से आये हो?'

"मैंने कहा, 'नहीं, क्यों? मैं सीधा कॉलेज से आ रहा हूँ। आज अस्पताल का दिन था।'

"इस पर वह बोला, 'इस बदकार औरत से अपना ताल्लुक बना मैंने अपनी जिन्दगी की सबसे बड़ी भूल की है।'

"हम दोनों ऊपर गए तो सरवर प्रसन्नता में एक गजल गुनगुना रही थी। शमशाद मुझे अपनी बैठक में ले गया। वहाँ सुल्ताना गमगीन बैठी थी। मैंने बैठते हुए पूछा, 'क्या हुआ है भापा! क्या उसने किसी और से ताल्लुक बना लिया है?"

" 'जरूर बना लिया है।'

" 'उसने इसके मुताल्लिक कुछ कहा है?'

"इस पर सुल्ताना ने कहा, 'नहीं जवाहर! उसने ऐसी कुछ भी बात नहीं की। यह तो इसके दिमाग की ही इख्तरा है।'

"सुल्ताना ने बताया कि वह कह रही थी कि नौकरी वह छोड़ नहीं सकती। उसको डर है कि पहले की तरह यह कहीं उसे फिर न निकाल दे। नौकरी के लिए उसका हिन्दू बना रहना फायदेमन्द है। इस पर भी वह कहती थी कि कभी–कभी शमशाद उससे मिलने के लिए आ सकता है...'

"शमशाद ने अम्मी की बात काटते हुए कहा–'नहीं अम्मी! तुम नहीं समझीं। वह यह कह रही थी कि वह मन से हिन्दू हो गई है। मैं उससे मिला करूँ पर उसका खाविन्द बन कर नहीं, ऐसे ही मुलाकाती बनकर। वह मेरी बीवी तब ही बन सकेगी, जब मैं हिन्दू हो जाऊँगा।'

" 'तुम कुछ बेवकूफ बनते जा रहे हो शमशाद!' सुल्ताना ने कहा, "कौन औरत है जो अपने को उस आदमी से अलहदा रख सकती है, जिससे वह दो साल तक एक ही बिस्तर पर सोई हो?'

" 'अम्मी! वह औरत ऐसा कर सकती है, जो किसी दूसरे के बिस्तर का स्वाद लेने लगी हो।'

"सुल्ताना ने कह दिया, 'ला हौल विला! क्यों कुफ्र बोलते हो शमशाद! खुदा से डरो। वह तो तुम्हारे पास आने के लिए तैयार थी। तुमने उसकी हिफाजत की गारंटी नहीं की। उसने कहा था कि वह यह फैसला करके आई है कि तुम्हारे घर लौट आयेगी, मगर जब उसको शक हुआ कि तुम उसको, जैसी वह है, वैसी नहीं रख सकोगे तो उसने कहा कि वह नौकरी नहीं छोड़ सकती। फिर गरीब हो जाने पर तुम धक्के मारकर उसे घर से निकाल दोगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताओ, तुमने पहले ऐसा नहीं किया था?'

''शमशाद का कहना था कि इन बातों को समझना औरतों का काम नहीं है। अगर हम खुदा के भरोसे रहते तो अब तक सब मुसलमान हिन्दू हो गए होते। यह कहकर उसने उसको चुप करा दिया।

''मैंने बात बदल दी। सरवर के मुख से बात जानने के लिए मैंने उससे पूछा, 'सरवर भाभी! तुमको अपनी साथिन न मिलने से अफसोस तो बहुत हुआ होगा?'

''उसने कहा, 'मुझे तो उसके लौटने की पहले ही उम्मीद नहीं थी।' यह बात सरवर ने गलत कही है। पिछली रात को उसको यह जानकर कि शमशाद की एक और बीवी आ गई है, सख्त अफसोस लगा था। रात को उनके घर हम इसी वजह से ही नहीं गये थे।

''सुल्ताना ने हम सबके सामने खाना परोस दिया। मैं इनकार नहीं कर सका। ऐसा मालूम होता है कि सुल्ताना और सरवर में भी अनबन हो रही है। क्यों, इसका पता नहीं चल सका।''

''देखो जवाहर।'' रामरक्खामल्ल ने कहा, ''मेरा कहा मानो तो अब वहाँ मत जाना। शमशाद से मित्रता में मुझे कल्याण नहीं दीखता।''

''भापा! मुझे अफसोस है कि इस आदमी को मैंने अपना दोस्त समझा था।''

''राधा कह गई है कि रविवार को तुम्हें मिलने के लिए वह यहाँ आयेगी।''

''मेरी तो अब उसमें भी रुचि नहीं।''

''ठीक है। अब वह आयेगी। परन्तु न तो तुम्हें उसके घर जाना है और न ही अब उसके साथ थियेटर में जाने की बात है। इस कारण उससे बाहर भी सम्पर्क रखने की आवश्यकता नहीं। हाँ, भविष्य में उसको यहाँ आने के लिए निमन्त्रण नहीं देना। मुझे उसके यहाँ आने में अनिष्ट ही दिखाई देता है।''

जवाहरलाल चुप रहा। उस दिन बृहस्पतिवार था। घर के सब लोग रविवार को राधा के आने पर उसको अपने विषय में सावधान रहने की बात कहना चाहते थे। इस सावधानी में एक बात उनके घर न आने की भी थी।

मगर ऐसा नहीं हो सका। फकीरचन्द शनिवार को थियेटर देखने के लिए गया था। रविवार को प्रातःकाल दस बजे वह रामरक्खामल्ल के घर आकर कहने लगा, ''कल रात इस्लामिया कॉलेज के एक छात्र ने राधा अभिनेत्री पर छुरा फेंक कर वार किया। जब वह नाइट क्लब में नाच दिखा रही थी तो मेरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास बैठे एक नौजवान ने अपने अन्दर की जेब से छुरी निकाली और निशाना बाँधकर वह छुरी राधा की ओर फेंकी। निशाना तो सीने का बाँधा गया था, किन्तु वह लगी जाकर उसके कन्धे पर। छुरी उसके कन्धे पर दो इन्च लम्बा घाव बनाती हुई पीछे बैठे एक अभिनेता खटाऊ के मुख को चीरती हुई दूर जा गिरी।

"वह नवयुवक भागने लगा तो मैंने उसको पकड़ लिया। पुलिस ने उसको हिरासत में ले लिया है। खेल तो बन्द हो गया। कम्पनी के मालिक को साधारण चोट आई है। उसने सब टिकटों का मूल्य वापस कर दिया था। मुझे थाने में जाना पड़ा। वहाँ जाकर अपना नाम–पता आदि बता आया हूँ।"

इस पर रामरक्खामल्ल ने राधा का सारा किस्सा फकीरचन्द को बता दिया और कहा, "यह इतिहास तुम्हें वहाँ बताने की आवश्यकता नहीं। तुम्हें तो केवल घटना का विवरण ही बताना चाहिए। मैंने तुम्हें यह सब इसलिए बताया है कि तुम्हें घटना की पृष्ठभूमि का ज्ञान हो जाय और तुम सावधानी से रह सको।"

"मैं सब समझ गया हूँ भापा! मुझे भय है कि आपको तथा जवाहर को फिर इसमें घसीटा जाएगा।"

"मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। यह तो राधा के विचार करने की बात है। आज वह मध्याह्न का भोजन करने के लिए हमारे यहाँ आने वाली है।"

"यदि आप कहें तो मैं उसके पास किसी को भेजकर विदित करूँ कि उसने पुलिस में क्या बयान दिए हैं।"

"हाँ करो। किन्तु अपना और हमारा नाम बीच में नहीं आना चाहिए।"

"यही यत्न करूँगा। मैं चाहता हूँ कि उसको समझा दूँ कि जिससे अपना पिछला इतिहास वह इस घटना के बीच में न आने दे।"

"किस प्रकार करोगे यह सब?"

"अभी तो मैं इस पर विचार करूँगा। देखो भापा! आपसे या जवाहरलाल से कोई पूछने के लिए आए तो प्रयत्न यही करना कि जब तक मैं वहाँ की बात पता नहीं कर लेता, आप बयान न दें।"

फकीरचन्द वहाँ से सीधा घर गया और कपड़े पहन ब्रैडला हॉल के पिछवाड़े की कोठी में, जिसमें ऐक्टर रहते थे, जा पहुँचा। उसने कम्पनी के मालिक का पता पूछा तो उसको बताया गया कि वह नीडोज होटल में ठहरा हुआ है। फकीरचन्द सीधा वहाँ चला गया।

सेठ खटाऊ ने फकीरचन्द को पहचान लिया। उसने समझा कि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुजरिम को पकड़ने का इनाम चाहता है। किन्तु जब फकीरचन्द से बात होने पर उसको विदित हुआ कि वह लाहौर के प्रतिष्ठित वकीलों में है तो फिर वह खुलकर बात करने लगा। फकीरचन्द ने पूछा, "आपने इस घटना के विषय मे कोई बयान दिया है क्या?"

"हाँ, मैंने घटना और घटनास्थल का विवरण बताया है।"

"क्या राधा का इस लड़के से कोई सम्बन्ध था?"

"मैं प्रातःकाल इस विषय में राधा से पूछने के लिए अस्पताल गया था। उसने लड़के से कोई संबन्ध नहीं बताया। किन्तु उसने इस्लामिया कॉलेज के एक प्रोफेसर से अपने संबन्धों की एक लम्बी कहानी अवश्य बताई है। उसका विचार है कि उस प्रोफेसर के भड़काने पर ही उस लड़के ने यह घृणित काम किया है।

"उस वक्त तक तो उसके बयान नहीं हुए थे। मैंने उसको यही राय दी है कि वह केवल घटना के संबन्ध में ही अपने बयान दे। इधर–उधर की कोई बात न करे। आप तो वकील हैं, बताइए इसमें आपकी क्या राय है?"

"मैं तो समझता हूँ कि मुजरिम का कार्य है कि वह उसका नाम बताए, जिसके कारण वह इतने संगीन जुर्म में फँस गया है। हमारा काम तो यही है कि हम उसे मुजरिम साबित कर दें।"

"अभी तक तो मेरे बयान बहुत साफ हैं। मैंने सबसे पहले यही बात की थी कि मैं उस युवक को भली भाँति पहचान लूँ और उसे मैंने पहचान लिया है। वैसे राधा बहुत ही शरीफ ऐक्ट्रेस है। अपनी कला में वह निपुण भी है। अभी तक तो मेरा यहाँ आने का खर्च भी नहीं निकल पाया, इस पर भी राधा की जान का भय समझकर मैंने यहाँ से जाने का निर्णय कर लिया है।"

"आपने उचित ही निर्णय किया है। इस पर भी एक बार तो राधा को आना ही पड़ेगा?"

"क्या इस मुकदमे में हमें कोई अपना वकील भी मुकर्रिर करना चाहिए?"

"अवश्य। अन्यथा उसके विरुद्ध अपराध सिद्ध करना कठिन हो जाएगा और यदि एक मुजरिम छूट गया तो फिर जान छूट जाने की आशा में अन्य अनेक मुजरिम राधा की जान के पीछे पड़े रहेंगे।"

"तो आप मुकदमा लड़ेंगे?"

"मैं आपकी ओर से पैरवी नहीं कर सकता। मैं तो एक प्रमुख गवाह हूँ। आप किसी अन्य वकील को नियुक्त कर लीजिए।"

"खलीफा फिरोजदीन को कर लूँ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुजरिम मुसलमान है और खलीफा फिरोजदीन उसको बचाने के लिए आपका मुकदमा ढीला कर देगा।"

"तो आप किसी अच्छे हिन्दू वकील का नाम सुझा दीजिए।"

"मैं समझता हूँ कि आप महाशय धनपत राय को कर लीजिए।"

"ठीक है, आप मुझे उनके पास ले चलिए।"

वे दोनों उसी समय महाशय धनपत राय के पास जा पहुँचे। उसकी सम्मति भी यह थी कि अपने बयानों में वे घटना के विवरण तक ही सीमित रहें। इधर–उधर की बात कहने से मुकदमा कमजोर हो जावेगा।

फकीरचन्द यह प्रबन्ध कर लौटा तो उसके विस्मय का ठिकाना नहीं रहा, जब उसको बताया गया कि घायल स्थिति में ही राधा लाला रामरक्खामल्ल के घर आई हुई है। वकील साहब का बहनोई सन्तराम वहाँ बैठा था। उसने रामरक्खामल्ल का सन्देश देते हुए कहा, "भापा, रामरक्खामल्ल ने कहला भेजा है कि आप उसके घर आवें। राधा वहाँ आई हुई है।"

उसी समय फकीरचन्द रामरक्खामल्ल के घर जा पहुँचा। राधा ने उसे देखा तो बोली, "आज पुलिस वाले मेरा बयान लेने के लिए आए थे। अपने कम्पनी के मालिक की सलाह पर मैंने केवल कल की घटना का ही उल्लेख अपने बयानों में किया है। मैंने यह भी बताया है कि कटार फेंकते हुए मैंने उस युवक को देख लिया था। इस कारण मैं हट गई थी उसकी कटार का निशाना चूक गया और मैं बच गई। कटार मेरी छाती में लगने के बजाय मेरी बाँह को काटती हुई कम्पनी के मालिक की गाल छूकर पर्दे से जा टकराई। मैंने आपके द्वारा उसको पकड़े जाते हुए भी देख लिया था। फिर दो अन्य दर्शक भी आपकी सहायता के लिए आ गए थे।

"पुलिस ने आपका नाम और पता बताया तो मुझे वहीदन, मेरा अभिप्राय है साधना का मामला याद आ गया। इसलिए मैं आपसे तुरन्त मिलना चाहती थी, जिससे यह जानूँ कि असली मुजरिम को क्यों न पकड़ा जाए?"

"नहीं।" फकीरचन्द ने अपनी तथा वकील धनपतराय की सम्मति सुनाते हुए कहा, "इस मुकदमें में हमें इसकी पृष्ठिभूमि बताने की आवश्यकता नहीं। लड़का शायद यही कहेगा कि वह तुमसे मुहब्बत करता है और तुमने उसे ठुकरा दिया है। इसी कारण उसने तुम्हें मारने की कोशिश की। ऐसी अवस्था में तुम उसके मनोभावों से अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना। तुम तो इसमें कोई बनावट नहीं और दूसरे यह हिन्दू–मुसलमान का सवाल भी नहीं बनेगा। इसमें उसे दण्ड मिलेगा और तुम व्यर्थ के झगड़े में नहीं फँसोगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात यहीं समाप्त नहीं हुई। लड़के के बयान तो यह हुए थे कि वह राधा से मुहब्बत करने लगा था और जब नाटक में राधा ने नाज–नखरे दिखा सेठ को अपने जाल में फँसाने का यत्न किया तो वह यह भूल गया कि वह नाटक कर रही है और हसद के कारण वह उस पर छुरी चला बैठा।

किन्तु पुलिस को उसके बयान पर विश्वास नहीं आया। उनके सन्देह के लिए कई कारण थे। वह थियेटर में कटार लेकर क्यों आया और उसके पास रिजर्व क्लास का टिकट खरीदने के लिए पैसे कहाँ से आए? वह कटार भी नयी ही थी। वह कहाँ से खरीदी गई? इस प्रकार के अनेक प्रश्न पुलिस ने उससे पूछे। जब वह बातों का कोई समाधान नहीं करा सका तो उसको पीटा गया और वह सब बक गया।

उसने अपने दूसरे बयान में बताया, ''मैं पहली बार ही थियेटर देखने के लिए गया था। कटार और टिकट के लिए तीन रुपए और चाय–पानी के लिए दो रुपए मुझे प्रोफेसर शमशाद खाँ ने दिए थे। उन्होंने कहा था कि राधा एक मुसलमान की लड़की है, लेकिन किसी हिन्दू लड़के की मुहब्बत में फँसकर हिन्दू हो गई है।

''यदि मैं उस पर कटार फेंककर भागने में कामयाब हो गया तो मुझे वह एक सौ रुपये इनाम का देंगे। और अगर मैं पकड़ गया तो वे मेरे मुकदमे की पैरवी कर मुझे छुड़ा लावेंगे। उनका ख्याल था कि मुझे कटार फेंकते हुए कोई नहीं देखेगा और यदि कोई शक करे तो मैं इनकार कर दूँगा।''

किन्तु पुलिस को इस पर भी सन्तोष नहीं हुआ। उससे पूछा गया, ''कटार फेंकना कहाँ से सीखे हो?''

''कहीं नहीं।''

सीधी तौर पर न बताने पर उसको फिर मुर्गा बनाया गया और फिर उस पर भार रख दिया। वह फिर बक गया। इस बार उसने बताया, ''मैं नवाब साहब के चौक वाली मस्जिद में छुरा चलाना सीखता रहा हूँ। मुझे इसलिए सिखाया गया था कि जब आर्यसमाजी मुबाहिसा करें और कुरान की तौहीन करें तो मैं उनका काम तमाम करूँ।''

''कौन सिखाता था वहाँ पर?''

''एक तमीजुद्दीन दरजी है। वह रामपुर रिसायत का रहने वाला है और छुरी, तलवार वगैरह इस तरह के हथियार चलाने में माहिर है।''

इन बयानों के मजिस्ट्रेट के सम्मुख दिए जाने पर प्रोफेसर शमशाद, तमीजुद्दीन दरजी और उस मसजिद के मुल्ला को भी पकड़ लिया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनके बयान लेने पर मुल्ला और तमीजुद्दीन ने तो लड़के को जानने से ही इनकार कर दिया। प्रोफेसर ने अपने राधा के पति होने की कहानी बता दी। प्रोफेसर ने यह मान लिया कि इल्ताफहुसैन, अर्थात् मुजरिम को उसी ने भेजा था।

इल्ताफहुसैन को कत्ल करने के प्रयत्न और प्रोफेसर शमशाद को कत्ल करने के लिए प्रोत्साहन देने के अपराध में चालान कर मैजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित किया गया तो थियेट्रिकल कम्पनी की ओर से महाशय धनपतराय अदालत में पेश हो गया। मुकदमा पुलिस ने चलाया था। इस पर भी शमशाद के वकील ने राधा से जिरह की कोशिश में उसके पूर्व इतिहास पर बात करनी चाही तो धनपतराय ने कह दिया, ''यह मुआमला अदालत में पेश नहीं। इसलिए इस पर जिरह नहीं की जा सकती।''

शमशाद के वकील ने कहा, ''यह उन हालात को बयान करने के लिए है, जिन हालात में एक खाविन्द कत्ल करने के लिए तैयार हो जाता है। मुजरिम की बीवी जब किसी दूसरे से सम्बन्ध बना ले तो उसको क्रोध चढ़ आना स्वाभाविक है।''

''और जब यह साबित हो गया कि मुजरिम जबर्दस्ती किसी गैर औरत पर अधिकार जमाने के लिए यह कत्ल करने लगा था तो जुर्म और भी संगीन हो जायेगा।''

इस पर मजिस्ट्रेट ने कह दिया, ''इस विषय में भी जिरह हो सकती है।''

राधा ने इस विषय में अपना बयान लिखकर देने के लिए प्रार्थना पत्र दे दिया। राधा का लिखित बयान, जो उसकी जीवन–गाथा थी, अदालत में उपस्थित कर दिया गया। इससे मुकदमे की रंगत बदल गई। वकील धनपतराय ने उन बयानों कि बिना पर जिरह की तो राधा ने इनकार कर दिया कि उसकी कभी भी शमशाद से शादी हुई थी। कौलो–इकरार अवश्य हुए थे किन्तु उनको भी शमशाद ने ही तोड़ा था।

जब शमशाद और उसके वालिद के शर्तनामा की बात अदालत में उपस्थित की गई तो शमशाद ने जोर से ऊँची आवाज में कह दिया कि यह गलत है। इस पर मजिस्ट्रेट ने कहा, ''चुप रहो। वरना हथकड़ी और बेड़ी डलवा दूँगा।''

इस पर जब खलीफा अजीमुल्ला खाँ का टैगी कुत्ते से घायल किए जाने की बात आई तो अदालत में उपस्थित सभी लोग हँस पड़े।

इन बयानों के आधार पर मुजरिम पर दोबारा जिरह की इजाजत माँगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। इजाजत मिलने पर एक सप्ताह तक जिरह होती रही। इस पर कुछ और गवाहों को बुलाने के लिए सम्मन जारी करने की प्रार्थना की गई। उनमें सरवर, सुल्ताना, अनवरी, नरगिस, जवाहर और रामरक्खामल्ल के नाम दिए गए तो शमशाद को अनुभूति हुई कि उसने भूल कर दी है। उसकी माताओं और बीवियों के विषय में उसके वकील ने कहा कि वे पर्दानशीन हैं, अतः अदालत में उपस्थित नहीं हो सकतीं।

मजिस्ट्रेट नहीं माना। अदालत का कथन कि शमशाद ने स्वयं इस मामले में सबको शामिल किया है। यह जरूरी है कि या तो वह स्वीकार करे कि राधा के बयान दुरुस्त हैं, नहीं तो इन गवाहों को बुलाना पड़ेगा। शमशाद मान गया। रामरक्खामल्ल की गवाही हुई और उसने उस दिन की बात वर्णन कर दी जिस दिन शमशाद और राधा में उसके घर पर बात हुई थी। इस पर अदालत ने अपनी ओर से हुक्म जारी कर दिया कि सुल्ताना को पेश किया जाए। उसके लिए रावलपिण्डी वारण्ट भेजे गए और वह अदालत में उपस्थित हुई। कुरआन की कसम दिला कर उसने बयान दिए। उससे राधा के सारे बयानों की पुष्टि हो गई। मैजिस्ट्रेट ने इस पर बहुत कड़ा फैसला लिखा और शमशाद को सात साल की सख्त कैद तथा इल्ताफ हुसैन को एक साल की कैद का दण्ड दिया।

तीन मास तक मुकदमा चलता रहा। इसलिए राधा को एक मास लाहौर में रहना पड़ा और खटाऊ जी के खर्च तथा पुलिस के संरक्षण में वह लाला रामरक्खामल्ल के घर पर रही।

मैजिस्ट्रेट ने अपने फैसले में घटनाओं और युक्तियों तथा कानूनी हवालों की इतनी झड़ी लगा दी थी कि चीफ कोर्ट तक अपील करने पर भी दण्ड में किसी प्रकार की कमी नहीं हुई।

: 6 :

इस मुकदमे के बाद राधा पुनः बम्बई जाकर थियेटर में कार्य करने लगी। इस समय मनोहरलाल वर्मा विलायत और अमेरिका में फिल्म बनाने और सिनेमैटोग्राफ के काम के विषय में पूरी जानकारी प्राप्त कर भारत लौट आया। उसे फिल्मों को बनाने मे कला का बहुत कम हाथ दिखाई दिया। मशीनों और चित्रों के भ्रमोत्पादक कर्तबों का हाथ उसमें अधिक था। इस कारण वह अपने मन में सिनेमा फिल्म बनाने की रुचि उत्पन्न नहीं कर सका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर उसने एक हाल किराये पर लेकर फिल्म दिखाने का काम आरम्भ कर दिया। इस नई बात में कला के विकास का कोई अवसर दिखाई न देने से सरला ने उसमें रुचि नहीं ली। वह संगीत–नृत्य गोष्ठियों का आयोजन करने लगी। इस दिशा में यत्न करते–करते उसको पुनः रुक्मिणी और राधा का स्मरण हो आया। उसने दोनों को बुलाकर इस विषय पर बात करने का निर्णय कर लिया।

रुक्मिणी में उसको एक नवीन विचारों की झलक दिखाई दी। यह सन् 1906 के अन्त की बात थी। बंगाल के विभाजन के कारण देश में एक नवीन जागृति उत्पन्न होने लगी थी। स्वदेशी अन्दोलन चला तो अनेकानेक नवीन विचारों का विस्फोट होने लगा।

सरला एक दिन न्यू ऐलफ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी में राधा का गाना सुनने के लिए 'राजरानी मीरा' खेल देखने के लिए जा पहुँची। उसने अनुभव किया कि अब राधा संगीत कला में पर्याप्त उन्नति कर गई है। वह भजन पर भजन इस प्रकार गाती जाती थी कि मानो वे भजन उसके जीवन का अंग बन गए हों।

नाटक समाप्त होने के अनन्तर वह राधा से मिली। राधा ने उसको पहचाना तो नतमस्तक, श्रद्धापूर्वक उसको नमस्कार कर दिया। सरला ने अगले दिन राधा को अपने घर मध्याह्न भोजन के लिए आमन्त्रित किया। अगले दिन राधा वहाँ पहुँची तो उसने देखा कि मिस्टर मनोहरलाल भी वहाँ उपस्थित हैं। राधा ने नमस्कार कर उनको पिताजी कहके सम्बोधित किया तो वह हँस पड़ा। फिर कहने लगा, "क्यों सरला! यह पली–पलाई और कलाप्रवीण लड़की ग्रहण करने में तुम्हें कोई आपत्ति है?"

इसका उत्तर राधा ने ही दिया, "पिताजी! कभी आपने एकपक्षीय निर्णय होते देखे अथवा सुने हैं?"

"हाँ, जब देनदार जान–बूझकर अदालत में उपस्थित न हो तो निर्णय एक–पक्षीय हो जाता है।"

"तो यही बात मेरे विषय में भी है। आप विलायत गए थे। मैं अपने आपको हिन्दू समझने लगी थी। एक स्थान पर एक हिन्दू परिवार में मुझसे मेरे माता–पिता का नाम पूछा गया तो मैंने माता का नाम रुक्मिणी और पिता का नाम मिस्टर मनोहरलाल वर्मा बता दिया। इस पर एक, जो मेरे मुसलमान माता–पिता के विषय में जानती थी, ने विस्मय प्रकट किया तो मैंने बताया कि रुक्मिणी देवी ने तो मेरी माता की भाँति रक्षा और सहायता की है और वर्माजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने मुझे शिक्षा तथा व्यवसाय में सहायता दी है। इस कारण एक माता हैं और दूसरे पिता।''

इस पर सरला और मनोहरलाल दोनों ही हँसने लगे। सरला ने कहा, ''परन्तु राधा! रुक्मिणी के पति के सम्मुख यह मत कह बैठना, नहीं तो वे रुक्मिणी बेचारी पर पिल पड़ेंगे। वे समझेंगे कि हमारी नाटक कम्पनी में कार्य करते हुए उसने तुम्हें जन्म दिया है।''

''परन्तु मैंने तो उनको भी बता दिया है और वे आपसे भी अधिक हँसे थे। वह अब मुझे अपनी लड़की ही मानते हैं। कहा करते हैं कि पत्नी की कन्या है तो पति की भी कन्या ही हुई। क्या मेरी पत्नी निष्ठावान नहीं है?''

''तो तुम्हारा मतलब है कि मैं भी तुमको अपनी लड़की मान लूँ। मैं भी यह कह दूँ कि पति की लड़की है तो अवश्य मेरी ही कोख से पैदा हुई होगी। क्योंकि मेरे पति सदा मेरे प्रति निष्ठावान रहे हैं।''

इस पर मनोहरलाल ने कह दिया–''पर मैं कहता हूँ कि बिना प्रसव पीड़ा सहन किए तुम इसको लड़की बना लोगी तो इसके प्रति उतना स्नेह भी रख सकोगी क्या?''

भोजन करते हुए इस प्रकार हँसी–ठट्ठा चलता रहा। राधा ने कहा, ''मेरा एक लड़का है। वह आजकल मेरे साथ ही रहता है और यहाँ पब्लिक स्कूल में पढ़ता है।''

''क्या नाम है?''

''उसके बाप ने तो उसका नाम समद रखा था, किन्तु जब से वह मेरे पास आया है, मैंने उसका नाम संतोषकुमार रख दिया है।''

''हम अपने दुहिते को देखना चाहेंगे। उसको कभी लाना तो सही।''

''वह तो केवल रविवार के दिन ही आ सकता है। अन्य दिनों में तो वह दस बजे से चार बजे तक स्कूल में रहता है। फिर दो घंटे मेरी संगत में। तदनन्तर वह पढ़ाई करता है। मैं थियेटर में चली जाती हूँ। उसको विदित है कि मैं नाटकों में काम करती हूँ।''

''अच्छी बात है। अगले रविवार को उसको यहाँ ले आना।''

इसके बाद सरला ने उसे अपनी योजना बताते हुए कहा, ''बम्बई में मैं एक कला मन्दिर खोलने के विषय में विचार कर रही हूँ। उसमें नित्य अथवा सप्ताह में एक–दो दिन नृत्य एवं संगीत का प्रदर्शन हुआ करेगा। मैं समझती हूँ कि इसके लिए हमें दस नृत्य–निपुण तथा दस–संगीत–प्रवीण लोगों का सहयोग प्राप्त हो तो कार्य आरम्भ किया जा सकता है। इसमें टिकट लगाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करूँगी। जो कुछ इससे प्राप्त होगा, व्यय निकालकर शेष धन कलाकारों में वितरित कर दिया जायेगा। इसके लिए तीन लाख की लागत से एक कला भवन बनवा दूँगी। रुपये का ब्याज और टूट–फूट की मरम्मत के लिए मैं उसमें से निकाल लिया करूँगी।''

''इससे कलाकारों को लगभग कितना कुछ मिल जाएगा?''

''यह तो अभी बताया नहीं जा सकता। लन्दन में ऐसे भवन हैं। वहाँ नित्य समारोह होते रहते हैं। और कलाकारों को बहुत कुछ मिलता है।''

''मैं तो आपकी लड़की बन गई हूँ। आप जैसा कहेंगी कर लूँगी।''

''तो चलो तुम्हारी दूसरी माता के पास चलें। मेरा अभिप्राय है रुक्मिणी के पास। उसको स्टेज छोड़े दस वर्ष हो गए हैं, इस पर भी वह चाहेगी तो इस प्रकार अपनी कला का प्रदर्शन कर सकेगी।''

भोजनोपरांत दोनों मिस्टर देसाई के घर जा पहुँची। मिस्टर देसाई ने कुछ लोगों को चाय पर आमंत्रित किया हुआ था। इन लोगों को आया देख वह बाहर आ गया और उन्हें भी बुलाकर अन्दर ले गया। मुख्य अतिथि एक सज्जन थे जो बन्द गले का कोट और धोती धारण किए हुए, सर पर महाराष्ट्रियन ढंग का साफा रखे हुए थे। उनकी दाहिनी ओर रुक्मिणी और बाई ओर एक अन्य स्त्री जो महाराष्ट्रियन प्रतीत होती थी, बैठी थी।

''सरला देवी! आइए, आपका इनसे परिचय कराऊँ।'' मिस्टर देसाई ने उनका परिचय कराते हुए कहा, ''ये महर्षि बाल गंगाधर तिलक हैं। आज मेरे विशेष निमन्त्रण पर इन्होंने यहाँ चाय पर आने की कृपा की है।

''यह आपके साथ श्रीमती खापर्डे हैं। ये आजकल बम्बई स्वदेशी आन्दोलन का संचालन कर रही हैं। रुक्मिणीजी के साथ हैं महाशय पिंगले। ये हमारे बम्बई के नेता हैं, बहुत उग्र विचारों के व्यक्ति हैं। और ये हैं श्री नन्दकिशोर, पंजाब में लाहौर के निवासी हैं। वहाँ से भारत माता नामक संस्था की ओर से बम्बई पधारे हैं।''

फिर श्री देसाई ने नवागन्तुकों का परिचय कराते हुई कहा, ''ये हैं ऐल्फिंस्टन सिनेमा के संचालक श्री मनोहरलाल वर्मा की धर्मपत्नी श्रीमती सरला देवी और इनके साथ में हैं श्रीमती राधा देवी, एल्फ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी की प्रसिद्ध अभिनेत्री।''

हाथ जोड़कर नमस्कार हुआ तो श्री तिलक कहने लगे, ''सौभाग्यवती खापर्डे ने मुझे बताया था कि विभिन्न बीस स्थानों पर भिक्षा के लिए जाने की अपेक्षा केवल श्री देसाई के एक ही द्वार पर जाना चाहिए। इसको उचित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझकर मैं यहाँ आया हूँ। एक ब्राह्मण देश के लिए दान माँगता है। बताइये देसाई जी, क्या विचार है आपका?''

देसाई उठा और अलमारी से चैकबुक निकाल लाया। जेब से पैन निकालकर पूछने लगा, ''आज्ञा कीजिए, किसके नाम का चैक लिखूँ?''

''केसरी पुणे। इस समय हमारा पत्र ऋणी हो रहा है और लेनदार कुर्की लाने की धमकी दे रहे हैं।''

देसाई ने केसरी पुणे लिखने के उपरांत पूछा, ''कितना चाहिए?''

''हमें तो इस समय सवा लाख की आवश्यकता है।''

देसाई ने डेढ़ लाख का चैक काटकर कहा, ''महाराज! सवा लाख तो समाचार–पत्र के लिए है और पचीस हजार आपकी दक्षिणा है। आपने यहाँ पधार कर इस घर को अपनी पग–धूलि से पवित्र किया है, मैं आपका अत्यन्त आभारी हूँ।''

तिलकजी ने हँसते हुए चैक ले लिया और उसे अपनी जेब में रखते हुए बोले, ''हमारे कारण पिंगलेजी को भारी निराशा हुई होगी?''

''नहीं भगवन्! इनकी सेवा मैं कर रहा हूँ।''

देसाई ने बीस हजार का एक चैक पिंगले को और दस हजार का नन्दकिशोर को देते हुए कहा, ''इनके भाग का रुपया आपको नहीं दिया गया।''

इस प्रकार चाय–पार्टी पूर्ण हुई। सब लोग चलने लगे। देसाई सबको छोड़ने के लिए मकान के बाहर गया तो राधा ने रुक्मिणी से कहा, ''माता जी! आज तो दोनों हाथों से धन लुटाया जा रहा है!''

''हाँ राधा! इनका नाम सुना है तुमने?''

''हाँ, समाचार–पत्रों में पढ़ा है 'दि ग्रेट ऐजिटेटर ऐण्ड रेवोल्यूशनरी।''

''यह हमारे देश का सौभाग्य है कि इस प्रकार के लोग इस देश में जन्म लिए हुए हैं। ये प्रकाण्ड विद्वान हैं। 1898 में एक लेख लिखने पर इनको पकड़ लिया गया था। उसमें इनको दो वर्ष का कारावास का दण्ड मिला था। तब संस्कृत के महान विद्वान मैक्समूलर ने इनकी सिफारिश करके इनको छुड़ाया था। तब से निरन्तर ये देश, धर्म और समाज की सेवा करते चले आ रहे हैं।''

देसाई उनको विदा कर लौट आया। उसके लौटने पर सरला ने कहा, ''यदि सरकार को विदित हो गया कि आपने एक राज्यद्रोही को रुपया दिया है तो आप बहुत कठिनाई में फँस जायेंगे?''

''कुछ नहीं होगा सरला देवी! मैं इन अंग्रेजों की नीति को जानता हूँ। जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनको घूरता है, ये उससे डरते हैं और जो इनकी मिन्नत करता है, उसे वे पाँव से ठोकर मारते हैं।''

''मेरा अनुभव इससे उलटा है। ये मीठी छुरी हैं। जिसके शत्रु हो जाते हैं, उसका सर्वनाश करके छोड़ते हैं।''

''उसका मैंने प्रबन्ध कर लिया है। अपनी पाँच मिलों की एक लिमिटेड कम्पनी बना दी है। मेरे उसमे केवल एक लाख के ही हिस्से हैं। पचास लाख के हिस्से मेरी पत्नी के नाम हैं और यही कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टर है। मैं राजनीति में भाग लेता हूँ, अंग्रेजी राज्य को उलटने की योजनाएँ बनाता हूँ और रुक्मिणी यहाँ के अंग्रेज आफिसर्स को दावतें दिया करती हैं। काम तो मैनेजर रामकृष्ण ही करते हैं। मैं केवल ऊपरी देखभाल करता हूँ। कम्पनी के मैनेजिंग डायरेक्टर ने समाचार–पत्रों में यह नोटिस दे दिया है कि इन ओलंम्पिक मिल्स से मेरा किसी प्रकार का भी सम्बन्ध नहीं है, इसलिए मेरे द्वारा उसकी ओर से किया जाने वाला किसी प्रकार सौदा अथवा हस्ताक्षर महत्त्वहीन है और मुझे इस प्रकार का कोई अधिकार नहीं है।''

''तो आप इतना रुपया कहाँ से दान देते हैं?''

''रुपया तो मेरे पास आता है। इस स्वदेशी आन्दोलन से हमारी मिलों को दुगुना–तिगुना लाभ हुआ है। सन् 1904 में दिवाले निकलने वाले थे और अब करोड़ों रुपयों का लाभ होने लगा है।''

''करोड़ों? तब तो कुछ हमें भी दे दीजिए।'' सरला ने कहा।

उत्तर रुक्मिणी ने दिया, ''आप भी कोई सार्वजनिक कार्य करिए। आपको भी रुपया मिल जावेगा। श्रीमती सरला वर्मा को कुछ दिया जाय, इसके लिए कोई बहाना तो चाहिए ही।''

''उसी के लिए हम आए हैं। राधा को तो मैं इसलिए लाई हूँ कि यह आपकी लड़की बनी हुई है।''

''हाँ, बताइए। मैं तो आपकी आभारी हूँ। बताइए, मैं आपके लिए क्या कर सकती हूँ?''

सरला ने अपनी योजना बताई तो रुक्मिणी ने कहा, ''कलाकार तो अब मैं रही नहीं। अब मिलों की डायरेक्टर अवश्य बन रही हूँ। साथ ही मैं समझती हूँ कि जनता के अर्थात् धनी–मानी लोगों के लिए सुलभ और सस्ते दामों पर मनोरंजन का प्रबन्ध करना कोई महान् कार्य नहीं है। यह तो बम्बई की सब वेश्याएँ करती हैं। हाँ, यदि एक बात आप करें तो मैं उसमें आपको सहयोग दे सकती हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''क्या?''

''एक कला मन्दिर बनाइए। किन्तु नृत्य–संगीत के प्रदर्शन के लिए नहीं, प्रत्युत इनकी शिक्षा के लिए। निर्धन परिवारों की लड़कियाँ जो इन कलाओं में प्रवीणता पाने के याग्य हों, उनको निःशुल्क शिक्षा और आवश्यकतानुसार छात्रवृत्ति देकर कला सिखाई जाय तो इसमें मैं आपकी पर्याप्त सहायता कर सकती हूँ।''

''किन्तु इसमें हमें क्या मिलेगा?'' सरला का प्रश्न था।

''यश, कीर्ति और जन्म–जन्मान्तर का कल्याण। कला का अर्थ मैं समझती हूँ कि मानसिक वृत्तियों का भगवान की ओर आकर्षित करना। एक विद्यार्थी की भी वृत्ति सीधी ओर लग गई तो आपका जन्म–जन्मान्तर सुधर जावेगा।''

सरला विस्मय में मुख देखती रह गई। राधा, जो प्रायः रुक्मिणी से मिलती रहती थी और उसके विचारों से परिचित थी, पूछने लगी, ''माता जी! यदि आपके विचारों के अनुसार कार्य किया जाय तो आप क्या देंगी?''

''देखो, राधा! तुम योजना बनाओ। उस योजना को मेरे पास लाओ। मैं वह योजना देसाई जी को दिखाऊँगी। उनको उसमें यदि कोई छिद्र दिखाई न दिया तो पूर्ण योजना का खर्चा मैं दे दूँगी। यदि तुम उसकी अध्यक्षा बनो तो तुम्हारा वेतन जो तुम्हें कम्पनी से मिलता है, मैं देने के लिए तैयार हूँ।''

''तो मेरा इसमें कोई कार्य नहीं?'' सरला ने पूछा, ''माँ–बेटी दोनों ही चला लेंगी?''

''नहीं, आप अपना रुपया किसी अन्य कार्य में लगाइए। मैं कला को व्यवसाय बनाने के पक्ष में नहीं हूँ। आप यदि इस संस्था की प्रबन्धक बन जावें तो मुझे बहुत प्रसन्नता होगी।''

सरला विस्मय में रुक्मिणी के मुख पर देखती रही। कुछ विचार कर उसने कहा, ''विलायत में तो कला को ऐसा नहीं समझा जाता जैसा कि तुम बता रही हो?''

''वह इसलिए कि हमारे यहाँ कला को सरस्वती की देन माना जाता है और वहाँ इसे शैतान की ईजाद माना जाता है। और फिर मैं आपसे पूछती हूँ कि आप विलायत की उपासिका क्यों होती जा रही हैं? क्या उनकी सभी बातें अनुकरणीय हैं?''

''वक्त के हाकिम हैं। हाकिम तो कोई श्रेष्ठ गुणों वाला ही हो सकता है।''

''वह तो ठीक है, परन्तु हाकिम के सब गुण श्रेष्ठ ही होंगे, यह कहाँ की युक्ति है? जो कुछ वहाँ 'हाइड पार्क' और 'डांस हॉल' तथा 'होटल लाजेज'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में होता है, वह सब भी श्रेष्ठ ही है क्या? अपने पति की खोज में योरुप की लड़कियों की जो दौड़ लगी हुई है, वह क्या अति श्रेष्ठ कार्य है?"

कुछ विचार कर सरला ने उल्टे रुक्मिणी से ही पूछा, "तो ऐसी कौन–सी बात है जिसके आधार पर वे लोग यहाँ के शासक बन बैठे हैं?"

"उनको अपने देश से प्रेम है। वे अपने देश के लिए महान् त्याग करने के लिए प्रस्तुत रहते हैं। यही गुण हम यहाँ पर भी पैदा करने का यत्न कर रहे हैं। इसके लिए देसाई जी लाखों रुपये व्यय कर रहे हैं, अपनी जान हथेली पर लिए घूम रहे हैं।"

"तो ये इतना खतरा क्यों मोल ले रहे हैं?"

"केवल अपने देश में अपना राज्य स्थापित करने के लिए। महर्षि तिलक ने यह घोषणा की है कि अपने देश में अपना राज्य पाना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। उनकी इस घोषणा और इसकी सिद्धि के लिये ही देसाई जी ने डेढ़ लाख रुपया उनको दिया है।

"देखिये, सरला जी! हमारे देश में कांग्रेस नाम की एक संस्था काम कर रही है। वह हिन्दुस्तानियों के लिये सरकारी नौकरियाँ प्राप्त करने का यत्न करती रहती है। श्री तिलक ने उसकी उपमा उस भिखारी के साथ दी है जो एक टुकड़े के स्थान पर दो टुकड़े माँगता है। श्री तिलक जानते हैं कि जब तक देशवासियों के मन में देश के लिए त्याग की भावना नहीं होगी, तब तक हमारा अपना राज्य नहीं हो सकेगा। हम आगामी कांग्रेस के लिए तिलक जी को अध्यक्ष बनाना चाहते हैं। पुराने कांग्रेसी इनको पसन्द नहीं करते।"

"मैं पूछती हूँ कि अंग्रेजों की हुकूमत बनी रहने से हमें क्या कष्ट है? देश में सुख, शान्ति और खुशहाली है। हम लोग पढ़ भी रहे हैं। कोई हमें अंग्रेजी पढ़ने से रोकता भी नहीं।"

"आप नित्य 'केसरी' पढ़ा करिये। इससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। तब आप समझ सकेंगी कि हम क्या कर रहे हैं।"

सरला से अधिक राधा समझ रही थी। सरला अभी नई–नई विलायत से लौटकर आई थी और वहाँ की प्रवृत्ति कि धन कैसे पैदा किया जाता है, लेकर आई थी। रुक्मिणी की बातें देश के उस समय के वायु मण्डल के अनुरूप थीं।

सरला और राधा दोनों वहाँ से लौटीं। पहली आश्चर्यान्वित और निराश होकर, दूसरी प्रसन्न और विचारमग्न। मार्ग में दोनों परस्पर बोलीं नहीं। जब सरला का घर आया तो वह उतर पड़ी। राधा ने पूछा, "फिर कब मिलने आऊँ?"

"रविवार को, सन्तोष को लेकर आना।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 7 :

राधा विचारों में भरी हुई घर पहुँची। सन्तोष उससे पहले ही घर पहुँचा हुआ था।

"सन्तोष! आज जल्दी आ गये हो?" राधा ने पूछा।

"हाँ, मम्मी! आज हमारे स्कूल में गवर्नर आए थे, इसलिए जल्दी छुट्टी हो गई है।"

"क्या हुआ था स्कूल में?"

"स्कूल को सजाया गया था। उसके आने पर बहुत से बच्चे और टीचर एकत्रित हुए थे। एक लम्बा–गोरा सा आदमी आया था। उसके साथ बहुत से पुलिस वाले थे। उसे मंच पर एक सुनहरी कुर्सी पर बैठाया गया। उसके साथ की कुर्सी पर एक औरत बैठी थी। वह उसकी बीवी है।

"गवर्नर ने खड़े होकर भाषण दिया। हम सबने उसके खड़े होने पर तालियाँ बजाईं। फिर वह चला गया और हमको छुट्टी हो गई।"

"क्या भाषण दिया था उसने?"

"वह तो समझ में आया नहीं।"

"तो तालियाँ क्यों बजाई थीं?"

"मास्टर जी ने कहा था कि जब वे तालियाँ बजायें तो हम भी उनके साथ तालियाँ बजायें। और वे बजाना बन्द कर दें तो हम भी बन्द कर दें।"

"तो तुम नहीं जानते कि उसने क्या कहा था?"

"नहीं।"

राधा ने यह बात मन से निकाल दी। किन्तु अगले दिन जब वह थियेटर के लिए जा रही थी तो उसकी दृष्टि स्टाल पर रखे एक अंग्रेजी के समाचार पत्र पर पड़ गई। उस पर मोटे–मोटे अक्षरों में लिखा था, "गवर्नर ऐजीटेटर्स की निन्दा करते हैं।"

राधा ने समाचार पत्र का मूल्य देकर वह ले लिया। थियेटर में जाकर अवकाश के समय उसने वह लेख पढ़ डाला। उसमें लिखा था, "सेंट जेवियर स्कूल के वार्षिक उत्सव पर बम्बई प्रान्त के गवर्नर ने अपने भाषण में हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज्य के गुणों का वर्णन कर तिलक आदि ऐजिटेटर्स की घोर निन्दा की। गवर्नर ने बताया कि अगर अंग्रेज यहाँ से चले गए तो मुसलमान हिन्दुओं को नोंच–नोंच कर खा जायेंगे। हिन्दुओं की एक भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवा–स्त्री सुरक्षित नहीं रह सकेगी। उनकी धन–सम्पत्ति और कारखाने लूट लिए जावेंगे। भले लोगों को अंग्रेजी राज्य का धन्यवाद करना चाहिए। उनके धन, मान और स्त्री–वर्ग की सबसे बड़ी संरक्षक अंग्रेजी सरकार है।

"गवर्नर महोदय ने आगे कहा कि इस देश में रहने वाले कुछ मूर्ख यहाँ के लोगों का राज्य चलाना अपना जन्मसिद्ध अधिकार मानते हैं। उनको विदित होना चाहिए कि राज्य करना योग्य और शक्तिशालियों का जन्मसिद्ध अधिकार है। दुर्बल, जाति–पांति के झगड़ों में फँसे, अनेक प्रकार के भ्रमों में पलने वाले जिनमें सात करोड़ अछूत हैं, अस्सी लाख बेकार साधु हैं, जिनमें देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बकरे और मेढ़े मारे जाते हैं, भला ऐसे लोग भी कहीं राज्य चला सकेंगे? तिलक और उनके साथियों को अपने भ्रम और मूर्खता को दूर करने में अपनी शक्ति लगानी चाहिए। जिस बात के वे अधिकारी नहीं, उसमें उनका हस्तक्षेप सहन नहीं किया जावेगा। यदि उन्होंने स्वयं को शान्त और अपने क्रिया–कलाप शान्तिमय नहीं रखे तो कठोर एवं समर्थ हाथों द्वारा वे कुचल दिए जायेंगे।"

राधा समझ गई कि उसका लड़का किस बात पर तालियाँ बजा कर आया है। वह तिलक के विषय में बहुत कम जानती थी। इस कारण उसके विषय में तो कुछ कह नहीं सकती थी कि उसके साथी मूर्ख हैं अथवा बुद्धिमान। किन्तु मुसलमानों के विषय में जो कहा गया था, उसको वह असत्य भाषण समझती थी। वह विचार करती थी कि क्या मुसलमान इतने नीच हैं कि सब हिन्दू युवतियों पर बलात्कार करेंगे? क्या सत्य ही वे हिन्दुओं की जायदाद लूट लेंगे? क्या वे हिन्दुओं के कारखानों को आग लगा देंगे? उसको तो ऐसी कोई बात प्रतीत नहीं होती थी।

इस पर भी सन्तोष ने कहा था कि मास्टर ताली बजाता था और सब लड़के उसका साथ देते थे। उसको विदित था कि सन्तोष का मास्टर कोई पादरी है। वह विचार करती थी कि वह तालियाँ बजाता था तो इस कथन में असत्य नहीं हो सकता। वह स्वयं मुसलमान की बेटी थी और मुसलमान सम्बन्धी के घर में वह पली भी थी। अपने घर वालों में तो उसे इस प्रकार की कोई प्रवृत्ति दृष्टिगोचर नहीं हुई थी। इस पर भी देश के इतिहास से अनभिज्ञ होने के कारण वह अपना कोई मत स्थिर नहीं कर सकी। उसने सोचा कि रुक्मिणी से मिलकर वह इस भाषण की सत्यता के विषय में जानकारी प्राप्त करे।

वह अभी समाचार–पत्र पढ़ ही रही थी कि सेठ खटाऊ वहाँ आ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"राधा! क्या पढ़ रही हो?"

"देखिए, इसे पढ़िए। क्या आप भी इसे ठीक समझते हैं?" लेख की ओर संकेत करते हुए राधा ने समाचार–पत्र उसको पकड़ा दिया।

खटाऊ ने लेख पेढ़ा था,। इस कारण उस पर दृष्टि जाते ही उसने कहा, "बिल्कुल सोलह–आने सत्य है यह बात!"

"मगर मुसलमान तो ऐसे नहीं हैं। मैं जानती हूँ कि मुसलमानों पर यह झूठा आरोप है।"

"किन्तु मैं जानता हूँ कि यह सत्य है। देखो, राधा! हम फारस देश से आये हैं। वहाँ से हम इसी कारण आये थे कि हमारे साथ वही कुछ किया गया था, जिसकी गवर्नर ने यहाँ होने की सम्भावना बताई है।"

"परन्तु अंग्रेज तो यहाँ पीछे आये हैं, मुसलमान पहले आये थे। उन्होंने यहाँ तो ऐसा नहीं किया था!"

"राधा! तुम्हारी आयु बहुत कम है। साथ ही तुमने इतिहास भी पढ़ा नहीं है। तुम मुसलमानों के राज्य की बात नहीं जान सकतीं।"

इस बात ने राधा का मुख बन्द कर दिया। रविवार के दिन वह सरला के घर गई। सन्तोष उसके साथ था। वह बहुत प्यारा लड़का था। साथ ही स्वभाव से बहुत ही चुलबुला भी था।

"तो यह है तुम्हारा सन्तोष! नमस्ते करो। ये दादी हैं।" कहते हुए राधा मुस्कराई।

"गुड मॉर्निंग, ग्राण्ड मम्मी!" सन्तोष ने कहते हुए अपना हाथ आगे बढ़ाया। सरला ने उसे अपनी ओर घसीटते हुए, अपने साथ लगा लिया और पीठ पर हाथ फेर उसे प्यार दे, कहने लगी, "ऐसे नहीं सन्तोष! बड़ों को तो हाथ जोड़कर नमस्ते करते हैं।"

"हमारे मास्टर कहते हैं कि यह जंगलियों का तरीका है।"

सरला चौंक उठी। उसने पूछा, "जंगली कौन?"

"इस देश में रहने वाले जंगली थे। वे आपस में इसी प्रकार नमस्ते किया करते थे। अब हम अंग्रेजों के आने से, सिविलाइज्ड हो गए हैं। हमको यह जंगलियों का तरीका शोभा नहीं देता।"

सरला भौचक्की हो देखती रह गई। उसने राधा से पूछ लिया, "किस स्कूल में पढ़ता है यह?"

"सेन्ट जेवियर सीनियर केम्ब्रिज स्कूल में।"

"ओह!" उसने लड़के से पूछा, "उस दिन गवर्नर तुम्हारे स्कूल में आया था?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ, हमने खूब तालियाँ बजाई थीं।"

इस पर राधा को अपने मन की उलझन स्मरण हो आई। उसने पूछ लिया, "इसके स्कूल में गवर्नर ने भाषण दिया था, वह आपने पढ़ा है?"

"हाँ।"

"जो कुछ उन्होंने मुसलमानों के विषय में कहा है, क्या वह ठीक है?"

सरला हँस पड़ी। उसने कहा, "यह तो मैं नहीं जानती कि मुसलमान हिन्दुओं को कच्चा चबा जायेंगे या नहीं। जो मैंने मुसलमानों के काल का इतिहास पढ़ा है, उससे भिन्न प्रकार की बातों का पता चलता हैं। कहीं तो मुसलमानों और हिन्दुओं में परस्पर बहुत मैत्री की बातें लिखी हैं, कहीं घोर शत्रुता की बातें। मुसलमानों के काल में धर्म न बदलने पर हकीकतराय को मृत्यु–दण्ड मिला था। भाई मतिदास, तारूसिंह इत्यादि के अंग–अंग काट दिए गए थे। यह केवल इसलिए कि वे सब सिक्ख थे। साथ ही राजा मानसिंह अकबर की सेनाओं का सेनापति भी था। अनेक अन्य हिन्दू भी थे, जो भिन्न–भिन्न मुसलमान हाकिमों के काल में उच्च पदवियों पर सुशोभित थे।"

"तो यह बात आप नहीं मानतीं कि अंग्रेज चले गए तो मुसलमान हिन्दुओं को मार डालेंगे?"

"मैं एक बात जानती हूँ कि हिन्दू बचेंगे तो अंग्रेजों की करनी से नहीं, प्रत्युत अपनी विशाल जन–संख्या और दृढ़ता के कारण।"

"तो गवर्नर बहादुर ने ऐसी बात क्यों कही है?"

"हिन्दुओं को तिलक आदि आन्दोलनकारियों से दूर रखने के लिए उनको डरा–धमका कर अंग्रेजी राज्य के पक्ष में करने के लिए।"

"यह तो बहुत बुरी बात है। इतने बड़े अफसर के मुख से इस प्रकार का झूठ शोभा नहीं देता।"

"परन्तु, राधा! इस बात का उद्‌देश्य तो ठीक ही है। अंग्रेज का राज्य सुखकारक है, यह रहना चाहिए। इतने उद्‌देश्य के लिए थोड़ा झूठ तथा थोड़ा बढ़ा–चढ़ाकर बात करना कोई खराबी की बात नहीं है।"

"मगर हिन्दू–मुसलमानों में झगड़ा हो गया तो खून की नदियाँ बह जावेंगी।"

"वह तो होगा ही। हिन्दू–मुसलमान एक साथ नहीं रह सकते। यदि ये रह रहे हैं तो केवल अंग्रेजों के ही कारण।

"अब हम गाते हैं, कीर्तन करते हैं, मन्दिरों में घण्टे–घड़ियाल बजाते हैं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह सब अंग्रेजी राज्य की बदौलत है। मुसलमानी राज्य में इन बातों की स्वीकृति नहीं थी।''

राधा को यह सब विचित्र प्रतीत हुआ। उसने बात बदल दी। उसने कहा, ''रुक्मिणी मौसी की योजना पर विचार किया है आपने?''

''विचार तो किया है, किन्तु उसमें मुझे कोई लाभ प्रतीत नहीं होता।''

''आप किसको लाभ पहुँचाना चाहती हैं?''

''अपने को सबसे पहले। फिर दर्शकों को और कलाकारों को।''

''और सीखने वालों के लाभ की बात कहाँ गई?''

''लोगों को कलाकार बनाना मेरा काम नहीं है।''

''तो यह काम किसका है?''

''नाटक कम्पनियों का अथवा वेश्यावृत्ति से लाभ उठाने वालों का।''

राधा चुप रही। उसको सरला की मानसिक प्रवृत्ति निम्न स्तर की प्रतीत हुई। वह यह समझने लगी कि यदि सरला का पति नाटक कम्पनी न चलाता होता तो वह कला में प्रवीणता नहीं पा सकती थी। अथवा यदि बुद्धू मियाँ और उसका भाई वेश्यावृत्ति की दलाली खाने वाले न होते तो उसको इस कला में प्रवेश भी न मिलता। दूसरे शब्दों में, उसको सरला के कथन का तात्पर्य यह प्रतीत हुआ कि किसी लड़की को संगीत अथवा नृत्य–कला सीखने के लिए या तो वेश्यावृत्ति करनी अनिवार्य है या किसी नाटक कम्पनी में काम करना आवश्यक है और नाटक कम्पनी के मालिक की, कम–से–कम कभी–कभी, वासना–तृप्ति करना परमावश्यक है। वह जानती थी कि खटाऊजी के साथ उसका कुछ ऐसा ही सम्बन्ध है।

कुछ देर बाद वह बोली, ''मैं रुक्मिणी मौसी से मिलने जाने का विचार कर रही हूँ।''

''चलने को तो मैं भी चल सकती हूँ। परन्तु मैं उसी योजना में भाग ले सकती हूँ, जिसमें कुछ लाभ होने की सम्भावना हो।''

''तो चलिए। उनके सम्मुख आप अपना दृष्टिकोण रखियेगा। देखें, वह क्या उत्तर देती हैं।''

इस समय मिस्टर मनोहरलाल वर्मा आ गया। उसने भी सन्तोष को प्रथम बार ही देखा था। वह बैठा तो लड़के ने उसको गुडमोर्निंग कर दी।

''सन्तोष! ये तुम्हारे ग्राण्ड पापा हैं।'' राधा ने कह दिया।

मनोहरलाल पूछने लगा, ''किधर जाने का विचार हो रहा है?''

''रुक्मिणी देसाई की ओर।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या है वहाँ?"

उत्तर राधा ने दिया। वह बोली, "उन्होंने पिछले बुधवार के दिन एक योजना बनाई थी। उनका कहना था कि एक प्रकार का कलाभवन निर्माण किया जाय, जिसमें नृत्य और संगीत आदि कलाओं की शिक्षा दी जा सके। उसमें केवल योग्य विद्यार्थी ही प्रविष्ट हों। शुल्क कुछ न लिया जाय और निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति दी जाये। इसके लिए रुक्मिणी जी धन देंगी।"

यह विचार सुनकर मनोहरलाल फड़क उठा। उसने कहा, "योजना का उद्‌देश्य तो सुन्दर है। इससे लाभ, भी बहुत होगा। हाँ, योजना कुछ अस्पष्ट है। इसको यदि ठीक कर लिया जाय तो यह योजना सफल हो जायेगी।"

अपने पति की बात सुन सरला ने पूछा, "इसमें लाभ क्या होगा और आप सफलता किसे कहते हैं?"

राधा को पति–पत्नी के विचारों में अन्तर स्पष्ट प्रतीत हो रहा था। जब मनोहरलाल ने सरला के प्रश्नों का उत्तर दिया तो यह बात और भी स्पष्ट हो गई।

मनोहरलाल ने कहा, "लाभ होगा उनको, जिनमें कलाकार बनने की योग्यता तो है, परन्तु साधन और अवसर न होने के कारण वे कलाकार नहीं बन पाते। सफलता के लक्षण तब प्रकट होंगे, जब यह भवन संगीत और नृत्य में अपनी नवीन शैली संसार को देगा।"

"प्राचीन शैली में क्या दोष है? साथ ही शैलियाँ शिक्षण संस्थाओं में नहीं बनतीं। ये तो देश–काल की आवश्यकताओं के अनुसार बनती हैं। देखिये, हमारी प्राचीन पद्धति है कि खयाल आलाप, तान, बोल, मूर्च्छना आदि इन सबका हम प्रयोग करते हैं। परन्तु जनता इनको पसन्द नहीं करती। अंग्रेजी ढंग का म्यूजिक जनता को प्रिय होता जाता है। जब बैंड अथवा आर्केस्ट्रा बजता है तो हृदय फड़क उठता है। बच्चे भी उसके साथ नाचने लगते हैं।"

राधा देख रही थी कि सरला के विचारों में भारी परिवर्तन हो गया है। वह चार वर्ष तक योरपियन देशों में रहकर आई थी और चार वर्षों में ही देशीय संगीत के प्रति उसकी अरुचि हो गई थी। वैसे तो उसके राजनीतिक विचार भी राधा को पसन्द नहीं थे, परन्तु इस विषय में–सरला के विलायत जाने से पहले क्या विचार थे, वह नहीं जानती थी और कह नहीं सकती थी कि इस विषय में भी वह बदलकर आई है अथवा नहीं।

राधा ने कह दिया, "माताजी! पहले तो आप मालकौंस और भैरवी सुनते हुए थका नहीं करती थीं? आपको याद होगा एक बार जब आपके घर पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैरवी समारोह हुआ था और रात नौ बजे से प्रारम्भ होकर प्रातः चार बजे तक कई कलाकारों ने भैरवी पर ही कई गाने सुनाए थे, तब तो आप शास्त्रीय संगीत में बहुत रुचि लेती थीं?"

"हाँ, तब मैं कुछ जानती नहीं थी। अब विशाल संसार की सैर कर के आई हूँ। मैं समझती हूँ कि संसार का कोई संगीत जर्मन आर्केस्ट्रा का मुकाबला नहीं कर सकता।"

मनोहरलाल हँस पड़ा। उसने कहा, "राधा बेटी! यह तुम्हारी माताजी अब युरोप और अमेरिका घूम आई हैं और वहाँ के रहने वालों का आचार–व्यवहार सीख आई हैं। संगीत के विषय में इस समय जो विचार इन्होंने व्यक्त किए हैं, ये भी वहीं पर जाकर बने हैं।

"मैंने एक बार एक कहानी सुनी थी कि एक अविवाहित। लड़की का पुत्र जंगल में फेंक दिया गया तो एक भेड़िये ने उसको दूध पिला–पिलाकर उसकी पालना की। वह वहाँ जंगल में ही पलता हुआ बारह–तेरह वर्ष का हो गया। सभ्य संसार के कुछ लोगों को उसका पता चला तो उसे पकड़कर नगरों में ले आए। वहाँ उसको मनुष्यों की–सी भाषा और रहन–सहन सिखाया जाने लगा। उसे यह सब नहीं भाया। बहुत कठिनाई में उसको नगर में बाँधकर रखा गया।

"सो यही अवस्था तुम्हारी माताजी की हो रही है। पाँच वर्ष युरोप और अमेरिका में रहकर उन पशुओं की भाषा सीख आई हैं और कभी रात्रि के भोजन के समय तुम यहाँ आओ और इनका जर्मन आर्केस्ट्रा सुनो तो खाना छोड़कर ही भाग जाओ।"

इस तुलना और उपमा पर राधा और सरला दोनों ही हँस पड़ीं। मनोहरलाल तो पहले से ही हँस रहा था। सरला ने माथे पर बल चढ़ाकर किन्तु मुस्कराते हुए पूछ लिया, "आप उस समय तो मजे में सुनते रहते हैं। यदि आपको वह भाँय–भाँय प्रतीत होती है, तो आप मना क्यों नहीं कर देते?"

"वह इसलिए कि ऐसा करना हमारे देश और जाति की परम्परा के विपरीत है। प्रत्येक बात में हम व्यक्ति की स्वतन्त्रता का आदर करते हैं। होना यह चाहिए कि मुझको तुम्हारे जर्मन आर्केस्ट्रा के रिकार्ड पसन्द नहीं तो मैं उठकर घर से निकल जाया करूँ। परन्तु तुम जानती हो कि मैं तुम से प्रेम करता हूँ। और रात्रि के समय अपनी पत्नी को छोड़कर जाना तो धर्म विपरीत है। इसलिए जर्मन वालों का संगीत के साथ यह अत्याचार मैं सहन कर लेता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस अत्याचार के प्रतिकारस्वरूप मैं स्वयं प्रातःकाल चार बजे भैरवी, रामकली, असावरी की एक–आध चीज गाकर, रात का भरा कूड़ा–करकट बाहर निकाल देता हूँ।"

इससे सरला गम्भीर हो गई। उसने कहा, "यदि आपने मुझे पहले बताया होता तो मैं मध्याह्न के समय, जब आप काम पर गए होते हैं, उन रिकार्डों को बजा लिया करती?"

"देखो सरला! मैं यह आर्केस्ट्रा और बैंड–बाजा शराब से अर्ध–चेतनामय पुरुष–स्त्रियों के नाच के समय अथवा सेना में लड़ाई के समय उन्माद पैदा करने के साधन के रूप में ठीक मानता हूँ। परन्तु रात को सोते समय न तो मैं शराब पिये हुए होता हूँ, न ही मैं किसी समर पर जाने की तैयारी कर रहा होता हूँ। उस समय तो काम से थक कर आए हुए व्यक्ति को किसी कोमल मधुर रागिनी द्वारा थपकी देकर सुलाने की आवश्यकता होती है।"

फिर मनोहरलाल ने बात बदलते हुए संतोषकुमार से पूछा, "तुम भी कुछ गाया करते हो?"

"जी हाँ।"

"क्या गाते हो। कुछ हमको भी सुनाओगे?"

"माँ! सुनाऊँ?"

राधा ने सिर हिलाकर सुनाने के लिए कहा तो सन्तोष कुर्सी पर कमर सीधी करके बैठ गया। उसने आँखें मूँदीं और हाथ जोड़कर एक क्षण चुप बैठा रहा। फिर उसके होंठ फड़के और फुसफुसाहट की आवाज में वह कहने लगा, "ओ लॉर्ड! दाऊ आर्ट ग्रेट। दाऊ आर्ट मर्सीफुल। वी आर सिन्नर्ज। वी मर्सीफुल टु अस...."

वर्मा हँस पड़ा। हँसने की आवाज सुन सन्तोष चुप कर गया और आँखें खोल विस्मय में मनोहरलाल का मुख देखने लगा।

मनोहरलाल उसको विस्मय करते देख कहने लगा, "सन्तोष! यह गाना नहीं है। देखो, मैं गाना सुनाता हूँ, सुनोगे?"

सन्तोष अभी भी विस्मय में वर्मा का मुख देख रहा था। मनोहरलाल ने सामने रखे हारमोनियम पर एक स्वर छेड़ उसके साथ अपना स्वर मिलाकर गाना आरम्भ कर दिया–

'अवसर बीतो जात प्राणी, तेरो अवसर बीतो जात।
इस काल की हेरा–फेरी में, तेरो अवसर बीतो जात।।
साठ मिनट गुजरे गया घंटा, चौबीस में दिन रात।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पल–पल करके क्षीण होत है, इक आवत इक जात।।'

"ऐसा तो मम्मी भी गाती हैं।"
"हाँ, यह गाना है और जो तुम बोल रहे थे वह प्रार्थना थी।"
"मैं बड़ा होकर ऐसा गाना सीखूँगा।"
"तुम बड़े तो हो गए हो। क्या आयु है तुम्हारी?"
"छः वर्ष।"
"मैं जब तुम्हारे जितना था तो मेरी माँ मुझको गाना सिखाया करती थी।"
"पर मम्मी मुझे तो सिखाती नहीं?"
"देखो सन्तोष की मम्मी! तुम इसकी पढ़ाई ठीक नहीं करा रही हो।"

: 8 :

उस दिन राधा रुक्मिणी से मिलने के लिए नहीं गई। वह एक नवीन बात समझ कर घर लौट आई। वह नवीन बात थी कि वह अपने बच्चे को उचित शिक्षा नहीं दे रही है। यह स्कूल तो उसने सेठ खटाऊ की सम्मति से अपने लड़के के लिए चुना था। इस स्कूल में सबसे बड़ी बात यह थी कि ठीक नौ बजे स्कूल की घोड़ागाड़ी बच्चे को लेने के लिए आ जाया करती थी और सायं चार बजे उसे घर छोड़ जाया करती थी। मध्याह्न का खाना स्कूल में ही मिलता था और उसके लिए फीस में दाम सम्मिलित करके लिए जाते थे! इस प्रकार बच्चे की अनेक जिम्मेवारियों से वह बच जाया करती थी। अभी तो वह छः वर्ष का ही था। आठ वर्ष के बच्चों के लिए स्कूल के बोर्डिंग हाउस में ही निवास की व्यवस्था भी थी।

आज मनोहरलाल ने उसको कहा था कि उसकी शिक्षा ठीक नहीं हो रही है। क्या ठीक नहीं हो रही है? इसमें उसको एक ही बात विदित हो पाई थी। वह यह कि एक संगीत कला प्रवीण माँ का पुत्र संगीत और बोलचाल में अन्तर नहीं पहचान सका।

मनोहरलाल के मकान के नीचे से उसने विक्टोरिया गाड़ी पकड़ी और अपने मकान के लिए चल पड़ी। मार्ग में उसने अपने लड़के से पूछा, "सन्तोष! तुमने बड़े भापा का गाना सुना है?"

"हाँ मम्मी! मैं भी ऐसा गाना सीखा करूँगा।"

"ठीक है, कल से स्कूल से आने के बाद मुझसे सीखा करो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"सीखा करूँगा।"

"और बहुत प्रातःकाल उठकर जब मैं अभ्यास किया करती हूँ, उस समय तुम भी उठकर मेरा अभ्यास करना सुना करो।"

"सुनने से क्या होगा?"

"तुम मुझ जैसा गाना सीख जाओगे।"

"इस सीखने से क्या होगा?"

"तुमको अक्ल आवेगी।"

"हमारा मास्टर तो कहता है कि प्रभु से प्रार्थना करने से अक्ल आती है। उनका यह भी कहना था कि आप जो गाया करती हैं, वह शैतान का सिखाया हुआ है। और स्कूल खुलने के समय स्कूल में जो हम लड़के गाया करते हैं वह परमात्मा का बताया हुआ है।"

"मेरे गाने के विषय में तुम्हारा मास्टर क्या जानता है?"

"वह कहता था कि मेरी माँ थियेटर में नाचती हैं और शैतान का सिखाया गाना भी गाती है।"

राधा तो हैरान रह गई। इसका तो उसने यही अभिप्राय समझा कि एक समय उसका लड़का ही उसको पतित समझने लगेगा। मनोहरलाल की सूझ–बूझ पर वह विस्मय करने लगी थी।

उसने लड़के से और अधिक पूछते हुए कहा, "शैतान कौन है?"

"जब आदम और हव्वा स्वर्ग में रहते थे, वे नंगे थे। उनके मन में पाप नहीं था। शैतान ने उनको पाप–कर्म में लिप्त करने के लिए एक फल खाने के लिए दिया। उस फल को खाने से आदम और हव्वा को ज्ञान हो गया कि वे नंगे हैं। इसलिए उन्होंने अंजीर के पत्तों से अपने गुप्त अंगों को ढाँप लिया। परमात्मा को यह बात पसन्द नहीं थी। तब पमात्मा ने उन्हें स्वर्ग से निकालकर नरक में फेंक दिया। तब से हम में पाप करने की प्रवृत्ति जाग पड़ी है।"

यह कहानी राधा की सुनी हुई थी। इस पर भी अपने बच्चे के मुख से सुन, उसके मन में संशय उत्पन्न हो गया। उसने पूछा, "तो क्या परमात्मा कपड़े पहिनने का विरोधी था?"

"हाँ।"

"तो फिर हम सबको कपड़े उतार देने चाहिए?"

"नहीं।"

"जब आदम और हव्वा को अंजीर के पत्तों से अपने गुप्ताँगों को ढाँपने पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
स्वर्ग से निकाल दिया गया तो कपड़े पहिनने गलत हैं न? इससे गुप्त अंग ढक जाते हैं।''

लड़का बात को समझने लगा था। उसके मास्टर ने भी, जिसने उसको यह कहानी सुनाई थी, कपड़े पहने हुए थे। इससे वह बितर्–बितर् माँ का मुख देखता रह गया। इस पर राधा ने कहा, ''मैं समझती हूँ कि तुम्हारा मास्टर या तो कुछ जानता नहीं और यदि कुछ जानता है तो वह झूठ बोलता है।''

''क्यों, क्या बात है माँ!''

''बात यह है कि परमात्मा हमारे कपड़े पहिनने से नाराज नहीं है बल्कि वह इससे प्रसन्न है। तुम्हारे मास्टर ने यह बात गलत बताई है कि आदम और हव्वा को शैतान ने फल खाने को दिया था, जिससे उनको अपने नंगा रहने का ज्ञान हुआ था।

''बात यह थी कि परमात्मा ने आदम और हव्वा को अक्ल दी तो उनको ज्ञान हो गया कि वे नंगे रहने से सर्दी–गरमी से बच नहीं सकेंगे। इस कारण उन्होंने अंजीर के पत्तों के कपड़े बनाये और पहन लिए।''

''तो फिर परमात्मा ने उनको स्वर्ग से निकाल क्यों दिया था?''

''परमात्मा ने उनको अक्ल दी थी, जिससे वे अच्छे काम करें। अपना और सबका भला करें। परन्तु आदम और हव्वा ने अक्ल पाकर पाप कर्म करने शुरू कर दिये। इससे परमात्मा नाराज हो गया और उसने उनको स्वर्ग से निकाल दिया।''

''क्या पाप–कर्म किये थे उन्होंने?''

''चोरी की थी। झूठ बोला था। गन्दा रहना शुरू कर दिया था। इसी प्रकार के और अनेक काम करने लगे थे। इस कारण उन्हें स्वर्ग से निकाल दिया था।''

''पर माँ! मैं और तुम तो झूठ नहीं बोलते। फिर हमको क्यों नरक में डाल रखा है?''

''यह तुम्हें किसने बताया कि हम–तुम नरक में हैं?''

''मास्टरजी ने।''

''बहुत झूठा है वह! हम तो स्वर्ग में हैं। वह देखो, वह बूढ़ा आदमी पटरी पर लाठी लिए चल रहा है। जानते हो क्यों?''

''इसलिए कि उसके पास गाड़ी पर चढ़ने के लिए पैसे नहीं हैं।''

''और हमारे पास हैं। इससे यह मानना चाहिए कि हमको परमात्मा हमारे अच्छे कर्मों का फल दे रहा है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा ने यह समझ लिया कि यह स्कूल अच्छा नहीं है। यहाँ के मास्टर लड़कों के अभिभावकों के कामों की आलोचना किया करते हैं। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि वह सन्तोषकुमार को इस स्कूल से उठा लेगी। उसके मन में आया कि वह अपनी कम्पनी के मालिक से पूछेगी कि किस स्कूल में प्रविष्ट कराये। परन्तु इसी समय उसको याद आ गया कि वह कहता था कि मुसलमान बहुत निर्दयी हैं।

अब वह अपने विषय में विचार करने लगी थी। उसका वास्ता अपने जीजा के साथ पड़ा था। सबसे पहले उसने ही उसको वासना का सबक पढ़ाया था। फिर उसके कारण ही उसका बुद्धू मियाँ के भाई से परिचय हो गया और वह उसको भगाकर ले गया। बुद्धू मियाँ मुसलमान था। जिस दिन रामरक्खामल्ल पर छुरी से वार किया गया था, बुद्धू मियाँ बहुत प्रसन्नचित्त घर आया था। उसने उसकी सेवा करने वाली औरत को बताया था कि एक को तो वहीदन को छुड़ाने का मजा चखा दिया गया है।

यह एक वाक्य था, जिसने उसके मन में बीज रूप में यह बात उत्पन्न की थी कि उसको यह पेशा छोड़ देना चाहिए और बुद्धू मियाँ के संरक्षण से छुट्टी पानी चाहिए। इसके बाद ही उसने शमशाद से साँठ–गाँठ कर उसके साथ उसकी बीवी बनकर रहने का प्रबन्ध किया था। परन्तु फिर शमशाद के वालिद और पीछे शमशाद का व्यवहार तो उसको खटाऊ की बात सिद्ध करता प्रतीत होता था। शमशाद ने उसको मार डालने का यत्न किया था। रामरक्खामल्ल और वकील फकीरचन्द ने उसको कोई ऐसी बात करने से मना किया था, जिससे शमशाद मुकदमे में फँसे। वह फँसा तो उसके द्वारा भेजे गए विद्यार्थी के बक जाने से और फिर व्यर्थ में उस विवाह का उल्लेख करने से, जिसका कोई अस्तित्व नहीं था।

उसका मन कहने लगा था कि खटाऊजी की बात में कुछ तो सच्चाई है। इस पर भी उसको अभी इस बात पर पूर्ण विश्वास नहीं आया था कि अंग्रेजों का राज्य चले जाने पर मुसलमान हिन्दुओं को मार डालेंगे। इस समय वह घर जा पहुँची। वहाँ अपनी नौकरानी माधुरी को चाय बनाने के लिए कह, सन्तोष को बोली, "चलो, आज से ही तुमको मैं गाना सिखाऊँगी।"

सन्तोष माँ के संगीत के अभ्यास करने के कमरे में चला गया। वहाँ बैठा वह उसको हारमोनियम बाजे के स्वर से स्वर मिलाने का अभ्यास कराने लगी। बीस मिनट तक अभ्यास करा कर उसने लड़के की रुचि बनाए रखने के लिए उसे एक छोटा–सा गीत सिखा दिया–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो।
समदर्शी है नाम तिहारो, चाहो तो पार करो।
प्रभु मेरे अवगुण चित्त न धरो।।'

कई दिन तक वह अपने लड़के की पढ़ाई की समस्या पर विचार करती रही। एक दिन उसने इस विषय में अन्तिम निर्णय करने के लिए रुक्मिणी से राय करनी ठीक समझी। उसने नाटक भवन में रुक्मिणी के घर पर टेलीफोन करके कहा, "मैं आपसे मिलना चाहती हूँ।"

"क्यों, क्या बात है?"

"जीवन गाड़ी रुकती प्रतीत होती है।"

"किसके मोहजाल में फँस गई हो?"

"अपने लड़के के। इस वर्तमान अवस्था में मुझे उसका कल्याण प्रतीत नहीं हो रहा है।"

"तो ऐसा करो, कल मध्याह्न को आ जाओ। भोजन भी यहीं कर लेना।"

"पर मैं तो आपसे बात करना चाहती हूँ, पिताजी से नहीं।"

"वह बम्बई से बाहर गए हुए हैं। उनके स्थान पर मुझे काम करना पड़ रहा है। इस कारण भोजन के अतिरिक्त रात को आठ बजे समय मिलेगा। उस समय तुमको अवकाश नहीं होता।"

"तो मैं कल ठीक एक बजे पहुँचूँगी।"

अगले दिन वह पहुँची तो रुक्मिणी उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। राधा के आते ही दोनों डाइनिंग–हाल में जा पहुँचीं। खाना परोसते–परोसते राधा ने गवर्नर के जेवियर स्कूल के भाषण से लेकर सन्तोष के मास्टर के विचारों तक, सब बातें बता दीं। जब उसने बताया कि वह लड़के को कहता था कि उसकी माँ शैतानी गाने गाती है तो रुक्मिणी ने बिना कुछ अधिक विचार किए कह दिया, "उस स्कूल से लड़के को उठा लो।"

"तो कहाँ पढ़ाऊँ?"

"घर पर। कहो तो मैं तुम्हें एक अच्छी अध्यापिका ढूँढ़ दूँगी जो तीन–चार वर्ष तक लड़के को पढ़ा देगी। बाद में फिर देख लेंगे। वह अंग्रेजी, हिन्दी और गणित पढ़ा देगी। कुछ–कुछ संस्कृत भी पढ़ा सकती है।"

"परन्तु घर पर पढ़ाने से क्या लड़का उतना समझदार हो जावेगा, जितना स्कूल में हो सकता है?"

"स्कूल में तो शैतानी सीखेगा, किन्तु घर पर वह मनुष्य बना रहेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर राधा ने सरला और उसके पति के गवर्नर के व्याख्यान के विषय में और संगीत के विषय में विचार बता दिए। रुक्मिणी ने कहा, "यह स्वाभाविक ही है। हम औरतों का मन इतना कोमल और स्वच्छ होता है कि हम पर अच्छी अथवा बुरी बात तुरन्त अपना प्रभाव उत्पन्न कर देती है।

"मिस्टर वर्मा तब भी, जब मैं नाटक–कम्पनी में नौकरी के लिए संगीत आदि सीख रही थी, शास्त्रीय संगीत में रुचि रखते थे। पुरुष होने के नाते उनके विचार इतने सुदृढ़ रहे हैं कि विलायत में पाँच वर्ष तक भ्रमण करने पर भी वैसे ही बने हुए हैं, जैसे पहले थे। परन्तु सरला जी के कोमल हृदय पर वहाँ की टीप–टाप का प्रभाव पड़ गया है।

"मैं समझती हूँ कि हमारी संगीत–भवन की योजना में मिस्टर वर्मा अधिक सहायक होंगे। मैं इस रविवार उनको बुलाऊँगी। तुम भी आ जाना।"

इस पर उसने गवर्नर के व्याख्यान में तिलक के सम्बन्ध में कहे वाक्यों के विषय में रुक्मिणी के विचार पूछ लिए।

"देखो राधा! गवर्नर को सवा लाख रुपये वार्षिक का इतना वेतन इस कारण नहीं मिल रहा, क्योंकि वह इतना पैदा करने की योग्यता रखता है। प्रत्युत इसलिए मिल रहा है कि उसका किसी अमीर घराने से सम्बन्ध है और इंग्लैंड के प्राइम मिनिस्टर पर उसके संबंधियों का रसूख है। यह नौकरी उसको इनाम के रूप में मिली है। हिन्दुस्तान में ऐसी कई नौकरियाँ हैं जो अंग्रेजों को मिलती रहती हैं। अतः इंग्लैंड को हिन्दुस्तान पर अपना अधिकार, ऐसे रसूख वाले आदमियों को प्रसन्न करने के लिए चाहिए। इसलिए सब अंग्रेज झूठ–सच सब प्रकार की बातें बना–बनाकर इस देश को अपने अधिकार में रखने का यत्न करते रहते हैं।

"एक बात तो वे जानते हैं कि जनता किसी भी राजा के, वह चाहे अपना हो चाहे विदेशीय, विरुद्ध हो जाए तो राज्य स्थिर नहीं रह सकता। उनको इस बात का अनुभव, अपने देश के राज्य–परिवार की अवस्था से हुआ है। इस कारण वे यहाँ की जनता को इस भ्रम में डाले रखना चाहते हैं कि अंग्रेजों का राज्य इस देश में एक वरदान है। इसी निमित्त गवर्नर ने वैसा व्याख्यान दिया था।

"हमारे देश में ऐसे व्यक्तियों के नेता बनने में अंग्रेजों ने सहायता दी है जो सत्य ही अंग्रेजों के राज्य को परमात्मा का वरदान मानते हैं। उनमें श्री डब्ल्यू.सी. बैनर्जी, सुरेन्द्रनाथ सेन, आप्टे, दादाभाई नौरोजी, फिरोज शाह मेहता, गंगाप्रसाद वर्मा, आनन्द चारुलू, पण्डित अयोध्यानाथ इत्यादि हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरकार इन लोगों को कांग्रेस के अधिवेशनों में वर्ष में एक बार देश के विभिन्न नगरों में, कभी कहीं, कभी कहीं, एकत्रित कर अंग्रेजी में व्याख्यान दे और डिनरों तथा शराबों इत्यादि से इनका मनोरंजन कर और समाचार–पत्रों में इनका नाम छपवा घरों को भेज देती है। उनमें से यदि कोई योग्य हुआ तो उसको हाईकोर्ट का जज अथवा कोई अन्य उच्च पदवी देकर प्रसन्न भी करती रहती है। इसका स्पष्ट अभिप्राय यह है कि ये अंग्रेज लोग, जो अपनी रोटी में से एक दाना भी किसी को बिना स्वार्थ सिद्धि के, देने को तैयार नहीं होते, ऐसे लोगों को नेता की पदवी पर बैठाकर, पूर्ण जनता को पंगु और स्वार्थी बनाने के लिए यत्न कर रहे हैं।

"ये तथाकथित नेता तो, इनको नेता बनाने वाले सर ह्यूम से भी अधिक, इंग्लैंड के भक्त बन गये हैं। 1892 में दादाभाई ने ह्यूम को भी विद्रोही कहने वाली विज्ञप्ति में हस्ताक्षर कर दिये थे।

"परन्तु राधा! देश की आत्मा हिन्दुओं में व्याप्त है। उनमें वे सब लोग जो देश में इस आत्मा को पहचानते हैं, कांग्रेस के कार्य को व्यर्थ में वन का अपव्यय मात्र ही मानते हैं। इनमें कुछ ऐसे नवयुवक भी हैं जो इस संस्था को छोड़ अपनी दूसरी संस्था बनाने का विचार कर रहे हैं।

"इस प्रकार इधर 'अभिनव भारत', बंगाल में 'युगान्तर' नामक क्रान्तिकारी दल और लाहौर में, 'भारत माता' नाम की सभा जन्म ले चुकी हैं। इन्हीं लोगों में, जो कांग्रेस के कार्य और नेतृत्व से संतुष्ट नहीं हैं, कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो कांग्रेस को अपने अधिकार में कर देश में अपना राज्य जमाना चाहते हैं।

"इनमें लोकमान्य तिलक, बाबू विपिनचन्द्र पाल, लाला लाजपतराय इत्यादि हैं। सरकार 'अभिनव भारत' और 'भारत माता' जैसी संस्थाओं से इतना नहीं डरती, जितना तिलक इत्यादि से डरती है। संस्थाएँ जो हिंसात्मक कार्य–प्रणाली में विश्वास रखती हैं, उनमें वास्तविक कार्यकर्त्ता कुछ ही लोग होते हैं। परन्तु लोकमान्य तिलक जैसे लोग सीधे जन–साधारण से सम्पर्क बना रहे हैं। पिछले वर्ष पूना में गणेश चतुर्दशी के अवसर पर दस लाख व्यक्ति गणेशोत्सव में सम्मिलित हुए थे और दो लाख से अधिक लोग तिलकजी का व्याख्यान सुनने के लिए एकत्रित हो गए थे।

"इसी प्रकार लाला लाजपतराय जब 1905 में विलायत से लौटे तो एक लाख की भीड़ ने लाहौर रेलवे स्टेशन पर उनका स्वागत किया। लाहौर में व्याख्यान सुनने के लिए इतने व्यक्ति एकत्रित हुए कि डी.ए.वी. स्कूल में, जहाँ उनका व्याख्यान होने वाला था, व्याख्यान नहीं हो सका। अतः वहाँ से दूर,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डी.ए.वी. कॉलेज में व्याख्यान करना पड़ा। समाचार–पत्रों का कहना है कि पचास हजार व्यक्ति उनका व्याख्यान सुनने के लिये एकत्रित हुए थे। इसी प्रकार बाबू विपिनचन्द्र पाल बारीसाल में व्याख्यान देने के लिए गये तो आठ लाख से अधिक व्यक्ति उनका स्वागत करने के लिए एकत्रित हो गये।

कांग्रेसी नेताओं और तिलक इत्यादि में अन्तर मैं तुम्हें एक उदाहरण देकर समझाती हूँ। पूना में 1897 के प्लेग के समय अंग्रेज सैनिकों के व्यवहार के विषय में श्री गोखले ने एक वक्तव्य दिया और जब देखा कि अंग्रेज रुष्ट हो रहे हैं तो उन्होंने क्षमा–याचना कर ली। परन्तु इसी सम्बन्ध में जब श्री तिलक को बन्दी बनाया गया तो उन पर मुकदमा चलाया गया और उनको 18 मास का दण्ड दिया।

"परिणाम यह हो रहा है कि वे नेता, जो सर ह्यूम, लार्ड डफरिन, लार्ड रिपन, लॉर्ड डलहौजी इत्यादि ने बड़े यत्न और विचार से हिन्दुस्तान के लिये तैयार किए हैं, अब रेत की भित्ति की भाँति धराशायी हो रहे हैं। और ये नये नेता जिनके साथ कोटि–कोटि जनता है, आगे आ रहे हैं। यही कारण है कि बम्बई के गवर्नर ने इतना बड़ा झूठ बोल कर, भारत के हिन्दू–मुसलमानों में फूट डालने का यत्न किया है।

"तिलक महाराज के साथी इस वर्ष उनको कांग्रेस का प्रधान बनाना चाहते हैं। और सरकार के कंधों पर बैठे हुए नेता ऐसा नहीं चाहते। गवर्नर ने अपने पिट्ठुओं की हिमायत के लिए इस प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया है।"

"तो आप ऐसा विश्वास नहीं करतीं कि स्वराज्य मिलने पर मुसलमान ऊधम मचायेंगे?"

रुक्मिणी हँस पड़ी। हँसते हुए उसने कहा, "तुम 'केसरी' पत्र पढ़ा करो।"

"मैं मराठी नहीं पढ़ सकती। हिन्दी भी नहीं जानती। अंग्रेजी भी आपके कहने पर इतनी पढ़ ली है कि समाचार पत्र पढ़ लेती हूँ।"

"अच्छा, मैं बताती हूँ। इसमें सन्देह नहीं कि अपने शासन–काल में, मुसलमानों ने भारत में तथा अन्य देशों में भी बहुत अत्याचार किया है और ऊधम मचाय है। उनके यहाँ न्याय का आधार कोई मानुषिक अधिकार नहीं है, प्रत्युत आधार है इस्लामी अधिकार। अभी–अभी मिश्र के मुसलमान इतिहास के प्रोफेसर ने एक स्थान पर लिखा है कि गैर–मुसलमानों को अपने धर्म पर आरूढ़ रहने का अधिकार तो था, परन्तु वे सब सामाजिक और नागरिक अधिकार उन्हें नहीं थे जो जीवन में नित्य–प्रति आवश्यक होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आगे चलकर फिर वही प्रोफेसर लिखता है—जिम्मियों (गैर—मुसलमानों को अपने गिरजाघर आदि बनाने की स्वीकृति नहीं थी, न ही पहले बने गिरजों की मरम्मत करने दी जाती थी। मुस्लिम मुहल्लों में बने गिरजाघरों में प्रार्थना नहीं करने दी जाती थी। उनको एक मुसलमान का धर्म बदलने की मनाही थी तथा एक ईसाई को, जो मुसलमान धर्म स्वीकार कर रहा हो रोकने की मनाही थी।

"इसलिए राधा! यह तो ठीक है कि मुसलमान ऐसा करने का यत्न करेंगे। परन्तु राधा! वे कर नहीं पाएँगे। हिन्दुस्तान में अपने राज्यकाल में भी वे ऐसा कुछ कर नहीं सके जो उन्होंने अन्य देशों में किया था। इसमें कारण है हिन्दुओं के अपने विचार और उनकी विशाल जनसंख्या। हम हिन्दू यह खतरा जानते हुए भी कि मुसलमान ऐसा करने का यत्न करेंगे और यदि अवसर मिला तो वे हिन्दुओं को किसी सीमा तक हानि भी पहुँचाएँगे, भयभीत नहीं। हम मराठा राज्य और सिक्खों के राज्य में अपनी शक्ति का साक्षात्कार कर चुके हैं।

"स्वराज्य तो हम लेंगे और यदि मुसलमानों ने इसमें बाधा खड़ी की तो इनसे भी लड़ेंगे। यह ठीक है कि खून की नदियाँ बहेंगी, परन्तु अन्तिम विजय सत्य और ईमानदारी को होगी। हमारी ईमानदारी यह है कि जब हमारा राज्य होगा, तब हम मुसलमानों के साथ वैसा व्यवहार नहीं करेंगे, जो अन्य देशों में और हिन्दुस्तान में भी, मुसलमानों ने गैरमुस्लिमों से करने का यत्न किया है। हमारे स्वराज्य में सबको समान अधिकार मिलेंगे।"

: 9 :

जब से राधा शमशाद के मुकदमे से अवकाश पाकर बम्बई आई थी, जवाहरलाल के पिता से उसका पत्र व्यवहार चल रहा था। रामरक्खामल्ल को वह उर्दू में चिट्ठी लिखा करती थी। अभी उसको मुकदमे से लौटकर बम्बई आए केवल दस दिन ही हुए थे कि उसने एक सुन्दर कागज पर लिखा, "मोहतरिम भापा जी! मैं यहाँ राजी खुशी हूँ, आपकी राजी खुशी खुदावन्दताला से नेक चाहती हूँ। मेरे भैया जवाहरलाल को आदाब अर्ज, मम्मी और साधना को आदाब अर्ज....इत्यादि।"

रामरक्खामल्ल ने इसके उत्तर में लिखा, "बेटी राधा! तुम्हारा पत्र नीले और सुनहरी किनारे वाले कागज पर लिखा मिला। लिफाफा भी बहुत सुन्दर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
था। परन्तु उस पर लिखा क्या था–भापा को आदाब अर्ज और मम्मी को आदाब। उसको सलाम और फलां को तसलीम। सिर्फ इतना लिखने के लिए इतना बढ़िया कागज और लिफाफा तथा डाक का टिकट और लिखने की मेहनत खर्च कर क्या लाभ हुआ? हमको इस बात का यकीन दिलाने की जरूरत नहीं कि तुम हमारी इज्जत करती हो।

"राधा! यह सब कुछ समय और पैसा व्यर्थ गँवाने के लिए है क्या? ऐसे पत्रों को पढ़कर मुझे प्रसन्नता नहीं होती। यदि इस तकल्लुफबाजी के अलावा और कुछ लिखने के लिए तुम्हारे पास नहीं है तो चिट्ठी लिखने पर वक्त, कागज और स्याही का फिजूल खर्च ही समझा जाएगा।

"मेरा मतलब है, अगर तुम्हारे वहाँ कुछ और लिखने को नहीं तो चिट्ठी मत लिखा करो।

"देखो, चिट्ठी कैसे लिखनी चाहिए और उसमें क्या लिखना चाहिए, मैं बताता हूँ। यहाँ जवाहरलाल की इस वर्ष अन्तिम परीक्षा होने वाली है। इसके बाद डाक्टर बन जाएगा। परीक्षा जनवरी मास में होगी और परिणाम मार्च मास में निकलेगा। जवाहरलाल इस डाक्टरी को पढ़कर कुछ बददिमाग होता जाता है। वह समझने लगा है कि वह खुदा है। पिछले सप्ताह उसकी माँ के पेट में पीड़ा हुई तो उसको वह धड़ा–धड़ दवाइयों पर दवाइयाँ देता रहा। जब तीन दिन तक इस प्रकार दवाइयाँ देने से दर्द दूर नहीं हुआ तो हमारी पड़ोस की एक बूढ़ी औरत आकर कहने लगी, 'नाभि हट गई है और वह मल देगी तो ठीक हो जायेगी।' जवाहरलाल ने उस औरत को डाँटकर घर से बाहर निकाल दिया और माँ का पेट उसे नहीं, मलने दिया। मैं घर आया तो जवाहर की माँ ने मुझसे कहा कि मैं जवाहर को समझा दूँ, क्योंकि उसने आज साधु की माँ को बुरी तरह डाँटा है। मैंने जवाहर से इस विषय में पूछा तो वह बताने लगा, भापा! वह औरत कहती है कि माँ कि नाभि टल गई है। भला नाभि कैसे टल सकती है? उस गँवार औरत को मैंने कह दिया कि ये जादू–टोने यहाँ नहीं चलेंगे; तुम जाओ, तुमको किसी ने नहीं बुलाया। वह भों–भों करती हुई चली गई।

"मैंने कहा, 'जवाहर! तुम बहुत बददिमाग हो गए हो। वह तो तुम्हारी माँ के बराबर है और तुमने उसको कह दिया कि वह तुम्हारे घर से चली जाये, उसे किसी ने बुलाया नहीं है?'

" 'पिताजी! मैंने अपनी जिन्दगी के पाँच वर्ष इस विद्या को सीखने में बिताये हैं। वह इन अनपढ़, बूढ़ी औरतों के सम्मुख मूर्ख बनने के लिए नहीं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने मुस्कराते हुए पूछ लिया–'पाँच वर्ष हो गए सच?'

" 'हाँ भापा! अगले मास मेरी अन्तिम परीक्षा है।'

" 'परन्तु अपनी माँ की पेट की पीड़ा तो तुम ठीक नहीं कर सके। भला तुम्हारी माँ को रोग कौन–सा है बताओ तो?'

" 'इसको 'ऐन्टेस्टाइनल अल्सर' कहते हैं। इसको ठीक होने में कम से कम एक मास लगेगा। माँ को चाहिए कि वह लेटी रहे और तरल भोजन लिया करे।'

"मुझे साधु की माँ की बात में तथ्य प्रतीत हो रहा था। मैंने जवाहर से कहा, 'जाओ, साधु की माँ से कहो कि मैं बुला रहा हूँ। और देखो, हाथ जोड़कर पहले नमस्ते करना और यह भी कहना कि भापा जी कहते थे कि मैं आपसे क्षमा माँगूँ।'

" 'नहीं भापा! मैं नहीं जाऊँगा। अगर इस प्रकार इन मूर्ख, गँवार औरतों के सामने हाथ जोड़ क्षमा माँगने लगा तो बस हो चुकी मेरी डाक्टरी।'

"इस समय सदानारायण स्कूल से आता दिखाई दिया। मैंने उसके द्वारा साधु की माँ को कहला भेजा, 'मैं अपने पुत्र की अभद्रता के लिए क्षमा माँगता हूँ। तुम जरा मेरे सम्मुख आकर लेख को देख जाओ और मुझको समझा दो कि किस प्रकार तुम्हें यह विदित हुआ है कि इसकी नाभि उखड़ गई है।"

"इसके साथ ही जवाहरलाल को मैंने कहा, 'जरा उसको आकर समझाने दो। उसकी बात समझ में आ गई तो उसका इलाज करा लेंगे।'

"इस पर जवाहरलाल बोला, 'यदि उसने पेट मला तो अलसर के फूट जाने का डर है। और हो सकता है इससे माँ की मृत्यु हो जाय!'

" 'जरा समझने तो दो जवाहर!'

" 'अच्छी बात है। मैं चलता हूँ, आप तसल्ली कर लीजिए।'

"अब मैंने डाँटकर कहा, 'तुम क्या समझते हो कि तुम खुदा हो गए हो! सारी दुनिया का ज्ञान तुममें आकर समा गया है?'

" 'मैं न सही, किन्तु कल मेरे प्रोफेसर डॉ. कौल आए थे और वे यह निदान कर गए हैं।'

" 'इस पर भी मैं कहता हूँ, सबकी बात सुन लेने में लाभ ही होता है।'

"विवश वह बैठा रहा। सदा जाकर साधु की माँ को बुला लाया। मैंने हाथ जोड़कर उससे कहा, 'साधु की माँ! जरा बता तो दो कि तुमने कैसे जाना कि इसकी नाभि उखड़ी हुई है।"

उसने कुछ विचार कर पूछा, 'कौन देखेगा? आप या जवाहर?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कहा, 'जवाहर।'

"वह मुस्कराई और बोली, 'जवाहर के भापा! आप भूमि पर लेट जाइए और मैं अभी इसको आपकी और लेख की नाभि का अन्तर बता देती हूँ।'

"मैं चटाई बिछा कर लेट गया। उसने जवाहर को बुलाकर कहा, 'इनकी नाभि को आहिस्ता से, हाथ से दबा कर बताओ कि क्या होता है'

"जवाहरलाल ने मेरे पेट पर हाथ रखकर बताया, 'भापा! यह 'अय मोरीटा' अर्थात् शुद्ध रक्तवाहिनी धमनी है। फट–फट कर रही है। हृदय की गति के साथ यह धड़कती है।'

" 'अच्छा,' साधु की माँ ने कहा, 'अब माँ के पेट पर हाथ रखकर बताओ तो कि वह धक–धक कहाँ पर है?'

"जवाहरलाल ने देखा। वह धक–धक वहाँ पर नहीं थी। इस कारण उसने पेट पर इधर–उधर टटोला। कुछ क्षण टटोलने के उपरान्त वह बोला, 'है तो सही, किन्तु माँ की यह विकृति प्रतीत होती है। यह नाभि के नीचे न होकर इधर है।'

" 'अच्छा देखो,' साधु की माँ ने थोड़ा–सा तेल लेकर पाँच–चार मिनट तक मला और नाभि पर स्वयं हाथ रखकर देखा। फिर उसने जवाहरलाल को देखने को कहा।

"जवाहरलाल ने देखा तो उसका मुख पीला पड़ गया। वह उठ कर पूछने लगा, 'माँ! पीड़ा अब कैसी है?'

"उसकी माँ ने कहा, 'कुछ ठीक प्रतीत होती है।'

"साधु की माँ अपने घर से बूँदी का एक लड्डू साथ ही लाई थी। उसने वह लेख को देकर कहा, 'इसको खा लो। मैं तुमको अभी उठने–बैठने लायक करके जाऊँगी।'

"लेखवती ने लड्डू खाया और फिर साधु की माँ ने उसको दो हाथों से पकड़कर बैठा दिया। उसके जाने के बाद तो लेख उठ कर टहलने लगी।

"जवाहरलाल अपनी मूर्खता पर बहुत लज्जित हुआ। इस पर भी उसका अभिमान नहीं टूटा। रात–भर वह 'ग्रे' का शरीर–विज्ञान पड़ता रहा, किन्तु उसमें उसको ऐसी कोई बात दृष्टिगोचर नहीं हुई। अगले दिन कॉलेज जाकर उसने इस विषय पर अपने प्रोफेसर डॉ. कौल से बात की। किन्तु डाक्टर ने उसका समाधान करने की अपेक्षा उसको डाँट दिया। डाक्टर ने उसको बताया कि उसकी माँ ने नखरा किया हुआ होगा। अन्यथा इतनी जल्दी इतनी प्रबल पीड़ा ठीक नहीं हो सकती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उस दिन झिझकते हुए उसने मुझे डाक्टर कौल के सन्देह के बारे में बताया तो मेरी हँसी निकल गई। मैंने लेख से पूछा, 'बताओ लेख! तुमने वह दर्द का बहाना क्यों किया था?'

" 'बहाना? कौन–सा बहाना?'

" 'जवाहरलाल का डाक्टर कहता है कि तुम्हें दर्द कुछ नहीं था, बहाना किया हुआ था।'

"इस पर तो उसकी माँ ने भी, जो सदैव उसके डाक्टर बनने पर गर्व किया करती थी, कह दिया, 'जवाहर! तुमने अपने पिता के गाढ़े पसीने की कमाई का दस हजार रुपया व्यर्थ ही गँवाया है।'

"इस पर भी, माँ की बात पर विश्वास करने के बजाय वह घर से उठकर चला गया और रात को जब हम सब सो गए तो घर में घुसा और चुपचाप अपने बिस्तर पर सो गया। उस दिन साधना से भी नहीं बोला।

"अब घर के सब लोग हँसी में उसको 'डाक्टर जवाहर' कह कर पुकारते हैं।

"यदि तुम्हें भी अपने जीवन में इस प्रकार के कोई अनुभव लिखने हों तो लिखा करो।"

इसके उपरान्त राधा नियमित रूप से सप्ताह में एक चिट्ठी रामरक्खामल्ल को लिखने लगी। उसमें वह सप्ताह भर का पूर्ण वृत्तान्त लिखती थी।

रामरक्खामल्ल का, जवाहर के पास होने की सूचना का पत्र आया। उसमें यह समाचार भी आया कि लाहौर में प्लेग का प्रकोप हो गया है। नित्य ही साठ–सत्तर व्यक्ति इस रोग से मर रहे हैं। वे लाहौर से बाहर जाने का विचार कर रहे हैं।

राधा ने इसके उत्तर में उन्हें बम्बई आने का निमन्त्रण दे दिया। उसने लिखा कि उसके पास रहने के लिए इतना स्थान है कि सब लोग सुख–सुविधापूर्वक रह सकेगे। उसने यह भी लिखा कि अपने साथ वे ऐसा कोई सामान अथवा वस्त्र न लावें जो धुएँ से शुद्ध करने पर खराब हो जावे। उसका कहना था कि यहाँ आने पर तीन दिन तक वह उनको क्वारैन्टीन में रख कर, फिर अपने मकान ने ले आवेगी। इस पर भी उसने तुरन्त आने का आग्रह किया।

राधा ने सन्तोष को स्कूल से उठा लेने का निश्चय कर लिया था। एक दिन उसे रामरक्खामल्ल का पत्र मिला, जिसमें लिखा था कि घर के सोलहों प्राणी आ रहे हैं। उन सबने लाहौर में ही क्वारैन्टीन में रहकर प्रमाणपत्र प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर लिया है। इस कारण अब वे सीधे घर पर ही आवेंगे।

निश्चित दिन एवं समय पर राधा सन्तोष को लेकर विक्टोरिया स्टेशन पर उनके स्वागत के लिए पहुँच गई।

रामरक्खामल्ल, लेख और जवाहर तथा उसकी पत्नी साधना और उनके साथ रत्न तथा जवाहर के बच्चों का दक्षिण के तीर्थों पर भ्रमण के लिए जाने का विचार था। विष्णुनारायण और परिवार के अन्य सदस्य बम्बई में ही रहना चाहते थे। बम्बई पहुँचते ही राधा को इस कार्यक्रम की सूचना दे दी गई है।

इसकी प्रतिक्रिया राधा पर यह हुई कि वह भी थियेटर से छुट्टी लेने का विचार करने लगी। उसके मार्ग में दो कठिनाइयाँ थीं। एक तो थियेटर से छुट्टी, दूसरे रुक्मिणी से कला भवन के निर्माण की योजना में विचार विमर्श। वह विचार–विमर्श इस स्तर पर पहुँच गया था कि इस समय उसका बम्बई में रहना आवश्यक समझा जाने लगा था। रुक्मिणी राधा को कला भवन की अधिष्ठात्री बनाना चाहती थी। अतः जब वह रुक्मिणी के पास आई और उसको अपनी योजना बताने लगी तो उसने कह दिया, "यह तीर्थयात्रा अभी रुक नहीं सकती क्या?"

"क्यों? क्या मेरे बिना कार्य नहीं चल सकेगा?"

"देखो राधा! श्री देसाई कलकत्ता गए हुए हैं। पुलिस उनका पीछा कर रही है। पुलिस का विचार है कि उनका 'अभिनव भारत' नामक क्रांतिकारी संस्था से सम्बन्ध है। अतः वह उनको पकड़कर मुकदमा चलाना चाहती है। और इधर वे बाल गंगाधर तिलक को कांग्रेस का अध्यक्ष बनाने के लिए यत्न कर रहे हैं। उनका विचार है कि एक बार वे संस्था के अध्यक्ष बन गए तो देश में वह जागृति उत्पन्न हो जावेगी कि अंग्रेजी राज्य समाप्त हो जाएगा।"

"तो उनका क्रान्तिकारियों से कोई सम्पर्क नहीं है?"

"सम्पर्क तो है, परन्तु वे किसी भी दल के सदस्य नहीं हैं। देसाई साहब का प्रयत्न यह है कि एक ओर जनता के नेता जानदार आदमी बन जायें। इसके लिए तिलकजी को कांग्रेस का प्रधान बनाना अत्यावश्यक है। दूसरी ओर ऐसे लोगों की भी आवश्यकता है, जो अंग्रेजों के मन में समय–समय पर बम–पिस्तौल चला–चला कर आतंक जमाते रहें।

"जब वे सार्वजनिक कार्य में लग गए हैं तो कारखानों का प्रबन्ध उन्होंने मेरे हाथ में दे दिया है। मुझको इस काम की ट्रेनिंग देते हुए उन्हें पाँच वर्ष हो गए हैं। अब अपने कारखानों की लिमिटेड कम्पनी बनाने का उद्देश्य भी यही है। उस कम्पनी की मैनेजिंग डायरेक्टर मैं हूँ और मुझको उसमें से इतना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल जाता है कि अपने मन की संस्थाओं को दान–दक्षिणा दे सकती हूँ। मैं समझती हूँ कि यह समय है जब मैं अपने मन का कला भवन निर्माण करा सकूँ। इसके लिए मैं कोई ऐसी महिला अधिष्ठात्री चाहती थी जो कला–प्रवीण होने के साथ–साथ ईमानदार हो। यह बात मैं एक वर्ष से विचार कर रही थी। उस दिन तुम सरला जी के साथ आईं तो मेरी दृष्टि तुम पर पड़ी और मैं चाहती हूँ कि तुम इस कार्य को आरम्भ कर दो। व्यर्थ में समय गँवाना अब उचित नहीं है। एक बार कार्यारम्भ हो जाय तो फिर चाहे तीर्थयात्रा करो अथवा विलायत घूमो।

"देखो, मैंने प्रोपर्टी डीलर्स को कहा हुआ है कि कोई बड़ा–सा मकान इस कार्य के लिए ढूँढ़ दें। धोबी तालाब के समीप एक मकान मिल भी रहा है। उसका मूल्य साढ़े चार लाख रुपया है। मैं चाहती हूँ कि तुम उसकी रजिस्ट्री करा लो और उसमें बैठकर कार्यारम्भ कर दो।

"रुपया तैयार है। यह सब कुछ हमारे नाम पर होगा। यह बाद में विचार कर लिया जावेगा कि इसके प्रबन्ध के लिए किसी प्रबन्ध–समिति का गठन किया जाए, अथवा इसी प्रकार कार्य चल सकता है।"

इन सब बातों को सुनकर राधा ने तीर्थयात्रा का विचार त्याग दिया और उसने अपनी सहमति व्यक्त करते हुए कहा, "अच्छी बात है। जब आप कहती हैं तो मेरे लिए कोई अन्य मार्ग नहीं रहा। इतना मैं बता दूँ कि श्री मनोहरलाल वर्मा भी इस कार्य में रुचि प्रकट कर रहे थे। उनको भी इस कार्य में सम्मिलित किया जा सकता है।"

"सरला जी की मनोवृत्ति तो पसन्द नहीं आई। यदि तुम कहती हो तो मैं कल ही वर्माजी को बुलाकर उनसे बात करूँगी। बताओ, कल तुम किस समय आ सकती हो?"

"मेरे घर में बहुत से अतिथि आए हुए हैं। उनमें कुछ लोग दो–तीन दिन में तीर्थयात्रा के लिए जा रहे हैं। इस कारण दिन का समय तो मैं उनको नगर दिखाने में लगाती हूँ। अतः रात्रि के भोजन के समय अथवा रविवार को आ सकती हूँ। इन दिनों मेरा थियेटर में कोई काम नहीं है।"

"कौन अतिथि हैं?"

"लाहौर में मुकदमे के समय, जिनके घर पर मैं ठहरी थी, वही लोग।"

"परन्तु वहाँ तो प्लेग फैला हुआ है।"

"हाँ, वे क्वारैन्टीन में रह आए हैं।"

"तो ठीक है। क्या नाम बताया था उस वृद्ध सज्जन का, जिसकी बीवी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जवान है और कहती थी कि अपने पति से पूर्णतया सन्तुष्ट है?''

''उनका नाम लाला रामरक्खामल्ल है। सुना है कि उन्होंने बहुत से धर्म–ग्रन्थों का अध्ययन किया हुआ है और नित्य प्रति योगाभ्यास भी करते हैं। एक बार उन्होंने बताया था कि उनका विचार एक सौ पच्चीस वर्ष तक जीवित रहने का है।''

''क्या काम करते हैं वे?''

''बजाजे में दलाली करते हैं। उनका एक लड़का है, जो शमशाद मियाँ का मित्र था। उसके द्वारा ही मैं इनके परिवार में पहुँची थी। अब वे मुझे अपनी कन्या समान ही मानते हैं।''

''कौन–कौन आया है?''

''लालाजी का और उनके छोटे भाई का सारा परिवार है। सब मिलमिला कर सोलह प्राणी हैं।''

''उनसे मेरी भेंट करा दो।''

''कब मिलेंगी आप?''

''कल रात लेते आना। उनको हमारे यहाँ खाना खाने का निमन्त्रण दे आना। अभी केवल लालाजी और उनकी धर्मपत्नी को ही लाना। शेष परिवार को किसी अन्य दिन बुलाऊँगी।''

: 10 :

उसी रात राधा ने लाला रामरक्खामल्ल को अपनी तीर्थयात्रा पर न जा सकने की बात बता दी। उसने कहा, ''थियेटर से तो छुट्टी मिल रही थी, मगर यहाँ मेरी एक संरक्षिका हैं, जिनका कथन मैं टाल नहीं सकती। उन्होंने एक कार्य करने के लिए बताया है, जिसे मैं अस्वीकार नहीं कर सकती।''

''ऐसा कौन–सा आवश्यक कार्य है, जिसके कारण तुम्हें छुट्टी नहीं मिल रही?''

''हम यहाँ एक कला–भवन खोल रहे हैं। मुझको उसकी अधिष्ठात्री बनाया जा रहा है। उसके लिए उपयुक्त मकान ढूँढ़ा जा रहा है और उसे खरीदने के समय मेरी उपस्थिति आवश्यक है।''

''क्या होगा उस कला–भवन में?''

''अभी तो संगीत और नृत्य सिखाने का प्रबन्ध होगा। उसमें शिक्षा निःशुल्क दी जावेगी। सीखने वालों को उनकी योग्यता परख कर ही प्रवेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिल सकेगा। कुछ निर्धन छात्रों को छात्रवृत्ति भी दी जावेगी। कुछ समय के बाद भवन के साथ ही छात्रावास भी खोल दिया जावेगा, जिसमें बम्बई से बाहर की छात्राएँ आकर रह सकेंगी।''

रामरक्खामल्ल ने मुस्कराते हुए कहा, ''और सीखने के बाद वेश्यावृत्ति के के लिए मार्ग प्रशस्त हो जाएगा?''

''क्यों?''

''इसलिए कि कला तो बाहर का मुलम्मा है। कभी तुमने पीतल के आभूषणों को सोने के आभूषणों से भी अधिक चमकीला देखा होगा?''

''यह तो मुलम्मा चढ़ाने वाले पर निर्भर करता है।''

''वह तो तुम हो ही। तुम संगीत सिखाओगी, कोई नृत्य सिखावेगा। वह नृत्य और संगीत सीखकर लड़कियाँ अपने मन की नौकरी ढूँढ़ने का यत्न करेंगी। इस प्रकार की नौकरियाँ अधिक तो होंगी नहीं। अतः वे इस कला से पुरुषों को आकर्षित कर अपना माल बेचती फिरेंगी।''

''तो क्या आपके विचार से यह कला–भवन वेश्याओं का निर्माण करने वाली संस्था बन जाएगी?''

''हाँ, योजना जो तुमने बताई है उसको सुनकर तो मैं यही अनुमान लगा पाया हूँ।''

राधा विस्मय में मुख देखती रह गई। इस पर लाला रामरक्खामल्ल ने कहा, ''जो काम बुद्धू मियाँ गुजरांवाला में करता था, वही तुम यहाँ बम्बई में करने का विचार कर रही हो। वह तुमसे अधिक समझदार था। इससे वह निःशुल्क शिक्षा देने के बाद उस शिक्षा का लाभ स्वयं उठाता था और तुम लाभ स्वयं न उठाकर किसी अन्य के लाभ के लिए भवन के विद्यार्थियों को भेंट कर दोगी।''

लाला रामरक्खामल्ल के लिए राधा के मन में बहुत मान था। उसको इस समय स्मरण हो आया कि रुक्मिणी ने उनको भोजन पर आमंत्रित किया हुआ है। इससे उसने कहा, ''रुक्मिणी देवी ने आपको कल सायंकाल भोजन पर आमन्त्रित किया है। साथ में माता जी को भी बुलाया है। मैं आपकी ओर से उनका निमन्त्रण स्वीकार कर आई हूँ। इस कारण कल आप वहाँ तो चलेंगे ही, फिर उसी समय उनको अपनी बात भी समझा दीजिएगा। यदि वे समझ गईं तो हम अपनी योजना स्थगित कर देंगी अथवा जैसी योजना आप बनावेंगे, उसको कार्यान्वित करने में लग जावेंगे।''

रामरक्खामल्ल गम्भीर हो विचार करने लगा कि वह निमन्त्रण स्वीकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करे अथवा नहीं। लेखवती को बुलाकर उसने उसको रुक्मिणी के निमन्त्रण की बात बता दी।

सुनकर लेखवती ने कहा, "हम तो राधा के अतिथि हैं। यह जहाँ ले जावेगी, हम चले चलेंगे।"

"ठीक है, हम चलेंगे। मैं समझता हूँ कि इस योजना में कहीं त्रुटि है। इस विषय में कल मैं वहाँ बात करूँगा।"

निश्चित योजनानुसार अगले दिन रुक्मिणी के घर पर श्रीमती तथा श्री वर्मा, रामरक्खामल्ल, लेखवती और राधा रात्रि के भोजन के लिए उपस्थित हो गए। साधारण परिचय के अनन्तर भोजन तैयार होने तक बातचीत चलती रही। रुक्मिणी ने कहा, "लालाजी! राधा जबसे मिली है, तब से ही आपकी प्रशंसा करते नहीं थकती। पिछले कई वर्षों से मुझे लाहौर जाने का अवसर मिला नहीं। यदि जाती तो वहीं आपके दर्शन कर लेती। यह तो हमारा अहोभाग्य है कि आप यहाँ पधारे हैं। जब मुझे आप के आने के बारे में विदित हुआ, मैं उसी समय राधा से आग्रह करने लगी कि आपके दर्शन करा दे।"

लेखवती ने कह दिया, "आपका परिचय तो राधा ने अबकी बार लाहौर में दे दिया था। वह कहती थी कि रुक्मिणी बाई इसकी माता हैं। और कोई श्री मनोहरलाल वर्मा इनके पिता हैं। हमारा विचार था कि क्वारैन्टीन और यात्रा की धूल मिट जाय तो आप लोगों के दर्शन करेंगे। किन्तु कल रात जब राधा ने आपके निमन्त्रण के विषय में बताया तो हम बहुत प्रसन्न हुए।"

"श्री मनोहरलाल वर्मा आप हैं।" रुक्मिणी देवी ने वर्मा की ओर संकेत करते हुए बताया, "उनके साथ उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सरला देवी हैं। वास्तव में इन्होंने कई लड़कियों के माता–पिता बनकर उनका उद्धार किया है। मैं भी उनमें से एक हूँ।"

"अच्छा! तो आप हैं?" रामरक्खामल्ल ने कहा, "हमें तो यह विदित था कि आप विलायत गए हुए हैं।"

"वहाँ से लौटे तीन मास हो चुके हैं। उससे पूर्व मैं यहाँ एक थियेटर का संचालन करता था। सिनेमा के प्रचार को देखकर मैं समझ गया था कि थियेटर का युग जा रहा है और अब देखता हूँ कि मेरी वह धारणा ठीक ही थी। अब थियेटर तो एक प्रकार अभिनेता और अभिनेत्रियों के शिक्षण–केन्द्र मात्र रह जावेंगे। वास्तव में थियेटर के साथ जनता का सम्पर्क तो अब सिनेमा के द्वारा ही होगा।

"इस कारण मैंने अपना थियेटर बेच डाला और इस नए आविष्कार का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
अध्ययन करने के लिए विलायत चला गया। इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों में चार वर्ष रहकर मैंने इस उद्योग का ज्ञान प्राप्त किया है। यहाँ आकर मैंने एक सिनेमा हाल मोल लिया है और उसमें अंग्रेजी चित्र दिखाता हूँ। मैं शीघ्र ही चित्र–निर्माण व्यवसाय भी चालू करने वाला हूँ।''

''तो आप भी देश के होने वाले तथाकथित उद्धार में अपना कन्धा लगाने वाले हैं?''

''यह उद्धार होगा अथवा पतन, मैं नहीं कह सकता। मैंने तो इसको केवल रुपए–पैसे की दृष्टि से सोचा–समझा है।''

''देखिये वर्माजी! मैं आपको एक उदाहरण देता हूँ। लाहौर में एक–अंग्रेजी समाचार पत्र छपता है, 'सिविल एण्ड मिलिटरी गजट'। बारीक–बारीक अक्षरों का पन्द्रह पृष्ठ का वह पत्र होता है और प्रतिदिन ही वह निकलता है। मैं उस समाचार पत्र को अपने एक मित्र से सुनता हूँ। सुनते–सुनते कई बार मेरे मन में विचार आता है कि यह सब कितना व्यर्थ का प्रयास है। उसमें बहुत से लेख तो ऐसे होते हैं जो इस कारण नहीं छपते कि लेखक ने कोई नई बात अथवा कोई विशेष बात विशिष्ट रीति से समझाई है, प्रत्युत वे इस कारण प्रकाशित होते हैं कि समाचार–पत्र के पृष्ठ भरने के लिए कुछ न कुछ लिखा होना चाहिए।

''समाचार–पत्र छपना ही चाहिए। लाखों रुपये प्रेस तथा अन्यान्य चीजों पर व्यय हुए हैं, अतः यदि समाचार–पत्र न छपे तो रुपया व्यर्थ हो जावेगा। समाचार इतने होते नहीं कि उनसे पत्र भर सकें। अतएव कोई नया विचार देने के लिए नहीं, प्रत्युत समाचार–पत्र भरने के लिए लेख लिखे जाते हैं।

''यह मशीन युग की विडम्बना है। इसी प्रकार कपड़ा बनाने की मशीनें लग गई हैं। एक–एक मशीन पर लाखों रुपया व्यय हुआ होगा। उनमें इतना कपड़ा बनता है कि देशवासियों में उसको खरीदने की सामर्थ्य नहीं है। कपड़ा इसलिए नहीं बनता कि लोगों को कपड़ा चाहिए, प्रत्युत इस कारण कि मिल खाली रहने से हानि होती है। परिणाम यह हो रहा है कि भिन्न–भिन्न प्रकार के कपड़े बनाए जाते हैं और धनवान व्यक्ति उन विभिन्न प्रकार के वस्त्रों को खरीदते हैं। वह भी इस कारण नहीं कि उनको उन सबकी आवश्यकता होती है, प्रत्युत इस कारण कि मिलों में बने वस्त्रों को खरीदना ही चाहिए।

''मैंने सुना है कि योरप के कुछ देशों में कपड़े का इतना अधिक उत्पादन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होता है कि उसकी सारी खपत उस देश में नहीं हो पाती। इस कारण उस कपड़े को बेचने के लिए उस देश ने अन्य देशों पर अपना राज्य जमाया है और तलवार की नोंक पर अपना कपड़ा बेचते हैं।

"यही बात, मिस्टर वर्मा! आपके इस मशीन से चलने वाले केन्द्रों के विषय में भी होगी। आप बम्बई में बैठ एक चित्र बनायेंगे। उस पर लगे हुए धन की प्राप्ति के लिये देश भर में सिनेमा हालों का जाल बिछवायेंगे। उन सिनेमा हालों के निर्माण में भी रुपया लगेगा और चित्र देखने जाने वालों के मन में चित्र के प्रति रुचि उत्पन्न करने के लिए विज्ञापनों की आवश्यकता होगी, जिनके लिए अनेक पत्र–पत्रक प्रकाशित होंगे। अर्थात् आप चित्र बनायेंगे इसलिए कि उस मशीन पर व्यय किए गए धन का फल प्राप्त करना है। इसलिए नहीं कि आप कोई नई भावनात्मक अथवा शिक्षाप्रद वस्तु देशवासियों को दे रहे हैं। आपके द्वारा बनाए हुए चित्र का मूल्य प्राप्त करने के लिए सिनेमा हाल खोले जायेंगे। वह इसलिए नहीं कि आपके द्वारा बनाए गए चित्र को दखने में किसी की रुचि है, प्रत्युत इसलिए कि आपको रुपया लगाया हुआ वापस चाहिए। इसी प्रकार वह विज्ञापन देगा, जिससे लोग उसके सिनेमा हाल में आकर देखें। यह भी इसलिए नहीं कि उस चित्र में कोई गुण है और उसे देखकर देखने वालों को कोई लाभ होगा। प्रत्युत इसीलिए कि आपके चित्र को खरीदने के लिए व्यय किए गए रुपये प्रदर्शक ने लोगों से वापस लेने हैं।

"यह दुष्टचक्र इस मशीन युग की देन है।"

मनोहरलाल और रुक्मिणी दोनों इस युग की ऐसी विशद व्याख्या को इस अशिक्षित के मुख से सुनकर चकित रह गए। सरला तो इस पूर्ण युक्ति से असहमत थी। उसने कहा, "भापा! क्या आप यह चाहते हैं कि एक व्यक्ति दिन भर खड्डी पर बैठा खट–खट करता हुआ तीन गज कपड़ा बुन लिया करे, जबकि इस नए युग की देन मशीन से एक दिन में पचास गज से भी अधिक कपड़ा तैयार होता है?"

"देखो बेटा! मैंने यह नहीं कहा। मेरा कहना तो यह है कि यदि पचास गज कपड़ा बनाने की आवश्यकता हो तो बनाओ। यह तो तुम देखती हो कि पचास गज प्रतिदिन तैयार किया जाने वाला कपड़ा इस देश में तो खपता नहीं। यदि खपता भी है तो केवल दो–तीन प्रकार का कपड़ा। उदाहरण के रूप में कुरता और पायजामे के लिए। ऐसा प्रतीत होता है कि देश में कपड़े की उतनी खपत नहीं। फिर पचास गज बनाने से क्या लाभ? सत्य जानो कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
इन मिलों में कपड़ा इस कारण नहीं बन रहा कि इससे नंगों का शरीर ढका जाएगा, प्रत्युत इसलिए कि मशीनें खाली पड़ी हैं। उनका उपयोग होना चाहिए।

"यही बात सिनेमा चित्रों की भी होगी। चित्र इसलिए नहीं बनेंगे कि उनसे जनता को लाभ पहुँचने वाला, है, प्रत्युत इसलिए कि आपने हाल बनाया है और वह खाली रहा तो आपको आर्थिक क्षति होगी।"

इस समय बैरे ने भोजन लगने की सूचना दी। रुक्मिणी ने कहा "चलिए, भोजन कर लें।"

सब उठकर डाइनिंग हाल में जा पहुँचे। रुक्मिणी ने कहा, "भापा! आपको मेज–कुर्सी पर बैठकर खाने में कष्ट तो होगा, किन्तु क्या करूँ, यहाँ तो इस समय यही उपलब्ध है।"

"नहीं, मुझे कोई कष्ट नहीं होगा। दो दिन से राधा के घर में भी ऐसा ही हो रहा है और अब तो धीरे–धीरे अभ्यास होने से इसमें सुख भी अनुभव होने लगा है।"

सबके लिए थाल थे। उनमें दाल–भाजी आदि रखी हुई थी। इन लोगों के बैठ जाने पर यथारुचि चावल अथवा पूरी परोसी गई। भोजन करते हुए रुक्मिणी ने कला–भवन के विषय में बात आरम्भ कर दी। जब रुक्मिणी ने उनको अपनी योजना बताई तो राधा ने उस पर रामरक्खामल्ल की सम्मति भी बता दी। इस पर वर्मा ने पूछा, "लालाजी! अपनी सम्मति की कुछ व्याख्या कर दें तो हमें बहुत लाभ होगा।"

"मुझे इस भवन के निर्माण में तो कोई आपत्ति नहीं है। परन्तु इसकी योजना, जो राधा बेटी ने बताई थी, अधूरी प्रतीत हुई है।"

"क्या त्रुटि है उसमें?"

"मैं तो कला को मनुष्य की विशेष प्रवृत्ति पर एक मुलम्मा मात्र समझता हूँ। यदि मुलम्मे के साथ–साथ आप उस धातु का भी विचार रखेंगे, जिस पर मुलम्मा चढ़ाने का प्रबन्ध कला भवन में होने वाला है, तो यह संस्था अति लाभकारी सिद्ध हो सकती है। परन्तु केवल मुलम्मा अर्थात् कला के लिए आने वाले विद्यार्थी तो पीतल के ही होंगे जो सात–आठ वर्ष वहाँ व्यतीत करने पर अनुभव करने लगेंगे कि पीतल पर किया गया मुलम्मा उनके किसी काम का नहीं और इससे लाभ उठाने के लिए वे वेश्यावृत्ति करने लगेंगे।"

"तो आपकी सम्मति में क्या करना चाहिए?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"एक तो यह बात कि प्रविष्ट किए जाने वाले विद्यार्थियों की योग्यता देखते समय, उनके कुलीन और सच्चरित्र होने को अनिवार्य गुण समझा जाए। कला सरस्वती देवी के लिए तो शोभादायिनी है, किन्तु रावण के दरबार में कार्य करने वाली नर्तकी के लिए वासनातृप्ति का साधन हो सकती है।"

"तो क्या वासना कोई अवांछनीय वस्तु है?" सरला ने प्रश्न किया।

'नहीं।" रामरक्खामल्ल का उत्तर सतर्क था–"वासना एक स्वाभाविक दुर्बलता है। इस दुर्बलता को बढ़ावा देने के लिए कला के प्रयोग की आवश्यकता नहीं। यह तो कला का दुरुपयोग होगा। जो दुर्बलता मनुष्य में बनी है, उसको तो भोगना है। उसको अधिक करने से कोई लाभ नहीं।"

"आज की जीवन–मीमांसा है कि वासना जीवन का सार है। इसके लिए ही जीवन बना है। इसके भोग के निमित्त ही मनुष्य अनेकानेक प्रयत्न करता है। संसार का पूर्ण इतिहास इस वासना–बिन्दु के चारों ओर घूमता दिखाई देता है।"

"हाँ, यह उनके लिए है, जिनकी आँखों पर वासना का रंगीन चश्मा चढ़ा हुआ है।"

इस पर रुक्मिणी ने कहा, "मैं तो सरला जी की इस जीवन–मीमांसा को मान नहीं सकती। यदि ऐसा मानूँ तो देसाई जी का, देशकार्य के लिए लाखों व्यय करना और फिर जीवन का भय मोल लेना एक अमानुषीय कार्य मानना पड़ेगा और फिर वे और मैं, अभी बूढ़े तो हुए नहीं। हम अपनी वासना–प्रवृत्ति के विपरीत ऐसा कुछ क्यों करते?"

"और राधा!" रामरक्खामल्ल ने पूछा, "तुम्हारा कैसा अनुभव है? जब शमशाद सरवर से विवाह करके आया था तो तुम अपने श्वसुर के पास रहने के लिए क्यों नहीं चली गई थीं?"

राधा के विवाहित जीवन की कथा सभी उपस्थित लोगों को विदित थी। इस कारण इन युक्तियों के सामने सरला बितर्–बितर् मुख देखती रह गई। उसको उस प्रकार परेशान देख मनोहरलाल वर्मा हँस पड़ा। हँसकर बोला, "मैं कल श्यामजी कृष्णा वर्मा का जीवन–चरित्र पढ़ रहा था। यह देशभक्त गुजरात के मांडवी गाँव में सन् 1857 के अक्टूबर मास में उपन्न हुआ था। वह इस देश से विदेशीय राज का उन्मूलन करने के लिए देश–विदेश घूम–घूमकर षड्यन्त्र करता रहा। उसका यह कार्य तो वासना–तृप्ति के हेतु नहीं कहा जा सकता?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरला को फ्रायड के सिद्धान्त पर सन्देह होने लगा था। कम–से–कम उसके पास इसका उत्तर नहीं था। इस समय रुक्मिणी नें पूछा, ''क्या आपके कहने का अर्थ यह है कि कुलीन परिवार की लड़कियाँ निर्धनों की लड़कियों से अधिक शील और चरित्र से युक्त होती हैं?''

''मैंने धनी और निर्धन की बात तो नहीं कही। कुलीन का अर्थ है उन परिवार वालों से जिनमें शील, मर्यादा, धर्म और चरित्र की महिमा हो।''

''तो किसी विद्यार्थी को कला–भवन में प्रविष्ट करने से पूर्व उसके परिवार का इतिहास जाना जाए?''

''निस्संदेह। और केवल इतना ही नहीं, मैं इस कला–केन्द्र में कला की शिक्षा के साथ–साथ धर्म, संस्कृति और आचार–निर्माण की शिक्षा को अनिवार्य रूप से सम्मिलित करना चाहूँगा।''

''यह कैसे होगा?''

''उस कैसे के लिए तो व्याख्या में बात करने की आवश्यकता होगी। दो–चार योग्य व्यक्तियों से बात कर इसके लिए एक पाठ्यक्रम निश्चय किया जा सकता है। उसमें मैं समझता हूँ कि विद्यार्थियों को सादा और पवित्र जीवन का अभ्यास कराना सर्वोपरि होना चाहिए।''

मनोहरलाल बोल उठा, ''मैं आपके उद्देश्य से सहमत हूँ। मैं यह समझता हूँ कि यदि हम वर्ष में दस–बीस परिवारों में श्रेष्ठ, चरित्रवान् शीलयुक्त और कर्तव्यपरायण, साथ ही कला–विज्ञ गृहिणियाँ दे सके तो हम नगर में सौ वेश्याएँ निर्माण करने से अधिक कल्याण का कार्य कर सकेंगे। परन्तु इस कार्य को करने के लिए कोई योग्य निष्ठावान संयोजक और प्रबन्धकर्ता भी तो होना चाहिए। मैं कहूँगा कि यदि लालाजी इस कार्य के लिए अपना समय दे सकें तो हम उनके अत्यन्त आभारी होंगे।''

यह सुनकर रामरक्खामल्ल गम्भीर विचारों में डूब गया।

रुक्मिणी ने राधा से पूछा ''क्यों राधा! तुम क्या समझती हो?''

''इसमें मेरे समझने की कोई बात ही नहीं है। यह तो आपके और भापा के विचार करने की बात है।''

''मैं कह नहीं सकता कि एक प्रबन्धक के रूप में मैं कहाँ तक सफल हो सकूँगा। विशेष रूप में लड़कियों के सम्बन्ध में। मैंने किसी शिक्षण–संस्था का कभी भी प्रबन्ध किया नहीं है।''

''यह तो कोई बड़ी बात नहीं। हम सब भी तो आपके सहयोगी के रूप में हैं। मैं तो यह कह रहा हूँ कि योजना आपकी होगी और चलाएँगे हम।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"विचार करूँगा। सबसे बड़ी बात लेखवती की है। इसको भी मेरे साथ बम्बई आना पड़ेगा।"

राधा, जो लेखवती के साथ वाली कुर्सी पर बैठी भोजन कर रही थी, कहने लगी, "माताजी! मान जाइए न।"

लेखवती हँस पड़ी। सब उसका मुख देखने लगे। लेखवती ने बताया, "यह राधा बहुत चतुर हैं। सबको माता–पिता बना अपनी बात मनवा लेती है। अब मुझे कहती है कि मैं भी मान जाऊँ?"

मनोहरलाल अपनी पत्नी से पूछने लगा, "इसमें भला कौन–सी वासना की तृप्ति है?"

सब हँस पड़े। मनोहरलाल ने रुक्मिणी से कहा, "मेरा प्रस्ताव है कि कल आप, मैं और लालाजी, तोनों मिलकर इस विद्यालय के नियमोपनियम बनाकर उसके विषय में विज्ञापन प्रकाशित करवा दें।"

"कल मकान वाले आने वाले हैं। उनको मैंने साढ़े ग्यारह बजे मध्याह्न के समय बुलाया है। यदि आप दोनों उसी समय आ जावें तो हम यह प्रारम्भिक कार्य कर लेंगे।"

"बताइये लालाजी!" मनोहरलाल ने पूछा।

"जहाँ तक नियमादि बनाने का सम्बन्ध है, मैं आ सकता हूँ। शेष यहाँ कार्य करने के विषय में तो दो–तीन दिन तक विचार कर अपना निर्णय बताऊँगा।"

इसका परिणाम यह हुआ कि रामरक्खामल्ल का भी यीर्थयात्रा पर जाना स्थगित हो गया। विष्णुनारायण तो परिवार सहित अपोलो–पायर पर 'गेट–वे ऑफ इण्डिया' में जाकर बैठ, समुद्र की शोभा देखा करता था। लेखवती और जवाहरलाल भी वहीं चले जाते थे। रामरक्खामल्ल, राधा, मनोहरलाल और रुक्मिणी इस भवन के निर्माण और उसकी व्यवस्था में लग गये।

मनोहरलाल व्यवहारिक बुद्धिवाला व्यक्ति था। रामरक्खामल्ल आदर्शवादी था और राधा कला–सम्बन्धी आवश्यकताओं का सुझाव देती थी। रुक्मिणी ने पाँच लाख रुपया दिया था और उसमें से साढ़े चार लाख का एक बहुत बड़ा भवन धोबी तालाब पर ले लिया गया। पचास हजार रुपया उपकरणादि एवं मरम्मत आदि पर व्यय हो गए। मकान के नीचे की मंजिल पर दुकानें थीं। उनका भाड़ा पाँच हजार रुपया मासिक था। ऊपर की मंजिल में तीन बड़े हॉल बनवा लिए गए थे। ये सार्वजनिक समारोह अथवा कला भवन के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयुक्त कार्यक्रमों के लिए थे। इन तीन हॉलों में से एक तो इतना बड़ा था कि उनमें दो सौ दर्शकों के बैठने का प्रबन्ध था। उससे ऊपर की मंजिल पर अभ्यास के लिए सात कमरे थे। दो कमरे कलाकारों के विश्राम के लिए बनाये गये थे।

चौथी मंजिल निवास के लिए थी। एक सैट रामरक्खामल्ल और उसके परिवार के लिए और एक सैट राधा के परिवार के लिए था। साथ ही छत पर खुली जगह थी। अन्य सुख–सुविधाओं की भी पूर्ण व्यवस्था थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

: 1 :

अभी ये प्रबन्ध किए जा रहे थे कि कलकत्ता से तार आया कि देसाई को राजद्रोह के अपराध में बंदी बना लिया गया है। रुक्मिणी को इस समय किसी ऐसे व्यक्ति के सहयोग की आवश्यकता अनुभव हुई, जो देसाई के मुकदमें की पैरवी कर सके। इसके लिए बम्बई से एक वकील को कलकत्ता भेजा गया। वह वहाँ जाकर लौट आया और उसने मुकदमें की पैरवी करना अस्वीकार कर दिया। जिस समय वह वकील अपनी अस्वीकृति की बात बताने आया था, रामरक्खामल्ल उस समय कला–भवन के विषय में परामर्श करने के उद्देश्य से रुक्मिणी के समीप ही बैठा था। जब वकील ने समाचार–पत्रों के वक्तव्य, विशेष रूप में स्टेट्समैन में प्रकाशित लेख रुक्मिणी के सम्मुख रक्खे और अपने खर्च का बिल दे वह उठकर जाने लगा तो रामरक्खामल्ल ने कहा, "ऐ मिस्टर! जरा इधर आओ।"

इस प्रकार के सम्बोधन को सुनने का वकील को स्वभाव नहीं था। वह लौट आया और रामरक्खामल्ल से पूछने लगा, "तुम कौन हो?"

"मैं एक इन्सान हूँ। लेकिन तुम बताओ कि यह क्या रद्दी का ढेर रखकर जा रहे हो?"

"यह अंग्रेजी अखबारों की सम्मति है कि श्री देसाई चिपलूणकर भाइयों की संस्था 'हिन्दू धर्म संघ' के सदस्य हैं। मैं इस प्रकार के व्यक्ति के मुकदमे के साथ अपना सम्बन्ध नहीं रख सकता।"

"बड़े गधे हो तुम! तुमको किसने वकील बनाया है? तुमने मुकदमा देखा नहीं, देसाईजी से मिले नहीं, उनके विरुद्ध तुमने कोई साक्षी नहीं सुनी और अखबार की राय पढ़कर ही उनको अपराधी समझ वहाँ से भाग आए हो। फिर यहाँ आकर इस गधेपन के लिए खर्चा भी माँगते हो?"

"मिसेज देसाई! यह कौन गुण्डा आपने अपने पास बैठा रखा है। मैं अभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुलिस में रिपोर्ट कर दूँगा।''

''मिस्टर डोंगरवाल! आप इनकी बात का उत्तर दे दीजिए कि यह बिल किस कार्य का है? मैं तो इसका भुगतान करूँगी नहीं और साथ ही अपने हर्जाने के लिए मैं कोर्ट में दावा कर दूँगी कि आपने मुझे व्यर्थ में परेशान किया है।''

''देखिए, आपके पास रुपया है। इतना कुछ दे देने से आपको हानि होगी नहीं और मुझको इससे लाभ होगा।''

रुक्मिणी ने सोचा कि कुछ दे दिया जाए तो ठीक है। इस विचार से उसने बिल उठाना चाहा तो उसे अपने हाथ में लेते हुए रामरक्खामल्ल ने कहा, ''वकील साहब! यहाँ से चले जाइये। मैं कल यह बिल और साथ ही आपका बयान 'केसरी' में छपवा दूँगा।''

इस पर डोंगरवाल ने वह बिल ले लिया और वहाँ से चला गया। उसके जाने के बाद रुक्मिणी बोली, ''मैंने इसको वहाँ इसलिए भेजा था कि यह वहाँ जाकर उनके मुकदमे का प्रबन्ध करे और यह एक सप्ताह इधर–उधर घूमकर यहाँ वापस आ गया है। इसके लिए ही इसने सात सौ सत्तावन रुपये का बिल बना दिया है।''

''आप क्या चाहती हैं?''

''मैं उनको छुड़ाना चाहती हूँ। रुपयों की कमी नहीं है, किन्तु प्रबन्ध के लिए उचित व्यक्ति नहीं मिल रहा।''

''तो ऐसा करिए, मुझे जाने दीजिए। इससे तो कुछ अच्छा ही प्रबन्ध करके आऊँगा।''

''आप जाइए। मैं बहुत दुःखी एवं लज्जित हूँ कि उनको बन्दी बनाए आज दस दिन हो गए हैं और हमारी ओर से अभी कोई उनसे मिला भी नहीं।''

''मैं आज सायंकाल की गाड़ी से जाऊँगा और जानिए कि एक सप्ताह के भीतर सब समाचार ला दूँगा।''

''यदि आप किसी अंग्रेजी पढ़े–लिखे को साथ ले जाना चाहें तो मैं अपने मुंशी को साथ कर देती हूँ।''

''कौन मुंशी?''

''मिस्टर मधोलकर। वह बम्बई यूनिवर्सिटी का ग्रेजुएट है।''

''ठीक है, उसे तैयार कर दीजिए। मैं आज सायंकाल ही चला जाऊँगा।''

रामरक्खामल्ल ने 'हिन्दू धर्म संघ' का नाम सुन रखा था और वह यह भी जानता था कि सरकार इसके सख्त खिलाफ है। इस पर भी उसने विचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
किया कि यदि देसाई क्रान्तिकारी है तब तो उसकी सहायता करना धर्म का कार्य है। और यदि वह निरपराध है तो रुक्मिणी के लिए उसको मुक्त कराना उचित ही है, क्योंकि वह इनके कला–भवन के लिए इतना धन दे रही है। दोनों ही विचारों से उसने इस मुकदमे की पैरवी को उचित समझा था।

उसी शाम की गाड़ी से वह और मधोलकर कलकत्ता के लिए रवाना हो गए। मार्ग में ही रामरक्खामल्ल ने मधोलकर से सब कागज–पत्रों का सार मालूस कर लिया। ऐंग्लो–इण्डियन समाचार–पत्र स्टेट्समैन की तीव्र आलोचना सुन उसके रोंगटे खड़े हो गए। इस पत्र में देसाई को भारत में प्रचलित तीस क्रान्तिकारी दलों से सम्बन्धित बताया था। उसने उसके न्यायालय में प्रस्तुत किए जाने से पूर्व ही अपना निर्णय घोषित कर दिया था।

मधोलकर ने कहा, "वास्तव में ऐंग्लो–इण्डियन समाचार–पत्र अंग्रेजी राज्य को अपना समझते हैं और वे इस राज्य के विपरीत किंचित्मात्र भी कहने वाले को गोली से उड़ा देना चाहते हैं। वे ऐसे संदेहात्मक व्यक्तियों के लिए तो मुकदमे तक की भी आवश्यकता नहीं मानते। इनकी नाक में दम तो तिलक महाराज ने किया हुआ है। टाइम्स ऑफ इण्डिया पर मानहानि का दावा कर उन्होंने उससे क्षमा मँगवा ली है।"

रुक्मिणी ने अभी दस हजार रुपया उनको दिया था। रामरक्खामल्ल जानता था कि रुपए का जादू बड़ा प्रबल होता है। वह कलकत्ते पहुँचने पर सीधे पुलिस थाने जा पहुँचा। वह पता करना चाहता था कि बम्बई का देसाई कहाँ है। इस पर एक पुलिस के सिपाही ने पूछ लिया, "लाला! तुम तो पंजाबी मालूम होते हो?"

"हाँ, हूँ तो मैं पंजाबी ही। मगर मैं बम्बई में रहता हूँ और देसाई के विषय में श्रीमती देसाई ने अदालती कार्रवाई करने के लिए भेजा है।"

"परन्तु हमें सख्त हुक्म है कि किसी को उससे मिलने न दिया जाए।"

"वह तो मैं समझता हूँ भाई! लेकिन यदि तुम मिला दोगे तो कुछ तो तुमको भी मिल सकता है।"

"क्या दोगे?"

"तुम बताओ कि आधे घण्टे की मुलाकात के लिए कितना रुपया चाहिए तुम्हें?"

"पचास मेरे लिए और पचास थानेदार के लिए।"

"मिल जावेंगे।"

"क्या एतबार है कि मिल जावेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम थानेदार से पूछ लो। रुपए पहले मिलेंगे और मुलाकात पीछे होगी।"

"यह तो रोटी बाँटने के समय ही हो सकता है। कल दोपहर को ग्यारह बजे आ जाना। मैं तब तक सब प्रबन्ध कर रखूँगा।"

इस प्रकार प्रथम दिन ही रामरक्खामल्ल को यह सफलता मिली। अगले दिन वह लाल बाजार थाने में पहुँचा तो वह हैड–कांस्टेबल उसको प्रतीक्षा करता हुआ मिला। उसने रामरक्खामल्ल को एक ओर ले जाकर कहा, "लाओ हमारा इनाम।"

रामरक्खामल्ल ने सौ रुपए का नोट उसके हाथ पर रख दिया। रामरक्खामल्ल को वह हैड–कास्टेबल वहाँ ले गया, जहाँ हवालातियों के लिए रोटियाँ पकी रक्खी थीं। कांस्टेबल रामरक्खामल्ल से चार रोटियाँ और एक कुल्हड़ में दाल उठवाकर थाने के भीतर, हवालात की एक अंधेरी कोठरी में ले गया। वहाँ सामने बैठे आदमी को उसने कहा, "देसाई जी! रोटी खा लीजिए। तब तक यह आदमी यहाँ बैठा है। बातें आहिस्ता–आहिस्ता करिएगा।"

यह कहकर उसने उस कोठरी का दरवाजा बन्द कर दिया और उसे बाहर से ताला लगा दिया। जब पुलिस अधिकारी चला गया तो उसने पूछा, "तुम कौन हो?"

"आप मुझे नहीं जानते। मैं आपके बम्बई से चले आने के बाद वहाँ पहुँचा था। आपका मुकदमा लड़ने के लिए कलकत्ता आया हूँ। किन्तु पहले आप कोई ऐसा सकेत दीजिए, जिससे मुझे विश्वास हो जाए कि मैं मिस्टर देसाई से बात कर रहा हूँ।"

"मैंने यहाँ यह बयान दिए हैं कि मैं किसी क्रान्तिकारी को नहीं जानता। मैंने अपने कारखानों को एक लिमिटेड कम्पनी के पास बेच डाला है। मैंने अपना सब रुपया दान–दक्षिणा में बाँट दिया है। मेरी पत्नी रुक्मिणी जो किसी समय प्रसिद्ध ऐक्ट्रेस थी, अपनी तीस लाख की जायदाद से उस लिमिटेड कम्पनी की हिस्सेदार है। मैंने घर छोड़ दिया है और वानप्रस्थी हो गया हूँ।

"अगर आप सत्य ही रुक्मिणी से मिलकर आए हैं, तो यह अवश्य जानते होंगे।"

"ठीक है इस समय इतना ही पर्याप्त है। शेष आप वकील से बात कर लीजिएगा। मैं तो आपको इतना बताया चाहता हूँ कि एक अन्य आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपका मुकदमा देखने के लिए यहाँ भेजा गया था, परन्तु वह समाचार–पत्रों में आपके विरुद्ध प्रकाशित आरोपों को पढ़कर भाग गया है। अब मैं आया हूँ। कोई बात जो मेरे करने की हो बताइए।''

''यह कांस्टेबल कल मेरे पास आकर बता गया था कि आप मेरे पास आवेंगे और जो हमें बातें करनी हों, हम धीरे–धीरे करें।

''अब तक दो बार मुझे मैजिस्ट्रेट के सम्मुख उपस्थित किया गया है। चूँकि मेरे साथ अन्य कोई अभियुक्त नहीं था, इससे मेरा अनुमान है कि अभी तक पुलिस के पास मेरे विपरीत कोई प्रमाण नहीं है। मेरा कोई वकील नहीं आया। मैजिस्ट्रेट ने कल फिर रिमाण्ड दे दिया है।''

''कोई विशेष वकील करना चाहते हैं आप?''

''मिस्टर नार्टन ने प्रोफेसर अरविन्द घोष की पैरवी की थी। आप चाहें तो उनसे मिल सकते हैं।''

रामरक्खामल्ल जाने लगा तो देसाई ने कहा, ''यदि किसी प्रकार हो सके तो भोजन का बाहर से प्रबन्ध करवा दें। यह भोजन तो खाने योग्य है ही नहीं।''

''मैं यत्न करूँगा।''

रामरक्खामल्ल के यत्न से भोजन का प्रबन्ध हो गया। बीस रुपए रोज पुलिस को और पाँच रुपए खाने का मूल्य देने पर देसाई को होटल से खाना पहुँचने लगा।

नार्टन ने पाँच सौ पेशगी लिया और प्रतिपेशी का एक हजार रुपया माँगा। इस प्रकार निश्चय हो जाने पर अदालत से स्वीकृति लेकर मिस्टर नार्टन देसाई से मिलने के लिए आया।

देसाई ने बताया, ''मैं किसी क्रान्तिकारी दल का सदस्य नहीं हूँ। न ही मैं हिन्दुस्तान की किसी क्रान्तिकारी पार्टी को जानता हूँ। मैंने श्री तिलक को उनके समाचार–पत्र के लिए सवा लाख रुपया दिया था। यह किसी भी प्रकार चोरी–चोरी नहीं, प्रत्युत चैक द्वारा दिया है। कलकत्ते में भी बाबू विपिनचन्द्रपाल को मैंने दस हजार रुपया दिया है। इन दोनों दान की राशि के विषय में पुलिस को ज्ञान हो गया है। मैं भी इसे अस्वीकार नहीं करता। शेष मैं कुछ नहीं जानता।''

''बाबू विपिनचन्द्रपाल को किस निमित्त रुपया दिया है?''

''बंगाल–विभाजन के विरुद्ध आन्दोलन के लिए।''

''यही तो आपत्तिजनक है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं समझता हूँ। इन बातों के लिए आन्दोलन का अभिप्राय राज्य–परिवर्तन स्वरूप राज्यद्रोह नहीं हो सकता।"

नार्टन गम्भीर हो सुनता रहा। फिर यह जानकर कि किस तिथि को वह किस अदालत में उपस्थित किया जाएगा, नार्टन चला गया।

रामरक्खामल्ल ने मधोलकर के हाथ सब सूचना लिख कर रुक्मिणी के पास भेज दी और स्वयं वहीं ठहर मुकदमे का प्रबन्ध करने लगा।

रामरक्खामल्ल एक होटल में ठहरा हुआ था। मधोलकर अभी बम्बई से लौटा नहीं था कि इन्हीं दिनों, एक दिन जब रामरक्खामल्ल भोजन कर आराम करने के लिए अपने कमरे में आया कि एक बंगाली युवक उसके कमरे में प्रविष्ट होते हुए पूछने लगा, "आप मिस्टर सूद हैं?"

इसी नाम से रामरक्खामल्ल ने होटल में परिचय दिया हुआ था। इस कारण उसने कहा, "जी हाँ, मैं आर.आर. सूद हूँ।"

"मेरा नाम निर्मलचन्द्र राय है।"

"कहिए।"

"मुझे मिस्टर देसाई ने आपके पास भेजा है।"

"किसलिए भेजा है?"

"मुझे एक पिस्तौल खरीदने के लिए पाँच सौ रुपये चाहिएं। उनका कहना है कि आप रुपया दे देंगे।"

रामरक्खामल्ल ने आँखें मूँद कुछ विचार किया और कहा, "मैं कल मिस्टर देसाई से मिलने के लिए जा रहा हूँ। इस विषय में पूछ लूँगा। यदि उन्होंने कहा तो आपको रुपये मिल जावेंगे।"

"आज दे दीजिए। आपके लिए तो पाँच सौ रुपया कुछ मूल्य नहीं रखता। मेरा काम बन जावेगा।"

"क्या काम बन जावेगा?"

"मैं कल अपने प्रोफेसर को गोली से मार डालना चाहता हूँ।"

"देखो मिस्टर निर्मलचन्द्र! मुझे मिस्टर देसाई ने एक पाई भी नहीं दे रखी है। उनकी पत्नी ने अपने पति का मुकदमा लड़ने के लिए कुछ दिया था, वह सब समाप्त हो गया है। इस पर भी यदि देसाई कहेंगे तो मैं इस रुपये का प्रबन्ध कलकत्ते में ही कर दूँगा।"

"आप अपने पास से ही दे दीजिए।"

"मेरे पास तो देने के लिए एक पैसा भी नहीं है।"

"अच्छी बात है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दीर्घ निःश्वास छोड़ता हुआ वह चला गया। रामरक्खामल्ल ने समझा कि यह कोई खुफिया पुलिस का आदमी है। इस घटना के चार–पाँच दिन बाद रुक्मिणी देवी का एक पत्र लेकर मधोलकर बम्बई से आ गया। मधोलकर उस दिन बाजार में गया तो तुरन्त ही एक समाचार–पत्र लिए हुए लौट आया।

रामरक्खामल्ल ने प्रश्नभरी दृष्टि से उसकी ओर देखा तो मधोलकर ने उसमें प्रकाशित समाचार सुना दिया। यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर विलियम को एक छात्रा ने गोली मार कर मार दिया था।

''और क्या लिखा है?''

''लिखा है कि निर्मलचन्द्र की बहिन नलिनी और वह, दोनों भाई–बहिन प्रेजिडैन्सी कॉलेज में पढ़ते थे। एक दिन प्रोफेसर ने बाबू विपिनचन्द्र पाल के विषय में कह दिया, 'बंगाली कुत्ते भौंकते हैं काटते नहीं।'

''इस घटना के कुछ दिन बाद लड़की ने प्रोफेसर को क्लासरूम में गोली से उड़ा दिया। उसने यह बयान पुलिस में दिया है।''

रामरक्खामल्ल मुख देखता रह गया। मधोलकर ने उसे परेशान देख पूछा, ''क्या बात है, आप परेशान क्यों हो गये हैं?''

''कुछ नहीं। उसका भाई निर्मलचन्द्र पकड़ा गया है या नहीं?''

''नहीं, वह तीन दिन से अनुपस्थित है। वह घर पर भी नहीं गया।''

''कोई विशेष बात नहीं। मुझे कुछ ऐसा प्रतीत होता है कि इस व्यक्ति का नाम मैंने कहीं सुना है।''

बात समाप्त हो गई। रामरक्खामल्ल सोचने लगा कि भाई–बहिन दोनों एक ही उद्देश्य के लिए यत्न कर रहे थे। भाई तो सफल नहीं हो पाया, किन्तु बहिन सफल हो गई है।

जिस दिन देसाई को अदालत में उपस्थित होना था, रामरक्खामल्ल एक सहस्र रुपया लेकर नार्टन की कोठी पर जा पहुँचा। नार्टन उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

नार्टन ने रामरक्खामल्ल को देखकर कहा–''मिस्टर सूद! आप मिले नहीं। मैं समझा था कि आप अब नहीं आएँगे।''

''क्यों?''

''पुलिस प्रोफेसर विलियम की हत्या का सम्बन्ध देसाई से जोड़ने का यत्न कर रही है। मुझे यह बताया गया है कि लड़की का भाई पुलिस को रिश्वत देकर देसाई से मिला था और देसाई ने उसको आपके पास भेजा था।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह बात सत्य नहीं है।"

"मैं समझा था कि आप कलकत्ता से भाग गए होंगे।"

"आपको यह किसने बताया है?"

"यह मेरा रहस्य है। मैं ऐसी बातें किसी को बताया नहीं करता।"

रामरक्खामल्ल गम्भीर बना रहा। उसे आशंका हो गई थी कि कहीं वकील मुकदमा लेने से इन्कार न कर दे। वह बोला, "आज तारीख है, आपको चलना चाहिए।"

"अभी मुकदमा नहीं होगा। यह सम्भव है कि आप भी पकड़े जायें। उस अवस्था में मैं आपका भी मुकदमा लड़ूँगा। आपको चाहिए कि किसी अन्य व्यक्ति को अपना स्थानापन्न नियुक्त कर दें।"

रामरक्खामल्ल ने वकील को एक हजार रुपये दिए तो उसने अपने डायरी में नोट कर लिया और रामरक्खामल्ल से कहा, "आप जेल के दरवाजे के बाहर जाकर खड़े हो जायें। मैं ठीक साढ़े दस बजे वहाँ पहुँचूँगा और अपने साथ ही आपको भीतर ले चलूँगा।"

सरकारी वकील ने पुनः रिमाण्ड के लिए आवेदन किया। इस बार प्रतिपक्षी के वकील नार्टन को सम्मुख खड़ा देख, मैजिस्ट्रेट रिमाण्ड देने में संकोच कर रहा था। नार्टन समझ गया कि उसका रोब छा रहा है। अतः उसने कह दिया, "मिस्टर देसाई को पकड़े हुए एक मास से अधिक हो गया है। किन्तु अभी तक पुलिस यह भी नहीं बता रही है कि किस कारण इनको। पकड़ा गया है। ऐसी स्थिति में मैं अदालत से कहूँगा कि वह मिस्टर देसाई को रिहा कर दें।

"पुलिस ने बताया है कि वह क्रान्तिकारी है।"

"हिरासत में लेने के लिए इतना कहना मात्र पर्याप्त नहीं है। स्पष्ट बताया जाए कि वह किस क्रान्तिकारी दल का सदस्य है अथवा किस हत्या के साथ उसका सम्बन्ध है?"

"पुलिस को इसके ऊपर सन्देह है।"

"तो इसको आर्डिनैंस 1818 के अधीन पकड़ा जा सकता है। धारा 124–ए जो कि मिस्टर देसाई पर लगाई गई है सन्देह पर पकड़ने के लिए नहीं है। पुलिस अपना आरोप स्पष्ट शब्दों में प्रकट करे। अन्यथा मैं ऊपर की कोर्ट में छोड़ने की अपील कर दूँगा अथवा जमानत पर छोड़ने के लिए कहूँगा।"

मैजिस्ट्रेट सरकारी वकील का मुख देखने लगा। उसने कहा, "मैं अभी आज तो रिमाण्ड लेने के लिए आया हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं कल की तारीख दे देता हूँ। कल आप पूरी तैयारी करके आवें।"

इस प्रकार अगले दिन की तिथि निश्चित हो गई और मैजिस्ट्रेट ने कह दिया कि वह अगले दिन से मुकदमा सुनेगा।

रामरक्खामल्ल ने वहीं, अगले दिन की पेशी के लिए भी, वकील साहब को उनकी फीस दे दी और स्वयं होटल जा पहुँचा। वहाँ उसने देखा कि उसके कमरे के बाहर कई व्यक्ति खड़े हैं। दरवाजा खुला था और ताला टूटा हुआ था। ताला कुंडे के साथ लटक रहा था।

होटल का मैनेजर भी वहीं खड़ा था। रामरक्खामल्ल ने उससे पूछा, "क्या बात है?"

"पुलिस ने छापा मारा है।"

"क्या मतलब?"

"आपके जाने के पाँच मिनट बाद एक दर्जन सशस्त्र पुलिस आई और मुझसे बोली कि तलाशी का वारण्ट है।

"मैंने बताया कि आप यहाँ नहीं हैं। परन्तु पुलिस ने इसकी परवाह नहीं की। वे लोग सीधे आपके कमरे पर आए और ताला तोड़ तलाशी लेने लगे। आपका सन्दूक भी तोड़ डाला। आपके सब कपड़े और उनकी जेबें देखते रहे और फिर निराशा में सिर हिलाते हुए चले गए।"

"कुछ ले गए हैं?"

"नहीं।"

"कुछ रिपोर्ट लिखी है?"

"नहीं।"

"किसी को तलाशी का साक्षी बनने के लिए कहा है?"

"नहीं।"

"उनके साथ कोई सफेद–पोश भी था?"

"एक मुंशी साथ था, शेष सब पुलिस की वर्दी में ही थे।"

"आप किसी को जानते हैं?"

"सुपरिन्टेंडेंट को जानता हूँ।"

"इस बात की सत्य–सत्य गवाही दे सकेंगे आप?"

"हाँ।" दृढ़ स्वर में मैनेजर ने कहा।

रामरक्खामल्ल ने कहा, "एक आदमी को दरवाजे के पास बैठा दीजिए और उसको कह दीजिए कि बिना मेरी स्वीकृति के वह किसी को भीतर न जाने दे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी का प्रबन्ध हो जाने पर रामरक्खामल्ल थाने में रिपोर्ट लिखवाने के लिए गया, किन्तु उसकी रिपोर्ट नहीं लिखी गई। साथ ही उसको धमकाया गया कि उसको भी हिरासत में ले लिया जावेगा। वह अपने वकील के पास गया तो उसने राय दी कि प्रेजिडैंसी मैजिस्ट्रेट के पास एक आवेदन भेज दे। उसमें लिख दे कि उसके एक हजार रुपये की चोरी हो गई है और इसकी रिपोर्ट नहीं लिखी जाती। वकील का कथन था कि इसको राजनीतिक रंग न दिया जाय, तो ठीक होगा।

अगले दिन देसाई को जमानत पर छोड़ दिया गया। परन्तु रामरक्खामल्ल का मुकदमा अभी चल रहा था। प्रैजिडैंसी मैजिस्ट्रेट ने उसको कहकर प्रार्थना–पत्र वापस लेने के लिए तैयार कर लिया और इसके प्रतिकार में देसाई पर लगाया गया मुकदमा वापस ले लिया गया।

कलकत्ते में देसाई मेट्रोपोलिटन होटल में ठहरा था। वहीं से उसको पकड़ा गया था। उसका सामान अभी वहीं रखा था। छूटने के बाद पहली बात जो दैसाई ने सूद से की, वह निर्मलचन्द्र के विषय में थी। उसने कहा, ''निर्मलचन्द्र को आपने पाँच सौ रुपया न देकर उस लड़की की हत्या करा दी है।''

''वह किस प्रकार?''

''भाई आपसे निराश हो जब घर पहुँचा तो उसकी बहिन ने उसका उदास मुख देख लिया। उसने जब बहुत आग्रह कर पूछा तो भाई ने अपने मन की अवस्था का वर्णन कर दिया। बहिन ने पिस्तौल खरीदने के लिए अपना मंगल सूत्र दे दिया। भाई पिस्तौल तथा कारतूस ले आया और अपने तकिये के नीचे छिपा कर सो गया। वह पिस्तौल बहिन ने चुरा ली और उसी दिन जब निर्मलचन्द्र पिस्तौल ढूँढ़ रहा था, बहिन ने प्रोफेसर का काम तमाम कर दिया।

''निर्मलचन्द्र को यह समाचार जब उसके साथियों ने आकर दिया तो वह घर से फरार हो गया है।''

''परन्तु देसाई जी महाराज! ऐसा प्रतीत होता है कि आपको उन लोगों की बहुत–सी बातें मालूम हैं।''

देसाई हँस पड़ा। उसने कहा, ''जो कुछ हम कचहरी में अथवा अपने मित्रों या वकील को कहते हैं, वह सबसे भिन्न होता है, जो हम वास्तव में जानते हैं।''

''हमसे आपका अभिप्राय क्रान्तिकारियों से है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देसाई फिर हँस पड़ा। उसने कहा, "कितनी साधारण बुद्धि के व्यक्ति को रुक्मिणी ने यहाँ भेजा है!"

रामरक्खामल्ल ने हँसते हुए कहा, "अब बम्बई कब चलेंगे?"

"मैं बम्बई नहीं जा रहा। आप चले जाइए। मैं हरिद्वार जा रहा हूँ। रुक्मिणी से कहिएगा कि मेरे नियत पते पर हरिद्वार में मेरे लिए दस हजार रुपया भेज दें।"

रामरक्खामल्ल समझ गया कि कहीं कोई ऐक्शन होने वाला है। उस ने कहा, "समाचार–पत्रों में छपा था कि आप 'हिन्दू धर्म संघ' के सदस्य हैं?"

"हिन्दू धर्म संघ तो अब है नहीं। किन्तु इसका भय अभी भी ऐंग्लो–इंडियन समाचार–पत्रों के मस्तिष्क में विद्यमान है।"

"मैं एक बात पूछ सकता हूँ क्या?"

"हाँ, पूछिए।"

"इस प्रकार इतने बड़े देश में एक दो वर्ष में केवल एक अंग्रेज को मार डालने से क्या लाभ उठाने वाले हैं आप लोग?"

इस पर देसाई गम्भीर हो गया। उसने कहा, "मैं नहीं जानता कि इस बात को पूछने में आपका क्या प्रयोजन है। इस पर भी मैं अब यह बात अपनी पत्नी तक पहुँचाना चाहता हूँ। सो आपको बताता हूँ।

"मैं श्याम जी कृष्ण वर्मा का शिष्य हूँ। इस विषय में उनकी बात मानता हूँ। उनकी बात ही बताता हूँ। विलायत जाने से पूर्व मेरी उनसे बातचीत हुई थी। उनका कहना था कि हमारे भारत जैसे विशाल देश को चार दिशाओं में कार्य करना चानिर। एक धार्मिक उत्थान का। हिन्दू धर्म को एक जीवित जाग्रत शक्ति बना दो। श्री अरविन्द उनसे विलायत में मिले थे और जब वे भारत आए तो मैं प्रोफेसर साहब से बड़ौदा में मिला था। उनका कहना था कि मिस्टर वर्मा टेढ़ी बुद्धि का व्यक्ति है। वह इसी बीसवीं शताब्दी में हिन्दू उद्धार के विषय में कह रहा है। मैंने उनसे पूछा कि स्वामी विवेकानन्द के विषय में उनका क्या विचार है तो उसे उन्होंने एक वाग्जाल मात्र ही बताया था।

"यह सुनकर तो मैं सन्न रह गया। परन्तु मिस्टर सूद! आज वह पाण्डिचेरी में बैठा संस्कृत पढ़ रहा है और योगाभ्यास कर रहा है।"

रामरक्खामल्ल ने अपनी बात बताते हुए कहा, "मैं श्यामजी कृष्ण वर्मा के अतिरिक्त भी एक अन्य व्यक्ति को जानता हूँ, जिसके इसी प्रकार के विचार थे। वह थे स्वामी दयानन्द। उनके वचार में भी था कि देश में आर्य जाति का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगठन होना चाहिए। देश का अपना राज्य होना चाहिए और राजाओं–महाराजाओं को इसकी प्राप्ति में सहयोग देना चाहिए।''

''आप स्वामीजी से मिले हैं?''

''हाँ, कई बार। इस विषय पर बातचीत भी हुई थी। उस समय मैं साधु था।''

''वैरागी थे?''

''हाँ।''

''स्वामी दयानन्द श्याम जी से मिले थे। स्वामीजी की विद्वत्ता और व्यक्तित्व बहुत ऊँचा था। इस कारण स्वामी जी के सम्मुख वे कुछ कह नहीं सके। उनका कहना था कि जब–जब भी वे स्वामी जी के सामने पहुँचे उनके व्यक्तित्व के जादू के सम्मुख उनके मुख से बात नहीं निकली और उसके वेद तथा शास्त्रों के प्रमाणों के सम्मुख उनकी जबान बन्द हो जाती थी। परन्तु उनकी कई बातों से वे सहमत नहीं थे। उदाहरण के रूप में वर्मा जी हिन्दू संगठन चाहते थे और स्वामी जी आर्य संगठन। वर्माजी का कहना था कि हिन्दू से आर्य बनाने और फिर आर्य संगठन बनाने में बहुत समय लग जाएगा और तब तक देश का स्वराज्य प्रतीक्षा नहीं कर सकता।

''इसी प्रकार वर्मा जी का कहना था कि ये राजा–महाराजा अब नपुंसक हो गए हैं। इनसे कुछ भी आशा नहीं की जा सकती।

''तिलकजी महाराज से उनका कहना था कि हिन्दू धर्म का उत्थान होना चाहिए। यह कार्य उन दलों को अपने हाथ में लेना चाहिए जो विधानान्तर्गत आन्दोलन चलाना चाहते हैं। वे स्वयं क्रान्तिकारी दल के निर्माण में लगे हुए हैं। उनका विचार है कि ये दल छोटे–छोटे पृथक्–पृथक् होने चाहिए। यह सम्भव नहीं कि इस प्रकार मार–काट करने वाले दल बहुत बड़े–बड़े हों। और फिर ये कुछ अधिक काल तक स्थिर रह सकें। उनका विचार है कि देश में ऐसे दलों की संख्या कई सौ होनी चाहिए। एक समय आवेगा, जब कोई शान्तिपूर्वक कार्य करने वाला दल देश को क्रान्ति के योग्य हो गया समझ, इन सब दलों का नेतृत्व करेगा। परन्तु ऐसा करने के लिए वह दल सर्वमान्य और स्वयं क्रान्तिकारी होना चाहिए।''

रामरक्खामल्ल देख रहा था कि देसाई प्रौढ़ावस्था का व्यक्ति होने पर भी उग्र विचार रखता है और अपनी जान हथेली पर लिए हुए घूम रहा है। उसे विचारमग्न देख देसाई ने कहा, ''कुछ लोग इस देश में ऐसे भी रहने चाहिए, जो अपनी पराजय होने के समय इस विदेशीय राज्य से सुलह करा सकें।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: 2 :

जब तक रामरक्खामल्ल कलकत्ते से लौटा, विष्णुनारायण आदि लाहौर लौट जाने की तैयारी कर चुके थे। लाहौर में प्लेग का प्रकोप कम हो गया था और ये जाने की योजना बना रहे थे। यह निश्चय हो रहा था कि विष्णुनारायण और जवाहरलाल पहले जाएँगे। मकान की शुद्धि कराएँगे। फिर परिवार के अन्य लोग जाएँगे।

रुक्मिणी यह आशा कर रही थी कि उसका पति कम से कम कुछ दिन के लिए बम्बई अवश्य आएगा। उसको रामरक्खामल्ल के अकेले लौटने पर भारी निराशा हुई रामरक्खामल्ल ने उसके मुख पर अंकित इन भावों को देखा तो पूछ लिया, "बेटा रुक्मिणी! देसाई जी से मिलने के लिए बहुत मन करता है?"

"मैं चाहती थी कि वे कुछ दिन यहाँ आकर आराम कर लेते तो उनका स्वास्थ्य ठीक हो जाता।"

"बेटा! वे तो ऐसे पथ पर चल रहे हैं कि किसी भी समय उनका जीवन समाप्त हो सकता है।"

"यह तो मैं जानती हूँ। इस पर भी जब तक वे जीवित हैं, उनके स्वास्थ्य की चिन्ता करनी पड़ती है।"

रुक्मिणी की आँखों में अश्रु भर आए थे। उसने आँखें पोंछते हुए कहा, "मेरा विवाह होने के बाद ही वे मुझे इस अवसर के लिए तैयार कर रहे थे। मेरा विवाह 1896 में हुआ था। तब से ही उन्होंने धर्म और राजनीति की मुझे शिक्षा देनी आरम्भ कर दी। 1902 से वे कारोबार मेरे हाथों में देने का विचार करने लगे थे। उन्होंने 1904 में कम्पनी बना दी और मुझे उसका मैनेजिंग डायरेक्टर बना दिया।

"एक दिन मैंने उनके कार्य पर सन्देह व्यक्त किया था। इस पर वे कहने लगे, 'रुक्मिणी, धर्म क्या है? किसमें धर्म विराजमान है? और पाप–पुण्य क्या है? यह मैं जानता नहीं। मैं इस पर विवाद भी नहीं कर सकता। इस पर भी मैं गीता के इस कथन पर विश्वास करता हूँ–

'कर्मण्येवाधिकारस्ते माँ फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।
अनाश्रितः कर्मफलं कार्यं कर्म करोति यः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्न चाक्रियः।।'

"इसके बाद मैं भी अपने कर्म में लीन हो गई। पिछले तीन वर्ष में मैंने बीस लाख रुपया लाभ का प्राप्त किया है और उसमें से दस लाख के लगभग तो उनके द्वारा ही वितरण किया है। उसी दान–दक्षिणा के धन से यह कला–भवन भी बन रहा है।"

रामरक्खामल्ल के आ जाने से विष्णुनारायण का लाहौर जाना रुक गया। रामरक्खामल्ल स्वयं जवाहरलाल के साथ लाहौर के लिए चल पड़ा। उसका विचार था कि परिवार का अभी लाहौर जाना भय रहित नहीं है।

जवाहरलाल की परीक्षा का परिणाम घोषित हो चुका था और गवर्नमेंट मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल की सिफारिश पर पंजाब सरकार ने तीन सौ पौंड वार्षिक छात्रवृत्ति उसको इंग्लैंड अथवा जर्मनी में जाकर अपनी शिक्षा को और आगे ग्रहण करने के लिए देने की घोषणा कर दी थी। इसके लिए जवाहरलाल पूछताछ करने लाहौर जाना चाहता था। रामरक्खामल्ल जब बम्बई पहुँचा तो जवाहरलाल ने छात्रवृत्ति स्वीकार कर विदेश जाने के विषय में पूछ लिया, "भापा! क्या विचार है आपका?"

"तुम्हारी माँ क्या कहती है?"

जवाहरलाल ने मुस्कराते हुए कहा, "वह चाहती है कि मैं जाऊँ।"

"तो ठीक है, जाओ।"

"मैं नहीं जानता कि तीन सौ पौंड में निर्वाह हो सकेगा कि नहीं।"

"कुछ सहायता तो घर से भी दी ही जा सकती है।"

"मैं इसी कार्य के लिए लाहौर जा रहा हूँ।"

जब पिता–पुत्र लाहौर पहुँचे तो इन्होंने अनारकली बाजार में एक बैठक पर जाकर डेरा लगाया। यह मकान साधना के पिता ने खरीदा था और वह परिवार–सहित उसमें रह रहा था। इनके लिए एक कमरा खाली कर दिया गया।

एक दिन आराम करने के बाद, अपने मकान को सफाई के लिए रामरक्खामल्ल म्युनिसिपिल कमेटी के स्वास्थ्य विभाग में जा पहुँचा। जवाहर लाल अपने प्रिंसिपल से मिलने के लिए चला गया।

रामरक्खामल्ल अगले दिन कमेटी के दफ्तर से अपने मकान और आस–पड़ोस के अन्य मकानों की शुद्धि का प्रबन्ध करके वापस आ रहा था तो उसको एक हलवाई की दुकान पर कुछ खरीदता हुआ विट्ठल भाई देसाई दिखाई दे गया। वह उसके पीछे दुकान पर जा खड़ा हुआ। जब खरीद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो चुकी तो रामरक्खामल्ल ने पूछ लिया, "क्या यह सब अपने लिए ही है?"

देसाई ने घूमकर देखा तो हँस पड़ा। फिर कहने लगा, "मुझे क्या आपने बैल समझ लिया है। आइए, आपको भी निमन्त्रण है।"

देसाई ने मिठाई ताँगे में रखवाई और रामरक्खामल्ल भी देसाई के साथ ताँगे में बैठ गया। देसाई ने उससे पूछा, "यहाँ क्या कर रहे हैं आप?"

"कुछ नहीं...।"

"रुक्मिणी कैसी है?"

"ठीक है। वह समझती थी कि मुकदमे के बाद आप वहाँ आयेंगे और कुछ दिन आराम करेंगे।"

"आराम–वाराम कुछ नहीं। केवल इतना ही है कि एक स्त्री पुरुष को आमंत्रित कर रही है। शेष तो उस पर सभ्यता का मुलम्मा है।"

रामरक्खामल्ल ने बात बदलते हुए पूछा, "रुपया मिल गया क्या?"

"हाँ मिल गया है।"

ताँगा लेकर ये लोग चंघर मोहल्ले में आर्यसमाज मन्दिर के साथ की एक गली में जा पहुँचे। रामरक्खामल्ल ने देखा कि पचास के लगभग व्यक्ति उस मकान की मंजिल में बैठे हलवा–पूरी खा रहे हैं। उन्हें देख रामरक्खामल्ल ने पूछा, "किसी की बारात आई है क्या?"

"हाँ, पंजाब के लैफ्टिनेंट गवर्नर की। आओ, ऊपर आ जाओ।"

ऊपर कुछ सिक्ख और अन्य व्यक्ति बैठे थे। कुछ स्वयं–सेवक उनको भोजन करा रहे थे। देसाई अपने साथ लाया हुआ सामान स्वयं–सेवकों को सौंप, स्वयं रामरक्खामल्ल को लेकर एक अन्य कमरे में आ गया। वहाँ एक आदमी बैठा था। देसाई ने उसे सम्बोधित करते हुए कहा, "मेहता जी! यह देखिए, एक भद्र पुरुष से आपका परिचय कराऊँ।"

मेहता हँस पड़ा। उसने कहा, "लाहौर में इनको कौन नहीं जानता?" फिर उसने रामरक्खामल्ल से कहा, "सुनाइए लालाजी, कहाँ थे इतने दिन तक?"

"प्लेग से डरकर भाग गया था। तीन मास से बम्बई में पड़ा था। अब वापस आने की सोच रहा हूँ।"

"बाल–बच्चे कैसे हैं?"

"सब ठीक हैं?"

मेहता ने तो और कुछ बात की नहीं। वह उठकर बाहर, जहाँ कुछ लोग खा–पी रहे थे, चला गया। देशाई ने पूछा, "कहाँ ठहरे हैं?"

"अभी तो अनारकली बाजार में एक सम्बन्धी के पास ठहरा हूँ। कल तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मकान की सफाई का प्रबन्ध होगा। फिर बम्बई लिख दूँगा और परिवार के शेष सदस्य भी लाहौर आ जायेंगे।''

''हमारा आज यहाँ झगड़ा कराने का विचार है।''

''क्या?''

''लायलपुर के इलाके के लगभग दो हजार जाट आए हैं। वे दो बजे जुलूस निकालकर यहाँ से लैफ्टिनेंट की कोठी पर एक ज्ञापन देने के लिए जायेंगे। वह ज्ञापन छपवाकर पहले ही गवर्नर के पास भेज दिया गया है।''

''तो इस जुलूस से क्या लाभ होगा?''

''सम्भव है कि गवर्नर मिलने की स्वीकृति न दे। इससे लोग जबरदस्ती उसकी कोठी में घुसने का यत्न करेंगे और झगड़ा हो जाएगा। कुछ कोठी के सिपाही मरेंगे और कुछ ये जाट मरेंगे और सम्भव है लाहौर में विप्लव हो जाए।''

रामरक्खामल्ल की समझ में यह तो आ गया कि कुछ गड़बड़ होने वाली है, परन्तु उसे विप्लव की आशा नहीं थी। क्योंकि पिछले दो दिन में आज के इस प्रदर्शन की वह चर्चा भी नहीं सुन पाया था। वह म्युनिसिपल कमेटी के कार्यालय तक गया था। मार्ग में तथा कमेटी में सभी लोग यथापूर्व अपना–अपना कार्य कर रहे थे।

इस पर भी उसने इस विषय में कुछ नहीं कहा। इधर–उधर की बातें उनमें होती रहीं। रामरक्खामल्ल ने जाने से पूर्व पूछा, ''कौन–कौन इस जुलूस का नेतृत्व करेंगे?''

''यही मेहताजी और इनके साथ एक कवि हैं उफकजी। शेष लोग पीछे रहेंगे। वे यत्न करेंगे कि नगर में किसी स्थान पर सायंकाल जलसा करें और विस्फोटक परिस्थिति उत्पन्न हो जाये, जिससे वे लाभ उठाने का यत्न करें।''

''आप समझते हैं कि इससे स्वराज्य स्थापित हो जावेगा?''

''नहीं मिस्टर सूद! हम तो लोगों को क्रान्ति का अभ्यास करा रहे हैं।''

''यह हिन्दुस्तान में पहली प्रकार का अभ्यास है। इससे पहले सन् 1857 का गदर हुआ था। बीच में सन् 1883 में दक्षिण में दंगे–फसाद हुए तो सेना के एक क्लर्क वासुदेव बलवन्त फड़के ने सेना में विद्रोह खड़ा कर दिया। यह विद्रोह भी सफल नहीं हुआ। परन्तु दोनों विद्रोह सेना की ओर से थे। 1857 का विद्रोह तो असंतुष्ट राजाओं–महाराजाओं द्वारा संचालित था। 1883 का एक क्लर्क द्वारा। आज हम इसका अभ्यास जनता को करा रहे हैं, जनता के नेताओं की प्रेरणा से। ऐसा विद्रोह पहले कभी नहीं हुआ।'' आदर्शवादी देसाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
युक्ति और आशावाद के घोड़े पर सवार हो इस प्रकार की बातें कर रहा था।

रामरक्खामल्ल ने उसको निराश करने का यत्न नहीं किया। उसने कहा, "आप कहाँ ठहरे हैं?"

"मैं तो आज ही हरिद्वार से आया हूँ। मेहताजी के घर पर गया था। यहाँ से उधर भेज दिया गया हूँ। मैं सायंकाल तक इसी मकान में रहूँगा। यदि कुछ तमाशा देखने को मिला तो ठहर जाऊँगा और उसमें अपना योगदान करूँगा। अन्यथा सायंकाल की गाड़ी से वापस हरिद्वार चला जाऊँगा।"

"क्या योगदान दे सकेंगे आप?"

"एकाध गोरे की हत्या तो कर ही दूँगा।"

रामरक्खामल्ल के कँपकँपी उठ गई। देसाई ने उसकी स्थिति को भाँपते हुए कहा,

"य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते।"

रामरक्खामल्ल समझ गया कि यहाँ युक्ति करने के लिए स्थान नहीं है। यह तो भावना का प्रश्न हो गया है। अतः जाने से पूर्व उसने कहा, "जहाँ आप मिठाई ले रहे थे, वह अनारकली के मशहूर हलवाई लाला श्यामनाथ की दुकान है। उस दुकान के साथ ही सीढ़ियाँ हैं। यदि कभी किसी समय आवश्यकता पड़े तो वहाँ चले आइएगा। पूर्ण यत्न से सेवा करूँगा।"

यह कह रामरक्खामल्ल चला गया। देसाई की बातें सुनकर उसमें पुनः वह जोश आने लगा था, जो सेना में भर्ती होते समय उसमें आया था। वह भी उत्सुकता से क्रान्तिकारियों के इस नये प्रयोग की प्रतीक्षा करने लगा।

ठीक दो बजे वह अपने मकान से उतर नीले गुम्बद के चौक में जा पहुँचा। सिक्ख और अन्य जाट कंधों पर लाठियाँ लिए चालीस–पचास की टोलियों में, भिन्न–भिन्न मार्गों से वहाँ आ रहे थे।

इस प्रकार नीले गुम्बद के चौक में वे लोग एकत्रित हो रहे थे। एक भव्य दृश्य दिखाई देने लगा था। दो सहस्र से अधिक व्यक्ति सवा छः फुट की लाठियाँ लिए, पाँच–पाँच की पंक्तियों में खड़े होते जाते थे।

एक बार इतिहास के प्रोफेसर भाई परमानन्द ने आर्यसमाज मंदिर में फ्रांस की 1793 की क्रान्ति का विवरण सुनाया था। उस क्रान्ति की भयानक रूप–रेखा दिखाकर भाई जी ने दो निष्कर्ष निकाले थे। एक तो यह कि वह क्रान्ति राज्य–परिवार का विनाश करने में सफल हो गई थी। अंग्रेजों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
नेपोलियन के बाद 'बोरबोर्न' परिवार को पुनः राजगद्दी दिलवाई थी। परन्तु वह परिवार पुनः अपनी शानोशौकत को प्राप्त नहीं कर सका और शीघ्र ही नेपोलियन के एक लड़के को लोगों ने अपना सम्राट बना लिया।

भाई जी का दूसरा निष्कर्ष यह था कि हिन्दुस्तान में वैसी क्रान्ति सम्भव नहीं। उस क्रान्ति में सेना जनता की सहायता के लिए निकल आई थी। जनता और सैनिकों में रिश्तेदारियाँ थीं। वे जनता के भाई–बान्धवों में से थे। यहाँ भारत में जाति–पाँति की प्रथा इतनी प्रबल है कि जनता और सेना का सम्बन्ध ढीला पड़ जाता है। लाहौर में डोगरों और पूर्वियों की सेना जनता को कुचल डालेगी क्योंकि उनका कोई सजातीय यहाँ नहीं है। बंगाल में सिक्ख सैनिकों को भेजकर क्रान्ति आन्दोलन को शान्त किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त मुसलमानों को हिन्दू दबायेंगे और हिन्दुओं को मुसलमान।

रामरक्खामल्ल को भाई जी का यह विश्लेषण स्मरण था और वह देख रहा था कि जुल्म में यह सब हिन्दू तथा सिक्ख हैं और पुलिस में सब मुसलमान। इस अवस्था को देख वह इस सबसे कुछ वैसे परिणाम की आशा नहीं करता जो देसाई ने प्रकट की थी।

जुलूस को तैयार होता छोड़ रामरक्खामल्ल 'माल' को चल पड़ा। लाट साहब की कोठी को जाने का वही मार्ग था। वह सड़क के दाहिने फुटपाथ पर चल रहा था। उस समय उसकी दृष्टि देसाई पर, जो सड़क के बाएँ किनारे पर चल रहा था, जा पड़ी। माल पर कोई पुलिस का सिपाही अथवा सैनिक नहीं था। रामरक्खामल्ल ने ऐसा प्रगट किया मानो उसने देसाई को देखा नहीं। देसाई ने देखा था। परन्तु उसने भी जान–बूझ कर उससे मिलना उचित नहीं समझा।

ये दोनों चलते–चलते लाट साहब की कोठी के बाहर जा पहुँचे। उन्होंने देखा कि कोठी के बाहर बन्दूकधारी पुलिस के सिपाही तैनात हैं और कोठी के एक ऊँचे स्थान पर दो तोपें रखी हैं जिनके पीछे गोरे तोपची खड़े हैं। इस प्रकार भयंकर हत्याकांड का प्रबन्ध देख रामरक्खामल्ल को रोमांच हो आया। रामरक्खामल्ल को कोठी के सामने खड़ा नहीं होने दिया गया। उससे एक सिपाही ने पूछ लिया, "किधर जाना है लाला?"

"नहर के पार कोठी में काम है।"

"तो जल्दी निकल जाओ, यहाँ ठहरना खतरे से खाली नहीं है।"

रामरक्खामल्ल वहाँ से हट कोठी के द्वार से लगभग दो सौ गज की दूरी पर जाकर खड़ा हो गया। इस समय देसाई उसकी दृष्टि से ओझल हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
वह सड़क के उस ओर था, जिधर कोठी थी। कदाचित् उसे कोठी के समीप पहुँचने ही नहीं दिया गया हो।

यहाँ पहुँच कर रामरक्खामल्ल को स्पष्ट दिखाई दिया कि तोपें गड़ी हैं। उसको वहाँ खड़े हुए अभी पन्द्रह मिनट ही हुए होंगे कि जाटों का जुलूस आता दिखाई दिया। रह–रह कर 'भारत माता की जय' के नारे लग रहे थे। जुलूस के पिछले सिरे पर लोग गाते सुनाई दिए। रामरक्खामल्ल ध्यान से उनका गाना सुनने लगा। वे गा रहे थे–

पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा पगड़ी सम्भाल ओ।
लुटदी जांदी तेरी सारी कमाई, कमाई ओ।
अज्जे वी न सम्भलोगे ते होगे कंगाल ओ।
पगड़ी सम्भाल ओ....

रामरक्खामल्ल चाहता था कि देसाई को अपने पास ले आवे, परन्तु उसको वह दिखाई नहीं दिया। अतः जो देखा जा सकता था, अपने स्थान पर खड़ा वह देखता रहा।

जुलूस के आगे–आगे बन्द गले का कोट, पायजामा, देसी जूता और पगड़ी बाँधे कवि उफक चल रहा था। पुलिस सार्जेंट और उसके साथ गवर्नर का ए.डी.सी. आगे आ गए। पुलिस सार्जेन्ट ने उनसे कुछ कहा और तुरन्त पाँच आदमियों को, जिनमें एक कवि भी था, भीतर ले जाया गया। लोगों में कुछ बेचैनी हुई तो उनमें से एक ने हाथ खड़ा कर ऊँची आवाज में कहा, "लाट साहब ने हमसे बात करना मंजूर कर लिया है। हम पाँच मिनट में लौट आवेंगे।"

इस पर उस विशाल जन समूह ने 'भारत माता की जय' का गगन भेदी नारा लगा दिया।

: 3 :

आधे घंटे बाद वे लोग वापस आ गए। जिस व्यक्ति ने भीतर जाते समय घोषणा की थी, उसने ही अब दूसरे आदमी के कंधे पर चढ़कर कहा, "लाट साहब कहते हैं कि नहरी कानून में किया गया परिवर्तन रद्द कर दिया जावेगा। अब आप सब लोगों को सीधा वापस चला जाना चाहिए। यहाँ शहर में दफा 144 लगा दी गई है। इससे पाँच से अधिक आदमियों को इकट्ठा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलना मना है। इस कारण हमें शहर से बाहर–बाहर होकर स्टेशन पर जाना चाहिए। शहर में जावें तो तीन से अधिक इकट्ठे होकर न चलें।''

वह व्यक्ति जब यह घोषणा कर रहा था, उस समय रामरक्खामल्ल जाटों के समीप आ खड़ा हुआ था। अब पुलिस वालों ने लोगों को लाट साहब की कोठी की बगल से किला गूजरसिंह को जाने वाला रास्ता दिखाना आरम्भ कर दिया। अधिकांश जाट लोग पुलिस द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चले गए। जो माल पर वापस जाना चाहते थे, उनको तीन–तीन की मंडलियों में चलने के लिए कहा गया।

इस समय तक चार बज गए थे। देसाई कहीं दिखाई नहीं दिया। रामरक्खामल्ल भी लौट पड़ा। वह अकेला था। अतः उसको किसी ने नहीं रोका। जब वह हाईकोर्ट की इमारत के बाहर पहुँचा तो एक व्यक्ति ने जो सामने से चला आ रहा था, रामरक्खामल्ल को नमस्कार की और कहा, ''भापा! नीले गुम्मद की ओर मत जाना।''

''क्यों?''

''पुलिस लाठी चला रही है।''

''किन पर?''

''कॉलेज के विद्यार्थियों का जुलूस था। वह इधर को ही आ रहा था। पुलिस ने उसको रोका तो किसी ने थानेदार पर ईंट फेंक दी। थानेदार के कन्धे पर ईंट लगते ही उसने लाठी चलाने की आज्ञा दे दी। अनेक घायल हो गए हैं। लेकिन प्रतीत होता है कि कोई मरा नहीं है।''

''और तुम किधर जा रहे हो?''

''मैं तो जाटों का जुलूस देखने के लिए जा रहा था।''

''वह जुलूस तो समाप्त हो गया है और अधिकांश जाट वहीं से सीधे स्टेशन की ओर चले गए हैं।''

''कोई कह रहा था कि जाटों ने कोठी पर धावा बोल दिया है?''

''कौन था वह?''

''मैं जानता तो नहीं। सिर पर टोपी, सफेद धोती और सफेद कुरता पहने हुए था।''

रामरक्खामल्ल को यह हुलिया देसाई का ही प्रतीत हुआ। उसने पूछा, ''मूँछें मुडी हुई थीं क्या?''

''हाँ–हाँ! वही था।''

रामरक्खामल्ल भौचक्का हो देखता रह गया। इस पर भी उसने कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा नहीं और वह चलता गया। नीला गुम्बद का चौक सामने था। पुलिस के सिपाही काफी संख्या में खड़े थे, परन्तु जुलूस इत्यादि कुछ नहीं था। रामरक्खामल्ल ने एक दुकानदार से पूछा, ''यहाँ पुलिस क्यों खड़ी है।''

उस दुकानदार ने रामरक्खामल्ल के मुख पर देखा तो वह पहचान गया और बोला, ''भापा! कुछ स्कूल–कॉलेज के लौंडे 'गोरी सरकार का सत्यानाश' के नारे लगाते हुए अनारकली बाजार से आए थे और ठंडी सड़क की ओर जा रहे थे। यहाँ पुलिस वालों ने रोक लिया तो बच्चे ईंटें फेंकने लगे। इस पर पुलिस ने लाठी चला दी। दस–बारह लड़के घायल हो गए हैं। शेष भाग गए हैं।''

''घायल कहा हैं?''

''एक कोई बम्बई वाला था। वह उनको चंदर मुहल्ले की ओर ले गया है। तीन तो बहुत बुरी तरह घायल हुए थे। वे चल भी नहीं सकते थे। उनको वह खाटों पर डलवा कर ले गया है।''

''कोई मुँछमुंडा था?''

''हाँ।''

''काली बंगलोरी कैप पहने हुए थे?''

''हाँ।''

रामरक्खामल्ल गम्भीर विचार में डूबा हुआ अनारकली बाजार की ओर चला गया। वह मन में विचार कर रहा था कि जो कुछ हुआ है, सब देसाई के करने से ही हुआ है। वह आशा कर रहा था कि सायंकाल से पूर्व वह पकड़ लिया जाएगा। वह मन में विचार करता था कि कदाचित् यहाँ भी उसे ही उसका मुकदमा लड़ना पड़ेगा।

जब वह धनीराम स्ट्रीट पर पहुँचा तो देसाई अपनी काली टोपी उतार पंजाबी ढंग के कपड़े पहने और पगड़ी बाँधे हुए एक अन्य जुलूस, जिसमें सौ, दो–सौ युवक थे, लिए हुए चला आ रहा था। रामरक्खामल्ल को देख उसने आँख से संकेत कर दिया। रामरक्खामल्ल समझ गया कि वह उस समय पहचाना जाना पसन्द नहीं करता। इससे वह एक ओर खड़ा हो गया। उसने जुलूस निकल जाने दिया। जब जुलूस उसके पास से गुजर रहा था, रामरक्खामल्ल ने एक युवक से पूछा, ''क्या बात है?''

''लाला लाजपतराय पकड़ लिए गए हैं।''

''क्यों?''

''पता नहीं क्यों?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और तुम कहाँ जा रहे हो?"

"एक–दो गोरों को मारने के लिए।"

रामरक्खामल्ल मुस्कराया और वह युवक दौड़कर जुलूस में सम्मिलित हो गया। जुलूस अभी बांस की मण्डी तक ही पहुँच पाया था कि 'भागो, भागो' का शोर सुनाई दिया। पुलिस पहुँच गई थी और उसने लाठी चार्ज कर दिया था। जब जुलूस वाले भागते हुए लाहौरी दरवाजे की ओर गए तो उनमें देसाई नहीं था। कुछ देर तक उसने देसाई की प्रतीक्षा की। वह जब नहीं लौटा तो रामरक्खामल्ल, यह अनुमान लगा कि वह घायल हो गया होगा, लौट पड़ा। पहिले पुलिस भागते जुलूस का लाठियों से पीछा करती हुई मिली। जब पुलिस निकल गई तो एक मरणासन्न, रक्त से लथपथ व्यक्ति खाट पर लाया जाता दिखाई दिया। उठाने वाले कह रहे थे–"गोरा राज्य, हाय, हाय! गोरा राज्य हाय–।" खाट के पीछे दस–बारह युवक थे। उनमें से कुछ स्वयं भी घायल थे।

रामरक्खामल्ल ने खाट के समीप जाकर देखा। घायल व्यक्ति देसाई ही था। वह जुलूम में सबसे आगे था और पुलिस की लाठियों का भरपूर वार उस पर हुआ था।

रामरक्खामल्ल ने देखा कि बुरी तरह घायल होने पर भी वह जीवित है। उसने उन युवकों से कहा, "ठहरो, इसकी मरहम–पट्टी होनी चाहिए।"

"क्यों?" एक युवक ने पूछा।

"इसलिए कि रक्त प्रवाह के कारण यह मर न जाए।"

मरने की बात सुन लड़कों के होश–हवास उड़ गए और खाट को वही छोड़ भागने लगे। रामरक्खामल्ल ने दो कुली बुलवाए और उनसे खाट उठवा पुनः नीले गुम्बद की ओर से कचहरी रोड और वहाँ से चंघर मुहल्ले की ओर घूम गया। वहाँ से आर्यसमाज मन्दिर के बराबर से निकल गणपतराय रोड से उस मकान पर जा पहुँचा, जहाँ वह स्वयं रहता था। ऐसा मालूम होता था कि कुछ दूर आकर युवकों ने पुनः नारे लगाए थे। इस पर दोबारा लाठी चार्ज किया गया था। रामरक्खामल्ल देसाई को उठवा कर अपने मकान पर ले आया और उसको अपने कमरे में लिटा दिया। इस समय तक जवाहरलाल अपने प्रिंसिपल से मिलकर आ गया था। जवाहरलाल ने एक अर्द्धचेतन घायल व्यक्ति को देखा तो पूछ लिया, "भापा! यह कौन है?"

"जवाहर! जल्दी बिस्तर लगा दो।"

बिस्तर लगाया गया। जवाहर भागा हुआ गया और दवाइयाँ तथा पट्टियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
मोल ले आया। फिर वह देसाई के घाव साफ करने लगा और दवाई लगा पट्टी बाँधते हुए उसने कहा, ''इसको तुम क्यों ले आए हो भापा!''

जवाहरलाल जानता था जुलूस पर लाठी चार्ज हुआ है इस कारण वह स्वयं भी घबरा रहा था। इसी घबराहट में उसने उक्त प्रश्न पूछा था परन्तु रामरक्खामल्ल ने उसको उत्तर न देकर कहा, ''जरा इसकी नब्ज देखकर बताओ कि यह मरेगा तो नहीं?''

''यह होश में आ रहा है। इसको गरम दूध देना चाहिए।''

''तो जाओ, ऊपर से साधना की माँ से एक गिलास गरम दूध ले आओ।''

जवाहर ऊपर गया और दूध ले आया। जब देसाई को चम्मच से दूध पिलाया जा रहा था, तो नीचे गली में हल्ला सुनाई पड़ा। रामरक्खामल्ल ने कमरे की खिड़की में से बाजार में देखा तो पुलिस बाजार में चलते हुए लोगों पर लाठी बरसा रही थी। जब बाजार खाली हो गया तो हैड–कांस्टेबल ने शामू हलवाई की और सराय के सामने हमीद नानवाई की दुकान लूट लेने का हुक्म दे दिया। बस, इनके देखते–देखते दोनों दुकानें लुट गईं।

यह बहादुरी का काम कर पुलिस लाहौर दरवाजे की ओर चल पड़ी। कुछ अन्तर पर केसरी सोडावाटर वाले की दुकान थी। पुलिस वहाँ पहुँची तो दुकान के मालिक ने सबको बोतलें खोल–खोलकर पिलाने की आज्ञा दे दी। नौकर धड़ा–धड़ पुलिस वालों को बोतलें पिलाने लगा। मिठाई खा और सोडावाटर की बोतलें पी, पुलिस वाले वहीं कतारें बाँध वापस थाने को चल दिए।

वास्तव में वे नीले गुम्बद की चौकी के सिपाही थे। वे जुलूस को अपने इलाके में से भगा कर और उसका पुरस्कार पाकर लौट रहे थे। आगे का इलाका लाहौरी गेट वालों की चौकी का था। अतः वे अनारकली और सरक्युलर रोड पर खड़े हो गए। उनको आज्ञा थी कि वे न तो शहर के भीतर से किसी को अनारकली बाजार में जाने दें और न ही अनारकली बाजार से शहर की तरफ।

अनारकली बाजार के दुकानदारों ने दुकानें बन्द कर दी थीं और बाजार सुनसान हो गया था। शामू हलवाई, अपनी दुकान की सब मिठाइयाँ समाप्त हुई देख, दुकान बन्द कर, उसके बाहर रोनी सूरत बनाये बैठा था।

खिड़की में खड़े हो बाजार में हो रही लूट और दुकानदारों को भयभीत हो दुकानें बन्द करते देख रामरक्खामल्ल ने अपने लड़के को बताया, ''ये मिस्टर देसाई हैं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देसाई? रुक्मिणी के घर वाले?"

"हाँ।"

"इनको आप यहाँ क्यों लाए हैं?"

"क्यों, तुम्हें क्या आपत्ति है?"

"मैं अभी–अभी प्रिंसिपल साहब से मिलकर आया हूँ। उन्होंने कहा है कि उन्होंने अपनी सिफारिश से दो सौ पौंड वार्षिक से तीन सौ पौंड वार्षिक मेरी छात्रवृत्ति कराई है। उनका कहना है कि मुझे राजनीति से सर्वथा पृथक् रहना चाहिए। अगर मैं विलायत से पढ़ कर आऊँगा तो मुझे किसी जिले में सिविल सर्जन बना दिया जावेगा। तब बारह सौ रुपया वेतन सिलेगा। पन्द्रह रुपए फीस के मिला करेंगे और दौरे पर जाने पर फर्स्ट क्लास का भत्ता मिलेगा।"

"तो क्या हुआ?"

"भापा! कहीं पुलिस देसाई को पकड़ने के लिए चली आई तो मेरा भविष्य मलियामेट हो जावेगा।"

"तो जवाहर! तुम ऐसा करो। इसी समय इस घर से चले जाओ और किसी होटल में जाकर ठहर जाओ।"

"और आप?"

"मुझे तो सरकारी नौकरी करनी नहीं है। इस कारण मेरे मन में इस प्रकार का कोई भय भी नहीं है।"

जवाहरलाल के मन में आया कि वह चला जावे। उसके पिता की बात ठीक थी। वह चुप रहा और उठकर घायल के समीप आकर उसे पुनः दूध पिलाने लग गया। इस समय देसाई को होश आ गया। रामरक्खामल्ल की ओर देख उसे पहचान वह पूछने लगा, "मिस्टर सूद! मैं कहाँ हूँ?"

"मैं आपको अपने ठहरने के स्थान पर ले आया हूँ।"

इस समय सोमनाथ, यमुना और उसके बच्चे घायल के चारों ओर आकर खड़े हो गए। रामरक्खामल्ल ने सोमनाथ का सन्देह दूर करने के लिए कह दिया, "ये मेरे बम्बई के मित्र हैं। बाजार में चलते हुए पुलिस की लाठी के शिकार हो गए थे। मैंने देखा तो उठा लाया हूँ। एक–दो दिन में ठीक होने पर इनके बम्बई जाने की व्यवस्था कर दूँगा।"

सोमनाथ राजनीति को समझता नहीं था। इस कारण उसे रामरक्खामल्ल की बात पर सन्तोष हो गया। फिर घायल को अच्छी स्थिति में देख वे सब अपने कमरों में चले गए।

जवाहरलाल बाजार गया तो रामरक्खामल्ल ने समझा कि वह डर कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
भाग गया है और अगले दिन ही मिलेगा। जवाहरलाल जब मरहम–पट्टी का सामान लेने के लिए बाजार गया था तो यह समाचार सुन आया था कि लाला लाजपतराय, लालचन्द, फलक, भाई नन्दकिशोर और अनेकों 'भारत माता' सभा के सदस्य पकड़ लिए गए हैं। इससे उसने जब यह सुना कि यह घायल व्यक्ति देसाई है तो उसको, उसके कलकत्ता में, क्रान्तिकारी दल का सदस्य होने के अपराध में पकड़े जाने की बात स्मरण हो आई थी। इससे वह डर गया था। वह जानता था कि इस बार पुलिस को कुछ भी सन्देह हुआ तो वह उसको पकड़ने के लिए चली आवेगी और उसको घायल देख समझ लेगी कि अवश्य यह जुलूस निकालने वालों में है। इससे वह तो पकड़ा ही जावेगा, साथ ही उसके पिता और श्वसुर आदि भी संकट में पड़ जायेंगे। और यदि उस समय वह स्वयं वहाँ उपस्थित हुआ, तो उसे भी पकड़ लिया जावेगा। इससे उसके विलायत जाने, वहाँ से पास होकर वापस आने और फिर सिविल–सर्जनी पाने की आशाएँ सब मिट जावेंगी। इसी कारण उसने अपने पिता को अपनी स्थिति से अवगत करा दिया था। वह बाजार में गया और कुछ देर इधर–उधर घूमता हुआ अपने पिता की बात पर विचार करता रहा। आखिर उसने वापस घर लौट जाने का निश्चय कर लिया। उसको अपने पिता को संकटापन्न स्थिति में छोड़ स्वयं सुरक्षित स्थान के लिए चले जाना उचित प्रतीत नहीं हुआ।

उसने दिल को शक्ति प्रदान करने वाली औषधि खरीदी और दो घंटे भर घूम कर वापस आ गया। इस समय देसाई को शोरबा पिलाया जा रहा था। वह खाट पर बैठा था। रामरक्खामल्ल ने प्रश्न भरी दृष्टि से पुत्र की ओर देखा तो जवाहरलाल ने कहा, "मैं इनके लिए दवा लेने गया था। वह यहाँ मिली नहीं। इस कारण ई. प्लोमर की दुकान से लेकर आया हूँ।"

"मैंने तो समझा था कि तुम होटल में चले गए हो।"

जवाहरलाल मुस्करा कर चुप कर रहा। रामरक्खामल्ल ने दवा की एक खुराक सूप के बाद पिला दी।

: 4 :

देसाई सो गया तो जवाहरलाल वहीं भूमि पर लेट गया। उसकी चारपाई पर देसाई सोया हुआ था। रामरक्खामल्ल विचार कर रहा था कि जवाहरलाल को विश्वास हो गया है कि कोई डर नहीं है, इसी कारण वह लौट आया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मकान का क्या हुआ?" जवाहरलाल ने लेटे–लेटे ही पूछा।

"कल कमेटी के लोग सफाई करने के लिए आयेंगे। मुझे ठीक दस बजे वहाँ उपस्थित हो जाना चाहिए।"

"ठीक है, यहाँ इनके पास मैं बैठा रहूँगा।"

"मैं समझता हूँ कि कल तक ये ठीक हो जायेंगे और इनके पास बैठने की किसी को आवश्यकता नहीं रहेगी।"

"फिर भी एक व्यक्ति इनके पास रहना चाहिए।"

रामरक्खामल्ल उसको देसाई के विषय में इतना चिन्तित देख विस्मय करने लगा, परन्तु कोई कारण न समझ सकने पर वह चुप ही रहा।

अगले दिन देसाई को यह कह कि वह घर से बाहर न जावे और जवाहर को उसकी पट्टी बदलने तथा खाने के प्रबन्ध के लिए वहीं छोड़ रामरक्खामल्ल मकान की सफाई कराने के लिए चला गया।

मकान खोला गया और वहाँ खड़े हो पिचकारियों से मकान में कीटाणुनाशक तेल की फुहार छोड़ी गई। तदनन्तर मकान के एक कमरे में एक बड़ी–सी अँगीठी में आग सुलगा, उसमें एक औषधि द्रव्य डाल दिया गया। फिर सब खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द कर लोग बाहर निकल आए। इससे सारा घर धुएँ से भर गया।

कमेटी के कर्मचारियों ने कहा, "कल इस मकान को खोलेंगे और पूर्ण घर में सफेदी करेंगे। सब गन्दे कपड़े और अन्य वस्तुएँ उठाकर ले जाएँगे।"

मध्याह्नोत्तर रामरक्खामल्ल लौट आया। उस समय तक नगर भर में यह विख्यात हो गया था कि लाला लाजपतराय को पकड़कर किसी अज्ञात स्थान पर ले जाया गया है। राजस्थान में अकाल पीड़ितों के लिए कार्य करने के सम्बन्ध में लाला रामरक्खामल्ल का लाला लाजपतराय जी के घर आना–जाना था। अतः वह उनकी कोठी पर जा पहुँचा।

लालाजी के भाई और अन्य सम्बन्धी वहाँ आए हुए थे, परन्तु बाहर का कोई आदमी नहीं था। रामरक्खामल्ल को देख, लाला लाजपतराय जी की सुपुत्री, जो रामरक्खामल्ल को जानती थी, कोठी से निकल आई और बोली, "लालाजी! आज आप किस कार्य के लिए आए हैं?"

"यह जानने के लिए कि लालाजी को कहाँ ले जाया गया है।"

"उनको रेगुलेशन 1818 एक्ट के अधीन पकड़ा गया है। कहीं विदेश में ले जायेंगे। कहाँ? कहा नहीं जा सकता। गुरु रामसिंह को तो इस कानून के अधीन पकड़कर बर्मा ले गये थे। उससे पूर्व बहादुरशाह को भी वहीं ले जाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया था। मगर आपको तो आज यहाँ नहीं आना चाहिए था।''

''क्यों?''

''कोठी के चारों ओर खुफिया पुलिस के लोग बैठे हैं। यहाँ से जाने पर वे आपका पीछा करेंगे।''

''तुम चिन्ता नहीं करो बेटी। मुझे कोई पकड़ नहीं सकता।''

लड़की मुस्कराकर चुप हो गई। इस पर रामरक्खामल्ल ने पूछा, ''मैं आप लोगों की क्या सेवा कर सकता हूँ?''

''सब आपकी कृपा है। आप तुरन्त ही लौट जाइये। पुलिस आपको परेशान करेगी।''

रामरक्खामल्ल के मस्तिष्क में जवाहरलाल की छात्रवृद्धि का प्रश्न उठ रहा था। फिर मन में सोच कि किसी के किए से कुछ नहीं होगा, जो कुछ भाग्य में है, वह होकर रहता है, यदि जवाहरलाल को विलायत जाना है तो वह जाएगा ही, उसके कहने पर वह रुकेगा नहीं, वह शान्त–सा हो गया।

जब रामरक्खामल्ल वहाँ से अनारकली बाजार की ओर आ रहा था, उसको कुछ ऐसा भास हुआ कि दो व्यक्ति उसका पीछा कर रहे हैं। इससे वह सतर्क हो गया। रामरक्खामल्ल ने विचार किया कि इनको मजा चखाना चाहिए। इससे वह लालाजी की कोठी से अनारकली की ओर जाता रुक गया और रावी नदी की ओर चल पड़ा। वे लोग उसके पीछे ही थे। रामरक्खामल्ल किश्तियों के पुल की ओर चला गया। वहाँ पुल के समीप एक कुआँ था। उस कुएँ की जगत् पर जाकर वह बैठ गया। वे पीछा करने वाले भी उसके समीप आकर बैठ गए। वे बहुत परेशान प्रतीत होते थे। चार मील की पैदल यात्रा कर वे यहाँ पहुँच पाए थे। रामरक्खामल्ल ने जूता उतारा, कुएँ से पानी निकाला और हाथ–मुँह धो दुकानदार से गुड़ के सेब लेकर खाने लगा।

वे दोनों व्यक्ति उसकी ओर देख रहे थे। या तो उनकी जेब में कुछ नहीं था, अथवा वे कुछ खर्च करना ही नहीं चाहते थे। रामरक्खामल्ल के मन में आया कि उनको खाने का निमन्त्रण दे दे। फिर कुछ विचार कर उसने कुछ नहीं कहा। वह तो उनको मजा चखाने के लिए उस ओर लाया था। इस समय सूर्यास्त होने लगा था। अन्धेरा बढ़ने के साथ ही उनकी भी परेशानी बढ़ने लगी।

इस समय उनमें से एक व्यक्ति उसके पास आकर बैठ गया। रामरक्खामल्ल ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। उसने लालाजी को अपने ही ध्यान में मग्न देख पूछा, ''आप कहाँ रहते हैं?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कहिए, क्या काम है?"

"रात हो रही है और आपको घर जाने की चिन्ता नहीं है क्या?"

"मैं तो आज रात घर जाने वाला नहीं हूँ?"

"क्यों?"

"मैं आज रात बारह बजे से प्रातः पाँच तक चण्डी का जाप करने के लिए यहाँ आया हूँ।"

"वह क्या होता है?"

"रणचण्डी का नाम सुना है आपने?"

"नहीं।"

"तुम मुसलमान मालूम होते हो?"

"हाँ।"

"तो सुनो। हमारी एक देवी है। रणचण्डी उसका साथ नाम है। वह जब भी कोई विपदा आवे तो अपने भक्तों की सहायता करती है। मैं कल अपने एक शत्रु पर दावा दायर करने वाला हूँ। इसलिए आज रात मैं उस की पूजा करूँगा।"

"कहाँ बैठकर करोगे?"

"इस जंगल में, जहाँ कोई भी व्यक्ति आकर पूजा देखने का साहस न कर सके।"

"जंगल में तो साँप, बिच्छू और कीड़े–मकोड़े होते हैं।"

"चण्डी के भक्तों को वे कुछ नहीं कहते। वे तो उसके अस्त्र–शस्त्र होते हैं।"

वह आदमी उठकर अपने साथी के पास चला गया। कुछ देर तक वे आपस में बातें करते रहे। फिर उनमें से एक उठकर शहर की ओर चला गया। रामरक्खामल्ल समझ गया कि वह सहायता माँगने के लिए नगर की ओर गया है। उसके जाने के कुछ काल बाद रामरक्खामल्ल कुछ दूर तक चला गया। जंगल घना होता जाता था।

एक स्थान पर ठहर कर वह अपने पीछा करने वाले को देखने लगा। जब वह लौटता दिखाई दिया तो रामरक्खामल्ल ने नदी की ओर मुख कर दिया। उसको काँटे तो खूब चुभे और उसके कपड़े भी कई स्थानों पर फट गए, परन्तु वह नदी के किनारे पहुँचने में सफल हो गया। तदनन्तर वह लोहे के पुल की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँच रेल की पटरी–पटरी वह बादामी बाग स्टेशन पर जा पहुँचा। वहाँ से पम्पिंग स्टेशन के आगे से होता हुआ मस्ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरवाजे से शहर में प्रविष्ट हो गया और ग्यारह बजे तक अपने निवास–स्थान पर जा पहुँचा।

जवाहरलाल ने द्वार खोला और विस्मय में पूछने लगा, "भापा! कहाँ गए थे?"

"जहन्नुम में। मैं तो वहाँ से निकल आया हूँ, किन्तु यार लोगों को वहीं फँसा आया हूँ। देसाई जी की तबीयत कैसी है?"

"बहुत मजे में हैं। कल हरिद्वार लौट जाना चाहते हैं।"

"जागते हैं या सो रहे हैं?"

"खर्राटे भर रहे हैं।"

"तो तुम भी सो जाओ।"

"आप भोजन करेंगे क्या?"

"भूख तो खूब लगी है, परन्तु इस समय क्या मिलेगा?"

"बाजार में जाकर देखता हूँ। ऊपर तो सब सो गए हैं।"

जवाहरलाल बाजार चला गया और दस मिनट में लाहौरी दरवाजे से मिठाई और कुछ नमकीन लेकर आ गया।

यह तो अगले दिन ही विदित हुआ कि तीन दर्जन कांस्टेबल किसी फरार व्यक्ति को ढूँढ़ने के लिए रात–भर रावी के किनारे वाले जंगल में घूमते रहे हैं। यह समाचार 'हिन्दुस्तान' पत्र में प्रकाशित हुआ था। जब जवाहर यह समाचार देसाई को सुना रहा था, रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। इस पर वे दोनों उसका मुख देखने लगे। उसने कहा, "वह फरार व्यक्ति मैं हूँ। मैं इनको जंगल में ले जाकर, चकमा दे चला आया हूँ।"

इस पर जवाहरलाल ने कहा, "आज आप घर से मत निकलिए।"

"मैं कपड़े बदल कर निकल सकता हूँ। धोती–कुरते के स्थान पर सों वाली पोशाक पहन कर तो जा ही सकता हूँ। मुझे पगड़ी तो बाँधनी ही पड़ती है, नहीं तो फटे कान पहचाने जाते हैं।"

"पिताजी! आप घर के बाहर जाइये ही नहीं। मैं जाकर मकान की सफेदी करवा आता हूँ।"

देसाई अब लगभग स्वस्थ था। उसकी कनपटी पर अभी भी पट्टी बँधी हुई थी। शेष सब ठीक हो गया था। रामरक्खामल्ल ने कहा, "मिस्टर देसाई! मैं समझता हूँ कि इस झगड़े के बाद आपको अब बम्बई चला जाना चाहिए।"

"क्यों?"

"इसलिए कि जो काम आप कर रहे हैं वह आपका नहीं है। साथ ही मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह विचार है कि इसके लिए अभी उपयुक्त समय भी नहीं है।''

''कब आएगा इसके लिए समय?''

''जब जन–साधारण लड़ने–मरने के लिए तैयार हो जाएगा। जैसे आपने लड़कों को भड़का कर उनकी खोपड़ियाँ तुड़वा दीं, वैसे आप जन–साधारण को तैयार नहीं कर सकते। यदि उस समय अनारकली बाजार के लोग एकत्रित होकर पुलिस पर आक्रमण कर देते और फिर वहाँ की खबर सुन, नगर के लोग दुकानें बन्द कर सरकारी इमारतों पर धावा बाल देते, तो निस्सन्देह विद्रोह हो जाता। क्रान्तिकारी तो खेल को आरम्भ करने वाले होते हैं। जनता जब उनके उकसाने से लड़ने–मरने के लिए तैयार हो जाती है, तभी विप्लव हो सकते हैं।''

''मैं यह सोच रहा हूँ कि जनता इतनी निष्क्रिय क्यों है?''

''इसका मुख्य कारण मैं भारतवासियों में व्याप्त जीवन–मीमांसा को मानता हूँ। एक ओर 'अहिंसा परमो धर्म' की रट लगाने वाले हैं, दूसरी ओर 'संसार मिथ्या है' की धूनी रमाये हुए लोग हैं और तीसरी ओर वैष्णव हैं, जो यह समझते हैं कि इस कार्य के लिए भगवान् का ही अवतार होगा। एक साधारण व्यक्ति के यह मन की बात नहीं कि वह अंग्रेजों की महान सत्ता, जिस पर कभी सूर्यास्त नहीं होता, उखाड़ सके। अभी तो नगरों की मुख्य जनता में ही अनेक ऐसे हैं, जो आपकी बातों को नहीं जानते।

''मिस्टर देसाई। ऐसी अवस्था में आप यहाँ क्रान्ति नहीं ला सकते। भारत में क्रान्ति असम्भव है। वह तभी सम्भव होगी, जब महर्षि दयानन्द के कथनानुसार, सब एकमत अर्थात् आर्य मतावलम्बी हों।''

''यह तो सम्भव प्रतीत नहीं होता?''

''तो यहाँ क्रान्ति भी सम्भव नहीं। यहाँ राजनीतिक परिवर्तन होंगे। ये परिवर्तन उचित दिशा में होंगे अथवा विपरीत दिशा में, यह हमारे नेताओं पर निर्भर करता है।''

''अभी तक तो कांग्रेसी नेता,'' देसाई का कथन था, ''अंग्रेजी राज्य को भारतवर्ष के लिए ईश्वरीय देन ही मानते हैं।''

''इसका अर्थ यह है कि ये लोग देश की प्रगति को विपरीत दिशा में ले जा रहे हैं। परन्तु तिलकादि उग्र विचारवादी, अंग्रेजी राज्य से किसी प्रकार का लाभ नहीं समझते। वे इसको शीघ्रातिशीघ्र बदलने के लिए यत्नशील हैं। उनके उपायों को मैं ठीक मानता हूँ। उनके सिद्धान्तों की दिशा भी ठीक ही है। परन्तु वे भी उसी गड्ढे में गिर रहे हैं, जिसमें नरम दल वाले कांग्रेसी गिरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुए हैं। ये लोग भी अंग्रेजी और उसके माध्यम से दी जा रही शिक्षा द्वारा हिन्दुस्तान की मुक्ति सम्भव समझते हैं। तिलक और इनके साथी भी यूनिवर्सिटी शिक्षा को ठीक समझ, इस प्रसार में सहयोग दे रहे हैं। यही बात पंजाब में लाला लाजपतराय और उनके साथी अन्य आर्यसमाजी ठीक समझते हैं। स्वामी दयानन्द का तो यह मत था कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है और इन आर्य समाजी विद्यालयों द्वारा इतिहास में यह पढ़ाया जाता है कि वेदों में मानव के अविकसित मस्तिष्क की गाथाएँ हैं। एक ओर तो तिलक जी यह कहेंगे कि अंग्रेजी राज्य से देश उत्तरोत्तर निर्धन होता जा रहा है और दूसरी ओर वे ऐसे अंग्रेजी पढ़े–लिखों की एक पीढ़ी पैदा कर रहे है जो शताब्दियों तक अंग्रेजी राज्य के भारत में गुणानुवाद गाती रहेगी।

"मेरे कहने का अभिप्राय यह है कि इन तिलक तथा लालाजी जैसे नेताओं द्वारा देश को स्वराज्य तो मिल जाएगा। ये जनता को अपने पक्ष में कर रहे हैं, परन्तु जिनको जब स्वराज्य मिलेगा, वे तब तक स्वयं अंग्रेज हो चुके होंगे। तिलक जी महाराज का पूर्ण हिन्दू धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता का विचार, तिलक तथा आर्य समाज द्वारा खोले विद्यालयों के विद्यार्थियों से ही विनाश को प्राप्त होगा।"

"तो आपका आशय है कि इन शिक्षा संस्थाओं को खोलकर हम कोई उपकार का कार्य नहीं कर रहे?"

"उपकार यह है कि आप कुछ काले रंग के अंग्रेज, अहिन्दू, कदाचित् अभारतीय निर्माण कर रहे हैं?"

"तो क्या आप चाहते हैं कि हमारे लड़के ऊँची–ऊँची पदवियों पर न जावें?"

"ये पदवियाँ अंग्रेजी सरकार द्वारा मिल रही हैं न? अतः इन पदवियों पर पहुँचे हुए व्यक्ति अंग्रेजी सरकार के कृतज्ञ होंगे। अर्थात् तिलक, लाला लाजपतराय और इनके साथी अंग्रेजी सरकार के भक्त और कृतज्ञों की सृष्टि कर रहे हैं।

"मैं तो यह समझता हूँ कि ऐसे दुकानदार, किसान, मजदूर तथा स्वतन्त्रतापूर्वक जीविकोपार्जन करने वाले लोगों को कुछ शिक्षा दी जाती तो इन बड़ी–बड़ी पदवियों पर आरूढ़ दास निर्माण करने से कहीं अच्छा होता। ऐसे लोगों को न तो अंग्रेजी साहित्य पढ़ाने की आवश्यकता होती और न ही अर्थशास्त्र इत्यादि। ये जीवित–जाग्रत उग्र विचारों वाले भारतीय बन जाते।

"देखिए, देसाई जी! मैं संस्कृत और देवनागरी पढ़ा हुआ हूँ। कपड़े की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलाली कर जीविकोपार्जन करता हूँ। मैं कल लाला लाजपतराय की कोठी पर उनके परिवार वालों की खबर लेने के लिए गया था। मुझे अपनी कोई नौकरी छूटने का भय नहीं है। मुझे सरकारी अफसरों के रोष की भी चिन्ता नहीं है। आर्यसमाज के सदस्यों में से, जो लालाजी के मित्र हैं, वहाँ कोई नहीं गया। वे सब सरकारी पदवियों पर नियुक्त हैं अथवा उनमें से सरकारी पदवियाँ पाने वालों के निर्माता हैं।

''मेरा लड़का जवाहर, जो कल दिन भर आपकी सेवा में रहा है, उसने इसी वर्ष डाक्टरी की परीक्षा पास की है। उसको अब विलायत जाने के लिए छात्रवृत्ति मिली है और उसको आपके यहाँ लाए जाने पर भय लग गया था कि कहीं उसकी छात्रवृत्ति वापस न ले ली जाए।

''कल लालाजी की कोठी से आते समय पुलिस मेरे पीछे लग गई थी। मैं उनको भारी चकमा देकर चला आया हूँ और वे पिछली रात भर मुझे जंगल में ढूँढ़ते रहे हैं। यह मैं इसी कारण कर पाया हूँ और मैं किसी सरकारी पदवी पर नहीं हूँ और न होने की मुझे लालसा ही है।''

देसाई पुलिस की परेशानी का समाचार पढ़ चुका था। वह हँस पड़ा। फिर पूछने लगा, ''तो आप समझते हैं कि मैं गलत मार्ग पर चल रहा हूँ?''

''मैं यह समझा हूँ कि आप क्रान्तिकारी लोग गाड़ी को घोड़े के आगे जोत रहे है। सबसे प्रथम कार्य है, जनता के मन में देश को स्वतन्त्र करने की ज्योति जगमगाना। तब फिर दो–चार क्रान्तिकारी भी पूर्ण देश में आग लगा सकेंगे।

''वर्तमान अवस्था में तो यह हुआ है कि कल आपके क्रान्तिकारी साथी ही, जब उनको यह पता चला कि आप मर रहे हैं, आपको बाजार में छोड़कर भाग गए थे। आपको यहाँ लाने के लिए मुझे मजदूर करने पड़े थे।''

देसाई विस्मय में मुख देखता रह गया।

: 5 :

विट्ठल भाई देसाई को जब रामरक्खामल्ल कलकत्ता हवालात में मिला था, तो पहले उसने उसको गुप्तचर विभाग का प्रतिनिधि समझा था। उसने उसके सामने बहुत ही संयत भाषा में स्वयं को क्रान्तिकारियों से सर्वथा अलिप्त बताया था। फिर जब उसके कथनानुसार मिस्टर नौर्टन को वकील चुन लिया गया और उसके मुकदमे की ठीक ढंग से पैरवी होने लगी तो उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझा कि वह कोई अनपढ़ व्यक्ति है परन्तु है व्यावहारिकता में पर्याप्त निपुण। जब वह छूटकर उससे मिला तो उसको ऐसा प्रतीत हुआ कि इस व्यक्ति के कुछ अपने विचार भी हैं। पुनः लाहौर में मिलने पर वह न केवल विचारवान ही प्रतीत हुआ, प्रत्युत दृढ़ निष्ठावान, राष्ट्रवादी के रूप में उसे दिखाई देने लगा। आज देसाई यह समझ पाया कि रामरक्खामल्ल युक्ति और प्रमाण इस ढंग से दे सकता है कि उसके समक्ष बड़े–बड़े नेताओं के कार्य भूल प्रतीत होने लगे हैं।

वह अपने मन में विचार करता था कि उसने कितनी मर्म की बात कही है कि अंग्रेजी कॉलेजों की शिक्षा देनी, अंग्रेजी सरकार की नौकरियाँ पाने के लिए दासों का निर्माण करना है। और ये दास अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी सभ्यता और संस्कृति तथा साहित्य एवं कला और आचार–विचार के भक्त होंगे।

वह मन में विचार करता था कि कैसी विडम्बना है कि हम सब नेता और धनीमानी चाहते हैं कि अपने देश का उद्धार हो और कार्य ऐसा कर रहे हैं जिससे देश विदेशीय बनता जा रहा है।

देसाई रामरक्खामल्ल की बातों पर गम्भीरतापूर्वक मनन करता हुआ बैठा रहा। यह तो वह समझ गया था कि पंजाब में उसका और उसके साथियों का कार्य असफल रहा है।

उसी सायंकाल समाचार–पत्र में यह समाचार मिला कि 'भारत माता' सभा के फरार नेता सरदार अजीतसिंह अमृतसर में पकड़ लिए गए हैं और वे लाला लाजपतराय के साथ 1818 रेगुलेशन ऐक्ट के अधीन देश से निर्वासित कर बर्मा ले जाए जा रहे है।

आर्यसमाजी नेताओं से रामरक्खामल्ल एक और समाचार सुनकर आया था कि दयानन्द ऐंग्लोवैदिक कॉलेज के मुख्याध्यापक और आर्यसमाज के एक प्रमुख नेता को पंजाब के लाटसाहब इबर्टसन ने बुलाया था और वे नेता लाटसाहब के सम्मुख, इस भय से कि कहीं सरकार आर्यसमाज को बन्द करने की आज्ञा न दे दे, और दयानन्द कॉलेज पर अधिकार न कर ले, यह कह आया है कि लाला लाजपतराय आर्यसमाजी नहीं हैं। वे आर्यसमाज के सदस्य भी नहीं है। वे केवल सहानुभूति ही रखते हैं।

रामरक्खामल्ल को इस बात का विश्वास नहीं आया था, परन्तु जब उसने आर्यसमाज के सदस्यों की सूची का नया रजिस्टर बना हुआ देखा और उस नए रजिटर में लाला लाजपतराय का नाम नहीं देखा तो उसे अत्यन्त क्षोभ हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस विषय में जब देसाई ने पूछा कि लालाजी अब क्या कहते हैं, तो लाला रामरक्खामल्ल ने कह दिया, ''मेरा जीवन–कार्य तो आज से आरम्भ होता है। मैं समझता हूँ कि इस देश के निवासी घोर पतन की ओर जा रहे हैं।''

''क्या कार्य आरम्भ करना चाहते हैं आप?''

''तपस्या का। तपस्या कर मुझे अपने अन्दर एक महान् शक्ति का संचय करना है, जिससे मैं देश के कोटि–कोटि मानव का मार्ग–दर्शन कर सकूँ।''

''यही पूछ रहा हूँ कि तपस्या किस प्रकार करेंगे आप?''

''मेरी तपस्या का स्थान बम्बई होगा अथवा लाहौर, यह तो मैं बम्बई जाकर निर्णय करूँगा। उससे पूर्व समस्त परिवार वालों को लाहौर बुलाकर मैं उनको कारोबार में लगा देना चाहता हूँ।''

देसाई मुस्कराया और कहने लगा, ''बम्बई और लाहौर दोनों ही तपस्या के स्थान? विचित्र है! चलिए न मेरे साथ हरिद्वार। वह बहुत ही शान्तिप्रद स्थान है।''

रामरक्खामल्ल खिलखिलाकर हँस पड़ा। उसने केवल यह कहा, ''वहाँ की अशान्ति से विक्षुब्ध होकर ही तो, ये कान फड़वाने के बाद भी, साधु का बाना त्याग कर, कर्मभूमि में आया हूँ। मुझे महर्षि व्यास का युधिष्ठिर को उपदेश ठीक प्रतीत हुआ था। उन्होंने कहा था–

शास्त्रद्रष्टः परो धर्मः स्थितो गार्हस्थ्यमाश्रितः।।
स्वधर्मंचर धर्मज्ञ यथा शास्त्रं यथा विधि।
न हि गार्हस्थ्यमुत्सृज्य तवारण्यं विधीयते।।
गृहस्थं हि सदा देवाः पितरोऽतिथयस्तथा।
भृत्याश्चैवोपजीवन्ति तान् भरस्व महीपते।।

''अतः मैं विवाह कर गृहस्थ में आ गया। इतने वर्ष तक संसार की गतिविधि समझता रहा। अब कर्म करने का अवसर दिखाई देने लगा है।''

''लालाजी! क्या कहा है आपने इस संस्कृत में?''

''यही कि संसार के सब धर्म–कर्म गृहस्थियों के आश्रय ही चलते हैं। व्यास कहते हैं, 'हे युधिष्ठिर! तुम शास्त्र के कथनानुसार विधिपूर्वक गृहस्थ धर्म का आचरण करो। तुम्हारे लिए गृहस्थ आश्रम को छोड़कर वनों में जाने का विधान नहीं है। देवता, पितर, अतिथि और भृत्यगण सदा गृहस्थ का आश्रय लेकर ही जीवन–निर्वाह करते हैं। अतः तुम उनका भरण–पोषण करो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए देसाईजी! देवता का अभिप्राय है नेतागण। पितरों का अर्थ है अपने पूर्वजों द्वारा आविष्कृत धर्म तथा संस्कृति। अतिथि का अर्थ है समय–कुसमय सहायतार्थ आया व्यक्ति अथवा संस्था और भृत्यगण का अभिप्राय है अपने आश्रित जन।"

"इसमें देश की बात कहाँ आई है?"

"इन चारों के मिलाने से स्वयमेव उत्पन्न हो जाती है।"

देसाई पुनः गम्भीर विचार में पड़ गया। इस पर रामरक्खामल्ल ने बताया, "मैं परिवार के लोगों को लाहौर भेजने के लिए बम्बई जा रहा हूँ।"

"तो आप स्वयं बम्बई में ही रहेंगे?"

"यह तो रुक्मिणी देवी के कला–भवन की रूपरेखा पर निर्भर करता है। मैं वहाँ जाकर वह सब कार्य, जो मेरे कलकत्ता जाने के बाद हुआ है, देखकर ही निश्चय करूँगा।"

"मैं सोच रहा हूँ कि मैं भी आपके साथ चलूँ।"

"यही उचित होगा। क्रान्ति का समय जब आएगा, उसके लिए आप अपनी शक्ति का संचय करिए और फिर निर्लेप भाव से समय पर उस शक्ति का प्रयोग कीजिए।"

"मैं तो यही समझा था कि क्रान्ति का समय आ गया है।"

"वह तो आपने देख लिया है कि अभी नहीं आया।"

इस प्रकार यह निश्चय हो गया कि जवाहरलाल अपने श्वसुर के घर पर रहेगा और देसाई तथा रामरक्खामल्ल बम्बई जाएँगे। और विष्णु नारायण के साथ सब परिवार भेज दिया जाएगा। लेखवती और रत्नलाल वहीं रहेंगे।

गाड़ी मध्याह्नोत्तर चार बजे जाती थी। रामरक्खामल्ल ने पतलून और जूते–टाई आदि पहन लिया। इस प्रकार उसका विचार था कि वह बिना गुप्तचर विभाग के कर्मचारियों का ध्यान आकर्षित किए लाहौर से निकल सकेगा। वैसे तो वह मन में विचार करता था कि पकड़ा भी गया तो शीघ्र ही छूट जाएगा, क्योंकि वह इस आन्दोलन से किसी प्रकार भी सम्बन्धित नहीं था।

मध्याह्न के भोजन के समय जवाहर आया तो साथ श्यामनारायण को ले आया। रामरक्खामल्ल श्यामनारायण को देख अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने पूछा, "श्याम! कहाँ थे तुम? परसों जवाहर तुम्हारे घर गया था। उसको ताला लगा था और तुम्हारे दफ्तर से विदित हुआ कि तुम हरिद्वार गए हुए हो और अभी तक वहाँ से लौटे नहीं। परन्तु तुम्हारे मुहल्ले में तो प्लेग का कोई भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
केस नहीं हुआ था? शहर के अन्दर से लोग तो ग्वाल–मण्डी में आकर रहने लगे थे और तुम छोड़–छाड़कर चल दिए?''

श्यामनारायण ने बैठते हुए कहा, ''भापा! बहुत मुसीबत में फँस गया हूँ। एक मास के ऊपर हो गया है, कला अपने बच्चों के साथ लापता है। मैं उसे हरिद्वार और लाहौर मै ढूँढ़ता रहा हूँ।''

रामरक्खामल्ल विस्मय में मुख देखता रह गया। श्याम आँखें नीची किए सामने बैठा रहा। उसका मुख पीला पड़ गया था और आँखें भीतर को धँस गई थीं। इस समय जवाहरलाल ऊपर गया और अपने साले की सहायता से चार व्यक्तियों के लिए खाना ले आया।

थाल सामने रख हाथ धुला खाना खाते हुए जवाहर पूछने लगा, ''मास्टरजी के घर पता किया है?''

''वे जम्मू चले गए थे। अभी चार–पाँच दिन पूर्व ही वे आए हैं। कला उनके साथ नहीं है। वैसे मुझे आशा भी नहीं थी। कला और उसकी माँ में तो कई वर्ष से अनबन है। पिता कभी–कभी हमारे घर पर आकर मिल जाया करते थे।''

रामरक्खामल्ल ने कहा, ''श्याम! मैंने तुमको एक दिन यह बताया था कि हमारे घर से एक गाय के गले में रस्सा बाँध, कला उसे पकड़े हुए ग्वाल मंडी की ओर जाती दिखाई देती है। मुझे यह भविष्यवाणी करने की आवश्यकता इस कारण हुई थी कि मैं तुमको एक गाय की भाँति बूचड़खाने में जाता हुआ नहीं देखना चाहता था। तुम कुछ काल के लिए सँभले भी, परन्तु न जाने फिर क्या हुआ कि तुमने प्रातः उठना और वे क्रियाएँ करनी छोड़ दीं, जिनसे मन में दृढ़ता और बुद्धि में निर्मलता आती है।

''फिर तुम एक दिन आए और अपने पिता से पृथक होने की स्वीकृति माँगने लगे। भैया ने मुझसे पूछा और स्मरण है मैंने क्या उत्तर दिया था? मैंने कहा था कि यह घर कोई जेलखाना नहीं है, जो बिना स्वीकृति के यहाँ से कोई निकल ही नहीं सकता।

''तुमने एक निरर्थक बात कही थी कि मुझे जाने दो, मेरी खुशी का यही मार्ग है।

''तुम पृथक् हो गए। तुम्हारा वेतन ढाई सौ रुपया हो जाने पर भी तुम अपने पिता से रुपया माँगते रहते थे। मैंने यह देख भैया से कहा था कि कोई विशेष खराबी तुम्हारे घर में हो रही है।''

''विष्णुनारायण भी समझ नहीं सका। मैं विचार करता था कि यदि वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
समझ भी गया तो क्या करता? तुम, जो ठीक मार्ग का अवलम्बन कर सकते थे, तुमने कभी घर के सम्बन्ध में मुझसे बात नहीं की। अब यह कठिनाई सर्वथा विलक्षण है। किन–किन से उसकी मेल–मुलाकात थी?''

''एक हो तो बताऊँ। जब मैं ग्वालमण्डी में गया था, मेरा घर एक सामाजिक आदर्श–गृह बना हुआ था। मेरी बैठक में मुहल्ले के अधिकांश युवक आते थे। हम ताश खेलते थे और कभी–कभी घर के नीचे गाना–बजाना भी होता था। एक प्रकार वह मुहल्ले का क्लब था। लोग चन्दा देते थे और इस प्रकार के कार्यक्रमों का प्रबन्ध कला ही करती थी। वह उस मुहल्ले में एक सभ्य, मिलनसार और प्रगतिशील नारी समझी जाती थी।''

''वह लापता कहाँ से हुई है?''

''हरिद्वार से।''

''वहाँ मुहल्ले के और लोग भी गए हुए थे क्या?''

''हाँ, मेरा एक मित्र चिरंजीलाल अपने परिवार के साथ गया हुआ था। मुहल्ले का एक अन्य व्यक्ति भी था–परन्तु मुझसे उसका कोई विशेष मेल–जोल नहीं था। उसका नाम वसुदेव है। वह लाट साहब के दफ्तर में सुपरिन्टेंडेंट है। वह भी उस समय वहाँ था। अब वह लाहौर आ गया है। मोहल्ले के दो ही व्यक्ति वहाँ गये थे।''

''वह चिरंजीलाल अब कहाँ है?''

''वह रेलवे में गार्ड है। वह भी लाहौर आ गया है।''

इसके बाद सब चुपचाप खाना खाते रहे। जब भोजन समाप्त हुआ तो रामरक्खामल्ल ने श्यामनारायण से पूछा, ''क्या तुम बिना बीवी के नहीं रह सकते?''

''परन्तु भापा! बच्चे भी तो साथ में हैं?''

''विषभूमि के विष–वृक्ष। क्या करोगे तुम उनका? देखो श्याम! मैं तुमको बताता हूँ कि कला इस योग्य कभी भी नहीं थी कि वह तुम्हारे घर रह सके। अब तो वह इस योग्य सर्वथा नहीं रही। बच्चों की बात ठीक है। यदि उस भूमि से उखाड़ कर किसी अच्छी भूमि पर लगा दिए गए, तो सम्भव है कि वे कुछ बन सकें। परन्तु इसी प्रकार भाग–दौड़ करते रहे तो जब तक बच्चे तुमको मिलेंगे, तब तक तुम इस योग्य नहीं रह सकोगे कि उनका पालन–पोषण कर सको। इस कारण अपना गृहस्थ जीवन चलाने की योग्यता को स्थिर रक्खो।''

''परन्तु भापा! उनके बिना मैं मुहल्ले में तो रह नहीं सकता। वे पूछेंगे तो मैं क्या उत्तर दूँगा?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो समझता हूँ कि वहीं रहना ठीक है। इससे ही तुम उसके लौटने, कम–से–कम तुम से सम्पर्क बनाने का उपाय कर सकते हो। आज ही जाकर घर का ताला खोल, सफाई करा कर रहने लगो। स्वयं को ऐसा दिखाओ कि उसके जाने का कोई दुख नहीं।

"कोई पूछे तो कह देना कि वह तुमको छोड़ गई है। कारण पूछने पर बता देना कि तुम से अधिक कोई मजेदार आदमी मिल गया होगा। वह जरूर किसी मुहल्ले वाले के संरक्षण में है। जब तुम्हारे संयम और विवेक का उसको पता चलेगा तो उसमें भी विवेक उत्पन्न होगा। परिणाम यह होगा कि वह और तुम पुनः सम्पर्क में आ जाओगें।"

"बहुत कठिन मार्ग बताया है भापा!"

"तो फिर जो सुगम उपाय प्रतीत होता है, वह कर लो।"

श्यामनारायण इस प्रकार बात समाप्त होती देख चकित रह गया। उसे चुप देख रामरक्खामल्ल ने बताया, "मैं आज बम्बई जा रहा हूँ। अपनी सम्मति मैंने तुम्हें दे दी है। तुम्हारे पिता एक सप्ताह तक घर आ जावेंगे। तब उनसे भी बात कर लेना। किन्तु नौकरी पर तो तुम्हें आज ही चला जाना चाहिए।"

श्यामनारायण अति लज्जित था। इस पर भी इसके अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग उसको सूझ नहीं रहा था। वह रामरक्खामल्ल को स्टेशन तक छोड़ने के लिए गया। गाड़ी छूटने से पूर्व रामक्खामल्ल ने उससे कहा, "देखो श्याम! इनसान बनो, हैवान बन कर इतने दिन तक उस निर्लज्ज औरत के साथ भागते रहे हो। मेरी बात मानो और उसे अपने पीछे आने दो। देखोगे कि इसमें और भी अधिक आनन्द है।"

स्टेशन से श्यामनारायण सीधा अपने घर ग्वाल–मण्डी में चला गया और ताला खोल उसने सफाई करानी आरम्भ कर दी।

जब मजदूर सफाई कर रहे थे, मुहल्ले के लोग उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करने के लिए आने लगे। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया था कि अब वह अपने ताया के कथनानुसार ही अपना कर्त्तव्यपालन करेगा। एक पड़ोसी की माँ आई और पूछने लगी, "श्याम! बहू आई?"

"नहीं माँ!"

"बहुत बुरा किया है उसने।"

"माँ! मैं समझता हूँ कि अच्छा ही किया है। उस निकम्मी औरत पर मैं व्यर्थ ही धन का अपव्यय कर रहा था। मुझ जैसे पति के साथ उसकी नहीं पटी तो फिर पटेगी किसके साथ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह औरत समझ रही थी कि श्याम बातें ही बना रहा है। किन्तु रजाई के अन्दर मुख डाल कर रोता होगा। इतनी सुन्दर और हँसमुख औरत उसको नहीं मिल सकती।

दो दिन में मकान की सफाई हो गई। उसने एक नौकर रख लिया और उससे खाना बनवाने लगा। अब उसका कार्यक्रम यह हो गया था कि प्रातः छः बजे उठकर स्नानादि से निवृत्त हो, वह नौकर को खाना बनाने पर लगा देता था। जब तक खाना बनता, वह कोई उपन्यास लेकर पढ़ता रहता। आठ बजे खाने पर जा बैठता। नौ बजे वह अपने दफ्तर को चल पड़ता। पाँच बजे दफ्तर बन्द हो जाता, परन्तु श्यामनारायण का कार्य समाप्त नहीं होता था। वह प्रायः साढ़े छः–सात बजे तक बैठता। दिन भर का काम समाप्त कर ही वह अपनी मेज और कागजों को ताला लगा, घर जाता था।

घर पर पहुँच, चाय पी वह बैठक में बैठ जाता। मित्र–मण्डली आने लगती। प्रायः मुहल्ले के सब मिलने वाले आते थे। अब कला की कोई बात नहीं करता था। बात पुरानी होती जाती थी। साथ ही सब जानते थे कि उनके प्रति सहानुभूति प्रगट करने अथवा कला के गुणावगुणों का वर्णन करने से श्यामनारायण के मन पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होता। जब भी उसका उल्लेख आता तो वह कह देता, ''मैले के कीड़े मैले में ही प्रसन्न रहते हैं। उनको स्वच्छ वातावरण नहीं भाता।''

कभी वह कह देता, ''छोड़ो जी! कौन सुरखाब के पर लगे थे उसमें? मैं बहुत सुखी हूँ। भगवान करे उसे भी शान्ति मिले।''

एक दिन उसके मित्र चिरंजीलाल ने पूछ लिया, ''श्याम, दूसरा विवाह करोगे?''

''किस लिए!''

''अरे भाई! विवाह किसलिए किया जाता है?''

''वह चीज हीरा मण्डी में दस रुपये में प्राप्त हो जाती है। मेरी अब उसमें रुचि नहीं रही।''

''बस बूढ़े हो गए?''

''यह बूढ़ा अथवा जवान का प्रश्न नहीं। यह तो मन की रुचि का है। देखो, मेरे ताया जी हैं। इस समय उनकी आयु सड़सठ वर्ष की है और वे अपनी पत्नी, जो इस समय चालीस वर्ष की है, से एक दिन पृथक नहीं रह सकते। यहाँ तो मन ही उचट गया है।''

''मेरे एक मित्र की बहिन है। आयु पन्द्रह–सोलह वर्ष की होगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अच्छी–खासी सुन्दर है। कहो तो बात करूँ?''

''चिरंजी! नहीं। अब इस जन्म में पुनः इस कीचड़ में फँसने का विचार नहीं है।''

''कितनी आयु होगी तुम्हारी?''

''तीस से कुछ अधिक।''

''अभी तुम सत्तर–अस्सी वर्ष तक तो जियोगे ही। इतने लम्बे काल के लिए अकेले नीरस जीवन तो सहन नहीं हो सकता।''

''जब नहीं होगा तो किसी को पकड़ लाऊँगा।''

बात समाप्त हो गई। कला के चले जाने के बाद श्याम की माँ और अन्य सम्बन्धी उसको मिलने के लिए आया करते थे। सबसे अधिक सदानारायण आता था। इस पर भी किसी ने उनको अपने पुराने घर में चले आने के लिए नहीं कहा।

: 6 :

बाल्य–काल से ही कला के अन्तर्मन पर उसके पिता मास्टर दुनीचन्द के आचार–व्यवहार और विचारों का प्रभाव होता रहा था। वह अभी बालिकामात्र ही थी कि उसको इस बात का ज्ञान होने लगा था कि उसके माता–पिता एक पलंग पर सोते हैं। यह तब था जब वह अभी तीन–चार वर्ष की थी। जब वह पाँच वर्ष की हुई तो उसको सोने के लिए पृथक् कमरा मिलने लगा। इस बात ने उसके मन में हलचल उत्पन्न कर दी। वह इसका अर्थ समझने के लिए कभी किसी बहाने से, रात के समय उनके कमरे में जाती तो उसकी माता उसको डाँट दिया करती थी।

इस पर कला अपनी कल्पना के घोड़े दौड़ाती थी।

जब वह नौ वर्ष की हुई तो उसको इस बात का ज्ञान होने लग गया था कि पति–पत्नी का क्या सम्बन्ध होता है। इसी समय उसको यह भी विदित हुआ कि कोई लड़का उसके आगे–पीछे घूमा करता है। उसने यह बात माँ को बतलाई तो उसे स्कूल से उठा लिया गया। उसकी माँ उसको प्रातःकाल घूमने के लिए गुरु अर्जुनदेव की बावली पर ले जाने लगी। वह लड़का वहाँ भी दिखाई देने लगा तो उसका उस समय का भ्रमण बन्द कर दिया गया।

माँ के इस व्यवहार से उसके मन में विद्रोह उठने लगा। फिर एक दिन, उक्त घटना के एक–डेढ़ वर्ष बाद वही लड़का उसके घर में उसके पिता से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ने आने लगा। पिता की आजाद–खयाली ने लड़की को श्याम के सम्पर्क में आने से नहीं रोका। यह तो श्याम के घर के संस्कारों का परिणाम था कि दोनों सम्पर्क में आते हुए भी और विवाह की योजना बनाते हुए भी, उन्होंने किसी प्रकार के अनुचित व्यवहार को नहीं अपनाया।

विवाह हुआ तो लड़की के मन में लालसा उठी कि वह भी अपने पिता की भाँति मद्य का सेवन करे। एक–आध बार वह अपने पिता के घर से थोड़ी–थोड़ी मद्य चुराकर अपने पति के घर ले आई और पीकर देखती रही कि उसमें किस प्रकार का स्वाद आता है। अपने श्वसुर के घर में वह यह कार्य निशंक हो नहीं कर सकती थी। इसी कारण वह अपना पृथक् घर बनाना चाहती थी। यहाँ तो अपने पड़ोसियों से मेलजोज में भी वह स्वतन्त्रता नहीं थी, जो उसकी माँ को उपलब्ध थी। इस पर भी मद्यसेवन की इच्छा बहुत प्रबल थी।

इसके बाद एक दिन लेखवती के साथ अपने पति का अनुचित सम्बन्ध बताकर वह घर छोड़कर चली गई। परन्तु उस समय उसकी बात नहीं चल सकी। इतना ही नहीं, उसको अपना–सा मुँह लेकर वापस अपने पति के पास आना पड़ा और उस पर उसका जो प्रभाव था, वह भी विलीन हो गया। इस बार आई तो अपनी माता के कथनानुसार बहुत ही नम्र बन कर। वह पुनः अपना आदर–सत्कार पाने का यत्न करने लगी।

कुछ वर्ष तक कार्य चला। दूसरी ओर श्यामनारायण ने अपने भत्ते में से बचाना अनुचित माना तो उसका दफ्तर में आदर बढ़ने लगा। यदि यह कोई सरकारी दफ्तर होता तो उसकी ईमानदारी से उसके साथी कर्मचारी, उससे नाराज हो जाते, परन्तु यहाँ तो मैनेजर भी मालिकों में से एक था। उसको यह युवक बहुत पसन्द आया और उसकी द्रुतगति से पदोन्नति होने लगी।

तीन–चार वर्ष में ही उसको उस ब्रांच का मैनेजर बना दिया गया। उसका वेतन बढ़ते–बढ़ते ढाई सौ रुपया मासिक तक हो गया। अब कला पुनः अपना पृथक मकान बनाने का प्रस्ताव रखने लगी। इस समय उसका कहना था कि उनकी पदवी बड़ी हो गई है। उनको किसी ऐसे स्थान पर मकान लेना चाहिए, जहाँ कोई उनसे आसानी से मिलने के लिए आ सके। अथवा यदि कोई अतिथि आ जाए तो उसको रखा जा सके।

अपनी और अधिक उन्नति के प्रलोभन में श्यामनारायण इस युक्ति के सम्मुख परास्त हो गया और उसने भी अपने पिता से इस विषय में कहना आरम्भ कर दिया। रामरक्खामल्ल ने आपत्ति नहीं की तो पिता ने पुत्र को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमवश, ग्वालमण्डी में एक मकान लेकर, उसको ठीक–ठाक करवा दिया। उसमें फर्नीचर लगवा दिया और उसमें उसको रहने के लिए भेज दिया।

परन्तु वहाँ पहुँचते ही कला ने अपने पंख फैलाए और उसकी 'सोशल लाइफ' आरम्भ हो गई। धीरे–धीरे मुहल्ले के प्रायः सब युवक श्यामनारायण के घर आने लगे। उसकी बैठक में ताश, शतरंज और दीवाली के दिनों में जुआ भी होने लगा। इस सब का प्रबन्ध कला ही करती थी।

ग्वालमण्डी का वातावरण वैसा नहीं था, जैसा कूचा हिंगना का था। वहाँ पड़ोसी थे, जो बचपन से इकट्ठे खेले कूदे थे। परस्पर एक–दूसरे के गुण–दोषों को जानते थे और सभी एक विराट् परिवार के रूप में रहते थे। यहाँ सब प्रायः भिन्न–भिन्न स्थानों से आए पंछी थे। कोई नहीं जानता था कि किसी को कब तक वहाँ रहना है। प्रायः सभी नौकरी करने वाले लोग थे। जो कोई परिवार के साथ रहते भी थे, वे भी मुहल्ले में रहने की भाँति परस्पर वह सम्बन्ध रहीं रख सके, जो सदियों से एक साथ रहने वाले रखते थे।

चिरंजीलाल का एक भाई था, जो किसी कम्पनी का ट्रेवलिंग एजेण्ट था। कुछ उसको वेतन मिलता था और कुछ कमीशन मिल जाता था। इस प्रकार लगभग तीन–चार सौ रुपया मासिक उसको मिलता था। बाईस वर्ष का हो जाने पर भी अभी उसका विवाह नहीं हुआ था। लड़की वाले इस प्रकार के अस्थिर जीवन को पसन्द नहीं करते थे। एक स्थान पर रहने से वेतन बहुत कम मिलता था, इस कारण विवाह स्थगित हो रहा था। वह एक बार घर आया तो चिरंजीलाल उसको भी श्यामनारायण की बैठक पर ले आया। वहाँ कला से उसका साक्षात्कार हुआ तो वह उसके साथ घुल–मिलकर बातें करने लगा। दो–तीन दिन के भीतर ही कला से उसकी इतनी घनिष्ठता हो गई कि वह उससे एकान्त में मिलने की इच्छा करने लगा।

एक दिन उसने इस ओर संकेत किया और अगले दिन मध्याह्न के समय वह छत पर कूद कर कला के घर और फिर उसके कमरे में जा पहुँचा।

उसके बाद तो बैठक की मुलाकातों की अपेक्षा इस प्रकार छिपकर मुलाकातें अधिक होने लगीं। बीच–बीच में वह अपनी कम्पनी के काम पर बाहर जाता रहता था और स्थान–स्थान से उसके लिए कई प्रकार की वस्तुएँ भेंट में देने के लिए लाता रहता था।

एक दिन काहनचन्द ने कहा, "मेरे भाई साहब अब हमारे सम्बन्धों पर सन्देह करने लगे हैं। इस कारण अब कुछ और प्रबंध होना चाहिए।"

"क्या?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने बम्बई में नौकरी ढूँढ़ी है। चार सौ रुपया मासिक मिलेगा। वहाँ एक मकान लेने जा रहा हूँ। तुम मेरे साथ चलो तो मकान कुछ बड़ा भी ले सकता हूँ।"

"तुम्हारा अभिप्राय है कि मधु के पिता को छोड़ दूँ?"

"क्या हानि है?"

"मधु और सुनीता?"

"इनको भी साथ ले चलो।"

"मधु तो अब समझदार हो रहा है?"

"उसे समझा लेंगे।"

"कैसे?"

"एक बार बम्बई ले चलो, शेष सब मैं समझ लूँगा।"

मद्य पीने से कला की विचारशक्ति तो पहले ही लोप हो गई थी काहनचन्द का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। योजना बनी। उन दिनों प्लेग फैलने लगा था, लोग लाहौर छोड़ रहे थे। काहन बम्बई मकान लेने के लिए गया तो कला को कह गया कि वह अपने पति को हरिद्वार ले आए। यहाँ, लाहौर आने में वह प्लेग से डरता है।

"परन्तु यहाँ तो अभी कोई केस हुआ नहीं है?" कला ने सन्देह प्रकट किया।

"क्या जाने पहला केस मैं और तुम ही हों।"

कला घबरा गई। उसने कहा, "ठीक है हरिद्वार आना। मैं वहीं से साथ चलूँगी। हो सका तो मधु और सुनीता भी साथ ही होंगे।"

"न होंगे तो न सही।"

"नहीं, मेरा बच्चों के प्रति बहुत स्नेह है।"

"वे तो और भी हो जावेंगे, अभी कौन सी बूढ़ी हो गई हो?"

"नहीं होंगे। सुनीता के समय लेडी डाक्टर ने ऑपरेशन कर दिया था। मुझे बहुत कष्ट हुआ तो उसने कह दिया और बच्चा नहीं होना चाहिए। बस ऑपरेशन कर दिया गया।"

"तो ठीक है बच्चों को लेते आना।"

काहनचन्द बम्बई गया तो कला पति को कह छुट्टी लेकर हरिद्वार चलने का आग्रह करने लगी। श्यामनारायण ने पहले तो टालने की चेष्टा की, पर फिर मान गया। और फिर चिरंजीलाल से बात हुई तो वह भी चलने के लिए तैयार हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यामनारायण को नौकरी किए दस वर्ष हो गए थे और इस अवधि में उसने एक दिन क़ी भी छुट्टी नहीं ली थी। अतः उसने छुट्टी माँगी तो उसको मिल गई। दो मास की छुट्टी लेकर वह हरिद्वार चला गया। उसके दो दिन बाद चिरंजीलाल भी अपने परिवार सहित वहाँ जा पहुँचा। उसको केवल पंद्रह दिन का ही अवकाश मिला था। वासुदेव तो पहले ही वहाँ पहुँचा हुआ था। यद्यपि तीनों परिवार पृथक्–पृथक् मकानों में ठहरे थे, इस पर भी परस्पर मेल–जोल होता रहता था और कला उनके घर आती–जाती रहती थी। वास्तव में वह टोह ले रही थी कि काहनचन्द कब आ रहा है। चिरंजीलाल और उसकी पत्नी को काहनचन्द के आने की कोई सूचना नहीं थी। लाहौर में उसका पत्र आया था कि उसके मालिक, उसको बम्बई से बाहर जाने के लिए मना कर रहे हैं। उसका कहना था कि यदि बम्बई के अधिकारियों को सन्देह हो गया कि वह किसी प्लेग वाले स्थान से होकर आ रहा है तो वे उसको क्वैरन्टीन में रक्खेंगे और इससे उसको तथा कम्पनी को हानि होगी।

इस समाचार से कला उदास थी। दोनों मित्र सायंकाल किसी वैरागियों के मठ में भाँग घोटने और पीने के लिए चले जाते थे। कला कभी अपने पति के मित्रों की पत्नियों के साथ घाट पर भ्रमण के लिए चली जाती थी और कभी बच्चों को ले गंगा के किनारे बैठ, मन की व्याकुलता शान्त किया करती थी।

एक दिन ऐसे ही, वह गंगा के किनारे पर बैठ लहरें गिन रही थी कि काहनचन्द ने, उसके पास आकर धीमे से पुकारा, "कला!"

कला ने विस्मित हो मुड़कर देखा और बोली, "बहुत देर कर दी?"

"कहाँ? तुमको आये अभी पन्द्रह दिन भी नहीं हुए। सुनो, मैं अपने भाई से चोरी–चोरी आया हूँ। मैं उसको श्यामनारायण से लड़ने के लिए नहीं कहना चाहता। वे तुमसे मेरा सम्बन्ध पसन्द नहीं करेंगे। अपने गाँव में एक अनपढ़ लड़की से वे मेरा विवाह करना चाहते हैं। किन्तु मैं तो तुमसे प्रेम करता हूँ। मैं स्टेशन के पास एक धर्मशाला में ठहरा हुआ हूँ। कल प्रातःकाल सात बजे की गाड़ी से चल दूँगा। तुम स्टेशन पर पहुँच जाना। यत्न करके रात श्यामनारायण को देर तक जगाए रखना, जिससे वह प्रातःकाल उठ न सके। बच्चों को अभी जाकर खिला–पिला कर सुला देना। वे समय पर जाग पड़ेंगे। उनको साथ ले केवल पहनने वाले कपड़े ही साथ लाना। शेष सब प्रबन्ध मैं कर दूँगा। जब तुम आओगी उसी समय हम टिकट लेकर गाड़ी में जा बैठेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ रुपया पैसा?"

"मुझे इसकी आवश्यकता नहीं। मेरे पास अपने और तुम्हारे बच्चों के लिए पर्याप्त है। तुम अपने लिए चाहो तो ले आओ। गाड़ी ठीक सात बजे छूटती है। तुम साढ़े छः तक पहुँच जाना। अब मैं चलता हूँ। मैं नहीं चाहता कि कोई आकर मुझे यहाँ देख ले।"

काहनचन्द गया तो कुछ देर बाद कला वहाँ से उठी और मधु तथा सुनीता से बोली, "कल सुबह हम मन्दिर चलेंगे।"

"कल क्या है माँ!"

"भूतनाथ का व्रत है।"

"वह क्या होता है?"

"वह भी होता है।" कला ने भूतनाथ का नाम देवकीनन्दन खत्री के उपन्यास में पढ़ा था, इस कारण यह नाम उसके मुख से निकल गया।

"कब चलेंगे?"

"कल जल्दी उठना होगा। इसके लिए रात जल्दी सोना होगा।"

"वहाँ क्या मिलेगा?"

"मिठाई, लड्डू, पेड़े, पूरी, हलवा, तमाशे और बहुत–सी सैर होगी।"

"कितनी दूर।"

"बहुत दूर।"

"पिताजी भी चलेंगे?"

"नहीं भूतनाथ के मन्दिर में पिता नहीं जाते।"

वे घर लौट आए। कला बाजार से पूरी, हलुआ, मिठाई खरीद लाई। बच्चों को खिलाकर उसने सुला दिया। श्यामनारायण और चिरंजी आए तो कला ने उससे कहा, "भैया! एक ताश की बाजी हो जाय।"

"भाभी! भूख लगी है। आज हरिनाथ ने बहुत गाढ़ी छान दी। खूब चढ़ रही है।"

कला ने दोनों मित्रों के सम्मुख पूरी, साग, मिठाई रख दी। उन्होंने पेट भर कर खाई। श्यामनारायण तो खाते–खाते ही सो गया। चिरंजीलाल को बहुत कठिनाई से उसने अपने घर भेजा।

इस प्रकार निश्चिन्त हो उसने प्रातःकाल जाने की तैयारी कर ली। उसने अपने सब आभूषण सँभाले। रेशमी वस्त्र लिए और बच्चों को पहिनाने के कपड़े निकाल कर रख लिए। इसके बाद वह जाकर पति के पास लेट गई। परन्तु श्याम लकड़ी के लट्ठ की भाँति सोया हुआ था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला उस रात सो नहीं सकी। भय, संकोच और भविष्य की अनिश्चितता के कारण उसका मस्तिष्क कल्पना से भरा हुआ था। कभी वह सोचती थी कि वह ठीक नहीं कर रही है। वह हिन्दू जन्म को निरर्थक कर रही है। दूसरे ही क्षण उसके मन में विचार आता कि हिन्दू तो बीते युग की बात है। अब जमाना बदल गया है। जो पुराने विचारों में फँसे हैं, उनको चेतावनी है कि वे भी बदलें। उसने एक दिन एक कवि की एक नज़्म पढ़ी थी, जिसकी अन्तिम पंक्ति थी–

'तू भी बदल फलक कि जमाना बदल गया।'

इससे उसको उत्साह मिलता था। वह सोने का यत्न करती रही, किन्तु सो नहीं सकी। प्रातः पाँच बजे उसने अपने पति की ओर देखा। वह वैसे ही अचेत पड़ा था। साँस नियमितरूपेण चल रही थी। वह कहती थी कि 'ये बुद्धू मियाँ शराब नहीं पीते पर भाँग पीते हैं।' उसके मुख पर मुस्कराहट दौड़ गई। वह उठी और शौचादि से निवृत्त हो बच्चों को उठाने लगी। मार्च के दिन थे, वायु में कुछ शीतलता थी। इस कारण उसने बच्चों को स्नान नहीं कराया। उनका हाथ–मुख धो, उन्हें कपड़े पहना, छः बजे से पहले ही वह घर से निकल गई।

मधु ने पूछा, ''पिताजी?''

''वे सो रहे हैं। उनको मैंने रात ही कह दिया था कि हम जा रहे हैं।''

''कब लौटेंगे?''

''कुछ दिन लग जावेंगे।''

''कुछ दिन?''

''हाँ, भूतनाथ जी दूर रहते हैं न।''

''हम अकेले ही जा रहे हैं?''

''तीन तो हम हैं ही। मैं, तुम और सुनीता। एक और भी है। फिर वहाँ बहुत लोग होंगे।''

कला ने ताँगा किया और रेलवे स्टेशन पर जा पहुँची। अभी साढ़े छः नहीं बजे थे। काहनचन्द अभी वहाँ नहीं आया था। इससे कुछ परेशानी–सी हुई। परन्तु वह भी पहुँच गया और कला की परेशानी दूर हो गई। मधु उसको जानता था। उसने देख कर कहा, ''ओह, यह तो काहन चाचा हैं?''

''हाँ।''

''चाचा! हम भूतनाथ के मन्दिर को जा रहे हैं।''

काहनचन्द हँस पड़ा और बोला, ''मधु भैया! हमें भी ले चलो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधु ने माँ के मुख पर देखा। वह मुस्करा रही थी। काहनचन्द ने अपना सामान कुली को देकर कहा, "बम्बई वाली गाड़ी में फर्स्ट क्लास में रख दो।"

स्वयं वह टिकट लेने के लिए चला गया। फर्स्ट–क्लास का नाम सुनकर तो कला के मन में गुदगुदी उठने लगी। वह कभी इस श्रेणी में बैठी नहीं थी। इस पर बिना बोले वह कुली के साथ गाड़ी में जा बैठी। काहनचन्द तीन टिकट बनवा लाया। इसमें उसका पौने दो सौ रुपया व्यय हो गया। काहन आया तो मधु ने पूछा, "चाचा! तुम भी चल रहे हो?"

"हाँ, तुम्हारी माँ मुझे भी ले जा रही है।"

"हम तो भूतनाथ का मन्दिर देखने के लिए जा रहे हैं।"

"मैं भी वहीं जा रहा हूँ।"

मार्ग में मधु और सुनीता को खूब खिलाया–पिलाया गया। उनको प्रत्येक प्रकार से प्रसन्न रखने का यत्न किया गया। तीसरे दिन वे बम्बई पहुँचे। बच्चे थक गए थे। मधु ने कहा, "माँ! मैं नहीं जाऊँगा मन्दिर देखने।"

"क्यों, क्या हुआ है?"

"मैं थक गया हूँ।"

"तो आज आराम करेंगे और कल चलेंगे।"

"कहाँ आराम करेंगे?"

"यहाँ पर एक घर है, वहाँ पर।"

"यहाँ तो बहुत भीड़ है।"

वे विक्टोरिया गाड़ी में सवार हो काहन के घर की ओर चल पड़े।

मधु को इस नए बाप पर सन्तोष कराने में दो मास लग गए। सुनीता तो पहले ही दिन अपने पिता को भूल चाचा के साथ हिल–मिल गई थी। मधु को स्कूल में भरती करा दिया गया।

: 7 :

रामरक्खामल्ल देसाई के साथ बम्बई पहुँचा तो वे बिना सूचना दिए रुक्मिणी से मिलने चल पड़े। मकान पर पहुँचे तो ड्योढ़ी पर खड़े नौकर ने पहचाना और झुककर सलाम की तथा सूचना देने के लिए ऊपर को भागा। रामरक्खामल्ल ने अपना सारा सामान गाड़ी पर से उतारा नहीं। वह तो रुक्मिणी को केवल अपने पहुँचने की सूचना देने के लिए आया था। दोनों लिफ्ट से ऊपर चढ़ गए।

CC-0. Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस अप्रत्याशित सौभाग्य पर रुक्मिणी चकित रह गई। वह लिफ्ट से नीचे जाने लगी तो लिफ्ट ऊपर आता दिखाई दिया। रामरक्खामल्ल को साथ देख वह समझ गई कि यह सौभाग्य उसके ही कारण है।

रुक्मिणी ने सेठ के चरण स्पर्श किये। देसाई ने पूछा, "कैसी हो रुक्मिणी!"

"सब आपकी कृपा है।"

"एक लम्बे काल के लिए रहने आया हूँ। स्वीकृति है?"

"जो आपको लाए हैं, उनसे पूछ लिया होता!"

"ये तो कह रहे हैं कि यहाँ मुझको अधिक सुख मिलेगा। साथ ही जीवन का उद्देश्य भी भली–भाँति पूरा हो सकेगा।"

"तो परीक्षा करके देखना चाहिए न!"

"बात तो ठीक है।"

तीनों हँसते हुए चल पड़े। ड्राइंग–रूम के द्वार पर पहुँचे तो रामरक्खामल्ल ने हाथ जोड़ते हुए कहा, "मुझे अब जाने की स्वीकृति मिलनी चाहिए।"

"आइए न। चाय तैयार है।"

"जी नहीं। मेरा सामान नीचे गाड़ी में पड़ा है।"

"और सेठ जी का सामान?"

"ये बिना सामान के ही आ पाये हैं। भगवान् का धन्यवाद है। सामान होता तो कदाचित् आ भी न पाते।"

देसाई ने हँसते हुए कहा, "नहीं, ऐसी कोई बात नहीं रुक्मिणी! सामान हरिद्वार में रखा है। किसी को भेजकर मँगवा लूँगा। एक भगवा चोगा, कमण्डलु, एक जोड़ी खड़ाऊँ और दो लंगोट ही हैं।"

"तो आप साधु हो गए थे? तब तो लालाजी को अत्यन्त धन्यवाद देना चाहिए। ये भी साधु होकर गृहस्थी बने हैं। एक बात तो सन्तोषजनक है कि आपने कान नहीं फड़वाए।"

रामरक्खामल्ल हँसता हुआ छुट्टी लेकर, लिफ्ट से नीचे आ गाड़ी में बैठ अपने घर चला गया।

"मैं अपने सौभाग्य के लिए किसका धन्यवाद करूँ?" रुक्मिणी ने पूछा।

देसाई ने कहा, "दुर्घटना हो गई थी। उस दुर्घटना की विवेचना मिस्टर सूद ने अपनी योग्यता से इस प्रकार की कि मैं साधु बनता–बनता गृहस्थ में वापस चला आया हूँ।"

इस पर देसाई ने वह सारी बात जो लाहौर में हुई थी, रुक्मिणी को सुना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी। उसने कहा, "बहुत यत्न करने पर लायलपुर के जाटों को अपने अधिकारों के लिए लड़ने–मरने के लिए तैयार किया था। सहस्रों की संख्या में वे लाहौर पहुँचे। परन्तु गोरे गवर्नर ने दो चिकनी–चुपड़ी बातें कर और ठंडा शर्बत पिला–पिला सबको शान्त कर दिया। हमने लड़कों को भड़काया। परन्तु उनका साथ किसी भी नागरिक ने नहीं दिया। पुलिस ने दुकानें लूटीं, परन्तु लूटने वालों ने हाथ जोड़ उनका धन्यवाद कर दिया। शेरे–पंजाब पकड़े गए और उनके मित्रों ने उनके साथ सहानुभूति भी प्रकट नहीं की। यहाँ तक कि जिस आर्य समाज के लिए उन्होंने तन, मन और धन से काम किया, उसके नेता ने लाट साहब से कह दिया कि वे तो आर्य समाज के सदस्य भी नहीं हैं।

"इस घटना पर चकित, मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़–सा बैठा था। मिस्टर सूद ने इसका विश्लेषण कर दिया कि हम लोग घोड़े के आगे गाड़ी लगा रहे हैं। जनमत तैयार करने से पूर्व क्रान्ति का प्रयास करना कुछ ऐसा ही है।

"उन्होंने कहा था कि मिस्टर गोखले और उनके साथी काले अंग्रेज, जनमत नहीं बना सकते। इस कार्य में बालगंगाधर तिलक संलग्न हैं और मुझे उनकी सहायता करनी चाहिए। अतः इस कार्य के लिए मुझे साधु बनकर घूमने की आवश्यकता नहीं है।

"इसी कारण मैंने अपना साधु बाना, जो हरिद्वार में छोड़कर आया था, लाने की आवश्यकता नहीं समझी।"

रुक्मिणी बताने लगी, "लाला रामरक्खामल्ल ने हम पर एक और एहसान किया है। मैंने सरला देवी की सम्मति से एक कला–भवन बनाने की योजना बनाई थी। हमारी योजना को सुन वे बोले कि यह तो वेश्यालय की योजना है। अपने कथन की व्याख्या में उन्होंने बताया कि कला का सम्बन्ध केवल स्वर, शब्द अथवा अंग–प्रत्यंग के तोड़–मोड़ से नहीं। इसका सम्बन्ध मन और आत्मा से है। अतः कला–भवन में यदि मानव के इन दो अंगों का ध्यान न किया गया तो शरीर पुष्ट, सुन्दर और कार्यशील होने से समाज में शरीर का ही मूल्य बढ़ेगा। इसको ही वेश्यावृत्ति कहते हैं। जब शरीर के साथ मन और आत्मा भी उन्नत होंगे तो निःसन्देह मनुष्य का ही मूल्य बढ़ेगा। मनुष्य न तो वेश्यागामी हो सकता है, न ही यह वेश्यावृत्ति का सहायक हो सकता है।

"अतः हमने उनसे कला–भवन के पाठ्यक्रम बनाने में सहयोग देने को कहा है। उन्होंने उस पाठ्यक्रम में तीन ग्रंथों का पढ़ाना और उनका विवेचन सम्मिलित किया है। वे हैं श्रीमद्भगवद्गीता, ईशावास्योपनिषद् तथा तुलसीकृत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
रामचरितमानस। इसके साथ-साथ साधारण संस्कृत ज्ञान का प्रबन्ध भी किया है।''

''इससे कला में क्या सहायता मिलेगी?''

''इससे कला में जीवन पड़ेगा। कला केवल शरीर की वस्तु न रहकर मन और आत्मा की वस्तु भी बन जाएगी। वे कहते थे, इस ज्ञान से कलाकार एक देदीप्यमान प्रकाशपुंज की भाँति संसार का पथप्रदर्शक बन जाएगा।''

देसाई ने हँसते हुए कहा, ''यह विचित्र व्यक्ति है। हिन्दू धर्म-मीमांसा के विपरीत साधु से गृहस्थी हुआ है। इस पर भी वह हिन्दू धर्म का अनन्य भक्त है। वह प्रत्यक्ष रूप में ऐसी बातें करता है जो धर्म के विपरीत प्रतीत होती हैं। परन्तु जब वह उसकी विवेचना करता है तो वे धर्म के सर्वथा अनुकूल ही प्रतीत होती हैं।

''उक्त घटना के पूर्व जब लालाजी मुझे मिले तो उन्हें इस बात का ज्ञान था कि आन्दोलन असफल रहेगा। इसी कारण उन्होंने मुझसे कहा था कि यदि पनाह की आवश्यकता पड़े तो मैं उनके स्थान पर चला आऊँ। फिर यथासमय मुझे मरणासन्न अवस्था में देख, मुझे उठवाकर वे अपने घर ले आए। जब उनके लड़के ने उन दोनों के पकड़े जाने का भय दिखाया तो उन्होंने उसे कह दिया कि वह कहीं होटल में जाकर ठहरे। परन्तु स्वयं मेरी सेवा के लिए डटे रहे। लाला लाजपतराय पकड़े गए तो, जब उनके साथी, मित्र, रिश्तेदार उनको छोड़कर भाग गए थे, तब ये उनकी कोठी पर उनके परिजनों को सान्त्वना देने जा पहुँचे।

''उन्होंने योगाभ्यास किया हुआ है, वे शास्त्र को अपने ढंग से समझते हैं और परमात्मा में उनकी अगाध श्रद्धा है।''

बम्बई पहुँच जाने पर भी देसाई ने अभी कारखानों का चार्ज लेने का विचार नहीं किया। रुक्मिणी का कथन था कि वह त्यागपत्र दे देती है और देसाई स्वयँ मैनेजिंग डायेक्टर बन जावें।

देसाई ने इस पर उससे पूछा, ''तुम क्या करोगी?''

''मैं अब मिस्टर सूद से उपनिषद् पढ़ूँगी।''

''यह तो तुम बिना कार्य छोड़े भी कर सकती हो। मैं तो यह चाहता हूँ कि मुझको कुछ मास तक इस काम-धन्धे से पृथक् रखकर चिन्तन करने दो।''

रामरक्खामल्ल ने देखा था कि पाठ्यक्रम उसके कथनानुसार ही बन गया है। कला-भवन प्रबन्धक समिति के नाम से एक संस्था रजिस्टर करा ली गई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
थी। उसके सदस्यों को नये सदस्य सम्मिलित करने का अधिकार देकर पाँच सदस्यों की वर्तमान समिति बन गई थी। इसके वर्तमान सदस्य थे–श्रीमती रुक्मिणी बाई, श्रीमती राधाबाई, श्रीमती सरला देवी, श्री मनोहरलाल वर्मा और श्री रामरक्खामल्ल।

इस प्रकार का प्रबन्ध करते हुए जुलाई मास आ गया। जुलाई मास में भवन में प्रविष्ट होने वाले विद्यार्थियों के लिए विज्ञापन प्रकाशित किया गया। विज्ञापन में लिखा था कि कन्याओं को नृत्य तथा संगीत की शिक्षा देने वाली नवीन संस्था 'कला–भवन' का, प्रथम अगस्त को प्रातःकाल श्री विट्ठल भाई देसाई उद्घाटन करेंगे। फिर कला–भवन का विवरण देते हुए उसमें लिखा था कि इस कला–भवन में निःशुल्क शिक्षा दी जावेगी। विद्यार्थियों की शिक्षा प्रातः आठ बजे से प्रारम्भ होकर सायं सात बजे तक होगी। मध्याह्न का भोजन और अल्पाहार भी संस्था की ओर से ही दिया जावेगा। इसके लिए कोई मूल्य नहीं लिया जावेगा। अभी संस्था का अपना छात्रावास नहीं है। छात्रावास होने पर विद्यार्थियों के रहने का भी प्रबन्ध कर दिया जावेगा।

प्रथम वर्ष में अधिक से अधिक बीस विद्यार्थियों के लिए स्थान है। शिक्षा पाँच वर्ष तक चलेगी और सब मिला कर एक सौ विद्यार्थियों की शिक्षा का प्रबन्ध होगा।

प्रवेश के लिए परीक्षा देनी होगी। इस परीक्षा का उद्देश्य छात्राओं की कला सीखने में रुचि, योग्यता और क्षमता का परिचय प्राप्त करना होगा। कुलीन कुल की लड़कियाँ ही प्रविष्ट की जावेंगी।

यह विज्ञापन प्रकाशित होने पर विद्यालय के नियमोपनियम, विद्यालय भवन तथा अन्य प्रबन्ध देखने के लिए अनेक छात्राएँ तथा उनके अभिभावक आने लगे। सौ से अधिक प्रार्थना–पत्र आए। उनमें से भलीभाँति जाँच एवं परीक्षा के उपरान्त दस छात्राओं को प्रवेश दिया गया।

उद्घाटन के दिन प्रातःकाल श्री देसाई ने भवन का उद्घाटन किया और इसी उपलक्ष्य में सायंकाल भवन के हाल में नृत्य–समारोह किया गया। प्रविष्ट छात्राओं के अभिभावकों के अतिरिक्त समाचार पत्रों के प्रतिनिधि और कुछ अन्य प्रतिष्ठित जनों को ही आमन्त्रित किया गया था। लगभग डेढ़ सौ व्यक्तियों के सम्मुख विद्यालय के अध्यापकों का संगीत और नृत्य–प्रदर्शन तथा रामरक्खामल्ल का इस भवन के उद्देश्य और कार्यविधि पर संक्षिप्त–सा भाषण हुआ।

अपने भाषण में रामरक्खामल्ल ने बताया, "इस समिति के हम सब सदस्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
यह मानते हैं कि विद्या का न तो शुल्क हो सकता है, न होना ही चाहिए। इस कारण यहाँ शिक्षा पूर्णरूपेण निःशुल्क होगी। यहाँ तक कि एक समय का भोजन और अल्पाहार भी छात्राओं को निःशुल्क दिया जावेगा।

"हम मानते हैं कि कला की आत्मा, उसमें निहित भाव होते हैं। उन भावों के निर्माण के लिए गीता, उपनिषद् और रामायण की शिक्षा का प्रबन्ध इसके साथ होगा। इन विषयों की परीक्षा तो विद्यार्थियों की जीवनचर्या से होगी और कला की परीक्षा क्रियात्मक प्रदर्शनों से होगी।

"कला और शिक्षा का ध्येय जीविकोपार्जन मात्र नहीं, प्रत्युत जीवन निर्माण है। जीविकोपार्जन जीवन का एक छोटा–सा अंग है। विशेष रूप में स्त्री–वर्ग तो घर की गृहिणी बनने के लिए है। अतः कला का जीविकोपार्जन से किसी प्रकार का सम्बन्ध नहीं होगा। यह कला जीवन को कलामय अर्थात् सुन्दर बनाने के लिए होगी।"

इस संक्षिप्त वक्तव्य के बाद राधा और तीन अन्य नव–नियुक्त अध्यापिकाओं के प्रदर्शन हुए।

अगले दिन से कला–भवन में कार्य होने लगा। यह सितम्बर मास के मध्य की घटना है कि एक लड़की कला–भवन में प्रविष्ट होने के लिए आई। उसने प्रार्थना–पत्र दिया तो कार्यालयाध्यक्षा पढ़ कर स्तब्ध रह गई।

उसने विस्मय में पूछा, "तो तुम नसीरा बाई हो?"

"जी।"

"तुम्हारी माता का नाम हीराबाई है?"

"जी।"

"पिता का नाम ज्ञात नहीं?"

"नहीं।"

"यहाँ प्रविष्ट होने के लिए तुमने अपनी माँ की स्वीकृति ले ली है?"

"नहीं, माँ इजाजत नहीं देती।"

"तो रात को रहोगी कहाँ? यहाँ तो पेशेवर स्त्रियों और उनके सम्बन्धियों को प्रविष्ट नहीं किया जाता?"

"यह तो मैंने पढ़ा है। आपने अपने उद्देश्यों में साफ लिखा है कि कुलीन लड़कियों की ही भरती होती है। मैं कुलीन तो नहीं हूँ, हाँ, स्वयं पाक–साफ हूँ।"

"क्या मतलब?"

"मतलब साफ है। मैं अपनी माँ के घर में बिकाऊ चीजों में से नहीं हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभी कुछ लोग मेरी बोली लगा रहे हैं, किन्तु मैं मंजूर नहीं कर रही।''

''मैं तुम्हारा प्रार्थना–पत्र प्रवेश समिति के सम्मुख प्रस्तुत कर दूँगी। तुम कल आकर निर्णय सुन जाना।''

''मैं खुद प्रवेश–समिति के सम्मुख हाजिर होकर अपनी बात रखना चाहती हूँ।''

''तुम्हारी यह इच्छा भी समिति को बता दी जावेगी।''

प्रवेश समिति में रामरक्खामल्ल, रुक्मिणी और वर्मा जी थे। नसीरा का प्रार्थना–पत्र देख कर रुक्मिणी और वर्मा ने तो उसको एकदम अस्वीकार कर दिया। किन्तु रामरक्खामल्ल को साधना और नासिरा की कथा स्मरण थी। इस कारण उसने कहा, ''इसकी परीक्षा होनी चाहिए।''

''परन्तु यह तो कुलीन नहीं है?''

''इसके इस कला–भवन में प्रविष्ट होने का कारण जानने पर ही उसकी कुलीनता का ज्ञान हो सकता है।''

दोनों विस्मय में उसका मुख देखते रह गए। रामरक्खामल्ल ने कह दिया, ''इस लड़की को अपने पिता का ज्ञान नहीं है। सम्भव है कि इसकी माँ को ज्ञान न हो। इस पर भी उसका पिता तो है ही और सम्भव है कि वह कोई पुण्यात्मा ही हो।''

''यह कुछ भी हो सकता है। परन्तु दूषित वातावरण में पली लड़की यहाँ प्रविष्ट नहीं करनी चाहिए।''

''प्रत्यक्ष रूप में तो आपका विचार ठीक ही प्रतीत होता है। परन्तु पन्द्रह–सोलह वर्ष की लड़की, जो किसी वेश्या के घर में पली हो, जब संगीत और नृत्य की उच्च शिक्षा पाने की लालसा कर रही है तो कुछ श्रेष्ठ संस्कार उसमें हैं ही। वे ही जाँच का विषय हैं। यदि संस्कार अति प्रबल न हों तो उसमें वातावरण यह इच्छा बन सकती ही नहीं, अथवा बनती तो अब तक विनष्ट हो गई होती।''

''इसकी जाँच किस प्रकार की जावेगी?''

''कोई विख्यात व्यक्ति इस लड़की का ग्राहक बन कर जावे और जहाँ वह इसका कारण जाँच करे कि वह इस प्रकार की इच्छा कहाँ से लेकर आई है, वहाँ यह भी जानने का यत्न करे कि इस लड़की की महत्त्वाकांक्षा क्या है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्मा ने यह जाँच करना स्वीकार कर लिया।

अगले दिन नसीरा पूछने आई तो कार्यालयाध्यक्षा ने, जिसने उसके विषय पर समिति की बहस सुनी थी, कह दिया, "अभी तुम्हारे प्रार्थना–पत्र पर विचार किया जा रहा है।"

"ऐसी क्या बात है जिसके फैसले में वक्त लग रहा है?"

"तुम्हारी कुलीनता का?"

लड़की का मुख निराशा और लज्जा से लाल हो गया। फिर उसने कहा, "इसकी जरूरत थी क्या? मैंने तो स्वयं अपने कुल का वर्णन कर दिया है?"

"जिसको तुम कुल मानती हो, उसको हमारे अधिकारी कुल नहीं मानते। वे मानते हैं कि एक व्यक्ति इस जन्म में किसी परिवार में उत्पन्न होता है, इसमें कई कारण होते हैं। परन्तु वह अपने संस्कार तो पिछले जन्म के भी लेकर आता है। क्या जाने तुम्हारे पिछले जन्म के संस्कार बहुत अच्छे हों और वे इस जन्म के बुरे संस्कारों को भी पराभूत कर रहे हों?"

नसीरा मुस्कराती हुई पूछने लगी, "मेरे पिछले जन्म के संस्कार देखने के लिए कौन जावेगा और कहाँ जावेगा?"

अध्यक्षा भी हँस पड़ी। कुछ विचार कर वह फिर बोली, "आँख से देखने, कान से सुनने, नाक से सूँघने, हाथ से स्पर्श करने और जिह्वा से चखने के अतिरिक्त भी कुछ साधन होते हैं, जिनसे हम देख, सुन, सूँघ, स्पर्श और चख सकते है। उन साधनों से दूर और अज्ञात स्थानों का ज्ञान भी प्राप्त किया जा सकता है। तुम्हारे विषय में उन साधनों का प्रयोग हो रहा है।

नसीराबाई समझी नहीं कि कमेटी किन उपायों से उसके पिछले जन्म की बात समझ सकेगी। इससे वह हँस पड़ी और पूछने लगी, "मेरी आकबत की खबर लाने वाला कब तक लौटेगा?"

"तुम एक सप्ताह तक समाचार ले लेना। हाँ यदि उससे पूर्व तुम्हारी आवश्यकता पड़ी तो तुम्हारे पते पर पत्र डाल कर तुमको बुलवा लिया जावेगा।"

"पत्र भेजना फुजूल है। मेरी माँ मुझको चिट्ठी की बात बतायेगी ही नहीं। यदि आप कहें तो मैं नित्य आकर पता कर जाया करूँ।"

"तुम्हारी इच्छा है।"

वह नित्य आती रही और नित्य उसे यह सूचना मिलती रही कि जाँच

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समाप्त नहीं हुई। पाँचवें दिन उसको बताया गया कि अगले दिन दस बजे वह स्वयं उपस्थित हो जाए।

नसीरा ने पूछा, ''क्या मतलब है इसका?''

''मतलब यह है कि जाँच का परिणाम असन्तोषजनक नहीं है परन्तु कुछ शर्तों के विषय में तुमसे बातचीत करने के लिए तुमको बुलाया गया है।''

बात यह हुई थी कि वर्मा के सिनेमा के मैनेजर एक बंगाली युवक प्रफुल्लचन्द्र को नसीरा बाई और हीरा बाई के विषय में जाँच करने के लिए तथा अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए भेजा गया। उसने बिना किसी प्रकार की टीका–टिप्पणी के अपनी जाँच की रिपोर्ट लिखकर दे दी थी।

उसमें प्रफुल्लचन्द्र ने लिखा था, ''सितम्बर 20 को मैं हीरा बाई की बैठक में गया। वहाँ दर्शकों का जमघट था। मैं भी वहाँ बैठ गया। एक प्रौढ़ावस्था का व्यक्ति मेरे पास आकर बैठ गया और पूछने लगा, 'कहाँ से आए हैं?'

'' 'कलकत्ता से।''

'' 'यहाँ किस मतलब से आए हैं?'

'' 'गाना सुनने के लिए।'

'' 'बस या कुछ और भी?'

'' 'और माल देखकर।'

''कई गानेवालियाँ गजलें, ठुमरियाँ, दादरा, कजरियाँ आदि गा गईं और उनके पसन्द करने वाले उठ–उठकर चले जाते रहे। अन्त में केवल पाँच–छः व्यक्ति रह गए थे। नजर के रुपयों से थाल भर गया था। मेरे पास बैठे व्यक्ति ने पूछा, 'बाबू! कुछ नजर दी नहीं?'

'' 'देने के लायक कुछ था नहीं। बेसुर, बेताल, न नाज, न नखरा, न रूप न रंग।'

''वह मुस्कराया और चुप रहा। हीराबाई ने स्वयं एक ठुमरी सुनाई। वह सत्य ही बहुत अच्छा गाती थी। मैंने सौ रुपये का नोट नजर कर दिया। इस पर तो मेरे साथ बैठा हुआ आदमी मुस्कराता हुआ कहने लगा, 'क्या बूढ़ी औरत पसन्द की है?'

'' 'मैंने औरत नहीं उसकी ठुमरी पसन्द की है।'

''वह मेरा मुख देखता रहा और फिर बोला, 'क्या पसन्द किया है इसमें?'

'' 'तुम नहीं समझ सकते।'

'' 'क्यों?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'इसलिए कि तुम औरत देखते हो, उसके भीतर के मन और रूह को नहीं देखते।'

"मेरे सौ रुपये के नोट से प्रोत्साहित हो हीरा बाई ने पूछा, 'नसीरा को सुनेंगे?'

" 'वह कौन है?' मैंने स्वयं को सर्वथा अपरिचित प्रकट करने के लिए कह दिया।

" 'तो आप बैठिए।'

"उसने मेरे समीप बैठे व्यक्ति को संकेत किया। वह उठकर ऊपर की मंजिल पर चढ़ गया। हीरा बाई गजल गाने लगी। गजल भी उसने अच्छी गाई। उसकी आवाज में एक विशेष प्रकार की मिठास थी। इस पर मैंने कह दिया, 'मुझे गजल पसन्द नहीं।' इस पर भी एक दस रुपये का नोट मैंने उसके सामने वह दिया। प्रायः लोग दस–दस ही देते थे।

"इस समय नसीरा बाई हाथ में तानपूरा लिए हुए आई और सामने बैठ मुस्कराकर अपना तानपूरा साधने लगी। वह आदमी पुनः मेरे पास आकर बैठ गया। मैंने उससे कहा, 'यह तो अभी बच्ची है।'

" 'हाँ कुँवारी है। मेरा मतलब है..।'

" 'मैं मतलब समझता हूँ। इस मुहल्ले में भी भला कुँवारी का मतलब कहने की जरूरत है?'

" 'तो आप कुछ नहीं समझते।'

" 'तो क्या टेस्ट कर सकता हूँ?'

" 'वह हँस पड़ा। फिर कहने लगा, 'फिर कुँवारी कैसे रहेगी?'

" 'उसका दाम दे दूँगा।'

" 'क्या दाम दोगे?'

" 'मैं परदेसी हूँ, इस पर भी एक रात के लिए एक लाख तो यहाँ पर भी है।'

"वह विस्मय में मेरा मुख देखने लगा। इस पर मैंने कह दिया, 'यदि वह अछूती न हुई तो केवल एक सौ रुपया।'

" 'जामिन कौन होगा?'

" 'बम्बई का बड़े से बड़ा सेठ मेरी जमानत दे देगा।'

"उसने कहा, 'गाने के बाद इसकी माँ से बात करूँगा। दाम तो पहले भी लग चुके हैं, परन्तु इतने नहीं।'

"मैंने और भी कहा, 'यदि यह अछूती हुई तो इससे विवाह कर पचास लाख इसके नाम लिख दूँगा'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''इस समय गाना आरम्भ हुआ। वह मालकौंस में गाने लगी। स्वर तानालाप, बोल फिर बोल–तान हुई। बोल थे–

छाया है अन्धकार चहूँ दिशि जग में अपार।
सूझत न वार पार।
अमावस की रात घोर घन घटा छाई।
मानव व्याकुल तड़फत ले ले कर अँगड़ाई।
कूल न दीखत इत–उत डोलत नाव मँझधार।। छाया है अन्धकार...

''मैंने सौ का एक नोट उसकी भेंट कर दिया। साथ ही अपने समीप बैठे दलाल की ओर देखा तो वह बोला, 'बिटिया को जा लेने दो। उसके सामने बात करेंगे तो हल्ला हो जावेगा।'

'' 'मैंने पूछा, 'क्यों?'

'' 'वह स्वयं को किसी बहुत ही बड़े आदमी के लिए तोहफा बना कर रक्खे हुए हैं।'

'' 'देखो मियाँ! यदि यह सत्य है कि वह अछूती है तो दस हजार तुम्हारी बाई के लिए।'

'' 'जरा ठहरो।'

''नसीरा बाई को दो सौ रुपये के लगभग मिले थे। उसने मेरा सौ का नोट उठा लिया और ऊपर चढ़ गई। मैं उठ खड़ा हुआ। लोग नीचे उतरने लगे। सब मेरा मुख देखते हुए मुस्करा रहे थे। उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था, जिसने तीस–चालीस से अधिक दिए हों। मुझे शायद वे मूर्ख समझ रहे होंगे, क्योंकि उन जितना ही रस ग्रहण कर मैंने रुपया उनसे कई गुना अधिक व्यय किया था।

''मेरे समीप बैठा हुआ दलाल हीरा बाई से बातें करने लगा। कुछ समय बाद वह मुझे अपने निजी कमरे में ले गई। मुझे सामने बैठा कर बोली, 'आप कहीं के राजा–रईस हैं?''

''मैंने कह दिया कि मैं मिदनापुर का एक जागीरदार हूँ। जब विवाह की बात होगी तब इसका प्रमाण दे दूँगा। अभी तो केवल यह कह रहा हूँ कि यह कुँवारी है तो पहली रात का एक लाख रुपया और आपकी बखशीश दस हजार रुपया।

'' 'जामिन?'

'' 'वह बात भी हो जावेगी। पहले लड़की की स्वीकृति....।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'कल आप कहाँ मिल सकते हैं?'

" 'ताज होटल के रिसेप्शन हॉल में। ठीक साढ़े चार बजे मैं आपकी, और हो सके तो लड़की की भी प्रतीक्षा करूँगा।'

" 'ठीक है, मैं आऊँगी और इस बेवकूफ, बेवफा लड़की को भी लाने की कोशिश करूँगी।'

" 'बेवकूफ और बेवफा क्यों?'

" 'इसलिए कि इसे कोई धनी युवक पसन्द ही नहीं।'

" 'मैं युवक तो हूँ नहीं। हाँ, धनी अवश्य हूँ। मेरे साथ विवाह करना पसन्द करेगी तो पचास लाख की कलकत्ता में सम्पत्ति इसके नाम लिख दूँगा। मेरी कोई संतान नहीं है। अगर कोई लड़का हो गया तो वह जागीर का मालिक होगा।'

"21 सितम्बर को चार बजकर पच्चीस मिनट पर हीराबाई और उसकी लड़की आई। मैं ताज के एक कोने में बैठा उनकी प्रतीक्षा कर रहा था। वे आकर बैठी। परस्पर अभिवादन होने के उपरांत मैंने पूछा, 'चाय पियोगी अथवा कुछ और?'

"माँ ने कहा, 'चाय ही ठीक रहेगी।'

"चाय आई और पीते हुए मैंने पूछा, 'मेरे प्रस्ताव का क्या उत्तर है?'

"इस पर लड़की बोली, 'मैं आपसे अलहदा मैं बात करूँगी।'

" 'कब?'

" 'जरा चाय पी लूँ। बात करने का मजा रहेगा।'

" 'एक और मेज लगवा लेता हूँ।'

"वह चुप रही तो मैंने बैरे को कह कर दूर एक कोने में एक मेज पर दो आदमियों की चाय लगाने के लिए कहा। और मेज लग जाने पर हम दोनों उस पर जाकर बैठ गए। हीराबाई प्रसन्न प्रतीत होती थी। उस को आशा थी कि इस बार लड़की मान जावेगी।

"हम दोनों बैठे तो लड़की ने पुनः अपने लिए चाय बनाई और बिना मेरे लिए बनाये और मुझे पीने को कहे, स्वयं पीने लगी। एक प्याला वह वहाँ पी आई थी। एक प्याला चाय और एक 'पीस पेस्ट्री' का खाकर रूमाल से मुँह पोंछ कर बोली, 'तुम कोई बहुत ही बदतमीज, बेशर्म और बेवकूफ आदमी मालूम होते हो। एक कुँवारी लड़की के कुँवारेपन का इम्तिहान लेने के लिए आए हो न? मैं तुम्हारे इम्तिहान और इनाम की 'बिल्कुल परवाह नहीं करती। अगर तुम में कुछ भी इन्सानियत बाकी है तो यहाँ से चले जाओ, नहीं तो मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
हल्ला कर बदनाम कर दूँगी।'

''मैं इतने से संतुष्ट नहीं हुआ। मैंने कहा, 'मेरी जान! मैं जा रहा हूँ, मगर रेस्ट्रां का बिल तो दे लेने दो।'

'' 'वह मैं दे दूँगी।'

'' 'नहीं, यह मेरा काम है। अब इतनी तमीज तुम सीखो कि एक आदमी को अपना काम करने दो।'

'' 'आदमी का काम?'

'' 'हाँ, औरतों से डाँट खाना और फिर उसके लिए दिल बिछाना।' मैंने बैरे को संकेत से बुला कर दोनों मेजों का बिल मँगवा लिया।

''बैरा पेस्ट्री आदि उठा कर बिल बनवाने चला गया। मैंने कहा, 'आखिर एक बात का सबूत तो तुमने दे दिया है कि तुम अछूती नहीं हो।'

'' 'बड़े आये थे कुँवारापन देखने वाले! आप चाहे जो समझें, मैं इसकी परवाह नहीं करती।'

'' 'मेरी पचास लाख की जायदाद की भी?'

'' 'मैं उस पर थूकती हूँ।'

''अब मैंने झुककर धीमी आवाज में कहा, 'नसीराबाई! आखिर शादी तो करोगी ही। मैं किसी तरह भी बदसूरत नहीं हूँ और कोई बूढ़ा भी नहीं। ऐसा मौका तुम्हें फिर कभी नहीं मिल सकता।

'' 'और हाँ, अगर तुम कुँवारी नहीं भी हो तो मुझको प्राइवेटली बता दो। मैं तुम्हारी माँ को यह बात बताऊँगा नहीं।'

''वह खिलखिलाकर हँस पड़ी और बोली, 'मुझे अभी विवाह नहीं करना है।'

'' 'क्यों?'

'' 'मैं अभी इल्मे–माशूकी सीख रही हूँ। लोग कहते हैं विवाह के पीछे वह नामुमकिन है।'

'' 'इस मामूली चीज के लिए बहुत बड़ी कुरबानी कर रही हो?''

'' 'मैं समझती हूँ कि एक बहुत बड़ी बात के लिए मामूली–सी बात कर रही हूँ। इससे ज्यादा तकलीफ मुझको, माँ के दिन–रात मुझको बेचने का ख्याल करते रहने से होती है।'

'' 'तो एक बात करो। मेरे साथ कलकत्ता भाग चलो। वहाँ मैं तुम्हारे म्यूजिक सीखने का इन्तजाम कर दूँगा और जो कुछ तुम्हारी माँ को देना है, वह भी तुमको ही दे दूँगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'' 'हुजूरेवाला, नहीं। आपके साथ जाने का मतलब है आपकी बीवी बनना। उसके लिए मैं किसी शर्त पर तैयार नहीं।'

'' 'तो मैं कुछ उम्मीद न रखूँ?'

''बम्बई में बहुत अच्छी और भले घरों की लड़कियाँ मिल जावेंगी और सस्ते दाम पर।'

''बैरा बिल लेकर आ गया था। बिल आठ रुपये दस आने का था। मैंने दस का नोट उसको दिया और नसीरा से बोला, 'चलो, तुमको तुम्हारी माँ के पास पहुँचा दूँ। क्या तुमसे फिर कभी गाली सुनने का मौका मिल सकता है?'

'' 'नहीं।' वह मुस्कराई और माँ की मेज की ओर चल पड़ी। मैं भी उसके साथ–साथ वहाँ पर जा पहुँचा। वहाँ पहुँचते ही मैंने कहा, 'हीराबाई! मैं आपका बहुत ही मशकूर हूँ जो कि आपके कारण मैंने इस स्त्री–रत्न के दर्शन किये हैं। हमने आपस में यह निश्चय किया है कि शादी की रस्म तीन साल बाद होगी। तब तक ये कभी–कभी मुझसे मिलने के लिए राजी हैं। आज तो मैं बम्बई जा रहा हूँ, मगर जल्दी ही लौटूँगा और आप लोगों की खिदमत में हाजिर हूँगा।'

''पूर्व इसके कि लड़की कुछ कहे, मैंने झुककर सलाम किया और होटल से बाहर आ गया।''

रिपोर्ट पढ़कर वर्मा ने कहा, ''इससे मुलाकात करनी चाहिए।''

''मुझे डर है कि कहीं वह यह न जान गई हो कि प्रफुल्ल हमारा आदमी है?'' रामरक्खामल्ल का कथन था।

''ऐसी बात प्रतीत नहीं होती। इस पर भी मुलाकात के समय यह भी समझ लेंगे। मैं समझता हूँ कि उसे अभी आने दिया जाए।''

: 9 :

जिस दिन नसीराबाई को बुलाया गया था, उसी दिन राधा समुद्र तट पर भ्रमण करके आ रही थी कि भवन से कुछ ही दूर एक नौ–दस वर्ष के लड़के ने राधा का पर्स, जो उसने कंधे पर लटकाया हुआ था, कतर डाला। पर्स कतरते ही उसका हाथ राधा की पीठ से टकरा गया। राधा ने एकदम घूमकर उसको पकड़ लिया।

लड़का रोने लगा और 'मुझे न मारो, न मारो!' का शोर करने लगा। एक बड़ी आयु का व्यक्ति, जो दूर खड़ा था, समीप आकर कहने लगा, ''बाईजी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोड़ दीजिए गरीब बच्चे पर दया कीजिए।''

राधा ने चोर लड़के को बाँह से पकड़ा हुआ था। उसने उस व्यक्ति को देखकर कहा, ''इसको तो छोड़ दूँगी, परन्तु तुमको पकड़वाती हूँ, चोर का हिमायती भी चोर होता है।''

''वाह! मुझे ही चोर बना दिया है। जाइए ले जाइए, मुझे क्या?''

वह खिसक गया तो राधा ने उस लड़के से, जो भयभीत प्रतीत होता था, पूछ लिया, ''क्या नाम है तुम्हारा?''

''मधु। मैं बहुत गरीब हूँ। मुझे छोड़ दीजिए।''

''मधु?'' राधा को श्यामनारायण की पत्नी के भाग जाने का स्मरण था। उसने ध्यान से लड़के के मुख पर देखा तो उसको प्रतीत हुआ कि यह श्याम का ही लड़का है। यद्यपि उसने उसको एक बार ही देखा था, जब वह तीन–चार वर्ष का था, इस पर भी उसको विश्वास नहीं हुआ। उसने यह सोचा कि भापा जी जरूर पहचान लेंगे, उससे कहा, ''चलो, मेरे साथ। मैं तुमको नए कपड़े दूँगी, पैसे दूँगी और खाना खिला दूँगी।''

''कहाँ?''

''मेरे घर, कला भवन में।''

लड़का सन्देह में राधा का मुख देखता रहा। फिर बोला, ''पुलिस में तो नहीं दोगी?''

''तुम्हारी माँ किधर है, मैं उससे भी मिलना चाहती हूँ?''

लड़का कुछ नहीं बोला। दोनों कला–भवन की ओर चल पड़े। राधा उसको लिफ्ट में बैठाकर तीसरी मंजिल पर ले गई।

रामरक्खामल्ल पूजा कर अपने कमरे से बाहर निकला ही था कि ये दोनों उसके सामने खड़े हो गए। राधा ने कहा, ''भापा देखो यह कहता है कि मैं मधु हूँ?''

रामरक्खामल्ल का ध्यान भंग हुआ। उसने देखा और पहचान लिया। उसके मुख से निकला, ''अरे! कहाँ से पकड़ लाई हो इसे? मधु! पहचानते हो मुझे?''

''हाँ, बड़े भापा!'' यह कहता हुआ वह रो पड़ा।

रामरक्खामल्ल उसको अपने कमरे में ले गया। राधा भी साथ ही थी। रामरक्खामल्ल पूछने लगा, ''तुम्हारी माँ कहाँ है?''

''वह अन्धी हो गई है। काहन चाचा हमको यहाँ लाया था। जब वह अन्धी हुई तो हमको घर से निकाल दिया। माँ उस सिनेमा के बाहर भीख माँगती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है और मैं–।'' वह कहता–कहता रुक गया।

''भापा! यह आने जाने वालों की जेब कतरता है।''

''बहुत होशियार हो तुम और तुम्हारी माँ भी! कहाँ रहते हो रात के वक्त?''

''पटरी पर सो जाते हैं। सड़क पर बने टट्टी–पेशाबघरों में टट्टी–पेशाब करते हैं और ढाबे में रोटी खाते है।''

''इस वक्त तुम्हारी माँ कहाँ है?''

''मैं उसे सोई छोड़कर आया था। समुद्र के किनारे यह बाई अपना पर्स कन्धे पर डाले हुए घूमती दिखाई दी तो मेरे उस्ताद ने मुझे उस पर्स पर उस्तरा चलाने के लिए कहा। मैं इनके पीछे–पीछे चल पड़ा। वहाँ से चलकर यहाँ तक आ गये किन्तु मौका नहीं मिला। यहाँ ये खड़ी हुई और पाँव खुजलाने लगीं। मैंने उस्तरा चला दिया। ये पाँव खुजलाकर जल्दी ही सीधी हो गई, इससे मेरा हाथ इनकी पीठ को छू गया। बस इन्होंने पकड़ लिया और यहाँ ले आई।''

''तुम तो चोर हो गये हो। जानते हो चोर को क्या दंड मिलता है? चूतड़ों पर बेंत लगाते हैं?''

मधु भयभीत चुप रहा। स्वयं को 'होशियार हो गए हो!' कहता सुन वह अपनी कारगुजारी बताने लगा था। रामरक्खामल्ल ने कहा, ''चलो, मेरे साथ। तुम्हारी माँ को ढूँढ़ लावें। सुनीता भी उसके साथ है क्या?''

''नहीं, एक दिन रात को वह लापता हो गई थी। माँ कहती थी कि उसको कोई चुरा कर ले गया है।''

''चलो।''

राधा ने कहा, ''इसको एक प्याला चाय पिला दूँ। कहता था भूखा है।''

रामरक्खामल्ल हँस पड़ा। मधु के लिए चाय और बिस्कुट आये तो वह उसे बहुत स्वाद लगे। महीनों से उसने इतने साफ–सुथरे बर्तनों में और ऐसे बिस्कुट नहीं खाए थे। जब खा चुका तो कहने लगा, ''भापा! चलो। पर माँ को पीटना नहीं।''

''क्यों?''

''मैंने उसको कहा था चलो, लाहौर चलें। तो वह कहने लगी कि पिताजी गला घोंट कर मार डालेंगे।''

''उसने काम तो ऐसा ही किया था, परन्तु तुम कहते हो तो क्षमा कर देंगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे लिफ्ट से नीचे उतरे तो ड्योढ़ी पर एक अंधी औरत खड़ी थी। और वही लड़का, जिसको मधु उस्ताद कहता था, उसका हाथ पकड़े हुए था। मधु ने उतरते ही कहा, "यह मेरी माँ है और वह मेरा उस्ताद है।"

रामरक्खामल्ल ने मधु की बाँह पकड़ी हुई थी। उसको भय था कि वह भाग न जाए। उसको पकड़े हुए वह कला के सम्मुख जा खड़ा हुआ। रामरक्खामल्ल ने उसे पुकारा, "कला! पहचानी मेरी आवाज?"

कला ने चौंककर उधर देखा जिधर से आवाज आई थी। फिर भूमि पर शीश नवा आँसू बहाने लगी। रामरक्खामल्ल ने दूसरे हाथ से कला की बाँह पकड़ कर उठाते हुए कहा, "आओ।"

उस लड़के ने, जो अभी वहीं खड़ा था और यह तमाशा देख रहा था कहा, "यह नहीं जावेगी, यह मेरी बीवी है।"

"बीवी?" रामरक्खामल्ल ने एक क्षण तक प्रश्नभरी दृष्टि में उस की ओर देखा और फिर उसके पेट पर पूरे बल से एक लात जमाई। लड़का लोट–पोट होता हुआ दस गज आगे जाकर गिर पड़ा। उसने रामरक्खामल्ल को बूढ़ा समझ कर भूल की थी।

रामरक्खामल्ल कला को ऊपर ले गया और उसको लेख के सुपुर्द कर बोला, "देखो कला! घर से भागकर तो तुमने भूल की ही थी। यदि यहाँ से भी भागीं तो फिर बच नहीं सकोगी। अब तुम यहाँ रहो। मैं श्याम को बुलाकर तुम्हारी उससे सुलह कराने का यत्न करूँगा।"

उसी दिन दस बजे के लगभग नासिरा बाई आई। उसको प्रवेश–समिति के समक्ष उपस्थित किया गया।

वर्मा ने कहा, "देखो, हम यहाँ वेश्याओं की सन्तान को भरती नहीं करते। मगर तुम्हारे विषय में तुम्हारी संगीत सीखने की उत्कट इच्छा देख, हम तुमको अवसर दे सकते हैं। इस पर भी दो शर्तें हैं। एक तो यह कि अभी मजिस्ट्रेट के सम्मुख चली चलो। अपना पूर्ण इतिहास बता कर यह दर्ख्वास्त करो कि तुमको तुम्हारी माँ का घर छोड़ने की और इस कला भवन में रहने की स्वीकृति दी जाए।

"आशा है मजिस्ट्रेट इजाजत दे देगा। उस हालत में तुमको अपना सब कुछ छोड़ कर यहाँ आना होगा। यहाँ तक कि यह पहने हुए कपड़े भी। तुमको यहाँ से जो कपड़े मिलेंगे वही पहनने होंगे।"

"मेरा बैंक में चार हजार रुपया जमा है।"

"वह माँ को, अपने पालन–पोपण के बदले में दे दो। वहाँ की कमाई का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पैसा भी तुम यहाँ नहीं ला सकोगी?''

''मजिस्ट्रेट की बात तो समझ सकती हूँ, क्योंकि मैं नाबालिग हूँ। परन्तु यह रुपयों की बात समझ में नहीं आई?''

''देखो, मैं समझाता हूँ। हमने तुम्हारे विषय में जाँच की है। जिस वातावरण में तुम रहती हो, वह खराब है। कोई बदसूरत से बदसूरत औरत भी बदमाश हो सकती है। मगर तुम्हारे विषय में जाँच करने से ऐसा प्रतीत हुआ कि तुम में यदि कुछ खराबी भी है तो मामूली–सी बात है। इसका कारण यह है कि तुम पिछले जन्म से कुछ नेकी अपने साथ लाई हो। और वही तुमको उस नरक से निकालने में सहायक हो रही है। जब पिछले जन्म की कमाई का असर एक दिन में कैसे समाप्त हो जावेगा? वह पाप की कमाई साथ लाने पर तुम पाप ही यहाँ लाओगी।''

''मैं आपको यकीन दिलाती हूँ कि उसमें एक पैसा भी पाप की कमाई का नहीं है।''

''तो यह रुपया कहाँ से आया?''

''जब आपने जाँच कराई है तो आपको यह तो मालूम हो ही गया होगा कि मैं गाती हूँ। यह रुपया उसी का मूल्य है।''

''कला बेचना शरीर बेचने से भी अधिक पापयुक्त है। इसी कारण लाखों खर्च कर हम ये कलाएँ निशुल्क सिखाते हैं। हम तुम्हारी इस कमाई को तुम्हारी माँ की कमाई से अधिक गुनाह की मानते हैं।''

नसीरा कुछ नहीं बोली। उसने निरुत्तर हो अपने रुपये के त्याग पर सन्तोष कर लिया।

उसी दिन वर्मा नसीरा को एक वकील के पास ले गया। उससे प्रार्थना लिखाई गई और प्रेजिडैंसी मजिस्ट्रेट के सामने वह प्रस्तुत कर दी गई। लड़की को कला भवन में रहने की स्वीकृति मिल गई। वर्मा ने उसको अदालत में उपस्थित करने की जमानत दे दी। उसकी माँ को नोटिस दे दिया गया कि उसको कोई आपत्ति हो तो अदालत में आकर बयान करे।

मुकदमे का निर्णय होने में दो मास लग गए। अन्त में निर्णय हो गया कि उसकी माँ नसीरा की सरपरस्त होने के योग्य नहीं। नसीरा कला भवन में रह सकती है। वयस्क होने से पूर्व वह विवाह नहीं कर सकेगी।

Central Library 167909 Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167909

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार
वर्ग संख्या R 089.9143 GUR-J आगत संख्या 167909

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए। अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब शुल्क लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No.		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदत्त

शिक्षा: एम. एस. सी.

8-12-1894 से 8-4-1989

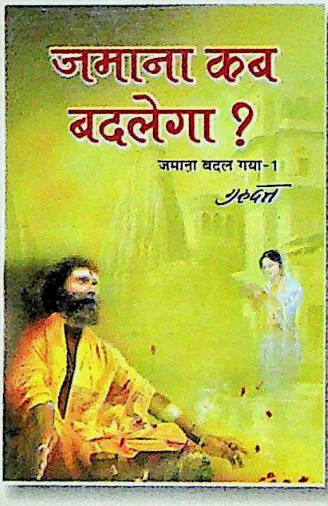

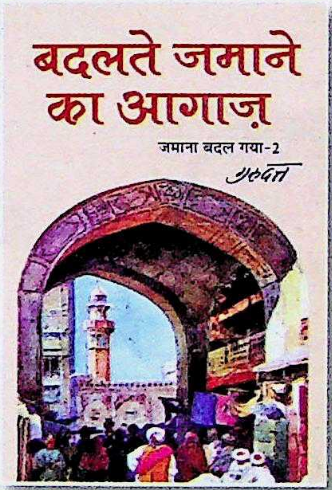

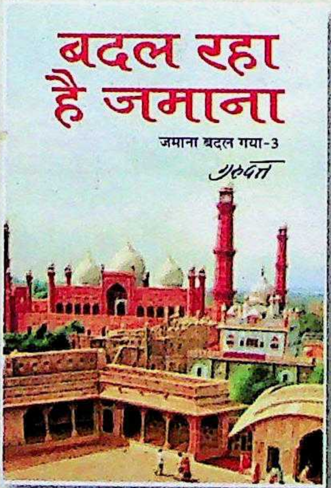

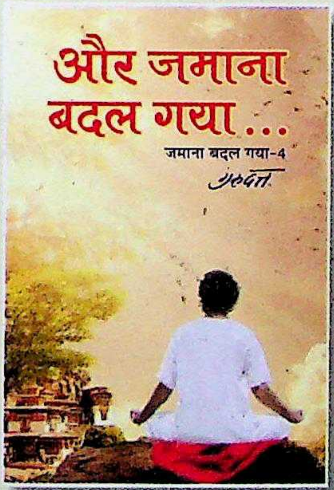

हिन्दी साहित्य सदन

2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 देश बंधु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005, फोन- 9213527666, 7065618655
ई-मेल : indiabooks@rediffmail.com, hindisahityasadan@gmail.com
www.hindisahityasadan.com

9 789386 336736

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar